GOVERNMENT OF INDIA

ARCHÆOLOGICAL SURVEY OF INDIA

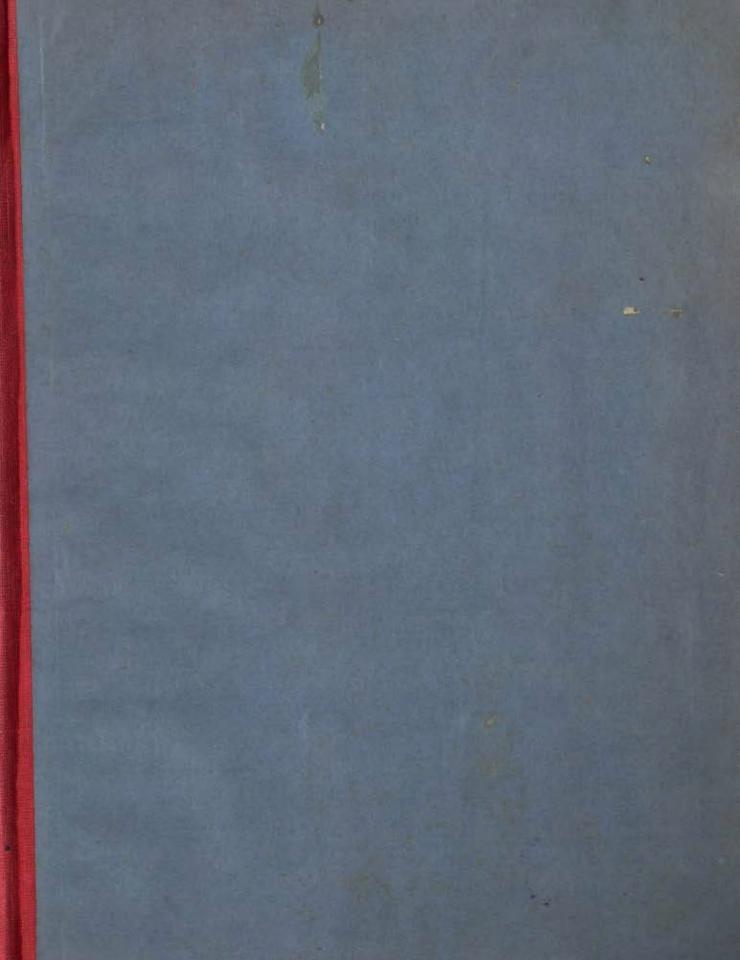
CENTRAL ARCHÆOLOGICAL LIBRARY

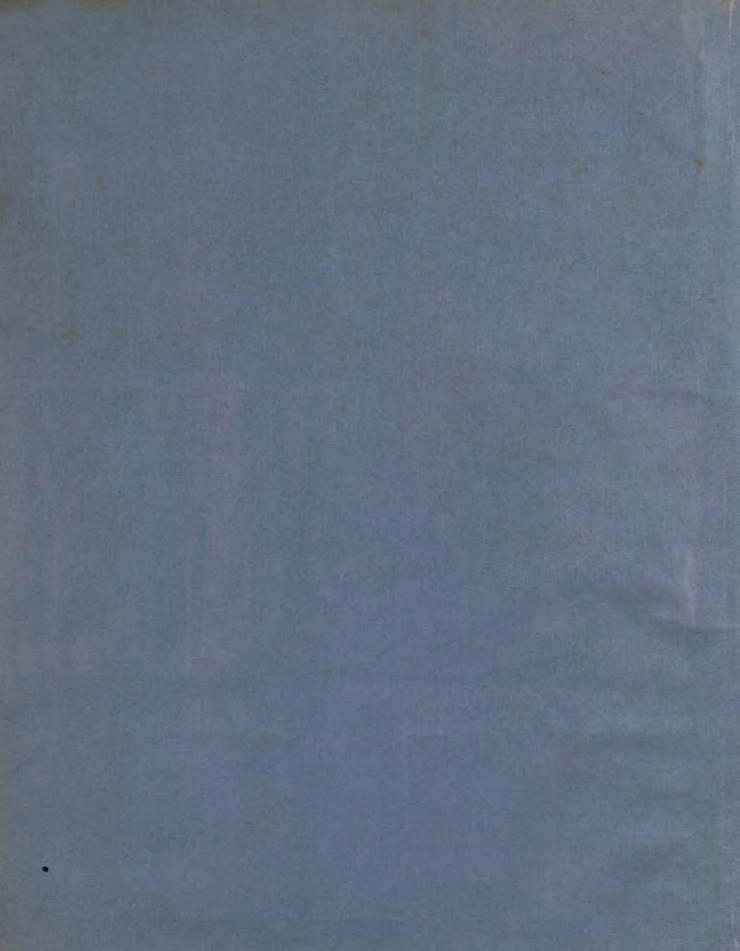
ACCESSION NO 29303

CALL No. 417.05/ F. 7

D.G.A. 79











PUBLISHED UNDER THE AUTHORITY OF THE GOVERNMENT OF INDIA AS A SUPPLEMENT TO THE "INDIAN ANTIQUARY."

EPIGRAPHIA INDICA

AND

RECORD OF THE ARCHÆOLOGICAL SURVEY OF INDIA.

VOL. X.-1909-10.

PARTS I, II, VI AND VII

20303 EDITED BY

PROFESSOR STEN KONOW, Ph.D.,

AND

PARTS III, IV, V AND VIII

417.05 E.I.

BY

RAI BAHADUR V. VENKAYYA, M.A.,

GOVERNMENT EPIGBAPHIST FOR INDIA.

CALCUTTA:

SUPERINTENDENT GOVERNMENT PRINTING, INDIA.

BOMBAY: BRITISH INDIA PRESS.

LONDON: KEGAN PAUL, TRENCH, TRÜBNER & Co.

NEW YORK: WESTERMANN & Co. CHICAGO: S. D. PEET. LEIPZIG: OTTO HARRASSOWITZ. VIENNA: A. HÖLDER & Co. BERLIN: A. ASHER & Co PARIS: E. LEROUX.

Price Rs. 16 or 22 sh.

Aco. No. 293.3

Call No. 41.2 n Richard Call

CALCUTTA
SUPERINTENDENT GOVERNMENT PRINTING, INDIA
8, HASTINGS STREET

Reprinted in 1959 at the Government of India Press, Photo Litho Wing, New Delhi.

CONTENTS.

The names of contributors are arranged alphabetically.

| | | | | | | | | PAGE |
|---|--------|----------|------------|--------|--------|------|-----|----------|
| R. D. Banerji, M.A.:— No. 23. New Brāhmi inscriptions of the Scythian Peri | iod | | | | | | | 100 |
| THE LATE DB. T. BLOCH, Ph.D.:— No. 12. Amauna plate of the Maharaja Nandana . | 250 | | | NA. | | | | 49 |
| A. H. FRANCEE, PH.D.:- | | | | | | | • | 45 |
| No. 20. Tibetan inscription in front of the Ta-chao-ssu | temp | ple in L | hasa | 22 | | | 12 | 89 |
| HIBA LAL, B.A., RAI BAHADUB:- | | | | | | 13 | | 10 |
| No. 4. Kuruspāl stone inscription of Sömēśvaradēva , 5. Two Kuruspāl inscriptions of Dhāraņa-Mahādē | | 41. 41. | | | | 1. | | 25 |
| 6 Content stone inscription of Township had to | /1, OI | the th | ne o | r Some | esvara | deva | | 31 |
| , 7. Kuruspāl stone inscription of Sömēšvaradēva; | Salva | 1010 | | * | | | * | 35 37 |
| " S. Temara Sati-stone inscription of Saka 1246 | - | 1010 | 1 | | * | - | | 39 |
| 9. Two inscriptions of the time of the Nagavamei | | | irish | dava | | | 15 | 40 |
| | 14410 | , 2100 | A LAGE LAG | PAC YM | - | | - | 23 |
| Pandit Hibananda, M.A.:— No. 21. Machhlishahr plate of Harischandradëva. | | | | | | | | |
| | | | * | 12 | | | | 93 |
| PROFESSOR E. HULTZSCH, Ph.D. | | | | - | | | | |
| No. 1. The Pallava inscriptions of the Seven Pagodas | | | | | | • | | 1 |
| ,, 10. Note on the Amaravati pillar inscription of Si | mhav | arman | * | 1.5 | *1 | | | 43 |
| 13. Pārdī plates of Dahrasēna 22. Gadval plates of Vikramāditya I.; A.D. 674 | | | | | 4. | 100 | 130 | 51 |
| | * | | | * | | | | 100 |
| PROFESSOR STEN KONOW, Ph.D.:- | | | | | | | - 1 | |
| No. 15. Karamdanda inscription of the reign of Kums | 10.00 | pta | | | | 181 | | 70 |
| " 16. Sunāo Kala plates of Samgamasimha | | | | | | 381 | | 72 |
| " 17. Balèra plates of Mularaja I. | | | | | | | | 76 |
| " 18. Peshawar Museum inscription of Vāṇhaḍaka | | | | | | -54 | | 79 |
| H. Krishna Sastri, B.A.:- | | | | | | | | |
| No. 14. Two Nolamba inscriptions from Dharmapuri | | | | | | | | 54 |
| " 26. Dānavulapādu pillar inscription of Šrīvijaya | 14 | | | | | | | 147 |
| K. B. PATHAK, B.A.:- | | | | | | | | |
| No. 2. Rayagad plates of Vijayaditya | | | | | | | | 14 |
| " 19. Pimpari plates of Dhārāvarsha Dhruvarāja | | | | | | | | 81 |
| PANDIT RAM KARNA:- | | | | | | | | |
| No. 3. Bijāpur inscription of Dhavala of Hastikundi | | | | | | | 100 | 17 |
| R. Sewell, I.C.S. (Retd.):- | | - | | | | | - | |
| No. 24. Dates of Chöla kings | | | | | | | | 101 |
| 25. Dates of Pandya kings | | • | | | * | * | | 121 |
| | | | | | * | | | 138 |
| ARTHUR VENIS, M.A.:- | | | | | | | | |
| No. 11. Pachar plate of Paramardideva | | | | | | | | 44 |
| | | | | | | | | |
| INDEX.—By H. Krishna Sastri, B.A | | 0 | | | | | | 155 |

| | | | | | | | | | | | | | | 7 | PAGE |
|------------|---------|-------------|-------------|------------|---------------|-----------|---------|--------|--------------|------|-------|-----------|---------|--------|--|
| 4 DDI | PINTO | IX :-A | TIST O | P RRAI | HMT IN | SCRI | PTIO | NS FR | OM ' | THE | EAL | LIEST | TIMES | | ad. |
| AFFI | DIND | 1A:-A | ABOUT | | W WI | CH T | HEE | XCEP | TION | OF | THO | SE OF | | | |
| | | | By Pro | | | | | LAUDI. | TTOM | - | | | | - | 1 |
| | | | | | | ES, I | H.L. | | | | | | | | 2 |
| | 21 | | Norther | | | | - • | | * | • | | 1.01 | • | - | 98 |
| | 10 | 11. | Souther | n inscrip | Kions . | * | 20 | 2.5 | | | * | | | 1.0 | - |
| Addi | tions | and Cor | rections t | o Appen | dix:- | | | | | | | | | | -3- |
| 22010 | 1000000 | | Northern | | | | | - 60 | | | | | | (*) | 162 |
| | | | Southern | | | | | 5.4 | | | ** | 2000 | | | 179 |
| Inde | e of | Personal | | | | | | 1 | | | | (4) | | | 181 |
| - ALLESANA | G | leographi | cal Name | 28 11 | | 100 | | | | | | | | | 205 |
| 31 | | fiscellane | | | | | | | | | | | | | 213 |
| Tack | | nd-places | | | ptions . | | 1110 | - 1.9 | | | | | | 199 | 225 |
| AJIZE | or m | IIII Brimen | | - | CONTRACTOR OF | | | | | | | | | | |
| | | | | | | - | _ | - | - | | | | | | |
| | | | | | - | | - | OT 4 | · cm | 00 | | | | | |
| | - | | | | IST | ' () | H' | PLI | $\Lambda\Pi$ | | | | | | |
| | | | | - 7 | | | 100 | | | - | | | | | |
| | | | | | | - | - | | | | | | | | |
| | | *** | | T | Dial | . T | | | | | | | to face | nage | 6 |
| No. | | Dharmari | ija-ratoa | Inscripti | ous, rus | | * | | | 70 " | | | DO THOU | - | 8 |
| 88 | 2. | the Paris | 17 | | 31 | 11 | | | | | 13 | | 29 . 39 | 13. | 9 |
| 18 | | Gaņēša T | | | | | | * * | | | 9 | | 11 10 | 80 | 11 |
| in. | 4. | Dharmar | ija-mand | apa Insc | ription | | Same | 2 - 2 | | | 1 3 | | 88 88 | 27 | 12 |
| | 5. | Atiranach | napděávaz | a Cave-to | emple In | scripti | ion, Pl | | | | | | 26 29 | 29 | 14 |
| ** | 6. | | ** | 20 | | - 11 | - 11 | н. | | - 4 | | 40 | 29 28 | 20 | |
| 11 | 7. | Rayagad | plates of | Vijayad | itya | + | | | | | . 5 | . between | | 16 | The state of the s |
| 21 | 8, | Amarava | ti pillar i | nscriptio | n of Sin | ahavai | man | | | | *i) 8 | | to face | Page | 43 |
| 22 | 9. | Pachar p | late of Pa | aramardi | dēva | | | | | 1 1 | 0 9 | | 20 15 | 99 | 48 |
| ** | 10. | Amauna | plate of | the Mah | araja Ne | andans | | | | | | *** | 38 29 | 20 | 51 |
| | 11. | Pardi pl | ates of D | ahrasēna | E ITO | | | | | | | | 28 29 | 80 | 53 |
| | 12. | Two No! | amba ins | eriptions | from D | harma | puri | | | | | . between | - Maria | 66 | |
| 11 | 13. | Karamda | Inda inser | iption o | f Kumār | agupt | a | | | | | | to fac | e page | 71 |
| *** | 14. | Balèra p | ates of 1 | Aularaja | I | 1 | | | | | | . betwee | | 78 | |
| - 11 | 15. | Peshawa | r Museur | n inscrip | tion of | Vanha | daka | | | | | | to fac | e page | |
| ** | 18. | Pimpari | plates of | Dharave | rsha-Dh | ruvari | lja | | | | | . betwee | n pages | | & 87 |
| 31 | 17 | Sunão K | ala plate | of Sam | camasiń | aha | | | | | | . 11 | 211 | 74 | & 75 |
| 39 | 18. | Machhli | shahr pla | te of Ha | rischand | radēva | | | | | | | to face | page | 98 |
| - 23 | 19 | Gadval | olates of | Vikramā | ditva I., | A.D. | 674 | | | | | | 29 23 | ** | 102 |
| 25 | 20. | Brahmi | inscriptio | ons of th | e Scythi | an Per | riod, P | late I | | | | | 19 16 | 22 | 107 |
| 10 | 21. | | | | | | 10 | п | | | | * | 23 33 | 20 | 107 |
| 9.0 | 22. | 40 | 29 | | | | | III | | | | | 29 29 | ** | 107 |
| 31 | 69 | Inscribe | d Imaga | of the S | Southian | Period | i. Plat | e I | | | | | | ** | 109 |
| 39 | | | timege | | | | | 11 | | | | | 21 11 | ** | 111 |
| 23 | 24 | | -11 | 88 | 29 | ** | ** | III | | | | | 10 H | 20 | 112 |
| | 25 | | ** | 29 | # | 38 | . 110 | IV | | | | | | ** | 115 |
| 21 | 26 | | 20 | 23 | 19 | 39 | 23 | V | | | | | ** ** | ** | 115 |
| 19 | 27 | | 18 | 29 | * | 98 | | VI | | | | | 23 23 | | 119 |
| 27 | 28 | | ** | 23 | * | 29 | 38 | VII | | | | | | - | 121 |
| 19 | | 7 | ** | 33 | ** | 98 | ** | VIII | | | | | 20 20 | - 10 | 121 |
| | 36 | L. Danavi | lang 3 | illan ince | mintion o | f Sein | iiava | | | | 1 | | n n | | 152 |
| 81 | , 31 | L. Dansvi | nabada b | STIME THE | Trheton o | THE PARTY | -7-J- | * | - | 2 | · = | 6 | | ** | 10000 |

ADDITIONS AND CORRECTIONS.

- Page 8, No. 20, text-line 3,—for যথাত্বত read যথাত্বত.
 - , 14, last line, -for Karahāṭaka read Karahāṭa, as in the text.
 - " 18, line 4 from top, -for odanambuda read od-anambuda.
 - " 19, line 7 from bottom, -for ghadā read ghata, as in the text.
 - " ,, last line, -for rala read ralaka, as in the text.
 - , 22, text-line 16,-for कलरकेवल read कलरकेवलं.
 - " 27, foot-note 2, line 3,-before year 879 insert Hijra.
 - ,, 35, line 7 from bottom,-for matrin read mantrin.
 - , 40, foot-note 1,-for Vishnu read Vishnu.
 - ,, 42, line 8 from top,-for Jatanpal read Jatanpal.
 - ,, 46, foot-note 9, line 3,-for Subhananda read Subhananda.
 - " 50, line 2 from top,—for Vājasanēyi read Vājasanēya, as in the text.
- " ,, line 9 from top,-for Magha read Marga [siras].
- " 51, text-line 5,-for bhumichchhidra- read bhumichchhidra-.
- ,, 59, note 3, line 5,-for Permanadigal read Permanadigal.
- ,, 60, line 2 from top,-for the Mahābalis read Mahābali.
- " " line 6 from bottom,—for -Maharāja read -Mahārāja.
- " 62, line 20 from top, -for omangala read omangala.
- " , foot-note 7, line 2 from bottom,—for Hēmāvatī read Hēmāvatī.
- kēsarivarman from Bairakūr in the Kolar district of the Mysore State (No. 457 of the Madras Epigraphical collection for 1911) and find nothing in it to suspect its genuineness—H. K. S.]
- ,, 64, foot-note 5, line 1,-for below read above.
- " 68, line 4 from bottom,—for Nangadiri read Nandagiri.
- " 69, line 3 from top,-after Nolamba insert (king).
- " " line 4 from bottom,—for Kilēri read Kilēri.
- " ,, foot-note 2, line 3,-for gurnchi read gurchi.
- " 84, foot-note 3, line 1,-for विवादेन्वयमे read विवादेन्वयुमे.
- " 113, text-line 1,—for Maharajasya read Maharajasya.
- " ,, text-line 1,—for Huvashkasya read Huveshkasya.
- ", translation, line 1,—after day insert the words 'of the Maharaja Devaputra Huveshka.'
- " 117, lines 9 and 10 from top, -for stupa read stapa.
- " 118, line 2 from bottom,-for Śrāvasti read Śrāvasti.
- " 123, No. 163, last para., line 3,—for Bhadrapada read Bhadrapada.
- ,, 133, line 8 from top,-after Ilam insert (Ceylon).

In the Journal of the Royal Asiatic Society for January 1912, Prof. H. Lüders has reviewed Mr. Banerji's article published on pp. 106 ff. of this volume, and pointed out a number of improvements (some of which are based on impressions of his own) on the published readings. The subjoined additions and corrections are based on Prof. Lüders' article.

Page 107, line 10,-for 1901-02 read 1891-92.

" line 19,—add a star after "some important records" and the following editorial foot-note above note 1: "Professor Lüders questions the correctness of assigning

Nos. IX, IV, XVI and I to Ramnagar as Mr. Bancrji does; see the Professor's remarks on pp. 168, 170, 173 f. and 175 f.

Page 110, lines 5 f. (text-line 1),-for vadhu Ekradalasya read vadhue Kalalasya.

- ", line 7 (text-line 2), -for Kottiyato (also in other places where the name occurs in this paper) read Koleyato.
- ", line 7 (text-line 2),—for Tar[i]ka[s]ya read Taraka[s]ya.

 ", line 8 (text-line 3),—for Gahapaläye read Grahapalaye.

Corresponding alterations have to be made in the translation of No. III on page 110.

Page 111, text-line 2,—for Datila . ti Harinan[di]sya read De[va] panatihari Nand[i]sya.

" ,, text-line 4,-for Kumarasiri Vamadasi read Kumarasiri Vamadasi,

- ", line 4 f. from bottom, -jor at the request of the sister of Datila . .

 Harinandi, read at the request of Deva, the panatihari, the sister of Nandi (Nandin).
- " line 7 from bottom,—for Rudraděva-sami (Rudraděvasvamin) of Dattagala read Dattagali (?) Rudraděvasamini (°avamini).

, 112, text-line 1,-jor Huvakshasya read Huvekshasya.

" text-line 2, -for Dhujhavalas[ya] read Dhañavalasya, and for Dh[ujhas]iriy[e] read Dhañasiriya.

" text-line 3,-for [Bu]dhukasya read Budh[i]kasya.

" , text-line 3,-for Savatrana (?) potr[i]y[e], read Savatrātāpotr[i]ya.

Alter the translation of No. V on p. 112 accordingly.

- Page 112, line 5 of the translation,—for Pachanagari (Vajranagari) road Pachanagari (Uchehānāgari).
 - , 115, text-line 3,—for tiya (?) Munasimitā (?) yo (?), read tiyamu . . . siminā[ya].

" text-line 4,-for Minirava sushoti dhitu, read Miniravasushatidhittri.

, 116, text-line A.2, -for Vajanakarito read Vajan [a] karito.

- " line 5 (text-line C.1),—for Gahavalāyē read G[r]ahavilaye and for Aryadāsiyē read A[rha]dāsiy[e].
- " text-line D.1,-for Dharavalaye read Dhar [5] valaye.

Alter the translation of No. IX accordingly,

Page 116, line 4 of the translation,—for female pupil who obeys the command of, read female pupil of the panatidhari.

" 118, line 3 from bottom, -for Buddha . . su[khā] la read Buddhadē[va]-Akhila.

" 119, line 14 (text-line 1),—for Puśabalāyē read Pūśabalāyo. " line 15 (text-line 2),—for [bha]yāyē read bharyāyā.

,, 120, line 7 (text-line 1),—for naka gana (?) Dhananyanasya ta . . ., read m[i]kat[o] ku[la]t[o Vajra]nagar[i]to [śākhāt]o.

For the translation of No. XVI on page 120 substitute the following: The request of the venerable the native of Adhichchhatra, out of the [Pētivā]mika (Prailivarmika) kula, the Vajranāgari iākhā . . .

121, line 5 (text-line 1),—for [v]rita Ku[tu]kasya read . ritakundakasya.

line 7,—for the wife of Ku[tu]ka read the wife of [Gh]ritakundaka.

EPIGRAPHIA INDICA.

VOLUME X.

No. 1 .- THE PALLAVA INSCRIPTIONS OF THE SEVEN PAGODAS

BY PROFESSOR E. HULTZSCH, PH.D.; HALLE (SAALE).

"The Seven Pagodas" is the Anglo-Indian name of an extensive group of ancient rock-sculptures on the sea-shore, about 30 miles south of Madras. These interesting remains can be reached from Madras by boat on the Buckingham Canal, or from Chingleput Junction by bullock-cart via Tirukkalukkangam. The present Tamil designation of the place is Māvalivaram, while the Brāhmaṇas call it by the more learned Sanskrit name Mahābalipuram, i.e. the city of Mahābali. In the Chōla inscriptions of the "Shore temple" we find the terms Māmallapuram, i.e. the city of Mahāmalla, and Tirukkaḍalmallai, i.e. the holy Mallai on the sea. Māmallapuram then formed part of Āmūr-nāḍu, a sub-division of Āmūr-kōṭṭam. Both this district and its sub-division were named after the present village of Āmūr³ near Māmallapuram. The four last of the subjoined inscriptions (Nos. 23-26) are at Śāļuvangup-pam, a village 2 miles north of Māvalivaram.

The wenderful monuments at the Seven Pagodas have attracted the attention of many ourists and antiquarians. A collection of notices of them was published at Madras in 1869 by Captain Carr under the title "Descriptive and Historical Papers Relating to the Seven Pagodas on the Coromandel Coast." By far the best and most authentic account was furnished in 1880 by Dr. Fergusson in his Cave Temples of India, pp. 105-159. The Madras Journal of Literature and Science for the year 1880 (pp. 82-232) contains an excellent guide, with a map, by Colonel Branfill, which will be much appreciated by visitors to the spot and will save them much time and trouble.

The important question of the authors and the dates of those excavations can be answered only by a careful study of the inscriptions engraved on them. These I published already in 1890 in the first volume of South-Indian Inscriptions, pp. 1-8. I now reprint my former readings and translations, with some improvements and a few additions, to accompany six plates which are based on excellent inked estampages, prepared recently under the personal

^{&#}x27; South-Ind. Inser. Vol. I. p. 68. The same form of the name occurs in the Nalayiraprabandham, the sacred scriptures of the Tamij Vaishnavas.

² South-Ind. Inser. Vol. I. p. 64.

No. 133 on the Madras Sureey Map of the Chingleput taluka. Compare South-Ind. Inser. Vol. 111. p. 165.

^{*} Two short inscriptions (Nos. 18 and 19) were only lately discovered by Mr. Venkayya. Of two others (Nos. 25 and 26) no fresh impressions were taken, and they are consequently not included in the plates.

supervision of Rai Bahadur Venkayya. For the introductory remarks and the notes I have utilised some fresh materials which have accumulated since the time of the original publication.

The language of the inscriptions is Sanskrit. Nos. 1-19, 25 and 26 are in prose, Nos. 20-24 in verse. The authors of the inscriptions themselves inform us that they were members of the ancient southern dynasty of the Pallavas. As none of the inscriptions contains any date, we must try to fix their approximate time on palmographical grounds. As the accompanying plates will show, the sculptors employed four different alphabets, three of which are of the southern type, while the fourth is in northern characters.

I.—The majority of the abort epigraphs on the monolith now styled "Dharmarājarratha" (Nos. 1-16) resemble the Mahēndravadi and Siyamangalam cave inscriptions which I have assigned to the Pallava king Mahēndravarman I.² Among the names and surnames of the king who excavated the "Dharmarāja-ratha" we find twice Narasimha (Nos. 1 and 7), which seems to have been his actual name, while the remaining designations look like mere surnames. Among the successors of Mahēndravarman I. there were two kings named Narasimhavarman. As the type of the alphabet is more archaic than that of the second set of inscriptions (which, as will appear presently, probably belongs to the time of Paramēšvaravarman I., the father of Narasimhavarman II.), the Narasimha of the "Dharmarāja-ratha" inscriptions may be identified with Narasimhavarman I., the son of Mahēndravarman I. and the contemporary and enemy of the Western Chalukya king Pulakēšin II. (A.D. 609-642). This identification is rendered almost certain by a reference to the published facsimile of the Bādāmi inscription of Narasimhavarman I.; the alphabet of this record is nearly identical with that of the "Dharmarāja-ratha" inscriptions. Consequently, the "Dharmarāja-ratha" must have been sculptured in the first half of the seventh century of our era.

II .- The second, very florid alphabet is found in the inscriptions of the Pallava king Atyantakama on the monolith now styled "Ganesa temple" (No. 20), in the two caves called "Dharmaraja-mandapa" (No. 21) and "Ramanuja-mandapa" (No. 22), and in a short inscription of the same king on the " Dharmaraja-ratha" (No. 17). The same alphabet is employed in the Kauchi inscriptions of Rajasimha and his son Mahendravarman (III.). The Kanchi inscriptions seem to call Rajasimha also Narasimhavishnu, and they state that he was the son of Ugradanda, 'the destroyer of Ranarasika's city.' Dr. Fleet was the first to point out that in one of the Kanohl inscriptions Ugradanda is named Paramesvara, and that the epithet Ranarasika refers to the Western Chalukya king Vikramāditya I. (A.D. 655 to 680). He thus established the identity of Paramesvara alias Ugradanda with the Pallava king Paraměšvaravarman I., who, as we know from the Kūram plates, crossed arms with Vikramaditya I. Dr. Fleet further concluded that Rajasimha alias Narasimhavishuu was the Pallava king Narasimhavarman II. of the copper-plate grants.5 This then was the king in whose time the Kailasanatha temple at Kanchi was built. The alphabet of Atyantakama's inscriptions at the Seven Pagodas agrees so closely with that of the Kailasanatha epigraphs that both must be assigned to about the same period. Now from verse 2 of No. 20 I venture to conclude that Atyantakama's actual name was Paramesvara. Consequently, I propose to identify this Atyantakama with either Paramesvaravarman I., the father of Rajasimha, or Paramēśvaravarman II., the son of Rajasimha,-preferably with Paramēśvaravarman I.,

¹ There are, however, a few prose words in No. 20, line 12; No. 21, L 12; No. 23, Il. 15 and 17; and No. 24, L 16.

Above, Vol. IV. p. 152 f., and Vol. VI. p. 320. The alphabet of the Trichinopoly cave inscription is more recent, and the opinion that it belongs to Mahandravarman I. (South-Ind. Inser. Vol. II. p. 341) cannot be upheld.

Ind. Ast. Vol. IX. p. 100, and Dr. Fleet's Dyn. Kan. Distr. p. 328 f.
 South-Ind. Inser. Vol. I. Nos. 24 and 27, and Vol. II. Plate iz.

[.] Dyn. Kan, Dietr. p. 329 f.

whose reign is well established by inscriptions on stone and copper, while, instead of Paramestaravarman II., the Kanchi inscriptions mention another son of Rajasimha, named Mahendravarman(III.). The second group of inscribed monuments at the Seven Pagodas would thus belong to about the third quarter of the seventh century.

III.—The third alphabet is that of an inscription of the Pallava king Atiranachanda on the left of the cave at Saluvanguppam (No. 23) and of three short epigraphs: one at the top of the same cave (No. 25), another on the "Dharmaraja-ratha" (No. 18), and a third near the "Gópis' Churn" (No. 19). It resembles, though it is not quite identical with, the alphabet of the Kasakudi plates of Nandivarman. The name (or surname) Atiranachanda is unknown from other sources. As the alphabet of stone inscriptions sometimes differs slightly from that of contemporaneous records on copper, there would be no objection to assigning these records, as will be done in the sequel, to the time of Nandivarman, the contemporary of the Western Chalukya king Vikramāditva II.

IV .- The last alphabet, an early kind of Nagari, is employed in the inscription on the right of the Saluvanguppam cave (No. 24) and in a short label at the top of the same cave (No. 26). No. 24 is a copy of the first six verses of Atiranachanda's epigraph on the left of the same cave (No. 23), and No. 26 is a repetition of the label in the third alphabet which is engraved immediately above it (No. 25). The characters resemble those of the Nagari version on the Pattadakal pillar of the Western Chalukya king Kirtivarman II.5 As we know that the predecessor of this king, Vikramaditya II.,3 took Kanchi from the Pallava king Mandivarman, it is perhaps not too bold to surmise that the inscriptions in the third and fourth alphabets belong to the reign of his enemy Naudivarman, who would then have borne the surname Atirapachanda. The sudden collapse of the Pallava power at the hands of Vikramaditya II. may have been the reason why so many of the excavations at the Seven Pagodas have remained unfinished. As I have remarked in South-Indian Inscriptions Vol. I. p. 10, we meet with the same plurality of alphabets in the Kailasanatha temple at Kanchi. The enclosure of this temple bears three tiers of identical inscriptions. The characters of the third tier are those of the epigraphs of Narasimhavarman II. The alphabete of the second and first tiers are, respectively, those of the left and right inscriptions of the Saluvatguppam cave. Consequently they must have been added at a later date by Atirapachanda (Nandivarman?).

I am fully aware that my remarks on the third and fourth alphabets do not rest on quite firm ground. But, in the absence of further information, we may place the inscriptions written in both alphabets in the time immediately preceding the conquest of the Pallava territory by Vikramāditya II. (A.D. 733-734 to 746-747). The fact that a northern alphabet was employed along with a southern one suggests that the artisans were recruited from the north of India.

The two last columns of the accompanying table will show at a glance to which of the Pallava kings of the third column I propose to assign each of the Pallava records of the Seven Pagodas. It is worth noting that, with his usual amgacity, Dr. Fergusson had already succeeded in fixing the approximate period of the remains at the Seven Pagodas at about 650 to 700.4

The contents of the subjoined inscriptions are singularly uninteresting and devoid of historical facts. All that we learn from them is a string of names and surnames of three different

South-Ind. Inser. Vol. II. No. 73. Above, Vol. III. p. 4, Plate.

South-Ind. Inser. Vol. I. p. 146; above, Vol. III pp. 3 and 359.

SYNCHRONISTIC TABLE OF THE PALLAVA KINGS OF KANCHI.

| Paraméérara Ugradapda |
|---|
| Lokaditya. Rajasimba Atyantakama |
| Sribbara Kanajaya (Narasizhavishuu). Mahëndravarman (III.). |
| |
| |

Pallava kings, and the fact that the excavations on which they are engraved were shrines of Iśvara (Śiva) and bore each the name of its respective founder. Thus the "Gaņēśa temple" (No. 20) and the "Dharmarāja-maṇḍapa" (No. 21) were called Atyantakāma-Pallavēśvara-griha, i.e. 'the Iśvara temple of Atyantakāma-Pallava.' On the "Dharmarāja-ratha," which had probably been founded by Narasimha[varman I.] alias Atyantakāma, the same name seems to have been bestowed by his descendant [Paramēśvaravarman I.] alias Atyantakāma or Raṇajaya (No. 17). The Śāļuvaṅguppam cave bears the label Atiraṇachaṇḍa-Palla [vēśvara-griha] (Nos. 25 and 26), i.e. 'the Iśvara temple of Atiraṇachaṇḍa-Pallava.'

The last column but one of the table on page 4 shows that each of the three Pallava kings Narasimha, Paramöšvara and Atirapachapda bore the two surnames Śrīnidhi and Śrībhara. In this connection I would like to mention certain Pallava coins from Māvalivaram which I saw in the cabinet of the Rev. E. Loventhal of Vellore. All of them bear on the obverse a bull (the crest of the Pallavas), and various legends above it. One of the coins, with a star on the reverse, reads Śrībharah; another, with a fish on the reverse, Śrīni[dhi]; and a third, with a cross on the reverse, Mānapara. With the legend of the last coin compare the biruda Atimāna in the inscription No. 9 of the "Dharmarāja-ratha."

A .- INSCRIPTIONS ON THE "DHARMARAJA-RATHA" AT MAVALIVARAM.

Nos. 1-16 of these inscriptions consist of a number of words in the nominative case, which their first decipherers, Drs. Babington and Burnell, took for names of deities. From a comparison with the remaining inscriptions of the Seven Pagodas, where several of them recur, it follows, however, that they are birudas of a Pallava king whose actual name seems to have been Narasimha (Nos. 1 and 7). Among these surnames, Atyantakāma, Śrinidhi and Śribhara were borne also by the two kings 'mentioned in the later inscriptions of the Seven Pagodas. Others appear again in the inscriptions of the Pallava king Rājasimha at Kānchi, viz. Parāpara Bhuvanabhājana, Śrīmēgha and Sarvatōbhadra.

The two last inscriptions on the "Dharmaraja-ratha" are not written in the same alphabet as Nos. 1-16. No. 17 follows the type of Nos. 20-22, and No. 18 that of No. 23. Each of them designates the "Dharmaraja-ratha" as 'the Isvara (Siva) temple of Atyantakama-Pallava.'

I.—First Storey.
a.—North.

No. 1.

वीनरसिंइ:

The glorious Narasimha.

b .- East.

No. 2.

प्रिधिविसार: श्रीभर:

Prithivisars (the best on earth). Sribhars (the bearer of wealth).

¹ Sir Walter Elliot's Coins of Southern India, Plate i. No. 34.

³ Ibid. No. 37. ³ Ibid. No. 38.

^{*} Madras Suresy Map, No. 43. Carr's Sepen Pagodas, p. 37, Plate xvii, p. 224.

³ The avnonym Avanibhajana occurs in the Siyamangalam cave inscription; above, Vol. VI. p. 320.

^{*} Read Whitest: The shortening of the final i of pritties is permitted by Panini, vi. 3, 63; compare the proper name Kalidan.

No. 3.

अवनभाजानः¹

Bhuvanabhajana (the owner of the world).

c.-South.

170. G-

[त्रो]मेघ: वैलोकावर्षन; विधि:

Srimegha (the cloud (showering) wealth). Trailokyavardhana (the bestower of prosperity on the three worlds). Vidhi.

No. 5.

चलक्तकाम: चनिकोभाय:

Atyantakāma (he whose desires are boundless). Anēkopāya (he (who knows) many expedienta). II .- Second Storey.

a .- North.

No. 8.

खिरभक्तिः सद्नाभिरामः विधि[:^{*}]

Sthirabhakti (he whose devotion is firm). Msdanabhirama (he who is as handsome as Love). Vidhi.

No. 7.

चीनरसिंहः सुवनभाजनः चीनेच[:] अप्रतिइतमासन[:*]

The glorious Narasimha. Bhuvanabhājana (the owner of the world). Śrimēgha (the cloud (showering) wealth). Apratihatasasana (he whose commands are unopposed).

No. 8.

सवाखकचाणः कासनकित: चमेगसाय:

Kamalalita (he who is as charming as Love.) Ameyamaya (he whose diplomacy is immeasurable). Sakalakalyana (the altogether prosperous).

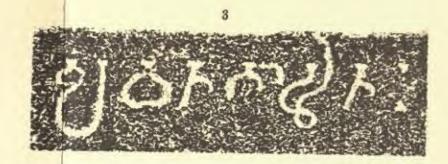
No. 9.

नवनमनोच्यः वाम[:] चतिसानः

Nayanamanchara (he who is pleasing to the eyes). Vama (the handsome). Atimana (he whose pride is exessive). h .- East.

¹ Read outside;

[।] Read अलेबीपाय: and compare the surname Upayanipepa in the Käfichi inscriptions.



्राध्याम् विभिन्न

Scale of Nos. 1—5: 18



























E. Hultzsch.



No. 10.

वाम: पराभर:1

Vama (the handsome). Parapara (the omnipotent).

No. 11.

चनुपमः नया[क्रु]र[:*]

Anupama (the matchless). Nayankura (the sprout of polity).

c .- South.

No. 12.

लकित:

Lalita (the charming).

No. 13.

नयनमनोचरः सर्वतोभदः

Nayanamanohara (he who is pleasing to the eyes). Sarvatobhadra (the altogether auspicious).

No. 14.

- बीनिधि: निक्तर:

Śrinidhi (the receptacle of wealth). Niruttara3 (the unsurpassed).

No. 15.

विधिः विभान्तः

Vidhi, Vibhranta (the passionate).

d .- West.

No. 18.

सत्यपराक्यमः परावरः

Satyaparakrama (he whose valour is true). Paravara (the omnipotent).

III .- Third Storey.

a.-East.

Read TUTY: (as in the Kanchi inscriptions) or TUTY: (No. 16). The softening of a single consonant between two vowels in parabhars, pridhicitars (No. 2) and ubhays (No. 5) is evidently due to the influence of the Tamil vermoular on the pronunciation of Sanskrit words.

With the first member of the compound Nayankara compare the surnames Bahunaya and Nayanusarin in the Känchi inscriptions. The second member, cakers, is synonymous with pôts or pollocs, from which the Pallavas derive their name; see South-Ind. Inser. Vol. II. p. 341, note 1. Compare Buddhyankura (above, Vol. VIII. p. 144 f.), Lalitankura (South-Ind. Inser. Vol. II. p. 341, and above, Vol. VI. p. 320), and Tsrunackura (No. 20 below, verse 7). The last birads suggests that we may have to read Kavankura for Nayankura.

See below, p. 9 and note 4.

* Compare the surnan es Mattapramatta and Mattavikāra in the K tūchī inscriptions.

Boad QUANT:

No. 17.

श्रीयत्यन्तकामपद्मवेचरगृह[म् ॥] रणजयः

The holy Īśvara (Śiva) temple of Atyantakāma-Pallava. Raņajaya (the conqueror in battle).

b.—West.

No. 18.

चत्यन्तकामपद्भवेश्वरग्टहम् ॥

The Isvara (Siva) temple of Atyantakama-Pallava.

B .- INSCRIPTION NEAR THE "GOPIS' CHURN" AT MAVALIVARAM.

According to Mr. Venkayya, who discovered this and the preceding inscription (No. 18) quite recently, No. 19 is engraved 'on a pillar of the rock-cut mandapa south-west of the "Gopis' Churn." It is in the same alphabet as No. 23 and consists of a single biruda.

No. 19.

खोवामांकुगः[।]

The glorious Vămănkuśa (bearer of a handsome elephant-goad).

C.—INSCRIPTION AT THE "GANESA TEMPLE," MĀVALIVARAM.

This inscription records that the monolith on which it is engraved was a temple of Siva and had been called 'the İśvara temple of Atyantakāma-Pallava' by its builder, king Atyantakāma. This prince bore the surnames Śrīnidhi, Śrībhara, Ranajaya, Tarunānkura, Kāmarāga, and several others. His actual name seems to have been Paramēšvara.

No. 20.

- ! सम्भवस्थितिसंहारकारणं वीतकारणः [।*]
 भूयादत्वन्तकामाय जगतां काममहैनः ॥ [१*]
- थ समायशिवमायोसावगुणो गुणभाजनः [।*] स्वस्यो निरुत्तरो जीयादनीगः परमेश्वरः [॥ २*]
- 3 यस्याङ्ग्रहभराक्रान्तः कैलासः सद्याननः [।*] पातालसगमकृदी श्रीनिधिस्तस्विभर्त्वजस् ॥ [३*]
- अस्तिप्रद्वेण मनसा भवभूषणलीलया [।*]
 दोणा च यो भुवो 'भारजीयाल त्रोभरचिरम् [॥ ४*]

^{&#}x27; The sussears of mi is doubtful.

Madras Survey Map, No. 24. Carr's Seven Pagodas, Plate xiv, pp. 57, 221, 224. Burnell, South-Indian Paleography, 2nd edition, p. 38, note 4.

¹ See below, p. 9, note 4.

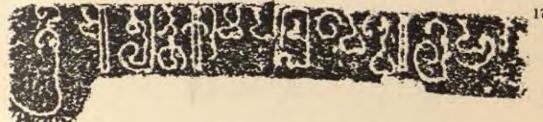
^{&#}x27; Here and in No. 21, line 5, the correct reading would be दीचा च बी सूर्व चर्च, which is found in verse 4 of Nos. 23 and 24.











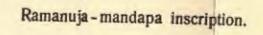


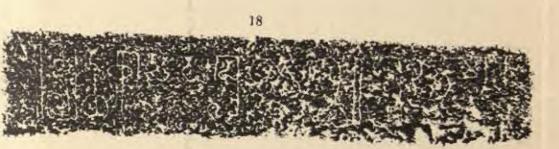








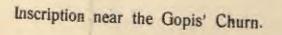




Scale +2







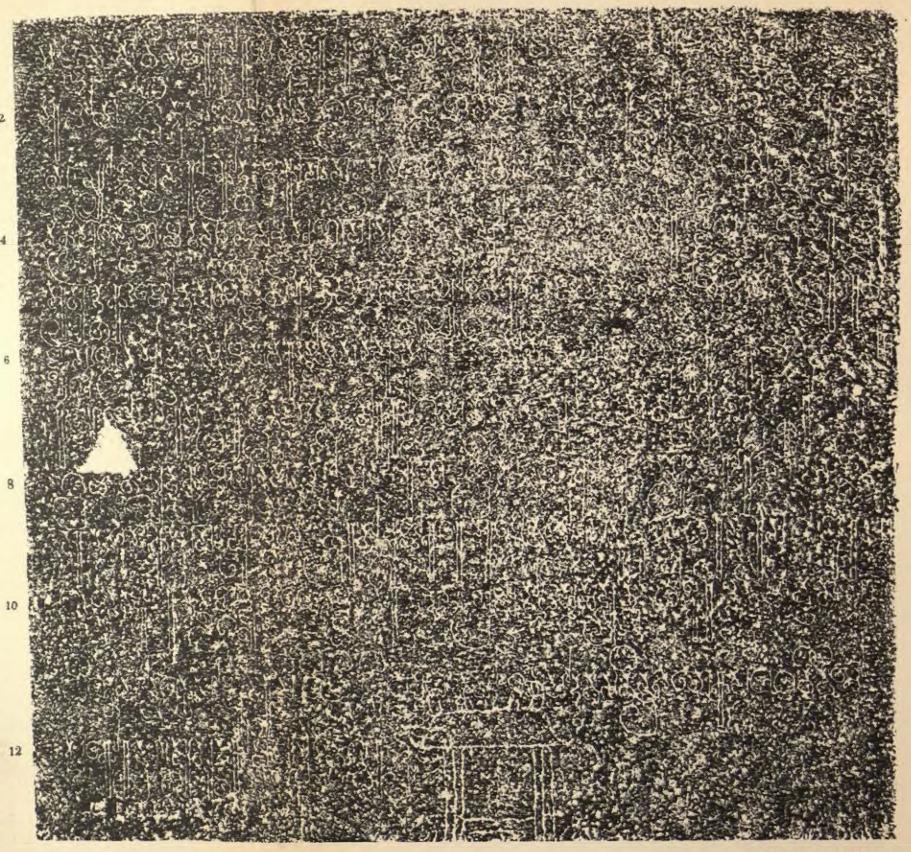


Scale -13









E. Hultzsch. Scale · 14 Collotype by Gebr. Plettine

- 5 अल्लकामी नृपतिविक्तितारातिमण्डल: [1*] ख्याती रणजयः शक्षीसीनेदं वेश्म कारितम् [॥ ५*]
- ज्ञ: स्वाणुर्विष्कल: सोम: पावकाद्या' वियदपु: [।*] भीम: श्रिवो विजयतां शङ्कर: कामसूदन: ॥ [६*]
- 7 राजराजो न विरससन्त्रमृत्र जनाईन: [1*] तारकाधिपति: खस्यो जयतात्तरणाङ्गर: ॥ [७*]
- योमतोत्वन्तकामस्य दिषद्र्यापदारिण: [1*] योनिधे: कामरागस्य इराराधनसङ्ग्रन: [॥ ८*]
- यभिषेकजलापूर्णे चित्ररहास्तुजाकरे [1*] घास्ते विद्याले सुमुखः शिरसार्सि शङ्करः ॥ [८*]
- तेनेदङ्गारितन्तुङ्गस्र्कंटेमीन्द्रगृहम् [1*] प्रजानामिष्टं सिहार्स गाइरी भूतिमिच्छता ॥ [१०*]
- धिक्रेवान्धिकेवान्युनरपि धिन्धिन्धगस्तु धिक्रोबाम् [।*] येषाच वसति इदये कुपयगतिविमो-
- 12 चनो बद्र: ॥ [११*] अत्यन्तकामपन्नवेश्वरगृह[म ॥*]

TRANSLATION.

(Verse 1.) Let (Siva), the destroyer of Love, (who is) the cause of production, existence and destruction, (but is himself) without cause, fulfil the boundless desires of men!

- (V. 2.) Let him be victorious, who is (both) without illusion (and) possessed of manifold illusion (Chitramaya), who is (both) without qualities (and) endowed with qualities (Gunabhājana), who is self-existent (Svastha) (and) without superior (Niruttara), who is without lord (and) the highest lord (Paramēšvara) !4
- (V. 3.) Srīnidhis bears on (his) head that Aja (Siva),6 pressed by the weight of whose great toe, the Kailasa (mountain) together with the ten-faced (Ravana) sank down into Patala.

¹ Read पावकात्मा.

The composer has treated the syllable gri as if it began with gr and could thus render the preceding rowel prosodically long.

By the expression ofyantakāmāya the panegyrist also alledes to the king's surname Atyantakāma.

All these epithets have to be applied in the first instance to Siva, and with slight changes of meaning to the king himself. Chitramaya occurs as the name of a Pallava king in the Udayandiram plates of Nandivarman (Souta-Ind. Inser, Vol. II. p. 372); compare also the birada Mayachara in the Kauchi inscriptions, and Ameyamaya in No. 8. With Gunabhajana compare Gunalaya in the Kanchi inscriptions, and Gunabhara, a surname of Mahendravarman L (see above, Vol. VI. p. 320). For Swastha see verse 7, and for Niruttara No. 14. Paramesvara is the only word in the whole inscription which looks like the actual name of the king. This view is suggested by the fact that two Pallava kings named Paramesvarman are known from copper-plate grants; see South-Ind. Isser. Vol. 11.

This birads of Paramesvara occurs also in verse 8. The same had been a surname of his predecessor Namairhha ; see No. 14.

^{*} Le. he is a devotee of Siva.

- (V. 4.) Let that Sribhara' be victorious for a long time, who bears Bhava (Siva) in (his) mind which is humbled with devotion, and (who bears) the earth on (his) arm like a coquettish ornament!
- (V. 5.) King Atyantakāma, who has subdued the circle of (his) foes, is famed (by the name of) Ranajaya; -- he caused to be made this abode of Sambhu (Siva).
- (V. 6.) Let (Siva) be victorious, who is (both) sentient (and) motionless (Sthaon),³ who is (both) undivided (and) the moon, who has (both) the nature of fire (and) a body of air, who is (both) terrible (Bhima) (and) kind (Siva), who is (both) beneficent (Samkara) (and) the destroyer of Love!
- (V. 7.) Let Taruṇānkura' be victorious, who is a king of kings (Rājarāja), (but) is not ugly (like Kuvēra), who is an emperor, (but) does not distress people, (while Vishņu is both Chakrabhrit and Janārdana), who is the lord of protectors (and) independent (Svastha), (while the moon is the lord of stars, but is waning in the dark half of the month and subject to eclipses)!
- (V. 8 f.) Just as in a large lake, filled with water (which is fit) for bathing, (and) covered with various lotus-flowers, handsome Sankara (Siva) abides on the massive head sprinkled with the water of coronation (and) covered with bright jewels—of the glorious Atyantakāma, who deprives (his) enemies of (their) pride, who is a receptacle of wealth (Srinidhi), who possesses the charm of Love (Kāmarāga), (and) who assiduously worships Hara (Siva).
- (V. 10.) He, desiring (to attain) the glory of Samkara (Siva), caused to be made this lofty dwelling-house of Dhurjati (Siva), in order (to procure) the fulfilment of (their) desires to (his) subjects.
- (V. 11.) Six times cursed be those in whose hearts does not dwell Rudra (Siva), the deliverer from the walking on the evil path!

(Line 12.) The Isvara (Siva) temple of Atyantakama-Pallava.

D .- INSCRIPTION AT THE "DHARMARAJA-MANDAPA," MAVALIVARAM.

This inscription is a duplicate of the one at the "Gapēša temple" (No. 20) and proves that, like the latter, the cave-temple now called "Dharmarāja-maudapa" was in reality a shrine of Siva, that it owed its foundation to the Pallava king Paramēšvara, and that this king had called it the 'Iśvara temple of Atyantakāma-Pallava' (l. 12) after one of his own surnames.

No. 21.

1 [सथावस्थितिसंदारकारणं वीतकारणः] [।*] भूयादत्वन्तकामाय जगतां 2 काममईन: ॥ [१*] श्रमायश्वित्रमायोसावगुणो गुणभाजन: [।*] सस्तो

² The same surname of Paramëśvara occurs in No. 17. It was borne also by Atiranachanda (Nos. 23 and 24, verse 6), and by Rājasimha of Kāńchi.

" While the trunk of a tree (sthans) is insentient.

* Who is divided into sixteen kalas.

5 Taranankura, 'the young sprout,' seems to have been a biredo of Parameivara. Compare above, p. 7, note 2.

" Siva shides on the head of Atyantakāma " means the same as " A. bears Siva on his head " (verse 3), eiz. " he is a devotee of Siva."

With this surname, which was borne also by Parameivara's successor Atirapachanda (see. Nos. 23 and 24, verse 1), compare the synonyms Madanābhirāma and Kāmalalita (Nos. 6 and 8), and Kāmavilāss in the Kāūchi inscriptions. The appellation "Kāmarāja temple" which Colonel Branfill attributes to the so-called "Ganāsa temple" rests on a misreading in Dr. Burnell's transcript, vis. Kāmarāja for Kāmarāga.

* Madras Survey Map, No. 44. Madras Journal of Literature and Science for 1880, p. 135.

¹ This surname was also borne by Narasimha (No. 2), by Atiranachanda (Nos. 23 and 24, verse 4), and by Bājasimha of Kāńchi.



Dharmaraja - madapa inscription.

From inked estampages supplied by Rai Bahadur V. Venkayya.

- 3 निकत्तरो जीवादनीयः परमेश्वरः ॥ [२*] यस्त्राङ्ग्रहभराक्रान्तः कैलासस्त्रद-
- 4 माननः [1*] पातालमगमन्मूर्ता त्रीनिधिस्तम्बिभर्त्वजम् ॥ [३*] भित्रप्रह्मेण मनसा भवं भू-
- 5 वर्गकीक्या [1*] दोखा च यो भुवो भारं जीयात्व श्रीभरविरम् ॥ [8*] अत्वन्त-
- 6 कामी नृपतिर्विर्व्वितारातिमण्डल: [।*] स्थाती रणजय: ग्रभीस्तेनेदं वैद्य
- 7 कारितम् ॥ [५*] जः स्थाणुर्विष्कालः सोमः पावकाला वियदपुः [।*] भीमः ग्रिवी विजय-
- 8 तो ग्रङ्गरः काससूदनः ॥ [६*] राजराजो न विरसचक्रमः जना-ईनः [।*] तारकाधिपतिः खस्यो
- 9 जयतात्तरणाङ्गरः । [७*] श्रीमतीत्यन्तकामस्य दिवहप्पीपचारिणः [।*] श्रीनिचेः का-
- 10 मरागस्य इराराधनसङ्किन: ॥ [c*] श्रमिवेकजलापूर्वे चित्ररह्मान्तुजाकरे [।*]
- 11 स्ते विणाले सुसुखः शिरसारसि शङ्करः । [८*] तेनेदं कारितन्तुङ्गसूर्काटे-ग्रीन्दिर-
- 12 ग्टडं [1*] प्रजानामिष्टसिडार्खं शाहरीं भूतिमिच्छता ॥ [१०*] शी ॥ श्रतमामपन्नवेश्वरग्टडम् ॥
- 13 धिक्तेवान्धिकेवाम्युनरिं धिन्धिन्धिमस्तु धिक्तेवाम् [।*] येवाच वसति
- 14 इदये कुपयगितविभोचकी बद्धः ॥ [११*]

E .- INSCRIPTION AT THE "RAMANUJA-MANDAPA," MAVALIVARAM.

This inscription consists of the last verse (11) of the two preceding inscriptions (Nos. 20 and 21). We may conclude from it that the cave-temple in which it is engraved was likewise a shrine of Siva, and that it was excavated during the reign of the Pallava king Paramesvara.

No. 22.

- 1 [बी][: 1*] [धि]केष[ां] धिके[षां] पुनरपि धिन्धिन्धगस्तु धिके-
- 2 वां [1*] येवाच वसति इदये कुपयगति-
- 3 विमोचकी बद्र: ॥

¹ See above, p. 8, note 4.

Expressed by a symbol.

Madras Survey Map, No. 48. Carr's Seven Pagodas, p. 222, note.

F .- INSCRIPTIONS ON THE CAVE-TEMPLE AT SALUVANGUPPAM.

The inscription on the left of the cave (No. 23) records that this excavation was a temple of Siva, and that it was made by a king Atiranachanda who named it after himself Atiranachandešvara, i.e. 'the Isvara (temple) of Atiranachanda.' Verses 1, 2 and 4 are identical with three verses of the Māvalivaram inscriptions of Paramēšvara (Nos. 20 and 21), and contain the birudas Atyantakāma, Srīnidhi, Kāmarāga and Srībhara. Other surnames of Atiranachanda were Ranajaya, Anugrašīla, Kālakāla, Samaradhanamjaya and Samgrāmadhira. Most of these epithets are applied to Rājasimha in his inscriptions at Kānchi.

The inscription on the right of the cave (No. 24) is a Nagari copy of the first six verses of No. 23.

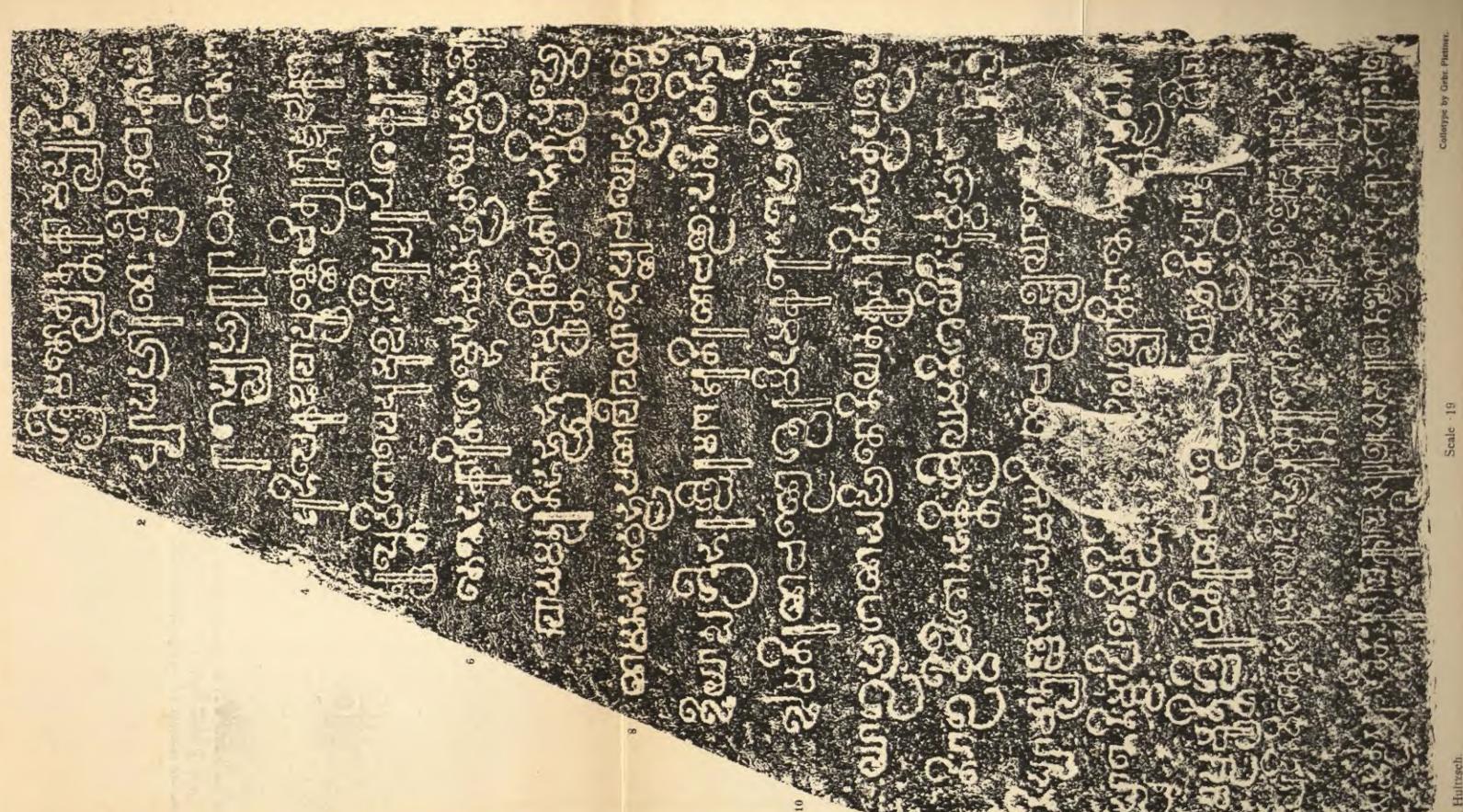
Above the entrance of the cave there are two identical inscriptions, according to which the full name of the temple was 'the Isvara temple of Atirapachanda-Pallava.' The first of these two short epigraphs (No. 25) is in the same alphabet as No. 23, and the second (No. 26) in the same Negari characters as No. 24.

No. 23.

- 1 त्रीमतीत्यन्तकामस्य दिष[इ]-
- 2 र्पापहारिण: [।*] श्रीनिधे: काम-
- 3 रागस्य इराराधनसंगिन: ॥ [१*]
- 4 अभिवेकजनापूर्णे चित्रस्त्राम्बुजाकरे [1*]
- 5 बास्ते विभाने सुमुखः भिरसारसि शंकरः ॥ [२*]
- 6 तेनेटं कारितं प्रकोर्भवनं भूतये भूषः [18] की-
- 7 लासमन्दरनिभं भूसतां सूर्तिं तिष्ठता ॥ [३*] सितापद्धे-
- 8 ण मनसा भनं भूषणजीलया [1*] दीच्या च यो भुवन्धत्ते
- 9 जीयास श्रीभरिवरम् ॥ [8*] श्रतिरणचण्डः पतिरविनमु-
- 10 जामतिरणचण्डेयरमिदमकरीत् [।*] इइ गिरितन-
- 11 यागुइगणसहितो नियतक्षतर्रातभेवतु पश्चप-
- 12 ति: ॥ [५*] गुर्व्वोमीयानभितं त्रियमितिययिनीं दुर्वेषं भारमध्या
- 13 निसामान्यच दानं समम[तिर]णचण्डाख्यया [यी विभक्ति] [1*]
- 14 स्थाने निर्मापितिस्मिन्व[दितरणज]यस्यातिना तेन [भ]र्त्ता भूताना-
- 15 मष्टमूर्तिविरमितरणच[ण्डेचरे] यातु निष्ठाम् [॥ ६] भ[तुम]मील[: ॥]
- 16 यदि न विधाता भरतो यदि न इरिर्जारहो न वा स्कन्द: [1*] वोहुं क इव
- 17 समर्थसंगीतं कालकालस्य ॥ [७°] घों ॥ समरधनस्त्रयः संयामधीरः॥ घों ॥

2 Expressed by a symbol.

Madras Survey Mop. No. 58. Carr's Seven Pagodas, Plate xv., pp. 59, 120, 222.—Nos. 2 and 3 of Carr's Plate xv. are two independent eye-copies of the same inscription (No. 24).



om inked estampages supplied by Rai Bahadur V Venkayya.



TRANSLATION.

- (Verse 1 f.) Just as in a large lake, filled with water (which is fit) for bathing, (and) covered with various lotus-flowers, handsome Śańkara (Śiva) abides on the massive head—sprinkled with the water of coronation (and) covered with bright jewels—of the glorious Atyantakāma, who deprives (his) enemies of (their) pride, who is a receptacle of wealth (Śrīnidhi), who possesses the charm of Love (Kāmarāga) (and) who assiduously worships Hara (Śiva).
- (V. S.) For the welfare of the earth, he who is standing at the head of the lords of the earth caused to be made this house of Śambhu (Śiva), which resembles (the mountains) Kailāsa and Mandara.
- (V. 4.) Let that Śrībhara be victorious for a long time, who bears Bhava (Śiva) in (his) mind which is humbled with devotion, and (who bears) the earth on (his) arm like a coquettish ornament!
- (V. 5.) Atiraņachaņda,³ the lord of the rulers of the earth, made this (temple called) Atiraņachaņdēśvara. Let Paśupati (Śiva), attended by the mountain-daughter (Pārvati), Guha (Skanda), and the demigods (Gaņa), always take delight (in residing) here!
- (V. 6.) Let the eight-formed lord of beings (Siva) take up (his) abode for a long time in this temple (called) Atiranachandesvara, which was caused to be built by him who, together with the name of Atiranachanda, owns deep devotion to Isana (Siva), abundant wealth, the heavy burden of the earth and unequalled liberality, (and) who is renowned by the name of Ranajaya!
 - (L. 15.) Anugrasilas (the gentle-minded).
- (V. 7.) Who is able to master the music of Kālakāla, unless the performer (were) Bharata, Hari, Nārada, or Skanda ?7
- (L. 17.) Samaradhanamjaya⁸ (Dhanamjaya (i.e. Arjuna) in battle). Samgrāmadhīra⁹ (he who is firm in war).

No. 24.

- I श्रीमतीत्वन्तकामस्य
- 2 दिषदृष्पीपहारिण: [।*] स्रीनि॰
- 3 धे: कामरागस्य इराराध[न]संगि-
- 4 न: ॥ [१*] अभिषेकजलापूर्णे चित्ररह्नां-
- 5 बुजाकरे [1*] चास्ते विभाले समुख: भिरसार-
- 6 सि ग्रंकर: ॥ [२*] तेनेदं कारितं ग्रस्मोर्भव-
- 7 नं भूतये भुवः [।*] कैलासमन्दरनिभं भूभृतां

¹ Verses 1 and 2 are identical with verses 8 and 9 of Nos. 20 and 21.

³ This verse is nearly identical with verse 4 of Nos. 20 and 21.

^{*} This name of the king who built the temple was also a surname of Rajasimha of Kanchi.

^{*} See above, p. 10, note 2.

^{*} This was also a surname of Rajasimha of Kanchi.

^{*} The same surname occurs in the Kanchi inscriptions.

Compare the Känchi inscriptions, where Rajasimha's skill as a musician is alluded to by the birudas Atodva-Tumburu, Vädya-Vidyādhara and Vinā-Nārada.

^{*} The same was a surname of Rajasimha of Kanchi.

Compare the synonymous biredas Ahavadhīra and Raņadhīra in the Kanchī inscriptions.

- 8 मूर्जि तिष्ठता ॥ [३°] भिक्त[प्रहे] व मनसा भव भूवण-
- 9 जीजया [1*] दोखा च यो भुवन्धत्ते जीयात्व यीभरवि-
- 10 रम् ॥ [8*] चतिरणचण्डः पतिरवनिभुजामितर-
- 11 णचण्डेयरमिद्मकरीत् [।*] इह गिरितनयागु-
- 12 इगणसिंदतो नियतक्तरिर्भवतु पश्रपति: ॥ [५ *]
- 13 गुर्वोमीयानभितां चियमतिययिनीं दुर्वेष्ठं भारमुर्व्या निस्ना-
- 14 मान्यच दानं सममितरणच[ण्डाख्य]या [यो वि]भित्ति [।*] स्थाने
- 15 निर्मापितेसिन्विदितर[णजयस्थातिना ते]न भूता भूताना-
- 16 मष्टमूर्तिवरम[तिरणचण्डे]यरे यातु निष्ठाम् ॥ [६*] स्त्रस्ति ॥

No. 25.2

धतिरणचण्डपल विश्वरयहम् ॥°]

No. 28.8

धतिरणचण्डपक्षविश्वरग्रहम ॥°]

Translation of Nos. 25 and 28.

[The Iśvara (Śiva) temple of] Atiranschanda-Palla[va].

No. 2-RAYAGAD PLATES OF VIJAYADITYA;

SAKA-SAMVAT 625.

By K. B. PATHAR, B.A., POONA.

The subjoined inscription is engraved on three copper-plates, each measuring about 9½*× 4½*. They belong to the Patil of Rayagad in the Mahad taluka of the Kolaba District. The plates are strung on an oval ring whose diameters are 3½* and 2½*. The edges of the plates are raised into rims to protect the writing. The seal on the ring bears in relief on a countersunk surface a standing boar facing to the proper left. The weight of the plates together with the ring and seal is 140 tolas. The writing is well engraved, but is full of mistakes and omissions. The latter are often very serious. For instance in the date (1, 29), the syllables of the done in line 32. We cannot be sure if the names of the donative villages have been correctly engraved in 1, 32 f. The use of the upadâmānīya in lines 21, 23, 25 and 29 deserves to be noted. The historical portion of the subjoined record closely resembles that of the three Nerūr copper-plates of Vijayāditya edited by Dr. Fleet,* and the corresponding passage of the Kēndūrs and the Vakkalēri plates of Kīrtivarman II.5*

The subjoined inscription is dated in the 8th year of the early Chalakya king Vijayāditya, when [six hundred] and twenty-five years of the Saka era had passed away, and records the grant of the villages named Jalla and ...nirūļaņa to a Brāhmaṇa by the king when his victorious camp was at Marivasati in Karahāṭaka.

¹ Bead He.

Above the entrance of the cave-temple. Below No. 25.

^{*} Ind. Ant. Vol. IX. pp. 125-134.

^{*} Above, Vol. IX. pp. 200-206.

^{*} Ibid. Vol V. pp. 200-205.

From inked estampages supplied by Rai Rahadur V. Venkavya



Niravadya-Punyavallabha, the writer of the present grant, was the successor of Sri Rāma-Punyavallabha, who wrote in Saka-Samvat 616 the Harihar plates of Vinayāditya; and Niravadya Śrimad-Anivārita Punyavallabha was the writer of the Kānchi inscription of Vikramāditya II. Dhanamjaya-Punyavallabha, the writer of the Kēndūr grant in Śaka-Samvat 672, speaks of himself as Śrimad-Anivārita Dhanamjaya-Punyavallabha in the Vakkalēri plates of Śaka-Samvat 679.

It seems to me that we have four generations of writers mentioned in the foregoing grants, vis. Śri-Rāms, Niravadya, Anivārita and Dhanamjaya. Panyavallabha was evidently the family name. Niravadya seems to have been a biruda originally of king Vijayāditya and Anivārita of his son Vikramāditya II. In due course, Niravadya became the name of the writer of Vijayāditya's grants and Anivārita of his son who wrote the Kānchī inscription of Vikramāditya II. The latter was apparently engraved not long after the accession of Vikramāditya, who seems to have conquered the Pallava capital soon after his coronation. The name Niravadya Śrimad-Anivārita Punyavallabha has probably to be explained as "the illustrious Anivārita-Punyavallabha (son of) Niravadya." Anivārita's son was apparently Dhanamjaya, who in the earlier Kēndūr inscription calls himself Dhanamjaya-Punyavallabha, but prefixes the name of his father in the later Vakkalēri plates.

TEXT.

First Plate ; Second Side.

- 1 स्वस्ति [॥*] जयत्याविष्कतं विष्णोर्व्या[रा*] सं चीभितार्क्षवं [॥*] दचिणोवतदंष्ट्राय-वित्रान्तभुवनं वपु: [॥*] श्री-
- 2 मतां सकत्रभु[व*]नमंद्गूयमानमानव्यसगोचाणां इारितिपुचाणां सप्तलोकमात्रभ-रभिव-
- 3 र्हितानां कार्त्तिकेयपरिरचणप्राप्तकल्याणपरम्पराणां भगववारायणप्रसादसमासा-
- 4 दितवराइलाञ्चनेचणचणवभीकताभेषमहीधतां चलिकानां कुलमलङ्गि (र*)क्योरखमे-
- 5 धावस्यसानपवित्रीकृतगात्रस्य त्रीपुलवेशीयसभमहाराजस्य सूनः प्राक्त-
- 6 माक्रान्तवनवास्यादिपरतृपतिमण्डलप्रणिवहविग्रहकोत्तिः श्रीको[त्तिं*]वर्म्मपृथिवी-
- 7 वज्ञभमद्वाराजस्य पृ(प्रि)यात्मज[:] समर[सं]स्प्र(स) ज्ञसकको त्तरायधे खर्त्यो हर्षे वर्ड-
- 8 नपराजयोपात्तपरमेखरयव्स्य स्त(स)त्वायययोष्टिविविवसममहाराजाधिरा-
- 9 जपरमेखरस्य प्र(प्रि)य[त*]नयस्य प्रजातनयस्य खड्डमाचसहायस्य चित्रक-

Second Plate; First Side.

- 10 खाभिधानप्रव[रतु*]रंगमेणै[कि*]नैवो[त्त]ारितायेषविजिगोषोरवनिपतिवितयान्तरितां स्वगु-
- 11 रो[:] त्रियमालसात्कत्य प्रभावकुलिशद्लितपाच्छाचोळकेरळकळ[भा*]प्रशृतिभूभ-ददभवि-

¹ The Nerür plates of Vijayaditya, dated in Saka-Sathvat 627 (Ind. Ast. Vol. IX. p. 132), were also written by the same man.

³ [As will be seen from the accompanying photo-lithographic plate, the originals are either damaged or covered with rust in several places. Mr. Pathak's text is in those places based evidently on allied records. It is, however, just possible that the writing is better seen on the original.—Ed.]

- 12 श्रमस्मानन्यावनतकाचीपतिमकुर्य्च "बिन्नितपादाब्बुजस्य विक्रमादित्यस्य [सत्या"]-यययी-
- 13 पि(ए)यिवीवत्तभ[म*]हाराजा[धि*]राजपरमेख[र*]भट्टारकस्य ए(प्रि)यस्नोः पितु-राच्च[या]
- 14 बालेन्द्रभेखरस्य तारकारातिरिव दैत्यवलमतिसमुदत्तं(तं) धे(त्रे)राज्यकाश्वीपति-बल-
- 15 मवष्टभ्य करदीक्रतकमे(वे)रपारसीकसिंहकादिदीपाधिपस्य सकलोत्तरा-
- 16 प्रयनायमयनीपार्ज्जितीर्ज्जितपार्कि[ध्व]जादिसमस्तपारमैखर्थिचि[इ]स्य वि-
- 17 नयादित्वसत्वायययोष्टियवीवज्ञभमहाराजाधिराजपरमेचरभ-

Second Plate; Second Side.

- 18 हारर(क)स्य प्र(प्र)यात्मनक्षेत्रव एवाधिगताथे[षास्त्र]या[स्ति] दिच्याषा(गा)-विनयिनि
- 19 पितासहे सम(सु)नु(न्सू) सितनि[खि*] सकण्टक[सं]हतिरत्तराष(प)यवि[जि*]गीयो-गैरोरयत एवाह-
- 20 'वव्यापारमा[च]रनिवरातिगजघटापाटनविश्रीस्थं(रर्यं)माण्कपाणधारस्यमग-
- 21 विग्रहाग्रे[सर:*] सत्सा(न्सा) वाइसरसिक अपरान्स(स्) खीकतश्रत्रमण्डली गंगायस-
- 22 किञ्जणपडढकामहाग्रन्दचिक्रकमाणिक्यमतंगनादीन्य[नु](त्)सारकु-
- 23 र्वन्परें ४पक्त[ा]यमानैरासाद्य कग(य)मपि विधिवधादपनीतीपि प्रतापा[दे]-
- 24 व विषयमकोपमराजकमुत्सारयन्वत्छ(स)राज इवानपेचितापरय(स) इा-
- 25 यकस्तदवयर्ह[ा] विरगेत्व सभुजावष्टभाषमाधिति(ता) ग्रेषविचमार×प्रभु-
- 26 रखिकतम्बिनयतात्क(क्क)नुमदभक्तनता[दुदा]क(र)ताविरवत्य(दा)तादाः

Third Plate ; First Side.

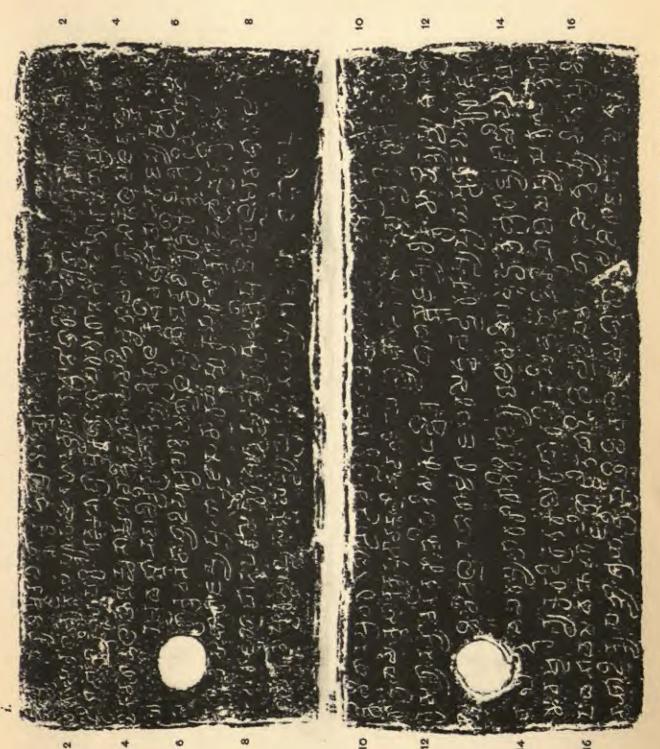
- 27 सम[सा]स्त'भुवनायलायलास्रवल'पारमैयर्थव्यक्तिहेतुपाळिध्वनाद्यु[क्वल]पा-
- 28 ज्यराज्यो विज[या]दित्यसत्यात्रयत्रीपृथिवीवज्ञभमन्तराजाधिराजप[र]मेश्वर-
- 29 भहारतसम्बंगिवम[ा]न्नापयति विदितसस्तु वीस्त्राभि×पञ्च[वि]मत्युत्तरम्(ष)[दक्र-तेषु*] ष(म)त-
- 30 विष(ष) च(६व) तीरेपु(तेषु) प्रवर्ष्ट्र(है) सानविजयराज्यसंवत्सरे पष्टमे वर्त्तमाने विजयराज्यसंवत्सरे पष्टमे वर्त्तमाने

^{1 [}The photo-lithographic plate has only "quanter .- Ed.]

[ा] Read ेव्यापारमाचरवराति as in the Kendur plates (above, Vol. IX. p. 202, text line 22).

a Omit बा. a Omit सु. a Read ेन्द्रयश्वारस्

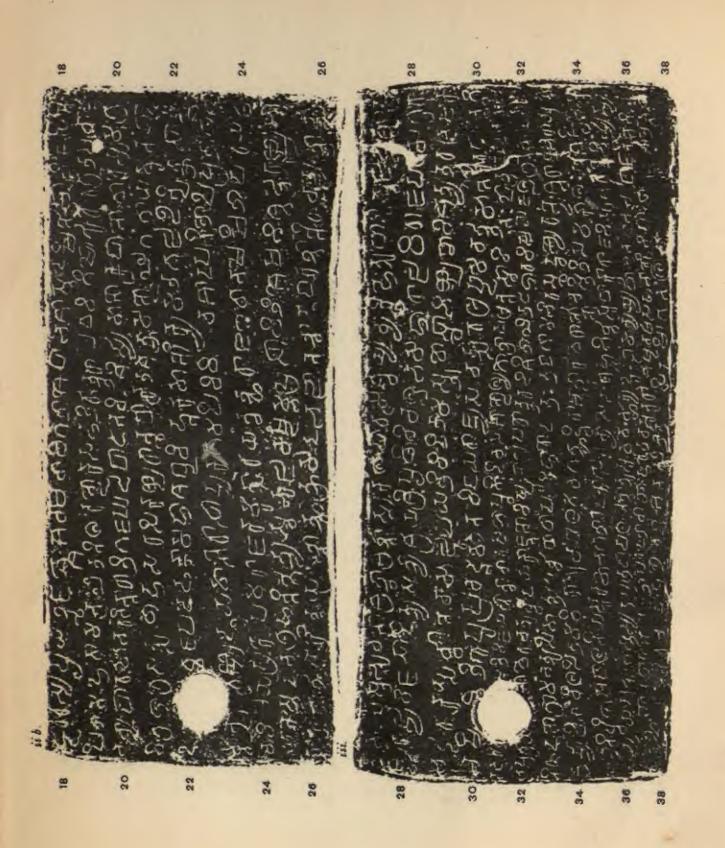
^{* [}The reading on the original is जरहा[ट]नितरमरिवस्ति; what was intended may be करहाटनगरमधिवस्ति.—Ed.]



W. GRAGGB, PHOTO-LITH

CALE -75.

VENKAYYA



- 31 र(त)सरि[व]सितविजयसा(स्क)न्यावारे महाप्र(ष्ट)सीदिवसे प्रास्ड(स्डि)स्वगी-वाय समस्वावि(मि)नः पौत्राय [दे]ववी(दी)चि-
- 32 तपुत्रा[य] ¹नाघेरचतुर्व्वपायकाच्चण विष्णुण अपरोत्तरदिशि तालितटाचारिवषये जन्नग्रामस्र[वि].
- 33 निरुक्षणप्राम[:*] चतु[:*]सीमान्तसर्व्ववाधापरिहारो दतः(त्तः) तदागाम(मि)-भिरमादंधीरन्वे(न्यै)य राजभिरायुरै-
- 34 वर्ष्यादीनां विलसितमचिरांशचञ्चलमवग[च्छिक्कि]राचन्द्राक्षेधराण्यंवस्ति(स्थि)तिसमका-लं [य]ग्रव्यि(स्ति)भि[:*] ख-
- 35 दित(त्ति)निर्विशेषं पालनीयमुक(क)च भग[व*]ता वेदव्यासेन व्यासेन [॥*] बहुभिर्व्वसुधा [भु*]का राजभिसागरादिभिर्योख
- 36 यस्य यप(दा) भूमिस्तस्य तस्य तदा [फ]लं[॥*] [स्व]न्दातुं समव(इ)च्छक्यं दु:[ख]मन्यय्य(स्व) पालनं [।*] दानं व[ा] पाल(ल)नं वैति [दा]-
- 37 [नाक्ट्र]योनुपालनं[॥*] खदतां(त्तां) परदतां(तां) वा यो इरेत वसु[स्व]रां ग्रष्टं(षष्टिं) [व]र्षसहभा(सा)चि विपा(ष्टा)यां जा[यते] क्रिमि[:] [॥*]
- 38 निरवदापुख्यवसभेन लिखितसिदं [प]ा(मा)म(स)नं 🔘 [॥*]

No. 3.—BIJAPUR INSCRIPTION OF DHAVALA OF HASTIKUNDI; VIKRAMA-SAMVAT 1053.

By PANDIT RAM KABNA; JODEPUR.

A short paper on this inscription has already been written by the late Professor Kielhorn.² But as the full text of the inscription was not published by him, I was induced by Mr. D. R. Bhandarkar to prepare a fresh transcript, as far as practicable, with the help of the original stone which has now been sent to the Ajmer Museum by the kind permission of His Highness the Maharaja of Jodhpur.

The inscription was originally discovered by Captain Burt "in the interior of a gateway leading to Mandir, distant one kös from Beejapoor, on the route from Odeypore to Sirohi near Mount Ābū." But, according to local report, the stone was originally fixed in the wall of a solitary Jaina temple situated about 2 miles from the village of Bijāpur in the Bāli (Godwār) District of the Jodhpur State. It was subsequently removed to the dharmasalā belonging to the Jaina mahājans of Bijāpur, whence it was brought to the Historical Department of the State and is now kept in the Ajmēr Museum.

There are 32 lines of writing in this inscription covering a space of nearly 2' 8½" broad by 1' 4" high. The record is, on the whole, in a fair state of preservation; a considerable portion of it has, however, suffered from the effects of the weather. The first and second lines are very much worn out. There are, besides, a few letters here and there which have peeled off. The size of the letters is about ¾" and the characters are Năgarī (of the northern class of alphabeta)

¹ [The donee's name has to be looked for in this compound; perhaps नाचरपतुर्वेदिने is meant.—Ed.]

I Jour. of the As. Soc. of Bengal, Vol. LXII. Part I, No. 4, pp. 309-14.

^{*} Ibid. Vol. X. p. 821.

resembling the Harsha inscription of Vigrabarāja of Vikrama-Samvat 1030, as remarked by the late Professor Kielhorn. The language of the inscription is throughout Sanskrit verse, excepting in lines 22 f. and 32. As regards orthography, no particular care seems to have been taken to distinguish between b and v. The letter b occurs in the word "danambuda in line 2; bamdhā", l. 13 and 21; "ālambatē, l. 20; "bhavābdhi, l. 22; Balabhadra", l. 25; and bahubhir", l. 30. Consonants have, as was usual in those days, been doubled after r. Parasavarņa rules have not been observed in their entirety. Generally, the anusvāra has been used, yet instances of masal compounds are also to be met with, e.g. in "bhandanaśaunda", line 5. There is very little difference between r and d. In some places y has wrongly been engraved for p. S and s have sometimes been confounded. The sign for the upadhmāniya occurs only once (line 1) and its form is worthy of note.\(^1\) There are ornamental decorations below the word tri occurring thrice in the last line (32).

Practically speaking, there are two separate inscriptions incised on one and the same stone. The first is dated [Vikrama]-Samvat 1053 (Il. 19 and 22) and the date of the second is the Vikrama year 996 (Il. 31 and 32). The first inscription extends from line 1 to line 22 and consists of 40 verses of a praiasti composed by Süryacharya (1. 21). The praiasti opens with two verses in praise of the Jinas, or Tirthamkaras as they are also called. Verse 3 apparently mentions a royal family whose name is unfortunately lost. In verse 4 we are introduced to prince Harivarman and his wife Ruchi. From Harivarman sprang Vidagdha (v. 5), who is described in the second part of the inscription as a Rashtrakuta. Vasudeva was the preceptor of Vidagdharaja (v. 6), who imparted to the prince spiritual knowledge and induced him to erect a temple dedicated to the god Jina in the town of Hastikundi. The prince had himself weighed against gold, of which two-thirds were allotted to the god and the remainder to the Jaina preceptor (Vasudeva). Vidagdha was succeeded by Mammata (v. 8) and Mammata by Dhavala (v. 9). The last prince is eulogized in no less than ten verses. In verse 10 he is said to have given shelter to the armies of a king whose name is lost and of the lord of the Gürjaras, when Muñjarāja had destroyed Aghāţa, the pride of Mēdapāţa (Mewar) and caused them to flee. This Munjaraja, as correctly pointed out by the late Professor Kielhorn, must be the same as Vakpati-Munja of Malwa for whom we have the dates V.S. 1031, 1036 and 1050. The lord of the Gürjaras here referred to was probably no other than the Chaulukya sovereign Mülarāja I. himself mentioned in verse 12 below. The prince whose name is not clear, was perhaps the ruler of Medapata, and it seems tempting to read his name as Khomans, but he appears to have flourished long prior to the time of Munja and cannot, therefore, be reasonably taken to be his contemporary. Aghāṭa, which Muñjarāja destroyed, is doubtless Āhaḍ, near the present Udaipur station, from which a well known Géhlöt clan derives its name, sis. Ahadiya. In verse 11 Dhavala is spoken of as having afforded protection to Mahendra against Durlabharaja. Durlabharaja is correctly recognised by the late Professor Kielhorn to be the prince of that name, who was the brother of the Chahamana Vigraharaja of the Harsha inscription dated V.S. 1030.3 The name of Durlabharaja also occurs in the Bijolia and Kinsaria inscriptions. Mahandra has been correctly identified by the same learned professor with Mahandra, son of Vigrahapals, and grandson of Lakshmana in his paper on "The Chahamanas of Naddula." In verse 12 Dhavals is said to have given support to Dharanivaraha, whose power had been completely exterminated by Mülaraja. The last prince is unquestionably the Chanlukya sovereign of that name, as said above. But it is by no means certain who Dharapivaraha was. It is not unlikely that he was the Paramara king

1 [This symbol is inserted over the vicarge and above the line. Consequently it is doubtful if the symbol by itself can be taken as the spaddmaniya.—Ed.]

³ [Some of the verses are numbered on the original stoca. But there is a mistake in the numbering which is made in verse 24 (marked 25) and which continues to the end. Consequently, there are only 40 verses in the inscription, while their number, according to the engraver, is 41.—Ed.)
³ Above, Vol. II. p. 119.

p 2

of that name who according to tradition was the ruler of Nav-kot Marwar, and who is reported in an ancient Hindi verse to have distributed the nine forts (nac-kôt) amongst his brothers.1 Verses 13-18 bestow conventional praise on Dhavala without conveying any historical information. Verse 19 tells us that he renounced the world, in his old age, after having placed his son Balaprasada on the throne. The following two verses again are merely enlogistic. Verse 22 says that the capital of Balaprasada was Hastikundika (Hathandi). Verses 23-27 are devoted to the description of Hastikundi and contain nothing historical. The next two verses speak of a sari named Santibhadra who is mentioned in verse 30 to be the pupil of Vāsudēva, doubtless the preceptor of Vidagdharāja referred to above in verse 6. Verse 33 informs us that the goshthi of Hastikundi renovated the temple of (Rishabhanatha), the first Tirthamkara. In verses 36-37 we are told that the temple had first been built by Vidagdharaja, but that after its restoration the image was installed by Santibhadra in the (Vikrama-) year 1053, on the 13th of the bright half of Magha. In the verse following, it is stated that Vidagdharaja had made a grant to the temple when he had himself weighed against gold and that afterwards Dhavala in conjunction with his son made a gift of a well called Pippals. Verse 39 expresses a wish for the permanence of the temple, and verse 40 says that the praiasti was composed by Süryacharya. Then follows in prose the date given above, but with more details. It is Sunday, the 13th of the bright half of Magha of the Vikrama year 1053 when Pushya was the nakshatra. According to the late Professor Kielhorn, this corresponded to Sunday, the 24th January A.D. 997, when the 13th tithi of the bright half ended 7 h. 40 m. after mean sunrise.3 On this date, the god Rishabhanatha was installed and the flag was hoisted. We are further informed that Mülanayaka, i.e. the original image before renovation. had been set up by certain members of the goshthi, whose names are enumerated.

The second part of the inscription, which is in itself an independent record, consists of 21 verses and extends from lines 23 to 32. This seems to have been added to the first because it specifies certain endowments made in favour of the same Jaina temple and the same Jaina preceptor as are mentioned in the first. The genealogy as far as Maximata is also repeated here. It opens with the praise of the Jaina religion. There lived a prince named Harivarma (verse 2) who was succeeded by his son Vidagdharaja. The latter is described as "the kalpavriksho of the garden which was the illustrious Rashtrakuta race" (verse 3). From him sprang Mammata (verse 4). From verses 5-7 we learn that the temple had been originally erected by Vidagdha for his guru Balabhadra and Mammata renewed the grant made by Vidagdha in favour of him, the nature of which is described in verses 8-17, viz. (1) one rupee for each twenty loads (pravahana or potha) carried for sale ; (2) one rapee on each cart filled (whether going from or by the village); (3) one karsha for a ghadā at each oil-mill; (4) 13 chollikās (?) of betel leaves by the Bhattas; (5) Pellaka-pellaka (?) by the gamblers; (6) one adhaka (=4 seers) of wheat and barley from each araghaffa, i.e. well with a water-wheel; (7) five palas for peddā (?); (8) one vimšopaka¹ coin for each bhāra (=2,000 palas); (9) ten palas from each bhira of articles, such as cotton, copper, saffron, gum-resin (pura, i.e. guggulu), madder, and so forth; and (10) one manaka for each drong of wheat, mang, barley. salt, rala, and such other objects as can be measured. This is what was granted by Vidagdha-

[े] खप्प । मंडीवर १ सामंत, इनी चजमेर २ सिवसून । गढ पूंगच १ गजमब, इनी लीटने ३ भाष भुन । चन्द्र घरवह ५, भीजराजा जालंघर ६ । जीगराज घरघाट ०, इनी हांसू पारकर ० । नवकीट किराडू ८ संजुगत, बिर पंनारहर बप्पिया । घरणीवराह घर भाष्यां, कीट बांट जु जु किया ॥ १ ॥

² Jour. Beng. As. Soc. Vol. LXII. Part I. p. 310.

¹ [The coin is also mentioned in the Harsha stone inscription of Vigraharaja (above, Vol. II., p. 130) and in the Rajor inscription of Mathanadova (ibid. Vol. III. p. 264). The forms vimiopaka and visovaka occur in the Siyadoni record (ibid. Vol. I. p. 166). Professor Kielhorn tentatively explains it as the "twentieth part" of a particular coin.—Ed.]

raja. Two-thirds of these proceeds were to go to the Jina (Arhat) and one-third to the gurn Balabhadra as vidyādhana, i.e. fees for imparting knowledge. The date of the donations made by Vidagdharāja is given in verse 19 to be Samvat 973 in the month of Ashādha, and they were renewed by Marimata in Samvat 996 on the 11th of the dark half of Magha. The closing verse 21 expresses a wish that these endowments may be enjoyed by the progeny of Kēśavadēvasūri as long as the mountains, the earth, the sun, Bharatakhanda, the Gauges, the Sarasyati, the stars, Patala and the oceans last. The dates are then repeated in ciphers and the inscription closes with the information that it was engraved by the sutradhara Satayogesvara.

TEXT.

- ॥ विरवे ? ०० पजे ? रिचासंस्या ?]-जवस्तवः । परिमासत् ना - पराधिस्था?]पना जिनाः 18 ते वः पांतु [जिना] विनामसभ[ये यवा]द्यक्कोन्म् खप्रेंखासंख्यमयख[भी खरन-खर्येणीयु विंवी(विब्बी)द्यात । प्रायेकादमभिरर्गणं दममती मकस्य ग्रंमद्यां कस्य खाद्रणकारको न यदि वा खच्छात्मनां संगमः ॥२
- $\cup \cup \pi -$ नासत्करोसो?[प]योभितः । सुर्पे(ये)[खर] $\cup -$ — ली मूर्डि कडो महीभृतां ॥३ चभिवि(वि)भ्रदुचिं कांतां साविचीं [चतु]रा[न]न: । इरिवर्मा व(व)भूवाच भूविभुभवनाधिक: "॥[8*] सकललो-कविलोक(च)नपंकजस्फ्ररदनंबुदवा(बा)लदिवाकरः । रिपुवधूवदनेंदुद्धतद्युतिः
- ससुदपादि विदम्धनृप[स्तत:] । ॥[५ । स्त्राचाययो क्चिरवच[नैव्वा]सदेवाभिधा-नैवीं(बी) घं नीती दिनकरकरे बीरजसाकरी व [1] पूर्व जैनं, निजमिव यभो[कारयह]स्ति जुंबां रम्यं इम्म्यं गुक्डिमगिरे: यंगसं (गृं)गारहारि "॥६ दानेन तुर्जितव(व) जिना तुलादिदानस्य येन देवाय । भाग[इयं] व्यतीर्यंत भागचा-
- 4 [चार्यव]र्याय 10 ॥[७*] तसादभू[च्छुड]सलो(चो) संमटाख्यो सहीपति: । समुद्रविजयी ग्राध्यतस्वारि: सद्र्मं(मिं)कः " ॥८ तस्राद्समः समजनि [ममस्त]-जनजनितलोचनानंदः । धविोसो वसुधाव्यापी चंद्रादिव चंद्रिकानिकरः ॥[८*] भंकाघाटं घटाभि: प्रकटीमव मदं मेदपाटे भटानां जन्मे राजन्य-
- 5 जन्ये जनयति जनताजं रणं मुंजराजे । [अ] . अमाणे [प्र] एटे इरिण दव भिया गूर्क्करेथे विनष्टे तत्वैन्धानां स(प्र)रखो हरिरिव प्रर्णे यः

u Metre : Augsbrubh.

^{1 [} It is just possible that items (9) and (10) were added by Mammata to what had already been granted by Vidagdha. But the wording of the inscription is so unusual that we cannot be sure of it.-Ed.]

² From the original stone. [Pandit Ram Karna has kindly sent me an inked estampage for comparison, in which about 10 akeharas are damaged at the commencement of most of the lines. But I have not marked these and other damaged letters as doubtful as the Pandit's transcript has been prepared from the original stone .-- Ed.]

Metre: Anushtubh.

Metre : Sardulavikridita,

Metre: Drutavilambita.

^{*} The sign for the upadamaniya is - < .

[&]quot; Metre : Apushtubh. " Metre : Mandakranta.

⁷ Metre: Anushtubh. 10 Metre : Arya.

¹³ Motro : Arva-

Here only 'T is clear and there are two dots (. .) before it which tempt one to read the word as बीबाब ; but the formation of the letter & is rather curious in this inscription,

सुराणां व(व)भूव । [१० *] श्रीमदुर्वभराजभूभुजि भुजैर्भुजत्यभंगां भुवं दंढेभेण्डनशीण्डचंडसभटेस्तस्याभिभूतं विभुः । यो दैत्यैरिव तारक-

- 6 प्रभृतिभिः श्रीमार्ग् में इंद्रं पुरा धनानीरिव नीतिपौर्षपरीनेषीत्परां निर्हितिं ॥
 [११*] यं मूलादुदमूलयहुरुवलः श्रीमूलराजी नृपो दर्णाधी घरणीवराचनृपतिं यहहि(द्वि)पः पादपं । श्रायातं भुवि कांदिशीकमभिको
 यस्तं शरखो दधी दंषायामिव रूढमूढमहिमा कोलो महीमण्डलं॥१२
- 7 इत्यं पृष्वीभर्तृभिर्नायमानैः सा — सुस्थितैरास्थितो यः । पाथोनाथो वा विपचातस्य[चं] रि(र)चाकांचै रचणे वहकचः ॥ [१३*] दिवाकरस्थेव करैः कठोरैः करालिता भूपकदंव(व)कस्य [1] अशिश्यियंतापद्वतोदतापं यमुकतं पादपवळानौधाः ॥ [१४*] धनुईरिश्ररोमणेरमलधर्मामभ्यस्यतो जगा-
- 8 म जलधेर्मुणो [गु]क्रसुष्य पारं परं । समीयुरिप संसुखाः सुमुखमार्मणानाः गणाः सतां चरितमङ्गतं सकलमेव लोकोत्तरं ॥[१५*] यावास यस्य वियदौर्कावपुर्व्विधेषात्व(इ)लातुरंगखुरखातमहीरजांसि । तेजोभिक् र्ज्ञितमनेन विनिर्ज्ञितलाङ्गास्त्रान्विल्जित इवातितरां तिरोभृत् । १६
- 9 न कामनां मनो धीमान् ध — जनां दधौ । धनन्योडायँसत्का-र्यभारधुर्योर्थतोषि यः ॥[१७*] यस्तेजोभिरइस्करः क्षणया शौडोदनिः गुड्या। भीष्मो वंचनवंचितेन वचसा धर्मोण धर्मात्मजः । प्राणेन प्रलयानिलो व(व)लभिदो मंत्रेण मंत्री परो रूपेण प्रमदाप्रियेण
- 10 सदनी दानिन क[गर्णी]भवत् 10 ॥[१८*] सुनयतनयं राज्ये वा(वा)लप्रसाद-मितिष्ठिपत्यरिणतवया नि:संगी यो व(व)भूव सुधी: खयं । कतयुगकतं कला कत्यं कतात्मचमु(म)त्कतीरकत सुकती नी कालुखं करोति कलि: सतां 11 ॥[१८*] काले कलाविप किलामलमेतदीयं लोका विलोक्य कलगातिगतं गुणी-
- 11 वं । [पार्था]दिपार्थिव[गुणा]न् गणयंतु सत्यानेकं व्यथादुणनिधिं यमितीव वेघा: ॥२०¹³ गोचरयंति न वाची यचरितं चंद्रचंद्रिकारुचिरं । वाचस्यते-र्व्यच्वी को वान्यो वर्ण्येत्पूण्णं ¹³ ॥[२१*] राजधानी भुवो भर्तुस्तस्यास्ते इस्तिकुण्डिका । अलका धनदस्येव धनाव्यजनसेविता ¹⁴ ॥[२२*] नी-हारहारहरहाम[हि]-

¹ Metre: Sragdhara.

Metre: Upëndravajra.

[&]quot; Metre : Anusbtubh.

¹¹ Metre : Haripi.

¹⁴ Metre: Anushtubb.

² and 1 Metre : Sardulavikridita.

Metre : Prithvi.

^{*} विरामचिन्हसनपेचितमः

¹⁵ Metre : Vasantatiluka.

[·] Metre : Salini.

⁷ Metre: Vasantatilakā.

¹⁰ Metre: Sardulavikridita.

¹¹ Metre : Arga.

- 12 [मां]गुहारि [भा]त्मा[र]वारि [भु?]वि राजविनिकाराणां । वास्तव्यभव्यजनचित्तसमं [स] मंतात्वंतापसंपदपद्वारपरं परेषां 1 ॥[२३*] चीतकलघीतकलग्राभिरायरामास्त्रना इय न यस्यां । संत्यपरेष्यपद्वाराः सदा सदाचारजनतायां ॥ २६(२४) समदमदना जीजालापाः प-
- 13 🔾 ्नाकुला: कुवलयद्भां संदुध्यंते दुश्चस्तरला: परं । मलिनितमुखा यवोहताः परं कठिनाः कुचा निविडरचना नी[वी] बंधाः परं कुटिलाः कचा: " ॥[२५ *] गाठी संगानि सार्व ग्रुचिकुचकलग्री: कामिनीनां मनोज्ञी-र्व्धिसीर्कानि प्रकामं सद्द घनजघनैदेवतामंदिराणि । आजंतेदश्वश्रश्चा[ख]-
- 14 तिम्यसुभगं नेवपावै: पविवै: सवं चिवाणि धावीजनहृतहृद्यैर्विभ्यसैर्यव सर्वं ॥[२६*] सञ्चरा घनपर्व्वाणी द्ववाद्या रसाधिका: । धनेन्त्वाटा कोकेस्यो नालिकत्वाद्विदेखिमा: " ॥[२०*] चर्छा स्ति: सुराणां गुरुविव ग्रिगोरवाही गुणीवेर्भपालानां त्रिलोकीवलयविल-
- 15 सितानंतरानंतकीति: । नाचा वीशांतिभद्रोभवद्भिभवितं भास[मा]नासमाना कामं कामं सम[र्था] जनितजनमन:संमदा यस्य मूर्त्ति: ॥ [२८*] मन्येमुना मुनींद्रेण [म]नोभू रूपनिर्जित: । खप्नेपि न खरूपेण समगंस्ताति-लिकतः " ॥ २८ मोदात्मद्माकरस्य प्रकटितविकटाशिवहा(भा)व-
- 16 स्य सूरी: सूर्यस्वेवासृतांग्रं स्कृरितग्रभक्चिं वासुदेवाभिधस्य । बध्यासीनं पद्व्यां यसमलविलसन्दानमालोका लोको लोकालोकावलोकं सकलमचकलकेवल संभवीति ।[३०°] धर्माभ्यासरतस्यास्य संगतो गुणसंग्रहः । अभन्नमा-र्माणेक्ट्रस्य चित्रं ⁰ निर्व्वाणवांक्ट(क्ट)ता(ना) ¹⁰ ॥३२(३१)
- कमपि सर्वेगुणानुगतं जनं विधिरयं विद्धाति न दुर्विध: । इति कलंकनिराक्षतये कती यमक्षतेव कताखिलसदुर्णं ॥[३२*] तदीयवचनाविजं धनकल वपुत्रादिकं विस्नोक्य सकलं चलं दलसिवानिलांदी[लि]तं। गरिष्ठ-गुणगोष्ठादः समुद्दीधरबीरधीकदारमतिसंदरं प्रथम-
- 18 तीर्धक्र मंदिरं 18 ॥३४(३३) [रक्तं] वा रम्यरामाणां मणितारावराजितं। इदं मुखमिवा-भाति भासमानवरालकं । [३४*] चतुरस[पहज?]नघा[ड्ड]निकं ग्रभगृति-करोदकयुक्तमिदं । वहुभाजनराजि जिनायतनं प्रविराजित भोजनधाससमं 14 ॥३६(३५) विदम्बन्यकारिते जिनग्रहे-

¹ Metre : Vasantatilakā,

[.] Metre: Sragdhara,

¹ Metre : Anushtubh.

¹⁹ Metre : Anushtubh.

³⁸ Metre: Anashtubh.

² Metre : Arya.

Metre: Annalitubh.

^{*} Metre : Sragdhara.

¹¹ Metre : Drotavilambita.

¹⁴ Metre : Töbaka.

¹ Metre : Harini.

^{*} Metre : Sragdhara.

^{*} The correct word is quest.

¹³ Metre : Prithyl.

- 19 तिजीर्षे पुन: समं जतसमुदृताविष्ठ भवां[बु]धिरात्मन: । श्रतिष्ठिपत सोप्यय प्रयमतीर्यनायाक्रतिं स्वकीत्तिंभिष मूर्त्ततामुपगतां सिताग्रद्यातिं ॥३०(३६) शांत्याचार्येस्त्रिपंचाश्रे सद्दत्ते शरदामियं । माध्यक्रचयोदम्यां सुप्रतिष्ठैः प्रति-ष्ठिता ॥३८(३०) विदम्धन्तपतिः पुरा यदतुनं तुनादे-
- 20 ईदी सुदानमवदानधीरिदमपीपलबाहुतं । यतो धवलसूपितिर्ज्जिनपतेः खयं साम्न[जो]रघटमथ पियालीपप[दक्त]पकं प्रादियत् ॥३८(३८) यावच्छेर्पायरस्वमेक-रजतस्यूणास्थिताभ्युज्ञसत्पातालातुलमंडपामलतुलामालंबते भूतलं । तावत्तार-
- 21 रवाभिरामरमणी[गं]धर्वधीरध्वनिद्यामन्येत्र धिनोतु धार्मिवधियः [म]दूपवैलावि-[धी] 180(३८) मालंकारा समधिकरसा साधुसंधानवंधा द्याध्यश्चेषा स्वित-विलयत्तिताख्यातनामा । सङ्गताब्या क्विरिवरतिर्बुर्यमाधुर्यवर्या सूर्याचार्वे-व्यरिव रमणीवा-
- 22 ति[रम्या] प्रशस्तः ॥४१(४०) 🎉 संवत् १०५३ माघशक्त१३ रविदिने पृथनचने न्रीरि(ऋ)पभनायदेवस्य प्रतिष्ठा कता महाध्वज्ञचारोपितः ॥ मूलनायकः ॥ नाइकजिंदनसभंपपूरभद्रनागपोचि[स्थ]त्रावकगोष्ठिकैरभेषकग्रंचयार्थे स्वसंतान्त्रभवास्थितर-
- 23 [णार्थ च] न्यायोपार्ज्जितवित्तेन कारित: ॥३॥ परवादिदर्णमधनं चितुनय-सद्यसंगकाकीर्ण्ण । सव्यजनदुरितश्रमनं जिनेंद्रवरशासनं जयित ॥[१*] श्रामीदीधनसंमत: ग्रभगुणो साख्यतापीज्व(ज्व)लो विस्पष्टप्रतिभ: प्रभा-वक्तितो भूगोत्तयां(मां)गार्श्वित: । योषित्यी-
- 24 नपयोधरांतरसुखाभिष्वंगसंलाखितो यः श्रीमान्हरिवर्धा उत्तममणिः सदंशहारे गुरी ॥ [२*] तसाद्द(द)भूव भुवि भूरिगुणीपपेतो भूपप्र[सू]तसुकुटार्खित-पा[द]पीठः । श्रीराष्ट्रकुटकुलकाननकस्पष्टचः श्रीमान्वदम्धनृपतिः प्रकट-प्रतापः ॥ [२*] तसाद्रूप-
- 25 गणा — ्रतमा [कीर्त्तः] परं भाजनं संभूतः स्तनुः स्तोतिमितमान्-श्री(ज्यी)मंमटी विश्व(श्रु)तः । येनासित्रिजराजवंशगर्गने चन्द्रायितं चार्षणा तेनेदं पितृशासनं समिषकं कला पुनः पाच्यते 10 ॥[४] श्रीवन्तभद्राचार्य विद्रघन्टपपूजितं समस्यर्थे । श्र(श्रा)चंद्रार्कं यावदृतं भवते मया

^{&#}x27; Metro: Prithvi. Though the reading of the original is Maissa', the metre requires Maiss'.

Metre: Prithvi. 1 Metre: Prithvi. * Metre: Sardulavikridita.

Metre: Mandakranta. Metre: Arya.

I The word in verse 4 sopre is Hari-

varman, while here it is Harivarma only.

^{*} Metre : Šārdūlavikridita. * Metre : Vasantatilakā. .

¹⁰ Metre : Šārdūlsvikrīdita.

- 26 🗸 🗸 ै॥[५*] [त्रीहस्ति]कुंडिकायां चैत्यग्रहं जनमनोहरं भक्त्या । त्रीमदलभद्रगुरोर्यदिहितं श्रीविद्रश्वेन ^३ं ॥[६*] तिस्मन्त्रो(क्रो)कान्समाझय नानादेशसमाग[तान्] । पाचंद्राकंस्थितं यावच्छासनं दत्तमचयं ॥[७*] कि पका एको देयो वहतामिह विंग्रत: पवहणानां । धर्मा-
- ─ ─ ─ ─ ○ ─ क्रयविक्रये च तया ॥ [८] संश्तगंचा देयस्तथा वहंत्याय रूपक: येष्ठ:। घाणे घटे च कर्षी देय: सर्वेण परिपाद्या ह ॥[८"] यी[भट्ट]लोकदत्ता पचाणां चीब्रिका चयोदशिका । पेब्रकपेब्र-कमितद्द्युतक[रै:] शासने देयं ⁶ ॥[१०*] देयं पलास(श)पाटकमर्यादावत्तिक-
- 28 ─ ─ । प्रत्यरघ[ई] धान्याढकं तु गोधूमयवपूर्व्ह । ॥[११] पेड्डा च पंचपितका धर्मस्य विशोपकस्त्या भारे । शासनमेतत्पूर्व विदन्ध-राजेन संदत्तं । [१२*] [कर्षा]सकांस(स्व)क्ंकुम[पुर]मांजिष्ठादिसर्वभांडस्य। [द]म दम पतानि भारे देयानि विक-
- ─ ─ ─ ॰ ॥[१३*] चादानादेतस्माङ्गगड्यमङ्तः कृतं गुरुणा । भ्रेषस्तृतीय-भागी विद्याधनमात्मनी विह्नितः 10 ॥[१8*] राजा तत्प्वपीवैय गोष्ठा पर-जनेन च । गुरुदेवधनं रच्चं नोपे[च्चं हितिस(मी) पुमि:] 1 ॥[१५] दत्ते दाने फलं दानात्पालिते पालनात्फलं । [भिचतो]पैचिते पापं गुक्दे-
- 30 [वधने]धिकं ¹² ॥[१६*] गोचूससुद्रयवलवणराल[का]देस्तु मेयजातस्य । द्रोणं प्रति 13 साणकमिक्सम सर्वेण दातव्यं 14 ॥[१७*] बहुसिर्व्यसुधा भुता राजिभः सगरादिभि: । यस यस यदा भूमिस्तस तस तदा फर्ड 15 ॥[१८*] रामगिरिनंदकलिते विक्रमकाली गते तु श्रचिमा[से ।]
- [श्रीम] इलभद्रगुरोर्व्विदग्धराजेन दत्तमिदं 18 ॥[१८*] नवसु श्रतेषु गतेषु तु षर्णवतीसमधिनेषु माघस्य । क्राणैकादम्बामिन्न समर्थितं मंमटनृपेन(ण) " ॥[२०*] यावड्घरभूमिभानुभरतं भागीरथी भारती भास्त[द्वा]नि भुजंगराज-भव[नं] भाजद्भवांभोधयः । ति[ष्ठं]-
- 32 [स्वच] सुरासुरेंद्रमहितं [जै]नं च सच्छासनं खीमत्केयवसूरिसंततिकते तावस-भूयादिदं 15 ॥[२१*] इटं चाचयधर्मासाधनं शासनं श्रीविदम्धराज्ञा(जिन) दत्तं ॥ संवत् ८७३ त्रीमंसर[राज्ञा(जन) समयिँ]तं संवत् ८८६ ॥ [a conch] स्वधारोद्वव[यत]योगेखरेण उत्लोखेंयं प्रशस्तिरिति ।

and a Metro: Arya.

[&]quot; and " Metre: Ausshiphh. " Known as mani in Marwar.

[&]quot; Metra: Anushtabh.

Metre : Anmbtubh.

is and it Metro : Arya.

^{*} to " Metre : Arya.

¹⁴ Metre: Arya.

¹⁸ Metre : Sårdülavikridita.

No. 4 .- KURUSPAL STONE INSCRIPTION OF SOMESVARADEVA.

BY RAI BAHADUR HIRA LAL, B.A.; NAGPUR.

The subjoined inscription was found at Kuruspal, a village in the Bastar State, by Rai Bahadur Diwan Baijnath, who kindly sent me impressions of it together with a transcript from the original stone. I, however, waited for better impressions from the Archeological Department and these I received in due course, but as the writing is illegible owing to the roughness and bad state of the stone, it has not been possible to secure very satisfactory copies. Under the circumstances I have not been able to decipher the record satisfactorily and the difficulty has been aggravated by the fact that almost the whole of the left side of the stone is broken off carrying away about 5 or 6 letters of many lines; and some letters on the right side also are gone. It seems almost impossible to restore the lost portion and it is unfortunate that some letters belonging to proper names have disappeared. However, there is still enough left to invest the record with some importance. I have, therefore, endeavoured to elicit this portion without paying much attention to the unimportant passages, such, for instance, as those enumerating the names of the inhabitants or castes which I have mostly allowed to remain as read by Mr. Baijnath from the original stone, from line 24 to the bottom. The record contains altogether 39 lines covering a space 3' 8" x 2' on the stone, which in its present mutilated form measures 5' 3" x 2' 4". These are the greatest lengths and breadths which are not uniform throughout, because the stone is broken on all sides. The characters are bold averaging about 1", but many of them are worn out. They belong to the Nagari alphabet, those appearing in the antiquated form being i, ē, cha, na, dha, bha, ra, śa, and sa. The language is Sanskrit, partly prose and partly verse, the composition not being free from grammatical or spelling mistakes. The birudas or family titles from the commencement to line 6 are in prose, the composition being in a style somewhat characteristic of the southern records; compare, for instance, the Nadagam plates of Vajrahasta (above, Vol. IV. p. 189). From line 21 there is again prose dealing with the business portion of the record, which ends with the usual imprecatory verses and the engraver's name, etc., in prose. Underneath the record are carved the figures of a cow, a linga, a dagger, a shield and the sun, the signification of which as imprecatory symbols has been elsewhere explained,1

The inscription records the grant by king Somesvaradeva of a village whose name cannot be made out, but from the boundaries it appears that to its south was the Indranadi and to its east a village named Aranga and to the west Kapalika. The name of the village to the north is also not clear. The birudas of the family to which Somesvaradeva belonged correspond to those mentioned in the Narayanpals inscription with a few additions and variations. They state that the king belonged to the Nagavathan and to the Kasyapa gotra. He had a tiger crest and snake banner and acquired sovereignty of Chakrakuta through the favour of the goddess Vindhyavasini. In connection with the last birads I have already referred to this inscription (above, Vol. IX. p. 179) where I have shown that Chakrakūta lay somewhere near the present capital of Bastar. The personal enlogy of the king who is styled Mahārājādhirāja Paramabhaṭṭāraka Parmēśvara, informs us that Somēśvara was the son of Dharavarsha, whose grandson was Kanharadeva,3 The latter was only heir-apparent at the There is nothing new in this genealogy as we already time our inscription was engraved.

1 Ibid. p. 311. 1 Above, Vol. IX. p. 161.

^{* [}This statement refers evidently to the Kanharadeva mentioned in 1.7 of the text. It is, however, open to question if this Dharavarsha is identical with his namesake mentioned in 1.11, in view of the fact that a king named Nagatideva is introduced in I. 9. Again, there is no necessity to mention the grandson of Dharavarsha in 1, 7, as the record belongs to the time of his son Sometrara. But as the inscription is considerably damaged, the question must be left to be decided by future researches - Ed.]

know it from the Navayanpal inscription,1 The subjoined record, however, refers to certain contemporary kings, and had the whole of this portion been capable of being deciphered or restored, it would probably have selved some important historical problems. Most of these kings are mentioned here by the names of their countries or capitals, those quite clear being Udra, Lafiji, Ratnapura, Lemna, Vēngi, Bhadrapattana, and Vajra. Owing to the mutilated state of the record it is not certain whether Somesvara claimed to have conquered them, but one implication is plain, vis. that they were his rivals. In verse 8 it is stated that, having killed the powerful king Madhurantaka in battle and having put other kings to trouble, he became, as it were, a junior Narayana by imitating the latter's action in having killed Madhura and a host of other demons. The next two verses speak of the burning of Vengi and subjugation of Bhadrapattana and Vajra, his greatest exploit apparently being the killing of Madhurantaka. From his Rājapura plates the latter appears to have occupied Chakrakūţa, of which Somēśvara claimed to be the hereditary ruler. The burning of capital towns seems to have been a favourite form of annoyance to unfriendly rulers and was perhaps regarded as a great achievement. Our hero boasts of having 'burnt Vengi like the great Arjuna who fired the Khandava forest.' This was at the most a tit for tat, as we find Chakrakûţa itself burnt several times by the kings of the countries on the other side of the Godavari (see above, Vol. IX. p. 179). Vengi was the country between the Godavari and the Krishna,3 and our inscription mentions the name of Vîrachoda, who, as we know from other sources, was the viceroy of this country appointed by his father. Somesvara seems to have added another laurel to his fame by burning the forests of the Vajra country. The acme of exaggeration is reached in the vainglorious boast contained in the 11th verse in which it is stated that Somesvara took 6 lakhs and 96 villages of the Kosala country. Of course Kosala here refers to Maha-Kosala or Dakshina-Kosala which extended from the confines of Berar to Orissa and from Amarakao taka to his own territory in Bastar. It is doubtful whether even this extensive area ever contained as many as 6 lakha of villages, but even supposing that it did, there is absolutely nothing to justify the boast that Somesvara ever became king of that country. It is possible that he may have raided a part of Kosala and may have held it in his possession until driven out again. This surmise seems to be supported by Jajalladeva's inscription dated 1114 A.D. Jājalladēva was king of Dakshina-Kosala ruling at Rataupur, and in his eulogy referred to above, he is stated to have 'seized in battle Somesvara, having slain an immense army,' No details are given as to who Somesvara was, but from synchronistic allusions it is apparent that he was identical with the donor of our inscription. The Narayaupale epigraph, which is dated 1111 A.D., explicitly mentions that Kanharadeva became king on the death of Somesvara, and we know from the Barsur7 inscription that he was living in 1108 A.D. The Ratanpur epigraph was engraved in 1114 and these dates are so close to each other as to leave little doubt in the matter.

Returning to the list of countries, we know Udra to be the old name of Orissa, Lanji, a well-known tract in the district of Bālāghāt, Ratnapura, the capital of the Haihayas in Dakshina-Kōsala, and Vēngi, the country between the Gōdāvarī and Krishņā. Lemņa may be Lavana, the eastern tract of the Raipur district. So far, the inscription does not give us any new information, but the remaining two names, viz. Vajra and Bhadrapattana, are interesting. Vajra or Vayirāgaram is mentioned in Tamil literature and inscriptions. The earliest reference to Vajra is perhaps in the Tamil poem Silappadigāram which is believed to have been written between 110 and 140 A.D. It is stated in this poem that the Chōla king Karikāla

¹ Above, Vol. IX. p. 315 f.

³ Ibid. p. 174.

² See Ind. Aut. Vol. VI. p. 63, and above, Vol. IV. p. 35. South-Ind. Inner. Vol. I. p. 51.

Above, Vol. I. p. 38. Above, Vol. IX. p. 161, et seq. 1 Ibid. p. 162 f.

^{* [}Lanjika is mentioned along with Vairagars in the Ratnapur inscription of Jaja ladeva among the provinces which paid tribute to him (above, Vol. I, p. 38),—Rd.]

^{*} See South-Ind. Inner. Vol. III. pp. 132 and 140 and Vol. II. p. 235.

¹⁰ The Tamils 1800 Years Ago, p. 208.

was on terms of friendship with the kings of Vajra, Magadha, and Avanti. How Vajra fared in later times there are no materials at present to elicit, but during the 10th and 11th centuries it was apparently not so important or strong as in the early ages. A noteworthy fact is that in Tamil inscriptions it is always mentioned in conjunction with Chakrakota or Sakkarakkottam, and since I have localised the latter in Bastar, it will now be easy to see why Vayiragaram must be Wairagarh which adjoins the Bastar State and is situated not very far away from the place where the old Chakrakûta lay. This inscription itself confirms the identification of Chakrakûta with Bastar, as it calls Someśwaradeva the lord of Chakrakūţa, and the happy quibble which the composer of our inscription has introduced in regard to the name Vajral referring to diamonds and its conqueror as a 'diamond piercer,' to my mind definitely settles the question of the identification which does not appear to have been suggested or attempted before. Wairagarh was a well known dismond mine in olden days and it continued to be famous even in the times of Akbar to which the following quotation from the Am-i-Akbarta testifies :- 'Kallam's is an ancient city of considerable importance; it is noted for its buffaloes. In the vicinity is a zamīndār named Babjeo of the Gond tribe, more generally known as Chanda; a force of 1,000 horse and 40,000 foot is under his command. Biragarh which has a diamond mine and where figured cloths and other stuffs are woven, is under his authority. It is but a short time since that, he wrested it from another chief. Wild elephants abound.' The final note of Abul Fazl about wild elephants incidentally enables us to see how it was that Rājēndra-Chōļa (Kulöttniga I.) carried off many herds of elephants from Vayiragaram mentioned in the Tiruvogriyûr inscription. This is a further confirmation of the identity of the place. Should additional evidence be required as to Wairagarh having been a capital of ruling kings, it is furnished by its ancient remains5 and the strong local tradition6 according to which a line of Mana kings held sway for some time. Mānā or Mānī is a semi-aboriginal caste, whose origin is obscure. They say that they came from Manikgarh in the Nizam's Dominions and my belief is that they were a branch of the Nagavamai kings who worshipped Durga under the name of Manikyadevi.

It may be noted that the correct name of Wairagarh is Vajrakars, which means 'diamond mice' and has nothing to do with garh or fort. The real meaning having been forgotten, folk-etymology stepped in averring that the name meant the 'fort of Waira,' a contraction of Vairabs, a ubiquitous king, whose capitals are found spread over numerous parts of India. The story spun out, while it tickled the pride of the local people, brought conviction home in view of the fact that a fort existed there. This fort is, however, a modern one (see Cdaningham's Reports, Vol. VII. p. 127).

Jarrett's Edition, Vol. II. pp. 229 and 330. Even prior to this, the Musalmans knew of the Wairagarh diamond mines. In the Burkās-i Ma, āsir from which Major J. S. King has compiled a history of the Bahmani dynasty, it is stated that in the year 879 (A.D. 1474) Sultān Muhammad Shāh II. sat in state on the throne and gave a public audience to the awars and nobility and in elegant language explained as follows:—"The announcers of news have informed me that the district of Wairagadh which is in the possession of Jatak Rāya, the ungrateful, is a mine of diamonds; and I am resolved that that district also, like all the others, shall be brought into the possession of the servants of this court; and that in those districts the rights of Islām shall be introduced and the symbols of infidelity and darkness be obliterated." It is stated that one 'Ādil Khān was sent on this mission. He laid siege to the fortress at Wairāgarh, whereupon Jatak Rāya surrendered (Ind. Ant. Vol. XXVIII. p. 288).

Now in the Yeotmal district of Berar. It is quite close to Chanda.

^{*} South-Ind. Inser. Vol. III. pp. 133-4. Cunningham's Reports, Vol. VII. p. 127.

Col. Luis Smith's Settlement Report of Chândă 1 strict (1869), p. 61. The dates given in this report are conjectural, because the Colouel thought that the Gonds conquered the country about 870 A.D., and therefore the Manas being their predecessors must have ruled before this. In the Chândă District Gazetteer (1909) it has been, however, clearly shown why the Gonds could not have come into possession of Chândă until the 13th or 14th

⁷ See for instance above, Vol. III. p. 318, where Sōmēśvara is called 'a worshipper of the heavenly and holy lotus feet of the blessed Māṇikyadēvī.' See also Elliott's Report on the Dependency of Bastar (1861), page 13, where he says that the present family of Bastar Bājaa were worshipping the goddess 'Mānkeshwaree' before they came to Bastar and that on their coming here she assumed the name of 'Dunteshwaree' under which appellation she is still worshipped. My own belief is that with the change of the dynasty the old name of the goddess was changed and the Māṇikyadēvī of the Nāgavamāis became the Dantēšvarī of the present family.

The goddess, apparently, gave her name to the fort and to her worshippers, who, on being ousted, mixed with the local Gonds and deteriorated so as to be regarded as a branch of the Gond tribe. Apart from all these considerations, there is epigraphical evidence of the existence of a family of chiefs at Wairagarh who are mentioned in the Ratanpur inscription of Jajalladova1 (dated 1114 A.D.) as paying tribute to the Haihayas of Dakshipa-Kosala. The reference to Bhadrapattana, which is merely a variant of Bhadravati for metrical purposes, is again a point of great importance, because while on the one hand it affords still another proof of Wairagarh's identity, on the other hand it confirms what I have elsewhere endeavoured to prove, vis. that the present Bhandak is the old Bhadravati.2 Our inscription mentions Bhadrapattana in conjunction with the Vajra country, which shows that it was quite close to Vajra. Vajra being Wairagarh, there is no place in its vicinity answering to Bhadrapattana except Bhandak, which is only about 70 miles from Wairagarh. There can be no doubt as to the antiquity of the place, and local tradition strongly supports its identification with Bhadravati. It once enjoyed the celebrity of being the capital of Maha-Kosala and it was this place which Hiuen Tsiang visited. With regard to the geographical names occurring in the grant portion of the inscription, the villages Ārangā and Kapāliks I am unable to trace, but Indranadi is the present Indravati, about a mile from Kuruspal which flowed through Chakrakuta. The modern representative of Chakrakūța is probably Chitrakūța which may be a corruption of the older name.

TEXT.3

- 1 [ॐ]॥ खस्ति [ॐ] सङ्खणणामणिकिरणनिकर[ावभासु]रनागवंगो[द्व]-[वभोगावती*]-
- 2 पुरवरेख[र] श्रीमत्काखपगोचाणां [।*] नाग[ध्व]जविज[य*]धो[व]ण-प्रकटीक्ज[तसवत्सव्या*]-
- अन्नांच्छनप्रदर्भनमाचवसीलतिव्यवि[व्यं]भ[राणां ।] मातापि[त]प-[दसेविमहि*]-
- 4 [मार]चरणसुत्रूषातत्पराणां । विक्रमा[क्रान्त]सक्त्वरिपुन्द्रपति[कि]रीट-को[टिप्रभा*]-
- 5 [मयूख]यो[ति]तामलचरणकमलानां । [ग्र]तिचय[सं]पं[ना]नां । त्रोविं[ध्य]-वा[सि]नी[देथा:*]'
- 6 [प्रस]ादाशादितचक्रक्रदाधीखराणां [।*] कुलमलंकरि[णुः]॥ — — [सङ्स्रं] У —
- 7 v [मा दियः] । निखिताः स[म]भू[दारावर्षनामा] नरे[म्ब]रः । [१*] [पौनों] कन्दरदेवो अभूत्त[स्व] [राच्ची*]

Above, Vol. I. p. 33. Note that the spelling of the name here is Vairagara and not Wairagarh.
 Ind. Ant. 1908, p. 208, footnote 19.

^{*} From impressions supplied by Mr. Baijnath and Mr. Venkoba Bao (No. 257 of the Madras Epigraphical collection for 1908),

[·] Perhaps this symbol is intended to represent the mystle syllable on.

^{*} Read and. * Read Tayl.

^{7 [}The word in brackets is, more likely, www.--Ed]

^{*} Metre : Annahtubb.

^{* [}The syllables in brackets look like 474—Ed.]

10 [The letter w looks like w in the original.—Ed.]

- 8 [तृपो]त्त[म]: । [घ]स्यिम्व: [रणेयू]र: [सुत्रा?]न'दिजिम्बिक[:'।] [२*] [सम]स्तस्य प्र[यांतस्य] — —
- 10 षादितारातिक: इवं चा[ल]जने प्रवर्षयित यः संबंधलंभूतले । कर्षत्येव म[हे][खरस्य*]
- 11 ०००[स्व] [दर्श] संपूरके धारावर्षनरेखरः सममुदादस्वारिवर्षायतः [1] [8*] [राज्ञीगुण्ड*]-
- 12 महा[देव्या: ना]त: [सो]मेश्वरी तृप: । योथे न वीधवहु[द्धा] "नसवर्षी तृपेण [स:" ।] [४"] — —
- 14 त: । दे[व][:*] [त्रीप्र]तिगंड[भै]रव इति खातिं नृपालंभ[नादु]द्रात्मिति च राज-भूषण [इ][ति*] — — 🗸
- 15 तली¹² । [६*]उड्ड्ररायमिह[षा]यमहेसः¹³ वीरचीड[न्ह]प[सं]वर-कामः । लेम्पथा ८८८ —
- 16 [पग]चक्रो [लं]जिरब्रपुरपद्ममहेभ: 1[0*] निहत्य वीरी मधुरांतकं नृपं महावलस्तं [मधुरा*]-
- 17 निभं रखे । ¹⁶तचार्देश्त्वा नृपतीनिवासुरान्तुमारनारायखतासुपागतः¹⁷।[८*] ∨ [न*]-

^{ा [}वि]चलामिय[धार्य] श:("बीश:) सुवात" seems to be the reading intended.—Ed.]

Metre : Anushtubh. Reading very doubtful.

Metre Aunshinbh. Ślöke unreadable.

^{• [}Perhaps संकर्णवाभी रचे is intended.—Ed.]

^{* [}The two syllables 南東 look like 東國.—Ed.]

^{· [}天帝 is more likely 天帝].—Ed.]

¹ Metre : Sardulavikridita, but portions of the verse illegible. [Read, perhaps, समग[बत]द्वारिक्यां, त:—Ed.]

^{* [}The syllables we look like will in the original.-Ed.]

Metre: Annahtubh, but the second half of the floke could not be made out properly.

^{10 [}Perhaps चीयोश्य is intended.—Ed.]

^{11 [}The first four syllables are perhaps to be read सामाज्यल0—Ed.]

¹³ Metre: Sårdûlavikridita. Very illegible.

u Read महेम: [The original seems to read उड्डरायमदनी[व]महेसी.—Ed.]

¹⁴ Metre : Svigsti.

^{13 [}The second letter does not look like \(\frac{1}{3},-Ed.\)

¹⁸ Read तवादीवला.

H Metre : Vamastha.

- 18 दीतट[इ]ये विभाति राजहंसवत् । स विगिदेशखांडवं व्यदीपयत्किरीटिवत् । [८*] —
- 19 [स]पुरभद्रपत्तनाहार्यवचमिष वच[भेद]क: । वचसंभवपुराठवीदवोभाति [सो]मन [म*]-
- 20 होतले । [१०*] लचाष[इं] षरणवत्था समेतं ग्रामाणां यः कोसला-नामहार्षीत । वो . चार्यः — v —
- 21 . विचार्यो देवाचार्य: [सी]र्थमातेजसार्यः । [११*] एवमादिगु[ण]-गणालंकतो महाराजा[धि][राजपर*]-
- 22 मेखरपरमभट्टारक: श्रीसोमेखरदेव: कदाचिद्ध प्रायं मरणनिमित्तकं [दंडं]
- 23 [तोन]विहितं चक्रकूटे धना[दि]परंपरया वर्त्तमानं प्रा[स्रदृ]ष्ट्रा समव[स्थितं] म[द्वा]र्षं
- 24 नानादे[श]कां चा[ह]तवानकां [स्था]निनि त् । नाम[नी] लिख्यते चीपति . । चीधर । म . . .
- 25 [स्रो]मा[घ]व । घाघो गोविंदु । जजा । गा[गू] । . पति राउ । सावे । चाहु[ण्ड] । [विंक्षपु । वरस्दि] . . .
- 26 [गाद्या धान] । प[य]णाहाराहिल । हरदेव । के[स]य । ची[कु]म। देद । माधव । चीध[र] । [सपट]
- 27 [कहाल]वाडो । तेलिवाडो । [कुन्ह]रवाडो । परियटवांडो । चमार[वाडो] । [च्छिपावाडो] . .
- 28 [वाडो] । [मो]चिवाडो । कंसारवाडो । एव[मा]दिकान्वणिग्वरान्ब्रा[म्ना]णान् भाइय⁶ दत्तवान्
- 29 [र]त[रं स्था]नांच मुक्तं नास्ति पटिकुदवं [नास्ति] इत उ[त्त]रं [मये कि] . . [कडुविल]
- 30 [मघनप ग्रा]म: पूर्वंस्यां दिशि ग्रारंगा । दिचणस्या-मि[द]नदो । प्र[ती]च्यां क[पालिक]

Metre : Pańchachimara.

¹ Ungrammatical, but probably put in this form for metrical purposes.

^{* [}The reading and instead of and is not improbable.—Ed.]

^{*} Metre : Rathöddhatā.

Metre: Salini

^{*} It appears that great publicity was given to this grant, as, besides principal residents, almost all the artisans, such as distillers, oilmen, potters, washermen, leather workers, dyers, bookbinders, braziers, etc., were called in, together with the Brahmanas, when the grant was made,

किंदियांतरीय [नि]ग्रामः . . वि: एतनाध्ये यः भा ग-यत: . . न: [तिष्टति] स सर्वोदिसि [मध्य]वर्त्ती तस्या[प्य]यमेव धर्म: । श्रवा-थिं। साचिणः [मोडाप्रधानः . . [मददंना]यक: [रा]मन: संधिविग्रहिनायक: [मा]न[व]साह [भ]धि-पतिराउत: घि स [विखिता] सर्वेशास्त्रार्थंपार[गतंदुवृतं]भद्दोपा[ध्याय] ... श्रीसोमिश्वरो 35 मं यो रचति तस्वापि म[इ]देव पुखं । वहुभि[वै]सुधा दत्ता राजभिः सगरादि[भिः] [। यस्य य*]-36 [स्व*] यदा भूमिम्तस्य तस्य तदा [फ]लिमिति । [१२*] यस्तु नागयित स प्रयागिवाराणस्यादि [ध] ब्राह्मणवधादि पातकं प्रा[प्र]वंति [।*] स्वद[त्तां] परदत्तां वा यो हरेत वसंधरां [।*] [ष][छं वर्षस*]-[क] मि: ॥ [१३*] रख[ध]वसक्पकारेख इस्राणि विष्ठायां जायते **नकीरितं**

No. 5.—TWO KURUSPAL INSCRIPTIONS OF DHARANA-MAHADEVI OF THE TIME OF SOMESVARADEVA.

. . साध

By RAI BAHADUR HIRA LAL, B.A.; NAGPUR.

Kuruspāl is a village about a mile off from Narayanpāl¹ and 22 miles from Jagdalpur, the capital of the Bastar State. The name is probably a corruption of Krishoapura as Narayanpāl is of Nārāyaṇapura. The place contains numerous ruins, among which there is a tank called Rānī Tarai. The first of the subjoined inscriptions had been built upside down in one of the steps of this tank and was found by Rai Bahādur Dīwān Baijnāth who supplied me with 3 impressions together with one of another fragmentary stone found in a field.¹ The tank slab probably belonged to a temple built in the middle of the tank, and dedicated apparently to the god Kāmēśvara (Śiva) referred to in the inscription. Both these inscriptions record the grant of land near Kalamba (now untraceable), and the gift was made in both cases by queen Dhāraṇa-Mahādēvī, who was apparently the consort³ of Sōmēśvaradēva. This Dhāraṇa-Mahādēvī is also mentioned in the Narayanpāl inscription, apparently as a transferer of the land granted by Guṇḍā-Mahādēvī. It is worthy of note that some names of the recipients mentioned

39

³ The text was subsequently compared with fresh impressions supplied by the Government Epigraphist for India.

¹ See above, Vol. IX. page 161.

It may be noted that there is nothing definite to show that she was his wife. For aught one knows, she might have been his mother.

there (for instance Mahāṇaks Dēvadāsa) also figure in the tank alab. The latter also mentions certain tenants who are stated to be residents of Nārāyaṇapura and Tēmarā, both of which are close to Kuruspāl. The subjoined inscriptions appear to be older than the Narāyaṇpāl record of Śaka 1033. Both say that they were issued during the reign of Mahārājādhirāja Sömēšvaradēva, who had of course died prior to Śaka-Samvat 1033. Neither of them is dated, but on the tank slab I have read the name of the samvatsura as Saumya, which prior to Ś. 1033 fell in Ś. 991. It therefore appears that they were issued about the year 1069 A.D. Somēšvaradēva is stated to be born of the Nāga race and has all the birudas attached to his name as in the Narāyaṇpāl inscription. The subjoined records afford no new historical information, but would perhaps be of some use when finally fixing the periods of reign of the Bastar branch of Stnda kings.

As further inscriptions have been found in Kuruspāl which will appear later on, it seems necessary to add here the distinguishing features of the slabs under notice. The tank slab measures 6' 10" × 2' 2" and the writing consisting of 26 lines covers 3' 4" × 2' 1". On the top is a linga in the middle with the sun and the moon to the left and 5 circles in a row to the right, probably representing the remaining 5 planets which give their names to the week days and indicating that the grant is to last as long as they endure. At the bottom are engraved a cow, a dagger and shield and a donkey associating with a pig which is an obscene imprecation explained in the text.

The fragmentary slab is 49" long and 15" or 16" broad. There are 16 lines of writing on it, most of which are incomplete. The first 3 lines together with portions of the fourth and fifth are on a piece altogether broken off from the main slab. The greatest length of the space covered by the writing is 27" and breadth 15". The slab has no figures on the top, but at the bottom there are the same figures as on the tank slab.

The tank slab was engraved by one Dāmōdara Sūtradhāra. The average size of the letters which are Nāgarī is $1\frac{1}{4}$. The language is bad Sanskrit with the exception of the stereotyped birudāvali. The noticeable orthographical peculiarity is that in some places ja is used for ya as in line 11. The fragmentary inscription does not give the name of its engraver. The average size of its letters is $1\frac{1}{4}$.

TEXT.1

A .- Tank Slab.

- 1 Öm² svasti [II*] Sabasra-phaṇā-maṇi-kiriṇa³-nikar-āvabhāsva-⁴
- 2 ra | Nāga-vamšōdbha[va] | Bhōgāvati-[pu]rayarēsvara | savatsa-
- 3 vyāghra-lām(h)chhana [|] Kāsyapa-gotra | p[r]akatita-vijaya-
- 4 ghō[sha]ḥ [l*] viśva-[viśva]mbha[rē*][6]vara6 [l*] parama-māhēśvara pi(pa)ra-7
- 5 ma-bhaṭṭārakaḥ [1] mahā-mahēśvara-ohi(cha)rapa-kadi(n)ja-kim(n)jalka-
- 6 pu[m](n)ja-pi[m](n)jaritta hhrama[r]ayamansh srimad-Rajabhushana-
- 7 mah[ā]rājā[ddhi]rāja-śri-Sömēśvaradēvapād-ānuka[lyā]ņa-vija-
- 8 ya-rājyē | samvat=Saumya(myē) | svasti Gamg[ā]10-jala-dhautall-paramapavitr[i] ja-

- ² Expressed by a symbol. ² Read *kirana.* Read *bhāsu*,
- * [In the original this punctuation looks like a mark of length added to ru.—Ed.]
- The original seems to show a doubtful visarga after the syllable obse but not a ra. It may, however, be the first portion of the conjunct consonant for.—Ed.]
 - ' [What looks like pt may consist of a vertical stroke of punctuation and po. Ed.]
 - * Read -pinjarita-.
- Bend "manah.
- 16 The original has both the sausrars and the conjunct aga .- Ed.]
- II [Dianta is very doubtful. The actual reading seems to be diaran.—Ed.]

¹ No. 254 of the Madras Epigraphical collection for 1908.

9 [ga]dākamātā | śrima[t]-Soms[la]-mahādēvi | dvitiya [Dh]āra[na]-

10 [ma]hādēvi | tasy[ā] dharma[h*] | 'Kalammva-[sa]mipas[th]ā bhūmī dattam | dē-

11 va-Nāmē[sva]ras[ya]² akarēņa | sarvvavā[dh]āparībārēņa³ | pamņdi[ā] Taṭṭā-

- 12 katala Ma[ha]naka devadāya-[samain]krit[ā] bhūmi[r*] = devasya dattam* | jasya* 13 [ya]sya jadā bhūmī | tadā6 tasya tadā phalam | shashthīm varisha7-sahasrā[ni]
- 14 s[v]arge modamti bhumidas | maha[na]gahres Te[ma]radhi datta[h] [i*] [s]ari10 [na]-

15 yaka Dhathi | Nayaka [Pragida] Kamathi | Movanarana | Don[tayo]

16 . samasta dharmadhi[ka]h Visuvā | K[o]ri | deva-Kāmēsvarasya da[ta]h11

17 grāma-nāyakah Aṭava[nni] | mahā-parivra12-Pamndita-Soma | [Sa]ma-

18 [tts]mana13 | nayaka-Gayadhara14 | Sadhu-Maidhara | Sadhu-Amadeva | Ji[na]-19 [grāma ?] Sādhu-Somaņa | Sīdhu16-Dē[v]u | Sādhu-Somā | Sādhu-Sahadēva [Sim]-

20 gha-[ma]hājana | Janojanita | Suki nāyaka Kānama | upari-

- 21 . maha-Yugidarapa-ekamah (?) | Narayanapura-vasika | Bhami . gā sā[dhu] | -Vighna Bhoi | Palavā Bhoi | Sēthi Mahanda | Vrahmaugha-
- 23 sadhu-Bhimah sarga-ga[k]omis tasya su[tt]ahin Dedu li[kham]tamis | Hisyandi? [m vā] madhikākshara vā sarvva pa[ti]paņņamasu19 | mam[ga]la mahā śri
- 25 joso an[ya]tha karoti | tasya pî[t]ā gardabhah [su]karisi mātā |
- 26 [n]tkīritam sū[tr]adhārī Dāmodara | pajya[m] rachita Tikama .

TRANSLATION.

Om! Hail! In the [Saumya-samvatsara], during the auspicious (and) victorious reign of His Majesty the prosperous Rājabhūshana Mahārājādhirāja, the glorious Somēśvaradēva, who was born of the race of the Naga (cobra), who is resplendent with the mass of rays (proceeding from) the jewels on (his) thousand hoods; who is the lord of Bhogavati, the best of cities, whose crest is a tiger together with a calf, who belongs to the Kāśyapa-gōtra, whose shout of victory is (universally) known, who is the protector of the worlds, who is the great worshipper of Mahesvara (Siva), who is the supreme lord, who resembles a bee, which is rendered yellow by the mass of the pollen of the latus feet of the great Mahesvara:-

Hail! [Somala]-mahādēvī, the peerless mother of the world, who was wholly sanctified by having bathed in the water of the Ganges; the second (queen?) (was) Dhāraṇa-Mahādēvi; her gift: the land situated near Kalamba was given to the god [Kā]mēśvara free of taxes and all encumbrances. (By?) Pandi[ta] Taṭṭākatala-Mahanaka, the land having been made a dēvadāya was bestowed on the god.

3 Read Kamesvarasya; see line 16. 4 Rend dattā.

3 Read garya.

Read "badha." · Read yadā bhūmis-tasya.

1 Read shashfim varsha.

Read modati blumidas. This couplet is made of the first half of one and the second half of another oft-* Read mahānagarē.

quoted imprecatory verse. 10 Perhaps sakehi is intended. From here to the end the inscription is full of the names of tenants and witnesses. Some of them sound very peculiar, probably because they have not been correctly spelt as the mistakes in the foregoing portion would indicate. This portion of the inscription is however unimportant.

n Read dattah or dasah.

13 Read oparierājaka-.

u Possibly bhaffamani or mafhamani.

14 Probably a Sanskritised form of the very prevalent name Gajādhara, a corruption of Gadādhara (a name of Vishou). This name occurs in the Pattadakal inscription of Kirtivarman II. in the form of Gayaddhara, which Dr. Fleet supposes to be intended for Gangadhara. See above, Vol. III. p. 5, footnote 19. 16 Read scargagato(?).

u Perhaps sadau-.

us Read likhitom.

10 Perhaps dinaksharam vä addikāķsharam vā sarvam pratipannam=astu is intended.

so Read yes.

n Read sükari.

¹ Bend Kalamva-samīpasthā bhūmir-dattār

Ll. 12-14 [Here are two half-verses of two oft-quoted imprecatory verses.]

L. 14. Witnesses resident in(?) the great city of Temara are :-

B .- Fragmentary Stone.7

| | na]hā-Ma ⁸ -pum ⁹ | | | d | | | |
|----------------------------------|--|-------------------|-------------------|------|----|---|---|
| 75 4 49 4 49 | -pum ⁹ | | | | | | - |
| | | | | - 10 | | | |
| 3 . bhramaráyam | [apa] . | | | | | * | * |
| 4 śrimad-Bājahbhūsl | iaņa ¹⁰ | | | | | | |
| 5 [r]ājādhirāja śrim | a ¹¹ | | | w | | | |
| 6 śvaradeva-pad-anuk | al[y]āņa-v | ri[ja]- | | | | | |
| 7 ya-rā[jy]ē svast | | | | 1]- | | | |
| 8 jagaděkamáta rāņ | Dhāraņ | 8- | | | | | |
| 9 mahšdě[v]i dharr | nma[dakshi | a ¹³] | Kalēr | nva- | | | |
| 10 samipasthä ¹³ bhūn | i[h*] pra | datan | 14 d | ě- | | | |
| 11 va-śri-Nameśvaras; | 70.15 BATY | va- | | | | | |
| 12 vādhā16-paribarēņa | akar[ē]- | | | | | | |
| 13 ps [*] jasyal7 y | asya jadal | 18 bh | ūmi ¹⁹ | | | | |
| 14 tasya tasya palay | | | | | | | |
| 15 [nyathā] kāroti | | | a][h* |] | | | |
| 16 [pitā] sukari ²² n | | | | | | | |
| | | | | |)- | | |

TRANSLATION.

In the glorious and victorious reign of His Majesty, the prosperous Rājabhūshana [Mahā]rājādhirāja [Sōmē]śvaradēva, the queen Dhārana-Mahādēvi, the peerless mother of the world, who has bathed in the water of the Ganges (and) who is clever in (giving) charity, gave land situated near Kalēmva, free of all encumbrances and taxes, to the god śrī-Kāmēśvara, [Here comes a portion of a frequently quoted imprecatory verse which the writer did not correctly remember]. (If) any one does otherwise, his father (is) an ass (and his) mother a pig.

```
I I.e. a wandering mendicant.
```

² Probably a priest of the Jaina portion of the village.

s Same as seth of the present day.

⁷ No. 260 of the Madras Epigraphical Collection for 1908.

^{*} Fill up the blank with "hetwora-choruna-kanja".

Ditto "maha".

¹³ Perhaps dakshā, which may be meant for dakshayā.

¹⁸ Read pradattā. 13 Read - Kāmēfvarasya.

¹⁷ Read yarya. 18 Read yada,

³⁰ Substitute toda phalam. " Read yah,

³ Le. a religious mendicant.

I.s. a great man, usually a banker.

^{*} Le. signed.

^{*} Fill up the blank with *ja-ptējarits*.

Ditto *t-Somē*.

¹¹ Read samipastha.

¹⁸ Read "badha-pariharena,

¹⁰ Read blumiss.

in Read sekari.

No. 6 .- SUNARPAL STONE INSCRIPTION OF JAYASIMHADEVA.

BY RAI BAHADUS HIBA LAL, B.A.; NAGPUR.

Sunārpāl is a village about 10 miles from Narāyanpāl' in the Bastar State. I think the name is a corruption of Suvarnapura, which was probably prevalent during the rule of the Nagavamsi kings of Bastar. A fragmentary inscription of that dynasty was found here by Rai Bahadur Diwan Baijnath who kindly sent me 4 impressions from which I edit it. The slab on which it is inscribed measures 4'x1' 51" and the writing covers 4'x1' 5" including the imprecatory figures at the bottom which occupy 6'. These figures are a cow and a calf, a dagger and shield, a linga and the sun and the moon as found in other Nagavamsi in criptions. The upper layer of a portion of the left corner at the top has gone off damaging the first 5 lines which deal with the birudas of the king, but they can be restored from other allied records. The writing is bold, but weather-worn. The characters are Nagari. The average size of the letters is 1". The inscription seems to have been composed by a person who knew very little of Sanskrit, if at all. He had no doubt committed to memory the birndas of the ruling king, but where long samasas were involved, he remembered only portions of them and wrote them down without caring whether they conveyed any meaning or not. For instance, in lives 6 and 7 we find kanja-kinjalka-punja-pinjarita-bhramarayamana for maha-Maheivara-charanakanja-kinjalka-punja-pinjarita-bhramarayamana. His imprecatory verses at the end are milarly amusing. He seems to have been a native of the United Provinces which may be inferred from the vernacular word 'dinha' (gave) of which apparently he did not know the Sanskrit equivalent. He has, however, endeavoured his best to give his composition a Sanskrit look and we may therefore allow that the language is Sanskrit and pass on without referring to orthographical peculiarities, as they are merely blunders.

The inscription is of no importance excepting that it furnishes the name of a new Nagavamsi king which will be useful in making out a dynastic-list. It gives no date, nor does it mention the name of the place where the grant was made. It does not even say what was granted, but from the imprecations it may be inferred that it was some land. Perhaps Adhakada was the name of the village granted. The gift was apparently made by the queens of Jayasimhadeva of the Naga race, who belonged to the Kasyaps-gotra and was the supreme lord of Bhogavati, having the tiger with a calf as his crost. He is called Rajadhiraja Maharaja śri-Jayasimhadeva. The names of witnesses before whom the grant was made are recorded as usual.

In line 11, the panchapradhān[āḥ], i.e. the five ministers, seem to be mentioned. Four of them are enumerated. But the fifth is not mentioned as such. In Eastern Chalukya copperplate grants, the king generally makes gifts in the presence of the matrin (councillor), purāhita (family priest), sēnāpati (commander of the army), yuvarāja (heir-apparent) and the dausārika (door-keeper). The executors of the Chellūr plates of Vira-Chōḍa and of the Pithāparam plates of the same king are said to be the paṅcha-pradhānāḥ, i.e. the five ministers.

TEXT.3

- 1 40 * * * * * * * na(vi)-ki[ra]2 4* * * * * sura Nā[ga-vaṁ]-
- n se · · · [va]ti-pure(ra)varėsva(śva)ra śi(?)

1 See above, Vol. IX. p. 161.

* No. 265 of the Madras Epigraphical Collection for 1908.

The text has been subsequently compared with a fresh impression taken by Mr. Venkoba Rao at the instance of the Government Epigraphist for India.

^{*} Supply Seasti sahasra-phanama". * Supply "na-nikar-acabha". * Supply "s" bhata Bhoga"

- 1* * la-mārita[mda] savatsa-vyā-
- 28 lā[m]chhana Kāsyapa3-gotra prakati4[kri]-
- 6 ta-vijaya-ghoshana ka[m]ja-kimjalka-pi[m]-
- 7 ja(punja)-pimjarita-bhramarayamana rā-
- 8 jādhirāja-mahārāja-śri-Jai[ya]sim-5
- 9 ghadēvapādā⁶ (1) kāma dēvi Lōka-
- 10 mahādēvi mahādēvi Šā[sa] nadē-7
- 11 vi pamehapradhāna mahāpradhāni Na[ma]va-
- 12 nāyaka dvitīyē [pa]divāla [tya(tri)tīy]ē
- 13 chavarikumaras chaturthē sarvvava dli-nā-9
- 14 yaka | Dadesari-patra Chavaka | A-
- 15 dhakada Jesi m ghalodeva din hall A m vava-
- 16 li-nāyaku¹⁹ sākshi Nadayā-vrāhma-
- 17 [na] sakshi dvē | vuhu13 dāri visva-
- 18 dhiraya[m]vāri gōghanali kṛitaghana-
- 19 šchaiva | brahma-hatyā gurutalpak [a] 15
- 20 ētēshām sudhi¹⁶ na drish[ṭā] bhumi-harttā na su-¹⁷
- 21 dhyati | anodakësh[v]=aramn[e]shuls sushkal9kota-
- 22 ra sāy[u]ņam⁵⁰ krishņasarpābhijāya[m]tē purvvada-⁵¹
- 23 ttam hara[m]ti²³ je! Rāms! l[ēk]apitam Pulyama-nāyaka [||*]

ABRIDGED TRANSLATION.

Lil. 1-17. His Majesty Rājādhirāja Mahārāja, the glorious Jayasimhadēva of the Nāga race, the lord of [Bhoga] vati, the best of cities, having the tiger with a calf as his crest and belonging to the Kāśyapa-gōtra, whose shout of victory is (universally) known and who resembles a bee which is rendered yellow by the mass of the pollen of lotus flowers,-Jayasimhadeva gave the village of Adhakada (in the presence of ?) his queen Lökamahadevi and the great queen Sasanadevi (or Somaladevi) and the five ministers (pancha pradhana). (vis.) the chief minister, secondly, the grand warden (? padicala), thirdly, the prince in charge of the whisk (? chavari-kumāra), fourthly, the lord of the intelligence department (? sarvavādi-Nāyaka) (and) Dadēsari-pātra Chavakā. Amvāvali Nāyaka (is) a witness and the second witness (is) Nadaya Brahmana.

Ll. 17-23. a cow-killer and also an ungrateful person may be purified. The purification of the sin of killing a Brahmana or soiling the preceptor's state has not34 been seen (heard of); (similarly) a confiscator of land cannot be purified. Resumers of previous gifts are born (again) as black serpents lying in the arid hollows of waterless deserts. Râma! (This) was caused to be written by Pulyama Năyaka.

1 Read Jayarimaa. 1 Read "pādā am.

7 [The reading may also be Somalade. - Ed.]

* Read Chamars Kumārā or Chāmara Kumāra.

10 Read Jagasimha." is Read -navaka.

* Kend Sarvavadi-(?).

14 Read göghna kritaghna.

15 Read "talpaga.

II Apparently the vernacular equivalent of daday. " Rend vifuddhi".

12 Read suddhyati.

18 Read suddhirs. 18 Read "shrearangeshu. 18 Read furbka.

20 Read "fayingh.

m Bead daranti ye.

20 Le. Ullcit intercourse with a guen's wife.

^{1 [}Perhaps [Chh]i[mda-kula-kama]la-marttam[nda] is the reading intended.—Ed.]

² Supply "ghra".

¹ Read Kasyapa-

¹ Read prakafikri".

n Read parco".

u See Fajñavalkyasmriti, Práyatchitt-ādhvāga verses 282—283, where it mys that a gurutulpaga or violator of the preceptor's bed (which also includes his daughter, one's paternal and maternal aunts, maternal uncle's wife, daughter-in-law, step-mother, sister and daughter) must be killed.

No. 7.—KURUSPAL STONE INSCRIPTION OF SOMESVARADEVA; SAKA-SAMVAT 1019.

BY RAI BAHADUR HIBA LAL, B.A.; NAGPUR.

If the remoteness and inaccessibility of Kuruspāl in the Bastar State of the Central Provinces have prevented the antiquarian from witnessing its ancient remains, temples, tanks, wells and gardens, the publication of inscriptions from that place have at least made him familiar with its antiquity and the importance it once enjoyed about a thousand years ago. Local tradition avers that there were in that quondam town Sat apar sat kori baoli or 147 step-wells and as many tanks, and Rai Bahadur Baijnath, Diwan of Bastar, assures me that the story has a great deal of truth in it. Among the ruins on the bank of a tank known as Chorya-tarai was found the present record, which like its three predecessors refers to the reign of the Nagavamsi king Someśvaradeva. There is, however, an agreeable departure in that it is dated. This is a point which renders its publication imperative in spite of the mutilated and extremely bad condition of the stone on which it is inscribed. The stone in fact is not ev whole. It is broken into two pieces, and erosion has had its ample share in obliterating the letters. The stone with both the pieces put together measures 5' 01" x 2' 11", the length of the inscribed portion being 3' 1" with 24 lines, each about 2' 1" long. The average size of the letters, which belong to the Nagari alphabet, is about 1". The language is Sanskrit prose and there are no peculiar features in orthography other than those found and noticed in other inscriptions from Kuruspal.

The object of the inscription is apparently to record a dedication of a lamp to the god L[o]kēšvara by the inhabitants of a village not named. It appears that a subscription of 11 gadyanakas (coins) was raised by them. The dedication was made 'in the Saka year 1019 during the victorious reign of the illustrious Somesvaradeva, who belonged to the Naga family, who was the lord of Bhogavati, the best of cities; the space between the ten quarters was resounding with the deep sound from the shrill drums proclaiming whose brilliant victories; whose crest was a cow and tiger; who was, as it were, the sun to the lotus of the Chhinds family; who resembled a bee which was rendered yellow by the mass of the pollen on the lotus, i.e. the feet of the great (god) Mahesvara; who was the store-house of statesmanship; who was the shelter of the whole world; who was like Arjusa in using the bow; who was the lord of kings; who was by hirth as beautiful as the god of love; who was terrible to his opponents (Pratigandabhairava); who was like Puraravas among kings; who resembled the demi-gods in enjoyments; who was brave like Narayana, glorious like Indra, true like Harischandra, and in subduing passion, like Mabadeva, and who had acquired his kingdom by the force of his own arms.' In this birudivali, some of the titles are noteworthy as they were also borne by Madhurantakadeva of the Rajapura plates,1 whom Somesvaradeva is stated to have killed in battle in the long inscription found at Kuruspal.9 This would mean that both belonged to the same family, and that Somesvars killed his relative and himself became a king. It does not, however, appear necessary to discuss this point before the Telugu inscriptions of these kings are published.

Returning to the date, it is to be regretted that all the original details are not available owing to the stone having broken off. The only thing that can be gleaned with certainty is the tithi saptams and the nakshatra Svāti, the day which looks like Sanaischara or Saturday, the paksha and the month having become obliterated or lost. The figures of the year in the impression are also very indistinct, but Rai Babādur Baijnāth has satisfied himself from the original stone that it is 1019. Luckily, the cyclic year Isvara-samvatsara is also given. From

¹ Above, Vol. IX. p. 181.

these insufficient data Mr. Gokul Prasad, Tahsildar of Dhamtari, has, however, calculated its English equivalent to be Saturday, the 18th July 1097 A.D. He states that the Isvarasanvatsara occurred in the Saka year 1020, so the year referred to in the inscription must be the one which had expired and that in these two years, there was only one saptami combined with a Saturday and the Scati nakshatra, and this tithi belonged to the bright fortnight of the Sravana month in Saka 1020 current.

TEXT.

| 1 | Party State Pit 1 Familia Party State Part |
|-----|--|
| 2 | [N]āgava[m]ā-ödbhava Bhōgāvatī-puravarēšvara viša[da-ja]- |
| 3 | [ya]-paṭn-paṭaha-[g]āmbhīryya-dhvān-[āla]mkārita-da[ša]-diś-āmta[rā]- |
| 4 | la 3dhënu-vyaghra-lamchchhana Chchhi[m]da-[ku]la-kamala-bhaskara mahā-Ma[hē]- |
| . 5 | śvara-charana-kamja-kimjal[k]a-pumja-pimjarita-bhramara[ya]mā[na] |
| 6 | [rā]ja-vidyā-nidhāna samasta-je(ja)gad-āśrayam kodamda-Dhanamjayam rā- |
| 7 | [jā]dhi[rā]ja saha[ja]-Manojam Pratigamda-bhairava raja-Pururava bho- |
| 8 | ga-vidyādharam vira-Lakah[m]idharam mahimā-Mahē[m*]dra sa[tya]-Haris[chamdram] |
| 9 | [Mada]na-Ma[hēśva]ram nija-bh[u]j-ōpārjita |
| 10 | śvara [śri] [pana vindhyavāsinl?]- |
| 11 | [dēvi]-varaprasādam [śri-Sōmē]śvaradēva-pra[vardhmāna]- |
| 12 | |
| | |
| 13 | [si]ta-sa[ptamyām] ⁵ Sa[niścha]ra-dinē Sväti-naksha[trē] |
| | L[ökē]švara[sya] |
| 14 | |
| 15 | |
| 16 | |
| 17 | |
| 18 | |
| 19 | |
| 20 | |
| 21 | |
| | tārak-ā[dyāh] |
| 22 | |
| 23 | The state of the s |
| 24 | |
| | |

¹ For examples of this sort of somewhat inaccurate dating referring to an expired year and coupling it with the name of the current cyclic year, see quotation from Dr. Kielhorn's remarks above, Vol. IX. p. 176.

No. 255 of the Madras Epigraphical collection for 1908. [The syllables gadyasaka appear to be inscribed at the top of the inscription.—Ed.]

IThis is the reading in some of the other Bastar inscriptions where the passage occurs.—Ed.]

1 Read Sanaitchara.

* [It is not unlikely that the intended reading is -jon-aika-malapa[ham] -Ed.]

* Read grāšayiteā.

* [The reading seems to be eas visiskjam cha.—Ed.]

10 Read Brāšayēdoyasotu.

11 Read Brāšamayānām.

13 Perhaps pradanoyam though it offends against the metre.
13 Read Chanditeara".

^{* [}There seems to be an erasure between Hours and sumratsure in the original, but no room for two aksharas.—Ed.]

Read gadyānakān. Gadyānakā is a weight — 32 guājas; (Yājūavalkya, iii. 258). The symbol immediately following the letter kā of gadyānakā may represent a numeral figure.
Read grādayitrā.

¹⁰ Probably rapakārēna utkiritam. Compare above, p. 33, text 1. 26. [The original seems to show [Degorā f]naka prēritam 1—Ed.]

No. S .- TEMARA SATI-STONE INSCRIPTION OF SAKA-SAMVAT 1246.

BY RAI BAHADUR HIRA LAL, B.A.; NAGPUR,

Tëmara is a small village adjoining Kuruspal in the Bastar State of the Central Provinces. The place contains some ancient remains from which the sati stone under notice was somehow removed to Kuruspal, where it was found by Rai Bahadur Baijnath among the ruins of a temple. The stone has been, however, so long there that it has got entangled amidst the roots of a Tēndū (Diospyrus tomentosa) tree. Some portion of the stone is underground, but the visible portion measures 6' 5" × 1' 7" and contains 14 lines of writing in Nagari characters covering a space 2' 4" × 1' 7".

The letters are bold averaging liv, but, owing to the roughness of the stone, some of them are not clear. The language of the inscription is Sanskrit prose. It records the immolation of the illustrious Māṇikya[dēvi] after the death of her husband at Tēmarā-sthāna of Sairaharāja-rājya, a district of Chakrakōṭa-rāshṭra, during the reign of king Harischandra, in the Śaka year 1246.

In this record the place and date are important. It has been, I think, conclusively proved that Chakrakūṭa was situated in Bastar and the fact of Tēmarā being included in it is a further confirmation of what has been proved before.\(^1\) The date Saka-Sanvat 1246 corresponding to 1324 A.D., is the latest yet found of the period when the interior of the Bastar country went by the name of Chakrakūṭa. The record being necessarily brief does not give any clue as to what family king Harischandra belonged, and until otherwise proved, it does not seem unreasonable to suppose that he was of the same dynasty as the kings of Chakrakūṭa of the 11th and 12th centuries, viz. the Chhinda or Sinda family of the Nāga race. This record would, in that case, supply an additional historical name to the list of five kings known from other inscriptions and would show that the Nāgavamšī rule at least continued to about the middle of the 14th century A.D.

TEXT.3

Svasti śri [il*] Chakra-köţa-rashtrö śri-Saira[ha]-rāja-rājyē Ţēma-3 rā-sthā[nē] Mahāgoshtha-samāvāsa-šrī-Kalamkām-Nārāyaņaprěkshita-satya-vaktā satya-guru[h] rāja-šrī-Harišchamdradēva-rājyēh3[] [S(s)akē] 124[6] Raktākshi-samvatsa[rēha] Chaitra śudi [12] Sanau śrl-Harischamdradêva-adesakarî Amana [sva]rga-lökö [ga]t[ē] tat-saki(khi) sati 10 śri-Manikyadvē(dēvi) agnau pravi-11 13 ravi loka

TRANSLATION.

Hail! At Těmarā-sthāna (village) of the Sairaharāja-rājya in the Chakrakōta province (rāshīra), during the reign of the illustrious Harischandradēva, who spoke the truth and who

14

¹ Above, Vol. IX. p. 178.

From impressions taken by Mr. Venkobs Rao of the Madras Epigraphical Department (No. 259 of the collection for 1908).

^{*} Read -rajye.

was (as it were) the preceptor in truth(-speaking), through the favour (?) of the glorious (god ?) Kalamkam Narayana, residing at Mahagoshtha, -(in this village) in the Saka year 1248 the Raktaksha-samvatsara, on Saturday, the [12]th tithi of the bright half of Chaitra,-Amana, an executive officer (? ādēšakārin) of the glorious Harischandradeva, having gone to heaven (svarga), his companion (and) chaste wife Manikya[devi] [entered] eternity by entering

No. 9 .- TWO INSCRIPTIONS OF THE TIME OF THE NAGAVAMSI KING NARASIMHADEVA.

BY RAI BAHADUR HIRA LAL, B.A.; NAGPUR.

When I visited the shrine of Dantesvari at Dantewars in the Bastar State in 1897, I saw a small stone pillar covered with Telugu writing (on all sides, viz. the four faces and the top) fixed at the place where goats were sacrificed. It was then being used as a yupa2 and the priests of the temple did not know what was written on it. My friend Rai Bahadur Baijnath sent me impressions from which the text was deciphered and a brief notice appeared in Vol. IX. (p. 168) of this Journal. Fresh impressions were subsequently taken by Mr. Venkoba Rao, and I am indebted to Rai Bahadur V. Venkayya for kindly revising the text after comparing it with the fresh impressions. The slab on which it is inscribed is 2' 6" high, the breadth of each of the 4 faces being about 71" and the top is consequently 71" square. As stated above, the whole was covered with writing, but a portion has peeled off carrying away the final portions of almost all the lines of the third face and the beginnings of those of the fourth. Almost everything of the record on these 2 faces is lost. The engraving on the top is also much damaged and in the impressions almost the whole of it is illegible. It appears that there were altogether 43 lines on the 4 faces, and the top which appears to contain the end had 7 lines, making a total of 50. On the top of the first face, there are figures of the sun and the moon. Dantewara being south of the Indravati which, as I have said elsewhere, formed the boundary between the Nagari and Telugu scripts, this record is in Telugu characters. The letters are bold and well formed with an average size of 11. Sa, ka and ra appear in a somewhat antiquated form. The language is Telugu. The object of the inscription was apparently to record a gift,3 which was made on the 10th day of the dark fortnight of Jyeshtha in the Saka year 1147, during the reign of Jagadekabhūshana-Mahārāja Narasimhadeva. The date corresponds to 13th June 1224 A.D.5 as calculated by Mr. Gokul Prasad, Tahsildar of Dhamtari. It is not clear whether the grant was made by the king himself or by some one of his subjects, but the phrase śriman-Narasimhadeva-mahīrājulo-rājya etc. (ll. 6 to 11), "the reign of the illustrious Mabaraja Narasimhadeva" seems to show that it was some person other than the Maharaja who made a reference in this wise.

The other inscription was found at Jatanpal, 40 miles from Dantewara. It is situated to the north of the Indravati and is inscribed in the Nagari character on a slab measuring $4' \times 1'$ $4_3^{1'}$,

² I.e. a sacrificial post, This probably refers to the last incarnation of the god Vishnu.

^{*} Line 46 speaks of i dharmanu 'this charity' and line 23 has deei, while in line 35 we have a portion of achandrarkke suggesting that either a village or some land was given till the sun and moon endured to the temple

I originally read the date as 1140 (above, Vol. IX. p. 163). The last figure of the year is partially broken off and in the first impressions it looked like a zero, but in the fresh ones it appears to be 7.

If the year 1147 is an expired one, the date would correspond to 2nd June 1225 A.D.

almost the whole of which is covered with big letters averaging 2". There are altogether 18 lines. Between lines 16 and 17 the imprecatory figures of a pig followed by an ass are inserted.

On the top of the inscription there are the figures of the sun and the moon together with 7 small circles in a row apparently representing the remaining 7 planets. The meaning of these is clear. The top figures denote that the grant is to last as long as the navagrahas or the 9 planets endure, while the bottom figures represent a curse on the transgressor of the gift declaring his father an ass and the mother a pig. The language is corrupt Sanskrit prose. The object is to record a grant of land made by one Kāmā Nāyaka to one Rāhila Pāṇḍē. Kāmā Nāyaka appears to be a subordinate of a chief named Sōmarāja under Mahārāja Narasimhadēva. The mention of the mother Gaṇgādēvi after the king's name is not clear. The date given is the Saka year 1140 without specifying any other details. It corresponds to 1218 A.D. In this year there was an eclipse of the sun and the month of Jyēshtha was intercalary. So it was doubly meritorious to make a gift in that year.

Narasimhadeva apparently belonged to the Nagavamsa dynasty. Some other longer inscriptions of this king have also been found in the Bastar State. Before these are published it will be premature to make any remarks about him.

A.-DANTEWARA.

TEXT.

| 7070 5 | | 700 | |
|--------|-----|-----|-----|
| L'a | THE | Fac | læ. |
| | | | |

| 1 Svasti śrimatu sa- | 22 | dava | | | | |
|--------------------------|----|--------------|--|---|---|---|
| 2 masta-praśasta-1 | 23 | dēvi | | | | |
| 3 ssahitam śrims[j*]- | 24 | na n(ā)dla . | | | , | |
| 4 Jagadēkabhūsha- | | [gā]ma | | | | |
| 5 ņa-mabārāju- | | li ām[dya] . | | * | | |
| 6 l-aina śrima[n*]-Na- | 27 | [m]du poda | | | | , |
| 7 rasihya(simha)dē[ya]- | 28 | maru dipa . | | | | |
| 8 maharāju- ² | | [m]unaku . | | | | |
| 9 la rājyā- | | | | | | |

| - | THE LOTS | 487 | | | | | | | | | | | | |
|------|----------|-------|-------|-------|------|---|---|-----|---|---|-------|--------|-------|-----------|
| | | | Sec | ond F | ace. | | | | | F | ourth | Face. | | |
| 10 | bhivric | ldhi | prav | a[rdd | ha]- | | | 30 | | | | | | akha- |
| 11 | mänan | nugă- | | | | | | 31 | | * | | * | | |
| 12 | n=ä-ch | amdr | Arkka | je. | | | | 32 | | * | | | * | . itha |
| | mugā | | - | | | | | 33 | | | * | | | tamdri |
| | Saka-T | | | | | | | | | | | | na | tammu |
| | mbult | | | | P | | | 34 | * | | * | - | | d[k]una |
| | | | | | | | | 35 | | * | | .[cl | arh* | drarkka- |
| - | md-av | | - | | | | | 36 | | * | | | . 5 | apamga- |
| | Jyësh | | | | | | | 37 | 4 | | | | | diniki |
| | samur | | | | | | | 38 | | 4 | | | | lu mara |
| 19 | hs(hu |)la-d | asam | 1 | | | | 39 | | | | | kurh | |
| | | | - | | | | | 40 | | 4 | | | | kumd[u] |
| | | | Th | ird F | 100. | | | 41 | | | | dap | - | yaku[m] |
| 20 | [ka] | | | | | | | 42 | | | | | | |
| - 33 | kum | | | | 1 | , | | 43 | | | 1 | . dı | | tha-pati. |
| 41 | WATT | * | | | * | | * | 400 | * | * | Bet | na[D]c | QA(YI |) [Ra]. |

No. 245 of the Madras Epigraphical collection for 1908.

Read pratasti-sakitam. This phrase also occurs in the Tsandavôlu inscription of Buddharāja. See above, Vol. VI. p. 272.

Read -maharājula.

| | | Te | p of | pillar | r | 4 | | | |
|---------------------|----|----|------|--------|-----------|---|------|---|--------|
| 44 . nārbdu . | 12 | | | 47 | * | | | | vi[ru] |
| 45 mu petimohehinam | | | | 48 n | | * | | * | |
| 46 i dharmamu e . | | | * | 49 p | oi nü[ru] | | 1/4- | | * |
| | | | | 50 | | | | 1 | |

TRANSLATION.

(L. 1-19.) Hail! In the reign of the illustrious Jagadekabhushana Maharaja alias the prosperous Narasimhadeva, possessing all pre-eminences,—which is augmenting and prosperous (and stable) as long as the sun and moon endare—in the Saka year 1147, in the month of Jyeshtha, on the 10th of the dark fortnight

B.-JATANPAL.1

TEXT.

- 1 Svasti [il*] sri³ māhārājāh³
- 2 Narasimghaidēvah rāvah
- 3 Gamgā-döv[i] mātā | mamda-
- 4 lika Somarajah | Ka-
- 5 mā- Nā[ya]kaḥ dataḥ⁶ [bh]u-
- 6 mi Rāhīla Pāmdē pra-
- 7 tigrābī | Mēdani Pāmda(dē)
- 8 Dēva-nāyaka Jāmu Sā-
- 9 hu | Ghikā sēthi[i] Somāī
- 10 ēt[ē] pālaka(kāb) 1- vrahma-vadha [g]ova* 1
- 11 [pitri]-vadha vålaghataka i čta[t]papė-
- 12 shu [1]ipyatë ii nsya bhumil [pralo]-
- 13 payes i s[v]adatao cha prada cha va [i] jo harto va-
- 14 sum(sum)dharā [1] shashthi var[u]sha-sahasrā-
- 15 pl narakë jayatë krimi
- 16 Sakanalo 1140
- 17 [Ja]sya'll bhumi pralopaya[ti tasya*]
- 18 garda[bha] va(ba)pa 19su[kari] mai[||*]

TRANSLATION.

Ll. 1—10 Hail! (While) the illustrious Mahārāja Narasimhadēva-rāva (is raling) (and) Gangādēvī (i.) the mother (and) Šomarāja (is) the mandalika, Kāmā Nāyaka gave land, the recipient being Rāhīla Pāndē. Mēdani Pāndē, Dēva-nāyaka, Jamu Sāhu, Ghīkā Sēthī (and) Somaī — these (are) the protectors¹³ (of this grant).

¹ No. 251 of the Madras Epigraphical collection for 1908.

^{*} Read tri. * Read maharajah.

^{*} Read Narasimhadiya-ravah.

Probably data bhamah is meant.

^{*} Read goradae. The syllable das at the end of the line is represented by a vertical stroke in the original.
7 Read ôhāmim.

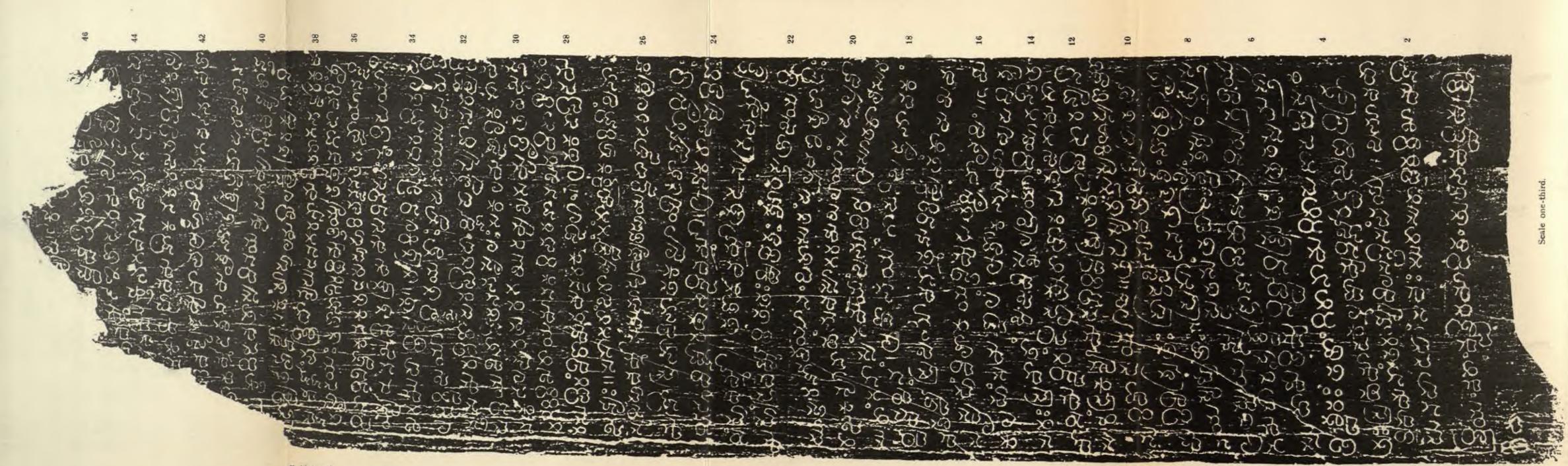
^{*} Probably šihām pāpēna lippantē asya bhūmim pralopayanti yē is intended.

Read svadattām paradattām vā yō harēta vasamdharām i shashtim varsha- sahasrāni narakē jāyatā krimih.

Read Sak-ankah. 11 Read yo bhamim pralopayati. 12 Read sakari masi.

¹³ That is, they will see that this grant is duly respected.





Ll. 11-15. The killing of a Brahmana, [the killing] of a cow, parricide, the killing of children — these are the sins of which [one] who resumes his land shall be guilty. He who resumes the grant given by himself or another is born a worm in hell and (grovels there) for sixty thousand years.

L. 16. The Saka (year) 1140 in figures.

Lt. 17-18. Hel who despoils the land has an ass for (his) father (and) a pig for (his) mother.

No. 10.—NOTE ON THE AMARAVATI PILLAR INSCRIPTION OF SIMEAVARMAN.

BT PROFESSOR E. HULTZSCH, PH.D.; HALLE (SAALE).

To Rai Bahadur Venkayya I am indebted for the fresh inked estampage of this inscription, which is reproduced on the accompanying Plate. The text of the inscription was published in 1890 in my South-Indian Inscriptions, Vol. I. No. 32. In the translation (loc. cit. p. 27) I would now substitute the following version of the first verse:—

"Let them grant you choice glory for a long time,— those dust-particles on the feet of Srighana, which are hostile to worldly existence, (and) which glitter incessantly amidst the cluster of the rays of the jewels on the crests of the lords of gods and of demons!"

In the Nachrichten d. K. G. d. W. z. Göttingen, 1903, p. 310 f., my late friend Professor Kielhorn has shown that this verse is an imitation of the second of the introductory verses of Bāṇa's Kādambarī.

The inscription does not contain a date, and the Pallava king Simhavarman to whose reign it belongs cannot be identified with any other Pallava king of the same or similar name. The approximate time of this record must therefore be settled on paleographical grounds. The alphabet is what Dr. Burnell has called the transitional type of the Tolugu-Kanarese characters. He notes as characteristics of this type the four letters cha, dha, bha, and ia. I have followed these test-letters through a number of inscriptions from the Telugu country, vis.—

- No. 1.—The Maliyapundi grant of Amma II. (above, Vol. IX. p. 52 f.), after A.D. 945.
- No. 2, -The Rapastipundi grant of Vimaladitya (above, Vol. VI. p. 354 ff.), A.D. 1018-19.
- No. 3.—The Korumelli plates of Răjarăja I, (Ind. Aut. Vol. XIV. p. 50 ff.), after A.D. 1022.
- No. 4.—The Teki plates of Chōdaganga (above, Vol. VI. p. 338 ff.), A.D. 1086-87.
- No. 5.—The Pithapuram plates of Vira Choda (South-Ind. Pal., Plate xxix.), A.D. 1092-93.
- No. 6.—The Chebroln inscription of Vikrama-Chola (above, Vol. VI. p. 226), A.D. 1127.
- No. 7.—The Chellur plates of Kulöttungs II. (Ind. Ant. Vol. XIV. p. 56 ff.), A.D. 1143.

¹ Lines 17-18 are engraved below the figure of a pig followed by an ass.

This is a name of Buddha according to Amara, Hömachandra and the Nāradapańcharātra; see the St. Petersburg Dictionary, s.v. The Pall form Sirighana or Sirighana occurs in the Diparamen, i.11, and ii. 1.

⁴ South-Ind. Pal., sec. ed., p. 26.

No. 1 still shows the old forms of the four test-letters. The new form of dha appears first in No. 2, and the open forms of cha and bha in No. 3. In addition to these, the Telagu form of sa is exhibited by Nos. 4-7 and by the Amaravati pillar, which has consequently to be placed after No. 3.

In order to settle the time of the Amaravati pillar within narrower limits, the letter ha may be used. In Nos. 1-5, as in the Amaravati inscription, the curve at its right end extends below the line, while in Nos. 6 and 7 it passes very little lower than the left portion of the letter and resembles already the normal Telugu shape. On the whole Nos. 4 and 5 agree most closely with the alphabet of the Amaravati pillar, which may therefore be placed between Nos. 3 and 6, say about A.D. 1100.

In lines 38 and 47 of the inscription, mention is made of the city of Dhānyaghaṭa or, Dhānyaghaṭaka. For other forms of this ancient name of Amaravati, see now above, Vol. III. p. 94 and note 5; Vol. VI. pp. 85, 146 f. and 157; Vol. VIII. pp. 11 and 67 f. The town had been included in the Pallava kingdom already in the time of Sivaskandavarman of Kānchīpura; see above, Vol. VI. p. 85.

No. 11.-PACHAR PLATE OF PARAMARDIDEVA; VIKRAMA-SAMVAT 1233.

By ARTHUR VENIS.

The subjoined inscription is edited from two ink-impressions kindly supplied by Dr. Vogel. The historical and descriptive matter of this article is from the pen of Mr. V. Venkayya, whose unsparing courtesy I would here gratefully acknowledge. The original copper-plate on which the record is engraved is said to have been dag up some 40 or 50 years ago in Pachar, a village 12 miles north-east of Jhansi city, by one Ganeshju while excavating the foundations of his house. The exact spot is now unknown, but it was somewhere on the raised mound (consisting of the usual débris of old houses, etc.) on which the village stands. The copper-plate was in the possession of a Brāhmaṇa named Bindraban, son of Kali, one of the 2amindārs of the village, and he presented it to Government. The plate is now preserved in the Provincial Museum at Lucknow.

The inscription consists of a single plate with a circular hole at the bottom meant for the ring to which the king's seal must have been soldered. Neither the ring nor the seal has, however, been traced so far. At the top of the plate—about the middle of the first four lines of the inscription— is engraved a goddess squatting, having four arms, with an elephant standing on each side and lifting up its trunk, apparently to pour water over her head. The figure is nearly the same as that found on the Banda District plate of Madanavarmadēva and resembles the one engraved on the first of the Ichchhawar plates of Paramardidēva and the Semra plates of the same king. In the latter, however, the goddess is squatting on a lotus. All these figures are evidently representations of the goddess Gaja-Lakshmi.

The history of the plate and the notes on the antiquities of the villages mentioned in the in-cription are taken from a memorandum received from the Collector of Jhansi.

In some of the other cases, where a similar figure is engraved, each of the elephants carries a water pot in its trunk; see s.g. above, Vol. IX. Plate facing p. 173.

¹ Ind. Ant. Vol. XVI, Plate facing p. 208.

^{*} Ibid. Vol. XXV. p. 205.

Above, Vol. IV, Plate facing p. 166.

^{*} A similar figure is cut on some of the seals of the Katak king Maha-Bhavagupta I. (above, Vol. III. pp. 341, 345 and 346, and Vol. VIII. p. 139). The seal of the Arang copper-plate of Maha-Jayaraja (Dr. Fleet's Corpus Inscriptionum Indicarum, Vol. III. p. 191) and that of the Raypur plates of Maha-Sudavaraja (ibid. p. 198) bear a similar goldess; also the seal of the Khariar plates of the latter (above, Vol. IX. p. 171).

The preservation of the inscription is good. The characters are Nagari and the language Sanskrit. As regards orthography, v is used for b throughout. The dental sibilant occurs for the palatal in sakti for śakti (l. 2), dasa for daśa (l. 8), asva for aśva (l. 17), visada° for viśada° (l. 20), and sāstra for śāstra (l. 21). The palatal sibilant takes the place of the dental in vaśundharā for vasundharā (ll. 5 and 19), Vājašanēya for Vājasanēya (l. 11), śīmā° for śīmā° (l. 14) and raśudhā for vasudhā (l. 18). The anusvāra is in many cases not clearly marked. Final consonants are not distinguished, e.g. samvata is actually written instead of samvat in l. 9; phalama for phalam in l. 18; vasēta for vasēt in l. 20; and °paṭṭama for paṭṭam in l. 22.

The record belongs to the Chandella family—called Chandratréyal in this (line 1) as well as in the other known inscriptions of the dynasty. The Chandellas were lords of Kâlañjara (t. 4), i.e. Kalinjar, the well-known hill-fort situated in the Banda District, Bundelkhund, of the United Provinces. The tract of country over which they ruled was called Jējābhuktika or Jējābhukti³ (between the rivers Jumua and Narmadā), apparently after king Jējā, whom Kielhorn identified with Jayaśakti, one of the earliest kings of the family. About the name Jējābhukti, Dr. Hultzsch remarks: "This old name of Bundelkhand, the country which was ruled over by the Chandellas is the original of the vernacular form Jajāhūti or Jajāhūti, just as the modern Tirhut is derived from Tirabhukti."

Our inscription opens with a verse in praise of the Chandrātrēya family and then refers to kings Jayasakti and Vijayasakti of the same family. The record then registers a gift by the Paramabhatṭāraka Mahārājādhirāja Paramēšvara, the glorieus Paramardidēva, an ardent worshipper of Mahēšvara, who meditated on the feet of the P. M. P. šrī-Madanavarmadēva who, in his turn, meditated on the feet of the P. M. P. šrī-Prithvīvarmadēva. While at Vilāsapura Paramardidēva granted land in the village of Lauvā within the vishaya of Karigavā. The grant was made on Wednesday, the eighth tithi of the dark fortnight of Kārttika in Samvat 1233, expressed both in words and in figures. The donee was a Brāhmaṇa named Paṇḍita Kēšavašarman of the Kašyapa-gōtra, who was a stadent of the Vājasanēya-šākhā, had the three pravaras of Kašyapa. Avatsāra and Naidhrava and had come from the Bhaṭṭi-grahāra called Mutāūsha. He was the son of the Dvivēdin Tīkava, grandson of Rā (?) Tihuṇapāla and great-grandson of Chan Valahavā. The document was written by Subhānanda of the Vāstavya race and engraved by Pāthaṇa, son of Rajapāla, who is described as a master of the art and craft (बेट्रभोविद्यक्रमेणा, 1. 22).

Without entering into the history of the Chandella dynasty, it is here necessary to state that the inscriptions of Paramardideva, hitherto known, range, according to Kielhorn, from

In the Khajuraho inscription, Chandratreya is said to have been a sage and the son of the sage Atri; above, Vol. I, p. 130, verse 7.

² See e.g. above, Vol. I. pp. 123, 138 and 212.

Mr. V. A. Smith's Early History of India, p. 312.

^{*} This king is mentioned in line 2 of the subjoined inscription.

⁵ Above, Vol. I. p. 218.

The abbreviations pain, dei, ra and chan occur also in the Seura plates; above, Vol. IV. p. 155.
 To the same family belonged Prithvidhara who wrote the Seura plates; above, Vol. IV. p. 156.

The Chandellas have left magnificent monuments at their chief towns Mahoha. Kallujar and Khajuraho. Lovely lakes were also formed by them by throwing massive dams across the openings between hills. The Chandellas were frequently in contact with the Kalschuris of Chedi and with the kings of Kanauj either as friends or foes. They also took part in the efforts made from time to time by Indian princes against Muhammadan aggression. According to Mr. V. A. Smith, the most notable representative of the Chandellas is the Raja of Galhaur near Mungir (Monghyr) in Bengal.

A.D. 1167 to 1201, while the date of the subjoined record corresponds to 27th October 1176 A.D. O.S. From other inscriptions we know that Paramardideva of Jejabhukti was conquered by the Chahamana king Prithviraja about 1182 A.D. On the 27th April A.D. 1203, the former surrendered the fort of Kalinjar to Kutb-ud-din Aibak. From an inscription at Kalinjar we also learn that Paramardideva was a poet. He is said to have composed out of innate faith a eulogy of the god Purari (Siva).

As regards the localities mentioned in the subjoined record, Lauvā, the village in which the land granted by the king lay, may be identified with Lewa, three miles west of Pachar. There are several villages named Kargawan near Jhansi. By far the largest and most important of them is one situated five miles north-east of Chirgaon and nine miles north-east of Pachar. According to tradition, Pachar, where the plate was unearthed, was itself known as Bilaspur about ten or fifteen generations ago and owned by Naik Brahmanas. If this tradition be true, king Paramardideva must have made the grant when he was encamped at Pachar. According to the Collector of Jhansi, there are "in Pachar distinct evidences of Chandel buildings. The chief is a small square temple, about eight feet square and the same height of the usual Chandel pattern (of the simplest kind). It consists of roughly squared slabs and columns of granite carved in the less elaborate Chandel style. This temple is situated in the heart of the village some 10 feet below the present level of the surface there. Steps lead down to it and the earth is prevented from falling in by a brick wall all round the space where the temple stands."

Another grant of Paramardideva issued from Vilásapura is engraved on the Ichchhawar plates found near the village of Ichchhawar in the Pailani tahail of the Banda District of the United Provinces. This grant is dated in Samvat 1228 corresponding to A.D. 1171 and was engraved by Palhana, son of Rajapala. The Pachar plate was also engraved by the same man. It is therefore not impossible that both the Pachar and the Ichchhawar plates were issued from the same place.

The dimensions of the land which was conveyed by the subjoined inscription are stated in terms of the quantity of seed required to sow the given area, vis. 7½ dronus of seed to be sown in the manner specified in line 8:

¹ See his Supplement to Northern List, above, Vol. VIII. p. 16.

² Arch. Surrey of India, Vol. X. Plate XX 1, 9 and 10; Vol. XXI, pp. 173-74.

¹ Ibid. Vol. XXI. p. 38.

Journal, Bengal Asiatic Society, Vol. XVII. Part I, p. 316.

^{*} At Lewa there is a "baoli" (large well) lined with square stones, some of which are clearly of Chandel workmanship, and a granite slab that clearly formed originally part of a Chandel building has been utilised to form a set; stone, bearing an inscription which, however, is quite illegible.

At Kargawan, pieces of granite bearing Chandel carvings have been built into the walls of an old Mahratha fort and there is said to be an old well now filled in, lined with the large Chandel bricks.

The Collector of Jhansi also mentions another tradition in connection with Pachar. A beirāgi from Jatara (in the Orchha State, 20 miles south of Mauranipur in the Jhansi District) by name Pahlav Das, told the villagers some forty or fifty years ago that there had been four more such temples near the existing shrine, two at a short distance to the east, one to the north, and a fourth, the exact location of which is unknown. All these temples were said to be buried and (if existent) remain so to this day. Pahlav Das is also said to have pointed out the site of a disused Chandel with which has since been excavated. This is situated about one furlong east of the village. It is lined below the level of the surface with the large bricks characteristic of Chandel work. Chandel ruins and carvings occur in many other villages throughout the whole district of Jhansi from the extreme north-east near the junction of the Dhasan and Betwa to the extreme south where are the famous Chandel sites of Deogarh, Chandpur, Dudhai and Madanpur.

[&]quot; Ind. Ast. Vol. XXV. p. 208.

The engraver of the Semra plates was also called Palhapa. Here, however, his father's name is not given. The writer of the Ichchhawar plates was the Kayastha Prithvidhara. The Semra plates were written by a man named Prithvidhara, who belonged to the same family as Subhinands, the writer of the Pachar plate; see note 7 on p. 45 above.

वापगत्या कोरडे सार्ददोणसप्तपरिकलिता प्रस्पप्रत्येकवाध व्यवस्थया। दण्णकाविकता भूमि: 🕬

An exact determination of the superficial area is no longer possible. But it is interesting to compare a similar passage in a grant of the Chandella king Madanavarmadêva dated in Samvat 1190, which was found in the Banda District and edited by Kielhorn. Here the passage runs as follows: इल्ट्याइपि इल १० सत्तम्मियंच वीगे कोर्ट्र दोषसाइप्य दत्ति. Our text is fuller and seems to explain some of the terms about which Kielhorn was in doubt. Thus वापगत्या is the Sanskrit for the Prakrit form वीगे and describes the grain as sown broadcast, i.e. not as sown first in seed beds and then transplanted. Again, the compound प्रयास्थानवाध्यावस्था, which I analyze thus: (1) प्रयस्था प्रयोक्षवाध्या व्यवस्था gives precision to the phrase इन्द्रिय. So far we learn that the land conveyed by Paramardidêva measured "ten ploughs," i.e. it could be ploughed in one day by ten pair of oven. The ploughing was to follow a certain method (vyavasthayā), namely, that of leaving a dividing line or boundary after each prastha of seed sown. The total quantity of seed is (as in the earlier deed) 7½ drōnas; and it had to be sown broadcast.

There remains the difficult word कोरड, which Kielhorn read as कोरडे in his text, adding a note that "it should denote some particular kind or kinds of grain." His suggestion is of course in complete accord with the syntax and the general drift of the passage. It even tempts one to read कोवड़े in our text as a piece of careless engraving for कोढ़ने. If this somewhat bold expedient were adopted, the Sanskrit word कोइन as the equivalent of the current Hindi कोइबन would supply the name of the common millet kodo, which may have been employed as the standard grain for broadcast sowing. For the word कोइब as it appears in our text, I can offer no Sanskrit equivalent. If it corresponds to the Mahrathi कोइब "dry", the sense of the whole passage would be: "As much land as may be covered by 7½ dronas of seed, in the dry condition, thrown broadcast."

TEXT.

- 1 [भी] ॥ स्वस्ति ॥ जयत्वाच्चादयित[य] विश्वेश्वरिश्चरित: । चन्द्रावेयनरे-न्द्राणां वंशयन्द्र इवोक्ज्वल: ॥ तव प्रवर्षमाने वि
- 2 रोधिविजयभाजिश्वजयमार्किविजयस(म)क्त्यादिवीराविभ[1]वभास्तरे परमभद्दारकम-चाराजाधिराजपरमेश्वरत्या-
- 3 पृथ्वीवकंदिवपादानुध्यातपर[म]भद्रारकमञ्चाराजाधिराजपरमिश्वरश्रीमद्भवकंदिवपादानु-ध्याभ(त)पर[म]भद्रारक-

^{&#}x27;As to the method of measuring land by the quantity of seed required to sow it, the references to my hand are Elliot's "Ancient Tenure of land in the Maratha country" (Ind. Ant. Vol. XV. p. 268) and the Settlement Report of Jhansi, 1871, p. 125; but this does not throw much light on the word korada. [In one of the in-criptions of the Välllabhattasvämin temple at Gwalior, mention is made of land measured by the quantity of seed required to sow it (above, Vol. I. p. 161); also in a grant of the Vallabhi king Dharasëna IV. (Ind. Ant. Vol. XV. p. 340, text line 45 f). In the Tinnevelly district of the Madras Presidency and in the Telugu country, land is often measured by the amount of seed required to sow it or by the amount of grain produced by it.—Ed.]

1 Read Fari.

- 4 महाराजाधिराजपरमेश्वरपरममाहेश्वरश्रीकालक्षराधिपतिश्रीमत्परमिह(र्दि)देवो वि-जयो । स एव दुर्व्विषहत[र]-
- 5 प्रतापताचितसकत्तरपुकुलः कुलवधूमिव वग्र(स्)स्वरा[त्र]राकुलां परिपालयत्र-विकलविकेनिर्मालीक्रतमितः । करिगवाविषयान्तःपा-
- 6 ति[जी]वाद्यामोपगतान्त्राद्यणानन्यांच मान्यानिधकृतान्कुटुम्बिकायस्पदृतवैद्यमञ्चन-रादीन्यव्यान्त्रस्वोधयति समाज्ञापयति चास्त् वः सन्विदि-
- तं ययोपरिलिखितेनिमन्यामे मजलखला सखावरजङ्गमा साधक[द्वी] भूत-भविष्यद्वसमाननि:शेषादायसहिता प्रतिषिद्वचाटादिपवे-
- 8 ग्रा वापगत्या कीरडे साईद्रोणस[त]परिकलिता प्रस्तप्रत्वेकवाधव्यवस्था।
 द[स](ग)इलावकिया भूमिरसा(सा)भिव्येलासपुरे वयस्थिगद्धि-
- 9 क्यातदयोपितसङ्ख्तमे स[स्वत]रे कार्त्तिके मासि झण्णपचि[ष्ट]म्यान्तियाथङ्कतोपि सस्वत(त्)१२३३ कार्त्तिकविद प वुधवारे । पुण्यतीयीदकेन वि-
- 10 धिवल्यात्ता देवादीनान्तर्थ भास्तरपूजापुर:सरं चराचरगुर्व भगवनां भवा[नी]-पतिमभ्यद्ये इतभुजि इत्वा मातापित्रोरात्मनय पुख्यशोवि-
- 11 वृहये । मुताउषभटाचहारविनिर्माताय कथापगोवाय कथापावलारनेध्(ध्र)व-[वि]प्रवराय वाजम(स)नेयमाखाध्यायिने चौ । वलह[वा]पपौव[ा]-
- 12 य [रा?] । तिइणपालपोताय दि । तीकवपुताय प । केशवश्रमीणे त्राह्मणाय कुशलतापूर्वन इस्तोदकेन खस्तिवाचनपूर्वेश्वन्दार्कसमका-
- 13 लं पुत्रपौताद्यन्वयानुगामि यासनीकत्व प्रद[त्त]। इति मत्वा भविद्वराजा-अवण्विधेयैर्भृत्वा भागभोगादिकं सर्व्वमस्त्रो(स्रो) समुपनेत[व्यं] । तदेना-
- 14 [म]स्य भूमि(मिं) समंदिरप्राकार[i] सनिर्णमप्रविश्र[i] ससर्व्वाश्यने चुकर्प्या (प्या) सादि-भूक्डामपरैरपि [श्री](सी) मान्तर्णतैर्व्यसुभिः सहित[i] सवाद्या[भश्र]न्तरादा[श्रा]
- 15 [भु] खानस्य कर्षतः कर्षयतो दाना[ध*] मनविक्रयस्या कुर्वतो न केनचित्काचि-द्वाधा कर्त्तव्या । अत्र च राजराजपुरुपाटविकचाटादिभिः स्वं
- 16 स्त्रमामार्थ्य(वां) परिवर्त्तव्यमिदश्वासाहान[म]नाहेदामनाचार्यश्रेति भाविभिरिप भूमिपालै: पालनीयमिति ॥ उज्जञ्च ॥ ম[स्त्रं] भद्रास[न] ক্ত-
- 17 वं वरास्ता(या) वरवारणाः । भूमिदानस्य पुष्पाणि पत्नं स्तर्गः पुरंदर ॥ भूमि यः प्रतिगृह्णाति यस भूमि प्रयक्ति । उभी ती पुष्पक-
- 18 मांगी नियतं खर्मगामिनी ॥ वहुभिर्व्वश् (स)धा भुका राजभिः सगरादिभिः यस्य यस्य यदा भूभिस्तस्य तस्य तदा फलम्(म्) ॥ स्वद-

¹ Read Batell.

Bead oatental.

^{*} Read "gawizfas".

Read. ny.

Bend gwife. The usual reading is fweifer.

O.



- 19 त्तां परदत्तां वा यो हरेत वशु(सु)न्धरां । स विष्ठाय[i] क्रिसिर्भूभ्या(ला) पित्रिभ: सह मजाति ॥ षष्ठिं(ष्टिं) वर्षेसहसाणि खर्मे वसति भूमिदः ।
- 20 श्राच्छेत्ता चानुमन्ता च तान्धेव नरके वसेत(त्) ॥ खहस्तीय(यं) राजश्रीपर-महिंदेवस्य मतं मम ॥ विस(म)दगुणगणाधीन्नामवा-
- 21 स्तव्यवंध्यः सकलविदितसा(शा)स्त त्रीग्रभानंदनामा । अलिखदविनपालस्यात्रया धर्मालेखी स्मृटललितनिवेश(शै)-
- 22 रचरैस्तामपदम(म्) ॥ रजपालस्य पुत्रेण पाल्हणेन च शिल्पना । उत्कीर्खा वर्ष्णघटना वैदग्धीविश्व[क*]मीर्ण(णा) ॥ श्री [॥*]

No. 12.—AMAUNA PLATE OF THE MAHARAJA NANDANA; [GUPTA-] SAMVAT 232.

BY THE LATE DR. T. BLOCH, PH.D.

This plate has been discovered a short time ago on the estate of Babu Janakiballabh Prasad Narain Simha, Zamindar of Amauna, Pargana Arwal, in the district of Gaya. Amauna is about 2 miles east by north of the well-known town and market-place of Daudnagar on the east bank of the river Son in the Gaya District. The plate has been lent to me through the kind offices of Mr. R. S. Greenshields, I.C.S., Collector of Gaya.

[The text of the subjoined inscription has been printed with a translation in the Journal and Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, Vol. V. No. 5, May 1909, in an article entitled "The Mallayashtikā grant of Nandana" by Mr. Paramešvar Dayāl. There are a few differences in this transcript which will be pointed out in the footnotes. According to Mr. Dayāl, the plate was found in December 1907 "in the fields of Bhendiā Bighā, a hamlet of mauza Amaunā. It came to view after the surface soil had been washed away a little by rain. The site of the find is said to be an elevated land which is padti 'uncultivated' and of the class called rerhā, a kind of saline unproductive soil, on which even grass does not grow, and which becomes soft and loose in the rainy season. There are, however, no indications of ruins at this particular spot, though to the north-west of it, at a distance of about a quarter of a mile, is a filha 'mound' considered to be the site of an old mud fort."—Ed.]

The plate consists of a single sheet of copper, $5\frac{1}{2}$ by $11\frac{2}{4}$, including the handle with a square hole on its proper right side, which may have been intended for the royal seal. It is, however, evident that no seal ever was attached to the plate. The inscription is written in eight lines on one side only. The characters agree with the alphabet, which was in use in North-Eastern India during the time of the Gupta kings, and I feel no doubt in referring the date in line 8 of the inscription (Samvat 2 232) to the Gupta Era. Its European equivalent, accordingly, would be A.D. 551-2. The language is Sanskrit, but not very correct. Thus, the spelling āchchhēttā for ākshēptā, in line 7, appears to be due to the vernacular pronunciation of that time, and a little before, in line 6, the writer originally had confounded this word with ākshēpaḥ, for which he substituted its correct form later on.

1 [Mr. Dayal gives the dimensions of the original plate as 9}" x 5;" excluding the handle.-Ed.]

This word is spelt Samreatts. I have adopted the above reading, which appears to me the reading originally intended.

The inscription records the grant of the village Mallayashtika to a Brahmana, named Ravisvāmin, who belonged to the Gargya-götra and was a student of the Vajasanēvi-Šākhā. The grant was issued from Pudgala, a locality, which I have not been able to identify, by the Mahārija Nandana, who held the title of Kumārāmātya,2 and who describes himself as " meditating over the feet of the king (deva), and of his guru" (1. 1). It is thus evident that the Maharaja Nandana was merely a feudatory chief, and it appears not altogether unlikely, that one of the later Gupta kings may have been the paramount sovereign to whom he owed allegiance.

The date of the inscription (I.S: Samuat 200 30 2) doubtless refers to the Gupta era. and corresponds accordingly to A.D. 551-2. It is further specified as the 20th day of Magha. It is interesting to find the solar calcudar in popular use in Magadha, or Bihar, at such an early time; for it is well known that, at present, the agricultural year, governed by nakshatras, is solar in Bihar and in the United Provinces, while further to the east, in Beneral, a purely solar form of the calendar has come into general use for almost all practical purposes. I cannot remember having met with many lunar dates in old inscriptions from Bihar, and a careful and systematic compilation of all the available dates in ancient epigraphs from Bihar and Bengal may probably reveal to us the fact that the soli-lunar calendar of North-Western India was very little used in the north-east of India. and this again would afford a very striking analogy to the method of recknning time, which still is made use of for agricultural purposes in Bihar. Dr. Grierson has lately called my attention to the remarkable fact, that among the peasants of modern Bihar, the nakshatras are not lunar mansions, as they used to be from the beginning, but that among them only the position of the sun in connection with the nakshatras is taken into account. This curious custom, may, thus, very likely, go back to ancient times, and the introduction of the solar liahi year into North-Eastern India would, in that case, appear to have been made easy on account of the existence there of a purely solar form of the Indian calendar.

The name of the engraver of the inscription appears to have been Südraka, if I am right in explaining the blundered words at the end of the inscription (1, 8: Sudrakaredrakshunah) as Śūdrakon-ötkirnam "engraved by Śūdraka." I may, perhaps, mention here, merely as a curiosity, that this name, famous to us as that of the author of the Mrichchhalatika,3 occurs again in two other inscriptions from the Gaya District (Nos. 642 and 646 in Kielhorn's List*), one of which dates from the time of Nayapala, and the other from the time of Yakshapala, probably 9th or 10th century A.D.

TEXT.

1 Svasti Pudgalāyāh? dēva-guru-padānudhyāta8-kumārāmātya-mahārāja-Nandanah kušali 2 Mallayashtikāyām brāhman-ādin yathā-prativāsino manayati viditam-vo bhavishyati

2 This title is very frequently met with on my Basarh scale; see Archaelogical Survey of India Answal Report, 1903-04, p. 108. Its correct explanation in Sanskrit appears to be: कीमारादास्य कमाल: 'one who has been in the service of the king, from the time when he was a boy."

According to the late Professor Pischel, Dandin was the real author of the Mrichelhakafika. This theory is based on the occurrence, both in the Myichchhokafika, and in Dandin's Karyadaria, of the verse: जिन्यतीय तमीं Smile वर्षतीयाचन नभ:; and further on the fact, observed by Professor Pischel, that all the verses, quoted as examples in the Kaeyadaria, are from Dandin's own poetry.

* Ep. Ind. Vol. V, Appendix, pp. 86-87.

In a footnote on No. 646, the late Professor Kielhorn has added that it belongs to "about the 12th century A. D."-Ed.]

" From the original plate.

1 [Mr. Dayal reads Pungalayah.-Ed.]

· Originally paddsadhyato; but the sign of a sppears to have been struck out later on.

¹ Personal proper names, formed with ravi, surga, and similar words, appear to have been rather common in North-Eastern India in those days. It is evident that the persons, who adopted them, were Sauras, or worshippers of the Sun, and it seems worth while pointing in this connection to the large number of ancient images of Sürys, which have been found all over Bihar, and still may be seen along with Buddhist statues in almost every village in Bihar, close to which some ancient temple once existed.



- 3 yathā may-aisha grāmah asmai Gārgya-sagottrāya Vājasanēya-sabrahmachāriņē brāhmana-
- 4 Ravisvāminē mātāpittror-ātmanaś-cha dharmm-ōpachay-ārtham-ā-chandr-ārkkasamakālikah puttra-pauttr-ā-
- 5 di-bhögyah¹ bhumichchhidra-nyayön=ägrahäratvēn³=ätisrshṭas=tan=na kēnachid=asmad-vanša(thśa)jēn=änyē-
- 6 na và sva-dharmma-yasō-rthinā [ā]kshēpaḥ³ piḍā vā karttavyā [i]*] Uktain cha [i*]
 Shashṭi[m*] varsha-sahasrāṇi
- 7 svarggē modati bhūmidah āchchhēttā4 ch-ānumantā cha tāny-ēva narakē vasēd=iti [1]*]
- S Sva-mukh-ājūā Samvat⁵ 200 30 2 Mārgga di 20 Sūdrakarēdrakshuņaḥ⁶ [||*]

No. 13 .- PARDI PLATES OF DAHRASENA; THE YEAR 207.

BY PROFESSOR E. HULTZSCH, PH.D.; HALLE (SAALE).

I re-edit this inscription from some excellent ink-impressions kindly made over to me by Dr. Fleet, who contributes the following remarks on the original copper-plates.

"These plates were found in 1884 in the course of digging a tank at Pārḍī, the head-quarters town of the Pārḍī subdivision of the Surat District in Gujarāt, Bombay. The record on them was brought to notice and edited in 1885 by Pandit Bhagwanlal Indraji, without a lithograph, in the Journal of the Bombay Branch of the Royal Asiatic Society, Vol. XVI. p. 346 ff.

"The plates are two in number, each measuring about 9.5" by 3". They are quite smooth; the edges of them being neither fashioned thicker nor raised into rims: but, as may be seen from the facsimile, the inscription is in a state of perfect preservation almost throughout. They are somewhat thin, so that the letters, though not very deep, show through on the backs of them, to such an extent that some of them can be read there. The interiors of the letters show marks of the working of the engraver's tool.

"There is no ring of the ordinary kind, with a seal on it. But at each of the two ring-holes the plates were held together by a long copper wire, \(\frac{1}{6} \)" thick in the thickest part, which, after being passed through the ring-holes, had its ends twisted over and round and round so as to form a kind of complicated tie, without the ends being soldered together. As the ring-holes are not much larger than the wires, and as the plates appear to have been secured as soon as they were discovered, it would seem that these wires are the means by which the plates were fastened together ab initio.

"The weight of the two plates is 31 tolas, and of the two wires $1\frac{1}{2}$ tolas; total, $32\frac{1}{2}$ tolas = $12\frac{1}{2}$ oz."

¹ It looks as if the engraver had begun to write bhogyo, which he changed afterwards into the wrong form bhogyob.

² A small dot over re appears to me merely a defect in the plate.

The engraver clearly had written akehēptā first, on account of the well-known stoka, which he had in

^{*} A well-known blunder for akshepta, due to the vernacular pronunciation of the time.

b Looks like Samevatta.

Perhaps Śūdrakēn-čikīrmam? [Mr. Dayāl reads fūdrakarād-rakshuņah and translates "to be protected from the hands of the Śūdras."—Ed.]

The alphabet is of an early southern type. No distinction is made between the secondary forms of short and long i; I have, however, written i in the words iri- (1. 2), Antarmmandali- (1. 2 f.), and Kaniyas- (1. 4). The jiheāmāliya occurs twice (1l. 6 and 7). A final form of t seems to be used in $k[\tilde{e}^*]$ nachi[t] (1. 7). The second consonant of the group nna is expressed by a in Nanna (1. 3), but by a in aranava (1. 5). The abbreviation sain for sameat and the numerical symbols 3, 7, 10 and 200 are employed in 1. 9, where the tithi of the date is given both in words and in figures.

The language is Sanskrit prose; but one verse of the Mahabhirata is quoted in 1.7 f. The rules of sandhi are strictly observed, except in "svāmina (1. 3) and "eriddhayē (1. 5). Every consonant following r (except sibilants' and h) is doubled in accordance with Papini, viii. 4, 46 and 49, and the dh of anudhyata (1. 1) according to viii. 4, 47 and 53. The use of the word santaka (1. 2) and that of the genitive krishato before a surd consonant (1. 6) are evidently due to the influence of Prakrit.

The inscription records a grant of land to a Brahmana by the Maharaja Dahrasena of the Traikūtaka family. The king's order was issued from a place named Amraka (l. 1). The village granted bore the name Kaniyas-Tadākāsārikā (L 4) and belonged to the Antarmandali district (l. & f.). The donce resided at Kapura (l. 3). The name of the messenger conveying the royal grant to the donee was Buddhagupta (l. 8), and the date of the grant was the 13th tithi of the bright fortnight of Vaisakha in the year 207 of an unspecified era (1.9).

Before publishing the Pardi plates, Pandit Bhagwanlal Indraji had discovered another mention of the Traikūṭakas in a copper-plate inscription from Kanheri, the original of which seems to be lost.3 The Kanheri plate is dated in the year 245. The Pandit conjectured, on the grounds of contemporaneous historical allusions in certain records from the same part of the country, that the era of this plate ought to have commenced about A.D. 245. General Cunningham showed it to be the Kalachuri or Chedi era of A.D. 249, and his view was endorsed by Dr. Fleet and by the Pandit himself.

The alphabet and provenance of the Pardi plates, and the fact that they mention the Traikūtakas, render it extremely probable that their date also has to be referred to the Kalachuri or Chedi era, commencing in A.D. 249 as determined finally by Professor Kielhorn. The week-day or the nakshatra not being given, there is no detail by which the date can be actually tested. Dr. Fleet, however, kindly informs me that, if the year is applied as current, the European equivalent is the 4th April, A.D. 456, while, with the expired year, it would be the 23rd April, A.D. 457.

The Kanheri plate of (Kalachuri-)Samvat 245, which mentions the Traikūṭaka family, does not acquaint us with the name of the king of this dynasty to whose reign it belongs. From the Pardi plates we learn that the Traikūtaka king Dahrasėna was ruling in (Kalachuri-)Samvat 207=A.D. 456 or 457. Two further members of the same dynasty are known from coins, vis. Indradatta, the father of Dahrasena, and Vyaghrasena, the son of Dahrasena. The late Mr. Jackson stated that he had in his hands a copper-plate from Surat which is dated in

¹ See varsha, 1. 7.

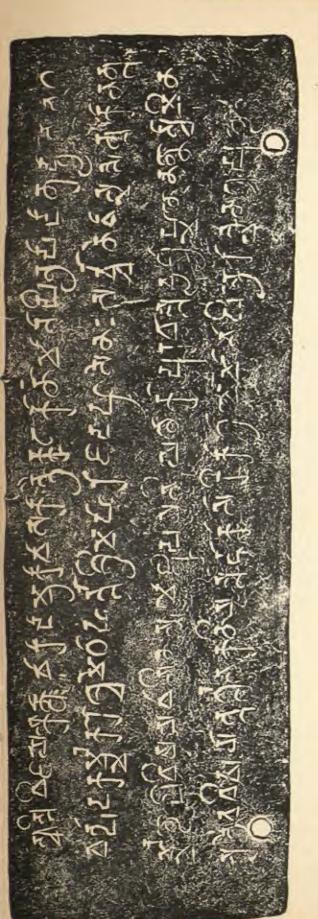
³ Inscriptions from the Care-Temples of Western India, p. 57 ff.

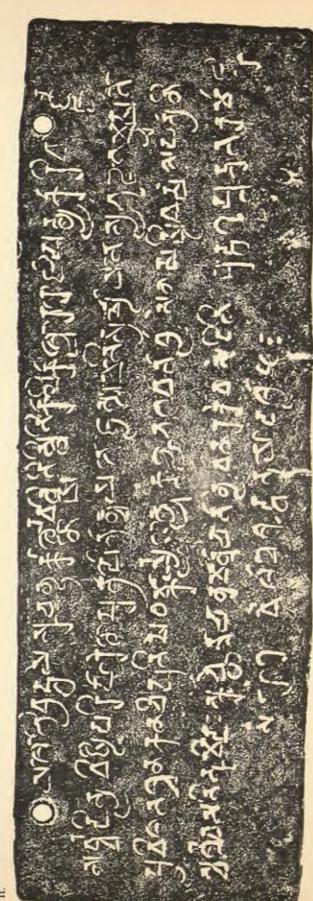
² Ind. Ant. Vol. XIII. p. 76 f.; Dyn. Kan. Distr. p. 294 f.; Journ. R. As. Soc. 1905, p. 566 ff.

Journ. Rombay Br. R. As. Soc. Vol. XVI. p. 346; Fienna Oriental Congress, Asyan Section, p. 220 f.

a Prof. Bapson's Catalogue of the Coins of the Andora Dynasty, etc., p. clxiii; compare the same scholar's article in Journ. R. As. Soc. 1905, p. 801 ff. Pandit Bhagranlal Indraji (Vienna Oriental Congress, Azyan Section, p. 222) read 'Rudragana' for Dahrasena, and Mr. Scott (Journ. Bombay Br. R. Az. Soc. Vol. XXIII. p. 2) prefers to read 'Dahragana' on the majority of the colos of Dahrasena, and 'Vyaghragana' for Vyaghrasena.







From ink-impressions supplied by

Collotype by Gebr. Plettner.

E, Hultzsch.

the (Kalachuri) year 231 and records a grant by Vyāghrasēna of the Traikūṭaka family: a facsimile of this record is much to be desired. It is worth noting that Dahrasēna and Vyāghrasēna style themselves on their coins parama-Vaishnava, 'a devoat worshipper of Vishnu,' while the Pārḍī piates (l. l f.) apply to Dahrasēna the synonymous term Bhagarat-pāda-karmakara, 'a servant of the feet of Bhagavat.'

As regards the places mentioned in this record, Dr. Fleet3 understands the term Antarmaṇḍalī-vishaya as denoting "the district of the territory between" the rivers Miṇḍhōļā, on the north, and Pūrņā, on the south, in Gujarāt. He identifies Kāpura with a fairly large village on or near the southern bank of the Mindhola, three miles south-south-west from Vyara, the head-quarters town of the Vyava subdivision of the Baroda State: the place is shown as 'Kapura' in the Indian Atlas quarter-sheet No. 23, S. E. (1888), in lat. 21° 4', long. 73° 25'. He identifies Kanīyas-Tadākāsārikā, "the smaller or younger (later) Tadākāsārikā," with the 'Tarsari,' 'Tarsari,' of maps, fifteen miles almost due west from 'Kapura,' and about halfway between the Mindhola and the Pūrņā. And he considers that Amrakā, where Dahrasēna was encamped when he made the grant, may possibly be the 'Ambachh,' 'Ambachh,' of the maps, about two miles towards the south-west from 'Kapura'; but he would observe that Amraka need not necessarily be anywhere near the other places mentioned in the record. He adds that Kapura gave its name to a territorial division, known as the Kapur-ahara, which is mentioned in a Nasik inscription of Ushavadata, and that the Chikhalapadra of that inscription is the 'Chikhalda' of the maps, on the south bank of the Mindhola, two and a half miles east-north-east from 'Kapura.'

TEXT.

First Plate.

1 Svasti [||*] Vijaya-skandhāvārād=Āmrakā-vāsakāt=Traikku(kū)ţakānāṁ mātāpitri-pādānuddhyāto Bhaga-

2 vat-pāda-karmmakarō=švamēdh-āharttā šrī-mahārāja-Dahrasēnah sarvvān=ēv=āsmat-

santakān=Anta3 rmmaņdalī-vishaya-vāsinas=samājñāpayati yathā Kāpura-vāstavya-brāhmaņaNaņna(ṇṇa)svāmina⁵

4 atr=aiva vishay-antarggata-Kaniyas-Taḍākāsārikā-grāmō mā[t]āpi[t]rōr=atmanaś=cha

Second Plate.

5 yaśo-bhivriddhayō(ya) ä-ohandr-[ā*]rkk-ārṇṇava-[kshi]ti-sthiti-kālikā(ka)ś-chōra-rō(rā)jāpatthyakāri-varijam

6 sarvva-ditya-vishti-parihārēņa putra-pautr-ānvaya-bhōjyas-samatisrishtō yatō-sya bhuñjatah-krishatō(tab)

7 pravi(di)šataš=cha na k[ē*]nachi[t] pratishēdhah-kāryya ity-uktah-cha bhagavatā Vyāsēna [I*] Shashti-varsha-sahasrāni(ni)

8 svarggē vasati bhūmi-daḥ [l*] āchchhēttā ch=ānumāntā cha tāny=ēva narakē vasēd=iti [l*] Buddhsgupta-dūtakam=ājūā

9 sam 200 7 Vaišākha-šuddha-trayodasyā[m*] 10 3 [ll*]

¹ Journ. Bombay Br. R. As. Soc. Vol. XXIII. p. 6 f.

See Ind. Ant. Vol., XXXIX. p. 97 f.

¹ Above, Vol. VIII. p. 82, No. 12.

[·] From two sets of inkimpressions supplied by Dr. Fleet.

Read "reaminestroaira.

TRANSLATION.

(Line 1.) Hail! From the camp of victory pitched at Amraka, the glorious Maharaja Dahrasena, (who belongs to the family) of the Traikatakas, who meditates on the feet of (his) mother and father, who is a servant of the feet of Bhagavat (Vishau), (and) who has performed an ascamedha, addresses (the following) order to all Our subjects living in the Antarmandali district (vishaya):—

(L.3.) "(We) have granted to the Brahmana Nannasvämin, residing in Käpurs, the village Kaniyas-Tadākāsārīkā included in this same district, for the increase of the merit and fame of (Our) mother and father and of Ourself, for as long as the moon, the sun, the ocean and the earth shall exist, to the exclusion of robbers and of those who do harm to the king, with exemption from all taxes and from forced labour, to be enjoyed by (his) sons, grandsons, (and further) descendants.

(L. 6.) "Therefore nobody shall cause obstruction to him while he enjoys, cultivates, and assigns (this land)."

(L. 7.) And the holy-Vyāsa has spoken :—
[Here follows one of the customary verses.]

(L. S.) (This) order (was issued),—Buddhagupta being the messenger (dūtaka),—in the year 207, on the thirteenth—13th—(tithi) of the bright (fortnight) of Vaisākha.

No. 14.—TWO NOLAMBA INSCRIPTIONS FROM DHARMAPURI OF THE 9TH CENTURY A.D.

BY H. KRISHNA SASTRI, B.A.

The two subjoined records are engraved on the four faces of a pillar which was removed in 1904 from Dharmapuri in the Salem District to the Madras Museum, where it is set up near one of the entrances into the Archæological Section. The pillar measures 5' 4½" by 1' 4" on the east face, 5' 6½" by 1' 4" on the west, and 5' 5½" by 1' 3" on the north and south faces. It is surmounted by a pinnacle from which proceed in the eight directions eight petals which open downwards and are slightly raised at the edges where they meet the margins of the pillar. Prior to its removal the pillar was built into the floor of a mandapa in front of the Mallikarjuna temple at old Dharmapuri. The inscriptions on it were copied by Mr. G. Venkoba Rao early in 19013 and a brief note on their contents is found in the Annual Report on Epigraphy for 1900-01, p. 6, paragraph 11. The pillar has suffered from the vandalism of ignorant people who appear to have used the stone for some purpose or other, with the result that all the four faces are worn smooth about the middle and bear big round indentations 5 to 5½ inches

¹ Nos. 304 and 305 of the Madras Epigraphical collection for 1901.

This is the name by which an almost deserted quarter, about 1; miles from the modern town of Dharmapuri, is known. It contains the temples of Mallikärjuna, Märiyamman and Vishno. The tank on whose bund the inscribed slab No. 309 of 1901 (noticed below, p. 64), was discovered, is also quite close to this quarter of Dharmapuri.

² Better impressions from which the accompanying plate has been prepared were obtained by Mr. Venkoba Rao about the end of 1901. On this occasion he also copied another mutilated Nolamba record on a broken pillar which was lying in the Mariyamman temple (No. 348 of 1901; see below, p. 63.)

in diameter, in which are lost one, two or more syllables in three consecutive lines on each of the four faces (Il. 11 to 13 on the west face; Il. 37 to 39 on the south face; Il. 66 to 68 on the east face and Il. 95 to 97 on the north face). The north-east rim of the pillar; at its lower end, is also damaged alightly and consequently, the end of Il. 79 to 83 on the east face and the beginning of Il. 106 to 110 on the north face have disappeared. The latter gap (in the imprecatory verses) has, however, been filled up with the help of similar passages occurring elsewhere. The break in the north-east rim has again, been the cause of one or more blanks in Il., 8 and 9 of inscription B. Except for these defects, the two inscriptions are in a state of excellent preservation and are written in old Kanarese characters of the period to which the inscriptions belong. They present a striking similarity to those of the Mantrawadi, Sirûr and Nidagundi records edited by Dr. Fleet.¹

As regards paleography, the initial vowels a, a, i, u and e occur in their usual forms (e.g. in 11. 7, 64, 52, 58 and 82). Long i when attached to consonants is distinguished from the short by a small loop made inside the circular i-mark at its base (compare, e.g. the i of pallio with the i of "sime in 1. 55). In Tagadur" (Il. 36 and 40), in Mulapalli (Il. 43 and 55), in Mālasamgha (l. 47) and in Pārvva- (l. 33), the symbol for long ā is marked in a slightly different way from the ordinary form of it as used e.g. in the @ of bhw in ll. 4, 97 and 107 (twice). This variant is like the subscript y with its bend to the left not quite pronounced. Short u affixed to the consonants k and r is marked by a hook (bending downwards) attached to the right side of the letter; whereas, in other cases it is a vertical u-like tube affixed from below to the consonant to which it belongs. When the u-mark is lengthened in the case of k and r a second hook (also turned downwards) is added - the first, however, being in this case, reversed for the sake of convenience. E is marked by a similar hook attached to the left side of the talekattu, if one exists, or, somewhere on that side of the letter according to the whim of the writer. It may be noted that long ē is denoted in a few instances by the e-mark being made to end in a loop as in the case of the long i (Jine, 1. 3; -vare, 1. 15; and geyyuttire (wrongly for geyyuttire), 1. 26); whereas, in others, it is not distinguished from the short s (compare e.g. kude, 1. 46 with Sēnā°, 1. 47). The ai-symbol occurs only once in 1. 72 in the word nairatiya (a mistake for nairritya). Here, the stroke slanting to the right over the talekaffu of the letter may be compared with the corresponding stroke (but slanting to the left) of the secondary at in old Nagari inscriptions. The compound vowel-mark o, which consists of a and e, is simple in its formation, and consists of two inverted hooks placed one at each end of the top-stroke-the one to the right representing ā and that to the left s. The anusvāra is marked by a small circle or, more frequently, by a dot and is always placed at the right top-corner of the letter to which it The upadhmāniya in li. 106 and 107 is represented by the symbol for r (60); while, the jihvāmāliya, which may be expected at the end of 1.99, does not occur there.

With regard to consonants, it may be stated that all the five test letters discussed by Dr. Fleet in his study of ancient Kanarese records, are represented in the subjoined inscriptions—vis. kh, i, j, b and l. Kh in khanda-(l. 42) and in duhkham=(l. 99 f.) is of the later cursive form. N occurs as the first member of the conjunct consonant iga, at the beginning of l. 61 and is of the closed type. J appears ten times and in only one instance (j of jää in l. l) is of the square type exactly similar to that which occurs in the Mantrawadi inscription of Amoghavarsha I. In the other nine instances, it is of the same type but closed. The letter b is more frequently used and is always of the closed type, except in Sembalattura (l. 56) where the subscript b is, however, formed as in modern Kanarese. L is also of frequent

Nidagundi inscriptions (ibid. Vol. VII. pp. 199, 203 and 209).

Above, Vol. VII. pp. 198 ff.
 See, for example, his remarks on palmography in the Nilgund inscription of Amoghavarsha I. (above, Vol. vI. p. 99), in the Hatti-Mattur and Narcgal records (ibid. pp. 161 and 162) and in the Mantrawaidi, Sirur and

occurrence and is of the cursive type with the miniature in the centre representing the old square form of the letter. It is noteworthy that in its secondary form l is always of the square type (see ll at the beginning of ll. 5 and 23, in l. 7 and in ll. 21 and 63). The palatal 4 occurs in its subscript form in $j\bar{n}\bar{a}$ (l. 1) and as the first component in the conjunct consonant $\bar{n}cha$ (ll. 21 and 32). The rare consonants gh and chh are also found, the first in l. 47 and the second in its subscript form in ll. 99 and 101. Dental d is hardly, if at all, distinguished from the lingual. Ph, in the only case where it occurs (l. 98), is marked by a small cross stroke on its right side, which distinguishes it from the unaspirate. The $r\bar{e}pha$, as the first component of a conjunct consonant, is denoted by a wavy line affixed to the top of the consonant; but, when the conjunct consonant ends in i, the $r\bar{e}pha$ is affixed at the root of the circular i-symbol, so as to make an angle with it. The final form of l occurs in l. 35.

As for orthography, it may be noted that τa is used for τi (in nairatiya, l. 72), that consonants are invariably doubled after a repha with which they occur in a conjunct form, that in some Kanarese words nasals are changed into anusvāra before consonants of their class (teinkana, ll. 57, 58, 59, 60, etc.; karumgal, l. 61; talumdāle, l. 77; adumbu, l. 78; kadegombu, l. 81) while, in some others they are not (Sembalattūra, l. 56; karumgal, l. 60 f.; banda, l. 62; =ante, l. 63); that vice versa the anusvāra is changed into the corresponding nasal twice in l. 54 before the words nakara and narasāšana (for narašāsana) and that in the latter as well as in sishyar (l. 50) the palatal i and the sibilant i are wrongly used, one for the other. The language of the record is Sanskrit (poetry, verses l to 5 and press l. 4 f.) and Kanarese prose (ll. 5 to 94). The description of the boundary line contains some rare words whose interpretation has not yet been satisfactorily made out. My notes on the translation will show that some of these are very closely allied to Tamil.

Of the 110 lines which make up inscription A., the first 55 deal with the grant proper. Ll. 56 to 94 give a detailed description of the boundary of the village granted and the remaining Il. 95 to 110 contain the usual imprecatory verses. With an invocation to the doctrine (śāsana) of the Jinendras (verse 1) and a short prefatory line in Sanskrit which mentions the family of the Pallavas, we are introduced to Pallavadhiraja, who is said to have conquered the whole earth, up to its four corners. His son was Nolambadhiraja, of whom it is stated that he was worshipped by all the samantas, by which, we have, perhaps, to understand that he brought them under his control and consolidated the work of his father. To this Nolambadhiraja and Jaabbe (l. 19 f.), daughter of Rachamalia-Vermādi² and Mahādēviyar (ll. 16 and 17), was born Mahēndrādhirāja-Nolamba (l. 24), described as having acquired the five great sounds (samadhigata-pañchamahāśabda)—the distinguishing biruda of a feudatory rulers—though later on he is styled 'the favourite of (the goddesses) Fortune and the Earth (iriprithvivallabha) " like any other paramount sovereign. Mahendradhiraja belonged to the Pallava family and was an ornament of the Pallava race (Pallavakula-tilaka)4 (11. 20 to 23). It is recorded of him that he destroyed the race of Mahabali (i. e. the Banas) (l. 24 f.) and was occupying, at the time of the record A., the palace (irimada) at Tagaduru (Il. 56 and 37). In the Saka year eight hundred and fifteen, when the cyclic year Paridbavin was current, on

² Compare Mr. Venkayya's remarks on the palmography of the Ranastipundi grant of Vimaladitya (above, Vol. VI. p. 348).

² Rächamalla bears the titles Salyacakya Koagunicarma dharmamahäräjädhiräja, *lord of Nandagiri' and *ruler of Kovalala, the best of towns * (II. 12 to 16).

Above, Vol. V. p. 216, foot-note 3.

^{*} Ibid. p. 201.

^{*} This epithet was also borne by Dantivarma-Mahārāja of the Triplicane inscription (above, Vol. VIII p. 292 and p. 293, note 4) and by the mahāmandalēieura Chiddanadēva-Mahārāja (Assaul Report on Epigraphy for 1905-06, Part II. paragraph 5).

Thursday, the fifth tithi of the bright half of Āshādha, while the nakshatra was Pūrva-Phalgunī and Jupiter rose in (i.e. entered) the sign Dhanus,—two private individuals Nidhiyanna and Chandiyanna—sons of a merchant from Srimangala—built a Jaina temple (basadi) at Tagadūru (l. 40). The former of these received from the king, free from all encumbrances, the village of Mūlapalli (l. 43 f.) and in his turn made it over to Kanakasēna-siddhāntada-Bhaṭāra, pupil of. Vinayasēnasiddhāntada-Bhaṭāra of the Pogariya-gaṇa, the Sēn-ānvaya and the Mūla-saṃgha (ll. 47 to 51), for repairs, additions, worship, etc. in that basadi (l. 42 f.). The witnesses to this transaction were the four samayins, the nāḍu, nakara, and the naratīsana (ll. 52 to 55). Inscription B. which consists of 10 lines is written at the bottom of A. (all round the four faces of the pillar) in the same old Kanarese script as A. and in Kanarese prose. It records that a certain Lōkayya got from Ayyapadēva, son of Mahēndra-Nolamba, the village of Budugūru and made a gift of it to the Jaina temple built by Nidhiyaṇṇa—apparently identical with the one mentioned in A. The founder Nidhiyaṇa is also said to have presented a garden (?) for worship in the same temple.

From the foregoing it is evident that the subjoined records belong to the Nolambas who claimed descent from the Pallavas. The territory over which the Nolambas originally held sway has been suggested to be the small district of Nolambalge, mentioned in two Rashtrakūta records³ of about the 9th century A.D., which, later on, appears to have received the appellation of Nolambavādi thirty-two thousand. This province, which must have been originally confined to the districts of Tumkur and Chitaldroog in the Mysore State, and part at least of the Anantapur District in the Madras Presidency, was gradually extended as the Nolambas rose into power, and in the 10th century A.D. included the major portion of the Bellary, Bangalore and Kolar districts. Portions of Salem and North Affect must also have been in the possession of the Nolambas at the time of the subjoined record.³

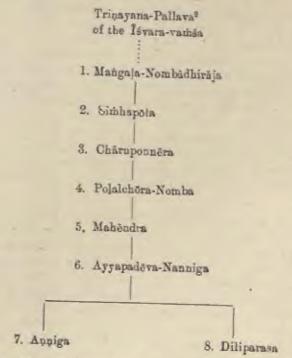
In his volumes on Chitaldroog and Tumkur (Vols. XI and XII of the Epigraphia Carnatica) Mr. Rice has collected a large number of Nolamba records which give us a fair outline of the history of that dynasty. Two pillar inscriptions from Hēmāvati in the Maḍaksira tāluka of the Anantapur District and two from the town of Maḍaksira itself, have been included by

^{&#}x27;Samagies are literally the members of a congregation or religion. Here, perhaps, the reference is to the four main divisions of the Jainas who, like the Hindus, recognise the four castes, viz. the Brühmanas, Kahatriyas, Vaiiyas and Sūdras. The significance of the next three terms nādes, nakara and naratāsana is not clear. The first means 'country' or 'country-folk'; the second, 'town' or 'town-folk' and the third perhaps signifies 'rulers of men' or 'officers of government.' What the author wants to say may be that the witnesses to the transaction were the whole Jaina community consisting of 'country-folk,' 'town-folk' and 'officers.' Mr. Venkayya suggests that the three terms in question, with the reflexive pronoun icasē which follows them, may be meant to serve as a clause explaining what has been stated before. In other words, it may mean that the samagies who were witnesses to the present grant, are to be considered in themselves as good as the nāde, the nakara and the naratāsana who, perhaps in ordinary cases, here witness to public transactions.

[&]quot; Epigraphia Cornatica, Vol. XI. Cl. Nos. 33 and 34 and Introduction, p. 7.

Dr. Fleet's Kanarese Dynasties, p. 318. That Nolambavādi included a part, if not the whole, of the Anantapur District is proved by the fact that Heūjeru, i.e. the modern Hēmāvati, the capital of the Nolambas, is situated in the Madaksīra tāluka of that district. As regards the influence which the Nolambas exercised about the end of the 9th century A.D. in the northern portion of the Salem District, we have the evidence of the subjoined records at Dharmapuri. About this period, North Arcot too must have been subject to Nolamba influence; for, the Âmbūr inscriptions of the time of Nripatungavikramavarman refer to a cattle raid organised by the Nolamba against Âmaiyūr (above, Vol. IV. p. 180). The original territory of the Nolambas, however, was in the Tumkur and Chitaldroog districts of the Mysore State where their sway in the past is still testified to by the existence of a class of ryots known as Nopabas and of town-names like Nopavinkere (possibly a corruption of Nopambankere), Ayyamangala (i. e. Ayyapamangala, so called after Ayyapa, son of Mahēndra), Nolambapaṭṭaṇa, Nanuivāļa, stc. (Mr. Rice's Mysore Gazetteer, Vol. II. pp. 163 and 500).

Mr. Rice in his Tumkur volume.1 One of the Hemavati epigraphs furnishes the following genealogy of the Nolambas :-



This record, which belongs to the time of No. 8 Diliparasa, is dated in Saka 864 and is thus later than the Dharmapuri inscription (A.) by 50 years, i.e. about two generations. Consequently No. 5 Mahendra may be identical with Mahendradhiraja-Nolamba or Mahendra-Nolamba of inscription (A.) and No. 6 Ayyapadeva-Nanniga, with Ayyapadeva "the asylum of truth (nanni)" of inscription (B.). This identification further enables us to identify No. 4 Polalchora-Nomba and No. 3 Chāruponnēra with Nolambādhirāja and Pallavādhirāja® of the Dharmapuri record. We do not know of any dated records of these two last mentioned kings; but Mr. Rice refers to some from the Chitaldroog District's which may prove that Pallavadhiraja-Charaponnera of the foregoing genealogy-son of Simhapota-was a contemporary of the Rashtrakuta king

Ep. Cars. Vol. XII. Si. Nos. 24, 23, 35 and 36.

² Tripayana-Pallava is synonymous with Trilöchana-Pallava, Mukkanți-Pallava or Mukkanți-Kăduvețți (au the name sometimes appears in Telugu inscriptions). Trildchana was the mythical Pallava king who was ruling the Telugu country prior to the advent of the Chalukyas under Vijayaditya of Ayodhya. In the mythical account of the Eastern Chalukyas given in copper-plates from the time of Vimaladitya downwards, Trilochana-Pallaya is mentioned as the king who opposed Vijayaditya in his victorious campaign against the south and perhaps also killed him (above, Vol. VI. p. 352, text, ll. 16 and 17). Trilochana is also mentioned in Telugu inscriptions as the contemporary of the early Chola king Karikala to whom he was subordenate. Mr. Venkayya places Karikala (and consequently also Tripayana-Pallava) roughly about the end of the 5th century A.D. The Isvara-varies to which Tripayana-Pallava belonged (as disclosed by the Hemavati record) is not mentioned elsewhere. One record from Nandalür (No. 580 of the Madras Epigraphical collection for 1907) actually traces Mukkanti-Kaduvetti to the third eye of Siva (Isvara). The Pallavas of Kañehi traced their descent from Brahma, through many Purapic

These two names appear more like general appellations and may have been borne by any one of the Nolamba kings who claimed descent from the Pallava family; whereas, those given in the genealogical record from Homavati were, perhaps, the real names of the two Nejamba rulers who immediately preceded Mahendradhiraja.

Jagattuoga-Prabhutavarsha-Govinda III. whose dates range from A.D. 794 to S131 and was, as a fendatory of that sovereign, ruling the Nolambalge one thousand and Nirgunda three hundred districts. Coming to Nolambadhiraja or Polalchora-Nomba of the Hemavati inscription, we gather from the subjoined record that he married Jaabbe, the daughter of the Western Ganga king Rachamalla-Vermmadi. This identical relationship is mentioned in two other records of Mahendra-one from Hemavati in the Anantapur District and the other from Baragur in the Sira taluka of the Tumkur District.3 These two inscriptions tell us that Jaabbe was the daughter of Rachamalla and the younger sister of Nitimarga-Permadi. According to Dr. Fleet, Rachamalla, the father-in-law of Nolambadhiraja, is identical with Satyavakya-Rajamalla (A.D. 840 and 870-71).3 As the earliest record hitherto discovered of Mahendradhiraja-Nolamba is dated in Saka 800, we may tentatively fix the lower limit of Nolambadhiraja's reign at A.D. 878-And as the father of Nolambadhiraja, vis. Pallavadhiraja, was a feudatory of the Rashtrakūta king Govinda III. (A.D. 794 to 813), the upper limit would be 813 A.D. Thus, Nolambadhiraja-the second king mentioned in the subjoined record-may be presumed to have ruled between A.D. 813 and A.D. 878-79, though the period covered by this interval is an unusually long one.

We arrive at the same result if we go back two generations from the carliest available date of Mahēndrādhirāja, vis. A.D. 878-79 (Si. 38), and shall be near to the close of Gövinda's reign. Still another synchronism from a Chitaldroog record may help us to settle the probable period of Charuponnera. Charuponnera's father Simbapota is therein mentioned (ibid, Cl. S.) as the subordinate of a certain Permanadi, who, as the name suggests, was evidently a Western Ganga king. According to Mr. Rice, Permanadi was a title which the early Western Ganga king Sripurusha-Muttarasa "took away from the king of Kanebi " (Mysore Gazetteer, Vol. I. p. 314 and Ep. Cars. Vol. VIII. Nr. 35). Dr. Fleet assigns this Sriparusha to the period A.D. 765 to 805 (Ep. I.ad. Vol. VI. p. 64). Consequently, the time of Charuponnera, son of Simbapota, must have been subsequent to A.D. 805

as was already found to be the case.

* Ep. Cars. Vol. XII. St. Nos. 24 and 38. Both of these inscriptions have been translated by Mr. Rice on pp. 91 and 94 of his Tumbur volume. Here, he connects Jayabbey-sabbol mahadesi of both the records, with Notambadhirajaratange which precedes a long parenthetical clause giving the parentage of Jayabbe. By separating the expression Nolambadhirājarātange into Nolambadhirājarā und tange, he arrives at the conclusion that the sister (taage) of Nojambidhiraja was married to the Ganga king Rachamalla. Jaabbe (or Jayabbe), we know, was the queen of Nojambadhiraja and mother of Mahandra. If, accordingly, the phrase Jayabbey-embolmahādēri is to be correctly connected with the word Nojamtādhirāja, the latter must, according to strict grammatical rules, end in the dative. But this would not be the case if we divide, as Mr. Rice does, the phrase Nojambādhīrājarātange into Nojambādhīrājarā and tange. I think it is more natural to divide it into Nolombodhirajar and ataage. That this is actually intended is apparent from what we find in the subjoined record which states that Mahendradhirája was born to Nolambadhirája (Nolambadhirájargyam) and to Jaabbe (Jaabbegam). Mr. Rice's wrong interpretation of this phrase is evidently also responsible for the statement in the Mysore Gazetteer, Vol. I. p. 307, that "Pallavadhiraja's daughter was married to the Ganga king Rajamalla." An inscription at Chikka-Madhure in the Challakere taluka (Ep. Carn. Vol. XI. Cl. 33), however, seems to prove that the Gangas and the Kolambas were related by intermarriage already in the reign of Simhapota. It is here stated that Permanadi (i.e. the Western Gange king Sripurusha-Muttarasa) married the daughter's daughter of

Above, Vol. VI. p. 66. Mr. Rice suggests that the Nolambadhiraja mentioned in an undated Gangs record of Nitimarga at Kendatti-Madivala (Ep. Carn. Vol. X. Kl. 79) and the Nolamba king of the same name mentioned in the Pallava record at Bhoga-Naudi (ibid. Cl. 26), also undated, may both be identical with Nolambadhiraja-Polalehora (ibid. Introduction, pp. xviii and xix)-father of Mahendradhiraja and brother-in-law of Nitimarga. This suggestion does not appear to be correct; for, Nitimarga-Permanadigal under whom the former Nolambadhirāja is stated to have been ruling the district Gangarusisira is, I believe, identical with Nitimarga-Permanadi Rapavikrama whom Dr. Fleet places between A.D. 810 and 840 and not with Nitimirga, the unidentified son of Sutyavakya Rāchamalla. Nolambādhirāja of the Naudi record does not appear to have been a feudatory chief but an independent Nolamba sovereign who 'was ruling the earth' (prithei-rajyam gey) without any overlord. Very probably he is identical with Immadi or Irmadi-Nojambadhiraja whose record of Saka 899 is found at Kandavara not very far from Naudi (Bombay Gazetteer, Vol. I. Part II. p. 332 and Ep. Carn. Vol. X. Cl. 45). Nitimarga, the brother-in-law of Nolambadhiraja-Polalchora, did not, probably, succeed to the Ganga throne; for, we know from the Huskuru inscription that Satyavakya Kajamalla's chosen successor (ysravaja) was

Bütarasa (above, Vol. VI. p. 66).

Of Mahendradhiraja-Nolamba the subjoined record states that he destroyed the family of the Mahabalis (i.e. the Banas). The Baragur and the Hemavati records report that Mahendradhiraja "uprooted Chora and others of his kinsmen." The Chora here mentioned may refer to the Cholas of the Telugu country,2 a branch of whom appears to have been roling about Hemavati and Nidugal about that period.2 How these Cholas of the Telugu country were 'kinsmen' of the Nolambas, is not quite clear. But in an inscription from the Maddagiri táluka of the Tumkur District (Ep. Carn. Vol. XII. Mi. No. 102) Chaladankakára Chöliga, who is referred to about 900 A.D. by Mr. Rice, is stated to have been of Pallava descent. A later Chola chief of Nidugal had the prefix 'Vira-Nonamba' added to his name. It may, perhaps, thus be possible to explain how the Choras mentioned in the Baragur and Hemavati inscriptions were 'kinsmen' of the Nolambas. The statement that Mahendradhiraja "destroyed the Banas" is not a mere boast; for, the very existence of the subjoined records (A.) and (B.) almost on the borders of, if not actually within, the Bana country, proves oud doubt the occupation of that part of the country by the Nolambas. From an inscription a. Budidepalles in the Punganur Zamindari which, on paleographical grounds may be referent to about the 9th century A.D., we learn that the Nolamba raided Puli-nadu (in the Bana territory) in the reign of Mahavali-Banarasa Banavidyadhara. If this Banavidyadhara be identical with the Banavidyadhara Mahabali-Vanarayar " who was governing (the country) to the west of the Telugu road " as a subordinate of the Ganga-Pallava king Nripatunga, his date would fall into the last quarter of the 9th century A.D.6 And, as Mahendradhiraja's conquest of the Banas is to be referred to about the same period, the raid on Puli-nadu recorded in the Budidepalle inscription may be supposed to have occurred in the early part of the reign of Mahendradhiraja and would, in that case, be but the commencement of his campaign against the Banas, which eventually earned for him the title 'destroyer of the Mahabali-race.'

Pallava sovereignty came to an end about the middle of the Sth century A.D. and in the subsequent straggle for power and supremacy among the various tribes that owed allegiance to the Pallavas, the Nolambas were often ranged against the Bāṇas. The incidents recorded in the Baṅgavādi viragal,7 for instance, show that during the reign of the Gaṅga-Pallava king Vijaya-Narasimhavikramavarman, Skanda-Bāṇādhirāja met in battle Daḍiya (Daḍiga), Bāṇarāja and Mahēndravikrama. During the reign of the Vaidumba-Maharāja Gaṇḍa-Triṇētra, Bāṇarasa and Vaidumba-mahārāja marched on Soremați and were met on the battlefield by the Nolamba, Bāchamalla and Daḍiga. An inscription at Pedda-Tippasamudram in the Cuddapah District states that the Vaidumba king Gaṇḍa-Triṇētra fenght with Nolombi (i.e. the Nolamba king) on the battlefield just referred to. The viragal at Chedalla near Puṅganūrlo belongs to the reign of Mahāvali-Bāṇarasa and states that the king on behalf of the

An undated inscription in the Bowringpet taluka of the Kolar District (Ep. Cars. Vol. X. Bp. 64) states that Mabendradhirāja was ruling the district Gangarusaira. This indicates his feudatory position, though the record does not expressly state it. At any rate, it must be referred to a period before A.D. 878 when, as will be shown in the sequel, Mahendra must have extended his kingdom and become an independent sovereign. The feudatory position of Mahendra thus suggested would reduce the long period of rule of Nolambadhirāja, arrived at on the previous page, by at least a few years.

² Asseal Report on Epigraphy for 1904-05, Part II. paragraph 5. The Mélagani inscription of Saka 896 refers to a Pallava prince named Chörayya-Nolamba (Ep. Cura. Vol. X. Mb. 84). Another record of Saka 933 (ibid. Ct. 118) mentions a Nolambadhiraja-Chörayya. It is, therefore, not impossible that the Chöra of the Hemavati and Baragur records was the name of one of the contemporaneous kinsmen of Mahendra.

^{*} Ep. Cars. Vol. XII. Introduction, p. 7. * Ibid. Vol. XI. Cl. 21.

No. 571 of the Madras Epigraphical collection for 1906.

^{*} Annual Report on Epigraphy for 1903-04, paragraph 26.
7 Abova, Vol. VII. p. 22. Another viragal noticed at the end of the same article mentions Mahavali-Banarasa on one side and Nolamba, Rachamalla, Mayindadiya and Dadiga on the other.

No. 295 of the Madras Epigraphical collection for 1905.

No. 533 of the same collection for 1906. No. 543 of the same collection.

Permanadi led an offensive campaign against the Nolamba, Rachamalia and Mayindadi and met them in battle at Soremati. We have already referred to the raid into Puli-nadu by the Nolamba during the reign of Banavidyadhara. In the reign of the Bana king Vijayadityan Vîrachülamani Prabhumëru, a certain Kaduvatți Muttarasan, perhaps connected with the Nolambas, attacked Köyatür, the modern Laddigam near Punganur's in the Bana territory. Thus, in these early conflicts we always see the Nolambas opposed to the Banas and it is not unlikely that herein we have to seek for the cause which led to the destruction or complete conquest of the Banas by the Nolamba king Mahendradhiraja-Nolamba which is claimed for him in the Dharmapuri inscription A. It will also be easy, now, to see how Nolamba records came to exist in such large numbers in the Bangalore and Kolar districts of the Mysore State which apparently belonged partly to Gangavadi 96,0001 and partly also to Perumbanappadit—the territory of the Banas. Mahendra before he entered into hostilities with the Gungas and the Banas appears to have been a subordinate of the former ruling the Gangarusasira. What led to his hostilities with the Gangas it is not possible to say at present.6 The fact that Racheya-Ganga, as stated in the Iggali inscription, died in battle against the Nolamba (i.e. Mahendradhiraja) about A.D. 891-927 and that Ercyappa (A.D. 908 to 938) "governed the Gangavadi province as a united whole after depriving all his enemies of their power "8 shows clearly that Mahendradhiraja, at least during his lifetime, held under subjection a pretty large portion of the Gangavadi province. This perhaps accounts also for the existence of an intrusive record of his time at Tayalur in the Mandya taluks of the Mysore District9 (the very heart of the Gauga country) which gives for Mahendra the date Saka S17-the latest known for him so far. It will be enough to state before closing this paragraph, that the Nolambas started a petty state in and around Hemavati in the Tumkur District about the beginning of the Sth century A.D. and continuing to hold it as the subordinates of the Rashtrakütas and the Gangas, they fell into frequent conflicts with the Bapas, the Vaidumbas and the Cholas and even with their overlords the Gangas. About the end of the 9th century A.D. they found a favourable opportunity and rose to eminence under Mahendradhiraja-Nolamba.

A new name in the succession list of the Nolambas which, as will be shown below, has to be placed between Mahendra and his son Ayyapa, has apparently been missed by Mr. Rice in his treatment of the chronology of that family. From an inscription at Avani in the Mulbägal täluka of the Kolar District, 10 it appears as if Mahendra had a brother called Iriva-Nolamba who was born of a different mother. The inscription states that Divabbarasi or Divalämbā, born of the Kadamba family, was the chief queen (agra-mahishi) of Polalchöra, who, as stated

¹ No. 542 of the Madras Epigraphical collection for 1906.

⁷ Annual Report on Epigraphy for 1906-07, Part II. paragraph 38. Bp. No. 13 of Mr. Rice's Epigraphia Carnatica Vol. X. refers to an earlier conquest of the same place and states that the conqueror Madhava-Muttarasar belonged to the Gaoga race.

^{*} Kölähalapura, the modern Kölär, was built by the mythical Ganga king Kölähala in the great Gangavädivishaya. Bempür (Bögür) twelve in the Bangalore District was granted to one of his subordinates by Ercyappa who was ruling over the Gangavädi 96,000. The large number of Ganga records on stone both in the Bangalore and Kölär districts prove that these districts were included in the Ganga deminions. In the Bangalore District a good portion of the agricultural population of the Wokkaliga sect belong to a subdivision called Gangadikāra. This name, according to Mr. Rice, is derived from Gangavädi—the country of which these people were the original inhabitants.

^{&#}x27; Mulbägal, Chintamani and Rowringpet talukas of the Kölar District bear traces of the supremacy of the Bana kings over these parts; Mr. Rice's Mysore Gazetteer, Vol. II. p. 105.

Nolambādbirāja, father of Mahendra, was ruling the same district as a fendatory of the Gangas; see above, p. 59, feetnote 3.

It is not unlikely that, in the matter of succession to the Ganga throne after the death of Rajamalla, there were disputes between his son Nitimarya (not identified) and the juvaraja Satyavakya Būtuga I, the actual successor of Rajamalla. Perhaps Mahendra Lelped his brother-in-law Nitimarya against Būtuga I.

[†] Above Vol. VI. p. 68.

[&]quot; Ibid. p. 49.

^{*} Ep. Carn. Vol. III. Md. 13.

¹⁰ Ibid. Vol. X, Mb. 38.

above, is identical with Nolambadhiraja, father of Mahendra. From the way in which I riva-Nolamba is introduced in the inscription, it looks as if he was born of Divalamba after Mahendra's succession to the throne, or, if born earlier, his claims to succession had been overlooked in preference to those of Mahendra, who had perhaps stronger support than Iriva-Nelamba. Still it is not possible to assert that, after Mahendra, the succession passed on direct to his son Ayyapa. The only sure date for Ayyapa hitherto known is Saka 841.1 Between this and Saka 817, the latest known date for Mahendra, there is an interval of nearly one generation. Mr. Rice refers to two inscriptions of the time of Nolambadhiraja-Nolipayya, from the Maddagiri taluka of the Tumkur District,2 one of which supplies the date Saka 820, Paingala. This Nolambadhirāja-Nolipayya is believed by Mr. Rice to be the same as Ayyapa. But we know that the latter's distinctive surname was Nanuiga and not Nolipayya. It is not impossible, therefore; that Iriva-Nolamba, the son of Divalamba and step-brother of Mahendra succeeded the latter under the name Nolambadhiraja-Nolipayya.3 If this conjecture is proved by future researches to be correct, it follows that Iriva-Nolamba mentioned in the Avani record was the son of Divalamba and not her grandson (Dilipayya Iriva-Nolamba) as Mr. Rice puts it.4 Unfortunately the record is not dated. Otherwise, it would have given us the date of Mahendra's death and that of the succession of Nolipayya; for, it states that Divalamba on the death of Mahendra built a temple and called it Nojamba-Narayanësvara after Nojamba-Narayana, one of Mahendra's birudas. She also granted the village of Avinasi (Avani) and called it Polalohoramangala, perhaps after the name of her husband and in it constructed the tank Divalabbasamudra after her own name.

Ayyapadeva, son of Mahendra, must have succeeded Nolipayya. Of him we learn from inscription (B.) that he had the biruda "the asylum of truth (nanni)." It is this biruda evidently that accounts for his other name Nanniga or Nanniga, which occurs in his inscriptions. He was the contemporary of the Ganga king Ereyappa and about A.D. 938 fought with the latter's help the battle of Tumbepādi against Vīramahēndra whom Dr. Fleet has identified with the Eastern Chalukya king Chālukya-Bhīma II. The only date available for Ayyapa from inscriptions published hitherto has been Śaka 841, Išvara—A.D. 918-19. Although Ayyapa must, in the early part of his reign have been at war with the Gangas, while the latter were attempting to regain what they had ceded to Ayyapa's father Mahēndrādhirāja, he, later on, became their friend as appears from his war against the common foe, the Eastern Chalukya king Chālukya-Bhīma II. If the statements made in the Kaluchumbarra grant of Amma II.

¹ Thi.I. Vol. XII, Si. 39. The Saka date 841 does not agree with the cyclic year Vikrama. It is two years too early. The same cyclic year without the Saka date is given for Ayyapadêva in Ep. Cars. Vol. XI, Jl. 29. But Cd. 62 of the same volume gives the correct cyclic year Isvara which corresponded to Saka-Saravat 841 current.

^{*} Ibid. Mi. Nos. 27 and 52.

Nolambādhiraja-Nolipayya (-Nalipayya) receives the surname Iriva-Nolamba Nolipayya (Nulipayya) in two records from the Kolar District (Ep. Cara. Vol. X. Kl. 198 and Bp. 4). If this refers to Dilipayya, the grandson of Mahēndra, as Mr. Rice takes it, it appears to have been applied to him in accordance with the custom by which grandchildren are often named after their grandfathers; we may thus have to presume that Dilipayya's surname was not that of his direct grandfather Mahēndra but that of the latter's brother Iriva-Nolamba Nolipayya (I.).

^{*} Ibid. Introduction, p. xix. Evidently the mistake is due to his taking Divabbarasi and Divalabbarasi to be two distinct individuals. But the record does not admit of any such interpretation.

⁵ Above, Vol. VI. p. 47.

^{*} See, for example, Ep. Cara. Vol. XII. Mi. 71.

⁷ The Nolambas seem to have been in conflict with the Eastern Chalukyas from still earlier times. Gunaga-Vijayāditya III. (A.D. 344 to 838) is stated to have "cut off the head of Mangi in battle." The Mallyapundi grant of Amma II. (above, Vol. IX. p. 48 f.) says that this Mangi was "the king of the great Nodambarāshtra (i.e. the Nolambavādi country)." We do not know of any ruler of Nodambarāshtra about this period, that bore the name or surname Mangi. The long interval between 814 and 878 A.D., noticed stready, must have counted more than one Nolamba king basides Nolambādhirāja-Polalchöra. Perhaps Mangi was one of these. Nombādhirāja, the first historical ancestor of the Nolambas, was, according to the Hömärsti inscription, known to the Karnātas (i.e. the Rāshtrakūtas) as Mangala. The Mangi of the Mallyapundi grant might have been named after this early Mangala.

are to be taken as literally true, Ayyapa must have fallen in the fight with Chālukya-Bhīms II. Dr. Fleet places this event about the end of Ereyappa's reign, i.e. between A.D. 934 and 938. Accordingly, we may perhaps infer that Ayyapa ruled from Śaka 841 (= A.D. 918-19) to Śaka 860 (= A.D. 938-39). But his records registered by Mr. Rice in the volumes of the Epigraphia Carnatica do not assign to him dates later than A.D. 920. After Ayyapa³ the family appears to have gradually declined till it was subjugated by the Chôla king Rājarāja I. of Tanjore in A.D. 998-99.3

The Nolamba occupation of Tagaduru which is established by the existence in it of the records of Mahandra and his son Ayyapa is corroborated by another inscription on a broken pillar discovered in the Mariyamman temple at old Dharmapuri. It registers the grant of a tank (?) called Marudanëri by Mahëndra-Nolamba in Saka 800 (corresponding to the cyclic year Vilambi) to the teacher Ponnera-goravar who, as the suffix goravar indicates, must have been a Saiva.5 It is also recorded in this inscription that the tank after repair was placed by the teacher in the hands of the sameyins.6 On this occasion, the merchants (evidently those of Tagaduru), among whom figure Chandiyanna and N[i]dhiyanna, the builders of the Jaina basadi recorded in inscription A., [assigned] tolls on certain commodities as a devadanc. The inscription being broken, it is not possible to say to what particular temple the devadana was intended. The record at any rate supplies us with two important facts, vis. (1) that already, in Saka S00 (the earliest date for Mahendra, known also from the Baragura record) Mahendra had occupied Dharmapuri and the surrounding country, and (2) that the Saiva and the Jaina faiths (samaya) were flourishing side by side at Tagadaru under the patronage of the Nolamba kings towards the close of the 9th century A.D. Still another fragmentary inscription on a pillar of black granite in the Mallikarjuna temple at old Dharmapuri7 begins with the phrase svasti Pallav-anvayaya and introduces Nolambadhiraja and the Ganga king [Rachamalla] in the very same terms as inscription A. The record does not appear to have contained any Saka date but the month, fortnight, tithi, week-day, etc. are given on one of the mutilated

² In the Decil plates of the Räshtraküta king Krishna III., dated in Saka 862, a Pallava king named Anniga is said to have been defeated by Krishna III. (Above, Vol. IV, p. 191). It is not unlikely that this Anniga was the son of Avvana.

* See Dr. Kittel's Kannada-English Dictionary, s. v. gorara; and above, Vol. VII, pp. 200 and 202.
It may be noted that guararadigal is also used as an honorific title attached to the names of Jaina teachers.

Above, Vol. VII. p. 187, text line 38.

^{*} The earliest Chôla inscription mentioned in the Epigraphia Carnatica (Vol. X. Introduction, p. xxiv) is one of Madiregonda Ko-Parakésarivarman. Mr. Bice himself doubts if this could be attributed to the early Cholaking Parantaka 1. The next sure record is one of Rajaraja 1. from the Hoskote taluka (Ep. Corn. Vol. IX. Ht. 111). Rajaraja's conquest of Gangapadi, Nulambapadi and Tadiyapadi are mentioned for the first time in his records of the 14th year. Consequently, we have to suppose that Rajaraja overran these provinces in A.D. 998-99, but perhaps allowed the rulers to continue governing their kingdoms as Chōla feudatories. For, Ht. 111 states that in Saka 920-the very year in which Rajaraja must have entered Mysore-Gannarasa, son of Ayyapadēva (apparently a Nolamba) was ruling a portion of Daligavādi as a feudatory of the Chöla king. In (Saka 923) the 16th year of Rajaraja, a certain Nolambadhiraja made a grant it his capacity as the general of the Chola emperor (Ep. Cara. Vol. X. Mb. 208). Nolambadbirāja Chorayya, with Nolamba attributes, was ruling in Saka 983 also as a tributary of the Chola king Mummadi-Chola (Rajaraja I.) (ibid. Ct. 118). In the 25th year of Rājarāja I. (é.e. A.D. 1009) Tagadūr-nādu was roled by a Chōja subordinate named Paūchavan Brahmādhīrāyan (Madras Epigraphical collection for 1909, No. 254) and was included in the Mulvayi-rajya in the reign of the Vijayanagara king Dévaraya I. (ibid. No. 251). It may be pointed out that KL 75, which Mr. Rice supposes to be one of Rajaraja I, dated in his 7th year (ibid. Introduction, p. xxiv), is a record of Rajaraja II.; for the introductory phrase pg maruviga polil-ilu occurs în some of the Tamil records of the latter.

⁴ No. 348 of the Madras Epigraphical collection for 1901.

See above, p. 57, footnote I. Sawayin, here evidently denotes the adherents of the Saiva samaya. Dr. Winslow in his Tamil and English Dictionary mentions "twelve principal religious systems (samaya of which six are approved and six rojected by the Saiva sects."

⁷ No. 306 of the Madras Epigraphical collection for 1901.

faces. The donee here was a certain Bhairavašakti-Bhatāra of Nandi. Bhairavašakti, as his name indicates, must have been a Saiva preceptor like Ponnéra-goravar of the record just quoted, and Nandi is undoubtedly the village of that name at the foot of the historic hill Nandagiri in the Kolar District.

Tagaduru, in which the Jaim temple was built by the merchants Nidhiyanna and Chandiyanna, has been identified with the modern Dharmapuri where the pillar was found.4 Neither the Jains temple nor the palace (irimada) referred to in l. 36 could now be traced.3 Tagaduru was, at this time, perhaps, a very important city, and from what is said of it in an undated inscription * on a stone set up on the bund of the big tank at old Dharmapuri, it was, as it were, "a reflected image of the whole earth; for in it were:- this 5 Saiva teacher Vidderasi; the temples Kali-Chöreśvara,6 Pallaveśvara, the great Bhogesvara, the magnificent and spotless Nannešvara and Bhujangešvara of Kanchi which shone in its imperial (?) fame; the enclosing walls (prokara) and the pleasure-gardens (nondana-rana) of kings who were as powerful as lions." The village Mulapalli which was granted to the Jaina temple and the two other villages which touched its boundary line have been kirally identified for me by Mr. C. Hayavadana Rao, B.A., B.b. He writes :- Malapalli is probably represented by the modern village of Mülakādu, 9 miles west of Dharmapuri. Sembalattūru may be Semmanahalli, now a railway station on the Morappur-Dharmspuri section of the South Indian Railway, and Buduguru is apparently Buduganhalli, about 7 miles south of Dharmapuri." It may be noted that Budugura which is mentioned in 1. So of (A.), is the object of the grant in inscription (B.).

Bhadeapa[da-ma*]sada bahula-pukshada tadi[91*]ynia Brihaspati-caramuch Recati-[naksha*]teamuch Vriddhiy rmbudu nitya-yōj gamu* | meage Kunus-nakrantiyn tat-kaj fudo*] fo. The details of this date, which is probably one of Mahendradhiraja, were submitted to Professor Jacobs of Bona for varification. He remarks :-"Kanya-samkranti fell ou Thursday (1) 21st August S01 A D. which day was Bhadrapada ha di. 3. But the moon had left Révati and stood in Asvini and the yogo Vriddhi was just over and Dhruva was the current yogo; (2) 25th August 880, but this was Bhadrapada ba. di. 2 with nakshatra Kevati and yoga Vriddhi. These are the only possible years."

Above, Vol. VI, p. 331. In two later inscriptions of about the 12th century A.D. found at Dharmapuri (Nos. 307 and 308 of the Madras Epigraphical collection for 1901) the place is called Tagadur in Tagadur-nadu, a sub-division of the Ganga country (Ganga-nade). It is not known when and why the name of the town was changed to Dharmapuri. The Madeas Manual of Administration, Vol. III. p. 271 states that it is derived from the name of a local chief called Dharmarajah, who is not known to any epigraphical records. It is doubtful also if we could connect the name Dharmapuri with Dharmmarolal which is mentioned in the Barngur record of the Nolamba king Mabendra, as having been caled by Parama-Mabadevi, a lady of the royal household. In the records of this period found at Dharmapuri and in the Tamil poem Payananara, the place is known only as Tagaduru.

I have been informed by Mr. C. Hayavadana Rao, B.A., B.L., who inspected the place, that " a few hundred yards from the temple of Mallikarjana in old Dharmapari and just opposite the European cemetery, there is a small sinb bearing Jaina figures." This perhaps is the only relie of the Jaina basadi built by Nidhiyanna and

Chandivanna at Tagedura (Dharmapuri). No. 309 of the Mulras Epigraphical collection for 1901. The old Kanarese characters in which this record is written are beautifully engraved and present a box-headed type which is unique. They may be referred to about the same period as the Nolamba records. Vidderāši (i.e. Vidyārāši) in whose praise the Kamarese verses are composed must have been a teacher of great fame. Perhaps he was one of the two preceptors of the Kalamukha ascetic Mallikarjuna of Madura mentioned in an inscription from Kodumbajur (No. 129 of the Madras Epigraphical collection for 1907).

[.] The demonstrative 'this' is used with reference to a figure of the ascetic engraved on the slab, below the

^{*} The temple of Chölesvara as Kadabattur, a village quite close to Dharmapuri, is, according to Mr. Hayavainscription. dans Rao, "a typical Choja temple and contains numerous inscriptions on its walls in Telugu and Tamil." He thinks that this may represent the old Kuli-Choresvara.

[?] The verse runs :--Kali-Chêrêsvara-[Pallave]svara-maha-Bhogesvar-ottumga-nirmmala-Nannösvara-kirtti-kisana-lasat-Känchi-Bhujamgeivaraz-vvala-kauthirava-bhūpa-nandana-vana-prākāra-sam[sthā]nadin-nelak-ellam padiohaudam-aytu Tagudur-i Vidderafindrarim.

On the date of inscription A., Professor Jacobi of Bonn, to whom I had submitted the details for verification, has very kindly contributed the following:—"The date won't come out right. The Paridhavi year was 892. On the 1st June of that year Jupiter entered Dhanus. Ashadha su. di. 5 fell on 3rd June, Saturday, not Thursday, and the nakshatra was Magha, not Parva-Phalguni," Inscription B. is not dated, but may be referred to the beginning of the 10th century A.D.

INSCRIPTION A.

TEXT.

West jace.

- Seimatam jaanarupanam lo-
- 2 kalos-avalokinā[m] []*] šāsa-
- 3 nasya Jinendrana[in] bhadrain
- 4 bhāyan-nirantaram [|| 1*] Svasti Pa-
- 5 llav-anvayaya [||*] Vijita-cha-
- 6 turanta-mahimandala-sri-
- 7 Pallavädhirājara magam a-
- 8 vanata-samasta-sāmanta-
- 9 makuta-mafali-kiran-aru-
- 10 nita-cha rana l-sarasiru-
- 11 ha-śri-[No][lam*][b]ādhirāja-
- 12 rgga[m] svasti [Satyav*]ākya Komgu-
- 13 nivarmma [dharmma]mahārā-
- 14 jā [dhirāja Na]n [da]giri-nā-
- 15 tha Kova[lala]-purayare-
- 16 évara śri-B[ā]chamalla-Vermmā-
- 17 digalgam Ma[hā]dēviyarggam
- 18 puttido[1-akhi]la-[bh]uvana[ta]-
- 19 la-ratna . . [ya]r=appa | Jāa-
- 20 bbega[m] put[t]ido[m] samadhiga-
- 21 ta-pañchamabāśabda- Pallav-a-
- 22 nvaya-śri-prithuvi-vallabha Pa-
- 23 llav[a]kulatilaka śri-Mahē-
- 24 ndrādhirāja-Nolamba Mahā-
- 25 bali-kula-vidhvamsanam geydu
- 26 prithuvi-rājyam geyyuttirē² [][*]

South face.

- 27 Svasti [||*] 3Saka-nripa-kāl-ātita-
- 28 samvatsaramgal-entunura-
- 29 padinaydan[o]ya Paridha-
- 30 viy-emba sa[th]vatsara 'pravar:tise
- 31 Āshā[dha]māsada śukla-
- 32 pakshada pañchamiyu Bri-
- 33 baspativāramu Pūrvva-Pā-

Read . Pha-.

^{&#}x27; From three sets of inked estampages prepared in 1901.

¹ Read Saka.

^{&#}x27; The syllable re is engraved below the line,

- 34 Iguni-nakshatramum Dhanu-
- 35 vinol Brihaspatiy-uda[ya]-
- Taga[du]ra šrīmāda-36 m-age
- manelNola[mbanei*]ruvandu Sri-37
- 38 mamgala . . . veya
- settiya . . [] Cha]ndiya-39
- nnanu? Nidhiyannanu Tagadū-
- rol-basa[d]iyam=mādisi ā
- 42 basadige khanda-3[s]putita-nav[a]-
- 43 karmma-devarchchau-a[dligalge Müla[pa]-
- 44 lliyam sa-sarvvapādaparih[ā]-4
- ran=Nolamba[m] dhareyan=ere-45
- 46 du kude Nidhiyanna padedu
- 47 ári-Mülasamgha-Sénánvay-á-
- 48 gragamnya Pogariya-ganada
- 49 Vinayasenasiddhanta[d]a-bhata-
- 50 rara sishyar-Kkanakasēnasiddhā-
- 51 ntada-bhatārargge pāda-prakshā-
- lana-purassara kotta [||*] lda[kk]e 59
- 53 sākshi nālku samayigaļu⁶

East face.

- 54 nadun-nakaramun-narasasana[mu]-7
- 55 m=ivare [||*] Mulapalliya polasi[me ||*]
- 56 Mūda Sembalattūra b[e]tt[a]da [ke]-
- 57 lagana pêr-[a]l[v]ina temkana kuruki
- 58 adin-te[m]ku ulugu-gadare [a]-
- 59 din-temku m[e]l-[s]ariye adin-temku
- 60 ulugu-guzuki adin-temku karu-
- 61 ngal-kuli karumgal-kulijyind=ilidu
- paduva banda pallada poparppu-
- 63 [pu]se allindam-ante pogi padu-
- 64 vapa pallam ā pallamē vididu
- Minamjaneyim temkana
- Dis-
- 66 lla Koyile[rige vo]gi K[o]yile-
- 67 riya kila . . m=anto Anduva-
- 68 r[e*]rigo v[o] . . . |avarcsi-
- 69 yeri [1] Andava[reri] A[ndu]vareri-
- 70 va paduvana kade-gombu a[nt]e [pa]-

Bead -sphufito-.

· Sarca-pāda-parikārais stands for sarca-būdkā-parikārais.

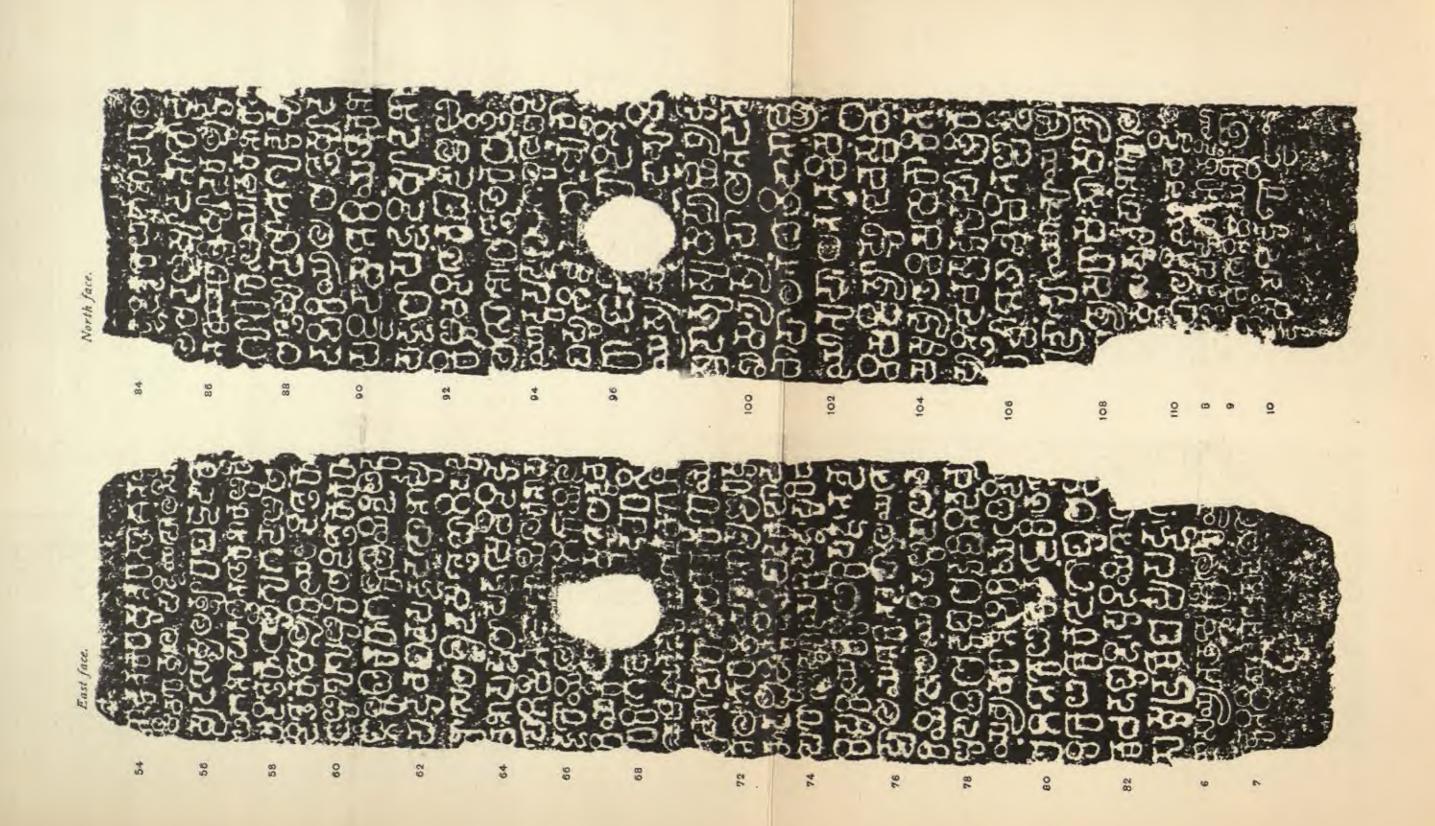
2 Read fishyar.

* Perhaps an asserders is to be inserted at the end of the line, in order to connect samegingals with the witnesses mentioned immediately after.

7 Read "sasaas". Me at the end of the line is partly seen on the original. The neuter ending much perhaps indicates the whole class of officers (narasasana). I cannot explain how the demonstrative isone is used in the masculins, while the nouns to which it refers (except samoyigais) are in the neuter; see above, p. 57 footnote 1.

¹ The accusative frimadaman with the verb ign is peculiar to the Kanarese idiom. It reminds strongly of the Sanskrit griham tishfhan.

Nag is written for man here as well as in L 46 and L 9 of inscription B. Perhaps the consenurar after the two names are missing and must be inserted also.



71 [du]vana pěr-o[nge] Anduvarereyat

72 n[e]lam nairatiya kona Mulura [m]u-

73 kkūdal-puļi | puļiyi[m] badakku poda

74 për-o[fig]e-Puriyëri³-palla [|] Puri[ë]-⁴

75 ri Puriyëri-[ki]][3]ri-palla | Nanda-

76 ppolayanëri Nandapoleyanë-

77 riyi[m] Mēlayēri- talumdāļe [1] [ta]-

78 ludāļi adumbu adu[m]biniudam vā-

79 yavya[da] koça piriya ulindi

80 amgine kelakke [Ta]ttēri | Ta[tt]ē-

81 ri kelakke kadegombu [1] a .

82 kke elabuli | puliyi[m] No[la][mba*]-

S3 samudrakke barpa pallain | [i]=

North face.

84 [ppa*][[adi[nde] kelagana paral-a-

85 la [1] adara mūdana Kova-

86 na[kere] alli mūdakal=[B]udu-

87 gūra-kegeya temkaņa ka[tte]

88 ante muda ane-gundus |6 m[n]-

89 da piriy-āla | ante mūda

90 Pattidamanēriya temkaņa

91 pallam [1] a palladim madana

92 kiruvati | temka Bandalvara-

93 la sope | anto te[m]ka atti-

94 y-5du pallam | [be] . galu chembadi [1*]

95 Bahubhir=vva[su]dhā bhuktā

96 rāja[bhi][s=Saga*]r-ādibhiḥ [l*]

97 yasya [ya][sya*] [ya]dā bhūmi[h*]?

98 tasya tasya [ta]dā phala[m] [1 2*]

99 Sva[m*] datu[m] sumahach-chhakya[m] du[h]-

100 kham=anyasya pālana[m |*] dānam 101 vā pālanam v=ēti dānāch=chhrē-

102 yo=nupalanam | [3*] Na visham

103 visham-ity-āhu[h]8 dēva-svam vi-

104 sham=uchyatê [j*] visham=ëkakinam

105 hanti deva-sva[m*] putra-pautrikam² [# 4*]

106 [Sa]rvvān=ētān=bhāvina;=pārtthi-

107 [vē*]ndrām=bhūyō bhūya≍=prā-

108 [rtha*][ya]ty=ēsha Rāmaḥ [|*] sāmāny[ō]=

109 [yam dha*]rmma-s[ē]tur-nripāņām kālē

110 [kālē*] pālanīyō bhavadbhiḥ [|| 5*]

¹ Read "rēriga.

² Bead sairrifya.

² To the syllable pu is also attached a sign of e.

^{*} Read Puriyeri.

¹ Read, perhaps, -gundu.

^{*} The marks of punctuation inserted at the end of each boundary point begin only from here. Perhaps the writer forget to insert them in the earlier portion.

⁷ Read bldmig=.

[&]quot; Read adhura.

[·] Read . pastrakam.

INSCRIPTION B.

TEXT.

West face.

- 1 [@] 'Sri-Mahendra-Nolam[ba]-
- 2 na maga[m] nanuig=[a]śraya śrimad-A-
- 3 yya[padē]var [B]u[d]ugūra udaka-

South face.

- 4 pürvvan=dhireyan=eredu kude
- 5 [A]rbach-chhasana-pradipakan-a[ppa]

East face.

- 6 D[o]sayyana tammom śri-Lokayya-
- 7 [gallu Nidhiyannana basadige go-

North face.

- 8 [tta I*] . vina padu[va]ņa tadiyo-
- 9 []=a*][rchcha]nege Nidhiyannam to-2
- 10 [tt]umam padedu 3kottam [1*]

TRANSLATION OF INSCRIPTION A.

(Verse 1.) May there be uninterrupted prosperity to the doctrine of the glorious Jinendras,—the embodiments of wisdom, who see the non-world in the world.4

(L. 4 f.) Prosperity to the Pallava family!

(II. 5 to 26.) While the prosperous Mahēndrādhirāja-Nolamba, the ornament of the Pallava race, the lord (of the goldess) of Fortune of (i.e. residing in) the Pallava family (and) of the Earth, who has acquired the five great sounds and is born to the glorious Nolambādhirāja—whose lotus-feet are reddened by the lustre (proceeding) from the gems (imbedded) in the diadems of the whole (circle of) prostrating fendatory chiefs (sūmantas) (and) who is the son of the glorious Pallavādhirāja who had subdued the circle of the Earth (right up) to (its) four corners—and to Jāabbe who is a gem on the whole surface of the Earth born to—Hail! Satyavākya Kongunivarma Dhormamahārājādhirāja, lord of Nangadīri, ruler of Kuvaļāla the best of cities, the glorious Rāchamalla-Vermmādigaļ and to Mahādēviyar—was ruling the earth (after) having destroyed the Mahābali race,—5

(Ll. 27 to 36.) Hail! while the (cyclic) year named Paridhavin, the eight-hundred and fifteenth of the years elapsed, of the era of the Saka kings, was current,—on Thursday,

¹ Between the syllables he and adra space enough for two letters has been left vacant. This may be due to the crack in the stone which rous between them.

Read koffam.
* Read koffam.
* The phrase lök-árák-áralökinám may also be translated "who see (i.e. distinguish) the world from the non-world."

Without the adjectival clauses which complicate the general sense, this lengthy sentence might be reduced to: "While Mahendradhi aja-Nelamba born to Nelambadhiraja and to Jaabbe, was raing the earth."

the fifth tithi of the bright fortnight of the month of Ashādha, when the nakshaira (was) Pūrva-Phalgunī and Bṛihaspati (Jupiter) appeared in the (sign) Dhanus,—

(Id. 36 to 52.) while the Nolamba was staying at the royal mansion (*irimāda*) at Tagadūru, Chandiyaṇṇa and Nidhiyaṇṇa, [sons of?] seṭṭi of Śrimaṅgala, caused a basadi to be built at Tagadūru; (and) when, with libations of water, the Nolamba gave to that basadi for (repairing) gaps and cracks, for new works (and) for worship of the deities, etc., (the village) Mūlapalli, free from all encumbrances, Nidhiyaṇṇa received (it) (and) gave to Kanakasēnasiddhāntada-bhaṭāra, pupil of Vinayasēnasiddhāntada-bhaṭāra of Pogariya-gaṇa, the foremost of the teachers of Sēn-ānvaya in the glorious Mūla-saṅgha, having first washed (his) feet (with water).

(Ll. 52 to 55.) The witnesses to this (transaction) are the four samayins, the nadu, the nakara and the naratasana (i.e. the rulers of men, officers of Government): only these.

(Ll. 56 to 94.) (This is) the boundary of the fields of Mulapalli :- (On) the cast—the kurchi2 (trees) south of the big waste3 on the eastern side4 of the hill of Sembalatturu; thence southwards, the mimosa-bash ; thence southwards, the ravine higher up (?); thence southwards, the kurchi-bush; thence southwards, the pit of (i.e. from which) black granite (is quarried); descending from the pit of black granite, the couple-tamarind (tree) in the ditch (which runs) westwards: thence, going in the same direction, the ditch to the west; keeping to (the course of) the same ditch, the ditch from the southern side of the natural pond (jane, done) called Minamjane; passing on to (the tank) Koyileri, of in the same direction, the Anduvarëri (tank); (thence), the remote outlet6 west of Anduvarëri; likewise (in a) westerly (direction) the big onge (tree) and the land (?) of Andavareri. The south-west corner (point) is the tamarind (tree) at the triple junction (mukkadal) of Maluru; from (this) tamarind (tree) in a northerly direction, the ditch of Puriyeri with the big onge (tree); (thence) the Puriyeri (tank); (thence) the ditch (connecting) Puriyeri (and) Kîleri; (thence) the Nandappolayaneri (tank); from Nandappoleyaneri, the talumdale (shrubs)7 of Melayeri; (thence) the adumbu plant (in) talumdale; from the

³ Kuruki is not given in Dr. Kittel's Kannada-English Dictionary. The word kurike means 'a small village,' In the description of boundaries it is very unlikely that an unspecified village would be mentioned. Accordingly, I take kuruki as tentatively equivalent to guruchi or gurige, the former of which is the name of a tree and the latter that of a plant.

* Alon is the same as alien or alien which means 'ruin, waste.' It also means 'the burning (of forest fire) beyond the limit.' Perhaps per-alon is to be explained as 'big waste,' though its exact significance is not clear to me.

* I have taken kelagana (kelagana) in the sense of 'eastern'; compare the Tamil word kil.

Gadare is perhaps synonymous with kadara, and ulugu means 'attached to, or loving.' As the kadara (mimosa) plants could be poetically said to be attached to one another when they are densely grown, I have taken tentatively, the phrase ulugu-gadare to mean 'a mimosa-bush.'

* Kombu in Tamil means the outlet of a tank. Hence kadegomba may denote the remote (kade) outlet."

7 Dr. Winslow explains taledajai as the shrub Clerodendrom phlomoides which is known to cure flatulency

* Ukāai (perhaps uliadi[ke] of the text) is according to Dr. Winslow 'a kind of cotton shrub; and adgine, according to the same authority, is 'a species of aloes.'

¹ A Jainn teacher named Vädirāja alias Kanakasēna-bhattāraka is mentioned in two Jaina inscriptions of the 11th century A.D. (Ep. Cara. Vol. VIII. Nr. Nos. 35 and 36) and one of the 12th century (ibid. Nr. 37) as the gara of the Ganga king Rüchamalla. Some of his disciples were Śrivijaya, Śantidēva, Dayāpāla and Kamalabhadra. Vādirāja and his pupils are mentioned in the Śravana-Belgola epitaph of Mallishēna (above, Vol. III. p. 187 f.) as belonging to about the 11th century A.D. Consequently, Vādirāja Kanakasēna-Bhattāraka of these records must have been the gara of the Ganga king Rāchamalla III. who ruled from A.D. 989 to 1005 (above, Vol. VIII. p. 50).

tender tamarind (tree); from the tamarind (tree) the ditch that runs into (the tank) Nolambasamudra; from the ditch, in an easterly direction, the banyan (tree) in pebbles (i.e. in a gravelly soil); east of it (the tank) Kōvanakere. There, (is) the eastern (boundary) stone; (thence) the southern embankment of the tank of Budugūru; likewise, to the east, the elephant-[like] boulder; (thence) to the east the big banyan (tree); likewise, to the east, the southern ditch of (the tank) Pattidamanēri; to the east of that ditch the short banyan (tree) (?); to (its) south the natural pond (sone) of Bandalvaralu(?); likewise, to the south the ditch with the fig tree

[Ll. 95 to 110 contain four of the usual imprecatory verses].

TRANSLATION OF INSCRIPTION B.

No. 15.—KARAMDANDA INSCRIPTION OF THE REIGN OF KUMARAGUPTA [GUPTA-] SAMVAT 117.

By PROFESSOR STEN KONOW, PH.D.; CHRISTIANIA.

This inscription is incised on a stone lingu which was excavated from an ancient site called Bharādhi Dih near the village of Karamdāmdā, about 12 miles from Faizābād on the road to Shāhganj, District Faizābād, United Provinces. Karamdāmdā will be found as Karamdanda in the Indian Atlas, Quarter Sheet 87 S.E., at 82° 4′ long, and 26° 40′ lat. The existence of the inscription was first brought to notice by Kunwar Kamta Prasad, Deputy Collector, Faizābād. A preliminary account of the find has been given by Dr. Vogel in his Annual Report, 1907-08, page 39, and I now publish the inscription from impressions supplied by him.

The lings itself consists of an upper, circular portion, 1' 1" high and 101" in diameter, rising from an octagonal base 1' 9" high. The lower portion of the base including the end of the inscription has been broken. The lings will be deposited in the Provincial Museum, Lucknow.

The inscription itself is incised on the base and covers a space 1' 5\frac{1}{4}" high and 1' 7\frac{1}{2}" broad. The letters in the uppermost right hand corner are much effaced, but they can be restored from other inscriptions. Across the base, at a distance of 11" from the bottom, runs a line, which has made some of the top mitris indistinct in the impression, and the final portion of the inscription has been broken off. In other respects, it is in an excellent state of preservation.

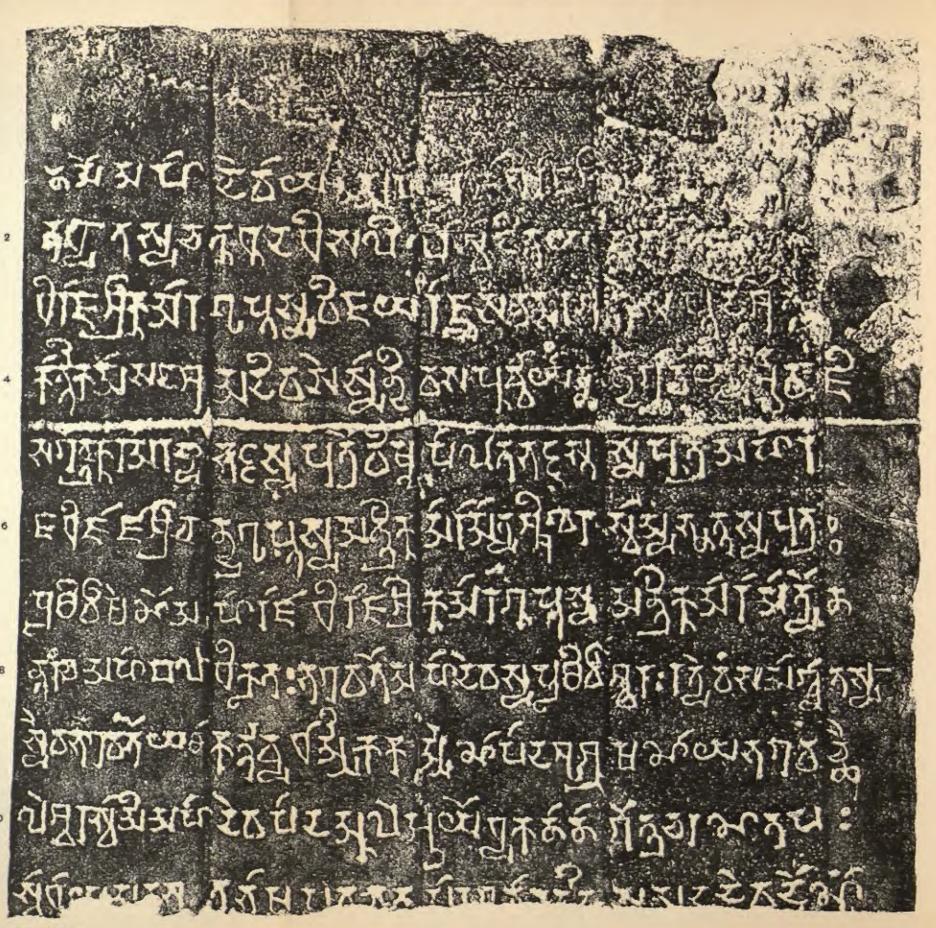
The characters belong to the western variety of the Gupta alphabet. The short u is denoted in two different ways, compare Kumāragupta in lines 3 and 7, where the u of gu has two

¹ It is doubtful if the Sanskrit cope (banyan) could be compounded with the Kanarese kiru-small. Kirucufi may denote a plant not explained in the dictionaries.

³ The last words at the end of this description of the boundary line are not intelligible to me. We must have expected some words which mean—'the boundary thence joins the (starting) point.'

The phrase dhareyon-ereds kude would have been enough to express the idea, as in I. 65 f. of inscription A.: adaka-pureross, though redundant, has perhaps, been put in with the object of introducing a familiar Sanskrit phrase.





different forms. Note also nu in -nudhyātasya, line 2. The form of the initial i in ity=ēvam, line 8, is the same as in the Kahāum pillar inscription. With regard to orthography I may note the doubling of a consonant before r in -gōttra-, lines 5 and 10 (but putrō, line 5. putrah, line 6) and after r in -pūrvvāyām and -āchāryy-, line 4, and yathā-karttavya-dhārmmika-karmmanā, line 9; the change of an anusvāra to n before d in =syān=dicasa-pūrvvāyām, line 4; the use of chchh in the beginning of a word in Chchhandōgy=, line 4; and the use of s at the end of a word before s in kumārāmātyas=Sikhara-, line 6.

The inscription refers itself to the reign of the ancient Gupta king Kumāragupta I., and is dated in [Gupta-] Samvat 117, on the tenth day of Kārttika, corresponding to A.D. 436. It is therefore of almost the same date as the completion of the temple of the Sun when Kumāra-gupta's subordinate Bandhuvarman was governing at Dašapura.²

It registers a gift made by Prithivishena, the son of Chandragupta's kumārāmātya Sikharasvāmin, who was the son of Visbnupālitabhatta, the son of Kuramāravyabhatta, of the Chhandogas, whose gotras were [Aśva] and Vajin. The former gotra is new to me. The Vājins also occur elsewhere. Prithivishēņa is described as the mantrin of Kumāragupta, as his kumārāmātya and subsequently as his mahābalādhikrita. The gift was made for the worship of the Mahadeva known as Prithivisvara, i.e. probably the linga on which our inscription has been incised, with proper righteons offerings. The portion containing the names of the donees has, unfortunately, been lost, and what is lost cannot be restored with absolute certainty. So far as I can see, the donees must have been certain Brahmanas from Ayodhya, who were living in the vicinity of Mahadeva Sailesvara, who belonged to various gotras and charanas, and were proficient in observances, in sacred study, in the mantras, the sūtras, bhūshyas and pravachanas, and who had something to do at the devadrent, i.e. image procession at Bharadi . . This interpretation is, however, far from being certain. The restoration of the words denoting the various branches of learning in which the donees are said to have been fully versed, is, I think, certain. The geographical name Bharadi is a mere conjecture. What remains of the letters seems to favour it. The name of the place where the linga was found is said to be Bharadhi Dih, but it is not possible to identify this form with Bharadi. I would compare the word Bharadiya found in one of the inscriptions on the Sanchi stupas where Professor Bühler reads: [bha]radiyasa sapurisasa yugapajakasa danam. I would translate "the gift of the holy man Yugapajaka, from Bharadi." I am unable to restore the four aksharas following after Bharadi. They look like d. s. m. d. S. m. d. perhaps stands for samudra, which is an epithet of Siva. The word devadrani is known from lexicographers and said to mean "idol procession."

TEXT.

- 1 Namo Mahādēvāya | Ma[hārājādhirāja-śrī-Chandragupta-pād-ā]-
- 2 nudhyātasya chatudhu(r-u)dadhi-salil-āsvādīta-ya[śasō mahārājā]-
- 3 dhirāja-śri-Kumāraguptasya vijaya-rājya-samvatsar[ē śatē saptadaś-öttarē]
- 4 Kärttikamäsa-daśama-divasē-syān-divasa- pūrvväyām [Chebbandögy-āchāryy-Āśva]-Vāji-
- 5 sagottra-Kuram[ā]ravya-bhattasya putro Vishņupālita-bhattas-tasya putrob mahārā-
- 6 jadhijājā⁶-śri-Chandraguptasya mantri kumārāmātyaś-Śikharasvāmy=abhūt=tasya putraḥ

¹ Gupta Inscriptions, Plate ix. A. text-line 7: i of ity-anya-samiño.

² Ibid. No. 18 ³ Above, Vol. II. p. 105, No. 74.

The St. Petersburg Dictionary refers to the Trikandarisha 2, 7, 8, and the Haravali 129.
 The actual reading is perhaps pairo.
 Read 'jadhiraja.

- 7 Prithivishēņō mahārājādhirāja-śri-Kumāraguptasya mantri kumārāmātyō=na-
- 8 ntaram cha mahābalādhikritah(15) bhagavato Mahādēvasya Prithivišvara ity=ēvam samākhyātasy=ā-
- 9 sysaiva bhagavatö yathā-karttavya-dhārmmika-karmmaņā pāda-šuśrūshanāya bhaga-vach=Chhai-
- 10 lēsvarasvāmi-mahādēva-pādamūlē Āyōdhyaka-nānā-gottra-charaņa-tapah-
- 11 svādh[y]āya-mantra-sūtra-bhāshya-pravachana-pāraga-Bhāradi-d. s. m. d. dēvadron[y]ām

TRANSLATION.

Obeisance to Mahādēva. In the victorious reign of the mahārājādhirāja, the illustrious Kumāragupta, whose fame was tasted by the waters of the four oceans (and) who meditated on the feet of the mahārājādhirāja, the illustrious Chandragupta, in the 117th year, on the tenth day of the month of Kārttika, on this day specified as above, the minister of the mahārājādhirāja, the glorious Kumāragupta, (his) kumārāmātya and subsequently (his) mahābalādhirājā, krita Prithivīshēņa, the son of Šikharasvāmin, the minister, the kumārāmātya of the mahārājādhirāja, the illustrious Chandragupta, (who) was the son of Vishņupālitabhatta, the son of Kuramāravyabhatta, a teacher of the Chhandōga (vēda), of the gōtras Ašva and Vājin, (gave) for the sake of obeisance to the Lord Mahādēva, known as Prithivīsvara, with proper and righteous offerings, at the feet of the Lord Šailēšvarasvāmi-Mahādēva, to . . . from Ayōdhyā, of different gōtras and charanas, perfected in observances and study, in the mantras, the sūtras, the bhāshyas and pravachanas, who at the procession of the image (of Śiva?) at Bhāradi

No. 16.—SUNAO KALA PLATES OF SAMGAMASIMHA; [KALACHURI-] SAMVAT 292.

BY PROFESSOR STEN KONOW, Ph.D.; CHRISTIANIA.

These plates were originally brought to light by the late Mr. A. M. T. Jackson, who published them in the Journal of the Bombay Asiatic Society. Mr. Jackson's edition was not accompanied by a facsimile of the original, and it was not, therefore, possible to judge about the palmographic character of the grant. I now re-edit it from impressions which I owe to the kindness of Mr. Henry Cousens.

The plates are two in number, and they were, according to Mr. Jackson, found in November 1898, "buried about two feet below the surface of a cart track in the village of Sunev Kulla in the Hansot Mahal of the Broach District . . . The first plate is entire. The second has suffered damage (1) by the wrenching off of the seal, which has destroyed a few aksharas in the first line, and (2) by the breaking off of a piece of the left-hand edge, which has destroyed one akshara in line 4, two in line 5, two in line 6, and one in line 7 . . . The lower edge of the first plate was formerly attached to the upper edge of the second by two copper rings, one of which remains attached to each of the plates. The seal, which was probably carried by the left-hand ring, has been wrenched off and is lost. The letters are deeply out and in many places show through on the back of the plates."

The two plates are of the same size, measuring $12\frac{1}{2}$ × $6\frac{1}{2}$. The first contains 12, and the second 13 lines of well executed writing. The average size of the individual letters is $\frac{1}{4}$. The characters belong to the southern class and are closely connected with the form

occurring in Valabhi inscriptions, in those of the Gujarat Chalukyas, and in the Sarsavui plates of Buddharaja. Mr. Jackson has noted a peculiarity which is found in most of the letters, vis. a distinct triangular head. With regard to individual letters we may note the initial 8 in eshām, 1. 12; the form of an in Laukākshi-, 1. 6, Lauhāyana-, 1. 7, and - pautraneaya-, 1. 11; the two forms of l, e.g. in kusalam=, 1. 3, and Galava-, 1. 5; the final t in kēnachit, 1. 13, and easēt, 1. 20, and the jihvīmūlīya in -opanayali-kāryyah, I. 15. A final m perhaps occurs in varititavya[m], l. 14. The numerical symbols for 200, 90, 10. 5 and 2 occur in 1. 25. The language is fairly correct Sanskrit, and, with the exception of four imprecatory stanzas in II, 19-23, here ascribed to Vyāsa, the text of the inscription is in proce. The saindhi has been neglected in samanudaršayati astu, II. 3-4; and -kritya udakātisarggēņa, 1. 12. The orthography calls for very few remarks. In l. I we find the Prakrit form Saingamasīhah instead of Samgamasimhah, and in 1. 13 karishayatām instead of karshayatām. Consonants are doubled after r; thus, sarvoān=, 1. 2; =Antarnnarmmadāvishayāntarggata-, 1. 4; -ādhvaryyu-, II. 6. 7, etc. The only exceptions are =anavarnya, I. 3; vidhayair=bhatva, 1. 14, and, in accordance with Pāṇini VIII. 4. 49, -darśayati, l. 3, and varsha-, l. 19. Dh has been doubled before y in -īnuddhyātā, l. 1. Noto also Laukākshi- instead of Laugākshi- in 1. 6. The inscription which was issued from Bharukachchha, is one of the Mahāsīmanta, the Mahārāja Samgamasīha (-simha), and records the gift of the village Sonavvā in the Antarnarmadā district, to several brahmanas, on the occasion of the Mahākārttiki, i.e. the full moon of the month Karttika. It is dated in numerical symbols on the 15th day of the bright half of Karttika of the year 292.

As pointed out by Mr. Jackson, the date must be referred to the Kalachuri era, and it would accordingly fall in either A.D. 540 or A.D. 541.2 The donor, the Mahārāja Samgamasimha, is not elsewhere known, but I think Mr. Jackson is quite right in assuming that he was a feudatory (mahāsāmanta) of the Kalachuris. He infers this from the fact that Sonavva, the village granted is said to be situated in the Antarnarmada-vishaya, i.e. according to him, "the district within (i.e. on this side of) the Narbada." This, he says, "shows that it belonged to a kingdom whose seat also lay south of the Narbada though it included also territory to the north of that river." I do not quite see how he arrives at this conclusion. The translation of Antarnarmada-vishaya as "the district within the Narmada" would be possible, but astar does not mean "on this side," but "between." The word has been explained as a baluvrihi by Dr. Fleet, a meaning the country on both sides of the lower part of the Narmada. I cannot therefore accept Mr. Jackson's explanation of the word antarnarmada-vishaya, but I quite concur in his opinion that "on the whole the most probable supposition appears to be that Samgamasimha was a feudatory of the Kalachuris, whose era he used, and who were certainly recognised as supreme in the lower Narbada valley about A.D. 580 when Nirihullaka made his grant."4 The wording of our grant sometimes recalls the phraseology of the Sarsavoi plates;5 compare 11. 18-19 with 11. 26-27 of the latter, and, especially, the end of the two grants, where we have, in both cases, first an instrumental (-prapitajaaya and -vijaapanaya, respectively), then a bahurrihi ending in -dutakam and followed by likhitam, and finally the date expressed in the same way in numerical figures. The late Professer Kielhorn has shown that the phraseology of the Katachchuri grants was imitated by the Gurjaras and the Gujarat Chalukyas, He inferred from this fact "that the family of these chiefs rose to independence only after the

¹ Above, Vol. VI. pp. 294 and ff.

² Compare Rielhorn, above, Vol. VI. p. 295, footnote 6. The date does not admit of verification.

Ind. Ast. Vol. XXXII. p. 56. Another possibility which I would prefer would be to explain outer-nermodd as meaning "between the Tapti and the Narmada." Cf. Antarmandalivishays in the Pardi plates (above, p. 51); see Fleet, Ind. Ast. XXXIX. p. 97.

⁴ Above, Vol. II. p. 22.

¹ Ibid. Vol. VI. pp. 294 ff.

^{*} Ibid. p. 296.

time of the Katachchuri Buddharaja." Now Buddharaja's Sarsavul plates are dated in [Kalachuri] Sathvat 361, corresponding to A.D. 609 or A.D. 610, and he was, according to the Nerdr plates1 and the Badami pillar inscription,2 defeated by the Western Chalukya Mangalesa. This seems to have been the first really important event in the history of the Western Chalukyas. Buddharāja's defeat by Mangalēša must have taken place before the 25th October A.D. 601, if that be the date of the Badami pillar inscription 3 But even after that date he retained command of the country about Broach, for his Sarsavni plates, which are dated in A.D. 609 or 610 (see above), register the grant of a village in that district. The Traikūṭakas are known to have beld sway in Southern Gujarāt in the last half of the fifth century, for Dahrasēna's Pardi plates are dated in [Kalachuri] Samvat 207,4 and a copperplate of his sou Vyaghrasena from the Surat District is dated in [Kalachuri] Samvat 231.5 The present grant belongs to the interval between Vyaghrasēna (Samvat 231) and Buddharāja (Samvat 361). Buddharāja must, according to the Badami pillar inscription, have begun to reign before A.D. 601. We do not know how long his father Samkaragana, the overlord of the Mahapilupati Nirihullaka of the Sankhēda plate,6 reigned, and we do not know anything of Samkaragana's father Krishnaraja, but he, or his predecessor, must have been the overlord of Samgamasimha. Our inscription, therefore, throws some light on the history of the Broach District in the first half of the sixth century.

Of the geographical names mentioned in our grant, Bharukachchha, the residence of the Mahāsāmanta, the Mahārāja Samgamasimha, is the present Breach. Sōṇavvā, the village granted, must be identified with either Sunão Kala, situated in 21° 28½ N. and 72° 54′ E., or Sunão Khurad, in 21° 29′ N. and 72° 53½ E. The plates were found in the former place.

TEXT.

First Plate.

- 1 Öm? [svasti] [II*] Bharukachchhā[n=]mātāpitri-pād-ānn[d]dhyātō mah[āsāma]nta-śr[i-mahā]rāja-Samgamasīhaḥ(simhaḥ)
- 2 [sarvvā]n=ēva svān=rājasthāniy-[o]parika-kumārāmātya-vishayapaty-ārakshika-drām-gika-
- 3 kulaputraka-chāţa-bhaṭ-ādims-tadādēśakāriņaś-cha kuśalam-anuvarnya samanudarṣa-
- 4 yati astu võ viditam yath-asmabhir=Antarnnarmmada-vishay-antarggata-Sõnavvagramõ Bharu-
- 5 kachchhaka-Chhandogi-sagotra-Chhandoga-sabrahmachāri-brāhmaņ-Ānantadatta tathā Gālava-
- 6 sagotra-Chhandoga-sabrahmachāri-Prajāpatišarmma tathā Laukākshi-sagotr-ādhvaryyu-sabrahma-
- 7 chāri-Sivadēva tathā Lauhāyana-sagötr-ādhvaryyu-sabrahmachāri-Bhāņudēva tathā Pauņḍri(?)-sa-
- 8 götra-bahvricha-sabrahmachāri-Bhavaruchibhyö bali-charu-vaiśvadēv-ignihötra-havana-pañcha-
- 9 mahāyajña-kriy-ötsarppaņ-ārttham=āchandr-ārkk-ārņņava-graha-nakshatra-kshiti-sthiti-samakālīnaḥ
- 10 södramgas=söparikaras=sabhüta-váta-pratyāyö=chāṭa-bbaṭa-prāvēšyö bhūmichchbidranyāyāna

¹ Ind. Ant. Vol. VII p. 161,

² Ibid. Vol. XIX. p. 16.

Compare Kielhorn's List of Southern Inscriptions, No. 5. Above, p. 51.

See Jackson, Journal Bombay Arias, Soc., Vol. XXIII. p. 6; also p. 52 f. above,
 Above, Vol. II. p. 23.
 Expressed by a symbol.





STEN KONOW.



- 11 putra-pautr-anvaya-bhogyo mātāpitror-atmanaś-cha puņya-yaśō-vāptayē-dya puņyaramām
- 12 mahākārttikī-tithim-agikrityal udakātisarggēņa pratipādito yata ēsbām brāhmaņānām

Second Plate.

- 13 uchitayā brahma[dēy-āgrahā]ra-sthityā bhumjatā[m] kri[sha]tām [ka]rishayatām¹ pradišatām cha na kēnachit
- 14 nishēdhē varttitavya[m tadgrāma]-nivāsibhir=apy=am[ī]shām vidhēyair=bhūtvā
 samuchita-
- 15 mēya-hiraqyādi-pratyāy-öpanayah=kāryyaḥ [|*] bhavishyad-rājabhiś=ch=āsmad-vaṁś-yair=anyair=vvā sā-
- 16 [mä]nyañi bhūmidāna-punya-phalam-abhivānchhadbhir-vvibhavān-abhāv-ānuba[n]-dhān-āyur-vviyōg-ā-
- 17 [nuga]tam guņāmis-cha dirgghakāl-ānuguņān=vigaņayya dānam cha guņavatām= avadātam-iti
- 18 [pramā]pikritya šašikara-šuchi-ruchiram chirāya yaša[6]=chichishubhir-ayam=asmad-dāyō-numantavyaḥ
- 19 [pāla]yitavyaś-ch-ēti || uktam cha bhagavatā Vyāsēna || Shashţim varshasahasrāņi svarggē modati
- 20 [bh]umidaḥ [i*] achchbēttā ch-anumantā chs tany-ēva narakē vasēt || Bahubhir= vvasudbā bhuktā rājabhis=Sa-
- 21 gar-ādibhih [|*] yasya yasya yadā bhūmis=tasya tasya tadā phalam || Pūrvvadattām dvijātibhyō ya-
- 22 tnäd=raksha Yudhishthira [1*] mahim mahimatäm śreshtha danách=chhreyo=nupālanam || -Vindhyātavishv=ato-
- 23 yasu [ś]ushka-koṭara-vāsinaḥ []*] kṛishṇāhayō=bhijāyantē pūrvvadāyān=haranti yē ||
- 24 Mahapratibara-Göpādhyaka-prāpitājnayā sandhivigrahika-Rēvādhyaka-dûtakam
- 25 li[khi]tam Vishnushënën-ëti || Sam 200 90 2 Karttika su 10 5.

TRANSLATION.

Om. Hail! From Bharukachchha,—the mahāsāmanta, the illustrious mahārāja Samgamasīha (simha) informs all his (subordinates, viz.) rājasthānāyas, uparikas, kumārāmātyas, district officers, ārakshikas, drāmgikas, kulaputrakas, district officers (chātas), bhatas, and others, and those who carry out the orders, after having greeted them, as follows:—

Be it known to you that the village Śōṇavvā, situated in the Antarnarmadā district, has to-day, with reference to the holy Mahākārttikī tithi, been granted by us for the obtainment of merit and fame for (our) parents and ourselves, with pouring out of water, for as long as the moon, sun, the sea, the planets, the stars and the earth endure, with the udranga, with the uparikara and with the bhūtavātapratyāya, not to be entered by district officers and soldiers, according to the maxim of bhūmichehhidra, to be enjoyed by the succession of sons and sons' sons, to the (undermentioned) residents of Bharukachchha, (viz.) the Brāhmaṇa Anantadatta of the Chhandōgi gōtra, a student of the Chhandōga (tākhā); Šivadēva of the Laukākshi (Laugākshi) gōtra, a student of the Adhvaryu (vēda); Bhāṇudēva of the Lauhāyana gōtra, a student of the Adhvaryu (vēda); and to Bhavaruchi of the Pauṇḍri (?) gōtra, a student of the Rigvēda (bakvricha),

¹ Read =adhikrity = odakāti --

² Rend karehayatam,

A festival in honour of Siva's victory over Tripurasura, at the full moon of Karttika.

^{*} The construction in the following is rather loose. Bharukschchhaka probably belongs to all the names in the following.

for the maintenance of the five great sacrifices, (viz.) bali, charu, vaiivadēva, agnihūtra (and) harana, and of (other) rites. Wherefore nobody should make any obstruction to these brahmanas, while they enjoy (the granted land) according to the rules relating to brahmadēyas and agrahīras, cultivate (it), cause (it) to be cultivated and assign (it to others). And the inhabitants of that village should obey their (orders) and make over to them the customary mēya, gold, and other revenue. And let future kings, whether of our own family or others, desirous of sharing in the common merit of (this) donation of land, while reflecting that wealth is liable to perish, that life is followed by separation, and that virtue lasts for a long time, keeping in view that gifts to virtuous people are excellent, and auxious to accumulate for a long time fame resplendent and bright as the rays of the moon, consent to this our gift and preserve it. And it has been said by the venerable Vyāsa: [Here follow four of the usual imprecatory stanzas]. According to the order brought by the mahāpratīhāra Göpāḍhya, (this edict), the dūtaka of which was the sāndhivigrahika Rēvāḍhyaka, was written by Vishņushēņa.

The year 200 90 2 Karttika śu 10 5.

No. 17.—BALERA PLATES OF MULARAJA I.; SAMVAT 1051.

By PROFESSOR STEN KONOW, PH.D.; CHRISTIANIA.

These plates have already been noticed by Mr. H. H. Dhruva² and Munshi Debiprasad.³
They are in the possession of the Brahmana Devaram of Balera, in the Sancher District,
Jodhpur State. I edit them from impressions supplied by Mr. D. R. Bhandarkar.

There are two plates measuring $7\frac{1}{2}^o \times 5^o$, and each of them is inscribed on one side only. There are altogether 21 lines of writing, 10 on the first and 11 on the second plate, and the plates are in an excellent state of preservation. They were held together by a ring, which had been broken when the plates came into Mr. Bhandarkar's hands. There was no seal.

The character is northern Năgari of the 10th century. The virăma is used in samvat, 1.1; pürvvavat, 1.2; vasét, 1.19, and -purushān, 1.4. There are very few orthographical peculiarities. V is used for b throughout, and s is written instead of s in sāsanam, 1.19. A consonant is doubled after r in -vinirggat-, 1.10; svarggē, 1.18; =abhyarchchya, 1.7; -dharama-, 1.13; pürvvavat, 1.2, etc. On the other hand, no doubling takes place in -Durlabhāchārya-, 1.11.

The language is Sanskrit, and, with the exception of an imprecatory #loka in Il. 18-19, here ascribed to Vyasa, the whole of the inscription is in prose.

The inscription is one of the Mahārājādhirāja Mūlarāja I., the founder of the Anhilvād branch of the Chaulukyas. Two other inscriptions of Mūlarāja are known. The oldest, which is dated in Vikrama-Samvat 1030, on the 5th day of the bright half of Bhādrapada, corresponding to Monday, the 24th August A.D. 974, has been noticed by Mr. Dhruva. The other is the Kadi plate of Vikrama-Samvat 1043, the 15th day of the dark fortnight of Māgha, on a Sunday corresponding to the 2nd January 987. Our inscription is the latest one of Mūlarāja, and it is dated Samvat 1051, on the 15th day of the bright fortnight of Māgha, at a lunar eclipse

Mayo, what is to be measured, is a technical term; cf. Gupta Inser. p. 257, l. 12; above Vol. II. p. 264, l. 8 of the text; Vol. IV. p. 144, l. 9 of the text; Vol. VII. p. 61, l. 4 of the text; and Vol. IX. p. 344, line 9 of the text Compare fullyn-mayo, above Vol. VII. p. 160, footnote 9.

^{*} Pirana Journal, Vol. V p. 300.

Proceedings of the Asiatic Society of Bengal, 1892, p. 168.

^{*} Vienna Journal, Vol. V. b. 300.

⁵ Ind. Ant. Vol. VI. p. 191 f.

(1, 6), corresponding to Saturday, the 19th January 995, when there was a lunar eclipse, visible in India. None of these inscriptions teaches us much about Mülaraja. According to the Kadi plates, he belonged to the Chaulukikas, was the sen of the Mahārājādhirāja Rāji, and had, by his own arm, conquered the Sarasvata-mandala. The Gujerat chronicles state that Raji was king of Kalyanakataka in Kanauj, and add some tales about him, which have not, however, been corroborated by inscriptions. The information which can be gathered about Mularaja from other inscriptions of his family, is also meagre. He is called "the sun who brings the lotus-pond of the Chaulukya family into blossom" (Kadī plates of Jayantasimha, Bhīmadēva, and Tribhuvanapālal). Only conventional praise is bestowed on him in the Vadnagar praiosti,3 where we read,-

(V. 4.) Illustrious Mūlarāja, who stepped on the diadems of princes, was a priceless pearl to enhance the splendour of the fame of his family,-he who became the root of the tree of instice that had been burnt by the forest-fire of the Kali (age) and gained the affection of his subjects by exceedingly light taxes (as the moon pleases by exceedingly cold rays).

(V. 5.) He made the Fortuna of the kingdom of the Chapotkata princes, whom he took captive at his will, an object of enjoyment for the multitude of the learned, of his relatives, of Brahmans, bards and servants. Won by his valour that mightily blazed forth in battle, the guardian goddesses of the kings of all the other regions then clave for a long time to the Fortuna residing in his sword.

The Gujarat chroniclers know more about Mülaraja's dealings with the Chapotkatas. The late Professor Bihler has, however, shown3 that not much credit can be given to them, and it is safer to abstain from using them.

Mularaja's charities are also alluded to in the Devapattana inscription,4 where we are introduced to the astrologer Uyabhatta, whose three sons Madhava, Lula and Bhabha the king charged with the supervision of these charities.

The chroniclers state that Mülaraja reigned from Vikrama-Samvat 998-1053, and they tell us about his expeditions against other kings. Shortly after his accession, they inform us. he was attacked by the Raja of Sakambhari and Barapa, the general of Tailapa, or, according to the Sukritas inkirtana, of the king of Kansuj. The Sakambhari king must have been the Chābamāna Vigraharāja, whose Harsha inscription⁶ is dated in Vikrama-Samvat 1030.

Bārapa is described as a Chālukya7 or a Chaulukya,8 who is said to be descended from the mythical Chaulukya and a Rashtrakūta princess. Dr. Fleet9 doubts that Barapa was the general of Tailapa, because he was a Chaulnkya and not a Chalukya like the latter.10 Whatever his origin was, he certainly succeeded in establishing himself in Lata, where we find his grandson Kirtirāja as mahāmandalēšvara in Saka 940, and Kirtirāja's grandson Trilochanapāla in Saka 972. According to the chronicles, Barapa drove Mülaraja back to Kanthadurga (the modern Kanthköt in the eastern division of Kachh), but was later on defeated by him.

That Mülaraja was also at war with the Kalachuris has been inferred from the Deoliit and Karhadli plates of the Rashtrakuta Krishna III, dated Saka 862 and 880 respectively, where we are told that "on hearing of the conquest of all the strongholds in the southern

¹ Ind. Ant., Vol. VI. pp. 196 and ff.

Ind. Aut. Vol. VI. pp. 180 and ff.

^{*} See Vienna Journal, Vol. VII. p. 191.

⁷ Fienna Journal, Vol. VII. p. 89.

Bombay Gazetteer, Vol. I. Part II. p. 431.

Above, Vol. I. pp. 293 and ff. 4 Above, Vol. II. p. 438, vv. 7-10.

^{*} Above, Vol. II, pp. 116 ff.

⁵ Ind. Ant. Vol. XII. pp. 201 and ff.

¹⁸ The form Chalukya however also occurs; see Vienna Journal, Vol. VII. p. 89.

¹¹ Above, Vol V. pp. 188 and ff.

¹⁴ Above, Vol. IV. pp. 278 ff.

region, simply by means of his (Krishna's) angry glance, the hope about Kalanjara and Chitraküta vanished from the heart of the Gürjara." The same events are probably alluded to in the (spurious) Lakshmēšvara inscription of Saka 8901 where it is stated that Mārasimha conquered the Gürjaras under orders of Krishparaja,

I have already mentioned that, according to the chroniclers, Mularaja reigned till Vikrama-Samvat 1053. This agrees well with the fact that he is mentioned as a contemporary in the Bijapur inscription of the Rashtraküta Dhavala of Hastikundi,2 which is dated in that year.

The object of the present copper-plate is to record a grant, made on the occasion of a lunar eclipse, to a certain Dirghacharya, the son of Durlabhacharya, an immigrant from Kanyakubja. The writer of the grant was the kayastha Kanchana, who also wrote the Kadi plates of Samvat 10483 and whose son Vatesvara occurs as the writer of the Kadī plate of Bhīmadēva of Samvat 1086.4 The dūtakā was the mahattama Šivarāja.

The grant consisted in the village Varanaka in the Satyapura-mandala. Its boundaries were, to the east the village Dhanara, to the south Gundauka, to the west Vodha, and to the north Mētravāla. Satyapura is the present Sanchor in the Jodhpur State. Munshi Debiprasad states that Varanaka is said to be the site of the modern village of Balèra (Indian Atlas, Sheet 21 N. W., 71° 32' long., 24° 43' lat.), where the plates are now found. I do not know his authority for this statement, and it seems more likely that we have to look for Varanaka farther east, where we find a village Gondau, which might correspond to Gundauka, at 72° 81' long. and 24 49' lat. To the north of Gondau is the village Mirpur, which might be a later form correspending to Mětravála, while Bodan, to the north-west, perhaps represents Vodha, and Dantwara, to the north-east, Dhanara.

The grant was issued from Anahilapataka, i.e. Anhilvad.

TEXT.

First Plate.

- 1 Oms samvat 1051 Māgha sudi 15 adysēha srīmad-Aņahilapāţa-
- 2 kē rājāvalī pūrvvavat ⁶paramabhattāraka-mahārājādhirāja-
- 3 paraméévara-éri-Mülarājadēvah svabhujyamāna-Satyapura-mamda-
- 4 1-amtahpāti-Varaņaka-grāmē samasta-rajapurushān vrā(brā)hmaņ-ottarām-
- s=tannivāsi-janapadāms=cha vo(bō)dhayaty-astu vah samviditam yathā a-
- 6 dya soma-grahana-parvvani characharagurum bbagavamtam= Amvi(bi)kāpati-
- 7 m=abhyarchchya matapitror=atmanas=cha punya-yaso-bhivriddhayo upari-8 likhita-Varanaka-gramo-yam sva-sima-paryamtah sa-vrikeha-mala-
- 9 kulah sa-kashtha-trin-odak-opētah sa-damda-dasaparadhah šri-
- 10 Ka[n]yakuvja(bja)-vinirggat-āšēshavidyāpāraga-taponidhi-

Second Plate.

- 11 śri-Durlabhāchārya-sutāya śri-Dirghāchāryāya śāsa-
- 12 nen-ödakapürvvam=asmäbhih pradatta iti matva asmad-vamšajair=a-

Ind. Ant. Vol. VII. p. 104.

Jour. Beng. As. Soc. Vol. LXII., Part I. p. 311. See also pp. 17-24 above, where the text of the inscription has been published by Pandit Ram Karna of Jodhpur. Dhavala is there stated to have assisted Dharapivaraha against Mülarāja. According to Prof. Kielhorn, Dharapivarāha was perhaps que of the Chūdāsamā chiefa.

¹ Ind. Ant. Vol. VI. p. 192,

^{*} Ibid. p. 194.

^{*} Expressed by a symbol.

The a-matra in -banffarake- seems to have been originally forgotten.

द सं तर् १० प्राच्छा हिराप अराह शीमद लहिल पाट लगा डावली प्रवे तर् प्रमुद्ध संस्था अहारी डाविया डा प्राच्छा स्थिति स्था हिराह सम्बद्ध स्था हिराह ला का ना त्याति वर ला कराहिस मझ राड प्रस्था व व्यात्या महि वाश्मिड ने परी श्वी वया असु वः महिर तया अस्ति स्था मुग्द ता पर्वे ला व रा चर ग्रे दे स्था व विकाय विकाय कि विवाद स्था हिराह है स्था अपरि हिराह त्या कराहित है स्था है स्था कराहित के स्था के स्था है स्था कराहित के स्था क

ीर् संसार्यश्रा के यार्रिधार्मियायीय पान त्यार्यायाय स्थारिक प्रत्य के प्रति स्थारिक प्रत्य के प्रति स्थारिक
STEN KONOW.

2

ō

8

10

12

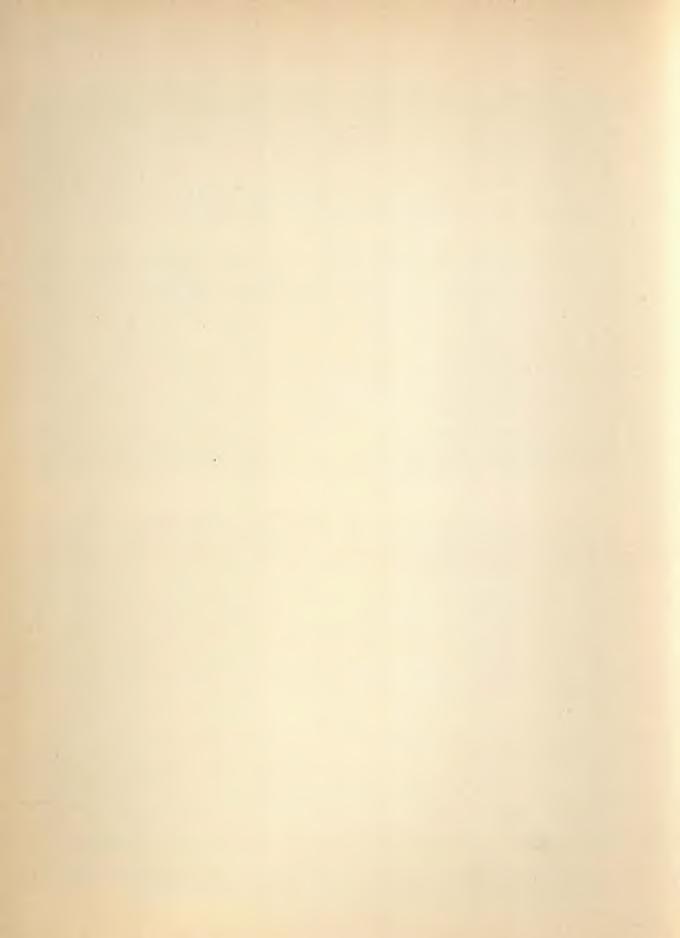
14

16

18

20

W. GRIGGS, PHOTO-LITH



- 13 parair-api bhavi-bhoktribhir-asmat-pradatta-dharmma-dayō-yam-anumam-
- 14 tavyah pálaniyas-cha l asya cha gramasya půrvvasyam diší Dhana-
- 15 ra-grāmo dakshiņasyām Gumdauka-grāmah paschimāyām Vodha-grāma

16 uttarasyam Mětravála-grama iti chatur-aghat-opalakshito=

- 17 yam Ghāghalīkūpa-tribhāg-ōdakēna saha dattah || uktam cha bhagava-
- 18 tā Vyāsēna || shashtir=vvarsha-sahasrāņi svarggē tishthati bhūmidaḥ | āchchhē-
- 19 ttā ch=ānumamtā cha tāny-ēva narakam(kē) vasēt || Likhitam=idam sā(śā)sanam
- 20 kāyastha-Kāmchanēna || dūtō-tra mahattama-šri-Šivarājaḥ || [Representation of a flower].
- 21 śri-Mülarājasya II

TRANSLATION.

Om. Samvat 1051, the 15th of the bright (fortnight) of Magha. Today, in the famous Anahilapātaka,—the rājāvalā as before!—the Paramabhattāraka Mahārājādhirāja Paramēśvara, the illustrious Mūlarājadēva, addresses all rājapurushas and all people, Brahmanas and others, residing in Varanakagrama, which belongs to the Satyapura-mandala in his realm :- Be it known to you that, after having today, at the eclipse of the moon, worshipped the lord of the world, the hely husband of Ambika (i.e. Siva), the above mentioned village, Varanaka, up to its proper limits, with its groves of trees, with its wood, grass, and water, with the fines arising out of the ten flaws, has been given by us, by a charter, after libations of water, in order to increase the religious merit and the fame of our parents and ourselves, to the illustrious Dirghāchārya, the son of Durlabhāchārya, who had come from Kanyakubja, who was accomplished in all kinds of lore and (who was) a treasure of austerity. Knowing this, future rulers of our lineage or others, should approve of and preserve this my religious gift. (And) it has been given, defined with its four abutments,-vis. to the east of this village Dhanara village; to the south Gundauka village; to the west Vodha village; and to the north Mētravāla village, -and together with the water of a third of the Ghaghali kupa. And it has been said by the venerable Vyasa: The giver of land remains 60,000 years in heaven. But he who rescinds (a gift) or approves of (its being rescinded), resides in hell for the same (period). This grant was written by the kayastha Kanchana. The messenger was the mahattama, the illustrious Sivarāja. (The sign manual) of the illustrious Mularāja.

No. 18.— PESHAWAR MUSEUM INSCRIPTION OF VANHADAKA; LAUKIKA-SAMVAT 538.

By PROFESSOR STEN KONOW, PR.D.; CHRISTIANIA.

The stone on which this inscription is incised, was transferred to the office of the Superintendent, Archæological Survey, Frontier Circle, from the office of Dr. Stein in 1907. Dr. Stein informs me that the inscription was not found by him. It is said to hail from the Hazara District, but nothing is known for certain about its origin. I edit it from impressions furnished by Dr. D. B. Spooner.

The stone measures 18" × 10", and bears six lines of writing. The central portion of the last line has been lost. A peculiarity of this inscription is that the letters are not incised but

The words rajavali parreages also occur in Bhimadeva's plates, (Ind. Ant. Vol. VI. 194; 199; 201; 203; 205; 206; Vol. XI. p. 71). A similar phrase, rajavali parreage, is found in Mularaja's and Jayantasimha's Kadi plates (ibid., Vol. VI. pp. 192 and 196). They are always prefixed to the description of Mularaja, and probably belong to the approved preamble of grants kept in the royal archives.

raised, as is usual in Muhammadan inscriptions. An older instance of the use of raised letters in a Sanskrit inscription is afforded by the legend on a statue of the Buddha uncarthed by Mr. Oertel at Sarnath.1

The characters of the inscription are Săradă. Among individual letters I note the form of sa in atasī-, l. 1, of ja in gaja-, l. 3, of da in Sūradē-, l. 4, -Vāņhadakēna, l. 5, and the ligatures ky in lokya-, L 3, rg in -kargi-, L 6. and nh in -Vanhadakena, l. 5. The final form of t is found in 11. 3 and 7, and that of m in 11. 2 and 5. The inscription contains the numeral symbols for 3,8 and 1 in 1.4. Note the form of 8.

The language is Sanskrit, with some mistakes, which show that the author was not a very good scholar. Compare -kusma- for -kusuma-, l. l, etc. The Sanskrit of the two last lines is particularly weak. With the exception of the invocation to Vishpu in Il. 1 and 2, which is written in the Arya metre, the inscription is in prose.

The object of the inscription is to record the construction of a tank by śri-Vānhadaka for the benefit of his father fri-Isvara, the son of fri-Surade. The sthapati was Simgali Kargi, the son of Kāli, and he seems to be described as belonging to the drasga of Navagrāma. I am, however, unable to make out the last words of line 6 with certainty. The tank was completed on Saturday, the thirteenth day of the bright fortnight of Kārttika, in the year 38 in the Lökya-samvat denoted by the arrows (5) and hundred augmented by the elephants (8) and thirty. This date is of interest in more than one respect. In the first place it is not usual to indicate the hundreds in dates of the Laukika era. Mr. R. D. Banerji's even goes to the length of remarking that "if in a date the hundreds are mentioned, it is absolutely certain that it cannot be referred to the Lankika era." This statement cannot any more be upheld in the face of our inscription, where the year is given as sara, i.e. five, hundred, and gaja, i.e. eight, and thirty. Pandit Mukundram also informs me that the hundreds are actually sometimes added in Kashmir loke, in common life, not however in books. It is then interesting to note that, in the repetition of the date in figures, the hundreds are omitted. Professor Jacobi who has been good enough to calculate the date for me, finds that it corresponds to Saturday, the 17th October 1461.

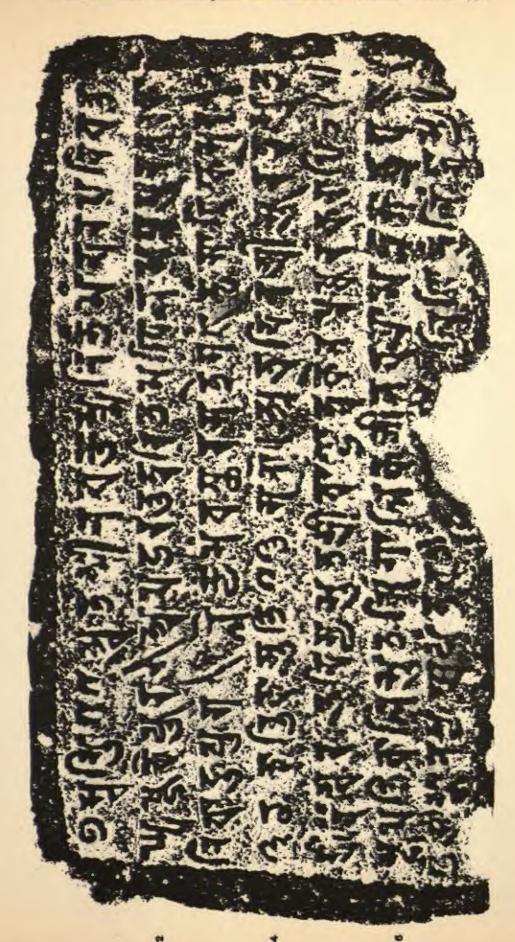
I do not know anything about the persons mentioned in the inscription, and, so long as we have no information about the origin of our inscription, it is hopeless to identify the Navagrāma-dranga mentioned in 1. 6. According to Dr. Stein, the term dranga signifies "a watch station established near mountain passes for the double purpose of guarding the approaches to the valley and of collecting customs revenue."

- 1 Om's svasti | | atasi -nava-kusma-nibham Mandara-parivarta-
- ghrishtakeyüram [1*] apaharatu duritam-akhilam Madhu-Mura-Narakā-
- 3 ri-vāhu⁶.yugam [||*] Lökya-samvach-chhara-satē gaja-trimsādhikē⁷ samvat⁸
- 4 38 Kārtikā(ka) śu ti 13 Śanau | Atra dinē śri-Śūradē-suta-
- śri-Iśvaram udiśya suta-śri-Vänhadakena pushkaram karā[yi]tam || || 6 stbapati-Kāli-suta-Ši[m]gāli-Kargi Navagrāma-dranga-vradhajana 10
- 7 Öm srl sthanasya sreyam bhavat...likhitam lingasya

- 2 Indias Antiquary, Vol. XXXVII. p. 28.
- Translation of the Rajatorangini, Vol. II. p. 291.
- Expressed by a symbol. Metre: Arya. Rusma is written for kusuma. * Read -baku-. " The sign visible after same at is probably a sign of interpunction.
- 1 Read -trimf-

- Read Itogram=udditya.
- 16 The reading is very uncertain. We should perhaps read -budhajana.

¹ See Archaelogical Survey Annual Report, 1904-05, p. 81.



STEN KONOW



TRANSLATION,

(Line 1.) Öm. Hail.

- (V. 1.) May the pair of arms of the enemy of Madhu, Mura and Naraka (i.e. Vishpu) turn away all evil, that which is like a fresh atasi-flower (and) the bracelets of which were rubbed at the turning of (the mountain) Mandara (in the churning of the ocean).
- (Lt. 3-5.) In the Lökya (Laukika) year arrow (five)-hundred increased by thirty and elephants (eight), Samvat 38, the 13th of the bright (fortnight) of Kārttika, on a Saturday—on this day, a pond was made with reference to śri-Īśvara, the son of śri-Śūradē by (his) son śri-Vānhadaka.
- (L. 6.) The sthapati (was) Šimgāli Kargi, the son of Kāli, a Papdit (?) from the Nava-grāma-dranga.
 - (L. 7.) Din. Prosperity. May luck follow the place written of the linga (?).

No. 19.— PIMPARI PLATES OF DHARAVARSHA-DHRUVARAJA; SAKA-SAMVAT 697.

BY K. B. PATHAR, B.A.; POONA.

This grant consists of three plates, each measuring $10\frac{3}{4}" \times 7\frac{1}{4}"$. The ring on which the seal was strung had been detached from the plates when they came into my possession. The weight of the three plates is 260 tolas, while that of the ring and the seal is 190 tolas. The diameter of the ring is $2\frac{1}{4}"$ and the length of the seal is 6". On the top of the seal there is, in relief, on a countersunk surface, a figure of the four-armed god Vishņu. The grant belongs to Dasharath Patil and Lala Patil of Pimpari in East Khandesh and was published by Mr. G. K. Chanderkar in a Marāṭhi magazine named Prabhīta nearly two years ago. I obtained the original plates on loan for taking an impression of them through the kind offices of Mr. G. K. Chanderkar. The plate accompanying this paper has been prepared from impressions received from Mr. Nārāyaṇrāo Tāṭakē of the Archæological Office in Poona.

The grant is written in the Nägari characters of the period to which the inscription refers itself. The peculiarities in respect of orthography, which deserve to be noted, are that a is always used in place of a, as in faz for faz in line 62, and that conjunct consonants immediately following a are sometimes doubled as in annifer in line 6, but not in anifer in line 18 and in alternate in line 31. The grant is written in the Sanskrit language, and, except in the donative passages and the last sentence, the whole is in verse. It may be remarked that all the verses of our inscription are met with in later Räshtraküta grants.

The inscription records the grant, by Dharavarsha iri-Dhruvarajadeva, of the village called Lilagrams to a Brahmana named Bhattadeva, when six hundred and ninety-seven years of the Saka king had passed away, on the new moon-day, in the dark half of the month of Karttika, when there was a solar eclipse. The mention of the solar eclipse in the date may be taken as a proof of the genuineness of the present grant. But it comes into conflict with the Dhulia grant of Karkaraja, dated Saka-Samvat 701, which purports to have been issued in the prosperous reign of Gövindaraja II. I beg to invite attention to the following passage in that grant:—

चीप्रभूतवर्षस्य प्रवर्धमानराज्ये [।*] तस्यानुत्रः त्रीध्रवराजनान्ना(मा) महानुभावो विहितप्रताप[:*] प्रसाधितायिषनरेन्द्रचक्र[:*] चूडामणि(क्रमेण) वालार्क्षवपुर्व्वभूव । तस्य सुत: . . . योकर्कराजस्तदाच्या सर्व्वानेव समा-ज्ञापयति

As the genuineness of the Dhulis plates of Karkarāja is open to question, the first point which we have to decide is whether Gövinds II. actually succeeded to the throne or whether there was a complete supersession of him by his younger brother Dhruva after the death of Krishnarāja I. On this point our grant has the following verse (18) which also occurs in the Kāvi² and Paithan³ plates:—

येन श्वेतातपनप्रहतरविकरब्राततापात्सलीलं जम्मे नासीरधूलीधविलतिप्ररसा वत्तभाख्यः सदाजौ । स श्रीगोविन्दराजो जितजगदहितस्वैणवैधव्यहेतु- स्तस्यासीत्मृत्रदेवचण्रणदिलतारातिमत्तेभवंभः ॥

Here the possession of the white umbrella, which is symbolical of supreme sovereignty, is attributed to Gövinda II. Kālidāsa says:—

भय स विषयव्याहत्तांमा ययाविधि स्नवे नृपतिककुदं दस्वा यूने सितातपवारणम् । सुनिवनतकुच्छायां देव्या तया सङ ग्रिन्थिये गलितवयसामिचाकूणामिदं डि कुलब्रतम् ॥

Raghuvainsa, III. verse 70.

And in a stone tablet inscription at Dävangere, dated in the Chālukya-Vikramavarsha 4S, it is said of the Chālukya king Jayasimha—

श्रामदिखळधाची येन राजन्वतीत्वं निवसति न्द्रपलन्त्रीर्थस्य श्रभातपचे । सकल[वि]निमितारिचीणिभृन्दीकिरत्न-दि(य्)तिश्रवितपादो गण्डरोक्षण्डभूपः ॥

Ep. Carn. Vol. XI. Davangere, No. 1.

¹ [There are also other proofs of carelessness on the part of the writer of the Dhulia plates. I am, however, bot sure if the inscription can be declared sparious on such grounds alone,—Ed.]

² Ind. Ant., Vol. V. p. 146, verse 18

Above, Vol. III. p. 107, text-lines 27-29.

^{*[}The verse occurs with some mistakes and alterations in the Dantivarman plates (above, Vol. VI. p. 289, verse 15).—Ed.]

And in the Śravaņa-Belgola epitaph of Mallishēņa we read-

राजन् साइसतुङ्ग सन्ति वहवययेतातपना नृपाः किन्तु त्वसदृया रणे विजयिनस्त्वागोत्रता दुर्वभाः । तहस्यन्ति बुधा न सन्ति कवयो वादीयरा वाग्मिनो नानामास्वविचारचंतुरिधयः काले कली सिंहधाः ॥

Here शंतातपना नृपा: "kings possessed of the white umbrella" means "paramount sovereigns."

It is thus clear that Gövinda II. did in all probability reign immediately after the death of his father Krishnaraja I. I lay stress on this point because the gennineness of the Dhulia plates of Karkaraja which refer themselves to the reign of Gövinda II. may reasonably be called in question, as I have pointed out above. From the Daulatabad grant, which was discovered by me three years ago and brought to the notice of Mr. D. R. Bhandarkar, who has edited it in this Journal, it is plain that Dhruva wrested the sceptre from the hands of his elder brother Gövinda II. That Gövinda II. did reign is also proved by two pillar inscriptions discovered and noticed by Mr. Rice, which use the expression prithvi-rājyam gepye, "ruling over the earth," with reference to Jagattunga-Prabhūtavarsha-Pratāpāvalōka, son of Akāla[varsha].

The second question to be decided is the identification of the Srivallabha, mentioned by Jinasena in the concluding praéasti of his Haritaméa, which I quoted in my article in the Indian Antiquary, Vol. XV, p. 142. In a note to my paper, Dr. Fleet proposed to identify the king with Gövinda II. A few years later a different identification was proposed. Dr. Fleet then suggested that in the verse—

प्राक्तिष्यव्दयतेषु सप्तसु दिशं पञ्चोत्तरेषूत्तरां पातीन्द्रायुधनाम्बि करणन्यजी त्रीवसभे दिखेणां ।

the expression कृषानृत्वे should be construed with रन्ध्यमनानि and that श्रीयम was Govinda III. The only reason given for this construction was that "Indrayudhanaman is an adjective and wants the next following word to complete its meaning." This is not a serious difficulty for Kalidasa frequently uses रमावनामन as a noun. And Jinasena himself uses compounds like रम्ध्यमामन as nouns:—

जंबूनामा ततः क्रवनं पुराणमपि ग्रुश्रुवान् । प्रययिष्यति सोवेष्मिन् सीत्यः केवलिनामित्र ॥ 37

ततो नचनामा च जयपालो महातपाः । पांडुच भ्रवमेनय जंसाचार्यं इति क्रमात् ॥ 45 एकादशांगविद्यानां पारगाः स्वर्भनीयराः ।

46

Adipurāņa, Chap. II.

This second identification, though abandoned long ago, is now rendered untenable by the Daulatabad grant of Dhrava, dated Saka-Samvat 715. A third attempt was made to

Above, Vol. III. p. 191, verse 21.
Above, Vol. IX. p. 193.

Fp. Carn. Vol. XI. Challakere Nos. 33 and 34. Bombay Gazetteer, Vol. I. Part II. p. 395, footnote 1 .

^{*} Komarasambhaco, III, 37; Roghucansa, III, 24.

identify Jinasena's Śrivallabha, and this time, with Dhruva. The only ground assigned for this was that "Srivallabha was a leading and distinctive biruda of Dhruva," while Govinda II. was, in Dr. Fleet's opinion, Vallabha and not "Srivallabha, which is quite a different thing."1 But from one of the two inscriptions which we owe to Mr. Rice and to which reference has been made above, we learn that Srivallabha was a title borne by Gövinda II., who is spoken of as Jagattunga-Prabhūtavarsha-Pratāpāvaloka-Śrivallabha. This is a pillar inscription and a contemporary document and must have been incised between Saka-Samvat 692 and 697.2 It is evident that Srivallabha was not a distinctive birnda of Dhruva. On this account it is hard to decide whether Jinasena's Srivallabha was Govinda II. or Dhrava. Though neither of the two reasons put forward by Dr. Fleet, vis. (1) that Govinda II. did not reign and (2) that he had not the title of Srivallabha is correct, his identification of Jinasēna's Srivallabha with Dhruva is warranted by the subjoined inscription. It is dated in Saka-Samvat 697 and the Daulatabad plates of Dhruva in Saka-Samvat 715. Between these two dates Dhruva was the reigning sovereign. During this interval Jinasona wrote his pratasti of Saka-Samvat 705. His Śrivallabha, son of king Krishpa was, therefore, Dhruva himself. On the other hand, if the Dhulia plates are also genuine, Jinasena's Srivallabha cannot, at present, be identified.

One of the titles of Dhruva is Kalivallabha, which Dr. Fleet always translates "favourite of the Kali age." It is well known that the Kali age is sinful, and to be called "favourite of the sinful age" can hardly be regarded as complimentary. The real explanation appears to be different. Kali means "a brave person, a warrior," and vallabha means "favourite" or "lord." And the title should be rendered "the favourite of warriors." That this is the real meaning of the title is implied in the following verse which occurs in the Manne grant and in the Sirūr inscription.

ल्ब्यप्रतिष्ठमचिराय कलिं सुदूर-सुत्सार्थ्य शहचरिते परेशीतलस्य। जला पुन: जतयुगित्रयमप्यग्रेषं चित्रं कथं निरूपमी कलिवज्ञभीभृत्॥

TRANSLATION.

"Having quickly driven far away, by his pure actions, the Kali age, which had obtained a footing, and having created again the glory of the Krita age on the surface of the earth, it is wonderful how Nirupama became the favourite of the Kali age (the favourite of warriors)."

This verse is an instance of the well-known figure of speech called factures (= apparent contradiction). The expression affects is used in a double sense. The literal rendering "favourite of the Kali age" creates an apparent contradiction, which consists in the Kali age being driven away by its own favourite. But this contradiction is not real and disappears as soon as we remember the secondary and the real sense of the title "the favourite of warriors."

From his victorious camp pitched near Sankhavivaraka the Paramabhattāraka Mahārājādhirāja Paramējvara Prithvivallabha the glorious Dhārāvarsha, the illustrious Dhruvarājadēva granted, for the increase of the merit and fame in this world and in the next, of his parents and of himself, the village of Līlāgrāma in the Vaṭanagarikā eighty-four (district). The donce was a Brahmana named Bhaṭṭadēva, son of Bhaṭṭāvukadīkshita, of the Bharadvāja-

¹ Above, Vol. VI. p. 197.

³ [Mr. Rice assigns both of these inscriptions to "about S15 A. D." One of them mentions the daughter of the Nojamba chief Simhspöta and the other (his son) Pallavädhirāja. Mr. Krishna Sastri attributes them to Gövinda

विवसी कविकायां ना ग्राजिकलं हुने Mēdini; कविविभीतक पूरे विवादेशनसमें युधि Hêmachandru;

^{*} Above, Vol. VII. p. 205, text lines 2 and 3.

gōtra and the Kāṇva (śākhā) who was a native of Jambūsaraḥ¹-sthāna. The boundaries of the village granted are:—on the east Laghuḍējrāra-khēṭaka; on the south the village of Talāpāṭaka; on the west the village of Ajjalōṇi; and on the north the river Mosiṇi. The donation was made for keeping up the five great sacrifices (yajāa), vis. bali, charu, vaiśvadēva, agnihōtra and atithi, and for other purposes. Bhaṭṭa-Hērambaka and others were apparently sent as dūtakas by the king to see to the proper execution of the grant made by him. The writer was the mahāsandhivigrahādhikrita Śri-Māndalla, son of Balādhikrita. Līlāgrāma and Vaṭanagarikā are identified by Mr. G. K. Chandorkar with Nīlagavhāṇa and Vaṇī in the Nāsik District.

TEXT.3

First Plate; Second Side.

- 1 भो सवोव्यादेधसा धाम यत्राभिकमलं कृतं ॥ इरच यस्य कान्तेन्दुकलया कमलंकतं [॥१*] आसी-
- 2 द्विषत्तिमिरमुदातमंडलाग्रो ध्वस्तिवयत्रभिमुखो रणश्रवंरीषु भूपः श्विर्विधु-रिवाप्तदिग-
- 3 न्तकीर्त्तमीविन्दराज इति राजमु राजमिङ्हः ॥ [२*] दृष्टा चम्म-भिम्नुखीं सुभटाइहासा-
- 4 सुन्नामितं सपदि येन रणेषु नित्यं । दष्टाधरेण दधता मुकुटिं खलाटे खड़ कुलं च
- 5 हृदयं च निजं च सत्वं ॥[२*] खडं करायान्मुखतय शोभा मानो मनस्तः सममेव यस्य । महाइवे नाम निशम्य
- 6 सदासयं [रि]पूणां विगलत्वकाण्डे ॥[8*] तस्याकाजो जगित विश्वतदीगर्ध-कीर्तिरात्तीर्तिहारिहरिविक्रमधाम-
- 7 धारी । भूपस्तृ(स्वि)विष्टप[न्छ]पानुकतिः कतन्नः त्रीकर्कराज इति गोत्रम-णिर्वभूव ॥[५*] तस्य प्रभिन्नकरटच्युतदान-
- 8 दन्तिदन्तप्रहारक्चिरोबिखितांसपीठः द्यापः चितौ चिपतप्रवृरभूत्तनूजः सदा-दृक्टकनका[द्रिरि]वेन्द्ररा-
- 9 ज: ॥[६*] तस्योपार्ज्जितमञ्चसस्तनयञ्चतुत्रदिषवलयमालिन्याः भोता भुवः ग्रत-क्रतुसद्गः त्रीदिन्तदुर्गा[राजो]-
- 10 भूत् ॥[७*] काश्वीस(श)केरलनराधिपचीलपाच्छाश्रीहर्षवव्यटविभेदविधानदचं । कार्याटकं वलमनं-
- 11 त्यमजियमन्येर्धत्यै: कियद्भिरिप य: सहसा जिगाय । [८*] अभूविभंगमग्र-हीतनिशातशक्षमत्रांत-

¹ The Kaira grant of Vijayarāja registers a gift "to the general body of officiating priests and religious students of (the village of) Jambūsars, who belong to the Vājasanēya (sect) and the Kāṇva (tākhā);" Ind. Ant. Vol. VII. p. 250.

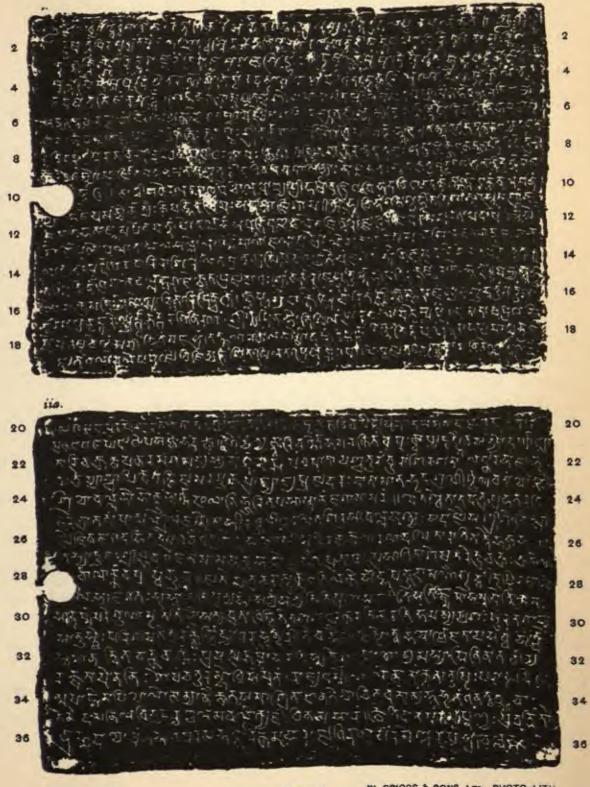
From the original plates.

Expressed by a symbol.

- 12 मप्रतिहतान्त्रमपितयतं । यो वन्नभं सपदि दण्डवलीन जित्वा राजा-धिराजपरमेश्वरतामवाप ॥ [८] म्रा से-
- 13 तोर्बिपुलोपनावनित्तसक्षोनोर्भिमानाजनादा प्रालेयकलङ्कितामनगिनानानानुपा-राच-
- 14 लात् । या पूर्व्वापरवारिराधिपुल्तिनप्रान्तप्रसिद्धावधेर्येनेयं जगतो स्वविक्रमव-लीनेकातपना(नी)कता ॥ [१•*]
- 15 तिस्त्रित्वं प्रयाते वत्तभराजे चतप्रजावाधः यीकर्कराजस्तुर्माचीपतिः कणा-राजोभूत् ॥ [११*] यस्य स्त्रभु-
- 16 जपराक्रमनिः भेषोत्वादितारिदिकक्रं । क्रण्य[स्त्रे]वाक्रणं चरितं श्रीक्रण्यराजस्य ॥ [१२*] ग्रभतुंगतुंग-
- 17 तुरगप्रवृहरेणूई वहरविकिरणं ग्रीष्मेपि नभी निख्ति प्रावृह्यातायते स्पष्टं ॥ [१३*] [दी]नानायप्रणयि-
- 18 षु यथेष्टचेष्टं समीहितमज्ञः । तत्त्वणमकालवःषीं वर्षति सर्व्वार्त्तिनिर्व्वपणं ॥ [१8"] राहप्यमात्मभुज-
- 19 जातवलावलेपमाजी विजित्य निश्चितासिलताप्रहारै: । पालिध्वजावलि[ग्रुभा]म-चिरेण यो हि

Second Plate; First Side.

- 20 राजा[धि]राजपरमेश्वरतां ततान ॥ [१५*] क्रोधादुत्खातखड्डप्रस्तत्वचयै-र्क्यासमानं समंतादाजावुडृत्तवैरि-
- 21 प्रकटगजघटाटोपसंचोभदचं ॥ भौर्ये त्यक्तारिवमी भयचिकतवपुः काप्यदृष्ट्वैव सची दर्पाध्मा-
- 22 तारिचकचयकरमगमयस्य दोईण्डरूपं ॥ [१६*] पाता यचतुरंबुराशिरशनालङार-भाजो सु-
- 23 व: त्रयाबापि कतिहजामरगुरुप्राज्याच्यपूजादर: दाता मानस्दमणीर्गुणवतां योसी
- 24 यियो वज्ञभो भोतं खरगेफलानि भूरि तपसां खानं जगामामरं ॥ [१७*] येन येतातपत्रप्रहतरवि-
- 25 करब्राततापात्सकीलं जम्मे नासीरघूकीधवितिश्रिरसा वक्रभाच्यः सदाजी स त्रीगोविन्दरा-
- 26 जो जितजगदहितसैणवैधव्यहेतुस्तस्यासीत्स्तुरेकचणरणदिस्तारातिमत्तेभ[कुं]भ: ॥ [१८*]
- 27 तस्यानुजः श्रीभुवराजनामा महानुभावीविहतप्रतापः प्रसाधिताग्रीवनरेन्द्र-चक्रः क्रमेण



252. रता वहिंगम् स स्वाणियम् तिहर्षम् हिन नक्षित्रे में अस्य में अस्य में अस्य में यस्त । इत्याद्वीष्ट्रिस्मित्रेस्मित्रेस्कित्वक्षिरः क्षाप्ट 54 ्यहे दुस्यं इस्त्रिय गूम देश प्रश्रेष्ठ प्रश्ने के विद्या है त्राच्ये रेट्या मार्व अलेक्स्येरे विक्रियेस यः स्ववं मान यद्। 56 म् शास्त्राम् स्वित वार् में निर्देशः स्वान दिखः स्वान दिखः स्वान स्वति । ल ल प्रकार के लंगा में में महिता के से महिता है है महिता है विकास मिलित 58 मार के हमा अप प्राप्त का के किया है के हमा अप के प्राप्त हमा के किया में का का का किया के का का का किया के का क 60 यान्तिमार्डेड्यम्देवीह्य अस्तिमार्थित्यार्थित्यार्थित्यार्थित्यार्थित्य सर्वाह का का अपना का माना कर महत्र महामा के का माना महत्र 62 च्लामस् वर्षे विवास्य द्या पहित्य द्रा स्ट्रिस स्थाप देव शामाया विवास हा भूम हा सुर में मुख्य प्रदेश का का का का माने के माने का माने के माने का माने का माने का माने का माने का माने का 54 यद्राव्ययम् यातिक्षित्रक्षेत्र्यस्यवित्रीमार्थे रेक्षा 66 66

54

56

58

60

52

64

- 28 वालाकंवपुर्वभूव ॥ [१८*] जाते यव च राष्ट्रक्टतिलके सद्भपचूडामणो गुर्जी तृष्टिरघाखि॰
- 29 लस्य जगत: सुखाधिनि प्रत्यहं। सत्यं सत्यमिति प्रयासित सित स्था-मासमुद्रान्तिकामा-
- 30 सीडनीपरे गुणास्तिनिधी सत्यव्रताधिष्ठिते ॥ [२०*] ग्रमधरकरिनकरिनमं यस्य यशः सरनगाय-
- 31 सानुस्थै: परिगीयतेनुरक्वैबिंद्याघरसुन्दरीनिवहै: ॥ [२१*] इष्टोन्बहं योधिज-नाय सर्व्व सर्व-
- 32 स्त्रमानन्दितवन्युवर्मी: प्र[ा*]दालाक्ष्टी इरित स्र वेगालाणान्यमस्यापि नितांतवी [यं] [:*] [२२*]
- 33 रचता येन नि:शेषं चतुरभी धिसंयुतं। राज्यं धर्मोच जीकानां कता तुष्टि. परा इदि ॥ [२३*]
- 34 अपाङ्गेनापि यो लोकान्यानैचत समाश्रिता[न् ।] न ते याचितवंतोन्यभूसतं धन-त्रणया [२४*]
- 35 तेनेदमनिलविद्युचञ्चलमवलोका जीवितमसारं। चितिदानपर[म]पुखः प्रवर्त्तितो
- 36 ब्रह्मदायोयं ॥ [२५*] स च परमभट्टारकमहाराजाधिराजपरमेश्वरप्रध्वीवसभ-

Second Plate ; Second Side.

- 37 डा(धा)रावर्षश्रीध्रवराजदेव: कुशसी स[र्व्या]नेव यथासंवध्यमानकानाष्ट्र-पतिविषयपतिग्रामक्रटायु-
- 38 त्रनियुत्रकाधिकारिक[मइ]त्तरादीन्समाज्ञापयत्यस्तु वः संविदितं यथा ग्रहवि-वरकसमावासि-
- 39 जयस्र्वधावारावस्थितेन मया माता[पि] चीरालनशैहिकामु बिकपु खयशोभि ह इये जंदूसर:-
- 40 स्थाननिवसितज्ञा(चा)तुर्व्विद्यसामान्यभरदाजसगीनकाग्यसब्रह्मचारिभटावुकदीचित-सतभद्दे-
- 41 वाय वटनगरिकास्यचतुरशीत्यन्तर्भतत्तीलायामी यस्याघाटनानि सघडेचारखेट-
- 42 वसीमा । टचिण्तः तनापाटकयामसीमा । अपरतः बज्जनीणियामसीमा उत्तरतो मोसिणी-
- 43 सरित् । एवमेतचतुराघाटनीपलचितः सीट्रंगः सपरिकरः सभूत[प]ातप्रत्यायः सोत्व(त्प)द्यमान-

- 44 विष्टिकः सधान्यहिरखादेयोचाटभटप्रावेध्यः सर्व्यराजकीयानामहस्तप्रचेपणीयः याचडा(चंद्रा)-
- 45 क्रांखिवचितिसरित्पर्व्यतसमकालीनः पुत्रपीत्रान्वयक्रमोपभोग्यः पूर्व्यपत्तदेव-ब्रह्मदायर-
- 46 हितोभ्यन्तरसिहाा भूमिच्छिद्रन्यायेन शक्तन्त्रपकालातीतसंवत्वरशत्वद्वे सप्तन-वत्वधिके
- 47 कार्त्तिकवडुलामावास्यायामादित्वीयरागियोदकातिसर्गेष विलच्चवैयदेवामि[डो]-
- 48 वातिविपञ्चमङायज्ञादिकियोत्सर्पणार्थं प्रतिपादितो यतोस्योचितया ब्रह्मदाय-स्थित्या भुंजतो
- 49 भीजयतः प्रतिदिशतो वा न कैश्विद्यासेचे वर्त्तितव्यं ॥ तथागामिभद्रनृपतिभि-रस्रादंश्वैरन्यैर्वा
- 50 सामान्यं भूमिदानफलमवेत्व विद्युक्षीलान्यनित्यैयर्याणि तृषायसम्बजल[वि]दुच-ञ्चलञ्च
- 51 जीवितमाननय खदायनिर्व्विशेषीयमस्रद्दायोनुमन्तव्यः प्रतिपान्धितव्यः यसा-न्ना[न]-
- 52 तिमिरपटचाइतमितराच्छिन्यादाच्छियमानकं वानुमोदेत स पञ्चभिर्मादापात-
- 53 कै: सोपपातकीय संयुक्त: स्यादित्युक्तञ्च भगवता वेदव्यासेन व्यासे-

Third Plate; First Side.

- 54 न ॥ षष्टिं वर्ष्यंसङ्ग्राणि खर्में तिष्ठति भूमिदः । श्राच्छेता चानुमन्ता च तान्येव न-
- 55 रकी वसत् ॥ [२६*] विध्याटवीप्वतीयासु ग्रप्ककोटरवासिन: । [क्क]प्या-
- 56 जायनो भूमिदायं इरन्ति ये॥ [२७*] अम्मेरपत्वं प्रथमं सुदर्खे भू अिं] यादी
- 57 स[य] सताय गावः । लोकत्रयन्तेन भवेति दत्तं यः काञ्चनं गाञ्च महोञ्च
- 58 दद्यात् ॥ [२८*] वहुभिव्यमुघा भुका राजभिः सगरादिभिः। यस्य यस्य यदा भूमि-
- 59 स्तस्य तस्य तदा फलं ॥ [२८*] यानीच दत्तानि पुरा नरेन्द्रेईानानि धर्मार्थयमस्तराणि ।
- 60 निर्मुक्तमास्वप्रतिमानि तानि को नाम साधु: पुनराददीत ॥ [३०*] स्वदत्तां परदत्तां वा य-
- 61 बादच नराधिप । सडीं [म]डीमतां खेड दानाच्छेयोनुपालनं ॥ [३१*] इति कमलदलाम्बु-

- 62 विन्दुलोलां त्रियमनुचिंत्व मनुबजीवितच्च । सर्व्वमिदमाइतं च वुध्वा न हि पुरुषै:
- ॥ परसभद्वारकमहाराजाधिराज-[३२^{*}] द्रति धरे(र)कीर्त्तयो विसीप्या परमेखरपृथ्वीवल-
- भयीमदारावर्षयीध्रवराजदेवप्रहितभट्ट रस्वप्रभृतियीमदर्माधिकरणटू-
- तकं । लिखितश्चेतवरमेखराज्ञया वलाधिकतस्तुना समधिगतपञ्च-
- महाग्रन्दमहासिविग्रहाधिकतसामन्तश्रीमान्दक्षेनेति ॥ 66

No. 20 .- TIBETAN INSCRIPTION ON THE STONE MONUMENT IN FRONT OF THE TA-CHAO-SSU TEMPLE IN LHASA, 822 A.D.

BY A. H. FRANCKE.

The stone monument in front of the Ta-chao-ssu temple contains an inscription in Chinese and Tibetan, of the times of the Tibetan king khri btsong lde btsan, half of whose name has been preserved on the stone, as observed by Bushell. The Chinese half of the inscription was translated by S. W. Bushell in his article entitled "The Early History of Tibet" (J. R. A. S., Vol. XII, 1880, p. 535 ff.). As far as I know, no attempt to read and translate the Tibetan text has as yet been made. My reading of the Tibetan text is based on a rubbing of the inscription, reproduced in Bushell's article. This rubbing 'was obtained in Peking in 1869 and was said then, from the condition of the paper, to date at least from the last century.'

Ancient Orthography.

- (a) Cases of suffixed d (called drag) occur in physind (1, 20), phrind (1, 39), mald (1, 55); the last case is uncertain. On the whole, it is safe to say that the drag is of rare occurrence, as compared with Dr. Stein's Endere relies.
 - (b) Subscript y appears below as regularly when the latter is followed by i and s.
 - (c) Inverted i vowel signs are very common. But no uniform rule is followed in their uso.
- (d) In line 26 it looks as if chenpo was furnished with the article pho instead of po, as is the case in some of the Endere relics; but here it may be due to a scratch on the stone.

Other instances of the orthography of the Endere relics (Sth century A.D.) are not found here. Thus, the final consonant of a syllable is never written below the first consonant; and c and is are never replaced by ch and the, as at Endere.

Palcographical Notes.

All the vowel signs, with the exception of the i vowel sign, are joined to the consonant base. For the o-sign the left upper end of the consonant is preferred; but in the case of ch, kh and y it touches the middle. The u-sign is joined to the right lower end of the letter and the e-sign to the raiddle of its upper line, except in the case of s, m and l. With the two former the e-sign finds a place at the left upper end and with I at the right upper end.

¹ The metre is Pushpitagra; but the third pada does not correspond with the first. The verse occurs in the Dantivarman plates with the third pada thus: व्यतिवि[म]लम]नी]भि[रा]त्रानीनै ; above, Vol. VI. p. 294, verse 51.

Euphonic laws.

We find d instead of t after g in geigdu (1. 5), yogdu (1. 44), stre zhung ekegdu (1. 44), and yigdu (1. 77); b instead of p after g in yang thagbar (1. 31) (ordinarily yang dagpar).

The form 'adral (1.40) instead of 'agral shows that the modern pronunciation was already in vogue in 822 A.D. (Compare my notes on the Endere relics.) The same may be inferred from lines 75 and 77 where we find the genitive instead of the instrumental case.

Some ancient words.

The word phu dud (II. 45, 47) refers to the Chinese custom of shaking the sleeve in greeting a person.

Of ancient words the following deserve to be noted :-

ba (1.56) and 'abā (1.57), both meaning 'subjects (?)'; mjal dum (11.5 ff.) assembly, composed of mjal, 'meet 'and 'aduba, gather; gnyi (1.58), instead of nyi, sun; 'adsimpa (1.76) instead of 'adzinpa, seize.

INSCRIPTION FROM LHASA.

ROMANISED TEXT.

[Doubtful readings are put in brackets.]

| pas in oracket |
|---|
| 1 Bodkyi rgyalpo chenpo |
| 2 'aphralg(y)i lha bisanpo dano |
| 3 rgyai rgyalpo chenpo rgya rje hvangte |
| 4 dbon zhang gnyis, chab srid |
| 5 geigdu (s)olnas, mial dum |
| 6 chenno mdzaddo otsios |
| f Day Hattight valle mivi agreems |
| C the my kill |
| |
| 10 (r)n yongbai 11 gyi (mang) rdor |
| 11 gyi (mang) rdor |
| 12 13 'aphreleyi |
| 13 'aphrulgyi |
| 13 'aphrulgyi 14 lde brisangyi 15 būnbū henta |
| |
| |
| |
| 18 nyesci |
| |
| |
| al payinpa(I) Dyapala (n); 3 |
| |
| 23 ni bkš gros mthunte, |
| 24 ringpar myi zhu m |
| 25 dgyespai . '(tsi)gpar |
| 20 mounts, man (10m show /t) |
| 27 Indradde, bod rows |
| 28 mngabai yul dang mthsams (srung) |
| c management (arting) |

```
29 zhing, dei shar phyogs thamscad ni,
30 rgya chenpoi yul, nub phyogs thams
31 cad ni yang thagbar bod chenpoi
32 yul(d), de las phan thsun dgrar myi
33 'athab, dmag myi dang, yal myi
34 rnams, yid ma chespa khrig (y)od
35 na, myi bzungzhing gtam driste,
36 brdzangenas phyir gtang ngo
37 da chab srid geig eing, mjal
38 dum chenpo 'adi ltar mdzadpas,
39 dbon zhang dgyespai bkā phrind
40 anyanpas kyang 'adral dgoste,
41 phan thanngyi phonya 'adongbayang, lam
42 (rny)ingpar byungnas, snga lugs bzhin,
43 bod rgya gnyiskyi (bapa) (tso)ng kuu
44 rogdu rta brjesla, stae zhung chegdu
45 rgya dang phradpa mancad ni rgyas phu dud
46 bya, ceng shu hyvan du bod dang phradpa
47 yancad ni bodkyis phu dud byaste,
48 dbon zhang nyezhing gnyenbai thsul bzhin
49 du, sri zbu dang bkur stii lugs
50 yodpar sbyarte, yul gnyiskyi
51 barna dud rdul ni myi snang, glo bur
52 du adangba dang dgrai mying ni myi gragste
53 mthsams srangbai myi yancad
54 kyang dogs shing 'ajigspa myedpar
55 . . . . (mal maid soga)gpa rkyangste,
56 ba ('a)khodeing, skyidpai bkā drin
57 ni 'ab(ā) khrii bardu thog, snyanpai
58 (gsu)ng ni gnyi zlas (slebs) . . .
59 khyabste, bod bod yulna skyid,
60 rgya rgya yulna skyidpai srid chenpo
61 (abyar)nas gtsigs beaspa dang
62 nampar myi 'agyurbar, dkon mchog
63 gsum dang, 'aphagspai (na)m(khā)
64 nyi ala dang gza skarla yang dpa(ng)du
65 gsolte, . . . . (thsig)gi (rnams ba) . .
66 (bshad), srog chags bsadde mna
67 (ya)ng bornas gtsigs beasso,
68 (g)tsigs 'adi bahinda m(yi) byassam
 69 (bahig)na, bod rgya gnyis ganggis sngar nye(s)
 70 (pa) . . . sdigeing, landu dku (skyu) ci byas kyang,
 72 . . . bod rgya gnyiskyi rje blongyis
 73 · . . thugs muá borte, gtsigs
 74 kyi . . brisnas, rgyalpo chen
75 po gnyiskyi ni phyag rgyas btab, blonpo
 76 . . . . . . . 'adzimpala (gsogs)pa rnams
 77 kyi ni (lag) yigdu briste, gtsigakyi
 78 . . . . . . . . . . . . . . . rn bzhaggo
```

TRANSLATION.

| 1 The great king of Tibet, |
|--|
| 2 the incarnate god, the b Tsanpo, and |
| 3 the great king of China, Hvangte, the great Chinese, |
| 4 nephew and uncle, both, praying |
| 5 for the unity of their governments, |
| |
| 6 making (causing) a great assembly, importance |
| 7 never changing |
| 8 all gods and men knowing [it] and giving |
| 9 witness (to it) times, times, |
| 10 coming |
| 11 on a stone |
| 12 |
| 13 The incarnate |
| 14 lde btsan |
| 15 Būnbū heuta |
| 16 uncle, both |
| 17 |
| 18 min by the great |
| 19 sovereigns |
| 20 henceforth not taking place, there is only one wish: |
| 21 that all may be (may be made) in great happiness. |
| 22 long lasting great meaning |
| 23 agreeing in their counsel |
| 24 for a long time, without amendment |
| 25 be pleased is of importance, |
| 26 so saying, making a great assembly, |
| 27 Tibet and Chins, both retaining the countries |
| 28 which they own now; |
| 29 everything to the East is |
| 30 the country of great China, everything to the West |
| 31 is certainly the country of great Tibet. |
| 32 Neither of them [must] fight |
| 33 like an enemy. Such soldiers and citizens |
| 34 as are clearly distrustful, |
| 35 [such] men [must] be seized, and questions being asked. |
| 36 [must be] despatched and seut back. |
| 37 Now, there being union of government, |
| 38 and such a great assembly being made, |
| 39 uncle and nephew being pleased with such glorious tidings. |
| 40 there must be travelling, (communication), |
| 41 mutual envoys going and, |
| 42 this taking place on the old road, in the former way, |
| 43 the Tibetans and the Chinese, both, |
| 34 shall bester besses (12) |
| 45 meeting with the Chinese, thither, the Chinese shall shared. At Stse zhung ches. |
| 45 meeting with the Chinese, thither, the Chinese shall show honor. 46 At Cheng shu hyvan, meeting with the Tibetans, |
| Beat my vad, meeting with the Tibeter |
| 47 hither, the Tibetans shall ale the the troctans, |
| ar thiner, the libetans shall show honor |
| 47 hither, the Tibetans shall show honor. 48 For, as nephew and uncle are closely related, it must be done in a friendly way |

| = | |
|---|--|
| | 49 being connected with manners of respect |
| | 50 and honor. Between the two countries |
| | at and duet shall not be seen, sudden |
| | to bestility and the name of enmity shall not be heard or. |
| | 53 There shall be no fear and anxiety, nitner, |
| | . ? |
| | the second or wood in the second in the seco |
| | dwelling, the kindness of happiness |
| | up to 10,000. The giornous |
| | -a 1 -1 11ach the cut and moon. |
| | m vet Offi - Titlestame angli Do Danilly III Librar |
| | 59 and cover [all]. The Hostans and to the great realm of happiness in China. |
| | ct This is of great importance, and |
| | 62 that it may never be changed, the three |
| | The second |
| | C4 and moon the planets and the stars, are asked to without a |
| | |
| | Having killed the animals, and sword |
| | it it are connected with importance. |
| | - 3- not according to this importance, or |
| | |
| | The same and the same and the same same and the same same and the same same same same same same same sam |
| | |
| | 71 by the great ministers of both, Tibet and China, |
| | 72 |
| | 73 swearing an oath, important writing. Both the great kings |
| | 75 confirm it by seal, the ministers |
| | 75 confirm it by seat, the immersant and the other ones |
| | 76 |
| | 77 writing in a (main) |
| | |

No. 21.— MACHHLISHAHR COPPER-PLATE OF HARISCHANDRADEVA OF KANAUJ; [VIKRAMA-]SAMVAT 1253.

By PANDIT HIRANANDA, M.A.; LAHORE.

This is a single plate, which measures 13½ wide by 18' long, and was found together with the seal "in village Kōtwa, parganah Ghiswā, tahsil Machhlishahr, on the east side of the unmetalled road running from Machhlishahr to Janghai," when excavations were carried on as famine relief work in the Jaunpur District of the United Provinces. In January last, Mr. C. A. C. Streatfield, work in the Jaunpur District of the United Provinces. In January last, Mr. C. A. C. Streatfield, I.C.S., presented it to the Provincial Museum at Lucknow, where it is now deposited. The Curator of the Museum informs me that he received it "in a bent and twisted condition in consequence of which it had to be flattened." It is broken about the middle and the writing which it bears is also considerably damaged.

The inscription which is engraved only on one side of the plate comprises 34 lines written in the Sanskrit language and the Nagari script. The size of the letters is between ½ and ¼. As regards orthography, it is enough to state that no distinction is made between the signs for b and v and that the dental and palatal sibilants are used indiscriminately.

The epigraph opens with 16 verses, the first 14 of which it has in common with the grants of Jayachehandradeva published in this Journal and in the Indian Antiquary. Towards the end, the subjoined inscription has 12 benedictive and imprecatory verses that are generally met with in other epigraphs. Verses 15 and 16 eulogize Harischandradeva, who "spread his unequalled fame spotless in the world" and who "eclipsed the splendour of the sun by means of the dust that was raised by the hoofs of his endless horses which pervaded the circle of the earth and gradually encompassed the sky." The formal part of the grant, from line 20 to line 27, is in prose and is worded like the corresponding parts of the other Gahadavala grants that have already been published.

The inscription records that the Paramabhattāraka Mahārājādhirāja Paramēivara the glorious Hariśchandradēva (the successor of the P. M. P. Jayachehandradēva), while residing at Dhanamvakra (?) (1. 24), granted, after having bathed in the Ganges at the bathing ghāt named Chyavanēšvara, the village of Pamahai (1. 20) together with its outlying hamlets (pāṭaka) to one Rāhīhīyaka (?)³ (1. 25), son of the Thakkura Madanū of the Kāšyapa-gōtra, on Sunday, the 15th tithi of the bright half of the month Pausha in [Vikrama-]Samvat 1253. The charter was written by the Mahākshapaṭalika, the Thakkura Bhōgāditya.

The seal accompanying the plate is circular and about $2\frac{\pi}{6}$ in diameter. The ring on which it is soldered is open. Owing to this circumstance the seal can be taken off or passed through the hole cut at the top for this purpose. The seal bears in relief a Garuda and a conch and between these the legend: Śrimata-Harischandradēvasya.

The record possesses some historical importance, for, to the list of the kings of Kanauj it adds one new name, vis. that of Harischandra. Indeed, we knew Harischandra as the son of Jayachchandra from the latter's grants published in the Indian Antiquary (Vol. XVIII. p. 130 ff.) and the Epigraphia Indica (Vol. IV. p. 126 f.). But Harischandra as a ruling chief of Kanauj is mentioned only in the subjoined record.

The date regularly corresponds, for the Vikrama year 1253 expired (1254 current), to Sunday, the 6th January A.D. 1197, when the full-moon tithi of Pansha ended 22 h. 58 m. (approximately) after mean sunrise.

Of the localities mentioned in the record, the name of one can be read with certainty and it is Pamahai, the village that was granted. Pamahai is merely a feminine of Pamahā, as Khairai is of Khairā, Pendrai of Pendrā, Burbi of Burbā, and so on. It is usual to name a small village near a bigger one in the feminine as a diminutive form and such villages are usually found side by side. Under these circumstances it will not be unreasonable to suppose that Pamahai stood somewhere near Pamahā. The latter I am inclined to identify with Pohā, a village about 2 miles from the spot where the document was found. That Pamahā should dwindle to Pohā is not extraordinary, as the dropping of the nasal is not uncommon in Hindi. The reading of the names of other localities is not certain and I am unable to identify them.

[One of the Kamauli plates belonging to the reign of Jayachchandra (T.), dated in Vikrama-Samvat 1232, records a gift made by the king at Kati (Benares) on the occasion of the

Above, Vol. IV. pp. 120-9. Vol. XV. p. 10 f. and Vol. XVIII. pp. 129-43.

² It is also possible that the donec's name is Hibiyaka and that the syllable rā is an abbreviation of the title rāvata or rāāta. In the Fairābād plate of Jayachchandra, for instance, the donec, who was a Brāhmana of the Bhāradvāja-götra, his father and grandfather bore the title rāāta (Ind. Ant. Vol. XV. p. 13).

^{&#}x27; [A grant of Gövindachandra found in a hamlet near Machhlishahr has been published by the late Prof. Kielhorn tabove Vol. V. p. 115). It is also deposited in the Lucknow Museum. It is dated in Vikrama-Sarivat 1201 corresponding to A.D. 1146. The village granted by this record is Pērōba in the Mahasōya-pattalā.—Ed.]

Mr. Hiralal of the Gazetteer Office, Nagpar, who has supplied the information regarding these names similar to our Pamahai, would identify Pamaha with Bambaha, a village in the Machhlishahr tabsil.

jatakarman (i.s. birth ceremony, when the navel-string is divided) of his son Harischandradeva. The date of the inscription corresponds to the 10th August A.D. 1175. Apparently, this was the day on which Harischandra was born. His namakarana (i.s. giving a name) is referred to as having taken place just three weeks later on the 31st August 1175 A.D.² Accordingly, Harischandradeva must have been 21 years old at the time of the subjoined inscription. As the latest known date of Jayachchandra is A.D. 1187, the accession of his son Harischandra must have taken place between A.D. 1187 and 1197, the date of the present grant.

The town of Kanauj was completely devastated by Shihāb-ud-din in A.D. 1193 and it is not a little surprising that Harischandra is described in the subjoined record as if he were a paramount sovereign. The Belkharā pillar inscription, dated a few months earlier, does not mention Harischandra but represents an un-named king of the Gahadavāla family as granting a village more than two hundred miles distant from Kanauj. The connection of this king as well as of Harischandra with Kanauj was perhaps only nominal. The former was probably residing at some town out of the reach of the Muhammadan generals or officials. Mr. V. A. Smith thinks that the king's residence was near Jaunpur. Zafarābād, 4 miles to the south-east of that city, is said to have been the site of a palace of the later rulers of Kanauj.—Ed.]

TEXT.6

| 1 जों' | चवंठीत्वंठवैकुंठकंठपीठलुठत्वरः । |
|--------|---|
| | [सरं]भ[: सु]र[तारं]मे स [त्रि]य: त्रेयसेस्तु व: ॥ [१*] |
| | बासीदभी[त]बुतिवंस(म)जात:-" द्यापालमालासु दिवं गतासु । सा[द्या]दिवस्तानि[व*] भूरिधा[स्ता] |
| 2 | नाना यासो ⁸ [व]ग्रह इत्युदार: ॥ [२ ⁸] त[सु]तोभूकाहोचंद्र[:] चंद्रधामनिभं निजं । |
| | येनापारमञ्जूपारपारे व्यापारितं यगः ॥ [३*] तस्याभूत्तनयो नयैकरिमक[:*] क्रांतद्विषकांडलो |
| 3 | वि[ध्वस्तो]दतवीरयोधितमिरः श्रीचंद्रदेवो तृप: । येनोदारतरप्रतापस(श)मिताशेषप्रजोप[द्र]वं |
| | श्रीमहाधिपुराधिराज्यमसमं दोर्व्विक्रमेणार्जितं ॥ [8*] तीर्घानि ¹⁰ कासिकुसिकी- |

Above, Vol. IV. p. 126.

⁹ Ind. Ant. Vol. XVIII. p. 129.

[&]quot; Ibid. Vol. XV. p. 13 and above, Vol. V. Appendix No. 181. The Sanskrit poet Śri-Harsha, author of the Naishadhiyacharita, is believed to have flourished in the 12th century A.D. The last extant verse of this poem shows that the poet was highly honoured by the ruler of Kānyakubja (tāmbūladvayam=āsanam cha labhatē yaḥ Kānyakubjēšearāt) who, according to tradition, was Jayantachandra, i.e. Jayachchandra. If this tradition be correct, it would show that the poet flourished about the fourth quarter of the 12th century A.D.

^{*} Cunningham's Archaological Survey Reports, Vol. XI. p. 129.

^{*} J. R. A. S., July 1908, p. 792.

^{*} The wording of this record is almost identical with that of the grants of Jayachchandradëva which have been translated. I, therefore, deem it superfluous to give its translation.

⁷ Expressed by a symbol. "Cancel the cisarga.

Read unio.

¹⁰ Read काणिकृषि.

4

[त्त]रकोसलेंद्र-

स्वा[नी]यकानि परिपालयताधिगम्य ।
हेमालतुल्यमनियं ददता हिके[भ्यो]
थि[न]ांकिता वसुम[तो] प्रत[प्र*]स्तुलाभिः ॥ [५*]
तस्यालको मदनपाल इति चितो[द्र]थु(चू)डामणिर्व्वजयते निकगो-

5

वचंद्रः ।

यस्त्राभिषेककलसी(भी)क्रसितैः पयोभिः
प्रचालितं [कलि*]रजः पटलं धरित्र्याः ॥ [६*]
यस्त्रासीद्विजयप्रयाणसमये तुंगाचलोचैयलस्नाद्यत्वंभिषदक्रमासमभरश्रस्य(भ्य)-

6

बाह्यसंडले ।

चूडारत्नविभिन्नतालुगलितस्त्वानागृ(सृ)गुज्ञासितः श्रेषः पेषवसा(शा)दिव चणे(ण)ससौ क्रोडे विलीनाननः ॥ [०*] तस्मादजायत निजायतवाचुवज्ञिवडा(वन्धा)-

7

वरुड[न]ववा(रा)च्यगजो नर(रें)द्रः

[सां]द्रामृतद्रवसुचां प्रभवो गवां यो गोविंदचंद्र इति चंद्र इवास्तुरासे(श्रे): ॥ [८*] न क[थ]सप्यनभन्त रणचमांस्तिसृषु दिचु गजानथ विचणः। क-

8

कुभि पस(वभ)मुरभ्रमुवसभप्रतिभटा [इव] यस्य य(घ)टागजा: ॥ [८*]
" अजनि विजयचंद्री नाम तस्प्रान्तरे(रें)द्र:
सुरपतिरिव भ(भू)श्रत्यचवि[च्छे]ददच[:*] ।
भुवनदलनहेलाहर्षा(स्यं)हस्वी(स्रो)रना-

9

री-

नय[न]जलदधाराधीतभूलोकतापः ॥ [१०*] लोकचयाक्रमणकेलिविशृंखलानि [प्रख्या]तकोर्त्तिकविवण्डितवैभवानि । यस्य चिविक्रमपदक्रमभांजि भान्ति प्रो[ज्यू]भय[न्ति] वलिः

| 10 | राजभयं यसां(मां)सि ॥[११*] |
|----|---|
| | तस्मादद्गुतविक्रमादय जयचंद्राभिधानः पति- |
| | र्भुषानामवतीगर्ण एव भुवनी[इ][र]ाय नारायणः । |
| | हैधीभावसपास्य विग्रहरुचिं धिक्क(कृ)त्य सा(मा)न्तास(म)याः |
| | सेवन्ते यमुदग्र- |
| 11 | वस्वनभयध्वंसार्थिनः पार्थिवाः ॥[१२*] |
| | ग[क्छे]न्सू[क्छांम]तु क्छां] न य[दि क]वलयेल्कू [र्म] प्रष्ठाभिघात- |
| | प्रत्यावृत्तं(त्त)श्रमात्ती नमदिविवपणास्त्राम(श्वास)वात्यामहि श्वं)। |
| | · उद्योगे यस्य धावडरणिधरधनीनिर्भे- |
| 12 | रस्भारधारा- |
| | भ्वस्य(म्य) हानदिपालीव इलभरगल दैर्येनु(मु)द्रः फणीन्द्रः ॥ [१३*] |
| | [यस्मिं]यजत्युदिधनिमिमहीजया[र्थ] |
| | माद्यक्तरीन्द्र[गु]क्भार[नि]पीडितेय । |
| | याति प्रजापतिपदं म(श)रणायि(र्थि)- |
| 13 | नी भू- |
| | [स्वं]गतुरं[ग]निवहीत्यरजन्क[तीन] ॥[१४*] |
| | तस्मादाशी(सी)दसीमत्वरतुरगखुरचोदविचि[म]भूलि- |
| | व्याप्त[द्या]चक्रवालक्रमकलितनभोरुदस्रप्रकास(य): । |
| | सेनासं- |
| 14 | भारतंपहर[वि]दलदिला दी ८ माना [नरे]द्र- |
| | सं[द्राकी — स ∪ — यि स्पुरदसम[य] माः बीहरिबंद्रदेवः ॥ [१३*] |
| | धन प्रणा(भा)[स]पतिन(ना) चितिपासभी लि- |
| | रत्नप्रभावचिरचाकपदां[वु]- |
| 15 | ²ड[इं]डग्रीतकरमंडलपुंडरीक- |
| | [डि]डीरपि[डिमिव ग्रभ्यय]सी(ग्री) वितेने ॥ [१६*] |
| | सोयं सम[स्त]राजच[क्रसं]सेवितचरणः स च परमभट्टारकम[ह]ाराजाधिरा |
| | लाग्यमेख(ख)रपरमसा- |
| 16 | इस्र(य)रानजभुजा- |
| | पार्जित[यी]कत्यकु[ज]िषप[त्य]यीचंद्रदेवपा[द]ानुष्यातपरमभद्वारकमज्ञाराजा- |
| | धिराजपरमेख(ख)रप[र]ममाईख(य)[र]यीमद[न]पालदेव[पा]दानुध्यातपरम- |
| | भट्टारकमहाराजा- |

¹ [Perhaps the reading intended is अधामप्रतित°.—Ed-] ² Read उर्छ°.

- 17 विराजपरमि[य]रपरममाहे[य]रा[य]प[त]गजपतिनरपतिराज[व]याधिपतिविवि[ध]विद्याविचारवाचस्यतित्री[गी]विदचंद्रदेवपादानुध्या[त]परमभद्यारकमहाराजाधिराजपरमे[यर]-
- 18 पतिविवि[ध] [व] याविचारवाचस्रतिश्रीविजयचंद्र[दे]वपादानुध्यातपरमभट्टारक-महाराजाधिराजपरमि[श्र]रपरममा-
- 19 इि[य]राभ्य(य)पतिगनपतिनरपति[रान]च-याधिपतिविविधविद्याविचा[र]वाचस्यतिश्रीनयचंद्रदेवपादानुष्यातपरमभद्रारकम-स्राराजाधिरानपर[मेथ]रपरममाहि[य]रास्त(ख)पति-
- 20 गजपतिनरपतिराज[च]या-धिपतिविविधविद्याविचा[र]वाचस्य[ति]श्रीम[त्] इरि[बंद्र]देवो विजयी ॥ [हा]ल-पांगि[क्रवगहल] • . 'सपाटक[प]महैग्रामनिवासिनो निखिलजनप-
- 21 दानु[प*]गतानिप च राजराज्ञीयु[व]राज[मं]चि[पुरो]हित[प्र]ती[हा]रसाम[न्त]सेनापतिभांडागारि-काचपटलिकभिषग्नैमि[त्ति]कान्तःपुरिककरितुरगदूतपत्तनाकरस्थान[गो]कुलाधिका-रिपु-
- 22 क्षानाच्य(ज्ञा)पयित [व] भियत्यादियित च विदितम[स्तु] भवतां य[योप]रिचिखित[य]ामः सजनस्थनः सनोज्ञन-वणावरः सम[त्स्य]ावरः सगर्जीव(य)रः सास्त्रमधूकवनविटपवाटिकातु-[ण]यूति-
- 23 गोचरपर्यन्तः सोहा(र्ध्वा)धः चतुराघाटविस(श्र)हः स्तरीमापर्यन्तः चिपंचाधताधिकहाद्यश-तसंवत्तरे पौषमा[िस] पौि [र्श्व]मायां रिविदिने शक्केषि संवत(त्)१२५३ पौ[ब] श्रदि १५ रवी श्रद्धेक श्री-
- थैयतधनंवक्रसमावासे खवनेख(ख)रघट्टे गंगायां खात्या(त्वा) विधिवन्यं(न्यं)चदेवसुनि[मनु]ज[भू]तग-[णां]सर्पि[य]त्वा' नि[खि]खपुत्वयसाभि[इ]इये गोकर्षकुण[ल]तापूतकरतलोदक-मसा[भि]ः

¹ Read onigao.

The name of the district to which the donative village belonged is not quite clear in the original. The letters seem to have been engraved over an erasure.

Bead Alugio.

^{*} Read "queunio".

| 25 | कास्य(भ्य)पगोचाय |
|----|--|
| | ठकुरसोपालपीचाय ठकुरसदनूपुचाय रा[ही]ही[य]काय धार्चद्रा- |
| | कें या[वच्छा]सनीकत्व पि[तु]पितामहोपार्जित तथा महारागी(जी)- |
| | संनंडारीरतन्दकेन ? संप्रति[गु]- |
| 26 | पुनीक्रत्य ¹ वृत्तिं वृद्धिःक[त्य] |
| | प्रदत्तो मत्वा ययादीयमानभागभोगकरप्रविणकरजलकरलवणाक[र]प[र्णा]- |
| | कर व नियतानियतप्रभृतिसमस्तादा[या]नाजा- |
| | विधेयीभू- |
| 27 | य दास्यय ॥ भवन्ति चात्र स्रोकाः ॥ |
| | भूमिं यः प्रतिगृद्धिाति [य]च भूमिं [प्र]य च्छि ति । |
| | [उ]भी ती पुन्य(स्थ)क[र्माणी] नियतं स्वर्ग[ग]ामिनी ॥ [१०*] |
| | सं(गं)खं भ[द्रा]सनं कवं वरास्ता(श्वा) वरवारणाः [।*] |
| | भूमिदाम(न)स्य |
| 28 | चिक्कानि फलमेत[त्पु]रंदर ॥[१८*] |
| | षष्टि(ष्टिं) वर्षेसङ्या(सा)णि [स्त्रों] ति[ष्ठ]ति भूमिदः । |
| | था[च्छे]ता चानु[मंता च ता]न्वे(न्ये)व नरके वसेत(त्) ॥ [१८*] |
| | वहुभिवंसुघा सुता राज[भि]: सगरादिभि:। |
| | यस्य |
| 29 | यस्य यदा भूमिस्तस्य तस्य त[दा] फलं ॥ [९०*] |
| | स्रदत्तां प[र]दत्तां वा यो ^३ इरेद[सुं]धरां [1*] |
| | म वि[छ]ायां कमि[भूँता] पित्रिभि: सह मज्जित ॥ [२१*] |
| | गामेकां खर्णमे[कं] [वा*] भूम(से)र[प्ये]कमंगुलं [।*] |
| | इरन्नरक- |
| 30 | मवा(मा)श्रीति यावदा[भू]तसंप्रवं । [1*] [२२*] |
| | तडाग(गा)नां सइस्रेण वाजपेयमतेन च । |
| | गवां कोटिप्रदानेन भूमि[इर्तान] सु(श)[ध्य]ति ॥ [२३"] |
| | वारिही[न]वा(प)रखेषु स(श)ष्ककोटरवासिनः । |
| | क्रस्र(च्य)सर्पाच जायन्ते |
| | लश्च(चा)सपाच जायन्त |

¹ This would show that the village of Pamahai formed part of the estate of some queen of Jayachchandra who, being issueless, gave up her rights to Harischandra. [Perhaps the writer intended to engrave [तक्]महाराज्य मंडारीरतन्त्र संप्रति [मृ]बान्तिकय—Ed.]

The fiscal terms which seem to be mentioned in this gap occur nowhere else, so far as I have been able to

ascertain. The reading appears to be हा (or perhaps ही) अपस्ही होचेगी वि [क]।

Bead Tta 4.0

| 31 | देवब्रह्म[स्व*]द्वारिण: ॥ [२४*] |
|----|--|
| | न विषं विषमित्वा[ह]ब्रेहा(ह्म)स्वं विषमुखते । |
| | विषमेकाकिनं इन्ति 'वहास्वं [युवपीव]कं ॥ [२५*] |
| | सर्वानेतान् भाविनः पार्धिवेन्द्रा[न्*] |
| | भूयो भूयो याचते रान(म)[भ]दः । |
| 32 | सा[मा]न्योयं वधमैंसेर्नुतृपाणां |
| | काले काले पालनीयो भवद्रि(द्वि): ॥ [२६*] |
| | यानीइ दत्तानि पुरा नरेन्द्रैर्दाना[नि धर्मार्थ]यमस्त्रराणि । |
| | निर्मा[त्य]वान्तप्रतिमानि तानि को नाम साधः पु- |
| | नराददीत ॥ [२७*] |
| 33 | वाताभवि[भ्रम]मिदं वसु[घा]धिपत्य- |
| | मापातमात्रमधुरा विषयोपभोगाः । |
| | प्राणा[स्तृ]णा[ग्रज]लविन्दुसमा नराणां |
| | धर्म: सखा परमहो परला(लो)क[या]ने॥ [२८*] |
| 34 | लिखितं चेदं [त]ामपद्यं महाचपट- |
| | लिकठकुरचीभीगादित्यैरिति ॥ |

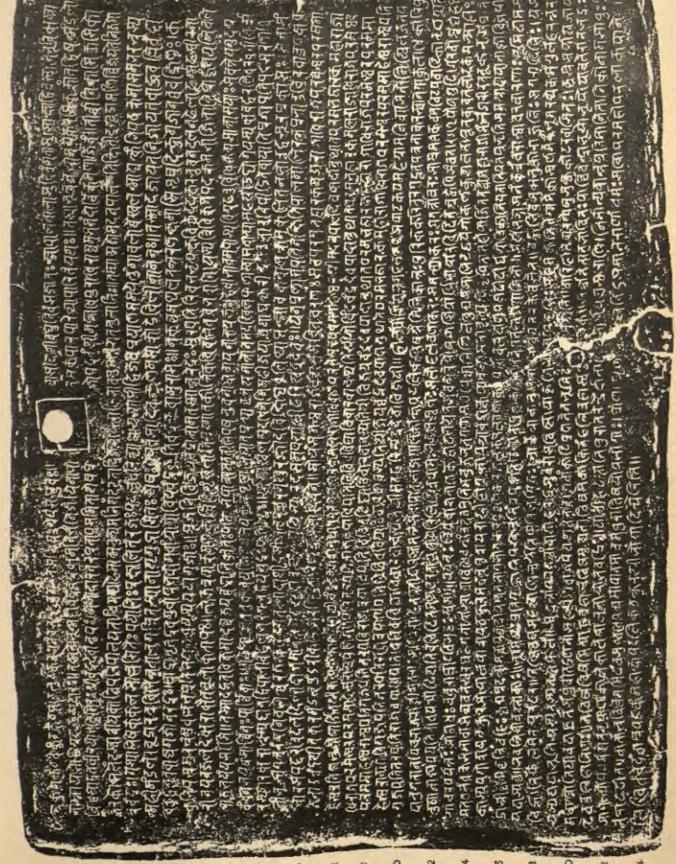
No. 22.-GADVAL PLATES OF VIKRAMADITYA I.; A.D. 674.

BY PROFESSOR E. HULTESCH, PH.D.; HALLE (SAALE).

The owner of these plates is a school-boy at Kurnool, Madras Presidency. He states that "the plates were in his house at Gadval, Haidarabad territory, and that some old woman was saying that they were found in the fields." They were brought to the notice of the Archeological Department by Mr. C. V. Dorasami Aiyar, Clerk in the Settlement Office, Kurnool, and were obtained on loan through the Collector. I edit the inscription on them from two sets of excellent ink-impressions received from Rai Bahadur Venkayya, whose description of the originals is subjoined here.

These are "three copper-plates, with slightly raised rims, the first and last of which bear writing only on the inner side. The length of the plates is 9 inches, while the breadth varies between $4\frac{1}{8}$ inches at the middle and $4\frac{1}{4}$ inches at the two edges. They are strung on an elliptical copper ring which measures $3\frac{1}{4}$ by $3\frac{1}{8}$ and is $\frac{3}{8}$ thick. The ends of the ring are secured at the bottom of a mass of copper, on which is impressed an almost circular seal which is 1° in diameter. The impression bears the rude figure of a boar in a running posture, facing the proper right. The last plate exhibits a slit which rans from the nearer margin right into the ring-hole. This shows that an attempt may have been made to remove the plate from the ring without actually cutting the latter. The plates together with the ring and scal weigh 160 tolas."

¹ Read NEW.





The writing on the plates is in an excellent state of preservation. In some cases the sign of ansisvara is indistinct and has to be supplied from the context. Throughout the record no mark of punctuation is used. The alphabet resembles that of the other grants of the same period and dynasty. The secondary forms of i and I are not always clearly distinguished, and hardly any difference is made between the two letters va and cha, and between the secondary forms of 76 and ra. The lingual f occurs in the geographical name Cholika (1.25) and in the expression khan [dn] ga tadla (L 28) which, as well as salage (l. 31), was taken over from the Telugu vernacular of the dense. Among the names of private individuals, three are Prakrit (Chanda and Kanha, 1. 27, and Mahisara, 1. 29), and three Dravidian (Tatamma and Padamma, 1. 29, and Konna, l. 30). But the language of the whole record is Sanskrit, both prose and verse. The rules of sandhi are scrapulously observed, except in three instances (Il. 1, 26, and 38).

The inscription records a grant of land by the (Western) Chalikya (l. 4 f.) king Vikramaditya (I.), the son of Satyaśraya (i.e. Pulakeśin II.), grandsen of Kirtivarman (I.), and greatgrandson of Pulakesin (I.). Each of these four kings receives the same panegyrical epithets as in other grants of the same period. At the end of the description of the reign of Vikramaditya I. the new grant adds a passage which is already known from his Haidarābād plates 1 and the spurious Kurtakoti plates.2 As pointed out by Professor Kielhorn,3 this passage consists of four Arya verses. These four verses mention several surnames of Vikramaditya I., viz. Anivarita, 'the unopposed' (verse 2), Srivallabha, 'the favourite of fortune' (verses 3 and 4), Ranarasika,5 'fond of fighting,' and Rajamalla, 'the wrestler with kings' (verse 5). Verse 3 states that he defeated Narasimha, Mahendra, and Isvara, i.e. the three successive Pallava kings Narasimbavarman I., Mahendravarman II., and Paramesvaravarman I. The last of these three kings is again named as Iśvara-Pōtarāja of Kānchi in a Vasantatilakā verse (6) which follows after the four Aryas. The conquest of Kanchi, the capital of the Pallavas, is alluded to also in verse 4. Verse 5 states that Vikramaditya I. destroyed the Mahamalla family. As suggested by Professor Kielhorn, this is another reference to the Pallavas ; for Mahamalla seems to have been a surname of Narasimhavarman I., and Mamallapuram is the ancient name of a Pallava city, the remains of which now go by the name of 'the Seven Pagodas."9

The date of the grant was the full-moon tithi of Vaisakha in the twentieth year of the reign, which was current after 596 Saka years had passed (Il. 24-26). This date does not admit of verification; but, as Dr. Fleet kindly informs me, "the equivalent may be taken as Tuesday, 25th April, A.D. 874, though some authorities might make it the next day,-at any rate for any eastern parts of India." It fully confirms the correctness of the results of Professor Kielhorn's calculations of two other dates of the same reign.10

When Vikramaditya I. made this grant, his army had invaded the Cholika-vishaya, i.e. the Chola province,11 and was encamped in Uragapura on the southern bank of the Kāvērī river (l. 25 f.). In sending me the impressions, Mr. Venkayya drew my attention to the fact

³ Ibid. Vol. VII. p. 219 f. 1 Ind. Aut. Vol. VI. p. 76 f.

Bottinger Nachrichten, 1900, p. 345 ff.

^{*} See Prof. Kielhorn's remarks, loc. cit. pp. 346 and 359, and compare sare-anivarit-ajia in verse 10 of the present inscription. Vikramaditya II. may have likewise borne the surname Anivarits, which forms part of the names of two of his officers. See Ind. Ast. Vol. X. p. 164 (Anivarit-schari); shove, Vol. III. p. 360 (Anivarita-Punyavallabha), and Vol. V. p. 201, note 5. Compare also above, Vol. IX. p. 206, note 3; and above, p. 15.

This surname of Vikramaditya I. occurs in two Pallava inscriptions at Kauchi. See South-Ind. Inser. Vol. I. p. 13, verse 5, and p. 23, verse 2; Dr. Fleet's Dyn. Kan. Distr. p. 329; above, p. 2.

See South-Ind. Inser. Vol. I. p. 145, note 4.

¹ Loc. cit. p. 347 f. 7 See above, p. 7, note 2.

II See above, Vol. IX. p. 102, 9 See now above, p. 1.

¹¹ Literally, 'the province of the Solivar or inhabitants of Solam,'

that Uragapura is mentioned in Kalidasa's Raghuvamsa (vi. 59)1 as the capital of the Pandya king, and proposed to identify it with the ancient Chola capital Uraiyur near Trichinopoly. I rather think that Uragapura, 'the snake-city,' is a poetical equivalent of Nagapattanam (now Negapatam), though this town is at some distance from the southern bank of the Kaveri. The word Nagapattanam is engraved in Tamil characters on certain small copper coins struck at Negapatam by the Dutch East India Company. The slightly different form Nagapattanam occurs in the large Leiden plates. The Chinese pilgrim I-tsing, who visited India in the last quarter of the seventh century, reports that the priest Wu-hing, after travelling from China to India, landed at 'Nagapatana' and thence embarked for Ceylon.2 The famous pilgrim Hinentsiang, who travelled over India in the second quarter of the same century, did not proceed farther south than Conjeoveram, which he notices. But he mentions on hearsay a town farther to the south, from which people used to embark for Ceylon.3 The quotation from I-tsing makes it very probable that Negapatam is intended by this. Colonel Yale was inclined to identify Negapatam with Ptolemy's Nizapa.

The grant was made at the request of Ganga-Mahadevi (1. 27), who seems to have been one of the queens of Vikramaditya I. The donees were three Brahmanas, each of whom received fifty nivartanas of land in a village named [Chedu]III.

In verse 10 Vikramaditya I. is once more praised as a member of the Chalukya family and as the destroyer of the Pallava lineage.

TEXT.

First Plate.

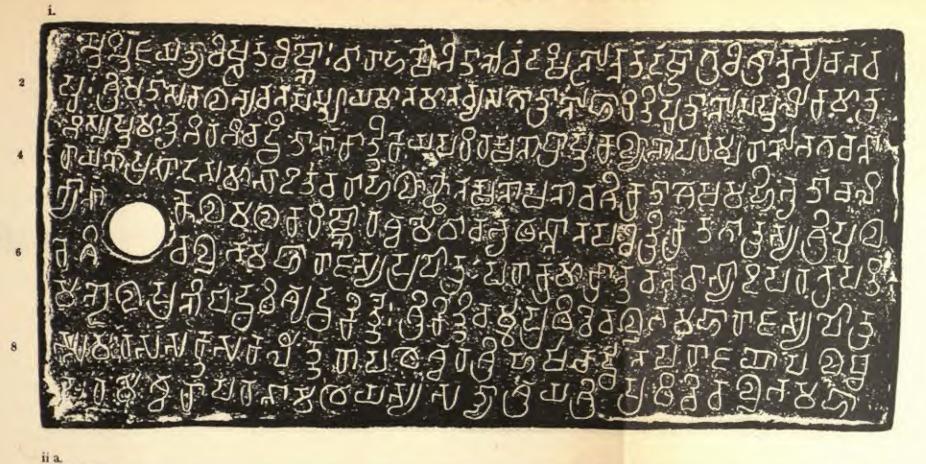
- 1 श्रों खिस्त [॥*] जयत्याविष्कृतं विष्णोः वाराहं श्रीभितार्णवं [।*] दिर्षिणोन्नत-दंशायवियान्तभुवनं व-
- पुः [॥ १*] त्रीमतां सकलभुवनसंस्तूयमानमानव्यसगीवाणां हारितीपुवाणां सप्तलोकमाद-
- भिस्तप्तमात् भिरभिवर्षितानां कार्त्तिकेयपरिरचणप्राप्तकस्थाणपरम्पराणां भगवद्या-
- रायण्प्रसादसमासादितवराष्ट्रलाञ्क्[ने]चणचणवशीकृताशेषमहीसृतां
- कुलम[लं]करिणोरयमधावभृयसानपविचीकतगाचस्य यीपुल-
- केशिवज्ञभमहाराजस्य प्रपोच: पराक्रमाक्रान्तवनवास्यादिपरनृपति-
- मण्डलपण्वडविग्रहकीत्तं: वीकीर्त्तिवस्रीपृष्टिवीवज्ञभमहाराजस्य
- स्मरसंसत्तमकात्तरापयेश्वरयोद्वर्षवर्दनपराजयोपलब्ध-
- परमेश्वरापरनामधेयस्य सत्यात्रयश्रीष्ट्रिवीवन्नभमज्ञा-

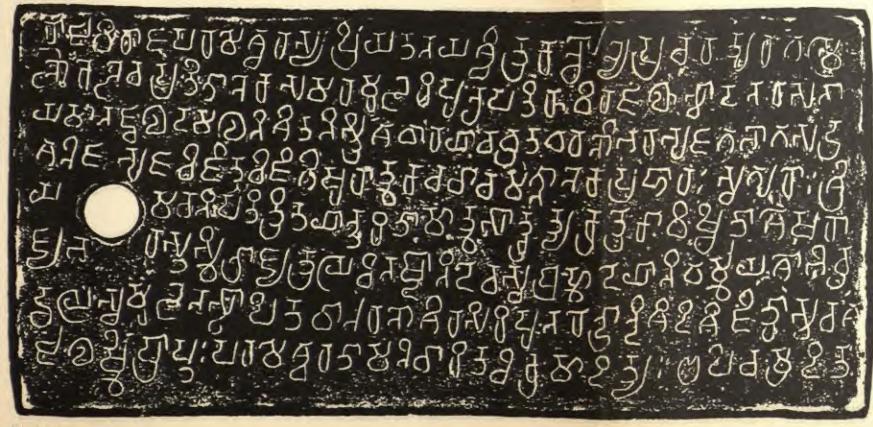
¹ [Mahāmahōpā lhyāya Haraprasad Sastri first drew my attention to this reference.—Ed.]

² Ind. Ant. Vol. X. p. 196. Life of Hissen-triang, translated by Beal, p. xxxi. I-tsing, Record of the Buddhist Religion, translated by Takakusu, p. zlvi. Si-yu-ki, translated by Beal, Vol. II. p. 233 and note 131.

^{*} Ind. Ant. Vol. XIII. p. 332. Further details on the local history of Negapatam will be found ibid. Vol. VII. p. 224 ff., in my Progress Report for 1890-91, paragraph 6, and in Mr. Venkayya's Annual Report for From two sets of ink-impressions, supplied by Rai Bahadur V. Venkayya.

^{7 %} looks like %. Bend दिचीवाराइ. * Bead द्वियो.





E. Hultzsch.

10

12

16

Full-Size.

Collotype by Gebr. Plettner.

त्र निर्मा के स्ट्रा त्र मान्य के का ये से के स्ट्रा मान के स्ट्र मान के स्ट्रा मान के स्ट्र मान के स्ट्रा मान के स्ट्रा मान के स्ट्र मान के स्ट्रा मान के स्ट्र
Second Plate : First Side.

- 10 राजाधिराजपरमेश्वरस्य प्रियतनयश्चित्रकाख्यप्रवरत्र्रंगमे-
- 11 गैनेनैव प्रतीतानेकसमरमुखे रिपुट्रपतिक्धिरजलाखादनरसना-
- 12 यमानज्वलदमलनिशितनिस्त्रिंशधारया च धतधरणीभरभुजगभीगसद-
- 13 प्रनिजभुजविजितविजिगीषुरात्मकवचावमम्नानेकप्रहार: खगुरी: यि-
- 14 यमवनिपतिचितयान्तरितामालमात्कृत्य क्रतेकाधिष्ठिताभिषरा-
- 15 ज्यभरस्तसिवाज्यवये विनष्टानि देवस्त्रवादियानि धर्मायमोभिव-
- 16 इये खमुखेन खापितवान् [॥*] रणियरिस रिपुनरेन्द्रान्दिणि दिशि जिला स्ववंश-
- 17 जां लर्भी [1*] प्राप्त: परमेश्वरतामनिवारितविक्रमादित्य: [॥ २*] अपि च Second Plate ; Second Side.
- 18 नरसिंडयम्सा विडितम[ह]न्द्रप्रतापविलयेन [1*] नयनविजितेयरेण प्रभुणा स्रोबब्रभेन जितं [॥ ३*] ज.⁴
- 19 तपन्नवावमह दिन्यवितमात्तकाञ्चीकः [।*] यो भूमभिरमयविष सुतरां श्रीवज्ञभत्विमतः [॥ ४*] वह-
- 20 ति स्त्रमर्थवन्तं रणरसिक[:*] श्रीमदुरुवलस्कन्धः [।*] यो राजमलग्रन्दं विहितसहासलकुलनाय: [॥ ५*] द्-
- 21 ईवदुष्करविभेदविशासमाला दुर्गाधदुस्तरवृष्टत्परिखापरीता [1*] अग्राहि येन जयतेश्वरपोत-
- 22 राजं काञ्चीव दर्षिणदिश: पितिपेन काञ्ची [॥ ६*] स विक्रमाक्रान्तसकल-महीमण्डलाधिराच्यो विक्रमादि-
- 23 त्यसत्यायययीप्धिवीवसभमद्वाराजाधिराजपरमेयरसार्व्यानेवमाजापयति^व[॥*] विदित
- 24 मस्त वोस्नाभि: परणवत्युत्तरपञ्चदश्चेपु धकवर्षेष्वतीतेषु "पूर्वर्षमानविजयराज्यसं-
- वसरे वियतितमे वर्त्तमाने चोळिकविषयं प्रविश्व कावेरीदिचणतटावस्थितो-रगपुरमधिवस-
- 26 ति विजयस्कन्धावारे वैभाखपौर्णमास्यां वर्त्तमाने¹¹ काप्यसगोत्रस्य र्श्वरवडंगविदः¹² पौचाय
- 27 स्त्रामिचन्द्रमसंखः पुत्राय कन्द्रमसंखि [चेडु]बिमामे¹⁸ गंगमहादेवीविज्ञापनया राजमाने-

10 Rend Rudnin.

Bead 'सारहरवा ; the ते of कते' looks like चे.

² Read सची.

Metre of verses 2-5 : Arya. · Read चित्.

[·] 面 looks like 奇.

[·] Read इचिष°.

² Metre of verse 6: Vasantatilakā.

[&]quot; The wif of Hear looks like wi.

Bead "पचनतेष्.

Bead offanat.

¹¹ This word is superfluous.

u The first akshora may se well be read a, and the second may be 3.

28 न पञ्चामितवर्त्तनपरिमाणं चेत्रं ख[णडु]गवड्ळसहितं दत्तं [।*] तहामे च

Third Plate.

- 29 महीसरखामिन: पौचाय तातकाखामिन: पुचाय पादकाखामिने राजमानेन पञ्चामः
- 30 त्रिवर्त्तनपरिमाणं चेवं दत्तं [।*] तहुामे कीन्रप्रमाणे च पञ्चामनिवर्त्तनप-रिमाणं चेवं दत्तं
- 31 सलगेमहितं साइंग्येरन्येच राजभिरायुरैयर्थ्यादीनां विलिसतमिचरांयचंचलभवग-
- 32 च्छित्राचन्द्राकंधराणंवस्थितिसमकालं यश्रश्चिचीषुभिच्छदत्तिनिर्व्विशेषं परिपालनी-यसुत्तञ्च
- 83 भ[गव]ता वेदत्यासेन व्यासेन [॥*] बहुभिव्यसधा सुका राजभिन्सगरादिभि: [।*] यस्य यस्य यदा भू-
- 34 मिस्तस्य तस्य तदा फलं [॥ ७°] स्वन्दातुं समहच्छकां दु:खमन्यस्य पालनं [।*] दानं वा पालनं दे-
- 35 ति दानाच्छेयोनुपालनं [॥ ८*] स्रदत्तां परदत्तां वा यो इरेत वसुन्धरां [।*] पष्टिं वर्षभइसा-
- 36 णि विष्ठायां जायते क्रिमि: [॥ ८*] चालुक्यवंशजातस्य पत्नवान्वयनाशिन: [।*] सर्व्यानिवारिता-
- 37 ज्ञस्य यासनं शासनं दिवां [॥ १०*] महासान्धिवियहिकग्रीजयसेनेन विश्वित्वियहिकग्रीजयसेनेन विश्वित्व
- 38 कुन्दस्वामिने एवास्य शासनस्य स्वामिनान्धेस्ति [॥*] श्री नमो नम:[।*] नमस्वकलविदे [॥*]

TRANSLATION.

(Line 1.) Öm. Hail!

[Verse 1 contains an invocation of the boar-incarnation of Vishnu.]

(L. 2.) The great-grandson of the glorious Pulakėši-Vallabha-Maharaja, whose body was purified by bathing at the end of a horse-sacrifice, (and) who adorned the family of the glorious Chalikyas;

¹ This word is a subsequent addition. It was engraved in the place of some other letters, the first of which was कर. Read, का in other grants of the same dynasty, तदावानिमिक्साइंग्रेंं.

^{*} Read वेदव्यासेन. * Read शीजय . * Bead व्यामिन.

^{*} Read probably SHANTHY:.

* Expressed by a symbol.

† The usual epithets of this family (Il. 2-6) are omitted in the translation.

- (L. 6.) The grandson of the glorious Kirtivarma-Prithivivallabha-Mahārāja, whose pure fame was established in the territories of hostile kings, such as Vanavāsī, which had been subdued by (his) valour;
- (L. S.) The dear son of Satyaśraya-Śriprithivlvallabha-Mahārājādhirāja-Paramēśvara, who acquired the surname of 'supreme lord' (paramēśvara) by defeating the glorious Harshavardhana, the lord of the whole northern country, who had encountered (him) in battle;
- (L. 10.) He who, at the head of many famous battles, (assisted) by none but (his) noble steed named Chitrakantha and by the edge of (his) glittering, spotless and sharp sword which behaved like a tengue in licking the blood of hostile kings, conquered would-be conquerors by his own arms which resembled the coils of the serpent who carries the burden of the earth; into whose own armour many blows had plunged; who, having gained for himself the royalty of his father, which had been concealed by the triad of kings, caused the burden of the whole kingdom to be governed by (himself) alone; (and) who, for the increase of (his) merit and fame, by his own mouth confirmed the properties of temples and the grants to Brahmanas which had lapsed in that triad of kingdoms;
- (V. 2.) (was) Anivārita-Vikramāditya, who, having recovered at the head of battles the royalty belonging to his family from the hostile kings of every quarter, acquired the title of 'sapreme lord' (paramēścara).
 - (L. 17.) Moreover :-
- (V. 3.) Victory was achieved by the lord Śrivallabha, who crushed the glory of Narasimha, who caused the power of Mahendra to be dissolved, (and) who subdued Iśvara by polity;
- (V. 4.) He who became the favourite of fortune (Śrīvallabha) in a still higher degree, though (at the same time) forcibly wooing the damsel 'southern region' by seizing (her) girdle: (the city of) Kānchī, while (he) caused to be crushed the sprouts (forming her couch): the Pallava (kings);
- (V. 5.) He who, being fond of fighting (Ranarasika) (and) possessing splendid powerful shoulders, deservedly bears his own title of 'wrestler with kings' (Rajamalla), (because) he has caused the destruction of the Mahamalla family;
- (V. 6.) The king who, defeating Īśvara-Pōtarāja, seized, like the girdle of the southern region, (the city of) Kāñchī, whose large rampart was insurmountable and hard to be breached, (and) which was surrounded by a great most, unfathomable and hard to be crossed.
- (L. 22.) This Vikramāditya-Satyāśraya-Śriprithivīvallabha-Mahārājādhirāja-Paramēśvara, who has won by (his) valour the sovereignty of the whole circle of the earth, thus commands all people:—
- (L. 23.) "Be it known to you (that), when five hundred and ninety-six Saka years had passed, while the twentieth year of (Our) reign of growing victory was current, while (Our) victorious army, having entered the Chölika province (vishaya), was encamped in Uragapura which is situated on the southern bank of the Kāvēri, on the full-moon tithi of Vaisākha, a field in the village of [Chedū]lli, measuring fifty nivarianas by the royal measure, together with a khan[du]ga of paddy (vadlu), was given by Us, at the request of Ganga-Mahādēvi, to Kanhasarman, the son of Svāmichandasarman (and) grandson of Īśvara-Shaḍangavid of the Kāpya gōtra.

¹ J.s. Pulakësin II.

³ Vis. the Chôla, Pandya and Kēraļa. See above, Vol. V. p. 203, note 16, and compare Vol. IX. p. 205, note 4.

² Compare South-Ind. Inser. Vol. I. p. 28, verse 8, and Vol. II. p. 355, verse 17.

- (L. 28.) "And in the same village a field measuring fifty nivarianus by the royal measure was given to Pådammasvämin, the son of Tätammasvämin (and) grandson of Mahisarasvämin of the Vatsa götra.
- (I. 30.) "And in the same village a field measuring fifty nivarianas was given to Konnasarman, together with a salage (of paddy).
- (L. 31.) "[Future] kings of Our family and others, considering that the enjoyment of life, sovereignty, etc. is as transient as the lightning, (and) desirous of accumulating fame for as long as the moon, the sun, the earth and the oceans shall exist, should protect [this] (grant) without distinction from their own gifts."
 - (L. 32.) And the holy Vyasa, the arranger of the Vedas, has spoken :-[Here follow three of the customary verses (7-9).]
- (V. 10.) (This is) an edict, chastising enemies, of him who was born in the Chalukya family, who has destroyed the Pallava lineage, (and) whose orders are unopposed by all men.
- (L. 37.) This edict was written by the great minister for peace and war (mahasandhivigrahika), the glorious Jayasena.3
- (L. 38.) To Kundasvāmin alone the conveyance (ajāapti)3 of this edict (was entrusted) by the king. Om. Obeisance, obeisance! Obeisance to the Omniscient!

No. 23 .- NEW BRAHMI INSCRIPTIONS OF THE SCYTHIAN PERIOD.

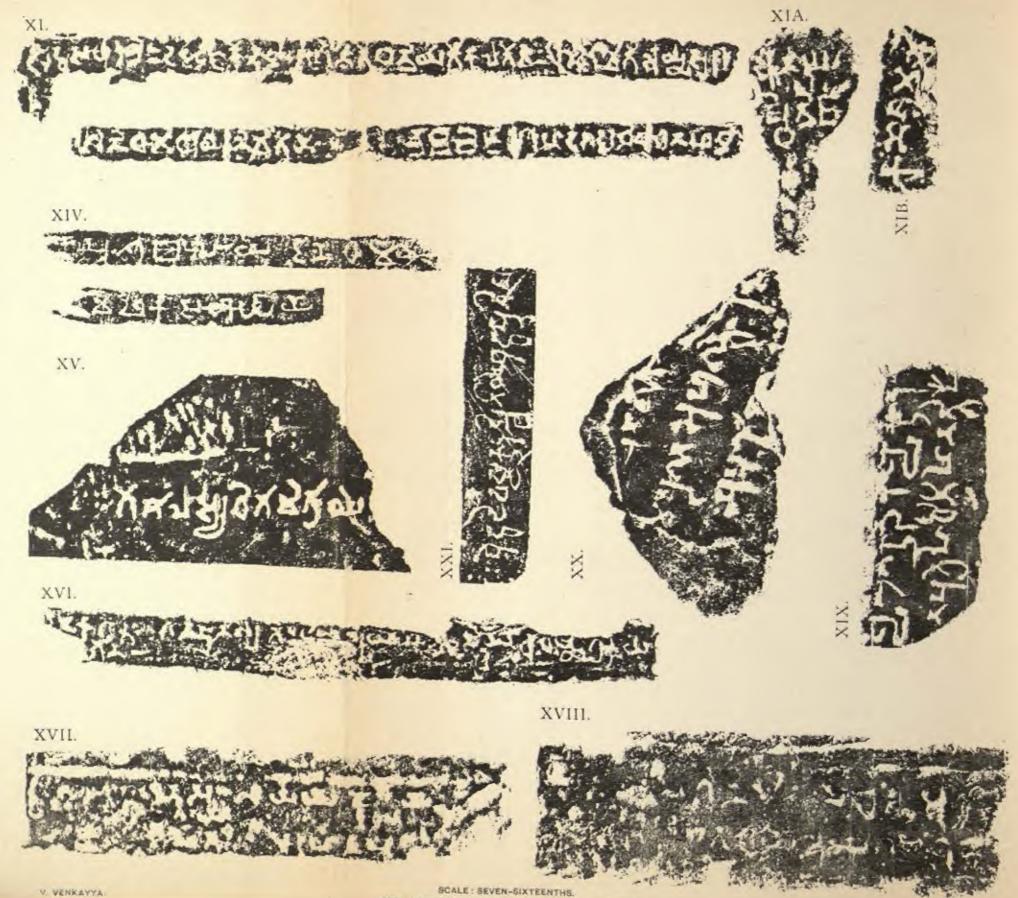
BY RAKHAL DAS BANERJI.

The following inscriptions were discovered in the Archeological Section of the Lucknow Museum during the winter of 1908. The existence of unpublished Brahmi inscriptions in the Provincial Museum at Lucknow was well known to the public, and in 1905 Mr. V. A. Smith obtained a complete set of impressions of them from the Curator. But unfortunately none of these has been published as yet. In 1903 Mr. Smith mentioned four of them which were stated to have been discovered at Ramnagar, an old fort in the Bareilly District. Two more are said to have been found at Mathura. I examined the Archmological collection of the Lucknow Museum on two different occasions, once, while collecting materials for my essay on "The Scythian period of Indian history" in June 1905, and again in October 1906. On the last occasion, I came across at least three unpublished inscriptions but could not spare enough time for them. Subsequently, the task of cataloguing the archaeological collection of the Provincial Museum was entrasted to me by Dr. J. Ph. Vogel of the Archæological Survey and I had occasion to go through the collection slowly and carefully. The result was the discovery of a number of dated inscriptions and important modifications in the readings of three published ones. The catalogue is not expected to be out soon; so I am placing the newly discovered records before the public as early as possible. The majority of sculptures in the collection of the Lucknow Museum belong to the Scythian period and were discovered by Dr. A. Führer, Ph.D., of the Archeological Survey. The collection also contains a large number of Mathura

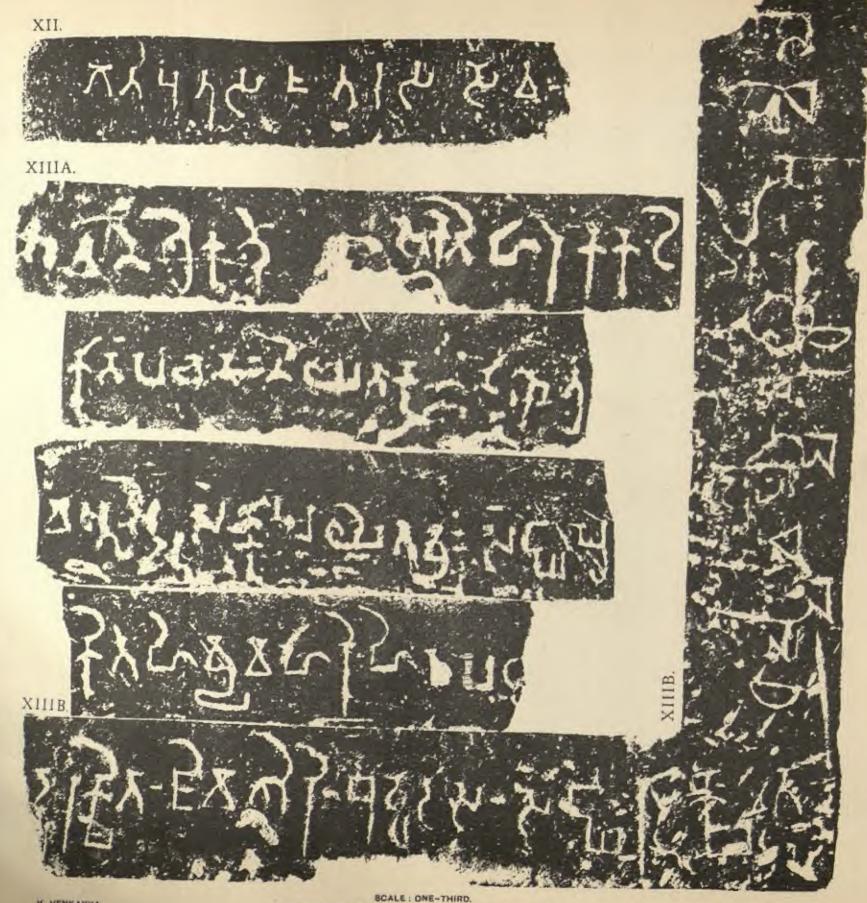
¹ These four words are a subsequent addition; see above, p. 194, note 1. Compare Brown's Telega Dictionary,

² This officer is probably identical with the Jayasena who wrote another grant of Vikramaditya I., Journ. Bombay Branch R. As. Sec. Vol. XVI. p. 239. ² On this term see Dr. Fleet's remarks, above, Vol. VII. p. 183 ff.











sculptures discovered and figured by Growse and others which were presented to the Agra Museum. The collection thus comprises the following materials:—

- Some of the sculptures collected by Growse and other local officers of the Mathura District up to the year 1886.
- (2) The sculptures discovered during the excavations carried on by Drs. Führer and Burgess at Mathura during the years 1888-96.
- (3) The sculptures discovered by Dr. Führer at Rämnagar, the aucient Ahiobehhattra in the Bareilly District in the winter of 1891-92.

None of the inscriptions from Ramnagar have ever been properly edited. Translations of three of them have appeared in Dr. Führer's Report of the Epigraphical Section for 1901-02, out of which only one has been found. The rest could not be traced either in the galleries or the Takkhana of the Lucknow Provincial Museum,

Fourteen out of the twenty-one inscriptions edited here are absolutely new. The late Dr. Bühler published three inscriptions with facsimiles and the rest have been casually noticed or edited by Messrs. Growse, Smith and others. Those which have been already edited by Bühler are republished because, on examining the original, I found that his readings required considerable modifications. Two of the inscriptions (Nos. II. and VI.) were published by Growse with facsimiles in his Mathura.

The excavations at Rāmnagar have yielded some important records. One of them (No. I.) mentions the territorial name Pañchāla, while another inscription (No. XVI.) evidently from the same place refers to the name of the capital city [Adhi]chchhattra. The identity of Rāmnagar with Abichchhattra seems to be certain.

The language of the inscriptions is corrupt Sanskrit. I am indebted to Mr. Marshall for the photographs published here. They were taken by his photographer Babu Brajendra Nath Dey last winter.

The back views of two images, vis. that of the year 9 (Plate I.) and of the year 80 (Plate VIII.), show the deterioration of the Mathura school of sculpture. The subject is the same in both cases, vis. a tree with flowers. The earlier sculpture shows a tall tree with a graceful trunk and proportionate flowers and leaves. But the later sculpture is ugly and disproportionate. No other Mathura sculpture in the Lucknow Museum bears any carving on its back though many of them are carved in the round.

I .- INSCRIPTION ON A COPING-STONE.

The inscription was found on the top of a split coping of yellow sandstone which was used as a prop to a large "tablet of homage." It was completely hidden under the large slab and was discovered when the latter was being taken out to be cleaned. The sculpture came most probably from Rāmnagar, the ancient Ahichchhattra, in the Bareilly District. The Curator's Report for the month of April 1892 mentions "I coping stone with inscription of the Saka era (dated Samvat 5) Excavated from the old site of a large Buddhist temple at Ramnagar, Rohilkhaud." Dr. Führer most probably took the word Pāmchālāye 'of Pamchāla' in line 8 for a date. The alphabet belongs to the class which Bühler called Kshatrapa characters. They are older than what Messrs. Vogel and Lüders style Early Kushaga. The inscription is dated in the first year of the reign of a king (?) whose name is lost.

Y. A. Smith's Jaina Simpa, pl. VIII.
North-Western Provinces and Oudh Provincial Museum Minutes, Vol. V. p. 5, App. A.

TEXT.

| 1 | | 4 | | | | [Nama] bhaga[va] |
|----|---|----|---|---|---|-------------------------------------|
| 2 | × | 4 | | | | . bughara |
| 3 | | | | | | . [va*]rshē pratha[mē] |
| 4 | | * | | | - | . [di*]vsaē 10 1 |
| 5 | 4 | | 4 | | | . [Dhra?]va-mitrasya pra[pautrena*] |
| 6 | 4 | | | | | . sya pautrėna Šau |
| 7 | | | | | | . Bhargavi-putrépa |
| 8 | | | | | | . su Pāmehālíyē |
| 9 | | 10 | 4 | 4 | | sthitena hati |
| 10 | , | | | | | kāyām patitah |
| 11 | 4 | | | | | itah sthite[na] |
| | | | | | | |

Remarks.

- 1. The proper right half of the inscription is entirely lost. The first two lines have lost two syllables each at the end, while in the third and fourth two or three syllables are completely gone at the beginning of the portion extant.
- 2. The palatal is which occurs only once is archaic in form and the subscript ye which occurs twice (Il. 5 and 6) is tripartite. The cross-bar of the lingual she in the third line does not touch the left vertical.
- 3. The secondary long i is expressed by two vertical strokes slightly inclining to the proper left (II. 7 and 8). The ē is expressed by the lengthening of the matra towards the proper right as in Maurya Brāhmi, but the ā is expressed differently by a slightly curved stroke to the proper left as in the Kushana script. The secondary au occurs twice in line 6 and does not differ much from the form found in the Allahabad inscription of Samudra Gupta.
- 4. The date is given in words with the exception of the day which is expressed by numerals in common use during the Scythian period.
- 5. Two uncommon forms of the letter ta occur in line 10. The place of the matra is occupied by a cube so common in the "boxheaded" Gupta and the Chitravarna alphabets.
- 6. The visarga, which is very rare in cognate inscriptions, occurs twice, once in line 10 and again in line 11.
 - 7. The ya when it occurs singly looks like the Kharoshthi syllable me.
- 8. The name of the great-grandfather of the donor seems to be [Dhrn]vamitra. The restoration is based on Cunningham's readings of some of the coins of Panchala.²

TRANSLATION.

| " Adoration | to the divine in the first year |
|------------------|---|
| * * * * * | 4 * Comp projects Mill a |
| | a , b) and not of a Bhargayi (a mother of the Di- |
| Manufacture of a | " " " " " " " " " " " " " " " " " " " |
| | |
| A minimal and | AND ALTERNATION AND A PRODUCTIVE |
| 1 1 1 1 1 1 | ka which stood here." |

Gupta Inscriptions, p. 234, pl. XXXIII. and pp. 235-249, pl. XXXIV.—VI.
 Cunningham, Coins of Ancient India, pp. 81 to 84.

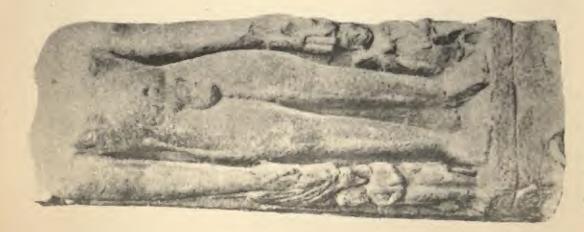


Jaina Image, the year 9.





W. ORIGGS & SONS, LTD., COLLOTYPE.



II.—INSCRIPTION ON THE BASE OF A BODHISATTVA IMAGE.

This fragment was discovered, according to Growse, in a mound near the Circular Road at Mathurā.¹ The language is corrupt Sanskrit and the characters are neat and well incised. They belong to the early Kushana period. The important point about this inscription is that it is a Bōdhisattva image and not a Buddha image as Growse calls it. The inscription consists of a single mutilated line on the upper rim of the pedestal (Lucknow Museum Catalogue No. B-18.)

TEXT.

TRANSLATION.

The pedestal is one of the finest pieces of carving turned out by the Mathurz school of sculptors. It represents two men of high rank sitting on a series of steps apparently conversing with each other. The heads of these figures are slightly damaged, but the execution is very fine. The mutilation of the first few letters of the inscription and the loss of the main figure is greatly to be deplored, as they would have been very important for the history of Indian sculpture.

III .- INSCRIBED JAINA IMAGE, THE YEAR 9.

Nothing is known about the findspot of this image. It stands in the Jaina section of the Lucknow Museum, and, judging from its workmanship, is most probably a product of the Mathura school. The discovery of the Bodhisattva images of Sarnath and Sravasti has made us chary in the matter of assigning findspots of antiquities extempore. No references either to the sculpture or to the inscription have been found in Dr. Führer's Annual Reports or in the Minutes of the Lucknow Museum. The image is headless and belongs to the Digambara sect (Plate I., Front). The Jina evidently stands on a cushion placed on an opening letus. To his proper right two men are standing with hands folded in adoration and their backs turned towards each other. To the proper left a female figurine stands with a flywhisk (?) in her hands. The image is carved in the round. On each flank is a tall slender pilaster with a bell shaped capital and a square abacus which again bears a couple of rosettes on its rim. The pilaster on the proper left has been damaged by the incision of a square mortise hole. The reverse is occupied by the representation of a tall tree with bunches of small four petalled flowers which resemble the asoka blossom. A female stands to the proper left of the tree holding a garland in the right hand, while in front of her a child stands with hands folded in adoration. To the right of the tree is a vessel made of leaves containing a garland and by its side a male is standing with clasped hands (see pl. I.).

The inscription consists of three short, irregular lines, of which one is incised on the edge of the cushion and the others on the lotus petals; two short fragmentary lines are incised between the feet of the Jina. The language is the usual corrupt Sanskrit common in inscriptions of this kind and the characters are of the Northern Indian type of the Kushana period. The epigraph is dated in the year 0 of the Kushana era and must probably be referred to the

¹ Growse's Mathera (2nd edition) p. 106, and plate facing p. 108.

reign of the emperor Kanishka. Another record of the same date mentioning the name of Kanishka is already known, though its present locality is indefinite. The subjoined inscription records the erection of the image by a female named Gahapalā at the request of the venerable Tarika.

TEXT.

- 1 Siddham Sam 9 he 3 di 10 Gra[hs]m[i]trasya dhitu Šīvaširisya vadha Ekradalasya
- 2 Kottiyato ganato [A]rya Tar[i]ka[s]ya kutu[m]biniyê
- 3 Thaniyatô kulatô Vair[a]tô [śākha]tô [ni]va[r]tana Gahapalayê dati.

Remarks.

- 1. The first syllable of the word Sivasiri may also be read as Avasiri.
- The word Ekradalasya may also be read Ekradalasya. The letters are of the ordinary crade form, so common in similar inscriptions on images from Mathura.
- 3. It seems that the lotus petals were carved after the incision of the inscription. The loss of the letter sa in the word Tarikasya can hardly be otherwise accounted for.
- 4. The word sakhato has almost entirely vanished on account of the attempts of the mason employed by the Lucknow Museum authorities to remove the cement from the inscribed portion.
- 5. The reading of the last two words of the third line is uncertain. A copious use of cement has made them almost illegible.

TRANSLATION.

"Success. In the year 9, the third (month) of winter, the tenth day; the gift of Gahapalā, the wife of Ekradala, the daughter-in-law of Sīvašīri and the daughter of Grahamitra, at the request of the venerable Tarika out of the Kottiya gaņa, the Thaniya (Sthāniya) kula (and) the Vaira (Vajrā) šākhā."

The inscription between the feet of the Jina consists of two short lines :-

- 1. Arya [A]gha-
- 2. masya sisini

and seems to refer to the donor of the image. The form of the letter me in the second line is unusual as it is more common in the inscriptions of the Gupta period.

TRANSLATION.

"The female disciple of the venerable [A]ghama."

IV .- INSCRIBED JAINA IMAGE, THE YEAR 12.

This inscription consists of 4 short mutilated lines, two of which are incised on the rim of the throne, on which the Jina is seated and the other two on the base. A large part of the

¹ A. S. R. Vol. III. p. 31, pl. XIII. No. 4.

The lines of the inscription are transcribed here as they appear at first sight. But the word kutumbiniy is far removed from Ekradalasya with which it has to be taken. Again the word nicartona is also similarly removed from Tarikasya. Perhaps the engraver intended that the inscription should be read in the following order:—(1) Kutumbiniyā, (2) Gakapalāyā dati is engraved in two lines immediately below Ekradalasya and lines immediately below the first half of the first line may be taken as one section and the passage (1) Arya split up into three sections each consisting of two lines.



Jaina Image from Ramnagar, the year 12.



left arm of the image is missing. The Jina is seated in the dhyānamadrā posture on a throne supported by a couple of lions standing (Plate II). The intervening space between the lions is occupied by a bas-relief. In the centre of the bas-relief is a wheel on a short Indo-Corinthian pilaster with two capitals and a square abacus, while a devotee is seated on the ground on each side. To the right of the pillar ten women are standing in two rows with garlands in their hands and to the left a group of ten men in similar positions. So far as I know, the usual order has been reversed in this case. The majority of bas-reliefs on the pedestals of images from Mathurā show the men on the right and the women to the left of the wheel.

Nothing is known about the provenance of this image. It is now standing on a masonry pedestal without a label close to the entrance of the Jaina section. In his report for the month of April 1892, Dr. Führer, as the Curator of the Lucknow Museum, reports the presentation of "1 pedestal (sic) of a statue of a Tirthamkara, inscribed Saka-Samvat 10, excavated from the ancient site of a Digambara temple at Ramnagar in Rohilkhand." It is possible that our image is referred to by these words of Dr. Führer.

TEXT.

- 1 Sam 10 2 va 4 di 10 [1] êtasya purvvāyām Koṭṭiyātō [ga]ṇatō Ba[m]bhadāsi[yā]tō kulātō U[chēna]-
- 2 garitô šākhāto gaņi[s]ya Aryya Puši[lasya] šišini Datila . ti Harinan[di]sya bhaginiyē ni[var*]-
- 3 tanā sāvikānām vaddha[ki]ninam Jinadāsi Rudradēva Dāttāgālā Rudradē[va]sāmi[nā] Rud[ra] . . [Gahami]tra
- 4 Kumāraširi Vamadasi Hasti[sē]nā Grahaširi Rud[r]adatā Jayadāsi Mit[r]aširi-

Remarks.

- 1. The symbol for 10 is peculiar. This form seems to show the transition between the form in No. I and that in No. V.
- 2. The akshara ki of vaddha[ki]ninam seems to be corrected by the engraver himself from ku.
- 3. The word Dattagala is most probably the name of a village. It occurs in an inscription on a colossal image of Buddha from Bodh Gaya now in the Indian Museum.

TRANSLATION.

.

J. A. S. B. Vol. XXXIII. p. 177, and Mitra, Baddha Gaya, p. 192.
 Vadakino (-vaddakino) occurs in one of the Sanchi inscriptions (ante, Vol. II. p. 389) in the sense of 'carpenter.' Vadha; in Hindi means 'carpenter.'

¹ N.-W. P. and Oudh Provincial Museum Minutes, Vol. V. p. 6, Appx. A.

^{*} It is also possible that the two names Jinadasi and Rudradeva have to be taken as one name Jinadasi-Rudradeva. The mother's name might have been prefixed to distinguish her from others bearing the name Rudradeva. The same may be the case with some of the other names in this inscription.

V .- INSCRIBED IMAGE OF SAMBHAVANATHA, THE YEAR 48.

This image was found in one of the smaller rooms of the Jaina section of the Lucknow Museum without any label or number. There is no particular mention either of the image or of the inscription in the Minutes or the Annual Reports of the Lucknow Provincial Museum.

This is the only known statue of Sambhavanatha (Plate III.), the third Jina, discovered at Mathura during this period. Figures of Rishabhanatha, Neminatha, Parsvanatha and Mahavira have been met with. It is to be noted that Jaina images of the Scythian period cannot be identified satisfactorily unless the names are mentioned in their inscriptions. Most probably, distinctive symbols (chihna) were assigned to the respective Jinas at a much later period. Those distinguishing symbols have not been found in any Jaina image of the Soythian period discovered up to date. The earliest known Jaina statue with a distinctive symbol is the image of Rishabhanatha from the Kankali Tila mound near Mathura figured in Mr. V. A. Smith's Jaina stupa (Plate XCVIII). Unfortunately it is uninscribed, but may be assigned to the 4th or the 5th century of the Christian era on account of its technique.

The head and one arm are broken. The Tirthamkara is seated in the dhyanamudra posture on a throne supported by a couple of lions. The space under the throne between the lions is occupied by a bas-relief, showing the Triratna symbol resting on a small wheel and supporting a larger one. Two conches are leaning against the smaller wheel, while a small leaf is added to each side of the larger wheel. The grouping is exactly the same as on the Jaina pedestal, now in the Lucknow Museum, dedicated in the year 49.1 A male figure stands to the right of this group of symbols, and a female to the left. They hold flowers in their right hands while their left hands are akimbo.

The inscription consists of four short lines.

TEXT.

sa[m]vachar[8] 40 8 va 2 d[i] 10 7 ētasya 1 Mahārājasya Huvakshasya puvayam K[otti]ye [gane] Bams[dă*] śakaya Dhujhavalas[ya] śiśin[i]y[ê] Dh[ujha]-

2 [si]yē k[u]lē Pachanagariye

Sa[m]bhavasya protima pra-

[ś]iriy[ē] nivatana vadhuye Savatrana [Bu]dhukasya

(?) pötr[i]y[e] Yasav[e] dana

4 ta(ti)stape(pi)ta.

TRANSLATION.

" In the year 48, the 2nd (month) of the rainy season, the 17th day, of the Mahārāja Huvaksha; on that (date specified as) above, an image of Sambhava was set up by Yasa, the grand-daughter of Savatrana (?) and the daughter-in-law of Budhuka, at the request of Dhujhasiri (Dhurjairi), the female disciple of Dhujhavala (Dhurjavala) out of the Kottiya-gana, Bama[da]siya (Brahmadisiya) kula and Pachanagari (Vajranıgari) šākhā.

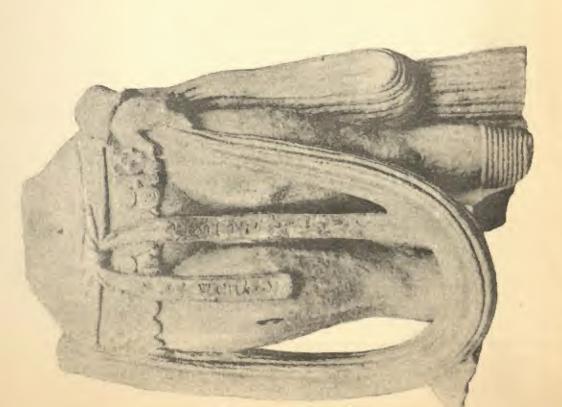
VI.-MATHURA BUDDHIST IMAGE INSCRIPTION, THE YEAR 51.

The discovery of this inscription was made known to the public by Mr. Growse in 1870. It was found in one of the Jamalpur mounds on the pedestal of an image, most probably of Baddha, of which only the feet are extant. A male kneels to the proper right with some object, probably a bag, in his hand. It consists of three lines, of which the proper left half of

¹ Above, Vol. II. p. 204, No. XX, and p 321, pl. IV; Vol. IX, pp. 244-45. 2 Growse's Mathera, 2nd edition, p. 107.

Image of Sambhavanatha, the year 48.





Inscribed Image from Mathura.



the first two lines are almost illegible. It records the erection of an image by a bhikshu named Buddhavarman during the reign of Huvashka in the fifty-first year of the Kushana era in a temple built by the king himself (Mahārāja Dēvaputra-vihārē). This temple is most probably the same as that mentioned in a later inscription.* The characters of the subjoined inscription are very neatly incised.

TEXT.

Mahārajasya Dēvaputrasya ¹ Huvashkasya savatsarē² 50 l hamanta māsa 1 pu[rvva]yam [bhi]kshuno Buddhavarma[nsb]3 d[i]va[sa] . . [as]y[am] [Sakya?] . .

sarva-Buddhapujartha[m] [de]yadharmaan [6] na pratishtapit a 2 pratima parityāgēna Upadhyāyasya Sa[m]ghadāsasya [nirvāņāvā]ptayē=stu [mā]tāp[ita]

. 3 Buddhavarmasya sarva-d[u]khōpaśam[ā]ya sarva-satva-hita-sukhārtha[in] [M]ahārāja Dē[vaputra·vi]hārē,

TRANSLATION.

"In the year 51, the 1st month of winter, the day, on this (date specified as) above, an image of Sakya[muni?] (the gift) of the bhiksha Buddhavarman, was set up in honour of all the Buddhas. Let the bestowal of this religious gift be for the attainment of nirvana by the Upadhyaya Samghadasa, and for the cessation of unhappiness for Buddhavarman [and his parents] (and) for the welfare and happiness of all beings. In the vihāra of the Mahārāja Dēvaputra."

The transcript of this inscription printed in my paper on "Mathura inscriptions in the Indian Museum " (Jour. and Proc. A. S. B. Vol. V. p. 243) should be corrected in accordance with the foregoing text and translation.

Remarks.

1. The king's name is undoubtedly spelt as Huvashka; of. variants Huvaksha, Hushka, Huksha, etc.

2. There are no traces of the anusrara on the stone.

3. The possessive case ending is expressed in two ways :-varma[na4] and -varmasya. But it is to be noted that the visarga is not legible.

4. The final form of ma is important, as this is the carliest case known in Northern Indian

inscriptions; above, Vol. I., p. 389, No. XIV.

5. This form occurs in another inscription of the same period (J. B. B. R. A. S. Vol. XX).

VII .- INSCRIBED JAINA IMAGE, THE YEAR 58.

The inscription has already been published by the late Dr. Bühler (No. 42 of Prof. Luders' List, p. 8 f. above). When I was examining the characters of the inscriptions of the Soythian period, I was struck by the use of the word hand in two dated inscriptions :-

(1) The inscription of the forty-fourth year of Huvishka; and (2) that of the eightieth year of Vasudeva.§

I. A. Vol. XXXIII. p. 101, No. II; above, Vol. IX. pp. 243 and 245.

[†] The use of the word between the year and the month of a dated inscription can have no significance. The word occurs also in the Mathura lion capital inscriptions (aste, Val. IX. p. 141). Here however the context is different and Mr. P. W. Thomas has taken the word to denote a proper name.

I Ante, Vol. I. p. 387, No. 9 and Plate.

⁵ Red. p. 392, No. 24 and Plate.

On examining the originals carefully I found that the date in one of them is not forty-four but fifty-eight, expressed in words. The following considerations led me to this conclusion:—

- (1) The first syllable after the word sava[tsa]rs has been read by Dr. Bühler as ptn or the numerical symbol for 40. But it would be better to take it as a form of the letter a (cf. above, Vol. VIII. plate facing p. 176, i, f.).
- (2) The second syllable has been taken by Dr. Bühler to be a numerical symbol. But it is evidently the compound letter shta. The plate published along with this paper was prepared from an impression taken under my personal supervision and shows the letter shta better than the facsimile issued with Vol. I. of this Journal.
- (3) The third letter was taken by Dr. Bühler to be ha but the absence of the horizontal stroke at the top of the vertical line on the proper right shows that it is pa. The left hand vertical line is slightly curved, but it should be borne in mind that the characters of Jaina inscriptions of the period are always cursive; of the ha of Maharaja in the same line.

The word pana occurs in two other Brahmi inscriptions from Mathura published by the late Dr. Bühler. One of them is dated in the year 50 (ante, Vol. II. p. 203, No. XVII), which is preceded by the word pana and the other in the year 52, to which is prefixed the word dedpana (ibid, No. XVIII). In the present inscription we have got ashtapana, which I have rendered by 'fifty-eight.' The word pana is apparently an abbreviation of the Pali panaisa 'fifty.' In the inscription of the year 30, where the word pana also occurs, according to Dr. Bühler's text, it is a misreading for hamata, as I shall show later on in this paper.

With my corrections the text of the subjoined inscription runs as follows :-

- I Sdha[m]¹ Nama Śara[sa]tama Maharajas[ya] Huvakshasya sa[m]vasare ashtapana gra[sya] masa 3 [da]visa³ 2 ē[ta]-

Remarks.

- This word occurs in many other cognate inscriptions. There is a symbol preceding no of nama which I cannot explain.
- 2. Perhaps the word was pronounced davisa as is still the case in Bengal and Assam; read divasa.
- 3. There is an unexplained symbol after the akshara ye. Perhaps it is due to a crack in the stone.

TRANSLATION.

Success! Adoration! In the year 58 of the most illustrious (?) great king Huvaksha, in the 3rd month of summer, on the 2nd day. On that (date specified as) above, the gift of Nagasana (?), the pupil of Haginadi (Bhaganandi ?) a preacher out of the gana, the Arya-Chēţiya (Arya-Chēţika) kula (and) the Haritamālakacha (Haritamālagadhī) šā[khā].

VIII.-INSCRIPTION ON A JAINA IMAGE FROM MATHURA, THE YEAR 71.

The discovery of this image was announced by Dr. Führer in his Annual Progress Report for the year 1890-91 (p. 17) and in his Annual Report of the Provincial Museum for the

[·] Ind. Ant. 1908, p. 51.

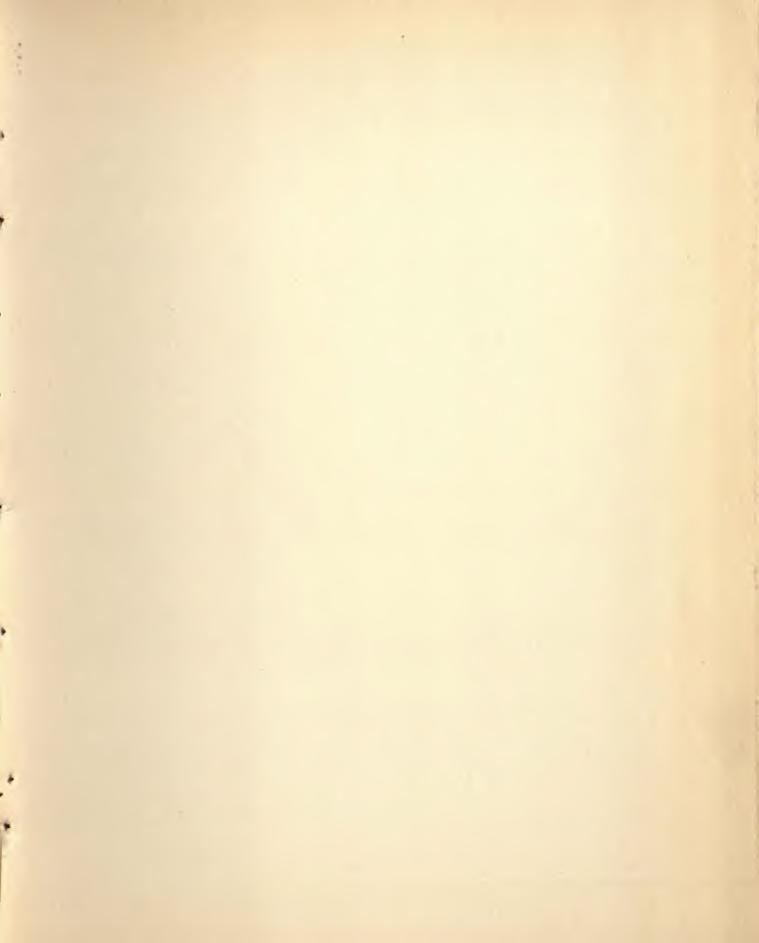
[†] N.-W. P. and Oodh Provincial Museum Minutes, Vol. III. p. 233.



Jaina Image from Mathura, the year 71.



BACK.



Jaina Image from Mathura, the year 71.



FRONT.

year 1891-92. But the inscription on it has neither been published nor noticed as yet. It is incised on the square base of a pilaster made out of the back of a Digambara Jaina image (Plate V). Only the waist and the thighs of the Jina are extant (Plate IV). The pilaster on the reverse is most probably the staff of the umbrella under which the image originally stood. Such cases are by no means uncommon in the Mathura sculptures of the Scythian period. The inscription, though fragmentary, is an important one. It presents a large number of difficulties both in decipherment and translation. The most important part however is the date which is fairly legible.

TEXT.

- 1 Sa[m] 70 1 va 1 di 10 5
- 2 e (?)tave pavayê ha-
- 3 tiva(?) Muhasimita (?) ye (?)
- 4 Minirava sushoti dhitu
- 5 H[ēmad]ēva [saya]

Remarks.

- 1. The anusvara is indistinct.
- 2. The yowel e is unlike any Brahmi letter but resembles the Kharoshthi va.
- 3. The second letter in the third line is also new. It resembles the symbol for 10 to some extent, but the presence of a numerical symbol at this place cannot be explained.
- 4. The remaining syllables in the third line seem to constitute a proper name with the genitive case ending. The letter size is rare in Mathura inscriptions, although it is to be found in the inscriptions of the Western Satraps.
- 5. Of more interest is the form sushōti in the next line. The ō in shō is formed by the combination of a and a and the affix ti is quite new. It resembles to some extent the Bengali affix to as in māmāta, "maternal uncle's son," pisāta, "son of a paternal aunt." The word probably is an apabhramāta of the Sanskrit svasrīyā and the whole phrase most probably means "sister's daughter's daughter."

TRANSLATION.

"In the year 71, the 1st (month) of the rainy season, the 15th day; on that (date specified as) above, of Munasimitä (?) the sister's daughter of Minirava of Hēmadēva.

IX.—INSCRIBED CHATURMUKHA FROM RAMNAGAR, THE YEAR 74.

The discovery of this inscription was announced by Dr. Führer in his Progress Report for the year 1891-92. But all the details have been omitted. The inscription is incised on four sides of the pedestal of a Chaturmukha or four-fold image of a Tirthamkara, as Dr. Bühler used to call them (Plate VI). Each of the four faces of the pedestal bears a bas-relief. On the larger faces, the bas-relief consists of a wheel on an Indo-Persepolitan pilaster in the centre with three devotees, standing with folded hands, on each side. The bas-relief on the smaller faces is almost similar and consists of two devotees only on each side of the pillar.

The inscription consists of two lines—more or less mutilated—on each face. The second line of the third face has broken away." The enigraph records the dedication of some object the name of which is lost, in the 74th year; presumably of the Kushana era.

TEXT.

| A. 1. [Sam 70] 4 gra 1 di 5 Aya Varanatō gaṇa[tō] |
|---|
| B. 1 nadhanasya vachakasya sisiniyê A[ryya] , |
| B. 2 |
| |
| C. 1. Gahavalāyē paņatidhariyē šišiniyē Aryadāsiyē |
| C. 2 |
| |
| D. 1 [deva]sya kuṭu[m]biniyē Dharavalāyē dati |
| D. 2 sašuyė |
| |
| Point |
| Remark. |
| The symbol for seventy is indistinct on the impression, but can be deciphered on the |
| original stone. |
| TRANSLATION. |
| (In the year) [7]4, the 1st (month) of summer, the 5th day |
| disi) the famels until who chere the command of Coherels |
| dasi), the female pupil, who obeys the command of Gahavala of . |
| the venerable nadhana |
| out of the venerable Varana (Varana) gana, the kula, the |
| Vajanakari (Vajranagari) iākhā (and) the Ayasirika (Aryasirika) [sambhōga]. |
| XINSCRIBED IMAGE FROM MATHURA, THE YEAR 80. |
| This image was discovered in the Kankali mound near Mathura (Plates VII and VIII), and the inscription on it was published by Dr. Bühler (No. 66 of Professor Lüders' List, above, p. 13). This is the other inscription referred to above (p. 113) in which, according to Dr. Bübler, the word hand occurs. On comparing the original with the photo-lithograph multipled. |
| parties and original with the photo-lithograph meblished |

h the photo-lithograph published by Dr. Bühler it was found that the words hang on I as read by Bühler are nothing but hamava 1, which probably stands for hamata 1.

TEXT.

1 Sdhi² Maharajasya V[ā]sudēvasya Sa[m] 80 hamava 1 di 10 2 ētasa purvvāyām sā[va]ko [Sa]3

2 dhita Sa[m]ghanadhisa* (?) vadhuye Balasya

The second letter of the word hamava is sufficiently clear in Dr. Bühler's facsimile and cannot be anything else but the Brahml letter ma. It will be observed that the third letter resembles va but the base line does not join the left limb. This too is visible in the photograph. It is due, most probably, to the mason's carelessness.

Above, Vol. I. p. 392, No. XXIV.

² Sdhi most probably stands for siddham or siddhi.

The name of the savaka begins with Sa. The second syllable is only partly legible and may be go, but it may also be ro or so.

The a mark is very distinct in the impression.

TRANSLATION.

XI -INSCRIBED BAS-RELIEF FROM MATHURA, THE YEAR 99.

The inscription is incised along the raised border of a fragmentary bas-relief on yellow sandstone. The bas-relief consists of two panels with raised borders. The lower one is larger but its lower part is broken. The smaller panel at the top is in good preservation. It consists of a stupa in the centre with two Jinas on each side scated in the attitude of meditation under umbrellas. The Jina on the proper left of the stupa has no umbrella on his head. A sevenheaded snake takes the place of the umbrella and shows that it is Pāršvanātha, the 23rd Tīrthankara. The inscription is incised on the rims at the top and bottom of this panel.

The lower panel contains the upper part of a woman's figure standing with her left hand on her hips and the right one lifted up. A small inscription consisting of two lines has been incised over her right shoulder (A). To her left stands a nude male figure, evidently an ascetic, with a piece of cloth on his left wrist. In the space between the heads of these two figures occurs the inscription B. Two female figurines are standing to the left of the ascetic and behind them appears the upper part of the figure of a Naga king under a tree with his hands folded in supplication. On each side of this group is a pillar with a bell shaped capital, of which the one on the left is surmounted by a wheel. A drawing of this bas-relief has been published by Mr. Smith.*

The inscription has already been published by Dr. Bühler+ (No. 75 of Professor Lüders' List, above, p. 15) though Mr. V. A. Smith did not notice it at first. The original inscription differs in two or three places from Dr. Bühler's readings.

TEXT

Remarks.

- The year is most certainly 99, as has already been recognized by Dr. Hoernle and Mr. V. A. Smith in the J. R. A. S. 1905, p. 152.
- 2. The second of the symbols denoting the date was taken by Dr. Bühler to be S, but it is similar in all respects to the symbol for six; cf. above, Vol. I., p. 388, No XII.
- 3. The reading of the third syllable is certain though the cross-bar of sa is not distinct in the impression.
 - 4. I have not been able to make out the aksharas preceding the word grahadatasya.
- 5. The smaller inscriptions are most probably labels and as such are unique among the Mathura sculptures of this period. Their Sanskrit equivalents are given in Dr. Führer's Annual Report for 1890-1 (p. 3). The bas-relief has not been explained as yet.

^{*} Jaina Stapa, p. 24, pl. XVII. fig. 2, and Lucknow Museum Catalogue No. J-623.

[†] Ante, Vol. I. p. 392, No. XXII.

I [On the plate the reading appears to be Dhamadharave.-Ed.]

TRANSLATION.

"The sinless merchant Vijā (Vidyā)." "The ascetic Kana (Krishna)."

XIL-INSCRIPTION ON A COPING STONE

Nothing can be said definitely as to the whereabouts of this inscription. It was found without any label in the Jaina section of the Lucknow Museum. The material is red sandstone and the technique is decidedly that of the Mathura school. The epigraph consists of a fragmentary line incised on the top of a sculpture. The characters are very early and most probably belong to the same period as the earliest inscription from Mathura.† The epigraph is of some interest, as it contains the word spran[ike] "goldsmith," which occurs only once in cognate inscriptions.‡ Unfortunately the word is not completely preserved. The vowel a which is comparatively rare occurs in this record.

TEXT

TRANSLATION.

of Utara (Uttara), the goldsmith, the son of Goti (Gaupti).

XIII .- INSCRIPTION ON A LARGE SLAB OF RED SANDSTONE

This slab is plain but for the inscription. It is rectangular in size and one corner is broken. Its discovery was announced by Professor Dowson in 1871.§ In 1906 I wrote to the Curator of the Lucknow Museum asking for a couple of impressions of the inscription of Sodasa which had been published by Dowson along with this epigraph, but I received copies of the subjoined record instead. The characters are about 2 to 3½ inches in height. The inscription has apparently suffered after its removal to the Museum, as the word upathapita read by Dowson is no longer complete.

TEXT.

A.

niyataka⁴ . naũa (?) travastussi⁵ samkkalayitavyah Sanghaprakitehi vyavaharihi [u]pa[tha]

B

- 1 [Bu*]d[dha]rakshita—Jivasiri—Buddhadāsa—Sangharakshit[a]
- 2 Dharmmavarmma Baddha . . su[khā] la

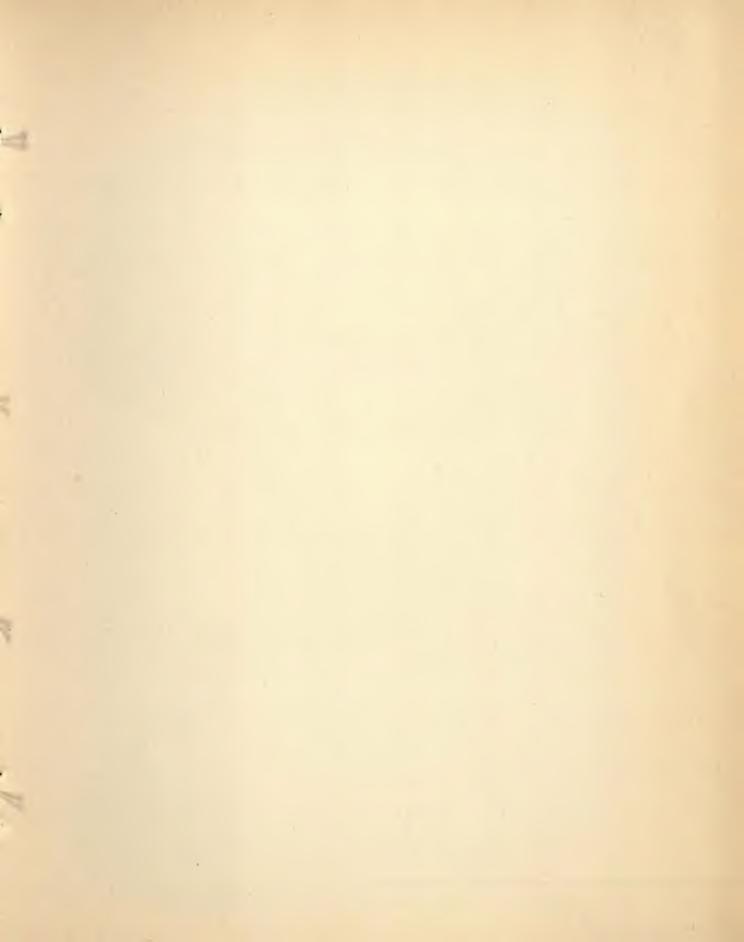
Remarks.

The word may be taken to be kanthe but a Śrāvasti inscription (above, Vol. VIII., p. 181)
 shows an identical form for nda.

⁺ Above, Vol. II. p. 198, No. 1.

¹ Above, Vol. I. p. 397, No. XXXV. and Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 150, No. 27.

[§] J. B. A. S. (N. S.) Vol. V. p. 188, No. 28.



W. GRIGGS & BONB, LTD., COLLOTYPE.

Base of a Ramnagar Tirthamkara Image,

the year 74.







V. VENKAYYA.

2. The lower part of the letter sta is damaged. The word may be read as seaka.

3. The visarga is distinct but it may also be a punctuation mark.

4. There is a short horizontal stroke to the left on the top of the central vertical line. This may be an c mark, but possibly it is due to the mason's carelessness.

5. The reading of these six syllables is uncertain. The inscription contains some peculiar

words and so I shall have to leave it untranslated.

XIV.—INSCRIBED IMAGE FROM MATHURA, THE GIFT OF PUŚABALA,

The inscription is incised on the waist band of a female figure in red sandstone. Only the portion below the waist is extant (Plate III). According to Mr. V. A. Smith (Jaina Stupa, p. 56, plate XCIX) the sculpture was discovered in the Kankali mound. The drawing published by him is inaccurate. The impression and photograph published herewith will show the details of the discrepancies. Mr. Smith's reading, based on his drawing, is also incorrect. Inscriptions on waist bands are very uncommon in India.

TEXT.

- -1 Puśabalaye dane! Dhama-
- 2 vadhakasa [bha]yāyē.

TRANSLATION.

"The gift of Pusabala, the wife of Dhamavadhaka (Dharmavardhaka)."

XV .- FRAGMENT OF AN INSCRIBED PAVEMENT SLAB.

The sculpture on which this inscription has been incised is evidently a fragment of a pavement slab.3 The carving consists of an ornamental border of twisted rope pattern with cylindrical clasps at corners. The accompanying photograph (Plate VI) shows a fragment of another similar sculpture. The inscription on it has been edited by Dr. Bühler (No. 113 of Professor Luders' List, above, p. 20). The ornamentation is precisely the same, the place of the rope pattern being taken by lotus petals. The upper right hand corner bears some chisel marks apparently unexplainable. But the other scalpture mentioned above most probably affords a means of explanation. The inscription on that sculpture too, which is entire, has been published by Dr. Bühler (No. 119 of Professor Lüders' List, above, p. 21). The ornamentation is precisely the same as in the two fragments published herewith on plate VI. The only difference is that there is a large square hole in the centre of the slab. This, I believe, explains the chisel marks on the larger slab in the photograph.3 This slab, then, must have had a similar hole in its centre. The object of these square holes is not very difficult to describe. Several of the Jaina statues in the Lucknow Museum possess massive tenons under the bases. These tenons were most probably let into the square mortise holes in the pavement slabs. This supposition is strengthened by the fact that the inscriptions on similar slabs are not incised near the centre but along the borders. The majority of images of this period were carved in the round and were placed inside rooms or shrines paved with similarly carved slabs.

TEXT.

Gösalasya dhita Mitraya [danam*].

1 Read danam.

³ In addition to this there are two other similar inscribed slabs in the Lucknow Museum.

^{* [}How the chisel marks are explained by the mortise holes is not apparent. - Ed.]

TRANSLATION.

" [The gift] of Mitrs, the daughter of Gosala."

XVI.—FRAGMENT FROM THE LOWER PART OF AN IMAGE FROM RAMNAGAR.

The carving of this image is very nearly gone, the outline being barely recognisable. The inscription also is in a very bad state of preservation. It is important as it mentions the name of [Adhi]chehhatra. The inscription consists of a single line.

| of [Adhi]chehhatra. The inscription consists of a single line. |
|--|
| TEXT. |
| 1 |
| TRANSLATION. |
| paka gana (gana) of Dhananyana of . at the request of . |
| XVII.—FRAGMENT OF A TABLET OF HOMAGE. |
| This fragment was found in one of the entrances to the Brahmanical section of the bucknow Museum. Nothing is known about its provenance. The inscription is full of mortar and is in a bad state of preservation. The characters belong to the early Kushana period. |
| TEXT. |
| 1 [Amogha]dattasya bharyāye Kō[ts]iyē 2 [pratisṭhā]pita Arahamta pu[jāyē]. |
| TRANSLATION. |
| "[A tablet of homage] was set up by the wife of [Amogha] datta, in honour of (all) the Arhats." |
| A photograph and a full description of A TABLET OF HOMAGE FROM MATHURA. |
| by Dr. Bühler. The inscription on it is very faint. I read from the original after bringing it out in daylight and from two impressions made by Munshi Ghulam Nabi of the Archeological Survey, Northern Circle. |
| 1 |
| 1 |
| TRANSLATION |
| of a tablet of homage [was dedicated] the daughter-in-law |
| |

¹ Above, Vol. II. pp. 311-513.



Inscribed Images of the Scythian Period.—Plate VII.

Jaina Image from Mathura, the year 80.



FRONT.



Jaina Image from Mathura, the year 80.



BACK

XIX.-FRAGMENT OF A PEDESTAL.

This fragment was found in a heap of rubbish which had accumulated under No. XIII. in the Epigraphical Section. Nothing is known about its findspot. The inscription is of interest as it mentions two synonymous words in the same line, vis. natti and pau[ttra].

TEXT.

TRANSLATION.

XX .- INSCRIPTION ON A TRIANGULAR FRAGMENT.

This inscription is of some interest as it contains the number 800 expressed both in words and by numerical symbols, viz. by the symbols for 8 and 100. It was found in the Jaina Section of the Lucknow Museum without any label or number.

TEXT

XXI.-INSCRIPTION ON A PEDESTAL.

This short inscription is incised on a fragment from a pedestal of yellow sandstone. Nothing is known about its findspot.

TEXT.

Buddhadēvasys kutumbiniyē Buddha pratim[ā] .

Remarks.

- 1. There is a superfluous e stroke over the first letter bu.
- 2. The form of wa is peculiar. At first it looked like an inscription in the 7th century character of North Eastern India. But the language and the forms of na, ta and ya are convincing proofs of the age of the inscription.

TRANSLATION.

No. 24 .- DATES OF CHOLA KINGS.

BY ROBERT SEWELL, I.C.S. (RETD.), M.R.A.S.

A.-RAJADHIRAJA I.

161.— In the Nageśvara temple at Kumbhakōṇam.

- 1 Svasti šri [II*] Tibga-

[[]For the use of the word mapfri in the sense of 'a great-grandson,' see above, Vol. IV. p. 329, note 2.—Ed.]

No. 14 of the Madras Epigraphical collection for 1908.

. . . kov = Irajakesariy-e nal-. . Udaiyar śri-Vijairāfile-. ntraděvar[ku] yandu 36 avadu ivv-ātṭai Magara-nā[ya]rru 58 [a]para-paksha[ttu dvi]dhi(ti)y[aiya]m Budan-kilamaiy[u]m perra Ayile-59 vattin nangu.

" In the 36th year (of the reign) of the lord, the glorious Vijairajendradeva (Vijava-Rājendradeva) having been called king Rājakesarin,- on the day of Aslesha, which corresponded to a Wednesday and to the [second] tithi of the second fortnight of the month of Makara in this year."

The date is perfectly regular, and corresponds to Wednesday, December 29, 1053 A.D. On that day, which was the sixth solar day of Makara, at mean sunrise, the second tithi of the second fortnight of Pausha was current, and it lasted for 19 h. 12 m. Aslesha was the nakshatra at mean sunrise by all systems. It expired by the equal space system 21 h. 22 m., by Garga 9 h. 14 m., and by the Brahma-siddhanta 6 h. 49 m. later.

In his Annual Report for 1907 Mr. Venkayya states his opinion (para. 56) that Rajadhirāja I. lived till A.D. 1057-58 with his younger brother Rājēndradēva as co-regent towards the close of his reign. We have now two dates at least of Rajadhiraja I. later than the accession day of his successor, viz. Kielhorn's No. 35 (above, Vol. VI. p. 22) and the present one; and we learn from the latter that Rajadhiraja I, lived till at least the end of A.D. 1053.

B .- VIKRAMA-CHOLA.

162.— In the Uttaravēdīśvara temple at Kuttālam.

- 1 Svasti śri [[]*] Pū-mālai pugaindu 2 Tiribuvanachchakkara-
- 3 vattigal érl-Vikkirama-[Ś]oladevarku(varkku) yandu münravadu Ma-
- 4 gara-nayaggu apara-pakshattu sattamiyum Tinga[t]-kalamaiyum perga [A]tta-
- 5 [t*]tu na].

"In the third year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the glorious Vikrama-Chōjadēva,— on the day of Hasta, which corresponded to a Mouday and to the seventh tithi of the second fortnight of the month of Makara."

This date is irregular. Kielhorn has clearly established the 29th June, A.D. 1118, to be the accession-day of Vikrama. The solar month of Makara in his third year must therefore fall early in A.D. 1121. The seventh tithi of the second fortnight in Makara of that year fell on a large portion of Wednesday, January 12, 1121, and a small portion of Thursday, January 13th. During that seventh tithi the nakshatras were Chitra and Svati. The fifth tithi, however, of the second fortnight (if we may assume a mistake to have occurred) of this month of Makara seems a little closer. It fell on Monday, January 10, 1121 A.D., which was the 18th of Makara. The tithi lasted for about 23 h. 19 m. after mean sunrise. On that day Hasta began, by the equal space system and by Garga, 8 h. 31 m., and by the Brahma-siddhanta, 5 h. 7 m. after mean sunrise; but according to the usual custom the day would have been called, not Hasta but

It is possible that the seventh was wrongly quoted for the fifth tithi; but the date is doubtful in any case.3

¹ No. 491 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

² Mr. Venkayya assures me that in the original the word sattami is quite distinct. I think it is safe to assume that the date is genuine, but that the 7th tithi was quoted by mistake for the 5th.

163.— In the Uttaravēdīšvara temple at Kuttālam.1

- 1 T[i]r[i]buvanachchakkaravattiga[!
- 2 śri-Vi]kkirama-Soladevarku
- 3 yandu ainjavadu Singa-ņā(nā)-
- 4 [ya]rru pürvva-paksbattu trayo[da*]-
- 5 siyum Budan-kilamaiyum per-
- 6 [ra] Attattu nal.

"In the fifth year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the glorious Vikrama-Choladeva, — on the day of Hasts, which corresponded to a Wednesday and to the thirteenth tithi of the first fortnight of the month of Simha."

This date is irregular. Simha in the fifth year of Vikrama-Chola fell in A.D. 1122. On Wednesday, August 16th of that year, which was the 20th Simha, the twelfth tithi of the bright fortnight of Bhādrapada ended and the 13th began about 16 h. 5 m. after mean sunrise; but the nakshatras during those two tithis were Uttarāshādhā. Abhijit and Śravapa. It is useless to go into further details. A comparison of this date with Kielhorn's No. 22 (p. 3, Vol. VII. above) shows this at once. That inscription mentioned the day of Ārdrā, which corresponded to Monday, and with the eleventh tithi of the second fortnight of Śrāvapa in solar Simha in the fifth year of the king. That date is perfectly regular for July 31st, A.D. 1122. Now the present date is seventeen days later than No. 22, and it is clear that a day seventeen days later than Ārdrā cannot possibly fall under the nakshatra Hasta.

On the supposition that in the original the quoted nakshatra might have been Avitattu instead of Attattu, i.e. Dhanishtha instead of Hasta, the date still works out incorrectly. The thirteenth tithi of the tirst fortnight of Bhadrapada in solar Simha in the year in question could be connected for the time lying between 9 h. 50 m. and 15 h. 22 m. after mean sunrise on Thursday, August 17th, A.D. 1122, with the nakshatra Dhanishtha; but the week-day has been given as Wednesday in the inscription. Moreover the day which would be called the 'day of Dhanishtha' was Friday.²

164. - In the Uttaravēdišvara temple at Kuttālam.3

- 2 Tiribuvanachehakkaravattiga[]
- 3 ári-Vik]k[i]rama Soladévarkku yándu ágávadu Siú[ga-náyagu apara].
 pakkattu [piradaśi]-
- 4 kamum4 [Vi]yāļa-kkiļamaiyum-āņa [Ša]d[aiya]ttu nāļ.

"In the sixth year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the glorious Vikrama-Chōladēva,— on the day of Satabhishaj (?), which was a Thursday and [the thirteenth fithi f] of the [second] fortnight of the month of Simha."

This date is also unsatisfactory, the elements being uncertain. There seems to be no doubt that it belongs to the 6th year of Vikrama-Chōla, and probably, almost certainly, to the month Simha. It is not certain which lunar fortnight is referred to. The day was Thursday; but the nakshatra can only be guessed at from two unmutilated aksharas. These are "-d . . ttu." The word which follows pakkattu is guessed to be piradasikam from the final akshara '-kam,' and

¹ No. 490 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

² Since the text was in print Mr. Venkayya has examined the original and found that attatta is quite clear. The date remains unsatisfactory. The day in Simha in the year in question which corresponds to the makehatra Hasta is August 7th A.D. 1122. At sunrise on that day, the third tithi of the bright fortnight was current. But the week-day was Monday, not Wednesday.

^{*} No. 489 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

^{*} The nearest approach to this word in Sanskrit is prodöshaka, which denotes the evening of the thirteenth title in a lunar fortalght.

from this it has been assumed that the tithi in question was the thirteenth of the fortnight (see note 4, p. 123). Now in the year A.D. 1123 which, after June 29th, was the sixth year of Vikrama-Chōla, in the mouth Simhs, the thirteenth tithi of the first fortnight fell on a Monday and all the thirteenth tithi of the second fortnight also fell on a Monday (except that it expired 4 minutes after mean sunrise on the Tuesday). I tested the date on the basis of the nakshatra, to see what days corresponded with Satabhishaj in that month of Simha. By the equal space system Satabhishaj expired 15 h. 13 m. after mean sunrise on Thursday, August 9th, A.D. 1123, which was the first day of the second fortnight, and was the thirteenth day of Simba. On that Thursday the first tithi of the second fortnight began 4 minutes before mean sunrise and lasted all day.1 By the system of Garga Satabhishaj expired 3 h. 20 m., and by the Brahma-siddhauta 4 h. 24 m., after mean sunrise. There was no other Satabhishaj in that month of Simha.

Now this day Thursday, August 9th, A.D. 1123, exactly fits the elements of the given date If in the original the word following "pakkattu" was not piradasika (for pradoshaka) but some word implying the first tithi of the second fortnight."

165 .- In the Uttaravediśvara temple at Kuttālam.3

- 1 Svasti ści [II*] Tiribuvanachchak-
- 2 karavattigal śr[1]-Vikkirama-Sō-
- 3 ladevarku yan[du] etta[vadu Magara]-nayarru parvva-pakahattu na-
- 4 vamiyum Sani-kkila[mai]yum [p]erra [A]nulatti-nāl.

"In the eighth year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the glorious Vikrama-Choladeva, -on the day of Anuradha, which corresponded to a Saturday and to the ninth tithi of the first fortnight of the month of [Makara]."

This date has given me a great deal of trouble. According to the transliteration given above, the 8th regnal year is clearly decipherable; the solar month is doubtful; the lunar day and fortnight are clear; and so are the weekday and nakshatra. This being so, I have tested all the days in the 8th regnal year of Vikrama-Chola corresponding to the ninth tithi of the first fortnight in each month, and without success. The nearest approach was in the month Simha. The eighth tithi of the first lunar fortnight of Śrāvana in that solar month expired 13 h. 15 m. after mean sunrise on a Saturday, which was the twelfth day of Simba, and corresponded to Saturday, August 8th, A.D. 1125. At that moment the ninth tithi began, viz. at about 7-15 P.M. on the Saturday. But according to the equal space system, the nakshatra, which had been Anuradha up to about 5-4 P.M. that day or 11 h. 4 m. after mean suurise, changed at that moment to Jyeshtha; so that Anuradha had expired 2 h. 11 m. before the ninth tithi began. Using the system of Garga the result is the same. By the Brahma-siddhanta the nakshatra Anuradha expired 6 h. 14 m. after mean sunrise. As a fact, therefore, there was no period which satisfies all the requirements.

The ninth tithi of Makara fell on a Monday and Tuesday, with the nakshatras Bharani and Krittika.

The date cannot be depended upon.

¹ Except for 34 m. before mean sunrise on the Friday.

Mr. Venkayya has kindly examined the original since this article was in print, and is inclined to think that the word following pakkattu may be pira[pi]digam, which may be meant for piratipadigam, i.e. pratipat, 'the first fifth; I think therefore that the date given in the last paragraph may be accepted.

² No. 492 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

Mr. Ventayya tells me, since the above was in print, that no reading but makars is possible for the solar month. In that month, in the eighth year of Vikrama-Choja, the day of Anuradhi was Tuesday, corresponding to January 19th A.D. 1123, at sunrise on which day the sloth fifth of the second fortnight was current. If two mistakes were made, both in the fortnight and in the week-day, the day mentioned may be the one intended. But

C.-KULOTTUNGA-CHOLA II. (?)

166.—In the Saumyanāthasvāmin temple at Nandalūr.

"In the eighth year (of the reign) of king Vīra-Rājakēsarivarman alias the emperor, the glorious Kulöttunga-Chōladēva,—on the day of Sivarātri, which was (a day of) Śravana, a Friday and the fourteenth tithi of the second fortnight of the month of Kumbha in the eighth year (of the reign) of the glorious Kulöttunga-Chōladēva."

The elements of this date are inaccurate for the now known eighth regnal year of Kulöttunga-Chola I., as also for his eighth year as an Eastern Chalukya sovereign; the former corresponding with A.D. 1077-78, the latter with 1070-71. They are also inaccurate for the eighth year of Kulöttunga-Chola III.

For the reign of Kulöttunga-Chōṭa II., whose accession-date has not yet been fixed, but who certainly succeeded Vikrama-Chōṭa and proceded Rājarāja II., I have examined the given date in every year from 1135 to 1152 A.D. which appeared to me the outside limits of possibility. The king known as "Kulōttunga-Chōṭa " is shown by the Chellūr plates (Ind. Ant. XIV. 55 ff.) to be identical with this Kulōttunga-Chōṭa II. Kielhorn has shown (above, Vol. VII. p. 9) that he was living in A.D. 1143. He was the son of Vikrama. It is desirable that I should publish the nearest approximations to correctness that occur in the period 1135—1152 A.D., so that those thoroughly acquainted with South-Indian practice as regards the joining of special rites and festivals with the civil days may be enabled to decide whether in any of those cases all the requirements of the date are satisfied. For other years the date is irregular.

1. The Kumbha-samkrānti of Kaliyuga 4238 occurred 23 h. 51 m. after mean sunrise on Friday, January 22nd, A.D. 1137. The fourteenth tithi of the second fortnight of Magha expired 10 h. 7 m. after mean sunrise on that day, and was not current at the following midnight; and at that midnight the actually current solar month was not Kumbha but Makara, though the Kumbha-samkrānti occurred 5 h. 51 m. later. As to the nakshatra it was Śravana at mean sunrise on the Friday and until 21 h. 30 m. later; Śravana was therefore current at the midnight of Friday. Now, if the Mahā-Śivaratri festival, which occurs at midnight, could be connected with the fourteenth tithi which had expired 7 h. 53 m. before the Friday midnight—then the elements Friday, the fourteenth tithi of the second fortnight, the Śivaratri festival and the Śravana nakshatra, all agree with this date. But even then I hardly think that the festival could be connected with the solar month Kumbha, whose initial samkrānti did not occur till 5 h. 51 m. after that midnight. The date is therefore doubtful. If experts in South-Indian rites and ceremonies can reconcile all the elements, then the date may correspond to Friday, January 22nd, A.D. 1137. There was another fourteenth day of the second fortnight, vis. of Phālguna, in this month of Kumbha, but it does not suit the other elements of the given date.

2. The Kumbha-somkranti of Kaliyuga 4242 occurred 41 m. after mean sunrise on Thursday, January 23rd, A.D. 1141, and at mean sunrise on Friday, February 7th, in that year the fourteenth tithi of the second fortnight of Magha was current. It expired 16 h. 26 m. after mean sunrise, and consequently was not current at midnight. Considering, however, that it was current on the Friday till within 1 h. 34 m. of midnight, it is possible that the

¹ No. 572 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

Mahā-Śivarātri which took place at that midnight might have been connected with it. In Professor Kielhorn's notes on Hindu Festal Days, I find that the Mahā-Śivarātri festival of the 14th krishpa of Māgha is considered very auspicious when it is joined with the yōga Śiva, and this happened to be the case on this particular Friday. The yōga Parigha ended shortly after sunrise on that day, and Śiva was current at the following midnight, or at the moment of the Śivarātri. The date, however, is unsatisfactory in the matter of the nakshatra. The nakshatra Śravaņa had expired 3 h. 9 m. before mean sunrise on that Friday, and during the whole of Friday, including the Śivarātri moment of midnight, the nakshatra was Dhanishthā.

3. On the twelfth day of Kumbha, Kaliyaga 4245, which corresponded to Friday, February 4th, A.D. 1144, the fourteenth tithi of the second fortnight of Magha expired 13 h. 58 m. after mean sunrise. It was not therefore current at the Friday midnight, but nevertheless the Friday would have been coupled with it. This day, the fourteenth of the dark fortnight of Magha, was the day of the Mahā-Śivaratri festival; and the occasion was especially auspicious, because the hour of midnight coincided with the yoga Śiva. The yoga at mean sunrise was Parigba, but Śiva began at 9-4 p.m. and was current at midnight. The sakshatra Śravana expired, by the equal space system, 51 m. after mean sunrise on Friday, and the same by Garga. By the Brahma-siddhānta it expired 2 h. 18 m. after sunrise. I find no fault in this date.

4. On the twenty-fourth day of Kumbha, Kaliyuga 4252, which corresponded to Friday, February 16th, 1151 A.D., the fourteenth tithi of the second fortnight of Māgha, which was a Mahā-Sivarātri day, began 6 h. 35 m. after mean sunrise, was current at midnight, which was the moment of the festival, and expired 8 h. 9 m. after mean sunrise on the Saturday. The nakshatra Śravana had, however, expired before sunrise on that Friday by all systems, and during the whole of that day and till very shortly before sunrise on the Saturday the ruling nakshatra was Dhanishthā. Śatabhishaj began 1 h. 34 m. before sunrise on the Saturday, by the equal space system and Garga. This date therefore would be satisfactory if the nakshatra had been quoted as Dhanishthā and not Śravana; but I consider the date, February A.D. 1151, too late to be in the eighth year of Kulöttunga-Chōla II. He succeeded Vikrama whose reign began in A.D. 1118, and who is declared by several inscriptions to have reigned for 15 years, though we have records of him as late as 1135 A.D. That, however, is his latest known date.

Of the four dates now analyzed, the nearest, and in my opinion the most probable, is No. 3, viz. Friday, February 4th, A.D. 1144. The Chellür grant of this king appears to have been issued in 1143, but the regnal year is not given there. If I am right, the present inscription would make the reign begin between February 5th A.D. 1136 and February 4th A.D. 1137.

D.—RAJADHIRAJA II. (?)

167.—In the Saumyanāthasvāmin temple at Nandalūr. 3

1 Sva[sti] śrī [ll*] Rājādhirājadövarku yā[odu 1]2āvad-āna Hēmalambi-samvat-sarattu Magara-nāyarru pū[rvva]-pakshattu [pra]thamaiyam(yum) Śani-kkilam-aiyum perra Aviṭṭattu nā].

"In the [1]2th year, which was the (cyclic) year Hēmalamba, (of the reign) of Rājādhirājadēva,—on the day of Śravishṭhā, which corresponded to a Saturday and to the first tithi of the first fortnight of the month of Makara."

This by the equal space system and Garga. By the Brahma-siddhants, Sravana expired 1 h. 42 m. before

^{*} But see below, No. 190.

⁸ No. 571 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

I have tested all the years bearing the cyclic name Hemulamba from A.D. 997, which was the twelfth regnal year of Rajaraja-Chola I. down to A.D. 1297, which might possibly have been in the reign of a king hitherto unknown to us by name. In no case, however, are all the elements of the date reconciled except in A.D. 1177, which was a Hemalamba year, but was the fifteenth and not the twelfth regnal year of Rajadhiraja II. From the date alone I am led to believe that the inscription records an event in the fifteenth year of Rajadhiraja II. corresponding to Saturday, January 21st, A.D. 1178, which was the 28th day of Makara. On that day, at mean snarise, the first tithi of the first fortnight of Magha was current, and the nakshatra was Śravishthā. The tithi ended 20 h. 28 m.; and the nakshatra, by the equal space system and Garga, ended 12 h. 0 m. and by the Brahma-siddhānta 13 h. 7 m. after mean sunrise.

If I am correct, this inscription brings the reign of Rajadhiraja II. down to within six months of the accession of Kulottunga-Chola III. in July A.D. 1178. It should be noted that all the five inscriptions of this king examined by Kielhorn begin with the words kadal śūlnda.

E.-KULOTTUNGA-CHOLA III,

168.—In the Airāvatēšvara temple at Maruttuvakkudi.

| 1 | Sva[sti] śr[i]: 6 Puyal [vāytta] |
|----|--|
| 10 | kō=Ppara- |
| 11 | kē[śariparu]mar=āṇa Tiri[bu]vaṇa[chcha]kkaravartti |
| | ³ da[rolina |
| 12 | śri]-Kulottunga-[Ś]o[la]devarkku [iya]ndu patt[avadu] Ka[r]- |
| 13 | kadaga-nāyaggu pārva-paksha-ttuvādešiyu[m*] [Sa]ni-kkilamai[yum] pe- |
| | ra Mülattu nāļ. |
| | is to the touth (wear) (of the reion) of king Parakesariyarman alias the emperor |

"In the tenth [year] (of the reign) of king Parakësarivarman alias the emperor of the three worlds, the glorious Kulöttunga-Chöladëva, who was pleased to [take Madurai]—on the day of Müla, which corresponded to a [Saturday] and to the twelfth tithi of the first fortnight of the month of Karkataka."

The date corresponds to Saturday, July 18th, A.D. 1187, which was in the tenth year of Kulattanga-Chola III. On that day the twelfth tithi of the bright fortnight of Śrāvana began 9 m. before mean sunrise. The nakshatra at that moment was Mūla by all systems. It expired by the equal space system 20 h. 39 m. later, by Garga 8 h. 31 m. later, and by the Brahma-siddhānta 3 h. 13 m. later. The Saturday in question was the 22nd day of Karkataka.

169.— In the Manikanthēśvara temple at Kāṇippškkam.4

1 Svasti śrī [#*] Kulöttunga-Śoladevarku [yan]du pannirandavadukku Śagaraiyandu ayiratt-oru-nurr-irandil Uttarayaua-sankramatt-annu Tingal-kilamaiyum Pūśamum perra nal.

"In the twelfth year, (which corresponded) to the Saka year one thousand one hundred and two, (of the reign) of Kulöttunga-Chöladeva,—on the day of the Uttarayana-samkranti, the day which corresponded to (the nakshatra) Pushya and to a Monday."

The date is inaccurate for Saka 1102, but is perfectly accurate for Saka 1112, in which year the Uttarayana-samkranti fell in the twelfth year of the reign of Kulöttunga-Chola III.

^{1 [}The second digit of the date is quite distinct in the original and caunot be read as 5. - Ed.]

No. 393 of the Madras Epigraphical collection for 1907.
The original is damaged here; restors gal Madars kon

^{*} No. 00 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

16

It is inaccurate for that regnal year of any other king bearing that name and at present known to us. I am, therefore, satisfied that the Śaka year was erroneously given as 1102 instead of 1112.

In the twelfth year of the reign of Kulöttunga-Chola III. the Uttarayana-samkranti of Saka 1112 occurred on Monday, December 25th, A.D. 1189, at 5 h. 55 m. after mean sunrise. The nakshatra at sucrise was Pushya by all systems. By the equal space system and that of Garga it expired 23 h. 44 m., and by the Brahma-siddhanta 21 h. 26 m. after mean sunrise on that day.

170.- In the Śivayoganāthasvāmin temple at Tiruviśalūr.1

- 1 Svast[i śri]: 6 T[i]ribava[na]chchakkara[va]tt[i] Madurai[y]um [P]andi[yan] mudi-tta[laiyu]n=gondarulina śr[i]-Kulo[ttunga-Śola]devarkku yandu pa[d]in-elavada Kumbha-naya[x]xu a[para-pa]kshattu pradamaiyum [Śani]-
- 2 kkilamai [p]erra Ani[lat]tu [n]ā].

"In the seventeenth year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the glorious Kulöttunga-Chöladeva, who was pleased to take Madurai and the crowned head of the Pandya,—on the day of Anuradha, which corresponded to a [Saturday] and to the first tithi of the second fortnight of the month of Kumbha."

The regnal year of Kulottunga-Chola III. is now clearly established by the labours of Professor Kielhorn, and we know that the 17th year of that king began between the 6th and 8th July, A.D. 1194. On the fifth day of Kumbha in the seventeenth regnal year, which corresponds to Saturday, January 28th 1195, the first tithi of the second fortnight was current at mean sunrise and it expired 14 h. 10 m. later. So far the date given is regular. But the nakshatrar during that day were Magha and Parra-Phalguni. On Saturday, a week later, vis. February 4th, the nakshatra was Anuradha, and if for 'first' tithi we could read 'eighth,' the date would be perfectly regular. But this would not be permissible considering that the word 'first' is clearly expressed in letters and not in figures.\(^2\) It is possible that the date is genuine and incorrect only in giving the wrong nakshatra.\(^3\)

It would be irregular for the seventeenth regnal year of Kulöttunga I. As for Kulöttunga II. we do not as yet know his initial date, and the attempts I have made to guess at it from this inscription have proved fruitless; no year that I have attempted as his possible 17th giving me elements exactly meeting those of the inscription.

The date is therefore unsatisfactory, but this is unimportant as others of the same regnal year have been found correct (above, Vol. VII. p. 172). In the thirty-seven dates of inscriptions in this reign examined by Kielhorn, there are no less than eleven instances of wrong quotation in the originals (above, Vol. IX. pp. 220-21).

¹ No. 353 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

The date should be compared with Kielborn's No. 69 (above, Vol. VII. p. 172). The solar month in each case is Kumbha in the king's 17th year. At mean sunrise on the first civil day of that month, which corresponded to January 24th, A.D. 1195, the eleventh day of the bright fortuight of Mägha had only 9 minutes to run. February, was Kielborn's date No. 69, where the ackeletra was Uttara-Bhadrapadā. A date 16 days earlier than tould not have had Annradhā for its nakshatra; so it is clear that the record is intrinsically wrong.

171.- In the Saumyanāthasyāmin temple at Nandalūr.

I [S]vasti śri [II*] Kulattunga-Soladevark-i[yan]du 24avud(avad)-ana dubhi-samvatsarattu Rishabha-nāyag[ru] pūryva-pakshattu triti[vai]yu[m*] Velli-kkila m*][ai]-

2 yum perra Mrigasisha[tta](sirshattu) nāl-

"In the 24th year, which was the (cyclic) year Dundubhi, (of the reign) of Kulottunga-Chōladēva, -on the day of Mrigasīrsha, which corresponded to a Friday and to the third tithi of the first fortnight of the month of Rishabha."

This date is quite regular. The 24th year of Kulottunga-Chola III. began July 6th to 8th, A.D. 1201, the cyclic year being by the southern system, Dundubhi from the Mesha-samkranti on 24th March, A.D. 1202. On the second day of the solar month Vrishabba, which corresponded to Friday, April 26th A.D. 1202, the third tithi of the first fortnight of nija-Vaisakha was current. It had begun 9 h. 7 m. before mean sunrise on that Friday; on which day the nakshatra Mrigasirsha expired, by the equal space system and that of Garga 12 h. 47 m., and by the Brahma-siddhanta 11 h. 20 m. after mean sunrise.

172,- In the Ömkäresvara temple at Kuttalam.

1 6_ Svasti šri [li*] Payal va[y*][tta]3 . Tiribuvanachchakkaravatt[i]ga[| Madu]r[ai]yum Ilamum Pandi[yan] mu[di-t]talaiyun-gondaruliya [sri]-[Kulottunga*]-Sola[de]va[rku] [yan*]du 2[5 a]vadu M[i]na-naya[r]ru pratha[mai]yu[m] Na[yarru-k]k[i]ia[m]ai[yum] pūrvva-pakshattu Asvati]-nal.

"In the 2[5]th year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the glorious [Kulöttunga]-Chōjadēva, who was pleased to take Madurai, Îlam (Ceylon) and the crowned head of the Pandya, -on the day of [Asvini], which corresponded to a [Sunday] and to the first tithi of the first fortuight of the month of Mina."

The date corresponds to Sunday, March 15th, A.D. 1203, which was the 22nd day of Mina. On that day, at mean sunrise, the tithi was the first of the bright fortnight of Chaitra. though this tithi expired 1 h. 12 m. later. By all systems the nakshatra Asvini had begun 3 h. 21 m. before mean sunrise on that day. This day was in the 25th year of Kulottuoga-Choja III.

173.- In the Ömkäresvara temple at Kuttalam.

I 6 Hara: 6 Svasti ári [10] Paya[1] váytta . . Tir[i]buvanachchakkaravatt[i]gal Madu[r]ai[y]um Ilamum Pāndiyan mudi-[tta]laiyun-gondaruliya śr[1]-Kulotuno[ga-S]olade[varkku y]apdu 25avadu Magara-[nayarra] . panjamiyum San[i]-kk[i]la[m]ai[yu]m pe[ma] Uttirattu -[pa]kshatta n[ā]].

"In the 25th year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the glorious Kulöttunga-Chöladeva, who was pleased to take Madurai, Ilam (Ceylon) and the crowned head of the Paudya .- on the day of Uttara-Phalguni, which corresponded to a Saturday and to the fortnight of the month of Makara," fifth tithi of the

No. 601 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

² No. 482 of the same collection.

The original is damaged here. Between ed of edgits and the next word there is space only for two akshoras.

No. 479 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

The original is completely damaged. It is therefore impossible to say if the fortnight was the first (pures) or the second (apara).

The original inscription must have recorded the fifth tithi of the second fortnight. This tithi, in luni-solar Pausha, fell on Saturday, 4th January, A.D. 1203, which was the 10th day of Makara in the 25th year of Kulottuoga-Chola III. It expired 9 h. 8 m. after mean sunrise. At mean sunrise the nakshatra was Uttara-Phalguni, and this lasted till 9 h. 25 m. by the equal space system and that of Garga, and by the Brahma-siddhanta till 5 h. 44 m. after mean sunrise. On the other hand, the fifth tithi of the first fortnight (of Magha) fell on a Sunday and the nakshatra was Uttara-Bhadrapada; so this was not the date in question.

174.—In the Ömkärēśvara temple at Kuttālam.

- 1 Hara & Svasti śri [ll*] Payal [v]áyttu Tir[i]buvanachchakkaravattigal [Ma]duraiyum Ilamum Pandiyan mudi-ttalaiyun-gondarufi[ya] śri-Kulöttunga-Söladevarku yandu 25[a]vadu Mina-nayarru pürvva-pakshattu panjami-
- 2 yum Budan-kilamaiyum perra Rosan[i]-na].

"In the 25th year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the glorious Kulöttunga-Chöladevs, who was pleased to take Madurai, Îlam (Ceylon) and the crowned head of the Pandya, on the day of Rohini which corresponded to a Wednesday, and to the fifth tithi of the first fortnight of the month of Mina.

The date regularly corresponds to Wednesday, March 19th, A.D. 1203, which was the 25th day of Mina, and on which day the fifth tithi of the first fortnight of Chaitra ended 16 h. 16 m. after mean sunrise. The nakshatra at mean sourise was Rohiol by all systems. It expired, by the equal space system and Garga 15 h. 44 m., and by the Brahma-siddhanta 14 h. 37 m. after mean sunrise.

175.—In the Panchanadesvara temple at Mayavaram.

- 1 6 Sust[i](svasti) śr[i] [||*] T[i]r[ibuvanach]chak[karava]tt[i]gal
- 2 Maduraiyum Ilamun-Garuvārum [Pā]odiya-
- 3 n mudi-ttalaiyun=gondaru][i]ya [śri-Ku]-
- 4 löttunga-[S]o[lad]ē[varku y andu
- 5 [i]rabattaiñjā[vadn Magara-n]ayarru pür[va-
- 6 pa]ksbattu šaduttaš[i]yum Tinggat(tingat)-kilamai-
- 7 yam pegga [Puparpūša]ttu nal.

"In the twenty-fifth year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the glorious Kulöttunga-Choladeva, who was pleased to take Madurai, Îlam (Ceylon), Karuvur and the crowned head of the Pandya, -on the day of [Punarvasu] which corresponded to a Monday and to the fourteenth tithi of the first forteight of the month of [Makara]."

This date would have been perfectly accurate if the fifteenth sithi of the first fortnight had been quoted instead of the fourteenth, and I think this mistake must actually have been made.3 In the twenty-fifth year of Kulottunga-Chola III, this date corresponds to Monday, December 30th, A.D. 1203, which was the fifth day of Makara. On that day, the fifteenth tithi of the first fortnight of Pausha, which was current at mean sunrise, ended 12 h. 23 m. later; the nakshatra being Punarvasa till 10 h. 5 m. after mean sunrise by the equal space system and that of Garga, and till 8 h. 3 m. by the Brahma-siddhanta. The fourteenth tithi expired 14 h. 15 m. after mean sunrise on the preceding Sunday, at which moment (mean sunrise)

¹ No. 484 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

² No. 351 of the same collection.

³ Dr. Kielhorn has noticed several similar instances of misquotation of tithis during this reign (see footnotes to his list in Vol. IX. p. 220).

the nakshatra Ardra was current, ending (and Punarvasu beginning) 11 h. 36 m. later. But by Garga and the Brahma-siddhanta Punarvasu was current on that Sunday at mean sunrise, having begun by the former 31 m., and by the latter 2 h. 6 m., before that moment.

The date is five days earlier than No. 173 above.

176.—In the Panchanadesvara temple at Mayavaram.

- 1 ||-Svasti śr[i] [||*] [Tri]bhuvanachchakkaravar[t]-
- 2 tigal Maduraiyum Ila[mu]a.Ga-
- 3 [ruvūrum Pāņ]di[ya]ņ [mu]di-tta[lai]yu-
- 4 [a]=gondaruliya [śri]-Kulot[tu]-
- 5 n[ga]-So[la]devarkku yandu [25]6 vad[u] Magara-[n]a[ya]rru p[d]r[va-paksha]ttu śa[du]r-
- 8 Pu[nar]pūša[t]tu [n]al.

This is precisely the same date as the last, and it is barely possible that it might be regular if the original contained the week-day "Sunday"; but this is unlikely, since the makshatra Punarvasu could only be connected with the Sunday by the systems of Garga and the Brahmasiddhanta; and then only for 31 m. before mean sunrise on the Monday by the former, and for 2 h. 6 m. by the latter. It is far more likely that the day was Monday, December 30th, A.D. 1202, and that the tith should have been entered as the fifteenth.

177.—In the Panchanadesvara temple at Mayavaram.

- 1 & Su[sti](svasti) śr[1] [#] T[iri]b[u]vanaśakka[rava]tt[igal Maduraiyum] I-
- 2 lamun-Garuvu[ru*]m Pandiyan mudi-ttalaiyun-[go]nda-
- 3 [ruliya śri]-Kulöttunga-Śo[ladeva-
- 4 rku ylandu 25[va]du Maga[ra-nayarru]=
- 5 ppūrva-pakshatta śadurt[teśiyum Tinga]-
- 6 l-kilamaiyum perra P[u]parpūšattu n-
- 7 ā].

"In the 25th year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the glorious Kulöttunga-Chōladēva, who was pleased to take [Madurai], Ilam (Ceylon), Karuvūr and the crowned head of the Pāṇḍya,—on the day of Punarvasu, which corresponded to a [Monday] and to the fourteenth tithi of the first fortnight of the month of Makara."

The same remarks apply to this as to the preceding two dates. They are all the same dates and are recorded on the walls of the same temple.

178.—In the Saumyanāthasvāmin temple at Nandalūr.4

- - 1 No. 383 of the Madras Epigraphical collection for 1907.
 - Line 7 is very badly damaged and it is not possible to make out the week day.
 - 2 No. 380 of the Madras Epigraphical collection for 1907.
 - No. 582 of the same collection.

"In the 3[1]st year, which was the (cyclic) year Sukla, (of the reign) of the glorious Kulöttunga-Chōjadēva, the emperor of the three worlds, who was pleased to take Madurai and the crowned head of the Pandya,-on the occasion of the vernal equinox (Chaitra-vishura), which corresponded to (the day of) Svati, to a Tuesday and to the first tithi of the second fortnight."

This date is correct in all particulars. The cyclic year Sukla in question was A.D. 1209-10; and the vernal equinox on the 24th March, A.D. 1209, was in the thirty-first year of Kulottunga-Chola III. That day was a Tuesday, and was the last day of the month Mina. The vernal equinox occurred at 18 h. 22 m. after mean sunrise by the Arya-siddhanta, and 19 h. 40 m. after it by the Sarya-siddbants. Whichever authority was used the result is similar. At mean sunrise that day the first tithi of the second fortnight of Chaitra was current, and it lasted for 4 h. 32 m. The nakshatra Svati was current at mean sunrise, and expired by the equal-space system 20 h. 23 m. later, by Garga 8 h. 11 m. later, and by the Brahmasiddhants 4 h. 4 m. later.

It is evident from this that the calculators who framed the calendars of that time and place coupled with the day on which the vernal equinox occurred the name of the sithi current at mean sunrise of that day, and not the name of the tithi actually current at the moment of the equinox. For, at the moment of the vernal equinox, the second tithi of the second fortuight was current. This adhesion to mean suprise as fixing the tithi coupled with the day is strongly marked in Kielhorn's Chola No. 70 (above, Vol. VII., pp. 172-3) where, though a thirteenth tithi ended only a minute or two after mean sunrise, it is mentioned as the day's equivalent tithi, in lieu of the 14th.

179. - In the Panchanadeśvara temple at Mayavaram.

1 -||| Svasti śri [||*] Tiribuvanachcha[k].

2 karavarttiga[1] Marudaiyum³ I[la-

- 3 mun] =Gar[u]v[6ru]m [Pau]di[ya]n m[udi-4 ttalaiyu]n=go[n]daru[i] v[i]rar-[a]bhi[shē-
- 5 ka]mum vijaiyar-[a]bhishekamu[m
- 6 pa]qqi-aruli[ya T]ir[i]buvaqa[virade]-
- 7 varkku yaodu 33 Ishabha-n[aya] rra a-
- 8 [pa]ra-bha(pa)kshattu [da]śami[yum⁵ T]ingat-kila[mai]yu[m

9 perra Ut]tirattad[i]-na[i].

"In the 33rd year (of the reign) of the emperor of the three worlds, Tribhuvanaviradēva, who was pleased to take Madurai, Ilam (Ceylon), Karuvūr and the crowned bend of the Pandya and was pleased to perform the anointment of heroes and the anointment of victors, - on the day of Uttara-Bhadrapada, which corresponded to a Monday and to the tenth tithi of the second fortnight of the month of Rishabha."

The date corresponds to Monday, May 9th, A.D. 1211, which was the fifteenth day of the month Vrishabha. On that day the tenth tiths of the second fortnight of Vaisakha ended 14 b. 32 m. after mean sunrise; the nakshatra Uttara-Bhadrapada ended by the equal space system and according to Garga 21 h. 26 m., and by the Brahma-siddhanta 21 h. 42 m. after mean sunrise.

¹ No. 352 of the Madras Epigraphical collection for 1907. Marudai is a popular form of Madurai.

The absharms gwm seem to be corrected by the engraver from tinga.

180 .- In the Kailasanatha temple at Rishiyur.

1 Tiribuvanachchakkara[va]ttiga! Ma[du]raiyum Îla[mu][m*] [Karuvû]rum Pândiyan vijaiyar-[a]bhishēkamum vīrar-abishēkamum kondu mudi-ttalaiyum T[i]ribuvanavīradēvarku yāņdu mu[p]pattu-mūngāvadu Minapaun[i]yarulina trayoda[śi]yum [Ti]ngal-k[i]lamaiyum apara-pakshattu nayaggu Pürattādi-nāl.

"In the thirty-third year (of the reign) of the emperor of the three worlds, Tribhuvanaviradēva, who took Madurai, Ilam, Karuvūr and the crowned head of the Pandya and was pleased to perform the anointment of heroes and the ancintment of victors,-on the day of Purva-Bhadrapada, which corresponded to a Monday and to the thirteenth tithi of the second fortnight of the month of Mina."

The day corresponds to Monday, March 14th, A.D. 1211, which was the twentieth day of the month Mins. On that day, the thirteenth tithi of the second fortnight of Phalguna ended 15 h. 18 m. after mean sunrise. By the system of Garga the nakshatra, which was Parva-Bhadrapada at mean sanrise, ended 18 h. 34 m. later; and by the Brahma-siddhanta the same nakshaira was current at mean sunrise, ending 19 h. 17 m. later. But by the equal space system Satabhishaj was current at mean suarise, and Purva-Bhadrapada began 6 h. 26 m. after that moment, or about 26 m. after midday. This seems to show, either that the nakshatra was calculated by one of the first two systems, or that the calculators worked out the nakshatra ruling at the moment of the event recorded, which, if it took place on that day between about 12-26 P.M. and 3-18 P.M., would have coincided with the thirteenth tithi of the second fortnight and with the nakshatra Pürva-Bhadrapada.

181 .- In the Ömkäresvara temple at Kuttālam.2

1 6 Hara: 6 Svasti śri: [Pu]yal váyttu Tiribuvanachchakkara-Pandiyan Ila[mu]m Maduraiy [n]m [vattiga*] k[o]ndaru[liya śri-Ku]lot[tu]nga-Śolade-2 varku yaqdu 35[a]vadu Mina-nayarru pürvva-paksha[t]tu šadatthiyum Ševvay-

kkila[m*]ai[yu*]m perra K[n]tt[i]gai-[n]a].

"In the 35th year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the [glorious] Kulöttunga-Choladeva, who was pleased to take Madurai, Ilam (Ceylon)3 and the crowned head of the Pandya, - on the day of Krittika, which corresponded to a Tuesday and to the fourth tithi of the first fortnight of the month of Mina.

The nakshatra in this date seems to have been wrongly calculated. In the thirty-fifth year of Kulottunga-Chola III., the fourth tithi of the first fortnight of Phalguna was current at mean sunrise of Tuesday, 26th February, A.D. 1213, and expired S h. 30 m. later. The day was the fifth of Mina. At mean sunrise on that day the nakshatra Krittika was not current by any system; but by that of Garga it began 6 h. 2 m. later, by the Brahma-siddhanta 5 h. 34 m. later, and by the equal space system 18 h. 10 m. later. Krittika, therefore, coincided with the fourth tithi of the first fortnight during 2 h. 28 m. by Garga, and by the Brahma-siddhanta during 2 h. 56 m. in the middle of the day of that Tuesday. But by the equal space system it began when the fifth tithi was current. I am satisfied, however, that the date is correct, but that the nakshatra

No. 476 of the Madrae Epigraphical collection for 1907.

^{*} Karuvur, which figures among the conquests of the king in the two preceding inscriptions, seems to be omitted here.

is wrongly quoted as Krittika when it should have been Bharani. Amongst the thirty-six dates of this reign published by Kielhorn, there are ten instances of such mistakes, three being mistakes in nakeka(ras.

F .- RAJARAJA III.

182 .- In the Mayuranathasvamin temple at Mayavaram.1

- [110] T[iru]buvanasarkka[ra](chakra)va[tti]gal 1 [Sva]st[i] fr[1] śr[i-2Rā]jarā-
- 2 jaděvarku [y]ándu padi[n]nālāvadu(padinālāvadu) Tulā-[n]āyarru
- tri[ti]yaiyum [N]ayarru-kk[i]lamaiya[m] 3 [ama]ra(apara)-pakshattu per[ra]
- 4 [U]roh[i]ņi-nā].

"In the fourteenth year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the glorious Rājarājadēva, - on the day of Rōhini, which corresponded to a Sunday and to the third tithi of the second fortuight of the month of Tula."

This date regularly corresponds to Sunday, October 7th, A.D. 1229, and the tenth day of Tula, in the fourteenth year of Rajaraja III. On that day, the third tiths of the second fortnight of Asvina expired 5 h. 23 m. after mean sunrise, while the nakshatra which was current at that moment was Robini by all systems. It expired, by the equal space system and by Garga, 20 h. 31 m., and by the Brahma-siddhanta 19 h. 25 m. ofter mean sunrise.

183.—In the Saumyanāthasvāmin temple at Nandalūr.3

- 1 Svasti śri [1*] Rājarājadēvarku yāndu [22]-4
- 2 avad-ana Hemalambi-samvarsa(samvatsa)rattu-Kku-
- 3 [m]bha-nāyargu apara-pakshattu shashtiyum Sani-
- 4 kkilamaiyum perra Sodi-nal .
- 13 I-ddévarku [2]4 avad[u]
- 14 Vikari-samvarśa (samvatsa) rattu-Ttula-[naya]-
- 15 gr-npara-pakshattu tritiyaiyun=Dingat-
- 16 kilamaiyum perra Mrigasirshattu nā-
- 17 1.

"In the [22]nd year (of the reign) of Rajarajadeva, which was the (cyclic) year Hemalamba, -on the day of Svati which corresponded to a Saturday and to the sixth tithi of the second fortnight of the month of Kumbha on the day of Mrigasirsha, which corresponded to a Monday and to the third tithi of the second fortnight of the month of Tula of the year Vikarin (which corresponded to) the [2]4th (year) of the same king."

The first of these dates corresponds to Saturday, February 8th, A.D. 1238, which was the fourteenth day of Kumbha. At mean sunrise on that day the sixth tithi of the second fortnight of Magha, which had begun 30 m. earlier, was current. By the equal-space system the nakshatra Svati was current, ending 12 h. 55 m., and by Garga also, ending 43 m., after mean sunrise. But by the Brahma-siddhanta Višakhā was current, it having begun 3 h. 25 m. before mean sunrise.

The date was in the twenty-second year of Rajaraja III.

No. 372 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

² The length of rd appears to be corrected by the engraver from ku.

No. 596 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

In the Assaul Report for 1907-08, p. 49, I read the date as the [2]3rd year. On examining the original again it seems to me that the date is probably the [22]nd year.

The second of these two dates corresponds to Monday, October 17th, A.D. 1239, which was the twentieth day of Tula, and was in the twenty-fourth year of Rajaraja III. At mean suurise on that day, the third tithi of the second fortnight of Karttika was current, ending 6 h. 23 m. later; the nakshatra Mrigasirsha, however, only began, by the equal space system and that of Garga, 4 h. 39 m. after mean sunrise, and by the Brahma-siddhanta 3 h. 32 m. after it. The nakshatra at mean sunrise was by all systems Rohini. Still I have little doubt that the date is as above stated, although the nakshatra allotted to it is not very accurate.

164.—In the Mahālingasvāmin temple at Tiruvidaimarudūr.1

1 Svast[i] śr[i] [i*] T[i]r[i]buvanachchakravattigaļ śri-[i]rāśarāśadōva[r*]k[ku] yāndu 27 āvadu Magara-nā[ya]rru pūrvva-pakshattu paūjamiyum Budan-kiļamaiyum perra Pū[śa]ttu nāļ.

"In the 27th year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the glorious Rājarājadēva,—on the day of Pushya, which corresponded to a Wednesday and to the fifth

tithi of the first fortnight of the month of Makara."

The fifth tithi in question gives a totally wrong result in this date, but the fifteenth is in accord with the other details. If this mistake were made by the engravers, the date would correspond to Wednesday, January 7th, A.D. 1243. On that day, which was in the twenty-seventh year of Rajaraja III. and was the thirteenth day of Makara, the fifteenth tithi of the first fortnight of Pausha was current at mean sunrise and ended 19 h. 58 m. later. The nakshatra, by the equal space system and by Garga, was Panarvasu at mean sunrise; but Pushya began 1 h. 46 m. later, and was therefore current during seventeen hours of the fifteenth tithi in question. By the Brahma-siddhanta Pushya had began 16 m. before sunrise.

There can be little doubt that the tithi should have been quoted as the fifteenth instead of the fifth.2

G.-RAJENDRA-CHOLA III.(?).

185.—In the Uttsravēdišvara temple at Kuttālam.

- 1 Hara 6. Svasti śrî [1*] Tiri[bu]vaŋachchakkaravattiga] śri-Rā[jē]ndira-[Śola]dēvag[ku yā]ṇḍu lāvadu Tulā-nāyaggu pārvva-pakshattu navamiyum Viyāla-kki[lamaiyum pegga A]*-
- 2 [vi]ttattu nal.

"In the 15th year (of the reign) of the emperor of the three worlds, the glorious Ra[jē]udra-[Chōļa]dēva,—on the day of [Śravishṭhā], which corresponded to a Thursday and to the ninth tithi of the first fortnight of the month of Tulā."

This date might be accurate for the fifteenth year of Rajandra-Chola II., otherwise called Kulöttunga-Chola I., and is certainly accurate for the fifteenth year of Rajandra-Chola III. In the former case most of the elements coincide, the date being Thursday, October 10th, A.D. 1084, at mean sunrise on which day the ninth tithiof the first fortnight of Karttika was current, expiring 19 h. 29 m. later; but the nakshatra at mean sunrise was Sravana, Sravishtha (or Dhanishtha) beginning 4 h. 39 m. later by the equal space system and Garga, and 6 h. 6 m. later by the Brahma-siddhanta. The date is so far defective.

No. 291 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

 [[]There is no doubt about the reading panjami,—Ed.]
 No. 495 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

^{*} The original is damaged here. But enough of the writing is seen to show that there is not sufficient room for the syllables pergs A.

But for the fifteenth year of Rajandra-Chola III. all the elements of the date coincide. In that year on Thursday, October 14th, A.D. 1260, which was the seventeenth day of Tula, the ninch tithi of the first fortnight of Karttika ended 16 h. 55 m. after mean sunrise : the nakshatra Sravishtha was current at mean sunrise by all systems, expiring 21 h. 14 m. later by the equal-space system and by Garga, and 22 h. 21 m. later by the Brahma-siddhanta.

I am inclined, therefore, to think that the latter date is the correct one, but the matter can certainly be settled on epigraphic grounds, there being a wide difference between the characters of an inscription of A.D. 1084 and one of A.D. 1260. I have not had a facsimile of the original before me.1

The date is incorrect for the diffeenth year of Rajandra-Chola I. in respect of the week-day; and Rajendradeva did not reign for fifteen years, so far as is yet known.

Since the above notes were in print Mr. Venkayya has kindly sent me the following five dates relating to the reign of Kulöttunga-Choda II., whose accession-date has not yet been fixed.

KULOTTUNGA-CHODA II.

188.-In the Bhavanarayanasvamin temple at Bapatla.

- śrima[t*]-Tribhuvanachakravartti śri-Kulottungga-[Choda]devara 1 Svasti divyasamvatsarambu-
- 1066n=endi Paluguņa-bahula-tri(tri)[tl*]yyayu lu 12 śrābi³ Saka-varushambula Somavara4-
- mu-naiidu.

"Hail! In the year 1066 of the Saka years, in the 12th of the prosperous years (of the reign) of the glorious emperor of the three worlds, śri-Kulottunga-Chodadeva,-on a Monday (which was) the third tithi of the dark (fortnight of) Phalguna."

The only test possible in the case of dates given in this form is to ascertain whether the week-day corresponds with the other data. In this case it does so, and I have no doubt as to its correctness.

On Monday, February 12th, A.D. 1145, which corresponds to the Saka year 1066, expired, at mean sunrise, the 3rd tithi of the dark fortnight of Phalguna was current. It expired 4 h. 24 m. later.

187.—In the Bhāvanārāyaņasvāmin temple at Bāpatla.5

- 1 Svasti śrima[t*]-Tribhuvanachakra[va][rti śri-Kulo*]ttumgga-Chodadevara vijaya-ru-
- iya-samvatsaramulu 16gu śráhi Śaka-varushambulu 1071n-èmti Chaitra-
- 3 śuddha-pańchādaśiyu Sukraváramu-nāmdu.

"Hail! In the year 1071 of the Saka years, which corresponded to the 18th of the years of the victorious reign of the glorious emperor of the three worlds, sri-Kulöttunga-Chodadeva, -on a Friday (which was) the fifteenth tithi of the bright (fortnight of) Chaitra."

The date is correct. Chaitra in Saka 1071 expired fell in A.D. 1149. On Friday, March 25th, A.D. 1149, the 15th tithi of the first fortnight of Chaitra was current, expiring 23 h, 53 m. after mean suprise.

t [On palmographical grounds the inscription must be one of Rajendra-Chola III., and this removes all doubts as to the correctness of the date, wir. October 14, A.D. 1260 .- Ed.]

No. 174 of the Madras Epigraphical collection for 1897.

² For an explanation of this term, see Ind. Aut. Vol. XXV. p. 286.

^{*} The syllable me is added below the line.

No. 173 of the Madras Epigraphical collection for 1897.

188.-In the Bhavanarayanasvamin temple at Bapatla.

śrima[t*]-Tribhuvanachakrava[r]tti śri-Kulöttuniga-Chodadevara divya-1 [Sya]sti [samva]tsaram[bu]-

4 gu śráhi Sa(śa)ka-va[ru]shambulu 1058gun=ĕndi śukla-Simha-masamuna

paksham[u]-

3 na pamchamiy[u] Mamgalavaramuna.

" Hail! In the year 1058 of the Saka years, which corresponded to the 4th of the prosperous years (of the reign) of the glorious emperor of the three worlds, śri-Kulöttuńga-Chodadeva, -on a Tuesday (which was) the fifth tithi of the bright fortnight of the month of Simha."

This date is also correct. On Tuesday, August 4th, A.D. 1136, which corresponded to Saka 1058 expired, the 5th tithi of the bright fortnight of Bhadrapada was current, the day being the 9th of the month Simha. This tithi expired 9 h. 22 m. after mean sunrise on that day.

189.—In the Bhāvanārāyanasvāmin temple at Bāpatla.

1 [Svasti śrimat-Tribhavana]chakravartti śri-Kulöttningga-Chodade-

2 [va]ra divya-samvatsaramulu 11 śrāhi Śaka-varu-

- 3 sharibulu 1065n=ēņti Āshāda(dha)-māsamuna a-
- 4 māvāsyayu Budhavāramu Vye(vya)tīpāta-nimi-

5 tyamuna.

"Hail! In the year 1065 of the Saka years, in the 11th of the prosperous years (of the reign) of the [glorious] emperor of the three worlds, śri-Kulöttunga-Chōdadeva,- on the occasion of a Vyatipata (which occurred on) a Wednesday and the new-moon tithi of the month of Ashadha."

The day in question was Wednesday, July 14th, A.D. 1143. On this day at mean sunrise the 15th tithi of the dark half of Ashadha was current, the exact moment of the new-moon being 4 h. 2 m. later. The yoga Vyatlpäta began on that day at 4 h. 35 m. after mean suarise and lasted all day. It therefore began 33 m. after new-moon.

190.—In the Bhāvanārāyaņasvāmin temple at Bāpaṭla.

Tri[bhu]vanachakravartti śri-Kulottumga-Chodadeva[ra samvatsri [||*] 1 Svasti

la [10]ya[va] śrāhi Sa(śa)ka-varushambulu 1064gun-emți Dum[du]bhi-[sa]mvat-

3 [muna] Áshāḍa(dha)-śukla-ékāda[śi]yu Mamgala[vāramu-nām]ḍu.

"Hail | Prosperity | In the year 1064 of the Saka years, which corresponded to the [10]th of the years (of the reign) of the emperor of the three worlds, sri-Kulöttunga-Chödadeva and to the (cyclic) year Dundubhi, -on a Tuesday, the eleventh tithi of the bright (fortnight of) Ashādha."

I find this date unsatisfactory. Saka 1064 expired was the cyclic year Dundubhi, and the date ought to fall in June or July A.D. 1142 according as the Ashadha in question was the adhika or nija Ashādha, for that month was intercalary in that year. The 11th tithi of the bright fortnight of adhika Ashadba fell in that year on a Saturday. The same tithi of nija

¹ No. 183 of the Madras Epigraphical collection for 1807.

² No. 180 of the same collection.

Ashadha fell on Sunday. Thinking that a mistake might have been made in the fortnight I tested the 11th tithi of the dark fortnight in both months, finding the week-days Sunday in adhika Ashadha and Monday in nija Ashadha. In the latter case, the 11th tithi of the dark fortnight had expired 3 h. 45 m. before mean sunrise on the Tuesday.

The result of the examination of Nos. 186, 187, 188, 189, is to show that the date of the accession of Kulottunga-Choda II. lies between March 26th and July 14th, A.D. 1133.

This leads me to reconsider the four possible dates given to No. 166 (above, p. 125 f.). That date was in this king's eighth year; and while (having that date alone to go by) I stated my opinion that it corresponded to the third of my results, in which date I could find no fault in the elements, vis. Friday, February 4th, A.D. 1144, I now think that the second of my results is the true one, namely, Friday, February 7th, A.D. 1141. Its defect lay in the fact that the quoted nakshatra, Śravana, was one which had expired three hours before mean sunrise on that day, and which could not therefore properly be connected with the Friday, Dhanishtha being the correct nakshatra. But otherwise the result showed that the combination of elements on that day was highly auspicious, and I am of opinion that this fixture may now be accepted, and that the framers of the inscription had made a mistake in their calculation of the nakshatra. February 7th 1141 A.D. would fall in this king's 9th year. The mention of the Saka year in combination with the regnal year in the four regular dates given above may be accepted, for the present at least, as determining the date of accession of Kulöttunga-Chola II.

It follows that March 24th, A.D. 1143, the date of the Chellur plates (Ind. Ant. Vol. XIV. p. 56 ff.; above, Vol. VII. pp. 9-10) fell in this king's tenth year.

No. 25.-DATES OF PANDYA KINGS.

By Robert Sewell, I.C.S. (Retd.), M.R.A.S.

A .- MARAVARMAN SUNDARA-PANDYA I.

68.—In the Nāgēśvaramudaiyār temple at Kalladakurichehi.

- 1 śri-kō Mārapaņmar=āņa Tiri[bu]vanasakkaravadiga] śri-Śōṇāḍakondarujiya śri-Śundara-P[a]pdiyadevark=[i]yandu 20[bad]avadin
- 2 ediram=apdu Kumba-nayirra pārvva-pakshattu aran-diyadi[yu]m Viyālakkilamsiyum p[e]ma Sadaiyattu nāļ.

" In the year opposite the 20th year (of the reign) of the glorious king Maravarman alias the emperor of the three worlds, the glorious Sundara-Pāṇḍyadēva, who was pleased to take the prosperous Chola country,-on the day of Satabhishaj, which corresponded to a Thursday and to the sixth solar day of the first fortnight of the month of Kumbha."

This inscription proves that the Pandya king Maravarman Sundara-Pandya I., whose reign has been determined by the late Professor Kielhorn to have begun between the 29th March and the 4th September A.D. 1216, reigned to a later date than has been previously supposed. The latest date hitherto verified of this king is, I believe, the 19th February, A.D. 1235 (above, Vol. VI. p. 303). This appears in an inscription at Tinnevelly.3 The present inscription, in a temple in the Tinnevelly District, bears a date corresponding to January 29th, 1237 A.D..

¹ No. 96 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

³ Read " rattigal.

Two inscriptions at Kalladakurichchi which give his 22nd year are mentioned by Mr. Venkayya (Nos. 107 and 108 of 1907, and Annual Report for 1907-8, paragraph 43).

The date is regular. On Thursday, January 29th, A.D. 1237, the first day of the bright fortnight of Phalguna ended 5 h. 31 m. after mean sunrise. The solar day was the 6th Kumbha. By the equal space system the nakshatra Satabhishaj was current at mean sunrise and ended 9 h. 46 m. later. By the system of Garga Satabhishaj had expired 2 h. 22 m. before sunrise; and by the Brahma-siddhanta it had expired 1 h. 19 m. before sunrise. This seems to show that the equal space system of nakshatras was used at that time and place. The inscription does not affect Professor Kielhorn's limits (March 29th to September 4th) for the beginning of the reign of this king.

B.-JATAVARMAN VIRA-PANDYA.

69.—In the Muchukundesvara temple at Kodumbāļūr.

- 5 [yar*][ru] pürvva-pakshattu [Viyāļa ?]-kk[i]lamai[yu]m dašam[i]yum pe[gga] Mūlattu [n]ā].

This date is precisely correct for the Vira-Pandya, of whom two inscriptions, vis. in his 7th and 15th years, have been published by Professor Kielhorn (above, Vol. VII. pp. 10-11). His reign began, according to that authority, between 11th November 1252 and 13th July 1253. The 10th November 1267 was in his 15th year, and the present date is correct in all respects for 8th August 1269. It is incorrect for the years 1270 and 1271.

In 1269 the 10th tithi of the bright fortnight of Bhādrapada ended 18 h. 55 m. after mean sunrise on the 11th day of solar Simha, which corresponded to Thursday, 8th August, A.D. 1269. On that day the nakshatra was, by the system of Garga, Mūla for 13 h. 58 m. after mean sunrise, and by the Brahma-siddhānta, for 8 h. 39 m. By the equal space system it was Jyēshṭhā for 1 h. 50 m. after mean sunrise, and then Mūla for the rest of the day.

The date confirms Professor Kielhorn's limits for the accession of this king. It also confirms the suggestion made by Mr. Venkayya in his Annual Report for 1907-8, para. 45, that the Vira-Pandya who immediately preceded Maravarman Kulasekhara I. was the same as this Jatavarman Vira-Pandya. Henceforth we may give him his proper title.

Since his reign began in A.D. 1252-53 and lasted at least 17 years, Jaţāvarman Vira-Pāṇḍya was ruling for at least 8 years at the same time as Jaţāvarman Sundara-Pāṇḍya I. whose reign began in 1251 and lasted till at least 1261 A.D. Moreover he is recognized in this inscription as sovereign in A.D. 1269, while we have Māgavarman Kulaśēkhara I.'s accession in June 1268.

¹ No. 131 of the Madrae Epigraphical collection for 1907.

The king claims to have conquered Konganam, to have taken the river Kaveri and to have performed the ancintment of heroes and the ancintment of victors at Puliyur, i.e. Chidambaram, in the South Arcot District. The statement made in paragraph 45 of my Assaul Report for 1907-08 that this inscription does not mention the conquests of the king is due to a mistake.—Ed.]

C .- MARAVARMAN KULASEKHARA I.

70.—In the Rajasimhēsvara temple at Signamanūr.1

Mārapanmar-ā[na 1 Svasti śri [||*] Ko Tribhuva]nasakravatt[i]gal emmandalamun-gondaruļiya šri-Kulai(la)šēgaradēvarku yāņdu³ [3 va]du³ Risbabhapūrvva-pakshattu [cha]tutthi[yu]m Viyaļa-kkilamaiyum nayarru perra Pū(pu)narpūšattu nāl.

"In the 3rd [or 30th] year (of the reign) of king Maravarman alias the emperor of the three worlds, the glorious Kulasekharadeva, who was pleased to take every country,on the day of Punarvasu which corresponded to a Thursday and to the fourth tithi of the first fortnight of the month of Rishabha."

The accession of this king is fixed by Kielhorn between the 2nd and 27th June A.D. 1268. The 3rd year began in A.D. 1270, and the 30th in A.D. 1297. The given date will fall either in A.D. 1271 or 1298 if correct. As it happens it is equally true for either A.D. 1271 or 1298.

In 1271 the 4th tithi of the first fortnight of luni-solar Jyaishtha expired 16 h. 47 m. after mean sunrise on Thursday, the 19th day of solar Vrishabha, which corresponded to Thursday, May 14th, A.D. 1271. On that day the nakshatra Punarvasu ended by the equal space system, at 10 h. 41 m. after mean sunrise; by the system of Garga the same; by the Brahma-siddhanta at 8 h. 39 m., after mean sunrise.

In 1298 the 4th tithi of the first fortnight of luni-solar Jyaishtha expired 19 h. 29 m. after mean sunrise on Thursday, the 21st day of solar Vrishabha, which corresponded to Thursday, 15th May, A.D. 1298. On that day the nakshatra Punarvasu ended, by the equal space system and the system of Garga, at 11 h. 28 m., and by the Brahma-siddhanta at 9 h. 26 m., after mean sunrise.

I find therefore that the date of the inscription may be either May 14th, 1271, or May 15th 1298 A.D. It is impossible to say which. The date would be inaccurate for either the 3rd or 30th year of Maravarman Kulasekhara II.

71.—In the Siva temple at Pūvālaikkudi.

- 1 Svast[i] śri [II*] Ko Marapanma-
- 2 r-ana Tribhuvanachchakkaraya-
- 3 ttigal emmandalamun=
- 4 goodaruliya śri-Kulaśe-
- 5 garadevarkku yandu 16avadus
- 6 Vri[šchi]ka5-nāyaggu=ppñ[r]vva-paksha-
- 7 ttu [pañja]m[iyum Bu]da[n]-k[i]lamaiyum
- 8 perra Irē[va]d[i]-nā].

"In the 18th year (of the reign) of king Maravarman alias the emperor of the three worlds, the glorious Kulaśekharadeva, who was pleased to take every country,—on the day of Revati, which corresponded to a Wednesday and to the fifth tithi of the first fortnight of

¹ No. 428 of the Madras Epigraphical collection for 1907. The word yands is denoted by an abbreviation.

The original is damaged here. The reading may also be [30]dw.

No. 149 of the Madras Epigraphical collection for 1907. The word deads is denoted by a flourish added to the figure 16. The akshara feld seems to be corrected from filed.

This date is irregular. The month Vrišchika in the 16th year of Maravarman Kulasekhara I. falls in October and November 1283. In that month the fifth tithi of luni-solar Karttika fell on Friday, November 26th, the 29th day of solar Vrischika, and the nakshatras during that day were a large part of Dhamisbtha and a smaller part of Satabhishaj. Calculations for 1284 A.D. prove equally unsatisfactory, the fifth of the bright lunar fortnight in solar Vrišchika ending on Tuesday, November 14th, at 3 h. 7 m. after sunrise, the nakshatra during that period being Sravana by all systems.

The date is also irregular for the 16th year of the reign of Magavarman Kulaśekhara II., in which the fifth tithi of the first fortnight of Vrischika ended on Sunday, 26th November 1329 A.D. at 13 h. 58 m. after sunrise, the nakshatras during that period by all systems being Śravaņa and Dhanishthā.

72.— In the Nageśvaramudaiyar temple at Kalladakurichchi.¹

- Mā[ra]panmmar²=āṇa T[i]rubāṇa(buvana)chehakkara-Ko tll+J śr[i] 1 Svasti
- 2 vatt[i]gal emmandalamu[m3 k]ondaruliya śri-Kula-
- 3 śegarade[va*]rkku [yā]pdu 33 vadu Miduņa-nāyarru 12-
- 4 n=diya[di]yum amāvāsya[yu]m perra Mrigas[i]rshattu nā].

"In the 33rd year (of the reign) of king Maravarman alias the emperor of the three worlds, the glorious Kulaśekharade[va], who was pleased to take every country,-on the day of Mrigasirsha which corresponded to the new moon tithi and to the 12th solar day of the month of Mithuna."

The date is inaccurate for the year 1300 A.D., and correct in all respects for 1301. June 7th, A.D. 1301, Wednesday, was the twelfth solar day of Mithuna; and on that day the new-moon tithi, or amīvāsyā, of the luni-solar month Jyaishtha was current till 9 h. 26 m. after sunrise, which was the actual moment of new moon and the beginning of the month Ashādha. The nakshatra Mrigaéires was current on that day for 2 h. 14 m. after mean sunrise by the systems of Garga and equal space, and for 47 m. by the Brahma-siddhanta.

June 7th, 1301 A.D., being in the king's thirty-third year, we know that he could not have begun to reign earlier than June 8th, 1268.

The outside limits for this king's accession are now June 8 to June 27, 1268 A.D.

73.—In the Rājasimhēšvara temple at Śinnamanūr.

- . . śri-ko Māgapanmar-āna Tiribuvanachchakkara-[||*] 1 Svasti śri 4lvadu
- ye(c)mmanda[lamun]=gondaruliya śri-Kulajē(śè)garadēvarku yandu5 Āņis-māda[m*] 14tēdi? pūrvva-pakshattu prathamaiyum Puņar-
- S pūšamum perra Tingal-kilamai-nāl.

"In the 41st year (of the reign) of the glorious king Maravarman alias the emperor of the three worlds, the glorious Kulaśēkharadēva, who was pleased to take every

¹ No. 98 of the Madras Epigraphical collection for 1907,

² Read cormors.

^{*} The sign for medial i is added at the left top of the letter m.

^{*} No. 431 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

The word yands is denoted by an abbreviation.

^{*} The akshara si is corrected from some other letter,

The word fedi is denoted by two symbols.

country. -on a Monday which corresponded to (the day of) Puparvasu, the first tithi of the first fortnight (and) to the 14th solar day of the month of Ani."

This is the latest date yet found of this king. The date is regular for Monday, 9th June. A.D. 1309, and irregular for A.D. 1307 or 1308. On 9th June, A.D. 1309, which was the fourteenth solar day of Ani (or Mithuna) and a Monday, the first tithi of the bright fortnight of lunisolar Ashadha ended 14 h. 14 m. after sunrise. The nakshatra Punarvasu by the equal space system began, on that day, at 6 h. 6 m. after sunrise and lasted the rest of the day. By the system of Garga and by the Brahma-siddhanta it lasted all day.

The inscription proves that the king's reign could not have begun before 10th June 1268. and gives us as the limit of possible accession the period June 10th to June 27th, 1268 A.D.

D .- JATAVARMAN SUNDARA-PANDYA II.

74.— In the Saumyanathasvamin temple at Nandalur.1

- [11] Ko-Chchadavarmmar-ana Trifbhulvanachchakka[ra]va[r]ttiga| śri-Sundara-Papdyadevarku yan[du] 10avadu Vyaya-samvarsarattu"= [T]tulā-nāyarru=ppūrvva-pakshattu dvā-
- 2 dasiyum Tingat-kk[i]lamai perra Sadayattu nāl.

"In the 10th year (of the reign) of king Jatavarman alias the emperor of the three worlds, the glorious Sundara-Pāṇdyadēva,-on the day of Satabhishaj, which corresponded to a Monday and to the twelfth tithi of the first fortnight of the month of Tula of the (cyclic) year Vyaya."

This date is correct in every respect except perhaps in the matter of the regnal year. It belongs to the reign of Jatavarman Sundara-Pandya II., in whose reign occurred the year Vyaya. There was no such year in the reign of Jatavarman Sundara-Pandya I., which lasted from April, A.D. 1251 till at least July 19, A.D. 1261, that being the last date we have at present of him.

In the cyclic year Vyaya, the second solar day of Tula corresponded to Monday, September 30, A.D. 1286. On that day the twelfth tithi of luni-solar Asvina, which was current at mean sunrise, ended 22 h. 54 m. later; the nakshatra Satabhishaj was current by the equal space system for 10 h. 49 m. after mean sunrise, but by the unequal space systems it had expired shortly before sunrise. I have summarised below the state of our knowledge regarding the accession of this king. The date in question, if the regnal year is correct, fixes the king's accession on or later than 1st October 1276; but this contradicts the results of some other inscriptions. The regnal year may have been wrongly given as 10, instead of 11.

75.—In the Saumyanāthasvāmin temple at Nandalūr,3

- 1 [Sva]sti śri [ll*] Kō-[Chcha]/ja[parma]r-ana Tribhuvanachcha[kravartti]ga[l] śri-Su[nda]ra-Pāṇdyadēvarkku yāṇ[du]
- [15] avadu Viro[dhi]-samvat[sa]rattu Kumba-nayarru pū[rvva-pa]kshattu dasamiyum
- 3 pe[rra Pu]narpišattu nā].

2 Read -sameatra".

No. 500 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

* [The regnal year may also be read as 13,-Ei.] If we could be certain that '13' is the correct reading we should have this king's accession limited to the period February 21st to March 14th, A.D. 1277, and the in-

* Read -kilamaiyum.

¹ No. 592 of the Madrae Epigraphical collection for 1907.

"In the [15]th year (of the reign) of king Jațăvarman alias the emperor of the three worlds, the glorious Sundara-Pāṇḍyadēva,—on the day of Punarvasu which corresponded to a Monday and to the tenth tithi of the first fortnight of the month of Kumbha in the (cyclic) year Virodhin."

This date is regular, and belongs to the reign of Jatavarman Sundara-Pandya II., as there was no cyclic year called Virodhin in the reign of Jatavarman Sundara-Pandya I. The day in question was Monday, February 20th, A.D. 1290. On that day the tenth tithi of the first fortnight of the luni-solar month Phalguna ended 13 h. 45 m. after mean sunrise. During all that period the nakshatra was Punarvasu by both the unequal space systems. By the equal space system Punarvasu began 1 h. 23 m. after sunrise and lasted all day.

It appears that the regnal year in this inscription is illegible, and we cannot therefore argue from it.

76 .- In the Saumyanāthasvāmin temple at Nandalūr.1

- 1 * fri-Sundara-Pandyadē[vakku
- 2 yandu] 17 avadu Nanda[na]-samvasaratin Mina-na[ya]r[ru] pürvva-
- 3 pakshattu dašamiyum Budhan-kilamaiyum perra Pūšattu nā-
- 4 1

"In the 17th year (of the reign) of the glorious Sundara-Pandyadeva,— on the day of Pushya, which corresponded to a Wednesday and to the tenth tithi of the first fortnight of the month of Mina in the (cyclic) year Nandana."

This date must either belong to the reign of Māravarman Sundara-Pāṇdya I., in whose seventeenth year, 1232-33 A.D. there was a cyclic Nandana; or to that of Jaṭāvarman Sundara-Pāṇdya II., in whose seventeenth year, 1292-93 A.D. (if he reigned so long) there was another Nandana. It could not be the Nandana 1532-33 A.D., in the reign of Māravarman Sundara-Pāṇdya Kōṇērmaikoṇḍāṇ, because that year was only the second of the reign; nor could it belong to the reign of any other known Sundara-Pāṇdya, as in these there was no such cyclic year.

Examining the date for A.D. 1232-33 I find that it is unsatisfactory. The tenth tithi of the first fortnight of luni-solar Chaitra in that year corresponded to the twenty-eighth day of solar Mina, which was Tuesday, March 22, A.D. 1233. The tenth tithi ended at 21 h. 2 m. after mean sunrise on that day, or at about 3.2 a.m. on the (European) Wednesday, i.e. some hours before the beginning of the Hindu Wednesday. Pushya ended 39 m. after mean sunrise on the Tuesday by the equal space and Garga systems, while by the Bramha-siddhānta the naskhātra was Āslēshā throughout the tenth tithi.

The date is fairly regular for A.D. 1292-93. In that year the tenth tithi of the first fortnight of Chaitra began 6 h. 52 m. after mean sucrise on Wednesday, March 18th, A.D. 1293, which was the twenty-fourth day of solar Mina. The nakshatra by Garga and the equal space system was Pushya till 18 h. 34 m. after mean sunrise, and by the Brahma-siddhanta till 16 h. 16 m. after mean surrise, on that Wednesday. If this was in the seventeenth year of Jajavarman Sundara-Pandya II., it fixes his accession on or later than March 19th A.D. 1276. It will be seen that, if this is the right date, the 10th tithi was connected with the Wednesday though at sunrise on that day it was not current; and this is unusual. Considering that this inscription is only four days later than No. 77 next following, which is regular in all respects, and that it belongs to the same place and temple, it is safe to assume that the tenth tithi was wrongly quoted for the ninth.

¹ No. 588 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

The beginning of the inscription is mutilated.

I Read .sameates".

77 .- In the Saumyanäthasvämin temple at Nandalfir.

2 Svasti śri [||*] Kō-Chchadavarmmar-ana Tribhuvanachchakrava[r]itigal śri-Sundara-Pandyadevarku yandu 17avad-aua Nanda[pa]-samvatsarattu Mina-nayarru pu[rvva]-

pakshattu panchamiyum Sani-kkilamaiyum perra Rohfini]-

3 nål.

"In the (cyclic) year Nandana, which was the 17th year (of the reign) of king Jatavarman alias the emperor of the three worlds, the glorious Sundara-Pāndyadēva,on the day of Rohini, which corresponded to a Saturday and to the fifth fifth of the first fortnight of the month of Mina."

As in the last case, this year must be either 1232-33 or 1292-93 A.D. For the first it is irregular, for though the nakshatra is correct, the 5th tithi in question fell that year on a Thursday.

For the second, the date is perfectly regular. In A. D. 1292-93 the 5th tithi of the first fortnight of luni-solar Chaitra fell on Saturday, the 20th day of solar Mina, which corresponded with March 14th, A.D. 1293. This 5th tithi ended 14 h. 18 m. after sunrise. The nakshatra was Röhipi throughout the tithi by all the systems.

The corresponding date is therefore Saturday, March 14, 1293 A.D., and the inscription belongs to the reign of Jatavarman Sundara-Pandya II. It was four days earlier than the last inscription. It fixes the king's accession on or after March 15, A.D. 1276.

78.— În the Rājasimhēśvara temple at Sinnamanūr.

1 Svasti éri [61.] Kor-Chadapanmar-ana Tribhuvanachcha[kra]vattigal éri-Sundara-[Pā]ndiyadēvarku [y]āndu 7vadu Magara-[n]āyarru pūrva-pakshattu mūngān=di-[ya]diyum Velli-kki[la]maiyum perra Mrigasirisha(sirsha)ttu nāl.

" In the 7th year (of the reign) of king Jatavarman alias the emperor of the three worlds, the glorious Sundara-Pandyadeva, -on the day of Mrigasīrsha, which corresponded to a Friday and to the third solar day of the first fortnight of the month of Makara."

This date is irregular, for the reign of either of the two known Jatavarman Sundara-Pandyas. I have tried the years 1256, 1257, 1258, 1281, 1282, 1283, which might possibly coincide with, or approximate to, the 7th regnal year of either of those kings, without success. Some element of the inscription appears to be wrong, either in the original or in the copy.3

The exact date of Jatavarman Sundara-Pandya II.'s accession is still doubtful, and must for the present remain so. The following analysis, however, may be found useful. To the list published by Kielhorn in Vol. IX. p. 228 of dates previously examined I now add four more, vis. Nos. 74, 75, 76, 77, above. The tested dates of J. Sundara II. are now fourteen in number.

Of these K. 264 must be discarded. The wording of the date is "intrinsically wrong." K. 53 is doubtful because the regnal year is not clear in the injured original. It appears to be either "11th" or "19th." Working for a possible 19th year, Professor Kielhorn found the date regular for November 10th, A.D. 1294, but is " not fully convinced " that this conclusion is correct. I find myself equally unconvinced, because that date seems too late for this king

¹ No. 594 of the Madras Epigraphical collection for 1907.

² No. 434 of the same collection.

Mr. Venkayya has examined the original with reference to my remarks and states that there is no doubt about the date. I have again goes through my calculations and can only confirm the remarks made in the text; the original is at fault. Indeed in 500 years I find no date for which the given details are satisfactory. " K" stands for the dates published by the late Professor Kielhorn.

Wassaf and Rashid-ud-din assert that "Sundar Pandi" died in Hijra 692, the last day of which year was December 1st, A.D. 1293 (Yule's Marco Polo, II. 269). I see no real reason why we should not accept the date as being one of the 11th year, vis. October 29th, A.D. 1287, and if so, it supports the evidence offered by the second of the two groups given below; but it is perhaps safer to reject the date as a basis for argument. K. 55 is also doubtful since it would seem that, if correct in other respects, a wrong solar month was quoted, and K. 56 must be set aside because it is evident that the regnal year has been wrongly quoted; the date given in A.D. 1286 as the ninth year is at variance with all the other dates yet examined, and would postpone the king's accession to a date subsequent to March 29th, A.D. 1277. I also discard my No. 75 (above) for the reason given in my note on that inscription. This leaves nine dates by which we may be guided, if No. 76 is accepted as I think it certainly may be.

Of these nine, K. 25, K. 27, K. 52, K. 54, put together, give as August 28th, A.D. 1275 to May 15th, A.D. 1276 as the limit; and K. 23, K. 24, and my 74, 76, 77 give us October 1st, A.D. 1276 to March 14th, A.D. 1277, as the limit of the accession of this king.

With regard to overlapping of reigns, e.g. August A.D. 1289 being in the 13th or 14th year of this king (K. 23, 24) when June 27, A.D. 1289, is placed also in the 22nd year of Māravarman Kulašākhara I. (K. 48)—it is well to note that Marco Polo (Yule, II. 267) says "In this province (Maabar) there are five kings who are own brothers. . . . at this end of the province reigns one of those five Royal Brothers, who is a crowned King, and his name is Sonder Bandt Davie." Wassāt, speaking of the same king under the name "Dewar Sundar Pandi" says be had "three brothers, each of whom established himself in independence in some different country" (ibid. 269). This account is strongly supported by the Chinese annals (ibid. 273), where the country is called "Maparh," or Malabar, and is reported to have sent tribute (presents) to Kublai Khān in A.D. 1286. "Pauthier has given some very curious and novel extracts from Chinese sources regarding the diplomatic intercourse with Ma'bar in 1280 and the following years. Among other points these mention 'the five brothers who were Sultans.'" See also my remarks in the last paragraph of No. 69 above.

Colonel Yule's note from which I have quoted gives us some further important information regarding the kingdom (or kingdoms) of Madura at this period. Wassaf introduces (13:0) a king whom he calls "Kales Dewar" who had ruled for 40 years, and whom we (13:0) a king whom he calls "Kales Dewar" who had ruled for 40 years, and whom we may identify with Maravarman Kulasékhara I. in whose 40th year, vis. March 18th 1303 A.D., was engraved the inscription at Tiruvarur (above VIII. p. 276), and in his 41st year, vis. June 9th, A.D. 1309, the inscription at Sippamanur (No. 73 of the present publication). "He had two sons, Sundar Bandi by a lawful wife, and Pirabandi (Vira Pandi?) illegitimate. He designated the latter as his successor. Sundar Bandi, enraged at this, slew his father" and seized the throne. Vira-Pāṇḍya drove him out, and Sundara-Pāṇḍya sought aid from the Muḥammadans, which led to Malik Kafur's raid. The story is confirmed by Amir Khusru.

It must be remembered that this Sundara-Pandya, who murdered his father Kulašė-khara I., was not our Jatavarman Sundara-Pandya II. who seems to have died in A.D. 1293, but a subsequent prince of the same name and family. We have as yet no published inscriptions bearing date between 1309 and 1317 A.D. in the Pandya territories. If any of the parricide Sundara-Pandyas come to light we shall have to call that king (or prince) Sundara-Pandya III.

This was the Kulasskhara to whom the Tamils entrusted the tooth relic corried away by them from Ceylon (Mahasaasa, ch. XC, verse 43). It was returned a few years later. The Mahasaasa also mentions "the five brethren who governed the Pandyan kingdom" in the reign of Bhuvancka Bahu of Ceylou whose date Bell gives as 1277-1288 A.D.

I have written the above, not with the intention of intruding historical notes into a paper which should perhaps be solely chronological in character, but as explanatory of the overlapping of dates at this period. Novertheless a certain amount of historical discussion in connection with dates will surely be welcomed.

E. - MARAVARMAN KULASEKHARA II.

79.— In the Siddhajñānēśvara temple at Pāpānguļam.¹

1 [Sva]sti [śri] [ll*] K[o] Marapanmar=a[na] Tribhuvanachchakra[va]ttiga|emma[nda]la[mun]=gond-a[ruli]ya śri-Kulaśegaradeva[r]ku yandu Svadu? Tula-[nāyarra 2]tēdi³ pūrvva-pakshattu [na]vamiyum [Bu]dbag-kijamai[yu]m perra 2 Tiruvon[a]ttu [nā!].

"In the 8th year (of the reign) of king Maravarman alias the emperor of the three worlds, the glorious Kulasēkharadeva, who was pleased to take every country, -on the day of Sravana which corresponded to a Wednesday, to the ninth tithi of the first fortnight (and) to the 2nd solar day of the month of Tula,"

The reign of Maravarman Kulaśekhara II, began according to Kielhorn (above, Vol. VIII, p. 228) between March 6th and March 29th, A.D. 1314. Work for Tula in his 8th year proves that the 2nd solar day of that month was Wednesday, September 30, 1321 A.D. On that day, the 9th tithi of the bright fortnight of the luni-solar month Asvina was current for 17 h. 13 m. after mean sunrise, while the sakshatra Sravana was current by the equal-space and Garga systems for 23 h. 48 m. after mean suffrise, and by the Brahma-Siddhanta for the whole day except for 1 h. 15 m. after mean sunrise during which period Abhijit was current. This is

The date is irregular for the 8th year of Maravarman Kulasekhara I. in respect of the week-day. The month of Tula in this king's 8th year fell in A.D. 1275. On Monday, September 30, A.D. 1275, which was the 2nd day of solar Tula, the 9th tithi of the bright fortnight of luni-solar Aśvina expired 2 h. 37 m. after mean sunrise; the nakshatra being Śravana by the equal space system and by Garga for 10 h. 13 m., and by the Brahma-Siddhanta for 11 h. 40 m. after mean sunrise. If, therefore, the week-day quoted had been Monday instead of Wednesday, the date would have been perfectly regular. It is worthy of note that the epithet "who was pleased to take every country" is applied only to Jatavarman Sundara-Pandya I. and Magavarman Kulasekhara I. Whichever king this may belong to, the initial date of his reign remains

80.— In the Siddhajñānēśvara temple at Pāpānguļam.

1 [Svasti] ári [||*] Kö Márapan[va]r-ánat Ti[ri]bnva[nach]chakara(kra)vattigal [śri]-Kulai(la)śógaradevarku yándus Sva[da Da]nu-náyarru 11 tediyum7 [a]para-. [m] Sevväy-kki[lamaiyn]m perm Sodi-[nat].

¹ No. 126 of the Government Epigraphist's collection for 1907.

² The words ydads and sads are each expressed by an abbreviation.

I The word tedi is expressed by a symbol.

^{*} No. 125 of the Government Epigraphist's collection for 1907.

Read paymars. The original has two symbols becasen pa and pa, each of which looks like ra.

t The word tedi is denoted by a symbol.

The name of the fifth cannot be made out as the original is builty damaged here.

"In the 8th year (of the reign) of king Māravarman alias the emperor of the three worlds, the glorious Kulašēkharadēva,—on the day of Svāti, which corresponded to a Tuesday, to the [tithi] of the second fortnight and to the 11th solar day of the month of Dhanus."

This date is incorrect when worked for 1275 or 1276 A.D., the 8th year of Maravarman Kulašēkhara I.; and it is also incorrect for A.D. 1321, the 8th year of Maravarman Kulašēkhara II. In A.D. 1275 the 11th Dhanus was a Saturday. In A.D. 1276 it was a Sunday. In A.D. 1321 it corresponded with Monday, December 7th. In each case the corresponding tithi belongs to the dark fortnight, but the nakshatras were respectively Pushya, Jyështhā and Punarvasu. As to the last (1321) Professor Kielhorn's No. 28 (above, Vol. VI. pp. 312-13) may be compared with it. I have proved its correctness. That date, which was in the 8th year of Maravarman Kulašēkhara II., corresponded with 14th November A.D. 1321 which was 23 days earlier than December 7th. The nakshatra was Uttara-Phalguni, and it is plain that on a day 23 days later the nakshatra could not possibly be Svāti. The date would be correct in all respects for the 18th solar day of Dhanus, Tuesday, December 15, A.D. 1321, when, at mean sunrise, the nakshatra was Svāti and when the 10th tithi of the dark fortnight was current.

No. 26.-DANAVULAPADU PILLAR INSCRIPTION OF SRIVIJAYA.

BT H. KRISHNA SASTEI, B.A.

The subjoined record³ is engraved on the three faces of one of the Jaina pillars, discovered by the Superintendent, Archmological Survey, Madras, at Danavulapadu (in the Jammalmadugu taluka of the Cuddapah District) in 1903, when he made extensive excavations there, on the sandy bank of the river Pennar. The results of Mr. Rea's excavations are published in the Director General's Annual Report for 1905-6, pp. 120 to 127, which include a complete description with a half-tone picture (fig. 7) of the sculptures in three panels on one of the broad faces of the pillar (p. 124) and an English translation of the inscription on two of its narrow faces (p. 124 f.)

By way of supplementing what has been already stated by Mr. Rea, I append, with the kind permission of the editor, a full text of the record, which is not given in the Annual and the translation of a portion of the inscription, which is also omitted there, by some mistake.

Since writing the above Mr. Venkayya has informed me that the quoted day of the solar month Dhanus may be, not "11" but "19." On this basis I have again announced the date. It is not correct for the reign of M. Kulašekhara II. For A.D. 1321 the eighth year of M. Kulašekhara II., the details would be correct for the 18th, but not for the 19th Dhanus. At mean sunrise on Tuesday, December 15, A.D. 1321, which was the 18th day of Dhanus, the tenth fills of the second fortnight expired 3 b. 16 m. after mean sunrise; the sakehatra being at mean sunrise, Sväti by the equal space system. It coded 6 h. 18 m. later by that system. But by Garga it had ended 5 h. 54 m., and by the Brahma-Siddhäuta 10 h. 2 m. before mean sunrise, Višākhā being current at that moment. On the 19th Dhanus Višākhā was current by all systems. I think the date is probably genuine, but that the 19th of the solar mouth was quoted in error for the 18th.

³ No. 333 of the Madras Epigraphical collection for 1905.

The portion omitted in the Assect is the "third face" (II. 44 to 67) of the pillar. On p. 125, however, Mr. Rea adds in continuation the translation of a later inscription of the 14th century A.D. in the passage commencing:

"The second reads

prosperity," and connects it with the subjoined pillar record which is at least 4 centuries earlier. It may be noted that the later record translated by Mr. Rea, was also discovered in the same locality (No. 336 of the Madras Epigraphical collection for 1905).

The ink-impressions from which the accompanying plate has been prepared, were taken under my direct supervision from the original pillar which is now preserved in the Madras Museum, along with the other antiquities of Danavulapaqu.

The record is not dated. But the Kanarese characters in which it is written may be referred to the period between the 10th and 11th centuries A.D. The alphabet bears a strong resemblance in certain details (e.g. in the distinction made between long and short i and in the adding of the repha to a consonant ending in i) to that of the two Nolamba records from Dharmapuri published by me, but is exactly similar in many respects to those of the Atakür inscription of the time of Krishna III. and of the epitaph of Mārasimha II. of the 10th century A.D. The symbol for long affixed to the consonant in is different in form from that used in other cases; compare e.g. mā of ripusamāha in l. 21 and of mārti in l. 32, with nā of eanāna- in l. 51 and bhā of bhā-mandaladoi in l. 64. The final forms of m (Il. 22 and 48), n (l. 39) and i (ll. 50 and 52), the cursive form of the consonant kh (l. 52) and the use of the Dravidian i (ll. 8, 24, 50, 52) and r (ll. 12, 48, 49 twice, 56, 62) may also be specially noted. The record consists of 11 verses of which vv. 3, 5 and 6 are in the Sanskrit language (the first being in the Sankūrņaka(?) and the second two, in the Āryā-giti metre) and the rest in Kanarese (in the Kanda metre). Lines 65 to 67 are in Kanarese prose, while the invocatory and benedictory phrases (ll. 44 and 43) are in Sanskrit.

The order in which the three written faces of the epigraph have to be read presents some difficulty. The broader face which begins with a benedictory clause and ends with the writer's name, must be taken to be a complete record by itself. The two narrow faces which contain the culogy of Srivijaya do not begin with any auspicious word, phrase or verse, but end with the usual mamgala-mahā-śrik. Apparently, the inscription was meant to be divided into two parts, the first of which, comprising the two narrow faces of the pillar, began with a description of the military prowess of the dandanayaka Srivijaya, to whom in the body of the record are applied the surnames Arivingoja (v. 7), Anupamakavi (vv. 2, 4, 9 and 1, 65 f.) and perhaps also Sarvavikramatunga (v. 10). Of the three Sauskrit verses included in this portion of the record, two (vv. 5 and 6) are addressed to Śrivijaya and express the wish that he might live long to rule the circle of the earth under orders of king Indra. The third verse while describing his prowess in highly poetical language, incidentally mentions Bali-kula, the family to which Śrivijaya belonged and the king Narendra of whom he was the general (dandādhipati). The second part of the inscription, evidently the more important of the two, is written on one of the broad faces of the pillar and opens with an invocatory clause which proclaims glory to the prosperous doctrine of the Jina. The first three verses (7 to 9) on this face appear to suggest that Srivijaya voluntarily resigned this world and took samuyasa in order to attain eternal bliss. The next two verses are again in praise of Śrivijaya's military prowess,

¹ Above, pp. 54 to 70 and Plate.

³ Ibid. Vol. V. pp. 151 to 180 and Plate.

² Ibid. Vol. VI. pp. 50 to 57 and Plate.

^{*}According to Gangadasa's Chhasdômañjari (Ch. V. 15) Giti is a verse whose second half corresponds to the first half of an Āryā (i.e. contains 30 māfrās), the first half presumably being the same as that of the Āryā an additional gare (i.e. contains 32 māfrās). The metre, however, of the verse under consideration, whose scheme hably corresponds to the Sankīrpaka mentioned in Dr. Kittel's edition of Nāgavarma's Chhandas. It proports the scheme of the metre as 32 and 27 (Chhandas, p. 93). Nāgavarma's Chhandas (Ch. IV. 292). of an explanation which yields 32 and 30 for the scheme of the Sankīrpaka and thus correspond to that of v. 3 of Ārya (i.e. of 30 māfrās) unites with the first half of a Kanda in the order mentioned (i.e. 32, in the first and 30 in varma)."

and Il. 65 to 67 state that the writer of the record was Gunavarma, the clerk (sēnabōva) of Anapamakavi.

It thus appears from an examination of the contents that the only name in the record which may be of historical interest is that of king Indra (or Nazendra) whose subordinate was the dandandyaka Srivijaya. And, to judge from the characters, king Indra will have to be identified with the Rashtraküta Nityavarsha-Indra III, for whom we have the dates A.D. 915 and 916-7, or with Indra IV., the grandson of Krishna III., who died in A.D. 982.1 Before attempting to decide which of the two kings could be intended here, it may be useful to mention the existence of a record of the Rashtrakuta king Nityavarsha in the Jaina rains of Danavnlapadu, quite close to where the subjoined pillar was dug up.2 It is engraved round the rim of a stone pedestal and consists of a single Sanskrit verse which has been translated on p. 121 f. of the Director General's Annual for 1905-6. Here, again, it is doubtful if Nityavarsha is identical with Indra III. or Khottiga, both of whom bore that surname. As, however, the pedestal record and the subjoined pillar inscription are found in the same ruins and the characters, except for the flourishes used in the former, are almost of the same type, there is a strong presumption in favour of identifying Nityavarsha of the pedestal record with king Indrs of the Srivijaya inscription and of assigning both the epigraphs to the time of Nityavarsha Indra III., i.e. to the beginning of the 10th century A.D. In support of this identification it may be stated that in verse 3 of the subjoined record, Srivijaya is stated to have been the commander of the forces of Narendra. The context requires as here, to interpret narendra not as a general synonym for 'king,' but as a proper name. Dr. Fleet in dealing with the appellations of the Rasbtrakuta kings,3 has drawn attention to the honorific Narendradeva with which the surname Nityavarsha of Indra III. occurs combined, in the Nausari grants. Although the word narendra (or narendradeca) may admit of the translation 'His Majesty' as Dr. Fleet has taken it, still in the light of what has been stated above, it appears to me that Narendra must be taken, at least in the subjoined record, as a hitherto unknown surname of Indra III.

Dandanayaka Śrivijsya is not mentioned in any published inscriptions. His identification, if satisfactorily made out, would be of much interest to students of Kanarese literature; for, his surnames Arivingojas and Anupamakavis have, apparently, a special reference to his literary acquirements; while Sarvavikramatunga indicates his military provess.6 Two persons of literary fame both bearing the name Srivijaya are known to Kanarese literature. colophon at the end of each of the three chapters of the Kavirajamarga describes that work as having been the production of Srivijaya on the lines laid down by king Nripatunga. This king who is also called Atisayadhavala and Amoghavarsha in the body of the work, has been identified with the Rashtrakūța Amoghavarsha I. (A.D. 814-5 to 877-8). If the Kavirājamarga was actually written by Śrivijaya, who is stated to have been the court poet of Nripatunga and to have borne the surname Kavisvara, his time would fall into the beginning of the ninth century A.D. Another Srivijaya is referred to in the body of the same work (Kavirājamārga) as an earlier author whose writings were looked upon as the standard type of

Dr. Fleet's Dyn. Kan, Distr. p. 386, Table.

^{*} No. 331 of the Madras Epigraphical collection for 1905.

^{*} Ep. Ind. Vol. VI. p. 176.

^{*} The word literally means 'the teacher of knowledge.' A similar title in Kannada literature is Negaltegoja assumed by Nagavarma the author of the Chhandar; see the Karnafaka-Kanicharite by Mesars. R. Narasimhachar, M.A., M.R.A.S., and S. G. Narasimhachar, Vol. I. pp. 46 and 50.

⁵ I.s. 'the matchless poet;' compare the titles Kavitagunarnava of Pampa, Kavirajaharnsa of Nagavarms and Kaviratus and Kavichakravarti of Ranna.

We learn from literature that the Kannada poets Pampa, Chavundaraya and Nagavarma were also once in military service and had established their names on the battle-field.

Kanarese poetry at the time of Nripatnaga. These two Srivijayas who belong, one to the 9th century A.D. and the other to some still earlier period, cannot in any way be connected with the dandandyaka Śrivijaya of the Danavulapadu record whose time, as stated already, could have been only about the beginning of the tenth century A.D.

Further, we know of a fourth Śrīvijays mentioned in the Śravana-Belgola epitaph of Mallishana.1 He was one of the Jaina teachers of great learning who succeeded Hemasena and a contemporary of an unspecified Ganga king. An inscription dated Saka 999 (=A.D. 1077-78) at Hamcha in the Shimoga District,2 apparently refers to Satyavakya Rakkasa-Ganga, a brother's son of Nolambakulantaka Marasimha II. and to his contemporary, the Jains teacher Śrivijaya. It is not unlikely that this Rakkasa-Ganga is the unspecified Ganga king mentioned above and is identical with the Rakkasa referred to in Nos. 183 and 134 of Professor Kielhorn's List of Southern Inscriptions. Consequently, the time of the Jaina teacher Srivijaya whose disciple Rakkasa-Ganga was, may be placed roughly between Saka 899 (= A.D. 977), the date of the Pegga-ür inscription of Rachamalla II. and Saka 999 (= A.D. 1077-78), the date of the Humcha record. But there is nothing to show that the Jaina teacher Srivijaya of the Mallishena epitaph was first a layman' in the military service of the Rashtrakuta king Indra III., and that he subsequently joined the order of ascetics. Consequently, the Srivijaya of the Danavalapadu record, is perhaps also different from the Jaina teacher Srivijaya, though possibly be was contemporaneous with him, and flourished in the tenth century A.D.

It may be remarked, finally, that, like the famous Ganga general Chamundaraja or Chavundaraya who served the Western Ganga sovereigns Marasimha II. and Rächamalla II. and largely patronised Jaina literature and religion, the dandandyaka Śrivijaya was unsurpassed in the military art as in the literary, patronised Jainism and resigned the world in the end, as a pious Jaina, in order to seek salvation. The picture of a rider on horseback followed by an umbrella bearer which is depicted in the lowest panel on one of the four faces of the pillar is perhaps meant to represent the general Śrivijaya marching against his enemy on the battle field. It must also be noted that the demi-god Brahma-yaksha in Jaina iconography is figured as riding

Balikula,* the family to which Śrīvijaya belonged, and Guṇavarmas the clerk (sēnabosa) who wrote (i.e. composed?) the text of the record, I am unable to identify.

TEXT.6

First Face.

- 1 Patiya besadinda-
- 2 7[m]-ahitaran-ati-kopa-
- 3 din=ikki geldu paripā-
- 4 li[s]idam [|*] chatur-udadhi-
- 5 valayam=ellaman=a-
- 6 tirathan=I danda[n]aya-
- 7 kam Śrivijayam⁸ [|| 1*]

² Epigraphia Carnatica, Vol. VIII. Nr. No. 25. * See Ind. Aut. Vol. XXXII. p. 463 and Plate iv.

¹ Above, Vol. III. p. 188.

[.] The Kaunada poet Ranga who flourished in the 10th century A.D. was a Jaina descendant of the Balegarakula and a protegé of Chavondaraya. It is doubtful if Bajegarakula could, in any way, be connected with Baje-

A poet Gunavarma, who may be referred to this period, is mentioned in the Karnajaka-Kacicharite, p. 63.

The syllable in brackets is more like so than me,

^{*} The indistinct symbol at the end of line 7 may be a flower like the one in 1.65, below.

- 8 Turaga-dhalamgala-
- n-oddida kari-ghate-9

10 yam piriya-nera-

11 [v]iyam ball-aniyam

12 dhurad=edey[o]=i]ri-

karad-a si 13 du gelgum

14 karam-aridu rana-

dol - Anupamakaviya [112#] 15

Kupitavati Srivi-16

- Balikula-tijayê 17
- Narendra-daņģādhi-18 lak[ê]
- patau [|*] girir=agi[ri*]r=vvana-19
- jalam=ajam=avanam 20
- ripu-sa[mā]ha-ba-21 lam
- lam=abala[m |] [3*]

Second Face.1

- Vasumatiy-ola-23
- g=ild=enta[m de]segnla 24
- kusukuruman=eydi
- | [B]i[sa]-2 mattam manade 26
- ruha-garbh-apdakkam pa-27
- [ki]rtti nesarisidudu 28
- ttan-Anupamakaviya [|| 4*] 29
- Aśrita-jana-kalpa-ta-30
- ru[r]=vviśruta-ri[p]u-nripa-31
- 32 3ti-tripa-davanala-mū[r]tti[h] [l*]
- Sri-vanità-Smara-pasah+
- pātus=tava bāhus 34
- Śrivijayā(ya) [|| 5*] dinim
- 36 Chatur-udadhi-valaya-
- 37 valayita-vasundha-
- 38 ram-Indra-[s]asanat=sam-
- 39 raksha[n |] Śrivijaya
- 40 Dandanāyaka [ji]va
- dana-dharmma-ni-41 chiram
- rata-manaska [|| 6*] 42
- 43 Manigala-mā(ma)hā-šrih [||*]

1 The syllables biss are corrected from vasa.

The syllable to of daranate is written between two cross marks below the line, the omission being indicated by a similar cross mark made over the letter so.

* The eisarga at the end of the line appears to have been changed into an anssedra; the lower dot of the

visarga is, however, still faintly visible on the estampage. The order of the words here is wrong. It is evident that the author must have intended paid bakes-tens pain; for, otherwise, the word baks, which is not of the neuter gender, will have to be altered into bakarame, in which case the metre would be faulty.

¹ This would actually be the third face—the second on the pillar being occupied by sculptures in three panels. see above, p. 147.

Third Face,1

- bhagavata [J]ina-śāsanā[ya] [||*] 44 Bhadram-astu
- 45 Attavidha-karmmam-ellaman-attu[m]-
- 46 bari-gondu kodipe[n=em]bude ba g eyi-
- m[|*] [pu]ttidan=udatta-sat[t*]vain 47 nettane
- dh[e]ndra-vandyan=Arivimgōja[m ||] [7*] 48
- Tan=aridu t[ora]du nottane man[i]-49
- sa-val-avud-e[m]du sa[m*]nyasanado[] [] 50
- manasike gidad[e] kond[on=a]nuna-51
- sukh-[a]spadaman=altiyol Srivijayam [|| 8*] 52
- Nirggata-bhaya nin-ara[sa]m sargga-53
- mā(ma) 3nān=ollen=endu pēsi bisu-54
- rvv[am] [1"] sarggada bhogaman=nnd=apava-
- 56 rggakk=adiy=itton=arid[o]n=Anupa-
- makaviyam [|| 9*] & D[a]udina sama-57
- grige para-mandalam-allade 58
- [Sar]vv[a]vikramatumgam [|*] dandina bi-59
- ra-Śrig=ol-ga[n]da[m] śri-daņdanāyakam
- Śrivijayam [|| 10*] & [Cha]nda-par[a]kra-61
- ma[n]-urad-ari-ma[n]dalikaran-atti pi-
- 63 didu patig=oppisuv=ol-gandam pracha-
- [n]dan=i-bhfi-mandalado]=dandanayakam 64
- Śrivijayam [|| 11°] & Anupama-65
- 66 kaviya sên[a]bövam Gu-
- nava[r]mma[m] bar[e]dam [ll*]

For the translation of the first and second faces (II. 1 to 43), see the Director General's Annual for 1905-6, p. 124 f].3

Translation of the third face.

(L. 44.) May there be prosperity to the holy doctrine of Jina!

(Verse 7.) "I shall (first) acquire as a marriage gift the eightfold karma completely and (then) scatter it. With this idea (as it were) was born Arivingoja of great virtue who was

Correctly speaking, the fourth face; see above, p. 151, note 1.

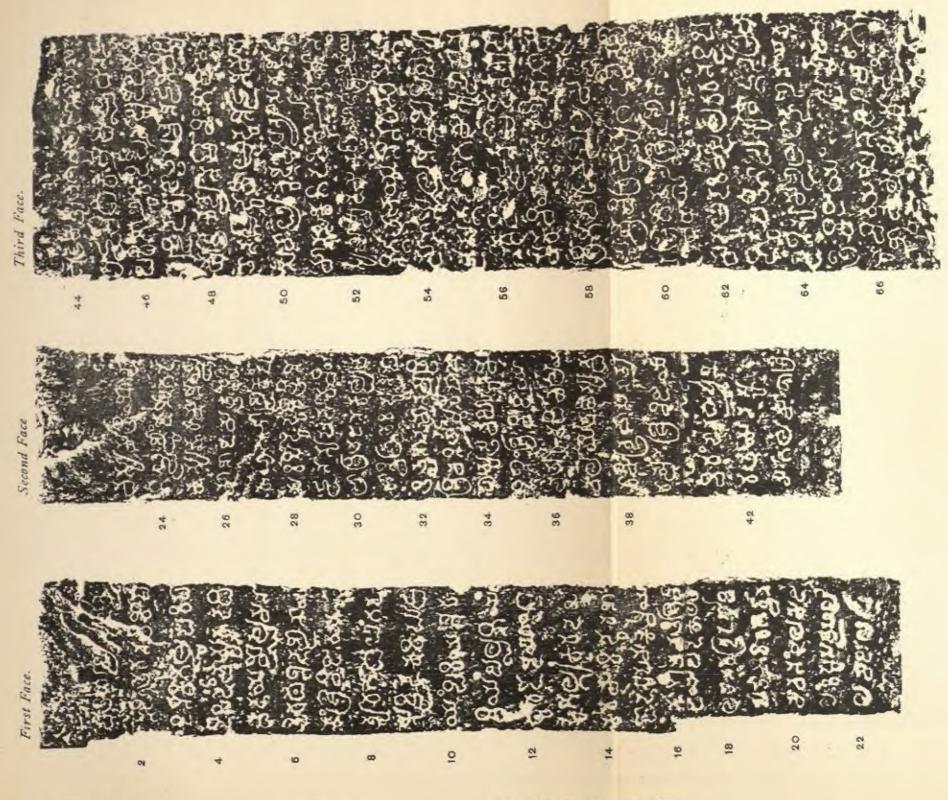
² Above the letter so is seen an erasure in which may have been included an anuscora which was subsequently cancelled,

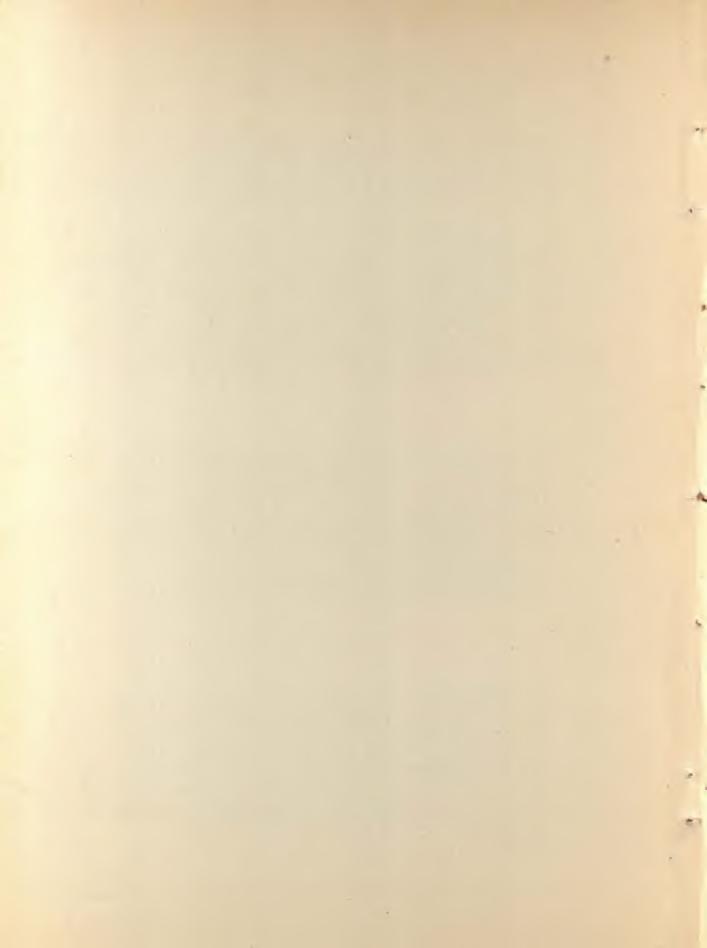
On p. 125, the translation of v. 3 has been left incomplete after the words " (and) the." It should be completed as follows: "(and) the combined forces of the enemy, (quits) powerless." In the translation of verse 4

Papdit Dörbali Jinadāsa Šāstrī of Šravaņa-Belgola informs me that the Jaina doctrine (dharma or sāsana) is, like other images, worshipped in Jaina temples, in a particular form. It is one of the maradinatas and is aymbolically represented by a wheel placed vertically on a pedestal, somewhat in the fashion of the Buddhist

rma-casaru.

I am again indebted to Jinadiaa Sastri for the information that the arhiavidha-karma mentioned here consists of (1) jūdadvaraniya, (2) darianāvaraniya, (3) vēdaniya, (4) mēdaniya, (5) āyusāya, (6) nāma, (7) gotra, and (3) anteroya. According to the Jaina doctrine, an aspirant for salvation must first get rid of





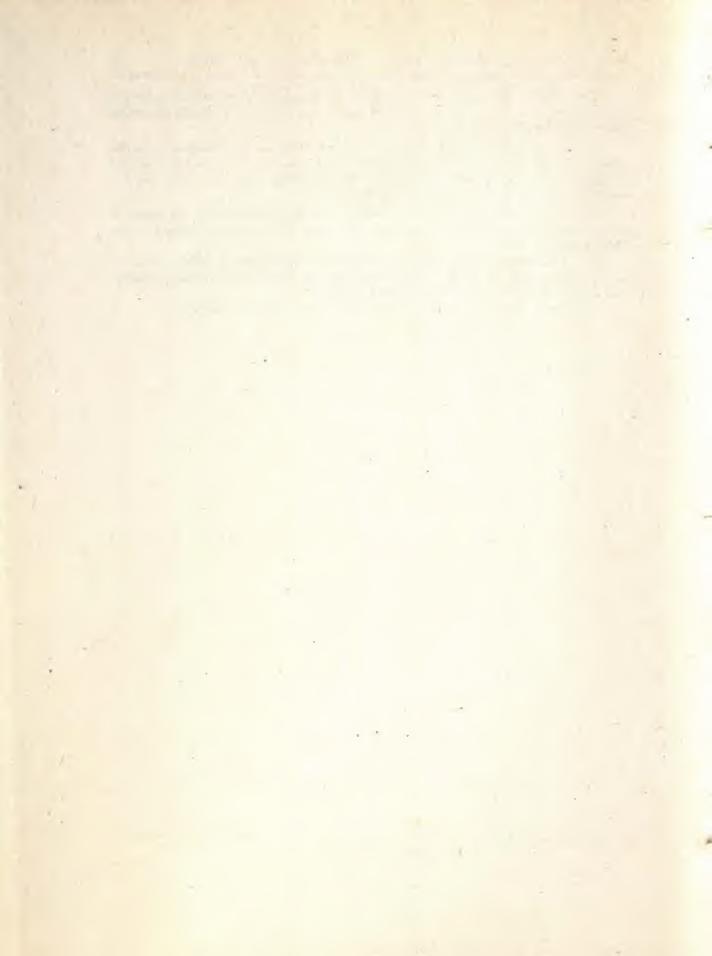
- (V. 8.) Having understood (within) himself what human existence was, Śrivijaya straight-way renounced (it); (and) without losing courage in renunciation, (he) lovingly grasped the seat of unabating bliss.
- (V. 9.) Oh! Fearless One! Thou art (my) lord. I do not want heaven." He that saying thus, would throw madly away in disgust (even the pleasures of heaven) and he that having tasted of heavenly pleasures has stepped (after renouncing them) into (the region of salvation, could (alone) know (what) Anupamakavi (is).

(V. 10.) The circle of enemy (kings) trembles at the preparedness of the forces of Sarvavikramatunga, the glorious dandanāyaka Śrīvijaya. (Ho is) the fit husband of the mighty goddess of victory.

(V. 11.) The dandanāyaka Śrivijaya is a terrible and powerful hero of great prowess, on the circle of this earth. Burning with rage he disperses the enemy chiefs (on the battle-field),

captures and delivers them up (as captives) to (his) master.

(Ll. 65 to 67.) Gunavarma, clerk (sēnabōva) of Anupamakavi, wrote (this record).



INDEX'

By H. KRISHNA SASTRI, B.A.

| | | | | PAGE | PAGE |
|-----------------------|----------|-------------|--------|-----------|--|
| | | | | TAUL | Śgrada, 80 |
| | | | | | Telugu 40, 43, 44 |
| | A | | | | Āmadēva, m., |
| *** | | | | . 17 | Amaiyar, s. g. Ambar, |
| Abū, mo., | * " | | P | 27 | Āmaņs, et., 40 |
| Abul Fazl, . | * " | | | . 40 | Amara (Amarakôsa), quoted, 84n |
| adēšakāri, - | * | | | . 19 | Amara (Amarasimha), author, 43n |
| adhaka, grain measur | | | | 35, 36 | Amarakantaka, hill, |
| Adhakada, ri., | | | | . 27n | Amaravati, vi., |
| 'Adil Khan, ch., . | | | 4. | . 83 | Amaune, vi., |
| Adipurana, quoted, | | | 4 | . 69 | Ambachh (Ámbáchh), př., |
| adumbu, plant, | | | | . 110 | Ambika, s. a. Parvati, |
| Aghama, J. teacher, | | | * | | Ambar, et., 57n |
| Aghāta, s. a. Ahad, | | | | | Ameyamaya, sur. of Narasimhavarman I., 6, 90 |
| agnihôtra, . | | | 4 | 76, 85 | amir, |
| agrahāra, . | ř. | | | 51, 76 | Amir Khuarn, author |
| and the same of the | 4 | | * | . 107 | Amma II., E. Chalukya k., 43, 62 |
| Ahad, vi., . | | | 4. | . 18 | Ameghadatia, m., |
| Ähadiya, a Gehlöt ele | an, | | | . 18 | Amoghavarsha I., Rāshtrakūta k., . 55, 149 |
| Ahavadhira, sur. of ? | Varasiti | havarma | a II., | . 13n | Amraka, vi., |
| Abiebehhattra or Adl | ichchh | attra, s. o | . Ran | 1* | Withtuned and |
| nagar, . | | . 107 | , 120 | and add. | Audr, et., |
| Aln-i-Akbari, quoted, | | | 4 | . 27 | Āmūr-köţṭam, di., |
| Airavatěsvara, te., | * | | | . 127 | Amur-nadu, di., |
| Aja, s. a. Siva, | | | | . 9 | Amyavali Nayasa, wa |
| | | | | . 85 | Settle filtre backgrowner or and |
| Airede Messerm | | | | . 17 | Anantadatta m., |
| ajnapti, | | | | . 106 | |
| Akalavarsha, sur. of | Krishpe | I., . | | 83, 86 | William And add . of Tributant |
| Akbar, Mughal empe | | | 50 | . 27 | angine, prome, |
| Akhila, m., | | | 118 | and add. | Anhilytid. etc. |
| | | | | . 108 | |
| alphabets :- | | | | | A THE PROPERTY OF THE PROPERTY |
| Box-headed. | | | | 64n, 108 | Anivarita or Anivarita-Punyavallabla, m., |
| Brahmi. | | 106 | , 103, | 114, 116 | 15, 101n |
| Chitravarna | | | | . 108 | Anivarit-Echkri, m., |
| Gupta, . | | | | 70, 108 | ankura, s. a. pota, |
| Kanarese, | | 43, 5 | | 64n, 148 | Annasvāmin, m., |
| Kharoshthi, | | | -1 -1 | 108, 115 | Anniga, Nolamba (Pallava) ch., 58, 63n |
| | * | 8, 12, 17 | | | antarava, |
| Nagari, | 07.0 | 0 40 45 | 55 5 | 6, 81, 93 | |

The figures refer to pages; 'n' after a figure, to foot-notes; and 'add.' to the Addition; and Corrections on pp. v and vi. The following other abbreviations are used — B.=Buddhist; ch.=chief; co.=country; di.=district or division; do.=ditto; dy.=dynasty; E.=Eastern; f.=female; J.=Jaina; k.=king; m.=male; mo.=mountain; ri.=river; s. a, =same as; sur.=surname; te,=temple; vi.=village or town; W.=Western.

| PAGE | PAG |
|--|--|
| Antarnarmada-vishaya, di., 73, 76 | В |
| Anugraéila, sur. of Nandivarman, . 12, 13 | Babjeo, Gond Zamindar, 2 |
| Anupama, sur. of Narasimhavarman I., 7 | Badami, vi., |
| Anupamakavi, sur. of Śrivijaya, . 148, 149, 153 | Bahmani, dy., |
| anusvāra, | Bahunaya, sur. of Narasimhavarman II., . 7 |
| Apratihatasasana, sur. of Narasimhavarman I., 6 | Bairakūr, ei, 63 ade |
| araghatta, a well with a water-wheel, 19 | Bala, B. friar (?), 11 |
| Arakahiku, | Balabhadra, J. teacher, 19, 2 |
| Ārang, vi., 44n | Baladhikrita, m., 8 |
| Ārangā, ri., | Balaprasada, Rüshfruküfuch., 1 |
| Alrhaldasi, J. nun 116 and add. | Balegara-kula, family, 150 |
| Arhat, s. a. Jina | Baléra, vi., 76, 7 |
| Arivingoja, sur. of Śrivijaya, . 148, 149, 152 | bali, 76, 8 |
| Arjuna, mythical k., | Bali-kuls, family, 148, 18 |
| Āryā, metre, | Bamadāsiya, s. a. Bambhadāsiya, 11 |
| Arya-Chēţiya (Ārya-Chēţika), J. kula, 114 | Bambaha, vi., |
| Arya-giti, metre, 148 | Bambhadāsiya (Brahmadāsiya), J. kula, . 11 |
| Ārya-siddhanta, 132 | Bapa, family |
| Arvya Sura, m., | Baya, poet, |
| asyamedha, sacrifice, | |
| Aśratthaman, sage, 58n | Bāṇādhirāja, title, Bāṇarāja or Bāṇarasa, ch., |
| Ātakūr, vi., | Banavidyadhara, Bana k., 60, 6 |
| Atavanni, m., | Banda, di., |
| Atimana, sur. of Narasimbavarman I., 5, 6 | Bandalvaralu, vi. (?), |
| Atiranachanda, sur. of Nandivarman, 3, 4, 5, | Bandbuvarman, ch., |
| 10n, 12, 13 | Bangavadi, vi; |
| Atiranachanda-Pallavéávaragriha, s. a. Atirana- | Bapatla, etc |
| chandēśvara, 5, 12, 14 | Baragur, ei., 59, 60, 63, 60 |
| Atirapachandesvara, to., 12, 13 | Barapa, Chaulukya (or Chalukya ?) ch |
| Atišavadbavala, sur. of Amoghavarsha I., . 149 | Bersur, vi., |
| atithi, | basadi, a Jaina temple, . 57, 63, 64n, 69. |
| Atodya-Tumburu, ser. of Narasimhavarman II., 13n | Basarh (Vaisall), m., |
| Atri, sage, 45n | Bastar, State, 25, 27, 32, 35, 38n, 39, |
| Atyantakama, sur. of Nandivacman, . 4, 8, 12, 13 | Beejapoor, vi., |
| Atyantakama, ser. of Narasimhavarman I., 4, 5, 6 | Begur, vi., 6 |
| Atvantakama, sur. of Narasimbavarman II., . 4 | Belkhara, vi., |
| Atyantakama, sur. of Paramesvaravarman I., 2, | Bempür, s. a. Begür, 6 |
| 4, 5, 8, 9n, 10, 12 | Bempür twelve, di., 6 |
| Atyantakama-Pallavesvaragriha, te., . 5, 8, 10 | Benares, et., |
| Āvani, et., 61, 62 | Bengal, co., |
| Avanibhajana, sur of Mahendravarman I., . on | Berar, co., |
| Avanti, co., | Betwa, rr., |
| Avintsi, s. a. Āvani, 62 | Bhābha, m., |
| Ayasirika (Āryaśrika), J. sambhōga, 116 | Bhadrapattana, s. s. Bhandak, 26, |
| Ayōdhyā, vi., | Bhairtvati, do., |
| svushya, 152n | Bhagavat, s. s. Vishnu, |
| Ayyamangula (Ayyaramangala), et., | Bhairavasakti-Bhatara, Saiva teacker, |
| Ayyapa or Ayyapadeva, Nolamba (Pallaca) | Bhandak, vi. |
| ch., | Bhāṇudēva, m., |

| | 1 |
|---|--|
| PAOR | PAGE |
| 10 | bTsanpo, Tibetan k., |
| bhara, 2000 paras, | Buddha, 43n, 80, 109, 111, 112, 113, 121 |
| Dearager 1710, | Buddhadasa, m., |
| Bharani, ri. (+): | Buddhadēva, m., |
| Bharata, author, | Buddhagupta, m., |
| Bharatakhanda, Indid, | Buddharkja, Kalachuri k., |
| Bhargavijatra, | Buddharaja, Kondapadmati ch., 41n |
| Distriction of a second | Buddbarakshita, m., |
| bhata, | Buddhavarman, m., |
| Bhatta, class of people, | Buddhist, 50n, 107, 152n |
| Bhattadêva, m., 81,84 | Buddhyankura, Pallava prince, 7n |
| bhattagrabara, | Budh[i]ka, m., 112 and add. |
| Bhatta-Hérambaka, m., | Büdidepalle, vi., 60 |
| Matteraka | Badaganhalli, vi., 64 |
| Rhattavnka-dikshits, m., | Budugara, s. a. Buduganhalli, 57, 64, 70 |
| Dhana e a Siva | Badagara, s. d. Badagaanam, 5 |
| Rhawandravanasvimin, fe., 136, 137 | bull, crest, |
| Rhauarnchi, sa. | Bunbu henta, |
| Bhendia Bigha, vi., | Bundelkhand, co., |
| bhikshu, | Burbi (Burba), et |
| Disease a Siva. | Durnan-i are sair, school of a second |
| Bhimadêva, Chaulukya k., | Butarasa, s. a. Dutuga 1., |
| Bhogaiitya, m., | Bintuga I., W. Ganga k., 6ln |
| Bhogavati, et., | |
| Bhogësvara, te., | |
| Alloward and a second | |
| Bhujangesvara, te., 51 and add., 75 bhumichehhidra-nyaya, 51 and add., 75 | С |
| bhūmichchniura-nyaya, | Ceylon, island, 102, 133 and add., 145n |
| Bhuvanabhājana, sur. of Narasimhavarman I., 5, 6 | Chahamana or Chahamana, family, . 18, 46, 77 |
| Bhuvanabhājana, sur. of Narasimhavarman II., 5 | Chakrabhrit, sur. of Paramesvaravarman I., 10 |
| Bhuvanabhājana, sur. of Matasana | Chakrakōta, s. a. Chakrakūta |
| Bhuvaneka Bahu I., Ceyron, 50 | Chabrabata the Bastar country, . 25, 26, |
| Bihar, co., | \$1, \$0, 55 |
| Bijapur, s. a. Deelapoor, | Chaladsūkakāra Chōliza, ch., 60 |
| Bijolia, vi., | Chalikya, s. a. Chalukya (Western), 15, 101, 104 |
| Bilaspur, s. a. Pachar, | Chālukya, dy., |
| Biragarh, s. s. walragara, | Chālukya, dy |
| DOAL CLEEK | Chalukya, family, 58n, 73 |
| Bodan, vi., | Chalukya or Chalukya, Western, dy., 2, 3, 4, |
| Both Gaya, va., | 14, 74, 82, 102, 106 |
| Bödhisattva, | Chalukya-Bhima II., E. Chalukya k., . 62, 63 |
| Brahman, god, | Chamundaraja, s. a. Chavundaraya, 150 |
| brahmadeya, | Chands, vi., |
| Brahmans, caste, | Chandel or Chandella, family, . 45, 46, 47 |
| Brahma-siddhānta, . 122, 124, 120, | Chandes or Chandita, m., |
| 127, 128, 129, 130, 131, 152, 133, 134, | Chandiyanna, m., 57, 63, 64, 69 |
| 135, 136, 139, 140, 141, 142, 143, 146, 147n | Chandpar, vi., |
| Brahmaugha-sadhu Bhima, m., | Chandradevs, Kanouj k., |
| Brahma-yakeha, J. demi-god, | Chandragupta, Gupto k 71,72 |
| Bribaspati, s. a. Jupiter, | Channel along the control of the con |
| Broach, vi., 74 | Change at a contract of the co |
| | |

| PAGE | |
|---|--|
| Chandratrēya, sage, | Conjeeveram, vi., 102 |
| Chapotkata, family, | confeveram, etc., |
| charu, | cow, crest, |
| Charaponnera, Nolamba (Pallava) ch., . 58, 59n | cross, symbol on coin, |
| chāta, 48, 75 | |
| chaturmukha image, | |
| chau, abbreviation for Chaturvedin, 45 | D |
| Chaulukika, s. a. Chaulukya, | |
| Chanlukya, family, 18, 76, 77 | Dūdėsari-pūtra Chavakā, m., |
| Chaulukya, mythical k., | Dadiga, s. a. Dadiya, |
| chavari-kumāra, | Dwittyn, ca., |
| Chāvuṇḍarāya, ch., 149n, 150 | Dahraséna, Irgend on coin, Dahraséna, Traikātaka ck., 52, 53, 54, 74 |
| Chěbrělu, vi., | Pahrasena, Traikūtuka ch., . 52, 53, 54, 74 |
| Chedalla, vi., 60 | Dakshina-Aosala, co. |
| Chédi, co., | Danigavadi, di., 63n |
| Chedulli, vi., 102, 105 | Daligavādi, di., |
| Chellar, et., | 147, 148, 149, 150 |
| Cheng shu hyvan, vi | Dānavulapādu, vi., 147, 148, 149, 150 daņdanāyaka or dandādhipati, 148, 149, 150, 153 |
| Chhandas, name of a Kanarese work, 148n, 149n | The state of the s |
| Chhandòmañjari, quoted, | and the state of t |
| Chhinda, s. a. Sinda, | wantewalk, Plu |
| Chidambaram, et., | Dantidurga (Dantivarman II), Rāshtrakāta k., 85 |
| Chiddanadeva-Maharaja, Telugu-Pallava ch., 50n | APPROACH THE LITTLE THE RETAIN THE TANK A RESERVE TO THE TANK A RE |
| Chikhalapadra, s. a. Chikhalda, 53 | The state of the s |
| Chikhalda, vi., | The state of second lateral |
| Chikka-Madhure, vi., | |
| China, co., | Dašapura (Dasor or Mandasor), vi., 152n dates:— |
| Chinese, 90, 92, 93, 102, 145 | many |
| Chirgaon, vi., | recorded in numerical symbols, 50, 51, 52, |
| Chitaldroog, di., | 54, 73, 76, 108, 110, 111, 112, 113, 115, |
| Chitrakantha, horse, 15, 105 | Fecondad in |
| Chitrakūţa, vi., 28, 78 | recorded in numerical words, 24, 80, 81 |
| Chitramaya, Pallava k 9n | Dattagali (?), f., Dandmagar, vi., |
| Chitramaya, sur. of Paramesvaravarman I., . 9 | Daulatabad, vi., 49 |
| Chodagaoga, E. Chālukya k., | danvārika 83,84 |
| Chòla or Chòla, co., . 1, 15, 26, 58n, 63, 64n, | danvārika, 83, 84 Dāvangere, vi., 35 Dayāpāla, J. teacher 82 |
| 85, 101, 103, 105n, 121, 132, 138 | Davanala J. tensten 82 |
| Chola or Chola, Telugu family, . 60, 61 | days, lunar :- 69n |
| Chòlesvara, te., | bright fortnight, |
| Chôlika-vishaya, the Chôla country, . 101, 105 | G |
| chollika, | third, 126, 127, 129, 142 |
| Chora, v. a. Chola, | 123n, 129 |
| Chora, Nolamba (Pallava) ch. (?), | fifth, 57, 85, 59, 76, 130, 135, 137, |
| Chorsyya-Nolamba, (Nolamba) Pallava prince, | 10, 100, 135, 137. |
| Chorya-tarai, tank, | seventh, 140, 141, 144 |
| Childsams, family | 30 |
| Chynyandiyara hathina alse | 109, 130, 136, 143, 148 |
| conch. | eleventh, |
| 94 1 | twelfth. 137 |
| | 40, 127, 142 |

| | | _ | | | | P | AGE | PAGE |
|---|-------|------|---------|----------|--------|-------|--------|---|
| | | | 7 | 9, 52, 5 | 4 90 | - | | Děvadíkshita, m., |
| thirteenth | | * | . 1 | 3,02,0 | | | | dēvadroni 71 |
| fourteenth, . | | * | * | 73, 7 | | | 101 | Děva-nāvaka, m., |
| fifteenth, | | * | | 130, | | | 136 | Dēvapattana, pi., |
| 6 D | | | | | . 94, | | | Devaputrs, sur. of Huveshks, . 113 and add. |
| full-moon, | | * | | * | · mai | AWAI | 200 | Dēvarāya I, Vijayanagara k., 63n |
| dark fortnight, | | | | | 124, | 128. | 132 | Dhamaśiri, f., |
| and the same | | | | | 64n, | | | Dhamavadhaka, m., |
| *************************************** | | * | | | 134, | | | Dhanamitra, f., |
| a decourage of | * | | | | | | 130 | Dhanamjaya, s. a. Arjuna, 13 |
| and the same of | * | * | * | - * - | - | 200 | | Dhanamjaya or Dhanamjaya-Punyavallabha, |
| | * | | * | # | | - | 122 | m., |
| | • | * | | | | | 45 | Dhanamwakra, vi., 94 |
| an Britain, | | | ÷ | A | | | 147 | Dhapara, s. s. Dantwara, 78, 79 |
| are are a second | | * | | | | | , 123 | Dhanasiri, J. nun, 112 and add. |
| eleventh, | | 19 | | | | | 133 | Dhanavala, J. monk, 112 and add. |
| thirteenth, | | | | | | | , 126 | Dhanyaghata or Dhanyaghataka, s. a. Amara- |
| fourteenth, | | 5 | | | | | 76 | vnti, |
| fifteenth, | | | | | | | , 141 | Dhārana-Mahādēvī, queen of Somesvara I, 31. |
| new-moon, | * | 191 | | * | 01, | 101 | 2 2.25 | 33, 34 |
| days, solar :- | | 3 | | | | | 146 | Dharanivarāha, Chādāsamā ch., 78a |
| second, | | - 19 | | | | | | Dharanivaraha, Paramara k., 18,78a |
| third, | 4 | | - 4 | | | | 139 | Dharasena IV, Valabhi k., 47n |
| sixtb, | 4 | | | | * | | 147 | Dhar[#]val#, f., 116 and add. |
| | | | | | | | 141 | Dhārāvarsha, Nagavamīi k., |
| twelfth, | | * | | | | | 142 | Dharavarsha, sur. of Dhruva, 81, 84 |
| fourteenth, eighteenth, | | | | | | | 147 | dharma, a doctrine, |
| nineteenth. | | | | | | | 147n | dharma-chakra, |
| twentieth, | | | | | | | 0, 51 | dbarmamahārājādhirāja, 56n, 68 |
| days of the week | | | * | | | | | Dharmapuri, ei., . 54, 57n, 58, 61, 63, 64, 148 |
| Sunday, | P. B. | | | 19.5 | 6. 94 | . 129 | , 134 | Dharmarajah, ch., 64n |
| Monday, | | 76 | 122. 1 | 23, 127 | . 128 | 130 | | Dharmaraja-mandapa, cove temple, . 2, 5, 10 |
| atomosy, | 91 | 139. | 133. 1 | 34, 13 | 5, 136 | 142 | , | Dharmaraja-ratha, monolith, 2, 3, 5 |
| | 0.54 | TRAI | Their . | | | 143 | , 146 | Dharmmavarma, m., |
| Tuesday, | | | 101. 1 | 132, 133 | 3, 137 | , 138 | 3, 147 | Dharmmavolal, vi., 64n |
| Wednesday | | 45. | 122. I | 23, 130 |), 135 | , 137 | , | Dhasso, ri., |
| 11 ca nesanj | • | 201 | 2029 | 14 | 0, 141 | , 143 | 3, 146 | Dhathi, m., |
| Thursday, | | E | 7. 64r | , 65, 6 | 3, 123 | , 124 | 1, | Dhavala, Rāshirakūja ch., 18, 19, 78 |
| Interest) | • | | | 135, 13 | | | | Dhrava, Dhravaraja, or Dhravarajadeva, |
| Priday, | | | | 126, 12 | | | | |
| Saturday, | * | | | 40, 65, | | | | Dhravamitra, m., 108 |
| ostutusy, | , | | | 126, 12 | | | | Dhujhaśiri, f., |
| | | | 100, | | 130 | 134 | 4, 144 | Dhujhavala, m., |
| Dědu, m., | | | | | | , | | Dhulia, vi., |
| Decgarh, vi., | | | | | | | 46n | Dhūrjati, s. a. Šiva, 10 |
| Děòli, vi., | | - | | | | | 3n, 77 | dhyanamudra |
| Dēva, m., | | * | | | | | 34 | Digambara, sect of Jainas, 109, 111, 115 |
| Deva. J. nun, | - | | - | | 1 | | nd add | Diliparasa, Nolamba (Pallava) ch 58 |
| dēvadāya, | * | | | | | | . 33 | 40 |
| ac sample | * | | | | | | | |

| | PAGE | Paor |
|--|-------------------|--|
| Dipavamsa, quoted, | 43n | |
| Dirghacharya, m., | | |
| Divabbarasi or Divalabbarasi, queen | | G |
| Polalchora, | | Gadhipura, s. a. Kanauj, |
| Divalabbasamudra, tank, | | |
| Divalamba, s. a. Divabbarasi, . | | Gadval, vi., |
| Dontayo, m., | | Gahadavala, family, |
| Dösayya, m., | 70 | Gahamitra, m., |
| deag. | | |
| drag, | 75 | Gajādbara (Gadādhara), s. s. Vishņu, 33: |
| dranga, | . 80, 81 | Gaja-Lakshmi, goddess, 4 |
| dropa, grain measure, | | gana, demigods, 1: |
| Dudhai, ci., | | Ganda-Trinetra, Vaidumba k., |
| Durgi, goddess, | | Ganésa temple, monolith, 2. 5, 8, 10 Ganga, the Ganges, 16, 20, 33, 34, 9 |
| Control of the Contro | | Ganga, the Ganges, 16, 20, 33, 34, 94 |
| Durlabhataja, Chāhamāna prince, | | Gabga, Western, dy., . 59, 61, 62, 63, 69n, 150 |
| | | Gangadasa, author, 148: |
| dūta or dūtaka, 4 | | Gangadevi, queen, |
| Dutch East India Company, . | . 102 | Gatgadikara, sub-sect of Wokkaligas, 61s |
| dvi, abbreviation for Dvivedin, | . 45n | Ganga-Mahadevi, queen of Vikramaditya I., |
| Dvivědin, title, | 45 | 102, 103 |
| | | Ganga-nado, di., 64r |
| | | Gangapādi, s. a. Gangavādi, |
| | | Ganga-Pal'ava, dy., 60 |
| E | | Gangarusasira, di., 59n. 60n. 61 |
| eclipse, lunar, | 76, 77, 78, 79 | Gangavadi or Gangavadi-rishaya 96000, di., 61 |
| | 41, 81 | Gannarasa, Nolamba (Pallava) ch., 63n |
| | | Garga, 122, 124, 126, 127, 128, 129, 130, 131, |
| eras:- | . 89, 90 | 132, 133, 134, 135, 136, 139, 140, 141, |
| CIT will be TEXT | 00 | 142, 143, 146, 147n |
| Gupta or Gupta-samvat, . | | Garuda, crest, |
| | | Gayā, di., 50 |
| | 27 add., 145 | Gayaddhara (Gangadhara), m., |
| | | Gayādhara, m., |
| Kalachuri or Chēdi, | 52, 53, 73, 74 | |
| | | |
| Lökys (Laukika-samvat), | . 80, 81 | ghata (ghadā), oil measure, 19 and add- |
| Saka or Saka, 14, | 15, 16, 32, | Ghika Sathi 19 and add- |
| 97, 38, 39, 40, 41, 42, 43, 56, 5 | | Ghika Sethi, m., 42 [Gh]ritakundaka, m., 121 and add. |
| 61, 62, 63, 68, 77, 78, 81, 83 | | Gidhana Dele at |
| 105, 107, 111, 127, 128, 13 | 6, 137, 138, 150 | GHi mates |
| Vikrama or Vikramaditya, 18 | | Children of! |
| 45, 46, 47, 7 | 6, 77, 78, 79, 94 | Godavari, ri., 25 |
| Ereyappa, W. Ganga k., | . 61, 62, 63 | Conder of |
| | | Gondau, vi., |
| | 6 | Charleton or |
| * | * | Gopfidhya, m., 78 |
| , | · · | Göpüdhya, m., |
| P | | Göpi's churn. 3, 8 gorava, a faica priest. 63 |
| Carlo | m a. | Göpüdhya, m., |
| Faizībād, vi., fish, symbol on coin, | . 70,94n | Göpü's churn |

| PAGE | Page |
|---|---|
| 159n | Hara, s. a. Siva, |
| gorra, | Haravali, quoted, |
| götras:— Aśva | Hari, s. a. Vishnu, |
| Aśva, Bharadvāja or Bhāradvāja, 84, 94n | Haribar, et |
| Bharadvaja or Bharadvaja, Bharava, 108 | Harischandra, mythical k., |
| Bhargava, | Harischandra or Harischandradeva, Kanauj |
| Children P. 1 | k |
| GREEVE, 50 | Harischandra or Harischandradeva, Naga- |
| GArgya, 105 | variti (1) k |
| Kapya, 103 Kasyapa or Kasyapa, 25, 33, 35, 36, 45, 94 | Haritamālakadha (Haritamālagadhi), J. šākhā, 114 |
| Lauhayana, 75 | Haritiputra, |
| Lauhayana, | Harivainsa, J. work, |
| Laukakshi (Laugakshi) | Harivarman (Harivarma), Rashtrakuta ch., |
| Milpayya, | 18, 19, 23n |
| Paundri (?), | Harsha, Aill, 18, 19n, 77 |
| Sandilya, | Harshavardhana (Harsha), Konguy &., 10, 100 |
| Vajin, | Hastikupdi or Hastikupdika, s. a. Hathundi, |
| Value, | 18, 19, 78 |
| Govinda L., Massirua eta a., | Hastisens, J. |
| GOVINGE 11., won | Hathundi, m. |
| GOVINGE 111., do- | Hatti-Mattur, ti-, |
| GOVIDGREERBEITS, MUNICIPALITY | havans, |
| Grahamitra, m., | Hazārā, di., |
| Granabane to | Hemachandra, author, |
| Grahasiri, J., | Hēmachandra, quoted, |
| (atabay) a. wan, | Hemadeva, m., |
| Guha, s. s. Skanda, | TITE-ANDERS / familiary |
| Gupabhajana, sur. of Paramesvaravarman I., | Hēmāvati, vi., . 57, 58, 59, 60, 61, 62n and add- |
| Gunabhajana, sur. of Paramesvararman I. on | Henieru, s. a. Hemavati, |
| Gunabhara, sur. of Mahendravarman L, 9n | Hithian bar and |
| Gunama sur, of Vilavaditya Lil., | Hinen-Islang, Carnese Programs |
| Gunslaya, sur. of Sarasimina values . 150n | Hameha, ri. |
| Gunavarma, M., 149, 150, 153 Gunavarma, m., 29, 31 | The letters as |
| Gunavarma, m., Gunda-Mahadevi, queen of Dharavarsha, 29, 31 | Huvaksha, Huveksha or Huveshka, Kushana |
| - A Charles | k., 112 and add., 113 and add., 114 |
| Gundāuka, s. a. Gondau, | Hvangte, Chinese k., 92 |
| Gupta, dy., 63n guravadigal. | |
| | |
| Gurjara, co., | ı |
| Gurjara, famaly, | 1 |
| Gwalior, vi., | Jehohhawar, via |
| | Yamali mi |
| | Them Coulon, 129, 130, 131, 132, 133 and ado. |
| H | Immadi (Irmadi)-Nolambadhiraja or Nolam- |
| . 114 | adhiraja, Nolamba (Pallava) ch., |
| Haginadi (Bhaganandi I), se., | Indian Museum, |
| Haidarabad, vi., | Indra, god, |
| Haihaya, family, | Indea II. Rāshtrakūta ka |
| Hammira, k., | Indra III., do., 148, 149, 169 |
| hana, s. c. pana. | T |

| PAGE | PAGE |
|---|--|
| Indra IV., Rāshtrakūta k., 149 | Jatavarman Vira-Pandya, Pandya k., 139 |
| Indradatts, Traikūjaka ch., | Janupur, vi., |
| Indranadi; s. a. Indravati, 25, 28 | Jayachchandra or Jayachchandradeva, Kanani |
| Indrasthana, s. a. Delhi, 96 | *., |
| Indravati, ri., | Jayadāsi, f., |
| Indrayudha, k., 83 | Jayantachandra, s. s. Jayachehandra, 95n |
| Iriva-Nolamba, sur. of Diliparasa, 62 | Jayantasimha, Chaulukya k., |
| Iriva-Nolamba, sur. of Nolipayya, . 63, 62 | T- 7 1-17 (CH 2-07 0 |
| Iśāna, s. a. Šiva, | Jayashki, Chandella k., |
| Islām, | Jayasinha (II.), W. Chālukya k., 82 |
| Iśvara, m., 80, 81 | Jayasımha (11.), W. Chālukya k., |
| Iévara, s. a. Šiva, 5, 12 | |
| Iśvara or Iśvarapotaraja, s. o. Paramēšvara- | Jeja, s. a. Jayasahu, . 45 Jejabhukti or Jejabhuktika, s. a. Bundelkhand, |
| varman I., 4, 101, 105 | 45, 46 |
| Iśvara-Shadaogavid, m., | Jhansi, vi., |
| Tr | jihvamuliya, |
| I-tsing, Chinese pilgrim, | Jina, god, . 18, 20, 109, 110, 111, 112, 115, |
| t-tatug, Omnese payram, 102 | 117, 148, 152, 163r |
| | Time dand Th. N. Sa |
| J | The second secon |
| tally and the first transfer of | Tieseles malt. |
| Jaabbe or Jayabbe, queen of Nolambadhiraja, | El-Tada - The |
| 56, 59, 68 | Time that are |
| Jagaděkabhushana, biruda of Narasimhaděva, | the same of the sa |
| 40, 42 | |
| Jagattunga, sur. of Gövinda II., . 83, 84 | Tunikas -Tanad |
| Jagattunga, sur. of Gövinda III., 59 | Jupiter, planet, |
| Jagdalpur, ei 31 | |
| Jaina, 17, 18, 19, 34n, 57, 63, 64, 69n, 109, | |
| 111, 112, 114, 116, 118, 119, 121, 147, | - |
| 149, 150, 152n | K |
| Jainiam, | Kadabattur, vi., 64n |
| Jajahuti or Jajahöti, s. a. Jējāhhukti, 45 | a scam on, family, |
| Jajalladeva, Ratnapura ch., 26, 28 | Kadambari, name of a work. |
| Jalla, vi., 14, 17 | ******* * * * * * * * * * * * * * * * |
| Jalla, vi., | ALMANDA PAL DERICATERAN, CA. |
| Jambusara, vi., | Kanaum, Fl., |
| Jambusarah-sthana, vi., | Kailasa, mo., 9, 13 |
| Jāmusāhu, m., | |
| Janardana, s. a. Vishpu, 10 | Kaira, et |
| Janghai, vi., | Kakatika, school of B. monks (?), |
| Janojanita, m., | Kalabbra co |
| jātskarman, birth ceremony, 95 | Kalachuri du |
| Jatak Raya, ch., | Kalabala and of ar a |
| Jatanpal, vi., 40, 42 and add. | Kalaia au |
| Jatara, et., | Kalamba mi |
| Jatavarman Sandara-Pandya I., Pandya k., | Kalamkam Narayana ta |
| 139, 142, 143, 146 | Kalamurkha and acceptant |
| Jatavarman Sundara-Pandya II., do., | Kalaniawa a - Watt |
| 142, 143, 144, 145 | Kalemya (Kalamba) |
| | 34 |

| PAGE | PAON |
|---|--|
| Kales Dewar, s. a. Maravarman Kulasekhara I., 145 | Karabata-nagara, vi., 16a |
| Kali age, | Karamdamda, vi |
| kali, a warrior, 84 | Kargawan, vi., |
| Kali, m., 80, 81 | Karhād, vi., |
| Kali-Chōrēśvara, te., | Karigavā-vishaya, di., |
| Kalidasa, m., | Karikāla, Chōļa k., 26, 58a |
| Kalidasa, poet, 82, 83, 102 | Karka I., Rāshtrakūta k., 85,86 |
| Kalinjar or Kalinjar, vi., | Karkarāja, Rāshtrakūta ch., 81, 82, 83 |
| Kalivallabha, sur. of Dhruva, 84 | karma, the eight-fold (ashtavidha), 2 152 |
| Kalladakurichehi, ci., 138, 141 | Karnāta, s. c. Rāshtrakūta, 62n |
| Kallam, vi., | Karnāṭaka, co., |
| Kaluchumbarru, vi., 62 | Karnātaka-Kavicharite, quoted, 149n, 150 |
| Kalyspakataka, vi. (?), | karsha, cois (?), |
| Kamalabhadra, J. teacher, 69n | Karttikēya, s. a. Skanda, 15 |
| Kamalalita, sur. of Narasimhavarman I., . 6, 10n | Karavār, ei., 130, 131, 132, 183 |
| Kama Nayaka, m., | Kāśākudi, vi., |
| Kamaraga, sur. of Nandivarmau, | Kashmir, co., 80 |
| Kamaraga, sur. of Paramésvarararman I., 8, 10, 12 | Kaši, s. a. Benares, 94, 95 |
| Kamaraja temple, s. s. Gaņēša temple, . 10n | Katachchuri, s. a. Kalachuri, 73, 74 |
| Kamauli, vi., 94 | Katak (Cuttack), vi., 44n |
| Kamavilasa, sur. of Narasimbavarman II., . 10n | Kavēra, co., |
| Kaměšvara, te., | Kāvēri, ri., 101, 102, 105, 139n |
| Кара, т., | Kavi, vi., 82 |
| Kanakasenabhattaraka, sur. of Vadiraja, . 69n | Kavichakravarti, sur. of Ranna, . 149n |
| Kanakasenasiddhantada-Bhatare, J. | Kavirājahamsa, sur. of Nāgavarma, . 148n, 149n |
| teacher, | Kavirajamarga, name of a Kanarese work, 149 |
| Kanauj, vi., 45n, 77, 94, 95 | Kaviratna, sur. of Ranna, 149n |
| Kanchana, m., | Kaviśvara, sur. of Śrivijaya, 149 |
| Kanchi or Kanchipura, s. a. Conjeeveram, 2, | Kavitagunarnava, sur. of Pampa, 149n |
| 3, 4, 5, 6n, 7n, 9n, 10n, 12, 13n, | Kavyadarsa, name of a work, 50a |
| 15, 16, 44, 58p, 59p, 64, 85, 101, 105 | kāyastha, 46n, 48, 78, 79 |
| Kanda, metre, 148n | Kendatti-Madivala, vi., 59n |
| Kandavara, ei | Kendur, et., 14, 15, 16n |
| Kanharadêva, Nagavamsi k., | Kěrala, co., |
| Kanhasarman, m., 105 | Kēšavadēvasūri, J. teacher, 20 |
| Kanberi, ci., 52 | Kēšavašarman, m., |
| Kanippakkam, vi., 127 | Khairai (Khaira), vi., 94 |
| Kanishka, Kushana k., | Khajurabo, vi., 45n |
| Kaniyas-Tadakasarika, vi., 52, 53, 54 | Khandava, forest, 26 |
| Kankali Tila, mound, 112, 116, 119 | khandaga, grain measure, 105 |
| Kanthadurga, s. o. Kanthköt, | Khariar, vi., |
| Kanthköt, vi., | Khōmāṇa, k., |
| Kanyakubja or Kanyakubja, s. a. Kansuj, 78, | Khottiga, Rāshtrakūta k., 149 |
| 79, 95n | Khri btsong lde btsan, Tibetan k., 89, 92 |
| Kapalika, ei | Kilēri, tank, 69 and add. |
| Kapura, ei., | Kinsaris, vi., |
| Kapura, s. s. Kapura, 52, 53, 54 | Kirtiraja, Chaulukya (or Chalukya) ch., . 77 |
| Kapur-ahara, di., | Kirtivarman I., W. Chalukya k., . 15, 101, 105 |
| Karabato, di., 14 and add., 16 | Kirtivarman II., do., . 3, 14, 33n |
| | 12 |

| Page 1 | Pier |
|--|--|
| kiruvați, plant (?), | Kurnool, vi., 100 |
| | Kurnool, vi., |
| Kodumbāļūr, vi., | kuruki (gurchi or gurige), plant, 69n and add. |
| | Whenevel at |
| And the second s | Kuruspāl, vi., |
| Kölar, vi., 6ln | Kushapa, dy., 107, 108, 109, 120 |
| Roleya, J. gana, 110 and add., 111 and add., | Kusika, s. o. Kanauj, |
| 112 and add., 117 and add., 118 and add. | Kuth-ud-din Aibak, Slave king of Delhi, . 46 |
| Konganam, co., | Kuttalam, vi., . 122, 123, 124, 129, 130, 133, 135 |
| Konganivarman, sur. of W. Ganga kings, 56n, 68 | kutumbin, |
| Konnasarman, m., 106 | Kuvalāla, Kuvalāla or Kovalāla, s. a. Kölār, 56n, 68 |
| karada or karada (ködrava), millet, 47 | Kuvēra, god, 10 |
| Kōrī, m., | |
| Korumelli, vi., | |
| Kosala or Maha-Kosala, s. a. Dakshina-Kosala, | . L |
| 26, 28 | Laddigam, vi., 61 |
| Kôtwa, vi., | Laghudējrāra-khētaka, vi., |
| Kövanakere, tank, | Lakahmana, Chahamana king of Naddala 10 |
| Kōyatūr, s. a. Laddigam, 61 Koyilēri, tank, 69 | Lakshmesvara, vi., 78 |
| | The state of the s |
| Krishpa, ri., | Lalitankura, sur. of Mahendravarman I., . 7n |
| Krishņa or Krishņarāja I., Rāshtrakāta k., 82, | languages :- |
| . 83, 84, 86 | Chinese, |
| Krishna or Krishnaraja III., do., . 63n, 77, | Kanarese (Kannada), 56, 57, 66n, 148 |
| 78, 148, 149 | Pall, |
| Krishnapuru, s. a. Kuruspal, 31 | Prakrit, 52, 101 |
| Krishparaja, Kalachuri k., 74 | Sanskrit, 2, 18, 25, 32, 35, 37, 39, 41, |
| Krita aga | 45, 49, 52, 56, 66n, 73, 76, |
| Kehatrapa, dy., | 80, 81, 93, 101, 107, 109, 148, 149 |
| Kshatriya, caste, | Tamil 27, 56, 63n, 64n, 102 |
| Kublai Khan, Mongol emperor, 145 | Telaga, |
| kulaputraka, | Al Detain |
| Kulöttunga or Kulottunga-Chöla I., Chöla | Tanii ar Laniilez |
| k., | lata co |
| Kulöttunga or Kulöttunga-Chola II , do., 43, | Lanvilue a Laws |
| 125, 126, 128, 138 | Lavana, co. |
| Kulöttunga-Chöda II., s. a. Kulöttunga-Chöla II., | Leiden (Laydon) plates |
| 125, 136, 137, 138 | Later page at an Tanana |
| Kulöttunga-Chöla III., Chöla k., 125, 127, | Lewa, vi., |
| 1:8, 129, 130, 131, 132, 133 | Lhasa, vi |
| Kumaragupta I., Gupta k 71, 73 | |
| kumārāmātya, 50, 71, 72, 75 | linga, 25, 32, 35, 70 |
| Kumāranārāyaņa, sur. of Somēšvara I., 29 | Lökaditya, sur. of Paramésvaravarman I. |
| Kumarasambhava, quoted, 830 | AUGSHINDSORT, Trease of I |
| Kumāraširi, f., 111 aud add, | Lokayya, m. 36 |
| Kumbhakopam, vi., | Lokayya, m., 57, 70 Loke, r. c. Lokya-[Samvat], 80 |
| Kundasvāmin, m 106 | Lokesvara, te |
| Kūram, vi., 2 | Lucknow Museum |
| Kuramaravyabhatta, m., 71,72 | Lucknow Museum. 44, 70, 93, 94n, 106, |
| kurchi, tree, | 107, 109, 110, 111, 112, 1170, 118, 119, 120, 121 Lūla, m., |
| | |

| PAGE (| Page |
|---|--|
| | Mahārāja-Dēvaputra-vihāra, te., |
| | mahārājādhirāja, 15, 16, 25, 32, 33, 34, 45, 72, |
| M | 76, 77, 79, 84, 94, 105 |
| Maabar, Maparh, Ma'bar or Malabar, co., . 145 | mahāsāmanta, |
| Machhlishahr, vi., 93, 94n | mahasandhivigrahadhikrita 85 |
| Madaksira, vi., 57 | mahāsāndhivigrahika, |
| Madanabhirama, sur. of Narasimhavarman I., 6, 10n | Mahashtami day, 17 |
| Madanapala, Kanauj k., 96 | Mahasova-pattala di 94n |
| Madanavarmadéva, Chandélla k., . 44, 45, 47 | Mahāshṭamī day, |
| Madanpur, vi., | mahattama, |
| Madanpur, vi., | mahattara, 48 |
| Madhava, m., | Mahavali-Banarasa, title of Bana kings, . 60 |
| Mādhava, m., | Mahavanes, quoted, 145n |
| Madhu, demon, | Mahavira, J. saint, |
| Madhura, domon (?). | Mahendra, Chahamana k. of Noddüla, . 18 |
| Madhurantaka or Madhurantakadéva, Naga- | Mahendra, Mahendra-Nolamba, Mahendradhi- |
| ramsī k., | rāja or Mahēndrādhirāja-Nolamba, Nolamba |
| Madiregonda Parakesarivarman, sur. of Paran- | (Pallava) ch., . 56, 57, 58, 59, 60, 61, |
| taka I, 63n and add. | 62, 63, 64n, 68, 70 |
| Madras, | Mahendra or Mahendravarman II., Pallava |
| Madras Museum, 54, 148 | k., 4, 101, 105 |
| Madras Museum, 54, 148 Madura, co., 145 | Mahendravadi, vi., 2 |
| Madura, vi., | Mahêndravarman I. Pallava k., . 2, 4, 9n |
| Madurai or Maradai, s. o. Madura, 137, 120, | Mahendravarman III, do., 2, 3, 4 |
| 129, 130, 131, 132, 133 | Mahêndravarman III, do., 2, 3, 4 Mahêndravikrama, ch., 60 |
| Magadha, s. s. Bihar, 27, 50 | Mahēśvara, s. a. Siva, |
| tak talkihaita | Mahichandra, k., 95 |
| Mahabali, demon, 1, 56, 60 add., 68 | Mahisarasvāmin, m., |
| Mahabali-Vanarayar, s. a. Mahavali-Banarasa, 60 | Maboba, vi., |
| Mahabharata, 52, 58n Mahabharata, 44n Maha-Bhavagupta I., Trikalinga k., 42, 71, 72 | Mahratha or Maratha, co., 46n, 47n |
| Maha-Bhavagupta I., Trikatinga ka | Maidhara, m., 34 |
| Mahadeva, s. a. Siva, | Malik Kafur, 145 |
| Mabadêvi, queen of Rachamalla-Vermādi, 56, 68 | Maliyapūņdi, vi., 43, 62n |
| Mahagoshtha, vin . 34 | Mallayashtika, vi., 49, 50 |
| mahājana, | Mallikarjuna, Kalamukha teacher, . 64r |
| Mahagoshtha, vin 34 mahajana, 44n Maha-Jayaraja, ch. 44n Karttika.73, 75 | Mallikarjuna, te., |
| | Mallishēna, J. teacher, . 69n, 83, 150 |
| Mahakarttika 1994 mahakahapatahka, 135 | Mālwā, co., |
| Mahalingasvamin, to., Mahamalla, sur. of Narasimhavarman I., 1, 101, 105 560, 77 | Mamallapuram, s. s. Mavalivaram, 1, 101 |
| Mahamalla, sur. of Narasimiavaria | Mammata, Rāshtrakūta ch., 18, 19, 20 |
| mahamandalesvara, oa | Mana or Mani, tribe, |
| Mahanaka-Dévadasa, m., 34 | managa, grant model of |
| Mahanda, m., 34 | Manapara, regend on com, |
| mahāparibrājaka, 74 | mandaliga, |
| mahapilupati. 76 | Manuata, mon |
| mahāpratihāra, | Mander fo. |
| mahārāja, 35, 36, 40, 41, 42, 50, 60 and add., 73, 74, 75, 104, 105 | Mangala-Nombadhirāja, Nolamba (Pallava) 58, 62a |
| Maharaja (Maharaja), title of Kushana kings, | CA |
| Maharaja (Maharaja), 112, 113 and add., 116, 117 | Mangalééa, W. Chalukya k |

| The second secon | |
|--|--|
| PAGE | PAGE |
| Mangi. Nolamba (Pallava) ch., 62n | Mitra, f., |
| Manikanthēśvara, te., | Mitradêva, m., |
| Manikgarh, et 27 | Mitraśiri, f., |
| Manikyadevi, goddess, 27 | mohaniya, , |
| Manikyadevi, f., | months, lunar:- |
| Mānkeshwaree, s. a. Mānikyadēvi, 27n | Āshādha, 20, 57, 65, 69, 137, 138 |
| Manne, vi., 84 | Bhadrapada, 64n, 76 |
| Mantrawadi, vi., | Chaîtra, 40, 132, 136 |
| mantrin, | Jyëstha 40, 41, 42 |
| Marasimba II., W. Ganga k., . 78, 148, 150 | Karttika, . 45, 71, 72, 73, 75n, 76, 80, 81 |
| Maravarman Kulasekhara I., Pandya k., 139, | Magha, 19, 30, 76, 79, 126 |
| 140, 141, 145, 146, 147 | Marga (Margasiras), 50 and add., 51 |
| Maravarman Kulasekhara II., do., 140, 141, | Pansha, 94 |
| 146, 147 | Phalguna, |
| Maravarman Sundara-Pandya I., do., 138, 143 | Śrāvaņa, |
| Maravarman Sundara-Pandya Konermai- | Vaisakha, 52.54, 101, 105 |
| kondan, do., | months, solsr :- |
| Marco Polo, | Āṇi, |
| Marivasati, ei., | Mosipi, ri., |
| Mariyamman, te., | A STATE OF THE STA |
| Marudanëri, tank (?), | ******* |
| Marattuvakkedi, ri., | 1 May 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 |
| Marwar, co | Muhammadan, |
| Mathanadeva, Gurjarapratihara ch 19n | |
| Mathurs, vi., 106, 107, 109, 110, 111, 112, 113, | |
| 114, 115, 116, 117, 118, 119, 120 | 44.000 |
| Mattapramatta, sur. of Narasimbavarman II., 7n | MARKET TO A STATE OF THE STATE |
| Mattavikūra, do., | |
| | |
| Mauranipur, vi., | Mulapalli, s. a. Mulakādu, |
| Mavalivaram or Mahabalipuram, vi., 1, 5, 8, | |
| 10, 11, 12 | 76, 77, 78, 79 |
| Mayachara, sur. of Narasimhavarman II., . 9n | Mula, J. samgha, |
| Mayavaram, et., 130, 131, 132, 134 | Mulura, et., 69 |
| Mayindadi or Mayindadiya, ch., 60n, 61 | Mulvāyi-rājya, di., 63n |
| Mayuranathusvamin, to., | Mummadi-Obola, s. a. Rajaraja I., 63n |
| Mědani Păndě, m., | Mungir (Monghyr), vi., |
| Mědapäta, s. a. Mewär, | Munjarija, Paramāra k., 18 |
| Mědini, quoted, 84n | Mura, demon, |
| Mělágani, vi., 60n | Mutausha, vi., 45 |
| Mělayěri, tank, | Mysore, co., 63n |
| Mentoja, m., | |
| Mětravála, s. a. Mirpur, | |
| Mewar, co., | N |
| | W |
| | Nadagām, vi., |
| 36: 31.12 | Nadaya Brahmana, m |
| Minirava, m., | Naddula, vi., |
| and a | nādu, 67, 39 |
| Mirpur, w., | Naga, |

| PAGE | PAGE |
|---|--|
| Naga, Nagavamáa or Nagavamái, family, 25, | Nannasvāmin, m., |
| 27, 32, 33, 35, 36, 37, 39, 41 | Nanněšvara, te., 64 |
| Nagapatana, s. a. Negapatam, 102 | Nanniga or Nanniga, sur. of Ayyapa, . 58. 62 |
| Nagapattanam, do., 102 | Nannivala, oi., |
| nagspattanam, legend on coin, 103 | Nárada, sage, |
| Nagaséna, m., | Naradapañcharatra, name of a work, 43n |
| Nagatideva, Nagavanisi k., 25n | Naraks, demon, |
| Maffatradast Tambatames and | вагая́аявла, |
| 1 | Narasimba or Narasimhavarman I., Pallava k., |
| Time Colored soil | 2, 4, 5, 6, 9n, 10n, 101, 105 |
| Tightstattates last and | Narasimbadēva or Narasimbadēvarāva. Nāga- |
| Mule-Disumense, | vamii k., |
| Naishadhiyacharita, poem, | Narasimhapotavarman, s. s. Narasimhavarman |
| Dakata, | II., 4 |
| nakshatras: 124, 128 | Narasimhavarman II., Pallava k., 2, 3, 4 |
| Andreams, . | Narasimhavishnu, s. a. Narasimhavarman II., 2, 4 |
| Arush, 100 | Narayana, s. a. Vishnu, |
| Asicana, 100 | Narayana, s. a. Narayanpal, |
| Aśvini, | |
| District | Narayanpal, vi., |
| Dhanistha or Sravishtha, 126, 127, 135,136, 138 | Naregal, vi., |
| Hasta, | Nareada (Narbada), ri |
| Krittika, 133, 134 | |
| Magha, 65 | |
| Mrigašīrsha. 129, 134, 135, 141, 144 | At an analysis of the state of |
| Mula, | and the state of t |
| Punarvasu, . 130, 131, 140, 142, 143 | ATM SHOWEN SECTION AND ADMINISTRATION ADMINISTRATION AND ADMINISTRATION AND ADMINISTRATION AND ADMINISTRATION AND ADMINISTRATION AND ADMINISTRATION AND ADMINISTRATIO |
| Pürva-Bhadrapadā, | ALC: T-DEATH T-DEATH-T |
| Purva-Phalguni, | and a self-record |
| Pushya, 19, 127, 128, 135, 143 | Tall a to De marrow a seal |
| Rěvati, 64n, 140 | Trace and the second of the se |
| Rôbipi, 130, 134, 135, 144 | nāyaka, |
| Satabhishaj, . 123, 124, 138, 139, 142 | Nayanamanonam, sur. of ivarasimilavarinat 1., o, 1 Nayankura (Navankura), do., |
| Sravana, 125, 126, 138, 146 | Nayankura (Navankura), do., |
| Svāti, 37, 38, 182, 134, 147 | Talk American control of the control |
| Uttara-Bhadrapada, 128n, 132 | Titi Alabanat Trans |
| Uttara-Phalguni, . 122, 129, 130, 147 | Negaltegója, sur. of Nagavarma, |
| Nalayiraprabandham, name of a Tamil work, In | Trefalmenti and |
| pima | TARITATION - LANGE - L |
| pāmakarana, name-giving ceremony, 95 | Disease and |
| Nandagiri, mo., 56n, 64, 68 and add. | Nidagundi, vi., |
| Nandalur, vi., 58n, 125, 126, 129, 131, 134, | TATAMAN LANGUE AND THE PARTY OF |
| 142, 143, 144 | Nidugal, vi., |
| Nandana, ch., 49, 50 | Literature as my Tan-Parkerson |
| Nandappolavaněri, tank, | |
| Nandi (Nandin), ma | N 11 & 0 11 11 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 |
| Nandi or Bhoga-Nandi, vi., 59n, 64 | |
| Nandipotavarmau, s. o. Nandivarman, . 4 | Niravadya or Niravadya-Punyavallabha, m., 15, 17 |
| Nandivarman or Nandivarman Pallavamalla, | Nirgunda, three-hundred, di., |
| Pallava k., 3, 4, 9n | Nirihullaka, ch., |
| | |

| PAGE | PAGE |
|--|--|
| | padivala |
| Nirujana (?), vi., 14, 17 Nirupama, sur. of Dhrava, | Pahlav Das, m., |
| Nirapama, sur. of Darava, Niruttara, sur. of Narasimbavarman I | Paithan, vi., 82 |
| Niruttara, sur. of Paramésvaravarman I., . 9 | pala, weight, |
| Niruttara, sur. of Paramesvaravarman 1., | |
| nirvāna | Palavā Bhoi, m., |
| | pālidhvaja, |
| k., 59,61n Nitimarga or Nitimarga-Permanadi, sur. of | Pallava coins, |
| Ranavikrama, | Pallava, dy., . 2. 3, 4, 5, 7n, 9n, 10, 11, 15, |
| Nityavarsha, sur. of Indra III., | 43, 44, 56, 57, 58n, 59n, 60, 63n, 68, |
| Mitamounts are of Khottien 149 | 101, 102, 105, 106 |
| nivartana, land measure, . 102, 105, 106 | Pallavadhiraja, s. a. Charuponnera, 56, 58, |
| Nodambarāshtra, s. a. Nojambavādi, 62a | 59, 68, 8In |
| Nolamba (Pallava), family, 54n, 57, 58, 59n. | Pallavakula-tilaka, title, |
| 60, 61, 62n, 63, 64n, 69 and add., 84n, 148 | Pallavēšvara, te., 64 |
| Nolambadhiraja, Nolamba (Pallava) ch., 5vn, 63n | pain, abbreviation for pandita, 45n |
| Nolambadhirāja, s. s. Polalchora, 56, 58, 59, | Pamahai (Pamahā), s. a. Pohā, 94, 99n |
| 60n, 61n, 62, 63, 68 | Pampa, Kansada poet, 149n |
| Nolambadhiraja-Chorayya, Nolamba (Palla- | раца, |
| va) ch., 60n, 63n | panatihari or panatidhari (prajnaptidhari), |
| Nolambaku'antaka, sur. of Marasimha II., . 150 | J. functionary, f., 111 add., 116 and add. |
| Nolambalge, one thousand, di., 57, 59 | Paŭchāla, co., 107, 108 |
| Nolamba-Narayana, sur. of Mahendra, 62 | pañehamahāśabda, |
| Nolamba-Naravanesvara, te., 62 | Pañchanadēśvara, te., 130, 131, 133 |
| Nolambapattapa, vi., 57n | p-nehapradhina, |
| Nolambasamudra, tank, | Panchavan Brahmādhirāyan, ch., 63n |
| Nolambavadi, thirty-two thousand, di., 57, 62n | pandita (pandit) |
| Nolipayya, Nulipayya or Nolambadhiraja- | Pandya, co., . 15, 85, 102, 105n, 128, 129, |
| Nolipsyya, Nolamba (Pallava) ch., 62 | 180, 131, 132, 133, 138, 145 |
| Nolombi, the Nolamba king, 60 | Papini, quoted, 5n. 52, 73 |
| Nonaba, sub-sect of Wokkaligas, 57n | раправа, |
| Nonavinkere (Nonambankere), vi., | Pāpānguļam, vi., |
| Nripatunga or Nripatungavikramavarman, | Parakesarivarman, sur. of Chola kines. 127 |
| Ganga-Pallava k., 67a, 60 | paramabhattaraka 25, 45, 79, 84, 94 |
| Nripatungs, sur. of Amoghavarsha I., . 149, 150 | Parama-Mahadevi, Nolamba queen, 64n |
| Nulambapādi, s. a. Noļambavādi, 63n | Paramara, dy., |
| | LALBERTALISTE CRESSELLE D. AA AC AC AC |
| 0 | paramēšvara, . 15, 16, 25, 45, 79, 84, 86, 94, 105 |
| the second secon | Paramésvara or Paramésvaravarman I., Palla- |
| Omkarčšvara, te., | ea k., 2, 4, 5, 8, 9, 10, 11, 12, 101 |
| Orissa, co., | Paramésvaravarman II., do., 2, 3, 4 |
| Offises, co., | 53n |
| | Parapara or Paravara, sur. of Narasimhavar- |
| P | man 1., |
| Pachanagari (Uchehanagari), J. 13kha, 112 and add. | Parspara, sur. of Narasimhavarman II., . 5, 7n |
| Pachar, vi., | 10 |
| padadhakkā, | Pārdi, vi., |
| Padammaseāmin, m., | Dismett medden |
| | 1 Tatvatt, gradess, |

| PAGE | Page |
|--|---|
| Paśupati, s. a. Šiva, | Prithvidhara, m., |
| pāţaka, a hamlet, | Prithvirāja, Chāhamāna k., 46 |
| pātāls, the lower region, 9, 20 | Prithvivarmadeva, Chandella k., 45 |
| Pattadakal, vi., 3, 33n | Ptolemy, |
| Pattidamanëri, tank, | Pudgala, vi., |
| Pauthier, author, | Pulakěšin I., W. Chalukya k., . 15, 101, 104 |
| pedda (?) | Pulakésin II., do., 2, 4, 101, 105n |
| Pedda-Tippasamudram, vi., 60 | Puli-nādu, di, 60, 61 |
| Peggu-ür, vi., | Puliyar, s. a. Chidambaram, |
| Peking, | Pulyama Nāyaka, m., |
| pellaka-pellaka (?), | Panganur, vi., 60, 61 |
| Pendrai (Pendra), vi., 94 | Punyavallabha, family name, 15 |
| Pennar, ri., | pura, gum-rezin, |
| Permanadi or Permanadi, title of Śripurusha | Paranagara, Tamil poem, 64n |
| Muttarasa, 59n, 61 | Purari, s. a. Šiva, |
| The state of the s | Puriyêri, tank, 69 |
| m 1 1 11 01 | Parpa, ri., |
| Tet dimonia bladel and . | purohita, |
| Peshawar Museum, | Pururavas, mythical k., |
| Pimpari, vi. 81 | Puśabala, f., |
| | Puśila, J. teacher, |
| | Pavalaikkudi, vi., |
| Pirabandi (Vira Pandi ?), s. a. Vira-Pandya, 145 Pithaparam, si. 35, 43 | 2 11 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 |
| a distribution and | |
| Pogariya, J. gana, 57, 69 | |
| Pohā, vi., | B |
| Polalchora or Polalchora-Nomba, Nolamoa | |
| (Pallava) ch., 58, 59, 61, 62n | ra, abbreviation for ravuta, 45, 94n |
| Polalchöramangala, sur. of Avani, 62 | Rachamalla, Rajamalla or Rachamalla-Vermadi, |
| Ponnēra-goravar, Śaiva teacher, 63, 64 | W. Ganga k., 53, 59, 60, 61, 63, 68 |
| pôta or pallava, a sprout, | Răchamalla II., do., |
| Prabhata, Marāthi magazine, Sl | Rachamalla III., do., 69n |
| Prabhutavarsha, sur. of Gövinda II., . 83, 84 | Racheya-Ganga, ch., 61 |
| Prabhutavarsha, sur. of Gövinda III., 59 | Raghuvamáa, quoted, 82, 83n, 102 |
| pradoshaka, | Rahappa, k., |
| Pragida Kamathi, m., 34 | Rāhihīyaka, m., 94 |
| Prajapatisarma, su., | Rābīla Pāṇḍē, m., 41, 43 |
| prašasti, | rainy season, 109, 111, 112, 115 |
| prastha, grain measure, 47 | Rajabhushana, title of Somésvara I., . 20, 33, 34 |
| Pratapāvaloka, sur. of Govinda IL, . 83, 84 | rsjadhirsja, |
| Pratigandabhairava, biruda of Sòmèsvara L, 29, 37 | Rajadhirāja I., Choļa k., 122 |
| pravahapa (potha), a load, 19 | Rajadhiraja II., do., 126, 127 |
| pravaras : | Rajakësarin, ser. of Cholo kings, 122 |
| Avateāra, 45 | Rajamalla, sur. of Vikramaditya I., . 101, 105 |
| Кабуара, 45 | Rajapāla, m., |
| Naidhrava, 45 | Rajapura, vi., |
| Prithivisara, sur. of Narasimhavarman I., . 5 | rājaparusba, 79 |
| Prithivishëra, m., | Rajaraja, sur. of Paramesvaravarman I., . 10 |
| Prithiviśvara, te., | Rājarāja I., Chōla k., 68, 127 |
| prithivivallabha or prithvivallabha, 15,16, 56, 84, 105 | Rajaraja II., do., 63n, 125 |
| | 7, |

| PAGE | Pac |
|---|--|
| ājarāja III., Chēļa k., 184, 135 | Radragana, misreading for Dahrasens, 5 |
| ajaraja I., E. Chālukys k., 43 | Rudratman, title of Someévara I., |
| lajasimha, s. a. Narasimhavarman II., 2, 3, 4, | rūpakāra, |
| 5, 10n, 12, 13n | |
| 5, 10n, 12, 18n Rajasimhēšvara, te., | |
| Sinct hanive | |
| ājasthānīya, 80n | 8 |
| ajavali, 79 | sādhu, |
| Zajěndra-Chôla I., Chôla k., | |
| | Sadhu Sóma, m., |
| žajėndra-Chola (II.), s. s. Kulottunga-Chola I., | Sagara, mythical k., |
| 27, 135 Rajēndra-Chōja III., Chōja k., 135, 136 | Sahadēva, m., |
| | Šailēšvara or Šailēšvarasvāmi, te., 71, |
| Rajendradeva, do., 122, 136 | Sairaharāja-rājya, dā., |
| Rāji, Chaulukya k., | Saiva, 63, |
| Rājor, vi., | Sakalakalyana, sur. of Namsimhavarman I., |
| Rakkasa or Rakkasa-Gabga, W. Ganga k., . 150 | Sakambhari, vi., |
| Alaka, | Śakkarakköttam, s. o. Chakrakūta, |
| Rama, saint, | Sakyamuni, Buddha, |
| Ramanuja-mandapa, cave temple, 2, 11 | salage (salaga), grain measure, |
| Rimnagar, vi., . 106, 107 and add., 111, 115, 120 | Saluvanguppam, vi., |
| Rapadhavala, m., | samanta, |
| Ranadhira, sur. of Narasimhavarman II, . 13n | Samandhamaticus |
| Ranajaya, sur. of Nandivarman, 4, 12, 13 | Samaradhanamjaya, sur. of Nandivarman, 12, |
| Ranajaya, sur. of Narasimhavarman II., . 4 | Samastabhuvanāśraya, biruda, |
| Ranajaya, sur. of Paramesvaravarman I., 4, 5, 8, 10 | Samstiamana, 26. |
| Raparasika, sur. of Vikramaditya I., 2, 4, 101, 105 | samaya, a religious system, |
| Ranastipundi, vi 43, 56n | 641114y111, |
| | Sambhava or Sambhavanatha J. mint. |
| Rapavikrama, W. Gonga k., | Sambhu, s. a. Siva, |
| Ranna, Kannada poet, | Samgamasiha (Samgamasimha) ch. 79 74 |
| Kanna, Kannada poet, 149n, 160n | Sainghadasa, m., |
| Rashid-ud-din, author, 145 | Samghanadhi, m., |
| Rashtrakuta, dy., 18, 19, 57, 58, 59, 61, 62n, | Samgramadhira, sur. of Nandivarman, . 12, |
| 63n, 77, 78, 81, 149, 150 | Samkara, s. a. Siva, |
| Ratanpur (Ratnapur), et., 26, 28 | Samkaragana, Kalachuri k. |
| Ratnapura, s. a. Ratanpur, 26 | samkrantis :- |
| Ravana, giant, 9 | Wannell-made last and |
| Ravisvamin, m., 50 | Ifteravana-posicionasi / TEF |
| rāvuta or rāuta, 94n | Environment on |
| Rayagad, vi., 14 | Samudra, epithet of Sina, |
| Raypur, vi., 44n | Samueles, operate of steal, |
| rēpha, | Samudra-Gupta, Gupta k., |
| Rēvadbyaka, m., | Săāchi, vi., 71, 11 |
| Rishabhanatha, J. saint, 19, 112 | Oknobor, vi., |
| Rishiyūr, ci | sandhivigrabika, |
| | sabgha. |
| m a fit. | Sangharakshita, m., |
| 9 1 1 1 9 | Sankhavivaraka, vi., |
| 70 3 30 4 (6) 4 | Sankhēda, vi. |
| | Sabkīrņaka, metre, |
| Rudradevasamini, f., 111 and add. | Santibhadra, J. teacher, |

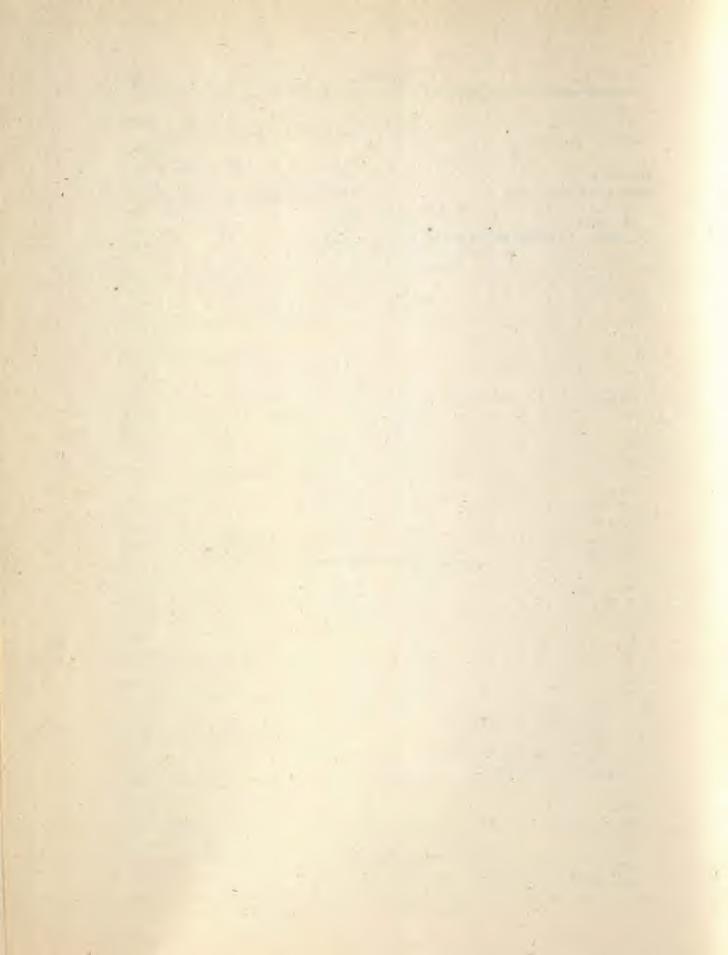
| PAGE | PAGE |
|--|---|
| Santideva, J. teacher, 69n | Sirighana or Sirighana (Śrighana), s. a. |
| Sărasvata-mandala, co., | Buddha, |
| Sarasvatī, ri., 20 | Buddha, |
| Sarnath, vi 80, 109 | Siva, god, . 8, 9, 10, 11, 12, 13, 31, 58n, 71, |
| Sarsavpī, ci., | |
| Sarvatobhadra, sur. of Narasimhavarman I., 5, 7 | 72, 75n, 79, 140 Sivadēva, m., |
| Sarvatobhadra, sur. of Narasimhavarman II., 5 | Sivarāja, m., |
| sarvavādi-nāyaka, | Sivaratri or Maha-Sivaratri, festival, . 125, 126 |
| Sarvavikramatunga, sur. of Srivijays, 148, 149, 153 | Sivaširi, m., |
| śāsana, a doctrine, | Šivaskandavarman, Pallava k., 44 |
| Sasanaděvi (Somaladěvi), queen of Jayasimha- | Šivayoganāthasvāmin, te., |
| dēva, | Siyadoni, vi., |
| Satayogesvara, m., | Siyamangalam, er., 2, 5n |
| sati-stone, | Si-yu-ki, quoted, 102n |
| Satrap, Western, dg., | Skanda, god, |
| Satyaparakrawa, sur. of Narasimhavarman I., 7 | Skanda, Bāṇa ch., 60 |
| Satvapura, s. a. Sanchor, | snake, banner, |
| Satvapura-mandala, di., | Šodāsa, Kshatrapa k., |
| Satyāśraya, s. s. Polakēśin II., . 15, 101, 105 | Šolam, s. a. Chola, 101n |
| Satyasraya, sur. of W. Chalukya kings, 16, 105 | Solivar, the inhabitants of Solam, 101n |
| Satyavakya, sur. of W. Ganga kings, 56n, 59, | Sôma, m., |
| 61n, 68, 150 | Somai, m., |
| Saumyanathasvamin, te., 125, 126, 129, 131, | Somalamahādēvi, queen of Somēšvara I., . 33 |
| 184, 142, 143, 144 | Somana, m., |
| Son 50n | Somarāja, cā., |
| Savatrata, f | Somesvara or Somesvaradeva I., Nagavanisi |
| Seythian, 106, 108, 112, 113, 115 | k., |
| Sembalattūru, s. a. Semmanahalli, . 64, 69 | Sömēśvara II., do., 27n |
| Semmanahalli, vi., 64 | Son, ri., |
| Semra, vi., | Sonaves, vi., |
| sēnabôva, a clerk, 149, 150, 153 | Sonder Bandi, s. a. Jatavarman Sundara- |
| Séns, J. aneaya, | Pandya II., 145 |
| sena, J. aneuyu, | sone, a pond, |
| sethī (seth), | Soremați, vi., 60, 61 |
| Seven Pagodas, s. a. Māvalivaram, 1, 2, 3, 4, 5, 101 | sovanika a goldsmith 118 |
| | sovanika, a goldsmith, |
| Shāhganj, ei., | Śrāvastī, vi., 109, 118 and add. |
| Sulfaro-arail, Canal wil | Śribhara, sur. of Nandivarman, . 4, 5, 12, 13 |
| Ottoro retobres | Sribhara, sur. of Narasimhavarman I., . 4, 5 |
| Condemination and a condemination of the condeminat | Sribhara, sur. of Navasimhavarman II., . 4 |
| | Sribhara, sur. of Paramesvaravarman I., 4, 5, 8, |
| manufactured arranged to the same | 10, 12 |
| miniban sembil mil | śribharah, legend on coin, 5 |
| Control and | Śrighana, s. a. Buddha, |
| and the same of th | |
| | Sri-Harsha, poet, |
| The state of the s | |
| Simhavishnu, do., | śrimida, a palace, |
| Sinda, family, | Sri-Mandalla, m., |
| Sinnamanur, vi., 140, 141, 144, 145 | Srimangala, vi., |
| | z 2 |

| PAGE | | PAGE |
|---|--|------------|
| šrimata-Harisobandradevasya, legend on seal, 94 | Svāmichandašarman, sa., | 105 |
| Śrimegha, sur. of Narasimbavarman I., . 5, 6 | Svastha, sur. of Paramesvarayarman I., . | |
| Śrimegha, sur. of Narasimhavarman II 5 | symbols, numerical, 1 | 14, 121 |
| frinishi, legend on coin, | *************************************** | |
| Srinidhi, sur. of Nandivarman. 4, 5, 12, 13 | | |
| Srinidhi, sur. of Nandivarman, | | |
| Srinidhi, sur. of Nerasimbavarman I , . 4, 5, 7 | T | |
| Srinidhi, sur. of Paraméévaravarman I., 4, 5, 8, | | - |
| 9, 10, 12 | Ta-chao-seu, fe., | . 89 |
| Srippithvivallabha or Srippithivivallabha, | Tadākāsārikā, s. a. Tarsari, | |
| biruda, | Tadiyapādi, di., | |
| Sripurusha or Sripurusha-Muttarasa, W. Gango | Tagadur or Tagaduro, s. a. Dharmapuri, 56 | , 57. |
| k | Тадэфат-пафи, di., | , 64, 69 |
| Sel-Rama or Sri-Rama-Punyavallabha, m., . 15 | Tagadār-nādu, di., | 3n, 64n |
| Srivallabha, sur. of Dhrava, 81 | Tailapa (II), W. Chālukya k., | . 77 |
| Srivallabha, sur. of Dhrava, 81 Srivallabha, sur. of Gövinda II., 83, 84 | Talapataka, vi., | |
| Srivallabha, sur. of Gövinda III., 83 | Talitataham-vishaya, di., | . 17 |
| Śrivallabha, sur. of Vikramāditya I., . 101, 105 | talandale, plant, | 69 |
| Śrivijaya, Kannada author, 149, 160 | Tanjore; of . | 63 |
| Śrīvijaya, cā., 148, 149, 150, 153 | Contains | 79. |
| Srivijaya, Jaina tencher 69n, 150 | Tapti, ri., Taraka, J. teacher, | , 100 |
| star, symbol on coin, | Taraha, J. teacher, 110 | and add. |
| star, symbol on coin, | Tarsari (Tarsári), vi., | |
| Sthanu, s. a. Siva | Taruņānkura, sur. of Paramēšvaravarman | |
| sthapati, 80, 81 | Tstammasvāmin, m., | n, 8, 10 |
| Sthirabhakti, sur. of Narasimhavarman I., . 6 | | |
| Stse zhang cheg, vi., | Tattākatala-mahaņaka, m., | . 33 |
| Subhananda, m., 45, 48n and add. | Tatteri, tank, | |
| Subhatunga, sur. of Krishpa I., 86 | Tayalur, vi., | . 61 |
| Sudra, caste, 51n, 57n | Těki, vi., | |
| Śudraka, m., | Telugu road (Vadoga-vali) | |
| Suki Nayaka Kanama, m., 34 | Tēmarā, vi., | 2. 34. 39 |
| Sukritesamkirtana, poem, | thakkura, | 94 |
| Sultan, | Thurston (Sthanies) I hade | 110 110 |
| Sultan Muhammad Shah II., Bahmani k., . 27n | Tibet, co., | 09 02 |
| summer, 114, 116, 118 | *Tibetan. | 09 03 |
| Sun, te 71 | Tibetan, tiger, crest, | E 90 97 |
| Supão Khurad, vi., | Tibunapala, m., | 9, 00; DI |
| Sunāo Khurad, vi., | Tikama, o., | 0.4 |
| Sundara-Pandya III., Pāndya k., 145 | Tel | |
| Sundar Bandi, s. a. Sundara-Pandya III., . 145 | PP | . 45 |
| Sundar Pandi, s. a. Jatavarman Sundara-Pandya | | . 138 |
| П., | Tirabhukti, s. a. Tirbut, | . 45 |
| Sunev Kulla (Sunão Kala), vi., | Tirbut, dia | . 45 |
| | Tirthamkara, s. o. Jina, . 18, 19, 111, | 115, 117 |
| | Tirukkadalmallai or Mallai, s. a. Mavalivare | am, 1 |
| | The state of the s | . 1 |
| | Committee and a committee of the committ | . 145 |
| Sarya, god, | The same of the sa | . 133 |
| Saryacharya, m., | The second and a second as a s | . 128 |
| Surya-siddhanta, | The state of the s | . 27 |
| sutradhara, | | 53, 54, 74 |
| | 02,1 | AND ASS 54 |

| Page | PAGH |
|---|--|
| | Vaillabhattasvamin, te., |
| Trailokyavardhana, sur. of Narasimhavarman I., 6 | Vairāgara, s. c. Wairāgarb, 20n, 28n |
| traireava. | Vaira (Vajrā), J. tākhā, 110, 118 |
| Tribbuyanapala, Caguine yu | A Company of the Comp |
| Tribhuvanaviradēva, s. a. Kulörtunga-Chola | |
| | a managed and a |
| Trichinopoly, vi., 2u, 102 | |
| Tribandasaha ouoted | Vajra, s. a. Wairsgarh, 26, 27, 28 |
| Trilochana or Trilochana-Pallava, s. a. Tripa- | Vajrahasta III., E. Ganga k., 25 |
| Dallara , 08n | Vajranāgarī, J. tākhā, 120 add. |
| Teilochanapala, Chaulukya (or Chalukya I) ch., II | Vajrata, k., |
| Trinayana-Pallava, mythical Pallava k., . 58 | Vakkalēri, vi., |
| Triplicane, vi., | Vākpati[rāja II], s. a. Muājarāja, 18 |
| Thinnellaura demon | Valabhī, vi., |
| Triratna, symbol, | Valahavā, m., |
| Tsandavõlu, vi- | Vallabha, sur. of Rashtrakāta kings, . 84, 86 |
| 70- | Vallabha, sur. of W. Cholakye bings, 16, 86, 104 |
| tulyameya, | Vama, sur. of Namsimhavarman I., . 6, 7 |
| Tumběpadi, vi., | Vamadasi, f., 111 and add. |
| ** | Vamankuśa, sur. of Nandivarman, 8 |
| Ū | Vanavilei (Benavilai), co., 15, 105 |
| Uchénagari (Uchehanagari), J. iākhi, 111 | Vanhadaka, m., 80, 81 |
| Udainar vi. | Vani, via |
| Wantadirom mi. | Varana (Vārana), J. gana, |
| Udra, s. a. Orissa, | Varanakagtāma, ei., 78, 79 |
| mileshon | B |
| Ugradapda, sur. of Paramesvaravarman I., . 2, 4 | A secret A set A secret (St.) |
| ulindike, plant, | Vāsudēva, J. teacher, |
| ulugu-gadare, | Vatanagarika s. g. Vani |
| upadhmaniya, | |
| ujuunimaarjaj | Vatanagarikā, eighty-four, di., 84 |
| upoury ay as | Vatésvara, m., |
| uparika, | Vatsarāja, mythical k., |
| uparikara, Upayanipuna, sur. of Narasimhavarman II 6n | vauge (vapagatya), grain sown broadenst, . 47 |
| Uragapara, s. a. Negapatam, . 101, 102, 103 | Vayiragaram, s. a. Wairagarh, 23, 27 |
| Uragapara, s. a. Negapatam, | vēdanīya, 152n |
| Uraiyur, vi., | Vēdas and šākhās :— |
| 118 | Rich, |
| Utara, m., | Ditto a factorial |
| Uttata trosam, at a 15 16 | Samso, |
| Uttarapatha, | Chhandoga, 71, 72, 75 |
| Contrate a | Yajus. |
| Cyabhasta, m., | Adhvaryu, |
| | Kanva, |
| V | Vajasaniya, 45, 50 add. 152 |
| . 69n | Věgiděša, s. a. Věbgi. |
| Vadiraja, J. teacher, | Vēngi, co |
| Vadaurar et | vernal equinox (Chaitra-vishava), 132 |
| Vadya-Vidyadhara, sur. of Narasimhavarman | Vihhranta, sur. of Narasimhavarman I., . 7 |
| 11., 80 61 | Vidagilha or Vidagilha-raja, Rashtrakiita ch., 18, |
| Vaidumba, family, | 19, 20 |
| vaidya, | |

| PAGE | PAGE |
|--|---|
| Vidderāši (Vidyārāši), Šaiva teacher, 64 | Vyant, vi., |
| Vidhi, sur. of Narasimhavarman I., 6, 7 | Vyšas, sage, 17, 54, 73, 76, 79, 106 |
| ridyādhana, 20 | |
| Vighna Bhoi, m., 34 | |
| Vigrahapāla, Chāhamāna king of Naddūla, - 18 | |
| Vigraharāja, Chāhamāna king of Śākambharī, | W |
| 18, 19n, 77 | Waira or Vairāba, &. (?), |
| vihāra, | |
| | Wairagadh, s. α. Wairagarh, |
| | Wairagarh (Vajrakara), vi., 27, 28 |
| Vijayachandra, Kanauj k., 98 | Wassaf, author, |
| Vijayāditya, Chalukya k., | winter, 110, 113, 112 |
| Vijayaditya III., E. Chalukya k., 62n | Wokkaliga, sect, 61r |
| DED | Wu-hing, m., |
| Vijayādityan Vīrachuļāmaņi Prabhumēru, Bāņa k., 61 | |
| Vijayanagara, vi., 63n | |
| Vijaya-Narasimhavikramavarman, Ganga- | |
| Pallara k., 60 | Y |
| Vijayarāja, Gujarāt Chalukya ch., 85n | Yājñavalkya-smriti, quoted, 36n, 38r |
| Vijayarājēndradēva, s. s. Rājādhirāja L, 122 | Yakehenzla 4 |
| A STATE OF THE STA | Variable |
| Vijayašakti, Chaudēlla k., | Valit # |
| | Vederineska t |
| 122, 123, 124, 125, 126 | years of the cycle : |
| Vikramāditya I., W. Chalukya k., . 2, 4, 16, | Dundakt. |
| 101, 102, 105, 106n | Hamalanta |
| Vikramāditya II., do., . 3, 4, 15, 101n | Tours |
| Vilasapura, vi., | Nandana, |
| Vimaladitya, E. Chalukya k., 43, 560, 580 | Paridhāvin, |
| vimšopaka, vimsopaka or visovaka, coin. 19 | |
| Vina-Narada. sur. of Narasimbavarman II., . 13n | Paingala, |
| Vinayaditya, W. Chalakya k., 15, 16 | Raktaksha, |
| Vinayasénasiddhantada-Bhatara, J. teacher, 57, 69 | Saumya, 32, 33 |
| Vindhyavāsini, goddess, 25, 38 | Sukla, 135 |
| Vira-Choda, E. Chālukya k., 26, 35, 43 | Vikārin, 134 |
| virama, | Vikrama, 62r |
| Vîramahêndra, s. a. Châlukya-Bhīma II., 62 | Vijambi, |
| Vira-Nonamba, title, 60 | Virodhin, |
| Vira-Pandya, Pandya k., | yaya, |
| Vira-Rajakësarivarman, sur. of Kulottunga- Chola II., | years of the reign, . 14, 16, 63n, 101, 105 |
| 140 | 107, 108, 122, 123, 124, 125, 126, |
| Visher and 10 15 20 10 10 119 | 127, 128, 129, 130, 131, 132, 133, |
| Vishnu, god, 10, 15, 33n, 40n and add., 53, 80, | 134, 135, 136, 137, 138, 139, 140, |
| Vishnu, /e., 81, 104 | 141, 142, 143, 144, 146, 146, 146 |
| Vichmontlitakhatta as | yōgas :- |
| Vishnushana m | Dhruva, |
| Vienva m. | Siva. |
| Valles a Roden | Vriddhi. |
| vyaghragann, legend on coin, | Vyatināta . 04n |
| Unabout mathematical Desire | Yuganajaka m |
| A Aufmingent Transmided CV ' PS E3 44 | Variable |
| * yagniasena, 1701 * uigsa ch., 52, 53, 74 | yuvarāja, |

| | | | | | | | PAGE | 1 | | | | | | 1 | PAGE S |
|------------------|---|------|-----------|-----|--------|-------|------|------------|-------|----------|------|--------|-------|------|--------|
| | | | | | | | | Makara, 1 | 22, 1 | 24, 126, | 127, | 129, 1 | 30, 1 | | |
| | | | Z | | | | | 1 | | | | | | 135, | 144 |
| # # | | | | | | | | Mins, . | | | 129, | 130, | 133, | 143, | 144 |
| Zafarābād, vi., | | | * | | | | 95 | Mithuna, | | | | | 4 | | 141 |
| Zodiac, signs of | | -: | | | | | | Rishabha | (Vris | habha). | | | 129, | 132, | 140 |
| Dhanus, | | | + | | 57, 65 | , 69, | 147 | Simha. | - | | | 123, | | | |
| Karkataka, | * | - | | , | | | 127 | Tula, . | | | 134. | 135. | | | |
| Kumbha, | | 125, | 126, 128, | 134 | , 138, | 139, | 143 | Vrišchika, | | | | | | 140. | |







APPENDIX

TO

EPIGRAPHIA INDICA

ANE

RECORD OF THE ARCHÆOLOGICAL SURVEY OF INDIA.

VOL. X.

A LIST OF BRAHMI INSCRIPTIONS

FROM THE EARLIEST TIMES TO ABOUT A.D. 400 WITH THE EXCEPTION OF THOSE OF ASOKA.

PROFESSOR H. LÜDERS: BERLIN.



CALCUTTA
SUPERINTENDENT GOVERNMENT PRINTING, INDIA

the state of the s The state of the s

APPENDIX.

A LIST OF

BRÄHMĪ INSCRIPTIONS FROM THE EARLIEST TIMES TO ABOUT A.D. 400

WITH THE EXCEPTION OF THOSE OF ASOKA.

By PROFESSOR H. LÜDERS; ROSTOCK,

The following list of early Brahmi inscriptions has been prepared as a supplement to the excellent lists of inscriptions of Northern and Southern India published by the late Professor Kielhorn. It is intended to give all Brahmi inscriptions from the earliest times to about the end of the fourth century A.D. found in the periodicals and Government publications accessible to me, with the exception of the Aśōka inscriptions, the bibliography of which would require a different form. I have included also a few inscriptions which, though probably being of a somewhat later date, in form and tenor agree with the earlier inscriptions. But I have as a rule excluded such inscriptions as appear in Professor Kielhorn's lists, even if they show the characteristic features of the earlier inscriptions and in a definite collection therefore would probably have to be classed with them. I have excluded on purpose also all seal inscriptions.

The principles according to which the list has been compiled are the same as those adopted by Professor Kielhorn, with one exception. When an inscription has been edited several times, Professor Kielhorn generally states only where it has been published last. In the case of the earlier inscriptions, the reading and interpretation of which is often much disputed, it appeared to me impracticable to follow that course, and I have on this account endeavoured to give a complete bibliography of every inscription. Of mere references, however, I have quoted only such as bear on the reading or interpretation of the text of the records. It would have been useless to notice all passages where an inscription has been made use of for general historical purposes. In the statements of the contents of the inscriptions I have quoted every proper name mentioned in the text, in the case of Prakrit names adding, if possible, the Sanskrit equivalent, and I have given also the original term for all words denoting a vocation, profession, etc., as a perfectly accurate translation of these terms is often difficult or even impossible. In accordance with Professor Kielhorn's lists I have also tried to indicate where an inscription is at the present time. For a few references I am indebted to the list of Brahmi inscriptions given by Professor O. Franke in his work Pāli und Sanskrit, pp. 10 and ff.

The arrangement of the inscriptions is made from a geographical point of view. As the greater part of the inscriptions are private records and not dated, any other arrangement is hardly practicable.

A look at the bibliography of these inscriptions will show how much labour has already been spent on them, and yet it cannot be denied that much still remains to be done. The band of real scholars that have worked at them has been comparatively small. To a great extent this is undoubtedly due to the difficulty of taking in at a glance the widely scattered materials. If in spite of its imperfections, which are well known to me, the present lists should contribute towards the removing of this obstacle, I shall deem to have accomplished my object.

I.-NORTHERN INSCRIPTIONS.

- Jerruck stone inscription.—1854 noticed by Frere—Cole, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 357, and Plate V, 3.
 Not read.
- Shakori Buddhist rock inscription.¹—1896 Bühler, Ep. Ind. Vol. IV. p. 134, No. A. Sanskrit version of a verse in Mahaparinibbanasutta VI. 16.
- Shakori Buddhist rock inscription.—1896 Bühler, Ep. Ind. Vol. IV. p. 135, No. B. Sanskrit version of Dhammapada 183.
- Shakëri Buddhist rock inscription.—1896 Bühler, Ep. Ind. Vol. IV. p. 135, No. C. Sanskrit version of Dhammapada 281.
- Kura (now Labore Museum) Buddhist stone-slab inscription of the time of rajatiraja mahārāja Toramāņa Shāhi Jaūvla.—I889 mentioned by Burgess, Academy, Vol. XXXV. p. 29; 1890 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 238 f., and Plate; 1896 correction by Senart, Journ. As. Ser. IX. Vol. VII, p. 10.
 - [rājā] . rāja-mahārāja-Toramāna-Shāhi-Jaū . [bhivardhamāna-rājyē . samvatsarē] . mē Mārgatiramāsa-sukla-dvitšyāyām chā[ndramagra] . gaga . vara . suchi-sāta-dhyān-ādhyayana-möksha-citt-ānukūlē pradista . . .
 - Mixed dialect. Erection of a vihāra for the congregation of the monks (bhikshusaingha) of bhagavat Buddha by the lord of the vihāra (vihārasvāmin) Rota-Siddhavriddhi, the son of Rotta-Jayavrddhi, the lord of many vihāras (anākavihārasvāmin), whose name was honoured by the lord (pati) of Našchira, for the benefit of the relatives of the donor and the queens, princes and princesses of mahārāja Tōramāṇa Shāha Jaūvla, for the acceptance of the teachers (āchāryas), the Mahišāsakas. Mentions besides the son of Sāddhaka.
- 6. Ghasundi stone inscription.—1887 Kaviraj Shyamal Das—Ram Prasad—Bendall, Journ. Beng. As. Soc. Vol. LVI. Part I. p. 77 ff., No. 1, and Plate V. Mixed dialect. Fragment. Erection of a pajā stone wall (tilāprākāra) at the Nārāyapavāta by . . . Gājāyana (?), the son of a Pārāšari, . . . for bhagavat Sarikarshana and Vāsudēva.
- Ghasundi stone inscription.—1887 Kaviraj Shyamal Das—Ram Praead, Journ. Beng.
 As. Soc. Vol. LVI. Part I. p. 78 f., No. 2, and Plate Va.
 Mixed dialect. Fragment. No name is preserved.
- Kanhiara rock inscription.—1854 Bayley, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXIII. p. 57 ff., and Plate I; 1855 Weber, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. IX. p. 630 f., and Plate; 1858 Thomas, Essays on Ind. Ant. Vol. I. p. 159 ff., and Plate IX, 2; 1863 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. Vol. XX. p. 254, and Plate IX, 2; 1875 Cunningham, p. 116 ff., and Plate.
 Pattern. Rep. Vol. V. p. 175 ff., and Plate XLII; 1902 Vogel, Ep. Ind. Vol. VII.

Brāhmī and Kharoshthi. Mixed dialect and Prakrit. The garden (drāma) of Krishamyaśa or Krishnayaśa (Krishnayaśas), the Mādamgi.

9. Pathyar rock inscription.—1902 Vogel, Ep. Ind. Vol. VII. p. 116f., and Plate.

¹ The cloth-impression of the inscription published by Professor Bapson, Journ. Roy. As. Soc. 1901, p. 292 f. and read by me, ibid. p. 575 f., was apparently fabricated after this inscription.

- Brahmi and Khardehthi. Prakrit. The pond (pukarini) of Vayala or Vayala, the Rathitara (Rathitara).
- Ichchhäwar (Dhanësar Khërä) Buddhist statuette inscription.—1895 Smith-Hoey, Journ, Beng. As. Soc. Vol. LXIV. Part I. p. 160, and Plates VIII and IX. Sanskrit. Gift of the female lay-worshipper (upāsikā) Bēdikā.
- Ichchhäwar (Dhanësar Khërā) Buddhist statuette inscription.—1895 Smith-Hoey, Journ.
 Beng. As. Soc. Vol. LXIV. Part I. p. 161 f., and Plates IX and X.
 Sanskrit. Gift of Mahādēvi, queen (rajňi) of Haridāsa, sprung from the Gupta race.
- S. 74.—Kāman Buddhist image inscription.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 212, No. 42, and Plate.

-sam 70 4 gri 1 di 10 5 asmi kshunë.

- Mixed dialect. An image of bhagavat Sakyamuni (Sakyamuni) in the Mihiravihāra, the gift of the monk (bhikshu) Nandika, for the acceptance of the Sarvvastivādi (Sarvāstivādin) teachers (achāryyas).
- 13. Anyor (now Mathurā Museum) Buddhist image inscription.—1885 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XX. p. 49, and Plate V, 5.
 Mixed dialect. An image of Budha (Buddha) at the vihāra of Uttara Hārusha, the gift of the lay-worshipper (upāsaka) Susha Hārusha, together with his parents.
- Möra (now Mathura Museum) stone-slab inscription.—1885 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XX. p. 48 f., and Plate V, 4; 1907 correction by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1907, p. 1024.
 Mixed dialect. Fragment. Mentions the son of the mahakshatrapa (mahākshatrapa)

dixed dialect. Fragment. Mentions the son of the manakshatrapa (mahākshatrapa)
Rājāvula. The rest is unintelligible.

- Kota (now Mathura Museum) statue inscription.—1885 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XX. Plate V, 2 (Plate only).
 Sanskrit. Fragment. By Ghosha, the son of Jayadeva.
- S. 4.—Mathurā (Kankāli Ţilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 201, No. 11, and Plate; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 33, No. 1.
 —sa 4 gri 1 di 20.
 - Mixed dialect. Fragment. Gift of . . . , together with Grahachēta and Grahadāsa, at the request of (?) the female companion
 (safhacharī) of Sihamitra (Simhamitra), the female pupil (sisinī) of Sathisihā
 (Shashthisimhā î), female pupil (sisinī) of Pusyamitra (Pushyamitra), . . .
 out of the Vārana gana, the Arya-Hāṭṭakiya (Ārya-Hāṭṭakiya) kula, the
 Vajanagarī (Vārjanagarī) iākhā.
- S. 5.—Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 201, No. 12, and Plate; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 33 f., No. 2.
 pchamē 5 gri 4 di 5.
 Mixed dialect. Fragment. Mentions the preacher (vāchaka) Aryya-

S. 5.—Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription of the time of devaputra Kanishka.—1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 381 f., No. 1, and Plate; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 34 f., No. 4.

- Devaputrasua Kalnilshkasya salim 5 he 1 di 1 etasya pürvelalyam. Mixed dialect. Fragment. Dedication of an image of Vadhamana (Vardhamana) at the request of Khuda (Kshudra), the female companion (sadhachari) of
 - Sana, the female pupil (fifini) of Sethiniha 1 . . . out of the Kottiva (Kouttika) gana, the Bahmadasika (Brahmadasika) kula, the Uchenagari (Uchchairnagari) śākhā.
- 19, S. 5.-Mathurā (Kankālī Tilā, now Mathurā Museum) Jaina image inscription. -1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 30, No. 2, and Plate XIII; 1887 correction by Bühler, Almanach der Wiener Akademie der Wissenschaften, Jahrgang XXXVII. p. 266,f.; 1887 correction by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. I. p. 176, No. 5; 1890 correction by Bühler, Vienna Orient, Journ. Vol. IV. p. 171; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 36 f., No. 5.

-sa 5 hè 1 di 10 2 asya purveayain.

- Mixed dialect. Fragment. Dedication at the request of (?) . . . out of the Kottiya (Kauttika) gana, the Brahmadasika [kula], the Uchenakāri (Uchchairnagari) šākhā, the Srigriha (Šrigriha) sambhoga.
- 20. S. 5.—Mathurā (Kankāli Ţīlā, now Mathurā Museum) Jaina image inscription.—1878 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 31, No. 3, and Plate XIII; 1900 Boyer, Journ, As. Ser. IX, Vol. XV, p. 573 f.

Sam 5 hē 4 di 20 asyā purvayam.

- Mixed dialect. Fragment. Dedication [at the request of] Aryya-Ksheraka (Arya-Kshēraka), pupil (fishya) of . . . Mihila, out of the Ko[ttiya] (Kauffika) [gana], the Uchenagari (Uchchairnāgari) iākhā, the Bramhadāsika (Brahmadaeika) kula. Compare Nos, 121 and 122.
- 21. S. 7.—Mathura (Kańkali Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription of the time of maharaja rajātirāja dēvaputra Shāhi Kaņishka.—1888 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. II. p. 141 f., and Plate; 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 391, No. 19, and Plate.

—mahārājasya rājātirā [ja*]sya dēvaputrasya Shāhi-Kanishkasya sam 7 hē 1 di 10 5 ētasya pūrevāyīm.

Mixed dislect. Fragment. Mentions Aryya-Jaya (Arya-Jaya), sister of the preacher (vachaka) Aryya-Sandhika (Arya-Sandhika), the pupil (sishya) of the ganin Aryya-Buddhasiri (Arya-Buddhasri), out of the Aryy-Odehikiya (Arya-Uddehikiya)2 gana, the Aryya-Nagabitutikiya (Arya-Nagabhutikiya) kula, and Aryya-Goshtha (Arya-Goshtha).

22. S. 9.—Mathurā (Kankāli Tila) Jaina image inscription of the time of mahīrāja Kapishka. -1873 Cuuningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 31, No. 4, and Plate XIII ; 1887 correction by Bühler, Almanach der Wiener Akademie der Wissenschaften. Jahrgang XXXVII. p. 266 f.; 1887 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. I. p. 173 f., No. 2; 1904 corrections by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 37, No. 6. —mahārājasya Kanishkasya rājyasamvatsarē navamē [9 vāsa]māsē pratha 1 divasē

Mixed dialect. Fragment. Dedication of an image by Vikață, wife of Bhațțimita (Bhaffimitra) and [daughter of] Brahma . . . , at the request of

¹ Or, Aryya-Dihikiya (Arya-Dihikiya).

the preacher (vāchaka) Nāganamdii (Nāganandin) out of the Kotiva (Kauttika) gana, the Sthaniva (Sthaniva) kula, the Vairi (Vairi) śakha.

23. S. 10.—British Museum inscription on sculptured slab,1—1908 Lüders. Ep. Ind. Vol. IX. p. 239-241, and Plate.

-maharājasya dēva putrasya Kānishkasya savatsarē [10] gri 2 di 9 ētavē purcay[e].

Mixed dialect. Gift of a temple (hārmya) in the northern navamika (?) to the goddess of the village,

24. S. 15,-Mathură (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription .- 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 382, No. 2, and Plate; 1901 Bühler-Smith. Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 46, and Plate XC. 1.

-sam 10 5 gri 3 di 1 asya perve[a]ya.

Mixed dialect. Dedication of a fourfold (savvatobhadrika) image of Bhagavat by Kumāramitā (Kumāramitrā), daughter of . . . la, daughter-in-law of first wife of the banker (sreshtin) Veni, mother of Bhattisens, at the request of Aryya-Vasula (Arya-Vasula), the female pupil (sistni) of Arvva-Sabgamika (Arva-Samgamika), the female pupil (sisini) of Arvva-Jayabhūti (Ārya-Jayabhūti), out of the [Mē]hika (Maighika) kula, Compare No. 70.

25. S. 18.-Mathura (Kankali Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.-1891 mentioned by Bühler, Academy, Vol. XXXIX, p. 374; 1891 mentioned by Bühler, Vienna Orient, Journ. Vol. V. p. 178; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 202, No. 13, and Plate.

-sa 10 8 gri 4 di 3 [csy& pu . . ya].

Mixed dialect. Fragment, Dedication of a fourfold (surveatobhadrika) image by Masigi (?), mother (?) of Jaya, [at the request of] , a ganin out of the [Kotti]ya (Kauffika) gana, the . . . sambhoga. the Vachchhaliya (Vātsaliya) kula.

26. S. 18 .- Mathura (Kankali Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription .- 1891 mentioned by Bühler, Academy, Vol. XXXIX. p. 142; 1891 mentioned by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 62; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 202, No. 14, and Plate; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 33 f., No. 3.

- sa(?) 10 [8] va 2 di 10'1.

Mixed dialect. Fragment. Records the setting up of an image of bhagarut Arishtanëmi (Arishtanëmi) by Mitasiri (? Mitrasri).

27. S. 19 .- Mathura (Kankali Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.-1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 382 f., No. 3, and Plate.

-sam 10 9 va 4 di 10 asyām purveāyam.

Mixed dialect. Fragment. Dedication of an image of bhagavat Saintinathal (Sintinitha) by Le . . . , the first wife of [Su]chila (Suchila), out of the Kottiya (Kauffika) gana, the Thaniya (Sthaniya) kula, the Śrigriba sambhoga, the Aryya-Véri (Arya-Vajri) śākhā,3 at the request of the preacher (vāchaka)

¹ The find-place of this inscription is unknown. It has been inscreted here on account of its general similarity to the Mathura inscriptions. The same remark applies to No. 43 below.

Perhaps the statement of the gana, kula .rambhöga and fökkö really refers to Baladina.

Aryya-Mătridina (Ārya-Matridatta), the pupil (fishya) of the preacher (vāchaka) Aryya-Baladina (Arya-Baladatta). Compare No. 30.

28. S. 20.—Mathurā (Kankāli Tīlā) Jaina image inscription.—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 31, No. 6, and Plate XIII; 1887 correction by Bühler, Almanach der Wiener Akademie der Wissenschaften, Jahrgang XXXVII. p. 266 f.; 1887 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. I. p. 170 ff., No. 1; 1889 correction by Bühler, Vienna Orient, Journ. Vol. III. p. 235; 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 395, No. 28, and Plate.

-sa [20] gri ma 1 di 10 5.

Mixed dialect. Dedication of an image of Varddhamana by the female lay-worshipper (śrāvikā) Dinā (Dattā), [daughter of] Dātila, wife of Matila, mother of Jayavāla (Jayapāla), Dēvadāsa, Nāgadina (Nāgadatta) and Nāgadinā (Nāgadattā), at the request of the preacher (vachaka) Aryya-Sanghasiha (Ārya-Sanghasihha) out of the Kottiya (Kauffika) gana, the Thaniya (Sthaniya) kula, the Veri (Vajri) śakha, the Śirika (Śrika) [sambho]ga.

29. S. 20.—Mathurā (Kańkāli Ţīlā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 383 f., No. 4, and Plate.

-[sam 20 gri 3] di [10] 7 [ēta]sya pūrvvāya.

Mixed dialect. Fragment. Dedication by Mittra (Mitra), first wife of Haggudeva (Phalgudeva), daughter-in-law of the ironmonger (lohavaniya) Vadhara , daughter of the Khottamitta (?), the manikara . . . Jayabhatti (P), at the request of the preacher (vachaka) Aryya-Siha (Arya-Simha), the papil (fishya) of the preacher (vāchaka) Aryya-Datta (Ārya-Datta), who was the companion (iraddhachara) of the ganin Aryya-Pala (Arya-Pāla), who was the pupil (fishya) of Aryya-Ogha (? Arya-Ogha), who was [the pupil] of the great preacher (brikashtavachaka) and ganin Ja . . mitra (?) out of the Kottiya (Kauttika) gaņa, the Brahmadāsiya (Brahmadāsika) kula, the Uchchēnāgari (Uchchairnagari) śakha, the Śrigriha sambhoga. Mentions besides the Kākatēyas (?). The figures of the dates of the year and of the month are doubtful; the

30. S. 22.—Mathura (Kankali Tila) Jaina image inscription.—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 32, No. 7, and Plate XIII; 1891 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 230; 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 395, No. 29, and Plate. -sava 20 2 gri 1 di . . [a]sya purvvayam

Mixed dialect. Dedication by Dharmmasoma, the wife of a caravan-leader (savttavahini) at the request of the preacher (vachaka) Aryya-Matridina (Arya-Matridatta). The inscription is to be read from below. Compare No. 27.

31. S. 22.—Mathura (Kackali Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1889 noticed by Bühler, Academy, Vol. XXXV. p. 381; 1889 Bühler, Vienna Orient, Journ. Vol. III. p. 235; 238, No. 1; 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. -sain 20 [2] gri 2 di 7.

Mixed dialect. Fragment. Dedication of an image of Vardhamana. Mentions the Varana gana and Petivamika (Praitivarmika) [kula]. The figures of the date

- S. 25.—Mathurā (Kankāli Ţilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 384, No. 5, and Plate; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 37 f., No. 7.
 - savatsarë pachavisë hëmaintama[sē] tritiyë divasë visë asmi kshunë.
 - Mixed dialect. Dedication by Vusu (?), the wife of a dyer (rayagini), daughter of Nādi (Nandin), daughter-in-law of Jabhaka, wife of Jayabhatta, at the request of Graha. i . , the female pupil (śishini) of Sadhi (Sandhi), pupil (śisha) of Aya-Balatrata (Ārya-Balatrāta) out of the Koṭṭiya (Kauṭṭika) gaṇa, the Brahmadāsika kula, the Uchēnāgarī (Uchchairnāgarī) śākhā. Compare No. 119.
- 33. S. 28.—Mathurā (Jail Mound, now Mathurā Museum) Buddhist image inscription of the time of shka.—1874 Growse, Mathurā, Part II. p. 173; 1877 Growse, Ind. Ant. Vol. VI. p. 217, No. 1, and Plate; 1880 Growse, Mathurā, p. 106, and Plate!; 1903 correction by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1903, p. 330 f.; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 38 f., No. 8; 1905 referred to by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1905, p. 358.
 shkasya rājya-samvatsarē 20 8 hēmanta 3 di
 - Mixed dialect. Fragment. Nothing beyond the date has been preserved.
- 35. S. 29.—Mathurā (Kahkāli Ţilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription of the time of mahārāja dēvaputra Hukaha.—1891 mentioned by Bühler, Academy, Vol. XXXIX. p. 142; 1891 mentioned by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 62; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 206, No. 26, and Plate; 1903 correction by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1903, p. 332 f.; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 38.

Mixed dialect. Fragment. Mentions a pupil (sisha) of Nagadata (Nagadatta). The reading of the date is very doubtful.

- S. 31.—Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1892 B\u00e4hler, Ep. Ind. Vol. II. p. 202 f., No. 15, and Plate.
 sa 30 1 va 1 di 10 asma kshunë.
 - Mixed dialect. Fragment. Dedication by Grahasiri (? Grahasri), daughter of Buddhi and wife of Dēvila, at the request of Arya-[Go]dāsa (? Ārya-Gōdāsa) out of the [Koṭṭi]ya (Kanṭṭika) gaṇa, the Āryya-Vēri (Ārya-Vajrī) šākhā, the [Thā]niya (Sthānīya) kula.
- S. 32.—Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 203, No. 16, and Plate.
 — sava[tsa]rē 30 2 hēmantamāsē 4 divasē 2.

¹ The third edition of this work was not accessible to me.

- Mixed dialect. Fragment. Dedication of a fourfold (surveatobhadriki) image of the Arhat by Jitamitra, daughter of Ritunandi (! Ritunandin), wife of the pra[ta]rika (?) Buddhi and mother of the perfumer (gandhika) . . . , at the request of the [ga]nin Arya-Nandika (Ārya-Nandika) Varana gana, the va ku[la].
- 38. S. 33.-Mathura (Chaubara Mound, now Lucknew Provincial Museum) Buddhist image inscription of the time of mahīrāja dēvaputra Huvishka.—1874 Growse, Mathurá, Part I. p. 105; Part II. p. 172; 1877 Growse, Ind. Ant. Vol. VI. p. 217, No. 2, and Plate; 1880 Growse, Mathurá, p. 114, and Plate; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 39 f., No. 9; 1906 Bloch, Ep. Ind. Vol. VIII, p. 181 f., and Plate. Mahīrajasya dēvaputrasya Huv[i]shkasya sam 30 3 gri 1 di 8.
 - Mixed dialect. Setting up of a Bodhisatva at Madhuravanaka by the nun (bhikshuni) Dhanavati, the sister's daughter of the nun (bhikshuni) Buddhamitra, who knows the Tripitaka (trepitika), the female pupil (antevasini) of the monk (bhikshu) Bala, who knows the Tripitaka (trepitaka).
- 39. S. 35.—Mathurā (Kankāli Ţilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription .- 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 385, No. 7, and Plate.
 - sah 30 [5] va 3 di 10 asy[ām] pērvvāyām.
 - Mixed dialect. Dedication of an image of Vardhamana by the perfumer (gamdhika) Kum[a]rabhati, son of Kumaramita (Kumaramitra), the female pupil (fisint) of Aryya-Baladina (Ārya-Baladatta) out of the Kottiya (Kauttika) gana, the Sthaniya (Sthaniya) kula, the Vaira (Vajrī) śākhā, the Śirika (Śrika) sambhōka (sambhoga), at the request of Aryya-Kumaramitra (Arya-Kumaramitra).
- 40. S. 35.-Mathura (now Indian Museum, Calcutta) Buddbist inscription on base of pillar.—1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 127, No. 3, and Plate V; 1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 185,
 - sain pachatrīśasya (?)
 - Mixed dialect. Fragment. Dedication of the monk (bhikshu) Buddhadasa to some vihīra. The date is quite uncertain.
- 41. S. 33.—Mathurā (Katikāli Tīlā) Jaina elephant capital inscription of the time of mahāraja devaputra Huvishka.—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 32 f. No. 9, and Plates V and XIV; 1874 Growse, Mathurá, Part II. p. 172; 1898 Bloch, Journ. Beng. As. Soc. Vol. LXVII. Part I. p. 276, note 2; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 40 f., No. 10.
 - [Ma]h[ā]r[ā]jasya dēvaputrasya Huvishka ya sam 30 8 hē 3 di 10 1 ētāyē purvāyē. Mixed dialect. Setting up of (the elephant) Namdivisala by the banker (śrēshfhin) Aryya Rudradasa (Arya Rudradasa), the son of the banker (sreshthin) Sivadasa
- 42. S. 44.—Mathurā (Kańkāli Ţilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription of the time of mahīrāja Huviksha.—1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 387. No. 9, and Plate (for the second half see also Plate, No. 32); 1892 correction by Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 212, note 37.
 - śara[sa]tama-maharajasya Huvikshasya sava[tsa]rē 40 4 hana gr[sya]masa 3

Mixed dialect. Fragment. Dedication at the request of Nagasena (Nagasena), pupil (sisa) of Haginamdi (Bhaganandin ?), a preacher (vāchaka) in the [Vāraņa] gang, in the Aryachetiya (Āryachetika) kula, in the Haritamālakadhī (Haritamālagadhī) śākhā.

43. S. 45.—Bombay University Library Buddhist image inscription of the time of mahārāja depaputra Hüvishkal,-1901 D. R. Bhandarkar, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XX. p. 269 f.

[mahārājasya] Hūvishkasya dēvaputrasya sa 40 5 va 3 di 10 5 ētasya purv alya. Mixed dialect. Installation of an image of bhaqurat Sakvamuni (Sākvamuni) in the Rošikavihāra at Alikā by the female lay-worshipper (upāsikā) Khvasichā for the welfare of herself, her parents, her bhatarika, the mother of Samanika (Sramanika), Samanika (Sramanika), Jivaka, the mother of Jivaka, and all creatures.

44. S. 45.-Mathurā (Kankāli Tīlā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.-1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I, p. 387, No. 10, and Plate. - sam 40 5 va [3] di 10 [7] ētasya purev[ā]ya. Mixed dialect. Fragment. Mentions the daughter-in-law of Buddhi, the . . of Dharmmavriddhi. The bracketed signs of the date are doubtful.

45. S. 47.—Mathura (Kankali Tila) Jaina image inscription.—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III, p. 33, No. 10, and Plate XIV; 1887 correction by Bühler. Almanach der Wiener Akademie der Wissenschaften, Jahrgang XXXVII. p. 268; 1887 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. I. p. 176 f., No. 6; 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 396, No. 30, and Plate. Sa 40 7 gri 2 di 20 etasya purvayain.

Mixed dialect. Fragment. Dedication by , daughter-in-law of the lay-hearer (savaka) Pusha (Pushya), wife of Giba . . . , mother of Pushadina (Pushyadatta), at the request of Sena, pupil (sisa) of Ohanadi (Oghanandin) and preacher (vāchaka) in the V[a]rana gana and the Pētivamika (Praitivarmika) kula, Compare No. 81.

46. S. 48.-Mathura (Kankall Tila) Jaina stone inscription of the time of makaraja Huvishka.-1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 34, No. 15, and Plate XIV: 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 103, No. 14. Mahārajasya Huvishkasya sa 40 8 hē 4 di 5. Mixed dialect. Fragment. Mentions the Bramadasiya (Brahmadasika) kula, the Uchenagari (Uchchairnagari) śākhā.

47. S. 49 .- Mathura (Kankali Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription .- 1891 Bühler, Academy, Vol. XXXIX. p. 141 f.; 1891 Bühler, Vienna Orient, Journ. Vol. V. p. 59 ff.; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 204, No. 20, and Plate; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 321, and Plate; 1901 Bühler-Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 12, and Plate VI; 1903 referred to by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1903, p. 327; 1908 correction by Lüders, Ep. Ind. Vol. IX. p. 244 f.

sain 40 9 rea 4 di 20 étasyain purveayain,

Mixed dialect. Fragment. Dedication of an image of the Arhat Nandiavarta (Nandyavaria) at the Vodva (?) thupa(stupa) by the female lay-worshipper (frāvikā) Dina(Dattā), wife of . . . , at the request of Aya-Vridhahasti (Ārya-Vriddhahastin), a preacher (vachaka) in the Koṭṭiya (Kauṭṭika) gaṇa, the Vairā (Vairī) śākhā. Compare No. 56.

- 48. S. 4 . . —Mathurā (Kańkāli Ţilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1891 mentioned by Bühler, Academy, Vol. XXXIX, p. 142; 1891 mentioned by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 63; 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 387 f., No. 11, and Plate; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 103 f., No. 15; 1908 referred to by Lüders, Ep. Ind. Vol. IX. p. 244 f.
- 50. S. 50.—Mathurā (Katkāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1891 mentioned by Bühler, Academy, Vol. XXXIX. p. 374; 1891 mentioned by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 179; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 209, No. 36, and Plate.
 [50] hē 2 di 1 asya purrwaya.

Mixed dialect. Fragment. Dedication of an image of Vadha[mana] (Vardhamāna) by Vijayaśiri (Vijayaśri), daughter of Bubu, first wife of Rajyavasu (Rājyavasu), mother of [Dē]vila and paternal grandmother of Vishqubhava, who obeys the command (paṇatihara) of ghakaraba(?), the female pupil (śiśini) obeying the command (paṇatidharitā) of Ayya-Jinadasi (Ārya-Jinadāsi), who was the female pupil (śiśini) of Samadi va Dinara, the great preacher (baha[t] vachaka) and gaṇin of the Varaṇa (Vāraṇa) gaṇa, the Ayya-bhyista¹(?) kula, the Sa[mkasiyā] (Saṃkāsikā) śakhā (śākhā), the Śirigriha (Śrigriha) sa[m]bhōga. The first figure of the date may possibly be 7.

- 51. S. 50.—Mathura (now Mathura Museum) Buddhist image inscription of the time of mahārāja dēvaputra Huvishka.—1877 Growse, Ind. Ant. Vol. VI. p. 219, No. 11, Mahārājasya dēvaputrasya Huvishkasya rajyasam 50 hē 3 di [2].

 Mixed dialect. Nothing beyond the date has been made out. The last sign of the date is doubtful.
- 52. S. 51.—Mathurā (Jail Mound, now Lucknow Provincial Museum) Buddhist image inscription.—1878 Growse, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XLVII. Part I. p. 180; 1880 Growse, Mathurá³, p. 107.

 Mahārājasya dēvaputrasya Huvishkasya sameatsarē 50 1 hēmamtamasa 1 div .

 Mixed dialect. Nothing beyond the date has been read.

¹ Perhaps Azyonyi-takulatö=Ayyöniyasatö kulatö=Arya-Kaniyasatah kulatah.

5 asma kehunê.

- Mixed dialect. Dedication (of the image) by the worker in metal (löhikākāraka) Šūra, the member of the committee (gottika), the son of Śramaņaka, at the request of the preacher (vāchaka) Aryya-Dēva(Ārya-Dēva), the companion (shadhachara) of the gaṇin Aryya-Mainguhasti (Ārya-Māghahastin), the pupil (śishya) of the preacher (vāchaka) Aryya-Ghastuhasti (Ārya-Hastahastin), of the Koṭṭiya (Kauṭṭika) gaṇa, the Vērā (Vajrī) ś[ā*]khā, the Ṣṭānikiya (Sthānikīya) kula, the Ṣṛigriha sambhōga. Compare No. 54.
- 54. S. 54.—Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1889 noticed by Bühler, Academy, Vol. XXXV. p. 381 f.; 1889 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. III. p. 235; 237; 239, No. 2; 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 391, No. 21, and Plate; 1901 Bühler-Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 56 f., and Plate XCIX; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 104 f., No. 17.

-sava 50 4 hēmamtamāsē chaturtthē 4 divasē 10 asya purvvāyām.

- Mixed dialect. Dedication of an image of Sarasvati by the worker in metal (löhikakāruka) Göva (Göpa), the son of Siha (Simha), at the request of the preacher (vāchaka) Aryya-Dēva (Ārya-Dēva), the companion (iraddhachara) of the gamin Aryya-Māghahasti (Ārya-Māghahastin), the pupil (iishya) of the preacher (vāchaka) Aryya-Hastahasti (Ārya-Hastahastin), out of the Koṭṭiya (Kauṭṭika) gama, the Sthāniya (Sihānīya) kula, the Vairā (Vajrī) iākhā, the Śrīgṛiha sambhōga. Compare No. 53.
- 55. S. 57.—Mathurā (Sitalghāti Mound, now Mathurā Museum) Jains image inscription.—
 1877 Growse, Ind. Ant. Vol. VI. p. 218, No. 5, and Plate; 1880 Growse, Mathurá, p. 128 f., and Plate; 1885 mentioned by Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XX. p. 36; 1892. Bühler Ep. Ind. Vol. II. p. 210, No. 38, and Plate.
 Samuatsarē saptapaūchātē 50 7 hēmantratritīvē divasē trayēdatē syc p[ū]rvvāyām.
 Mixed dialect. Fragment. Only the date is preserved.
- 56. S. 60.—Mathura (Kankali Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription of the time of mahārāja rājātirāja dēvaputra Huvashka.—1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 386, No. 8, and Plate; 1892 correction by Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 204, note 61; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 105, No. 18.

—ma[hā]rā[ja]sya r[ājā]tirājasya dēvaputrasya Huvashkasya sam 60 hēmantamāsē 4 di 10 ētasyām pūrvvāyām.

- Mixed dialect. Fragment. Dedication of an image of Rishabha by Dattä, wife of Ka...pasaka, [at the request of] ... the gamin Āryya-Kharnna (?), pupil (śishya) of Āryya-Vriddhahasti (Ārya-Vriddhahastin), a preacher (vāchaka) in the Koṭṭiya (Kauṭṭika) gaṇa, the Sthānikiya kula, the śākhā of the Āryya-Veriyas (ārya-Vajrīyas). Compare No. 47.
- 57. S. 62.—Mathura (now Indian Museum, Calcutta) Jaina image inscription.—1885 Cun ningham, Arch Surv Rep. Vol. XX. p. 37, and Plate V, 6; 1887 Bühler, Vienna

- Orient. Journ. Vol. I. p. 172 f.; 1891 correction by Bühler, Academy, Vol. XXXIX. p. 142; 1891 correction by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 63; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 105 f., No. 19.

 —sain 60 2 gri 3 di 5 štavš purpāvā.
- Mixed dialect. Records, after an invocation of the Arahamtas (Arhats) and Siddhas, the gift (of the image) to the community of the four orders (chainvaria samgha) by Vaihikā (?), at the request of the ātapika Grahabala, pupil (šishya) of the preacher (vāchaka) Arya-Kakasaghasta (Ārya-Karkašahasta). Compare No. 58.
- S. S. 62.—Mathurā (Kaŭkāli Tilā, new Lucknew Provincial Museum) Jaina image inscription.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 204, No. 19, and Plate.
 —sa 60 2 va 2 di 5 ētasya puvaya.
 - Mixed dialect. Fragment. Dedication at the request of the ātapīka Grahabala, the pupil (šiska) of the preacher (vāchaka) Āya-Karkuhastha (Ārya-Karkašahasta) of the Vāraņa gana. Compare No. 57.
- 59. S. 72.—Mathurā (Kankāli Ţilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina inscription on sculptured stone-slab of the time of svāmin mahākshatrapa Södāsa.—1891 mentioned by Bühler, Academy, Vol. XXXIX. p. 374; 1891 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 177 f.; 1891 correction by Cunningham, Academy, Vol. XXXIX. p. 397; 1892 Bühler Ep. Ind. Vol. II. p. 199, No. 2, and Plata; 1895 correction by Bühler, Ep. Ind. Vol. IV. p. 55, note 2; 1901 Bühler-Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 21, and Plate XIV.
 - —sv[ā]misa mahakshattrapasa Šēdāsasa savatsarē 70 2 hēmaihtamāsē 2 divasē 9.

 Mixed dialect. Records, after an invocation of the Arahat (Arhat) Vardhamāna, the setting up of an Āryavatī by Amohini, the Kochhi (Kautsi), a female lay-disciple of the ascetics (sama[na*]sāvikā), together with her sons Pālaghōsha, Poṭhaghōsha (Prōshṭhaghōsha), Dhanaghōsha, for the worship of the Arahats (Arhats).
- 60. S. 74.—Mathurā (Jail Mound) stone-slab inscription of the time of mahārāja rājātirāja dēvaputra Vāsu—1870 Rajendralala Mitra, Journ, Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 129, No. 15, and Plate VI; 1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. III. p. 32, No. 8, and Plate XV; 1891 correction by Būhler, Ep. Ind. Surv. Rep. Vol. III. p. 32, No. 8, and Plate XV; 1891 correction by Būhler, Ep. Ind. Vol. I. p. 373, note 7; 1892 correction by Cunningham, Numism. Chron. Ser. III. Vol. XII. p. 50, Lūders, Ep. Ind. Vol. IX. p. 241-246, and Plate.

 Mahārājasya r[ā] sya dēvaputrasya Vāsu savatsarē 70 4 Mixed dialect. Fragment. Mentions the great general (mahadāndandyaka) Vālina at Talakiya (or Talaki?).
- S. 77.—Mathurā (Jail Mound, now Indian Museum, Calcutta) Buddhist inscription on base of pillar.—1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. Vol. V. p. 183. No. 5, and Plate VI; 1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New. Ser. No. 11, and Piate XIV; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 102; 1908 correction by Lüders, Ep. Ind. Vol. IX. p. 243 ff.
 Samvatsarē 70 7 gri 3 divas[ē] 5 asva purevavē.

Mixed dialect. Dedication (of the pillar) by the monk (bhikshu) Dharmmadeva.

62. S. 77 .- Mathura (Jail Mound, now Indian Museum, Calcutta) Buddhist inscription on base of pillar .- 1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX, Part I. p. 127, No. 1, and Plate IV; 1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 182 f., No. 1, and Plate; 1870 correction by Cunningham, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 195; 1873 Cunningham, Arch, Surv. Rop. Vol. III. p. 33, No. 12, and Plate XIV; 1874 Rajendralala Mitra-Growse, Mathurá, Part I. p. 74, note; Part II. p. 172; 1878 correction by Rajendralala Mitra, Buddha Gaya, p. 187, note a; 1904 Lüders, Ind. Aut. Vol. XXXIII. p. 101, No. 11; 1908 correction by Lüders, Ep. Ind. Vol. IX, p. 248 ff. Sam 70 7 gri 4 di 4.

Mixed dialect. Dedication of base of pillar (kumbhaka) 25 to the vihāra of the mahārāja rājātirāja dēvaputra Hūvishka by the monk (bhikshu) Jīvaka, the

Odivanaka (inhabitant of Uddivana).

63. S. 77 .- Mathurs (Jail Mound, now Indian Museum, Calcutta) inscription on base of pillar,-1870 Rajandralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 127, No. 2, and Plate IV; 1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 183. No. 2, and Plate; 1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III, p. 34, No. 13, and Plate XIV; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII, p. 102. No. 13; 1908 correction by Lüders, Ep. Ind. Vol. IX. p. 243 ff.

- sam 70 7 gri 4 divase 20 [9].

Mixed dialect. Dedication (of the pillar) by Devila, the servant or priest at the temple of Dadhikarva (Dadhikarna-devikulika). The last figure of the date is uncertain.

64. S. 77.—Mathura (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist inscription on base of pillar. -1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX, Part I. p 130, No. 18, and Plate VII: 1904 Lüders. Ind. Aut. Vol. XXXIII. p. 101 f., No. 12: 1908 correction by Lüders, Ep. Ind. Vol. IX. p. 243 ff.

Samvatsarê 70 7 va divasê 5 asya purvvayê.

Mixed dialect. Dedication (of the pillar) by the monk (bhikshu) Dharmmadeva. Perhaps this inscription is identical with No. 61.

65. S. 77 .- Mathura (Jail Mound, now Mathura Museum) inscription on base of pillar .-1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 184, No. 7, and Plate; 1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 34, No. 14, and Plate XIV; 1908 correction by Lüders. Ep. Ind. Vol. IX, p. 243 ff. - sais 70 7 va 1 di 10 1.

Mixed dialect. Fragment (?). Records the gift of pillar 126.

66. S. 80 .- Mathura (Kackali Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription of the time of maharaja Vasudeva. -1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 392, No. 24, and Plate.

— maharajusya Vāsudēvasya sam 80 hana va 1 di 10 2 ētasa pūrevāvām.

Mixed dialect. Fragment. Mentions the daughter of . . . , the daughter-in-law of Samghanadhi (?), the . . . of Bala . . .

67. S. Sl.-Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 204 f., No. 21, and Plate. Sa 80 1 va 1 di 6 ētasva puvīya.

Mixed dialect. Fragment. Dedication at the request of Data (Datta), the female

- pupil (aintēvāsikinī) of Ayikā Jīvā (Āryā Jīvā). Mentions besides Grabaširi (Grahašrī).
- 68. S. 83.—Mathurà (Kankāli Tilā, now Mathurā Museum) Jaina image inscription of the time of mahārāja Vāsndēva.—1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 184, No. 6, and Plate; 1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 34, No. 16, and Plate XV; 1890 correction by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. IV. p. 324; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 107, No. 21.

— mahārājasya Vāsudēvasya sam 80 3 gri 2 di 10 6 ētasya pūrvvayē.
Mixed dialect. Dedication of the image by Jinadāsi, daughter of Sēna, daughter-in-law of Datta, wife of the perfumer (gandhika) Vya . . cha

- 69. S. 83.—Mathurā (Jail Mound, now Mathurā Museum) Jaina image inscription.—1873. Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 34, No. 17, and Plate XV. Sam 80 3 gri 2 di 20 5 ētayē purevayē.

 Mixed dialect. Fragment. Only the date has been preserved.
- 70. S. 86.—Mathurā (Kankālī Tīlā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 388, No. 12, and Plate. Sam 80 6 hē 1 di 10 2.

 Mixed dialect. Fragment. Dedication by some woman, the daughter of Dasa (Dāsa), wife of Priya (Priya), at the request of Aya-Vasulā (Ārya-Vasulā), female pupil (šišinī) of Aya-Sangamikā (Ārya-Sangamikā), out of the [Mēhi]ka (Maighika) kula. Compare No. 24 and Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. 1V. p. 323,
- 71. S. 87 (?).—Mathurā (Kankāli Ţilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 388 f., No. 13, and Plate. [Sain 80 7] gri 1 di [20] a[smi] kshuņē.

 Mixed dialect. Fragment. Mentions Mittra (Milra), the pupil (sishya) of Āryya-Kumāranandi (Ārya-Kumāranandin), the Uchchēnāgara (of the Uchchairnāgari sākhā). The figures of the dates of the year and the day are doubtful.
- S. 87.—Mathurā (Kankāli Tilā) Jaina image inscription of the time of mahārāja rājātirāja Shāhi Vāsudēva.—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 35, No. 18, and Plate XV; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 108, No. 22.
 - —mahārājasya rājātirājasya Shāhir-Voāsudēvasya sam 807 hē 2 di 30 ētasyā purvāyā. Mixed dialect. Fragment. Nothing beyond the date has been made out.
- 73. S. 90.—Mathurā (Kankāli Tilā, now Mathurā Museum) Jaina image inscription.—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 35, No. 19, and Plate XV; 1887 correction by Bühler, Almanach der Wiener Akademie der Wissenschaften, Jahrgang XXXVII. p. 266 f.; 1887 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. I. p. 175 f., No. 3; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 205, No. 22, and Plate.
 sa[m]va[tsurē 90] va

Mixed dialect. Fragment. Dedication by the wife of . . . , the daughter-in-law of Dina (Datta), [at the request of (?)] . . . Bhatibalā . . . out of the K[ottiya] (Kauttika) gana, the P[r]a[śna]v[š]ha[na]ka kula, the Majhamā (Madhyamā) tākhā.

74 S. 93.—Mathurā (Kaākāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1892 Bübler, Ep. Ind. Vol. II. p. 205, No. 23, and Plate.

- Mixed dialect. Fragment. Records, after an invocation of the Arhat Mahāvira (Mahāvīra), the setting up of an image of bhagavat Varddhamāna by the daughter of the treasurer (hairanyaka) Dēva, at the request of the ganin Nandi (Nandin).
- 75. S. 95.—Mathurā (Kaňkāli Ţilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina panel inscription.—1889 noticed by Bühler, Academy, Vol. XXXV. p. 381; 1889 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. III. p. 234; 240, No. 3; 1890 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. IV. p. 327, note 3; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 392, No. 22, and Plate; 1901 Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 24, and Plate XVII. 2.— sam 90 5 gri 2 di 10 8.
 - Mixed dialect. Fragment. Dedication of an image by the daughter of Grahadata (Grahadatta), [the wife] of Dhanahathi (Dhanahastin), at the request of Dhamathā (?), the female pupil (śiśini) of Aryya-Araba . . . (Ārya-Ārhad . . .) ont of the Koṭṭiya (Kauṭṭika) gaṇa, the Thāniya (Sthānīya) kula, the Vairā (Vairī) śākhā. The panel besides contains the name of the ascetic (śramaṇa) Kaṇa or Kaṇha (Krishṇa) and a lady's name probably to be read Anaghaśrēshṭhivījā. The first two signs of the date are uncertain.
- 76. S. 98.—Mathurā (Kankāli Tilā) Jaina image inscription of the time of rājan Vāsudēva. —1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 35 f., No. 20, and Plate XV; 1887 correction by Bühler, Almanach der Wiener Akademie der Wissenschaften, Jahrgang XXXVII. p. 267 f.; 1887 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. I. p. 177 ff., No. 8; 1888 correction by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. II. p. 144; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 108, No. 23.
 - rājāa Vāsudēvasya samvatsarē 90 8 varshamāsē 4 divasē 10 1 ētasyā purvrāyē.

 Mixed dialect. Fragment. Records, after an invocation of the Arhat Mahāvira (Mahāvira), the dedication by some woman, the . . . of Aryya-Kshēma (Ārya-Kshēma), . . . the daughter of Pravaraka, the daughter-in-law of the perfumer (gandhika) Varuņa, . . . [at the request] of . . . the gaṇin Aryya-Dēvadata (Ārya-Dēvadatta), out of the Aryy-Odēhikiya! (Ārya-Uddēhikiya) gaṇa, the Paridhāsika kula, the Pētaputrikā (Paitāputrikā!) iākhā.
- 77. S. 98.—Mathurā (Kankāli Tīlā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 205, No. 24, and Plate.

 Sa 90 8 hē 1 di 5 asma kshunē.
 - Mixed dialect. Fragment. Mentions the Kottiya (Kauttika) gana, the Uchanaga[ri] (Uchchānāgarī) [śākhā].
- 78. S. 299.—Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina stone inscription of the time of some mahārāja rājātirāja.—1896 Bühler, Academy, Vol. XLIX. p. 367=Journ. Roy. As. Soc. 1896, p. 578 f.= Vienna Orient. Journ. Vol. X. p. 171 f.; 1908 Banerji, Ind. Ant. Vol. XXXVII. p. 33 ff., and Plate III.—mahārājasya rājātirājasya svarvachehharasvatē 200 90 9 hamatamāsē 2 divasē I.
 - Mixed dialect. Fragment. Records, after an invocation of all Sidhas (Siddhas)

 Ārahātas (Arhats), the setting up of an image of the Ārahat (Arhat) Mahāvira
 (Mahāvira) in the temple of the Ārhats (ārāhātāyatāna) and of a shrine (dēvakula)
 by Ujhatikā, daughter of . . . [and] of Okhārikā, by the lay-sister (suvāsikābhagīnī) Okhā, of . . . śīrika and Šīvadina (Sivadatta).

- 79. Mathurā (Kankāli Tīlā) image inscription of the time of mahīrājātirāja Kanishka.— 1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 129, No. 16, and Plate VI; 1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 31, No. 5, and Plate XIII; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 149 f., No. 25.
 - . . . [ma]h[ā]rājātir[ā]jasya Kanishkasya sainvatsa[rē]. Mixed dialect. Fragment. Nothing beyond the date has been made out.
- 80. Mathurā (Kankāli Ţīlā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription of the time of devaputra Huvishka.-1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 206, No. 25, and Plate.
 - . . [va]putrasya Huvishkasya sa Mixed dialect. Fragment. Only the date has been preserved.
- S1. Mathurā (Kankālī Tilā, new Lucknew Provincial Museum) Jaina image inscription of the time of some maharaja rajātirāja.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 206, No. 27, and Plate.

— mahārājasya rājātirājasya Mixed dialect. Fragment. Mentions Se[na], pupil (sishya) of Ohanandi (Ogha-

- nandin). Compare No. 45. 82. Mathura (Jail Mound) stone-slab inscription of the time of scamin mahakshatrapa Somdasa. - 1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 188 f., No. 29,
 - and Plate; 1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 30, No. 1, and Plate XIII; 1874 Growse, Mathurá, Part II. p. 172; 1891 correction by Bühler, Academy, Vol. XXXIX. p. 374; 1891 correction by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 177; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 149, No. 24; 1908 Lüders, Ep. Ind. Vol. IX. p. 246-248.

Mixed dialect. A tank (pushkarani), the western tank of the twin tanks, a reservoir (udapāna), a garden (ārāma), a pillar (stambha) and a stone-slab (tilāpatta), by the treasurer (gamjavara) of svamin mahakshatrapa Sociadaea, a brahmana of the Segrava (Saigrava) gotra.

83. Mathurā (Kankāli Ţīlā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription of the time of mahārāja mahākshatrapa Ma 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 199, No. 3, and Plate.

-maharāja-mahākshatrapa-Ma

- Sanskrit (?). Fragment. Only an invocation of the Arhats and the words given above are preserved. The statue bearing this inscription has been cut out of the back of the panel bearing inscription No. 104.
- 84. Mathura (Kankali Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.— 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 389, No. 15, and Plate; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 154, No. 32.

. . 10 7 éta[syām] pürvvāyām.

Mixed dialect. Fragment. Mentions the Kottiya (Kauffika) gana.

85. Mathura (Jail Mound, now Lucknow Provincial Museum) stone inscription.-1878 Growse, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XLVII. Part I. p. 130, and Plate XXI; 1880 Growse, Mathurá², p. 108, and Plate; 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 390, No. 18, and Plate.

- [sam] [di] 5 ētasyam pū[revāyam].

Mixed dialect. Dedication of a stone slab (silapatta) in the temple (stana) of the divine lord of serpents (bhagavat nagendra) Dadhikaruna by the sons of the actors (sailalakas), the Mathuras (of Mathura), who are praised as the Chandaka brothers, chief among whom was Nandibala.

Mathura (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—
 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 396, No. 31, and Plate.

- . . . 5 asmi kehuné.

Mixed dialect. Fragment. Mentions a female pupil (sishini) of Ārya-Sukara, and Āryya-Nāgadattā (Ārya-Nāgadattā).

87. Mathurā (Kankāli Ţilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—
1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 392 f., No. 25, and Plate.

— . . . rehamāeš 1 divasē 30 asmi kshu

Mixed dialect. Fragment. Only the words given above have been preserved.

Mixed dialect (?). Fragment. Nothing beyond the date can be made out.

- Mathura (now Mathura Museum) rail inscription.—1870 Cumingham, Journ. Roy.
 As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 194, No. 30, and Plate.
 Only the figures 100 10 8. Compare No. 91.
- Mathura (now Lucknow Provincial Museum) rail inscription.—1870 Cunningham, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 194, No. 31, and Plate.
 Only the figures 100 20 7. Compare No. 90.
- Mathurā (Arjunpura Mahalla Mound) pillar inscription,—1885 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XX. p. 36, and Plate V, I.
 Prakrit. Gift of Āmoghārakhitā (Amoghārakshitā).
- 93. Mathurā (Kaākālī Tīlā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina stone inscription.—
 1891 Bühler, Academy, Vol. XXXIX. p. 373; 1891 Bühler, Vienna Orient. Journ.
 Vol. V. p. 175 f.; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 198 f., No. 1, and Plate.
 Prakrit. Dedication of an arch for the temple (pāsīdotēraņa) by the lny-hearer
 (sāvaka) Utaradāsaka (Utturadāsaka), son of a Vachhi (Vātsī) and disciple
 (āmtēvāsī) of the ascetic (samana) Māharakhita (Māgharakshita).
- 94. Mathurš (Kańkāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina inscription on sculptured stone-slab.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 396, No. 33, and Plate; 1901 Bühler-Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 20, and Plate XIII; 1905 Fleet Journ. Roy. As. Soc. 1905, p. 685-655; 1908 referred to by Banerji, Ind. Ant. Vol. XXXVII. p. 49.

Mixed dialect. Fragment. Records, after invocation of Arabat (Arhat) Vardhamana, the setting up of a tablet of homage (äyägapaṭa) by Simitrā (Sivamitrā ?), the

- Kcśiki (Kausiki), [wife] of Gotiputra (Gauptiputra), a black serpent to the Pothayas (Pröshfhakas) and Šakas.
- Mathurà (Kankali Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina inscription on carved panel.—1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 397, No. 35, and Plate; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 150 f., No. 27.
- 96. Mathurà (Kankāli Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.— 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 201, No. 9, and Plate. Mixed dialect. Fragment. Dedication of an image by (?) Idrapāla (Indrapāla), the son of a Goti (Gaupti), for the worship of the Arahats (Arhats). Perhaps this inscription is to be read from below.
- Mathurā (Kankāli Ţila, now Mathurā Museum) stone inscription.—1874 mentioned by Growse, Mathurā, Part II. p. 174; 1877 Growse, Ind. Ant. Vol. VI. p. 218, No. 4. and Plate; 1880 Growse, Mathurā,² p. 109, and Plate; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 151, No. 28.
 - Prakrit. Fragment. Dedication by Pūsā (Pushyā), the wife of Puphaka (P Pushpaka), the son of a Mogali (Maudgali).
- 98. Mathurā (Chaubārā Mound, now Mathurā Museum) Buddhist rail inscription.—1877 Growse, Ind. Ant. Vol. VI. p. 219, No. 6, and Plate; 1878 Growse, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XLVII. Part I. p. 118, and Plate XVIII; 1880 Growse, Mathurā, p. 117, and Plate; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 152, No. 29. Mixed dialect. Gift of the servant of the interior (abhyamtarēpasthāyakā) Kathika.
- Mathura (Kańkali Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina inscription on sculptured törana.—1891 Bühler, Academy, Vol. XXXIX. p. 373 f.; 1891 Bühler, Vienna Orient, Journ. Vol. V. p. 176; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 199, No. 4, and Plate.
 - Mixed dialect. A temple (pāsāda), the gift of Dhāmaghoshā (Dharmaghōshā), the female disciple (āmtēvāsinī) of bhadata (bhadanta) Jayasēna.
- 100. Mathurā (Kathkāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina tablet inscription.— 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 200, No. 5, and Plate; 1901 Bühler-Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 19, and Plate XII. Prakrit. Fragment. Setting up of a tablet of homage (āyāgapaṭa) for the worship of the Arahatas (Arhats) by Sivayaśā (Śivayaśas), . . . wife of the dancer (nataka) Phaguyaśa (Phalguyaśas).
- 101. Mathură (Kankali Tilă, now Lucknow Provincial Museum) Jaina frieze inscription.— 1891 mentioned by Bühler, Academy, Vol. XXXIX. p. 374; 1891 mentioned by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 179; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 200, No. 6, and Plate; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 314 ff., and Plate; 1901 Bühler-Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 25, and Plate XVIII. Prakrit. Fragment. The name of bhagavai Nemēsa is preserved.
- 102. Mathura (now Mathura Museum) Jaina inscription on sculptured slab.—1885 Bhagvan-lal Indraji, Actes du sizième Congrès International des Orientalistes à Leide, Part III. p. 142 ff., and Plate; 1901 noticed by Smith. Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol.

XX. p. 61, and Plate CIII; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 152 f., No. 30; 1904 note (wrong) by Lüders, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. LVIII. p. 868. Mixed dialect. Records, after an invocation of the Ārahat (Arhat) Vardhamāna the setting up of a shrine (dēvikula) of the Ārahat (Arhat), an āyāgasabhā, a reservoir (prapā), and stone slabs (silāpaṭa) in the Arhat temple (Arahatāyatana) of the Nigathas (Nirgranthas) by the lay-disciple of the ascetics (samanasāvikā), the Nādā courtezan (gāṇikā) Vāsū, daughter of the Ādā courtezan (gaṇikā) Lōṇašōbhikā (Lavaṇasōbhikā), together with some of her relatives for the worship of the Arahatas (Arhats).

- 103. Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina inscription on sculptured panel.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 200, No. 8, and Plate; 1901 Bühler-Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 15.

 Prakrit. Fragment. Records, after an invocation of the Arabat (Arhat) Mahāvira (Mahāvīra), the gift of a tablet of homage (āyāgapafa) by: itā, wife of . . . lavāda (?), the Māthuraka (inhabitant of Mathurā).
- 104. Mathurā (Katkāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina inscription on sculptured panel.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 201, No. 10, and Plate, Prakrit. Fragment. Mentions Jivanādā (Jivanandā). Compare No. 83.
- 105. Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina inscription on sculptured panel.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 207, No. 30, and Plate; 1894 referred to by Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 311, and Plate; 1901 Bühler-Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 14, and Plate VII.

 Mixed dialect. Records, after an invocation of the Arshamas (Arhats), the setting up of a tablet of homage (āyāgapāṭa) by Sihanādika (Simhanandika), son of the eānika Sihaka (Simhaka) and son of a Košiki (Kaušiki), for the worship of the Ārahamtas (Arhats).
- 106. Mathurā (Kańkali Tilš, now Lucknow Provincial Museum) Jaina inscription on sculptured alab.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 207, No. 31, and Plate; 1901 Bühler-Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 17, and Plate X. Mixed dialect. Fragment. Mentions, after an invocation of the Arahamtas (Arhats), the wife of Śivaghoshaka.
- 107. Mathurā (Kaŭkāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina inscription on sculptured slab.—1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 207, No. 32, and Plate; 1901 Bühler-Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 18, and Plate XI.

 Mixed dialect. Records, after an invocation of the Arahamtas (Arhats), the setting up of a tablet of homage (āyāgapaṭa) by Achalā (?), daughter of Mals . . . pa (?), daughter-in-law of Bhadrayaša (Bhadrayašas) and wife of Bhadranadi (Bhadranadin), for the worship of the Arahatas (Arhats).
- 108. Mathurā (Kankāli Tīlā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina inscription on sculptured pillar.—1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 390, No. 17, and Plate; 1901 Bühler-Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 29, and Plate XXVIII; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 153 f., No. 31.

 Mixed dialect. Records, after an invocation of the A[ra*]hachtas (Arhats), the dedication of an arch (tōrana) by the lay-pupil of the ascetics (śramanaśrāvikā).

 lahastini, together with some of her relatives.

- 109. Mathurā (now Lucknow Provincial Museum) inscription on waistband of statue.—1901 Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 56, and Plate XCIX. Mixed dialect (?). The reading is quite uncertain.
- 110. Mathura (Kankali Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.— 1891 mentioned by Bühler, Academy, Vol. XXXIX. p. 374; 1891 mentioned by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 179; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 207, No. 29, and Plate.
 - Mixed dialect. Fragment. Dedication of an image of the Arhat (Arhat) Pariva (Pāriva). Mentions the preacher (vāchaka) Ghoshaka, pupil (iisha) of Uggahini, a gani (ganin) in the Sthānikiya (Sthānikiya) kula.
- 111. Mathură (Kankāli Țilă, now Lucknow Provincial Museum) stone inscription.—1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 200, No. 7, and Plate. Sanskrit. Fragment of some prasasti.
- 113. Mathurā (Kankāli Tīlā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—
 1889 noticed by Bühler, Academy, Vol. XXXV. p. 381; 1889 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. III. p. 236; 240, No. 4; 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 392, No. 23, and Plate.

 Mixed dialect. Fragment. Mentions the Vārapa gaņa, the Arya-Kaniyasika (Arya-Kaniyasika) kula, the Od . . . [śākhā f].
- 114. Matbură (Kankali Tilă, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.— 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 393, No. 26, and Plate. Mixed dialect. Dedication [of an image] by Chiri, the son of Dăsa.
- 115. Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jains image inscription.— 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 393, No. 27, and Plate; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 35, note 10.
 - Mixed dialect. Fragment. Setting up of an image of Vadhamana (Vardhamana). Mentions the Thaniya (Sthaniya) [kula].
- Mathură (Kankâli Tilă, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—
 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 397, No. 34, and Plate.
 - Mixed dialect. Fragment. Mentions, after an invocation of the Arahamtas (Arhats) and [Si]ddhas, the Varana gana, the Aya-Hāṭṭiya (Ārya-Hāṭṭiya) kala, the Vajanāgari (Vārjanāgari) kākhā, the Arya-Širikiya (Ārya-Śrikiya) sambhōga.
- 117. Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.— 1891 mentioned by Bühler, Academy, Vol. XXXIX. p. 374; 1891 mentioned by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 178 f.; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II.
 - Prakrit, Fragment. Records, after an invocation of bhagavat Usabha (Rishabha), some gift at the request of Sadita, female pupil (sisini) of . . . dhuka, a

118. Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.— 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 208, No. 33, and Plate. Mixed dialect. Fragment. Dedication of an image of Vardhamāna by Dinā (Dattā), daughter of Vajaranadya (Vajranandin?), [daughter-in-law] of Vādhišiva (Vriddhišiva?), wife of . . . i. Mentions besides Badimašī.

119. Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina inscription on large slab.—1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 208, No. 34, and Plate.

Mixed dialect. Fragment. Dedication of an image of [Vardha]māna by Jāyā, daughter of Navahasti (Navahastin), daughter-iu-law of Grahasēna, mother of the brothers Šivasēna, Dēvasēna and Šivadēva, for the acceptance of Aryya-Sandhi (Arya-Saudhi), pupil (šishya) of Aryya-Balattrata (Ārya-Balatrāta), [at the request of] Aryya-Bahma . . . (Ārya-Brahma . . .), the female pupil (šishi) of Aryya-Balattrata (Ārya-Balatrāta) out of the Uchēnagari (Uchchairnāgari) š[ā*]khā. Compare No. 32.

120. Mathurā (Kankāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.—
1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 208, No. 35, and Plate.

Mixed dialect. Fragment. Dedication of . . . the mother of . . . lana,
the . . . of Šivadata (Šivadatta), at the request of . . . idharā .

out of the Širika (Šrīka) sambhōka (sambhōga).

121. Mathura (Kankali Tila, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.— 1891 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 389, No. 14, and Plate; 1892 correction by Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 197; 1900 correction by Boyer, Journ. As. Ser. IX. Vol. XV. p. 571 ff.

Mixed dialect. Dedication of an image of Usa[bha] (Rishabha) by Gulhā, daughter of Varmā and wife of Jayadāsa, at the request of Aryya-Śāmā (Ārya-Śyāmā), the female pupil (śiśim) of Aryya-Gādhaka (Ārya-Gādhaka), the pupil (śiśa) of Aryya-Jēshṭabasti (Ārya-Jyēshṭhahastin), out of the Koṭṭiya (Kauṭṭika) gaṇa, the Brahmadāsika kula, the Uohohēnāgari (Uchchairnāgari) iškhā, the Sirika (or Siriya) (Śrīka) sambhōga. The inscription mentions besides Aryya-Mihila (Ārya-Mihila), the pupil (śishya) of Aryya-Jēshṭahasti (Ārya-Jyēshṭhahastin). Compare Nos. 20 and 122.

122. Mathură (Kańkāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina image inscription.— 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 209 f., No. 37, and Plate; 1901 Bühler-Smith, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XX. p. 47, and Plate XC, 2. Mixed dialect. Dedication of a fourfold image (śavadóbhadríka) by Sthirā, daughter of Varapahasti (Varapahastin) and of Dēvi, daughter-in-law of Jayadeva and

of Varanahasti (Varanahastin) and of Devi, daughter-in-law of Jayadeva and daughter-in-law of Moshini (Moshini), first wife of Kutha Kasutha, at the request of the preacher (vāchaka) Aryya-Kshēraka (Ārya-Kshēraka), pupil (sishya) of Aryya-Mihila (Ārya-Mihila), the pupil (sishya) of Ayya-Jēshṭahasti (Ārya-Jyēshṭahastin), out of the Koṭṭiya (Kauṭṭika) gaṇa, the Uchēnagarī (Uchchair-nāgarī) s[ā]khā, the Bamhādāsia (Brahmadāsika) kula, the Sirigriha (Śrīgriha) sambhāka (sambhōga). Compare Nos. 20 and 121.

123. Mathura (Kankali Tila, now Mathura Museum) Jaina image inscription.—1877
Rajendralala Mitra-Growse, Ind. Ant. Vol. VI. p. 219, No. 8, and Plate; 1880

- Growse, Mathurá², p. 109, and Plate; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 383, note 60; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 154, No. 33.
- Mixed dialect. Fragment. Records some gift at the request of the preacher (vachaka) Siha (Simha), the pupil (fishya) of Datta. Compare No. 29.
- 124. Mathură Jaina inscription.—1889 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. III. p. 233, note 3.
 Mixed dialect (?). Fragment. Mentions the Kottiya (Kauffika) [gana].
- 125. Mathurā (now Aligarh Institute) Buddhist rail-pillar inscription.—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 36. No. 21, and Plate XVI; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 130, and Plate LIII; 1890 Senart, Journ. As. Ser. VIII. Vol. XV. p. 119 f.; 1892 Senart, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 246, note 62.

 Mixed dialect. Fragment. Dedication of a railing (vēdikā) and arches (tēraņa) at (?) the ratanagriha (ratnagriha) by [Vādhapā]la Dhanabhūti, the son of a Vātsi, of Dhanabhūti, . , together with his parents and the four orders (parishā), for the worship of all Budhas (Baddhas).
- 126. Mathurā (Jail Mound, now Mathurā Museum) Buddhist inscription on base of pillar.

 —1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 187, No. 23, and Plate; 1877 Growse, Ind. Ant. Vol. VI. p. 218, No. 3, and Plate; 1880 Growse, Mathurá³, p. 154, and Plate; 1890 correction by Senart, Journ. As. Ser. VIII. Vol. XV. p. 121, note; 1901 D. R. Bhandarkar, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XX. p. 269, note 2; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 155.

 Mixed dialect. Dedication of the base of a pillar (kumbhaka) by the monks (bhiksha) Suriya and Buddharakshita, the prahanikas, for the gift of health to all
- 127. Mathurā (now Indian Museum, Calcutta) inscription on base of pillar.—1870 Rajendra-lala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 128, No. 6, and Plate V; 1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 186, No. 13; 1904 correction by Lüders. Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 154 f., No. 36.

 Mixed dialect. Fragment. Dedication by [Vasu]mihira (?), son of Simha.
- 128. Mathurà (now Indian Museum, Calcutta) inscription on base and plinth of pillar.— 1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part L p. 126, Nos. 5* and 5*, and Plate V; 1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 186, No. 12; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 154 f., Nos. 34 Mixed dialect. Fragment. Dedication by
 - Mixed dialect. Fragment. Dedication by hira and by Viśvadēvaka (? or Viśvasika?) and (?) Vasumihira (?), the son (or sons) of Simha. Compare No. 127.
- 129. Mathura (now Mathura Museum) Buddhist inscription on base of pillar.—1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 187, No. 21; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 155, No. 37.

 Sanskrit(?). Fragment. Dedication by some elder of the congregation (sanighusthavira), who bore the epithet of bhadants.
- 130. Mathura Buddhist inscription on base of pillar.—1870 Rajendralala Mitra, Journ.

 Bong. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 128, No. 9, and Plate V; 1870 Dowson.

- Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 186, No. 16; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII, p. 155, No. 38.
- Sanskrit(?). Fragment. Dedication by some elder of the congregation (sanghastha-vira).
- 131. Mathură Buddhist inscription on base of pillar.—1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 128, No. 8, and Plate V; 1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 186, No. 15; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 155, No. 39.
 Sanskrit(?). Fragment. Dedication by some [elder] of the congregation (sangha-[sthavira]).
- 132. Mathura Buddhist inscription on base of pillar.—1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 130, No. 19, and Plate VII; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 155, No. 40.
 Mixed dialect. Fragment. Dedication by the monk (bhikshu) Buddharakshita and the monk (bhikshu) Sangha Compare Nos. 133 and 134.
- 133. Mathurā (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist inscription on base of pillar.— 1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part 1. p. 128, No. 10, and Plate V; 1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 187, No. 17; 1904 Luders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 155.
 Mixed dialect. Fragment. Dedication by the monk (bhikshu) Buddharakshita and the monk (bhikshu) Compare Nos. 132 and 134.
- 135. Mathura (now Indian Museum, Calentta) Buddhist inscription on base of pillar.—1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 128, No. 4, and Plate V; 1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 186, No. 11. Mixed dialect. Fragment. Dedication by the monk (bhikshu) Buddhaghoshu.
- 136. Mathură (now Mathură Museum) stūpa inscription.—1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 129, No. 13, and Plate V; 1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 187, No. 20, and Plate. Mixed dialect. Of Našāpriyā, daughter of Surana.
- 137. Mathura Buddhist inscription on base of pillar.—1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 187, No. 22.
 Mixed dialect. Fragment. Contains the names (?) . . . dandi Sanghadéva Singhaghuta (?) Dharmapriya Sanghamitra Dharmapriya. Quite uncertain.
- 138. Mathura Buddhist image inscription.—1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 188, No. 25, and Plate.
 Mixed dialect. Records the setting up of an image of bhagavat Śakyamuni. The rest is uncertain.

- 139. Mathurā (now Mathurā Museum) Buddhist inscription on base of pillar.—1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 188, No. 27. Mixed dialect. Fragment. Gift of the monk (bhikshu) Datta.
- 140. Mathurā Buddhist inscription on large slab.—1870 mentioned by Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 188, No. 28.
 Mixed dialect (?). 'So damaged that no connected sense can be made out.' Mentions the vihdra of the Kakatikas (?).
- 141. Mathură (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist inscription on base of pillar.—1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 130, No. 20, and Plate VII; 1904 correction by Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 155, note 100. Mixed dialect. Fragment. Records the dedication of some bhikshu. The reading of the names is quite uncertain.
- 142. Mathurā (Chaubarā Mound) Buddhist stone inscription.—1874 Growse, Mathurá, Part II. p. 176; 1880 Growse, Mathurá, p. 115.
 Mixed dialect(?). Fragment. Only the word of the Budhas (Buddhas).
- 143. Mathurā (Chanbarā Mound) Buddhist (?) stone inscription.—1874 Growse, Mathurā, Part II. p. 176; 1880 Growse, Mathurā, p. 115.
 Sanskrit (?). Fragment. No name is preserved.
- 144. Mathurā Buddhist image inscription.—1877 Growse, Ind. Ant. Vol. VI. p. 219, No. 7 and Plate; 1880 Growse, Mathurd², p. 126, and Plate; 1904 Luders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 155 f., No. 41.
 Sanskrit (?). Fragment. Dedication of some woman for the obtainment of the condition of a Buddha by all beings.
- 145. Mathură Buddhist image inscription.—1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 188, No. 26, and Plate. Sanskrit (?). Fragment. Dedication of an image. Mentions Dharmāšoka (?) Uncertain.
- 146. Mathurā (Jail Mound) Buddhist image inscription.—1878 Growse, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XLVII, Part I. p. 130, and Plate XXI.; 1880 Growse, Mathurā³, p. 107, and Plate.
 Sanskrit (?). Dedication by the Śākya monk (Śākyabhikshu) Yaśadinna (Yaśōdatta).
- 147. Mathură Buddhist image inscription.—1870 Dowson, Journ. Roy. As. Soc. New Ser. Vol. V. p. 188, No. 24, and Plate; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 156, Sanskrit. Dedication by the Śākya monk (Śākyabhikshu) Samgharakshita.
- 148. Matbură (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist image inscription.—1870 Rajendra-lala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 129, No. 12, and Plate V 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 156, No. 43.
 Sanskrit. Dedication by the Śakya monk (Śakyabhikshu) Dharmadasa.
- 149. Mathurs Buddhist image inscription.—1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 128 f., No. 11, and Plate V; 1870 Dowson, Journ. Roy. As.

- Soc. New Ser. Vol. V. p. 187, No. 18, and Plate; 1904 Lüders, Ind. Ant. Vol. XXXIII. p. 156, No. 44. Sanskrit. Dedication by the Sakya monk (Sakyabhikshu) bhadanta Brahmasoma.
- 150. Parkham (now Mathura Museum) image inscription.-1885 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XX. p. 41, and Plate VI. Prakrit. Made by Gomataka, the pupil (atevasia) of Kunika. The inscription to the left has not been read.
- 151. Mahwan inscription on sculptured stone.-1885 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XX. p. 41, and Plate V, 3. Only the figures 20 3.
- 152. Satdhara Stapa II. inscription on steatite box (No. 1).-1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 324, and Plate XXV. Prakrit. (Relies) of Sariputa (Sariputra).
- 153. Satdhāra Stūpa II. inscription on steatite box (No. 2).—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 324, and Plate XXV. Prakrit. (Relics) of Maha-Mogalina (Maha-Maudgalyayana).
- 154. Sonari Stupa I. rail inscription.—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 313, and Plate XXIII, 8. Prakrit. Gift of the architect (nacakam[ika]) Dhamaguta (Dharmagupta), pupil (atévāsin) of Aya-Pasanaka (Ārya-Prasannaka).
- 155. Sonari Stupa I. rail inscription -1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 313, and Plate IX, 2, and XXIII, 9. Prakrit. Gift of the monk (bhiohhu) Sagharakhita (Samgharakshita), pupil (atévāsin) of Aya-Pasanaka (Arya-Prasannaka).
- 156. Sonāri Stūpa II. inscription on crystal box (No. 1).-1854 Canningham, Bhilsa Topes, p. 121, 316, and Plate XXIV; 1905 Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1905, p. 688 ff. Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Gotiputa (Gauptiputra), the Hemavata (Haimavata), (namely) of Dudubhisara (Dundubhisvara), an heir of the faith (dāyāda).
- 157. Sonari Stapa II. inscription on steatite box (No. 2) .- 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 317, and Plate XXIV. Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Majhima (Madhyama), the Kodiniputa (Kaundintputra).
- 158. Sonari Stupa II. (now British Museum) inscription on steatite box (No. 3).-1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 121, 317, and Plate XXIV; 1898 Rhys Davids, Journ. Roy. As. Soc. 1898, p. 579, Plate only; 1905 Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1905, p. 681. Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Kotiputa (Kauntiputra) Kasapagota (Kāšyapagōira), the teacher (āchariya) of all Hēmavatas (Haimavatas).
- 159. Sonari Stupa II. inscription on steatite box (No. 4),-1854 Cunningham, Bhilsa Toves, p. 318, and Plate XXIV. Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Kösikiputa (Kaušikiputra).

- 160. Sonāri Stūpa II. inscription on steatite box (No. 5).—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 318, and Plate XXIV.
 - Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Alabagira.
- 161. S. 68.—Sanchi Buddhist statue inscription of the time of mahārāja rājātirāja dēvaputra Shahi Vasashka.—1893 mentioned by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. VIIp. 293; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 369 f., and Plate; 1903 correction by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1903, p. 325 ff.; 1904 note by Smith, Early History of India, p. 238, note; 1905 note by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1905, p. 357 f.; 1908 note by Lüders, Ep. Ind. Vol. IX. p. 244 f.

. . . sya rajatirajasya . . putrasya Shah[i] Vasashkasya sam [60] 8 hi 1 [di 5] [ē]tasy[ām] [p]u[rv]v[āyām].

Mixed dialect. Fragment. Records the erection of a statue of bhagavat in the Dharmadevavihara by Madhurika, daughter of Khara. The date of the year

182-568 Sanchi Buddhist Stupa I, Inscriptions.

- 162. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 463, No. 21, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 235, No. 1, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind.
 - Prakrit. Gift of Dhamasiva (Dharmasiva), the son of Kěkatěvaka (Kaikatěvaka).
- 163. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 235, No. 2, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Prakrit. Gift of the naus (bhichhunis) from [Vadi]vahana.
- 164. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 462, No. 25, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 235, No. 3, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 370, No. 125. Prakrit. Gift of Vajigata (Vajrigupta).
- 165. 1837 Prinsep. Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 461, No. 5, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 236, No. 4, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Prakrit. Gift of the mother of Dhamagirika (Dharmagirika). Compare No. 324.
- 166. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 236, No. 5, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Prakrit. Gift of Vijita, sou-in-law of Kěkatěyaka (Kaikatěyaka).
- 167. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 462, No. 15, and Plate XXVII; 1854 Canningham, Bhilsa Topes, p. 236, No. 6, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Prakrit, Gift of the monk (bhichhu) Kāda (Kānda).
- 168. 1854 Cunningham, Bhilea Topes, p. 236, No. 7, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Dévabhaga, the Madhubanika (inhabitant of

- 169. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 564, No. 40, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 236, No. 8, and Plate XVI; 1894 Bübler, Ep. Ind. Vol. II. p. 370, No. 127.
 Prakrit. Gift of the queen (dêvi) Vakala (or, possibly, Vakila), the mother of Ahimita (Ahimitra).
- 170. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 236, No. 9, and Plate XVI.
 Prakrit. Of Phagu (Phalgu), the Vasa . . rikā. Compare No. 236.
- 171. 1854 Gunningham, Bhilsa Topes, p. 236, No. 10, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 371, No. 128.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Nagadina (Nagadatta). Compare No. 235.
- 172. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 237, No. 11, and Plate XVI.
 Prakrit. Gift of the Vakiliyas from Ujóni (Ujjayini). Compare No. 237.
- 173. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 237, No. 12, and Plate XVI.
 Prakrit. Gift of Gopāla, the visakama (?), from Ujeni (Ujjayini).
- 174. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 237, No. 13, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 97, No. 5.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Aya-Pasanaka (Ārya-Prasannaka). There are three copies of this inscription.
- 175. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 237, No. 14, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 97, No. 6.
 Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Achalâ from Nadinagara (Nandinagara). Compare No. 462.
- 176. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 237, No. 15, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 97, No. 7.
 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Kābēja (Kāmbēja) from Nādinagara (Nandinagara). Compare No. 472.
- 177. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 462, No. 8, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 237, No. 16, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 97, No. 8.

 Prakrit. Gift of Sonadeva (Śravanadēvā), wife of Siharakhita (Simharakshita).
- 178. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 237, No. 17, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 371, No. 129.
 Prakrit. Gift of Soņadēvā (Śravaņadēvā), Parijā and Agidēvā (Agnidēvā).
- 179. 1837 Prinsep, Journ. Beng, As. Soc. Vol. VI. p. 461, No. 7, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 237, No. 18, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 371, No. 130. Prakrit. Gift of Subhaga and her sister.
- 180. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 238, No. 19, and Plate XVI; 1892, Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 98, No. 9.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Dhamarakhita (Dharmarakshita).

- 181. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 238, No. 20, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 98, No. 10.
 Prakrit. Gift of the labourer (? kamika) Atha (Artha).
- 182. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 238, No. 21, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 371, No. 131.
 Prakrit. Gift of Pusagiri (Pushyagiri), the Navagamaka (inhabitant of Navagrama).
 The identity of Cunningham's and Bühler's inscriptions is doubtful. Compare No. 277.
- 183. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 238, No. 22, and Plate XVI.
 Prakrit. Fragment. Gift of the nun (bhichhuni) pasakama (?) Chada (? Chanda).
- 184. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 461, No. 4, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 238, No. 23, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 98, No. 11.
 Prakrit. Gift of Sămanēra (Śrāmanēra), the Abēyaka banker (sethin of Āmra?).
 Compare No. 283.
- 185. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 238, No. 24, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 98, No. 12.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Pratithana (Pratishthana), pupil (atevāsin) of Hāṭiya.
- 186. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 462, No. 22, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 239, No. 25, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 98, No. 13. Prakrit. Gift of Siharakhita (Simharakshita), the Udubaraghariya (inhabitant of Udumbaragriha).
- 187. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 239, No. 26, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 371, No. 132; 1895 referred to by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 214.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Ödätikä (Avadātikā), the Vēdisikā (inhabitant of Viditā).
- 188. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 239, No. 27, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 371, No. 133.
 Prakrit. Gift of Yasopala (Yasahpala), the Bhadata-Kadiya (pupil of bhadanta Kada?). Compare No. 314.
- 189. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 239, No. 28, and Plate XVI; 1894, Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 371, No. 134.
 Prakrit. Gift of Sihagiri (Simhagiri) from Mähamöragi. Compare No. 313.
- 190. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 239, No. 29, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 371, No. 135.
 Prakrit. Gift of Pusa (Pushya), the Chahatiya monk (bhichhu from Chahata?).
 Compare No. 316.
- 191. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 239, No. 30, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 98, No. 15.

- Prakrit. Gift of Dhamarakhitā (Dharmarakshitā), the Madhuvanikā (inhabitant of Madhuvana). Compare Nos. 312 and 460.
- 192. 1854 Canningham, Bhiles Topes, p. 239, No. 31, and Plate XVI. Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Dhana (?).
- 193. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 239, No. 32, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 371, No. 136.
 Prakrit. Gift of the householder (gahapati) Budhila (Baddhila).
- 194. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 239, No. 33, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 98, No. 16.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Bhamduka, son of a Goti (Gaupti). Compare No. 442.
- 195. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 462, No. 10, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilea Topes, p. 240, No. 34, and Plate XVI; 1891 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 231; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 98, No. 17. Prakrit. Gift of the Vejaja village (gāma).
- 196. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 240, No. 35, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 99, No. 18.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Arahaguta (Arhadgupta), the Sásádaka (inhabitant of Sásáda).
- 197. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 240, No. 36, and Plate XVI; 1892 Buhler, Ep. Ind. Vol. II. p. 99, No. 19.
 Prakrit. Gift of Subhaga, the Koraghara (inhabitant of Kuraragriha)
- 198. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 240, No. 37, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 371, No. 137.
 Prakrit. Gift of the mother of Aya-Rahila (Ārya-Rahila), the Sanhineyaka.
- 199. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 240, No. 38, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 99, No. 20.
 Prakrit. Gift of the female lay worshipper (upasikā) Vudinā (Vyudinā).
- 200. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 462, No. 18, and Plate XXVII; 1854. Cunningham. Bhilsa Topes, p. 241, No. 39, and Plate XVI; 1888 Fleet, Corp. Inscr. Ind. Vol. III. p. 31; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 99, No. 21, and Plate. Prakrit. The measuring-staff (pamānalajhi) of Bhagavat at Kākaņāya.
- 201. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 461, No. 6, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 241 f., No. 40, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 99, No. 22. Prakrit. Gift of Vesamanadata (? Vaisravanadatta), daughter-in-law of Patithiya (Pratishthita), householder (gahapati) from Tubavana (Tumbavana).
- 202. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 462, No. 9, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 242, No. 41, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II p. 99, No. 23. Prakrit. Gift of the householder (gahapati) Patithiya (Pratishthita) from Tuba vana

(Tumbarana). Compare No. 449.

- 203. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 242, No. 42, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 372, No. 188.
 Prakrit. Gift of Disårakhita (Disärakshita) from Navagāmaka (Navagrāmaka).
- 204. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 242, No. 43, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 99, No. 24.
 Prakrit. Gift of Nadāvu (Nandāyu?) and Nādivirōhi (Nandivirōhin).
- 205. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 242, No. 44, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 372, No. 139.
 Prakrit. Gift of Pothadëvä (Pröshfhadëvä).
- 206. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 565, No. 44, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 242, No. 45, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 372, No. 140. Prakrit. Gift of Naga, the wife of the Kamdadigamiya banker (sethin of Kandadigama).
- 207. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 242, No. 46, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 372, No. 141.
 Prakrit. Gift of Pusă (Pushyā), the wife of the Kamdadigāmiya banker (sethin of Kandadigāma).
- 208. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 243, No. 47, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 372, No. 142.
 Prakrit. Gift of Vadha (Vriddha) from Kamdadigama (Kandadigrāma).
- 209. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 564, No. 30, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 243, No. 48, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 372, No. 143.
 Prakrit. Gift of the clerk (lēkhaka) Mulagiri (Mālagiri).
- 210. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 243, No. 49, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 372, No. 144.
 Prakrit. Fragment. From Ujeni (Ujjayini)
- 211. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 243, No. 50, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 372, No. 145.
 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Yakhadina (Yakshadatta).
- 212. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 243, No. 51, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 372, No. 146.
 Prakrit. Gift of a female lay-worshipper (upāsikā) from Ujēni (Ujjayini).
- 213. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 243, No. 52, and Plate XVI. Prakrit. Gift of Isadata (Rishidatta), the rakasavānodāsa (?).
- 214. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 243, No. 53, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 372, No. 147.
 Prakrit. Gift of the Nāvagāmikā female lay-worshippers (upāsikās from Navagrāma).
- 215. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 243, No. 54, and Plate XVI. Prakrit. Gift of Vahila from Isimită (?). Compare No. 418 (?).

- 216. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 243, No. 55, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 373, No. 148.
 Prakrit. Gift of Röhanl (Röhini) from Ujeni (Ujjayini).
- 217. 1838 Prinsep, Journ. Beng. Az. Soc. Vol. VII. p. 564, No. 29, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 243 f., No. 56, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 373, No. 149. Prakrit. Gift of Dhamagiri (Dharmagiri) from Ujeni (Ujjayini).
- 218. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 244, No. 57, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 373, No. 150.
 Prakrit. Gift of Sona (Śravana) from Ujeni (Ujjayini).
- 219. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 564, No. 35, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 244, No. 58, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 94, note 28; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 373, No. 151. Prakrit. Gift of Najā, the daughter-in-law of the Tapasiyas, from Ujeni (Ujjayini). Compare No. 560.
- 220. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 564, No. 32, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 244, No. 59, and Plate XVI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 94, note 28; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 373, No. 152. Prakrit. Gift of Isimita (Rishimitra) of the Tapasiyas from Uje[n1*] (Ujjayini).
- 221. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 244, No. 60, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 373, No. 153.
 Prakrit. Gift of Muladatà (Müladattā) from Ujēni (Ujjayini).
- 222. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 244, No. 61, and Plate XVI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 373, No. 154.
 Prakrit. Gift of Balakā from Ujēnī (Ujjayinā).
- 223. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 564, No. 34, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 244 f., No. 62, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 373, No. 155. Prakrit. Gift of Vayudatā (Vāyudattā), wife of Opedadata (Upēndradatta), from Ujēni (Ujjayini). Compare No. 407.
- 224. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 245, No. 63, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 373, No. 156.
 Prakrit. Gift of Himadata (Himadatta), sister of Upedadata (Upëndradatta), from Ujëni (Ujjayini).
- 225. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 245, No. 64, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 373, No. 157.
 Prakrit. Gift of Budhā (Buddhā), sister of Upedadata (Upēndradatta), from Ujēnī (Ujjayinī).
- 226. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 564, No. 39, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 245, No. 65, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 374, No. 158.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Kādi (Kāndi) from Ujeni (Ujjayini).

- 227. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII p. 564, No. 31, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 245, No. 66, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 374, No. 159.
 Prakrit. Gift of the mother of Chheta (Kshëtra) from Ujënt (Ujjayini).
- 228. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 245, No. 67, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 94, note 28; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 374, No. 160.
 Prakrit. Gift of Simhadatā (Simhadattā) of the Tāpasiyas from Ujēni (Ujjayini).
- 229. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 564, No. 33, and Plate XXIII; 1854 Gunningham, Bhilsa Topes, p. 245, No. 68, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 374, No. 161. Prakrit. Gift of Isika (Rishika) of the Saphineyakas from Ujeni (Ujjayini).
- 230. 1854 Cunningham. Bhilsa Topes, p. 246, No. 69, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 374, No. 162.
 Prakrit. Gift of Isimita (Rishimitra) from Kuraghara (Kuraragriha).
- 231. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 246, No. 70, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 374, No. 163.
 Prakrit. Gift of Vāsulā (or Vipulā) from Ujēnī (Ujjayinā).
- 232. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 246, No. 71, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 374, No. 164.
 Prakrit. Gift of Nara from Kuraghara (Kuraragrika).
- 233. 1854 Cunningbam, Bhilsa Topes, p. 246, No. 72, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 374, No. 165. Prakrit. Gift of Nagamită (Nagamitră) from Kuraghara (Kuraragrika). Compare No. 426.
- 234. 1854 Cuuningham, Bhilsa Topes, p. 246, No. 73, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 99. No. 25.
 Prakrit. Gift of the Bauddha committee (Bodhagofhi) from Dhamavadhana (Dharmavardhana). Compare No. 351.
- 235. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 246, No. 74, and Plate XVII.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Nagadina (Nagadatta). Compare No. 171.
- 236. 1854 Canningham, Bhilsa Topes, p. 246, No. 75, and Plate XVII.
 Prakrit. Of Phagu (Phalgu), the Vasa . . rikā. Compare No. 170.
- 237. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 564, No. 28, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 246, No. 76, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 100, No. 27.
 Prakrit. Gift of the Väkiliyas from Ujeni (Ujjayini). Compare No. 172.
- 238. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 246, No. 77, and Plate XVII.

 Prakrit. Gift of Göbila (Göbbila) and Visa (Visva) from Ujeni (Ujjayini).
- 239. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 462, No. 14, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 246, No. 78, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep Ind. Vol. II. p. 100, No. 28.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Chirati (Kirati)

- 240. 1354 Canningham, Bhilsa Topes, p. 247, No. 79, and Plate XVII; 1802 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 100, No. 29. Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Sadhana.
- 241. 1838 Prinsep, Journ. Bong. As. Soc. Vol. VII. p. 564, No. 41, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 247, No. 80, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 100, No. 30. Prakrit. Gift of Asvaděvá (Aśvaděvá), mother of Bahadata (Brahmadatta).
- 242. 1538 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 564, No. 38, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 247, No. 81, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 100, No. 31. Prakrit. Gift of Svatiguta (Svātigupta), the Ugireyaka (inhabitant of Ugira).
- 243. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 462, No. 13, and Plate XXVII; 1854 Cunningham. Bhilsa Topes, p. 247, No. 82, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 100. No. 32. Prakrit. Gift of Arahaguta (Arhadgupta).
- 244. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 247, No. 83, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II: p. 374, No. 166. Prakrit. Gift of Asvaděvá (Asvaděvá), mother of Samika (Svāmika).
- 245. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 248, No. 84, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 100, No. 33; 1895 referred to by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 214. Prakrit. Gift of Samgharakhitā (Samgharakshitā), female pupil (atēvasini) of Yasila (Yasila).
- 246. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 462, No. 17, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilso Topes, p. 247 f., No. 85, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 374, No. 167. Prakrit. Gift of Kaniyasi (Kaniyasi), the mother of the banker (sethin).
- 247. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 564, No. 27, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 248, No. 86, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 100, No. 34. Prakrit. Gift of Yasila (Yasila).
- 248. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 563, No. 26, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 245, No. 87, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 100, No. 35. Prakrit. Gift of the banker (sethin), the executor of repairs.
- 249. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 563, No. 24, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 248, No. 88, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 375, No. 168. Prakrit. Gift of Vasula. Compare No. 510.
- 250. 1854 Cunningham, Bhiles Topes, p. 249, No. 89, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 375, No. 169. Prakrit. Gift of Idadata (Indradatta), the Pāvidaka (inhabitant of Pacida).

- 251. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 249, No. 90, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep Ind. Vol. II. p. 101, No. 36.
 Prakrit. Gift of Upidadata (Upëndradatta).
- 252. 1854 Cunningham, Bhilsc Topes, p. 249, No. 91, and Plate XVII. Prakrit. Gift of the daughter of Sēmākā (?). Compare No. 382.
- 253. 1854 Cunningham, Bhitsa Topes, p. 249, No. 92, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II, p. 101, No. 37. Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Saghadinā (Sainghadatta) from Vāghumata.
- 254. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 565, No. 42, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 249, No. 93, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 101, No. 38; 1895 referred to by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 214. Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Yakhi (Yakshi) from Vedisa (Vidisa).
- 255. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 249, No. 94, and Plate XVII; 1892 correction by Maisey, Sánchi and its Remains, p. 103; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 375. No. 170.
 Prakrit. Gift of Kujara (Kuñjara), the brother of the banker (sethin).
- 256. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 249, No. 95, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 101, No. 39.
 Prakrit. Gift of Kurari, mother of Tapasi.
- 257. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 565, No. 45, and Plate; 1854 Cunning-ham, Bhilsa Topes, p. 249, No. 96, and Plate XVII; 1894 Bühler Ep. Ind. Vol. II. p. 375, No. 171.
 Prakrit. Fragment. Gift of Isidata (Rishidatta), wife of Sakadina (Sakradatta).
- 258. 1854 Canningham, Bhilsa Topes, p. 250, No. 97, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 375, No. 172.
 Prakrit. Gift of Bhadaguta (Bhadragupta), the Sanukagamina (inhabitant of Sānukagrāma).
- 259. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 250, No. 98, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 375, No. 173.
 Prakrit. Gift of Sătila (Săntila or Svătila) from Dharakina.
- 260. 1854 Cunningham, Bhilsu Topes, p. 250, No. 99, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 101, No. 40.
 Prakrit. Gift of Araha (Arhat) from Kāpāsigāma (Kārpāsigrāma). There are two copies of this inscription.
- 261. 1854 Canningham, Bhilsa Topes, p. 250, No. 100, and Plate XVII.

 Prakrit. Gift of Arahadasa (Arhaddīsa), the Kaṭakañuyaka (inhabitant of Kaṭakañu).

¹ This work, the publication of which in 1892 was altogether an anachronism, I have referred to only in 5 few cases where the author has given his own transcripts or evident corrections. For the most part the readings of the inscriptions have been taken over from Cunningham's Bhilza Topes, and it therefore seemed to me unnecessary to quote them here.

- 262. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 250, No. 101, and Plate XVII; 1892 Bübler, Ep. Ind. Vol. II. p. 101, No. 41. Prakrit, Gift of Bhadaka (Bhadraka) from Katakaun.
- 263, 1854 Canningham, Bhilsa Topes, p. 250, No. 102, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 101, No. 42. Prakrit. Gift of Apathaka (Aparthaka).
- 264. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 250, No. 103, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 101, No. 43. Prakrit. Gift of Ajitiguta (Aditigupta or Ajitigupta), the Biogavadhanaka (inhabitant of Bhogavardhana).
- 265. 1854 Cunningham. Bhilsa Topes, p. 250, No. 104, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 101, No. 44. Prakrit. Gift of Arabadina (Arhaddatta) in Morasihikata (Mayorasimhikata).
- 266. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 250, No. 105, and Plate XVII; 1892 Bühler, Fp. Ind. Vol. II. p. 101, No. 45. Prakrit, Gift of Dhamarakhitā (Dharmarakshitā), mother of Sivanadi (Sivanandin), from Bhogavadhana (Bhogavarhdana). There are two copies of this inscription.
- 267. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 251, No. 106, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Iud. Vol. II. p. 375, No. 174. Prakrit. Gift of Sagha (Samgha).
- 268. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 251, No. 107, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 102, No. 46. Prakrit. Gift of Navagamaka-Samikā (Svīmikā, inhabitant of Navagrāma) from Ujenihara (the district of Ujjayini).
- 269. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 251, No. 108, and Piate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 102, No. 47. Prakrit. Gift of the merchant (vānija) Siriguta (Śrigupta).
- 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 251, No. 109, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 102, No. 48. Prakrit. Gift of Majhima (Madhyama), wife of Subahita. Compare No. 544.
- 271. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 251, No. 110, and Plate XVII; 1892 Cunningham-Maisey, Sanchi and its Remains, p. 95; 1892 Bühlor, Ep. Ind. Vol. II. p. 102, No. 49. Prakrit. Gift of the royal scribe (rajalipikara) Subahita, son of a Goti (Gaupti).
- 272. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 251, No. 111, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Isid. Vol. II. p. 102, No. 50, and Plate; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Dentsoh, Morgent. Ges. Vol. L. p. 585. Prakrit. Fragment. [Gift] of the female lay-worshipper (upasika) Naga from Tiridapada. Compare No. 426.
- 273. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 251, No. 112, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 102, No. 51. Prakrit. Gift of the Barulamisa committee (goțhi) from Vedisâ (Vidijā).

- 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 252, No. 113, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 102, No. 52.
 - Prakrit, Gift of the nun (bhichhun) Dhamarakhitā (Dharmarakshitā) in Kāchupatha.
- 1954 Cunningham, Bhilea Topes, p. 252, No. 114, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 102, No. 53.
 - Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Dhamarakhita (Dharmarakshita), the Kāchu-patha (inhabitant of Kāchupatha).
- 276. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 252, No. 115, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 103, No. 54; 1895 referred to by Pischel, Nachr. Gütt. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 214.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Samdhans.
- 277. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 252, No. 116, and Plate XVII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. 11, p. 103, No. 55.
 Prakrit. Gift of Pusagiri (Pushyagiri), the Navagamaka (inhabitant of Navagrāma).
 Compare No. 182.
- 278. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 252, No. 117, and Plate XVII: 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 103, No. 56.
 Prakrit. Gift of Bhichhuka (Bhikshuka), the Pādāniya (inhabitant of Pādāna).
- 279. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 252, No. 118, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind., Vol. II. p. 375, No. 175.
 Prakrit. Fragment. Gift of Kāchā.... from Vāghumata. The identity of Cunningham's and Bühler's inscriptions is not absolutely certain.
- 280. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 252, Nos. 119-121, and Plates IX and XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 375, No. 176; 1895 referred to by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 212, Prakrit. Three (rails), the gift of Samika (Svāmika), the musician (I vanika), and of his son Siripāla (Šrīpāla). Compare No. 532.
- 281. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 253, No. 122, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 376, No. 177.
 Prakrit. Gift of bhādata (bhadanta) Rājuka.
- 282. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 253, No. 123, and Plate XVII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 376, No. 178.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Visäkha (Višakha).
- 283. 1837 Prinsep. Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 461, No. 11, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 253, No. 124, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 103, No. 57.
 Prakrit. Gift of Samanera (Śrāmanera), the Abeyaka banker (sethin of Āmra?). Compare No. 184.
- 284. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 462, No. 12, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 253, No. 125, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind., Vol. II. p. 103, No. 58.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Nadiguta (Nandigupta).

- 285. 1654 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 253, No. 126, and Plate XVIII. Prakrit. Fragment. Gift of Nada from Podakada.
- 236. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 253, No. 127, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 103, No. 59. Prakrit. Fragment. Gift of [the mother of] Arahadina (Arhaddatta) from Arapana.
- 287. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 253, No. 128, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 103, No. 60; 1894 correction by Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 405, note 24. Prakrit. Gift of Kujara (Kuñjara) from Tambalamada.
- 288. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 253, No. 129, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 103, No. 61. Prakrit. Gift of the monk (bhichha) Dhamaguta (Dharmagupta) from [Ma]dhuvana.
- 289. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 253, No. 130, and Plate XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 376, No. 179. Prakrit. Fragment. Gift of Namda from Kurara.
- 290. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 253, No. 181, and Plates IX and XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 103, No. 62. Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Mahagiri.
- 291. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 254, No. 132, and Plate XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 376, No. 180. Prakrit. Gift of the nun (bhichhunt) Isidatā (Rishidattā) from Madhavana,
- 292. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 254, No. 138, and Plates IX and XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 376, No. 181. Prakrit. Gift of the nun (bhikhunt) Isidatā (Rishidatta), the Kurari (inhabitant of Kurara).
- 293. 1854 Canningham, Bhilsa Topes, p. 254, No. 134, and Plate XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 376, No. 182. Prakrit. Gift of Dhamapala (Dharmapala), the Kothukapadiya (inhabitant of Kothukapada).
- 234. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 254, No. 135, and Plate XVIII, 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 103 f., No. 63. Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Upasijha (Upasidhya), brother of Phaguna (Phālguna).
- 295. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 254, No. 136, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 104, No. 64. Prakrit. Gift of Isirakhita (Rishirakshita) from Bhogavadhana (Bhogavardhana).
- 296. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 254, No. 137, and Plate XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 389, No. 309, Prakrit. Fragment. [Gift] of Dhanika (Dhanyaka) from Bhogavadhana (Bhogavardhana).

- 1854 Cunningham, Bhiles Topes, p. 254, No. 138, and Plate XVIII.
 Prakrit. Gift of Vimala, the Kurariya (inhabitant of Kurara).
- 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 254, No. 139, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 104, No. 65.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Samidata (Svīmidatta). Compare No. 535.
- 299. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 254, Nos. 140 and 141, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 104, No. 66.
 Prakrit, Fragment. [Gift] of the monk (bhichhu) Devagiri, who knows the five nikāyas (pachanēkayika), and his papil (atēvasis).
- 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 254, No. 142, and Plate XVIII: 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 104, No. 67.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Pusaka (Pushyaka).
- 301. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 254, No. 143, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 104, No. 68.
 Prakrit. Gift of the monks (bhichhu) Chuda (Kshudra) and Dhamarakhita (Dharmarakshita).
- 302. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes. p. 254, No. 144, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 104, No. 69. Prakrit. Gift of Agisimā (Agnišarmā) in Ujēni (Ujjayini).
- 303. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 255, No. 145, and Plate XVIII.; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 104, No. 70.

 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Pratithana (Pratishthana), the pupil (amtévasin) of Aya-Tisaka (Ārya-Tishyaka).
- 304. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 255, No. 146, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 104, No. 71.

 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Budharakhita (Buddharakshita), the Éjávata (inhabitant of Éjávatí).
- 305. 1854 Coumingbam, Bhilsa Topes, p. 255, No. 147, and Plate XVIII; 1894 Bühler Ep. Ind. Vol. II. p. 376, No. 183.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhunt) Isidinā (Rishidatta), the Namdināgārikā (inhabitant of Nandinagara).
- 306. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 255, No. 148, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 105, No. 72.
 Prakrit. Gift of the mother of Asada (Ashādha) from Arapana.
- 307. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 255, No. 149, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 105, No. 73; 1895 referred to by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 214.
 Prakrit. Gift of Mits (Mitra), daughter-in-law of the Tapasiyas from Ujeni (Ujjayini).
- 308. 1854 Cunningham, Bhilea Topes, p. 255, No. 150 f., and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 105. No. 74.

 Prakrit. Gift of the saint (supurisa) Bharadiya, the yayapajaka (?).

- 309. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 256, No. 151, and Plate XVIII; 1894 Bühler. Ep. Ind. Vol. II. p. 376, No. 184. Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Aya-Dhanaka (Ārya-Dhanaka).
- 310. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 256, No. 152, and Plate XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 384, No. 258. The identity of Cunningham's and Bühler's inscriptions is not absolutely certain. Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Jonhaka (Jyötsnaka). Compare No. 311.
- 311. 1854 Cunningbam, Ehilsa Topes, p. 256, No. 153, and Plate XVIII: 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 105, No. 75. Prakrit. Cift of the monk (Uhiohhu) Jonhaka (Jyōtsnaka). Compare No. 310.
- 312 1854 Cunningham, Bhilea Topes, p. 256, No. 154, and Plate XVIII; 1892 Bühler. Ep. Ind. Vol. H. p. 105, No. 76. Prakrit. Gift of Dhamarakhatā (Dharmarakshitā), the Madhuyanākā (inhabitant of Madhavana). Compare Nos. 191 and 460.
- 313. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 256, No. 155, and Piate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 105, No. 77. Prakrit. Gift of Sibagiri (Sibhagiri) from Māhamsragi. Compare No. 189.
- 314. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 256, No. 156, and Plate XVIII. Prakrit. Gift of Yasopala (Yasanpāla) from Bhasikada (?). Compare No. 12S.
- 315. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 256. No. 157. and Plate XVIII: 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 376, No. 185. Prakrit. Gift of Dhansgiri.
- 316. 1854 Cunningham, Bhilst Topes, p. 256, No. 158, and Plate XVIII. Prakrit. Gift of Pusa (Pushya), the Chahariya monk (bhichhu from Chahara). Compare No. 190.
- 317. 1854 Cunningham, Bhilea Topes, p. 257, No. 159, and Plate XVIII: 1894 Bühler. Ep. Ind. Vol. II. p. 376, No. 186. Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Balika, the Madalachhikatika (inhabitant of Mandalākshikafa).
- 318. 1854 Cunningham, Bhilsa Tapes, p. 257, No. 160, and Plate XVIII: 1892 Bühler. Ep. Ind. Vol. II. p. 105, No. 78. Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Dhamasiri (Dharmairi), the Madalachhikatikā (inhabitant of Mandalākshikata).
- 319. 1854 Canningham, Bhilsa Topes, p. 257, No. 161, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 105, No. 79. Prakrit. Gift of Avisind (Avishanua), who is versed in the sutrantas (sutatikina), the Madalachhikatika (inhabitant of Mandalakshikata). Compare No. 352.
- 320. 1854 Cunningham, Ehilsa Topes, p. 257, No. 162, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 106, No. 81. Prakrit. Gift of the merchant (vānija) Saghadeva (Samghadeva), the Verchakata (inhabitant of Virohakuja).

- 321. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 257, No. 163, and Plate XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 377, No. 187.
 Prakrit. Gift of Samghila, the Bhadikiya (pupil of Bhadika).
- 322. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 257, No. 164, and Plate XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 377, No. 188.
 Prakrit. Fragment. Gift of the monk (bhi. .) Arahatapālita (Arhatpālita).
- 323. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 258, No. 165, and Plate XVIII; 1894 Bühler. Ep. Ind. Vol. II. p. 377, No. 189. Prakrit. Gift of Arahaka (Arhaka), the Paripanaka (inhabitant of Paripana?).
- 324. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 258, No. 166, and Plate XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 377, No. 190.
 Prakrit. Gift of the mother of Dhamagirika (Dharmagirika). Compare No. 165.
- 825. 1854 Cunningham, Bhilea Topes, p. 258, No. 167, and Plate XVIII; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 106, No. 82.
 Prakrit. Gift of Odi, the Nadinagarika (inhabitant of Nandinagara).
- 326. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 258, No. 168, and Plate XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 377, No. 191.
 Prakrit. Fragment. Gift of Sidhatha (Siddhārtha).
- 327. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 258, No. 169, and Plate XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 377, No. 192.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhunī) Isidāsī (Rishidāsī), the Nādināgarikā (inhabitant of Nandinagara). Compare No. 402.
- 328. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 258, No. 170, and Plate XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 377, No. 193.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Dupasahā (Dushprasahā?) from Namdinagara.
- 329. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 258, No. 171, and Plate XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 377, No. 194.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Yakhadāsi (Yakshadāsi).
- 330. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 463, and Plate XXV; 1854 Cunning-ham, Bhilsa Topes, p. 258, No. 172, and Plate XVIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 377, No. 195.
 Prakrit. Gift of Data (Datta) Kalavada.
- 331. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 258, No. 173, and Plate XVIII (No. 174); 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 378, No. 196.
 Prakrit. Gift of the weaver (sotika) Damaka, father of Kusuka. There are perhaps two copies of this inscription.
- 332. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 258, No. 174, and Plate XVIII (No. 173).
 Prakrit. Gift of Dhamadata (Dharmadatta).
- 333. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 259, No. 175, and Plate XVIII.

 Prakrit. Gift of the nun (bhichhunī) Arahadāsi (Arhaddāsi).

- 334. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 259, No. 176, and Plate XVIII.

 Prakrit. Gift of Samidara (? Svāmidattā?).
- 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 262, No. 178, and Plate XIX.
 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Dhamagiri (Dharmagiri).
- 336. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 462, No. 16, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 262, No. 179, and Plate XIX; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 378, No. 197. Prakrit. Gift of Isipalita (Rishipalita) and of Samana (Sramana).
- 337. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 462, No. 20, and Plate XXVII; 1854 Canningham, Bhilsa Topes, p. 262, No. 180, and Plate XIX; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 106, No. 83. Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Arahadina (Arhaddatta), the Pokhareyaka (inhabitant of Pushkara).
- 338. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 565, No. 47, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 263, No. 181, and Plate XIX; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 106, No. 84. Prakrit. Gift of a pillar (thabha) by all the relatives of bhadata (bhadanta) Năgila.
- 339. 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 461, No. 3, and Plate XXVII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 263, No. 182, and Plate XIX; 1868 Fergusson-Gunningham, Tree and Serpent Worship, p. 115, and Plate XXV, 3; 1892 Bühler. Ep. Ind. Vol. II. p. 106, No. 85.
 Prakrit. Gift of a pillar (thabha) by Nāgapiya (Nāgapriya), the Korara (native of Kurara), banker (sethin) at Achhāvada. Compare No. 343.
- 340. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 263, No. 183, and Plate XIX; 1892 Maisey, Sånchi and its Remains, p. 97, with facsimile; 1893 mentioned by Bühler, Vienna Orient, Journ. Vol. VII. p. 292; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 396, No. 377, and Plate.

 Prakrit. Fragment. Imprecation against him who takes away or causes to be taken away an arch (tōraṇa) or rail (vēdikā) from this Kākaṇā[va], or causes it to be transferred to another temple of the teacher (āchariyakula).
- 341. 1854 Cunningham, Bhilsu Topes, p. 263 f., No. 184, and Plate XIX; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 106, No. 86. Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Budhapālitā (Buddhapālitā).
- 342. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 264, No. 185, and Plate XIX; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 106, No. 87.
 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Pothaka (Pröshthaka).
- 343. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 264, No. 186, and Plate XIX; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 378, No. 198.
 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Vira.
- 344. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 264, Nos. 187 and 188, and Plate XIX; 1894
 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 378, No. 199.
 Prakvit. Gift of the nun (bhikhuni) Yakhi (Yakshi), the Välivahanikä (inhabitant of Välivahana).

- 345. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 264, No. 189, and Plates XII and XIX; 1868 noticed by Fergusson, Tree and Serpent Worship, p. 125, and Plate XXX, 1; 1882 Hoernle, Ind. Ant. Vol. XI. p. 80, note 24; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 378, No. 200,
 - Prakrit. Records that the carving (rupakamma) was done by the Vedisaka workers in ivory (damtakāras of Vidišā).
- 346. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 264 f., No. 190, and Plate XIX; 1882 Bhagvanlal Indraji, Arch. Surv. South. Ind. No. III. p. 56; 1892 Cunningham-Maisey, Sánchi and its Remains, p. 95; 1892 correction by Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 88.
 Prakrit. Gift of Ānamda, the son of Vāsiṭhl (Vāsishṭhī), the foreman of the artisans (āvēsanin) of τājan Siri-Sātakaņi.
- 347. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 563, No. 23, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 266, No. 191, and Plate XIX.
 Prakrit. Gift of Balamita (Balamitra), the pupil (atēvāsin) of Aya-Chuḍa (Ārya-Kshudra), the preacher of the Law (dhamakathika). Compare No. 349.
- 348. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 267, No. 192, and Plate XIX; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II, p. 378, No. 201.
 Prakrit. Gift of Năgap[i*]ya (Năgapriya), the Kurar[i*]ya (native of Kurara) banker (sethin) at Achhāvaḍa, and of his son Samgha. Compare No. 339;
- 349. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 563, No. 22, and Plate XXIII; 1854 Cunningham, Rhilea Topes, p. 267, No. 193, and Plate XIX; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 106, No. 88.
 Prakrit. Gift of a pillar (thabha) by Balamitra, pupil (atēvāsin) of Aya-Chuda (Ārya-Kshudra). Compare No. 347.
- 350. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 267, Nos. 194-196, and Plate XIX; 1893 mentioned by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. VII. p. 292; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 396, No. 378, and Plate; 1896 corrections by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. II. p. 586.
 Prakrit. Fragment. Gift of a pillar (thabba) and imprecation against him who takes away or causes to be taken away the stonework (sēlakama) from this Kākaṇāva, or causes it to be transferred to another temple of the teacher (āchariyakula).
- 351. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 100, No. 26.
 Präkrit. Gift of the Bauddha committee (Bodhagothi) from Dhamavadhanana (Dharmavardhana). Compare No. 234.
- 352. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 106, No. 80; 1895 referred to by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 214.
 Prakrit. Gift of Avisina (Avishanna), who is versed in the satrantas (sutatikina), the Madalachhikatika (inhabitant of Mandalakshikata). Compare No. 319.
- 353. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 107, No. 89. Prakrit. Gift of Devaka from Arapana.
- 354. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 107, No. 90.

 Prakrit. Gift of Arahadina (Arhaddatta), the Ramorajahikadi[ks] (? inhabitant of Ramorajahikada t).

- 355. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 107, No. 91.

 Prakrit, Gift of the merchant (vanija) Isiguta (Rishipupta) from Asvavati (Aivavati).
- 356. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 107, No. 92.
 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Isika (Rishika).
- 357. 1891 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 231; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 107, No. 93.
 Prakrit. Gift of Isika (Rishika), the Röhänipadiya (inhabitant of Röhinipada).
- 558. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 107, No. 94.
 Prakrit. Gift of Isirakhita (Kishirakshita). Compare No. 404.
- 359. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 107, No. 95.
 Prakrit. Gift of Mulä (Mūlā), wife of Visvadēva (Viśvadēva), from Ujēni (Ujjayini).
- 360. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 107, No. 96.
 Prakrit. Gift of Sachamita (Satyamitra), the Udumbaraghariya (inhabitant of Udumbaragriha).
- 361. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 107, No. 97.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Aya-Patuda (Arya-Patuda), the Katakañu-yaka (inhabitant of Katakañu).
- 362. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 108, No. 98.
 Prakrit. Gift of Samvalita from Kurāra.
- 363. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 108, No. 99.
 Prakrit. Gift of the banker (sethin) Siha (Simha), the Koraghara (inhabitant of Kuraghara).
- 364. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 108, No. 100. Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Girigută (Giriguptā).
- 365. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 108, No. 101.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Jitamitä (Jitamiträ), the Vadivahanikä (inhabitant of Vadivahana).
- 366. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 108, No. 102.
 Prakrit. Gift of Dhamatā (Dharmadattā), the Puñavadhaniyā (inhabitant of Punyavardhana).
- 367. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 108, No. 103.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Dhamadata (Dharmadatta), the Aya-Bhadu-kiya (pupil of Arya-Bhanduka).
- 368. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 108, No. 104.
 Prakrit. Gift of Piyadhamā (Priyadharmā) and Bodhi, the Köragharī nuns (bhichhunās from Kuraragriha).
- 369. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 108, No. 105.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Pusă (Pushyā), the Nadinagarikā (inhabitant of Nandinagara).

- 370. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 108, No. 106.
 Prakrit. Gift of Himagiri from Pokhara (Pushkara).
- 371. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 108, No. 107; 1894 correction by Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 407, note 27.
 Prakrit. Gift of Dhammasiva (Dharmasiva), the Poravijhaka (inhabitant of Pöravijha).
- 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 109, No. 108.
 Prakrit. Gift of the mother of Namdigiri from Bēdakara.
- 373. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 109, No. 109.
 Prakrit. Fragment. Gift of Mahi[da] (Mahēndra), the Bhōgavadhanaka (inhabitant of Bhōgavardhana).
- 374. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 109, No. 110.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhani) Budharakhitā (Buddharakhitā), the Madhuvanikā (inhabitant of Madhuvana).
- 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 109, No. 111.
 Prakrit. Gift of Dévabhaga from Mahisati (Māhishmati).
- 376. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II, p. 109, No. 112.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Yakhila (Yakshila), pupil (atéväsia) of Aya-Dévagiri (Ārya-Dévagiri).
- 1892 Bühler, Ep. Ind, Vol. II. p. 109, No. 113.
 Prakrit. Gift of Nigadi, the Röhanipadiya (inhabitant of Röhinipada).
- 378. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II, p. 109, No. 114.
 Prakrit. Gift of Bulika, the Röhanipadiya (inhabitant of Röhinipada).
- 379. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 109, No. 115.
 Prakrit. Gift of the banker (sethin) Năgadiua (Năgadatta), the Rohanipadiya (inhabitant of Röhinipada).
- 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 110, No. 116.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Chhadika (Chhardika) from Vädivahana.
- 381. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 110, No. 117; 1894 correction by Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 405, note 25.
 Prakrit. Gift of Nāgadatā (Nāgadattā), wife of the cavallerist (asavāraka) Pusarakhita (Pushyarakshita), the Vedisaka (inhabitant of Vidisā).
- 382. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 110, No. 118, Prakrit. Gift of Samikā (Swīmikā) and her daughter. Compare No. 252.
- 383. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 110, No. 119.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Siridinä (Šridattā), the Nādināgarikā (inhabitant of Nandinagura). Compare No. 536.
- 384. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 110, No. 120; 1894 correction by Bühler, Ep. Ind Vol. II. p. 405, note 26.
 Prakrit. Gift of Söyasa (Sauyaíasa) [or Sēyasa (Srēyas)], the Bhādanakaļiya

(inhabitant of Bhadanakata).

- 386. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 110, No. 122.

 Prakrit. Fragment. Gift of the monk (bhichhu) , the Aya-Bhamdu-kiya (papil of Arya-Bhanduka).
- 387. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 110, No. 123, Prakrit. Fragment. No name can be made out.
- 388. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 378, No. 202.
 Prakrit. Gift of the mother of Chirati (Kirāti) from Achhavața. There are perhaps two copies of this inscription.
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 378, No. 203,
 Prakrit. Gift of Ajarāni (Ajarāni).
- 390. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 378, No. 204.
 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Gagamdata (Gaigādatta), the Athakanagara (inhabitant of Athakanagara).
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 379, No. 205.
 Prakrit. Fragment. Gift of Apa yaha (?).
- 392. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 59, No. 18; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 379, No. 206.
 Prakrit. Gift of Apakani.
- 393. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 379, No. 207.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Aya-Kana (Ārya-Kana), the Aya-Bhamdukiya (pupil of Ārya-Bhanduku).
- 394. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 379, No. 208.

 Prakrit. Gift of the monk (bhickhu) Aya-Jeta (Ārya-Jayanta).
- 395. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 379, No. 209.
 Prakrit, Gift of the monk (bhíchhu) Khěmaka (Kshēmaka), the companion (sādhivihārin) of Aya-Phaguna (Ārya-Phālguna).
- 396. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 379, No. 210.

 Prakrit. Fragment. Gift of Asada (Ashādha) from Arapana.
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 379, No. 211.
 Prakrit. Fragment. Gift of somebody from Arapana.
- 398. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 564, No. 36, and Plate XXIII; 1894 Buhler, Ep. Ind. Vol. II. p. 379, No. 212. Prakrit. Gift of Sihā (Simhā), the Arapāni (inhabitant of Arapāna).
- 399. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 379, No. 213. Prakrit. Gift of Asaguta (Asvagupta).
- 400. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II, p. 379, No. 214.

- Prakrit. Gift of the nun (bhichhunī) Asabhā (Kishabhā), the Ujēnikā (inhabitant of Ujjayini).
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 379, No. 215.
 Prakrit. Fragment. Gift of the village (gama) of Asvavati (Aivavati).
- 402. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 380, No. 216.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhunt) Isidasi (Rishidäst), the Nadinagarika (inhabitant of Nandinagara). Compare No. 327.
- 403. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 58, No. 12; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 380, No. 217.
 Prakrit. Gift of Isinadana (Rishinandana), the Puñavadhaniya (inhabitant of Punyavardhana).
- 404. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 380, No. 218.
 Prakrit. Gift of Isirakhita (Rishirakshita). Compare No. 358.
- 405. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 380, No. 219.
 Prakrit. Gift of Asvarakhitā (Ašvarakshitā) in Ujēni (Ujjayini).
- 406. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 380, No. 220.
 Prakrit, Gift of the female lay-worshipper (upasikā) Sirikā (Śrikā) from Ujēnī (Ujjayinā).
- 407. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 380, No. 221.

 Prakrit. Gift of Väyudatä (Väyudattä), wife of Opedadata (Upëndradatta), from Ujëni (Ujjayini). Compare No. 223.
- 408. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 380, No. 222.
 Prakrit. Gift of Bumu, son of Kalura, from Ujeni (Ujjayini).
- 409. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 380, No. 223.
 Prakrit, Fragment. Gift of Dhamadatā (Dharmadattā) . . . of the Tāpasiyas from Ujēni (Ujjayini).
- 410. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 380, No. 224.

 Prakrit. Gift of the mother of the nun (bhichhuni) Dhamayasa (Dharmayasa) from Ujeni (Ujjayini).
- 411, 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 381, No. 225.
 Prakrit. Gift of the mother of Balika from Ujeni (Ujjayini).
- 412. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 381, No. 226.
 Prakrit. Fragment. Gift of the nun (bhichhu[ni]) Mită (Mitră) in Ujeni (Uniayini).
- IS94 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 381, No. 227.
 Prakrit. Gift of Vasulä from Ujeni (Ujjayini).
- 414. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 381, No. 228.

 Prakrit. Gift of Sanighadata (Sanighadatta) from Ujeni (Ujjayini).
- 415. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 381, No. 229. Prakrit. Gift of Suliss from Ujeni (Ujjayini).

- 416. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 381, No. 230, and Plate.
 Prakrit, Gift of the surveyor (rajuka) Utara (Uttara).
- 417. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 381, No. 231.

 Prakrit. Fragment. Gift of the female lay-worshippers (upasikas) from Ejävati.
- 418. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 381, No. 232.
 Prakrit. Gift of Våhila from Ejävati. Compare No. 215 (?).
- 419. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 381, No. 233.

 Prakrit. Gift of Idadeva (Indradeva), the Katakanuyaka (inhabitant of Katakanu).
- 420. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 381, No. 234.

 Prakrit. Gift of Araba (Arhat) from Kajakañu.
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 381, No. 235.
 Prakrit. Fragment. Gift of some person from Katakañu.
- 422. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 382, No. 236.

 Prakrit. Fragment. Mentions the banker (sethin) from Kamdadigama (Kandadigama).
- 423. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II, p. 382, No. 237.
 Prakrit. Gift of Devabhaga, wife of the Kamdadigamiya banker (sethin of Kandadigamiya).
- 424. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 382, No. 238. Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Kana.
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 382, No. 239.
 Prakrit. Gift of Ghösaka (Ghöshaka) from Kuraghara (Kuraragriha).
- 426. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 382, No. 240.
 Prakrit. Gift of Nagamită (Nagamitră) from Kuraghara (Kuraragriha). Compare No. 233.
- 427. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 58, No. 3; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 389, No. 241.
 Prakrit, Fragment. Gift of the nun ([bhi]khuni) Sätisiri (Santiiri or Svatiiri), the Kuraghari (inhabitant of Kuraragriha).
- 1894. Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 382, No. 242.
 Prakrit. Gift of Arahaguta (Arhadgupta) from Kurars. Compare No. 429.
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 382, No. 243.
 Prakrit. Gift of Arabaguta (Arhadgupta) from Kurara. Compare No. 428.
- 430, 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 382, No. 244.

 Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Achhavati (Rikshāvati) in Kurarā.
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 383, No. 245.
 Prakrit. Gift of Nagadina (Nagadattā) in Kurara.
- 432. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 383, No. 246.
 Prakrit. Gift of Dhamaka (Dharmaka) in Kurara.

- 433, 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 383, No. 247.
 Prakrit. Fragment. Contains the name Kurârâ (Kurarā).
- 434, 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 383, No. 248.

 Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Saghārakhitā (Samgharakshitā) in Kurarā.
- 435. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 383, No. 249.
 Prakrit. Fragment. Gift of Arahagută (Arhadguptā), the Kurari (inhabitant of Kurara).
- 436. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 383, No. 250.
 Prakrit. Gift of Arahadinā (Arhaddattā), the Kurarī (inhabitant of Kurara).
- 437. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 383, No. 251.

 Prakrit. Fragment. [Gift] of Sagha , the Kurariya (inhabitant of Kurara).
- 438. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 58, No. 6; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 383, No. 252.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichh[u*]u[i*]) Gadā.
- 439. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II, p. 383, No. 253.

 Prakrit. Gift of the nun (bhichh[u*]nī) Gadā, the Vedisikā (inhabitant of Vidišā).
- 441. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 383, No. 255.
 Prakrit. Fragment. [Gift] of Isinikā (Rishikā), the Gotami (Gautami).
- 442. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 384, No. 256, and Plate.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Bhaduka (Bhanduka), the son of a Goti (Gaupti)
 Compare No. 194.
- 443. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 384, No. 257, and Plate. Prakrit. Gift of Jitamitä (Jitamiträ).
- 444. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 384, No. 259.
 Prakrit. Gift of Samgharakhita (Samgharakshita) from Takarapada.
- 445. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 384, No. 260. Prakrit. Gift of the ascetic (tāpasa) Gönamdaka.
- 446. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 384, No. 261.
 Prakrit. Gift of the female lay-worshipper (upāsikā) Nāgā from Tiriḍapada. Compare No. 272.
- 447. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 384, No. 262. Prakrit. Gift of Tisa (Tishya).
- 448. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 384, No. 263.
 Prakrit. Gift of Tuda (Tunda), the Phujākapalliya (? inhabitant of Phujākapalli).
- 449. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 384, No. 264.
 Prakrit. Gift of the householder (gahapati) Patithiya (Pratishthita) from Tumbayans.
 Compare No. 202

- 450. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 384, No. 265.
 Prakrit. Gift of Dhañā (Dhanyā), wife of the brother of the householder (gahapati)
 Patithiya (Pratishthita) from Tumbavana.
- 451. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 385, No. 266.
 Prakrit. Gift of the elder (thera) Aya-Naga (Ārya-Nāga), the Ujenika monk (bhichhu from Ujjayini).
- 452. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 385, No. 267.

 Prakrit. Gift of the nun (bhichhum) Datā (Dattā), the Ma[dalachh]ikaṭikā (inhabitant of Mandalākshikaṭa).
- 453. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 385, No. 268.

 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Dēvarakhita (Dēvarakshita), the Mērajahakaṭiya (inhabitant of Mērajahakaṭa).
- 454. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 385, No. 269.

 Prakrit. Gift of the monks (bhichhus) Dhanagiri and Chadipiya († Chändipriya).
- 455. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 385, No. 270.
 Prakrit. Gift of Dhamaka (Dharmaka), the Vejajaka (inhabitant of Vejaja).
- 456. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 58, No. 1; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 385, No. 271.
 Prakrit. Gift of Dhamagiri (Dharmagiri) and Dhamasëna (Dharmasëna).
- 457. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 385, No. 272. Prakrit. Gift of Dhamadinā (Dhamadattā).
- 458. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 385, No. 273.

 Prakrit. Gift of Dhammapala (Dharmapāla) [and] of Mahipāla (Mahipāla).
- 459. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 385, No. 274.

 Prakrit. Fragment. Gift of Dhamarakhita (Dharmarakshita), the rakaraka.
- 460. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 385, No. 275.
 Prakrit. Gift of Dhamarakhita (Dharmarakshita), the Madhavanika (inhabitant of Madhavana). Compare Nos. 191 and 312.
- 461. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 58, No. 7; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 386, No. 276.
 Prakrit. Fragment. Gift of the family of Dhamu[tara] (Dharmöttara).
- 462. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 58, No. 10; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 386, No. 277.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Achalâ from Nadinagara (Nandinagara). Compare No. 175.
- 463. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 58, No. 13; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 396, No. 278.
 Prakrit. Gift of Amagă (?) from Namdinagara.

- 464. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 58, No. 14; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 386, No. 279.
 Prakrit. Gift of Utaradată (Uttaradattā) from Namdinagara.
- 465. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 386, No. 280.
 Prakrit. Gift of Utaramit\(\text{a}\) (Uttaramitr\(\text{i}\)) from Naindinagara.
- 466. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 386, No. 281.
 Prakrit. Gift of the lay-worshipper (upāsaka) Yamada[ta*](Yamadatta) from Namdinagara.
- 467. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 58, No. 11; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 386, No. 282.
 Prakrit. Gift of Röhanadevä (Röhinādevā) from Nadinagara (Nandinagara).
- 468. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 386, No. 283.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Namdutara (Nandöttara), the Vedisika (inhabitant of Vidića).
- 469. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 386, No. 284.
 Prakrit. Gift of N\u00e4gadata (N\u00e4gadatta) and Sagharakhita (Saingharakhita), the K\u00f6ragharas (inhabitants of Kuraragriha).
- 470. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 387, No. 285. Prakrit. Gift of the banker (sethin) Nagila.
- 471. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 387, No. 286.
 Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Nați, the Köraghari (inhabitant of Kuraragriha).
- 472. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 58, No. 8; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 387, No. 287.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Kābōja (Kāmbōja) from Nādinagara (Nandinagara). Compare No. 176.
- 474. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 387, No. 289. Prakrit. Gift of Patithana (Pratishthana).
- 475. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 58, No. 2; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 387, No. 290.
 Prakrit. Gift of the sons of Disagiri (Disagiri) from Paravida.
- 476. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 387, No. 291, Prakrit. Gift of Pusaka (Pushyaka).
- 477. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 387, No. 292.
 Prakrit. Gift of Pusadata (Pushyadatta), the Navagamakiya (inhabitant of Navagrāma).

- 478. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 387, No. 293. Prakrit, Gift of the nun (bhichhuni) Supathama (Suprasthama ?), the Pémutika (inhabitant of Pēmuta).
- 479. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 387, No. 294. Prakrit. Gift of Isidata (Rishidatta), the wife of Leva, from Pokhara (Pushkara).
- 480. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 388, No. 295. Prakrit. Fragment. Gift of Isidata (Rishidatta) from Pokhara (Pushkara).
- 481. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 388, No. 296. Prakrit. Fragment. Gift of Tuda (Tunda) and Tuda (Tunda) from Pokhara (Pushkara).
- 482. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II, p. 388, No. 297. Prakrit. Gift of Samgha[ra*]khi[ta*] (Samgharakshita) from Pokhara (Pushkara).
- 483. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 388, No. 298. Prakrit. Gift of Isidina (Rishidatta), the Podavijhaka (inhabitant of Podavijha).
- 484. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 388, No. 299. Prakrit. Fragment. [Gift] of the monk (bhichhu) Badhaka (Baddhaka), the Kodijilaka (inhabitant of Kodijila).
- 485. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 388, No. 300. Prakrit. Gift of Baladatā (Baladattā), the Chudaphalagiriyā (inhabitant of Kshudraphalagiri).
- 486. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 388, No. 391, and Plate. Prakrit. Gift of the father of Bohumula.
- 487. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 388, No. 302. Prakrit. Gift of Budharakhita (Buddharakshita).
- 488. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 388, No. 303. Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Budharakhita (Buddharakshita), the Aya-Bhamdukiya (pupil of Arya-Bhanduka).
- 489. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 388, No. 304. Prakrit. Gift of the nun (bhikhunī) Budharakhatā (Buddharakshitā).
- 490. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 389, No. 305. Prakrit. Gift of Bodhi.
- 491. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 389, No. 306. Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Bhadika, the Kuraghar[iya] (inhabitant of Kuraragriha).
- 492. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 389, No. 307. Prakrit. Fragment. Gift of the monk ([bhi]khu) Bhad[ika], the Kōraghara (inhabitant of Kuraragriha).
- 493. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 389, No. 308. Prakrit. Gift of the wife of Bhadu (Bhonds).

- 494. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 389, No. 310.
 Prakrit. Gift of Nadini (Nandini) from Machhavata (Mateyavarta).
- 495. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 889, No. 811.
 Prakrit. Gift of the carpenter (vadakis) Manorama.
- 496. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 389, No. 312. Prakrit. Of Mahānāma (Mahānāman).
- 497. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 389, No. 313.

 Prakrit. Gift of Arihadata (Arhaddattā) from Māh[i]sati (Māhishmati).
- 498, 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 389, No. 314.

 Prakrit. Fragment. Gift of Ji from Mahisati (Mahishmati).
- 499. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 390, No. 315.
 Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Mitasiri (Mitrairi), the Körari (inhabitant of Kurara).
- 500. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 390, No. 316.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Yakhi (Yakshi) from Vedisa (Viditā).
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 390, No. 317.
 Prakrit. Gift of Ratini from Mahisati (Māhishmati).
- 502. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 390, No. 318.
 Prakrit. Gift of Rebila, the Namdinagaraka (inhabitant of Nandinagara).
- 503. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 390, No. 319.
 Prakrit. Gift of Revatimità (Revatimitra), wife of Balaka.
- 504. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 390, No. 320. Prakrit. Gift of the nun (bhikhun) Vajini (Vajrini).
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 390, Nos. 321 and 322.
 Prakrit. Gift of Varadata (Varadatta) and gift of his sister Varasens.
- 506. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 390, No. 323.

 Prakrit. Gift of Isala (Rishila), wife of Varadata (Varadatta).
- 507. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 391, No. 324.
 Prakrit. Gift of Rohā, wife of Varadata (Varadatta).
- 508. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 391, No. 325. Prakrit. Gift of Varupa.
- 509. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 391, No. 326.
 Prakrit. Gift of the nun (bhiohhuni) Vasumită (Vasumitră), the Ujënikă (inhabitant of Ujjayini).
- 510. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 563, No. 25, and Plate XXIII; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 391, No. 327.
 Prakrit. Gift of Vasula. Compare No. 249.

- 11. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 391, No. 328.
 Prakrit. Gift of Odaka (Ardraka) from Vädivahana.
- 512. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 391, No. 329.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhunt) Väsava from Namdinagara.
- 513. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 38, No. 5; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 391, No. 330.
 Prakrit. Gift of Bhutarakhita (Bhūtarakshita) from Vitiriāahā.
- 514. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 58, No. 4; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 391, No. 331.
 Prakrit. Gift of Mahirakhita (Mahirakshita) from Vitirinahl.
- 515. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 391, No. 332.
 Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Vipula from Kapasigama (Kārpāsigrāma).
- 516. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 392, No. 333.
 Prakrit. Gift of the house-wife (gharini) Sijhā (Śaikshā) from Virōbakaṭa.
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 392, No. 334.
 Prakrit. Gift of Visäkharakhita (Višäkharakshita).
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 392, No. 335.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Visakharakhita (Višākharakshita).
- 1894 Bübler, Ep. Ind. Vol. II. p. 392, No. 336.
 Prakrit. Gift of Virasena.
- 520. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 392, No. 337.

 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Vira, the Tobavanika (inhabitant of Tumbavana).
- 521. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 392, No. 338.
 Prakrit, Gift of Arahatarakhita (Arhadrakshita) from Vedisa (Vidisa).
- 522. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 392, No. 339.
 Prakrit. Gift of Data (Datta) Kalavada from Ved[i*]sa (Viditā). Compare No. 523.
- 523. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 392, No. 840.
 Prakrit. Gift of Data (Data) Kalavada from Vedisa (Vidisa). Compare No. 522.
- 524. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 392, No. 341.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Mohikā from Vedisa (Vidisā).
- 525. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 392, No. 342. Prakrit. Gift of Sakarakhita (Sakarakshita).
- 526. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 392, No. 343.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Saingharakhitä (Saingharakshitä), the Köramikä (inhabitant of Kurama I).
- 527. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 393, No. 344. Prakrit. Fragment. Of Samghá.

- 528. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 393, No. 345. Prakrit. Gift of Samghā, mother of Dāsaka.
- 529. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 393, No. 346. Prakrit. Gift of Satiguta (Saktigupta or Svätigupta).
- 580. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 393, No. 347.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Samana (Śramana), pupil (atēvasin) of Ay-Utara (Árya-Utara).
- 531. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 393, No. 348.
 Prakrit. Gift of Samika (Svāmika), pupil (atēvasin) of Aya-Naga (Ārya-Nāga).
- 532. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 393, No. 349.
 Prakrit, Gift of the musician (? vanika) Samika (Svāmika) and his son Sihadēva
 . (Simhadēva). Compare No. 280.
- 533. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 393, No. 350.
 Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Samikā (Svāmikā).
- 534. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 393, No. 351.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhunt) Sāmikā (Scāmikā).
- 535, 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 393, No. 352.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) [Sä*]midata (Svāmidatta). Compare No. 298.
- 536. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 393, No. 353.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Siridinā (Śridattā), the Nādināgarikā (inhabitaut of Nandinagara). Compare No. 383.
- 537. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 394, No. 354.
 Prakrit. Fragment. [Gift] of Siribhāga (Śribhāga).
- 538. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 394, No. 355.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhunt) Sirimitä (Śrimitrā), the Nādināgarikā (inhabitant of Nandinagara).
- 539. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 394, No. 356. Prakrit. Gift of the nun (bhichhunī) Sirī (Śrī).
- 540. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 394, No. 357. Prakrit. Of Sivati.
- 541. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 394, No. 358, and Plate. Prakrit. Of Sihā (Simhā).
- 542. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 394, No. 359.
 Prakrit. Gift of the nuns (bhichhunt) Sihā (Simhā) and Dēvadatā (Dēvadattā) from Kuraghara (Kuraragriha).
- 543. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 394, No. 360.
 Prakrit. Gift of Sihā (Simhā), Samātikā (Samāptikā?), Vajinikā (Vajriņikā).
- 544. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 394, No. 361.
 Prakrit, Fragment. [Gift] of the wife of Subahita. Compare No. 270.

- 545. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 394, No. 362.

 Prakrit. Gift of Suriyā (Süryā) and (?) Budhadēvā (Buddhadēvā), the Pēmatikā (înhabitant of Pēmata).
- 546. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 395, No. 363.
 Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Suriya (Sūryā).
- 547. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 395, No. 364.
 Prakrit. Gift of Yona (Yavana), the Sētapathiya (inhabitant of Śvētapatha).
- 548. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 395, No. 365.
 Prakrit. Gift of Hālā, the Dakhināji (Dākshinātyā?).
- 549. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 395, No. 366.
 Prakrit. Fragment. Of the family of Ajitiguta (Aditigupta or Ajitigupta).
- 550. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 395, No. 367.
 Prakrit. Fragment. Of Asvadē[vā] (Aśvadēvā) from Sakakachha.
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 395, No. 368.
 Prakrit. Fragment. Of Leva.
- 552. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 395, No. 369.

 Prakrit. Fragment. Gift of . . . the Kurara (inhabitant of Kurara).
- 553. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 395, No. 370. Prakrit. Fragment. Gift of Någila.
- 554. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 395, No. 371.
 Prakrit. Fragment. Only the name Éjávati can be made out.
- 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 395, No. 372.
 Prakrit. Fragment. No name is preserved.
- 556. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 395, No. 373.
 Prakrit, Fragment, Only Kuthupadaka (inhabitant of Kuthupada?) can be read.
- 557. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 895, No. 374.
 Prakrit. Fragment. Gift of the nun (bhikhani) Samghapalitä.
- 558. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 396, No. 375.
 Prakrit. Fragment. Gift of Subhaga, Pusa (Pushya), Nagadata (Nagadatta), Sagharakhita (Samgharakshita), the Koragharakas (inhabitants of Kuraragriha).
- 559. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 396, No. 376. Prakrit. Fragment. Mentions Utară (Uttarā).
- 560. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Scc. Vol. VII. p. 564, No. 37, and Plate XXIII. Prakrit. Gift of Najā, the daughter-in-law of the Tapasiyas, from Ujeni (Ujjayini). Compare No. 219.
- 561. 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 565, No. 43, and Plate XXIII.
 Prakrit. Fragment. Gift of the nun (bhichhunt) . . . dans.

- 562. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 58, No. 9.
 Prakrit. Gift of Dataka (? Dattaka), the Nadinagara (inhabitant of Nandinagara).
- 563. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 59, No. 15.
 Prakrit. Fragment. Gift of some nun ([bhi]chhu[ni]), the Nadanagarikā (inhabitant of Nandinagara).
- 564. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 59, No. 16. Prakrit. Gift of Balaguta (Balagupta).
- 565. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 59, No. 17.
 Přakrit. Gift of Ha. . . (?) from Nadinagara (Nandinagara).
- 566. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 59, No. 19. Prakrit, Fragment. Gift of Pandu (?).
- 567, 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 59, No. 20.

 Prakrit. Gift of Isipiyata (?) from Nadinagara (Nandinagara).
- 568. 1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 59, No. 21. Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Ritall (?).

589-853 Sanchi Buddhist Stupa II. Inscriptions.

- 569. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 280, No. 1, and Plate XXI: 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 396, No. 22.
 Prakrit. Gift of Nagila, pupil (amtēvāsis) of Aya (Ārya).
- 570. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 280, No. 2, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 396, No. 28.

 Prakrit. Fragment. Gift of Ku . . . , pupil (sejha) of Dhamarakhita (Dharmarakhita).
- 571. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 280, No. 3, and Plate XXI; 1892 Maisey, Sánchi and its Remains, p. 102; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 110, No. 1, and Plate. Prakrit. Gift of the village (gāma) of Pādukulikā (Pāndukulikā).
- 572. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 280, No. 4, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 111, No. 2.
 Prakrit. Gift of Budhila (Buddhila), the Bhögavadhanaka (inhabitant of Bhögavardhana).
- 573. 1854 Cunningham, Bhilea Topes, p. 280, No. 5, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II p. 111, No. 3; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 586.
 Prakrit. Gift of Dhamadevà (Dharmadevā), pupil (amtevāsinī) of Mitasiri (Mitrasri).
- 574. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 280, No. 6, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 111, No. 4.
 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Isila (Rishila).
- 575. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 281, No. 7, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 397, No. 24.
 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Saghamita (Sanghamitra).

- 576. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 281, No. 8, and Plate XXI; 1892 Maisey, Sánchi and its Remains, p. 102; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 397, No. 25.
 Prakrit. Gift of the banker (sethin) Budhapālita (Buddhapālita), the Padukulikiya (inhabitant of Pāndukulikā).
- 577. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 281, No. 9, and Plate XXI. Prakrit. Fragment. No name can be made out.
- 578. 1854 Canningham, Bhilsa Topes, p. 281, No. 10, and Plate.

 Prakrit. Gift of Budharakhita (Buddharakshita), the Anammitaka (?).
- 579. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 281, No. 11, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 111, No. 5.
 Prakrit, Gift of the monk (bhikhu) Vijha (Vindhya).
- 580. 1854 Cunningham, Bhilea Topes, p. 281, No. 12, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 111, No. 6.
 Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Yakhila (Yakshila).
- 581. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 281, No. 13, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 111, No. 7.
 Prakrit. Gift of Någapiya (Nägapriya), the banker (sethin) of Achhavada.
- 582. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 281, No. 14, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 111, No. 8; 1894 correction by Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 404, note 23.
 Prakrit. Gift of the nun (bhikhunī) Sapakī (Sarpakī), the Körarī (inhabitant of Kurara).
- 583. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 281, No. 15, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 397, No. 26.
 Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Vala, the Körari (inhabitant of Kurara).
- 584. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 281, No. 16, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 111, No. 9.
 Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Dhamasëna (Dharmasëna), the Korari (inhabitant of Kurara).
- 585. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 282, No. 17, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 111, No. 10.
 Prakrit. A pillar (thabha), the gift of Năgapălită.
- 586. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 282, No. 18, and Plate XXI. Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Phagulā (Phalgulā).
- 587. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 282, No. 19, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 397, No. 27.
 Prakrit, Gift of Balaka, pupil (atēvāsin) of Aya (Ārya) Arahaguta (Arhadgupta), the Sāsādaka (inhabitant of Sāsāda).
- 588. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 282, No. 20, and Plate XXI.

 Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Yamarakhitā (Yamarakshitā).

- 589. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 282, No. 21, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 397, No. 28.
 Prakrit. A pillar (thabha), the gift of Mula (Mula), the female pupil (atēvāsinā) of Gadā.
- 590. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 282, No. 22, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 397, No. 29.
 Prakrit. Fragment. Gift of the nun (bhichhunī) Isidāsi (Rishidāsi), the kada), mother of Sagharakhitā (Samgharakshitā).
- 591. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 282, No. 23, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 397, No. 30.
 Prakrit. Gift of Aya (Arya) Budharakhita (Buddharakshita), the Pokhareyaka (inhabitant of Pushkara).
- 592. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 282 f., No. 24, and Plates XXI and XXXI; 1868 Fergusson, Tree and Serpent Worship, Plate XLII, 1 (Plate only); 1894 correction by Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 407, 408. Prakrit. "Gift of Vinhika (Vrishnika), the Vadyavahanika (inhabitant of Vadyavahana).
- 593. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 283, No. 25, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 111, No. 11.
 Prakrit. A pillar (thabha), the gift of the nun (bhikhuni) Odi. Compare No. 611.
- 594. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 283, No. 26, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 397, No. 31.
 Prakrit. Gift of Tikisa (?) from Sidakada.
- 595. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 283, No. 27, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 397, No. 32.
 Prakrit. Fragment. Gift of , the Sidakādī (inhabitant of Sidakāda).
- 596. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 283, No. 28, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 398, No. 34.
 Prakrit. Gift of Gölä, the S[i*]dakadiyā (inhabitant of Sidakada).
- 597. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 283, No. 29, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 398, No. 33; 1895 referred to by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 214.
 Prakrit. Gift of Budhapālitā (Buddhapālitā), the Sidakadiyā (inhabitant of Sidakada).
- 598. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 283, No. 30, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 112, No. 12.
 Prakrit. Gift of Saghamita (Sainghamitra), the Sonaraka (inhabitant of Sonara).
- 599. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 283, No. 31, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 398, No. 35.
 Prakrit. Gift of Budhagută (Buddhaguptā), the Sēdakadi (inhabitant of Sidakada).

- 600. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 283, No. 32, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ev. Ind. Vol. II. p. 112, No. 13. Prakrit. Gift of Agila (Agnila), the Adhaporika (inhabitant of Ardhapura).
- 601. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 283, No. 33, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 112, No. 14. Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Yasogiri (Yasogiri).
- 602. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 283 f., No. 34, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 398, No. 36. Prakrit. Gift of the monk (blichhu) Arahaka (Arhat), the preacher (bhanaka).
- 603. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 284, No. 35, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 398, No. 37. Prakrit. Gift of Bahula.
- 604. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 284, No. 36, and Plate XXI; 1892 Bülder, Ep. Ind. Vol. II. p. 112, No. 15. Prakrit. [Gift] of Gadā, the Nādināgarikā (inhabitant of Nandinagara).
- 605. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 284, No. 37, and Plate XXI. Prakrit. Fragment. Gift of Idagi . . . (Indragni . . .).
- 606. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 284, No. 38, and Plate XXI; 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 112, No. 16. Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Aya-Naduka (Ārya-Nanduka).
- 607. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 284, No. 39, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 398, No. 38. Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Nagarakhita (Nagarakshita), the Pokhareyaka (inhabitant of Pushkara).
- 608. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 284, No. 40, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 398, No. 39. Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Sagbarakhita (Saingharakshita), the Korara (inhabitant of Kurara).
- 609. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 284, No. 41, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 401, No. 66. Prakrit. Gift of Rohanika, the Udubaraghariya (inhabitant of Udumbaragriha).
- 610. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 284, No. 42, and Plate XXI. Prakrit. Fragment. Gift of the Udubaraghariya (inhabitant of Udumbaragriha).
- 611. 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 284, No. 43, and Plate XXI; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 398, No. 40. Prakrit. A pillar (thabha), the gift of the nun (bhikhuni) Odl. Compare No. 593.
- 612. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 112, No. 17. Prakrit. Gift of Pusarakhita (Pushyarakshita), pupil (atevāsin) of Aya (Ārya).

- 613. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 112, No. 18. Prakrit. Gift of Sihā (Simhā).
- 614. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 112, No. 19.
 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Sumana (Sumanas).
- 615. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 112, No. 20.
 Prakrit. Gift of Dhamaguta (Dharmagupta) and Pusini (Pushyini).
- 616. 1892 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 112, No. 21.
 Prakrit. Gift of Visākha (Vijākha), the Pāḍā[ni]ya (inhabitant of Pāḍāna).
- 617. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 398, No. 41.
 Prakrit. Gift of Aya (Ārya), the Pokhareyaka (inhabitant of Pushkara).
- 618. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 398, No. 42.

 Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Asadēvā (Aśvadēvā).
- 619. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 399, No. 43. Prakrit. Gift of Avasika from Ajanava.
- 620. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 399, No. 44. Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Isidată (Rishidattă).
- 621. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 399, No. 45.
 Prakrit. Gift of the lay-worshipper (upasaka) Idadata (Indradatta).
- 622. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 399, No. 46.
 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Gamdhāra.
- 623. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 399, No. 47.
 Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Gotami (Gautami).
- 624. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 399, No. 48.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Chirati (Kirāti).
- 625. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 399, No. 49.

 Prakrit. Gift of the village (gāma) of Chumvamāragiri(?).
- 626. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 399, No. 50.

 Prakrit. Gift of the Morayahikatiya (inhabitant of Morayahikata).
- 627. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 399, No. 51.

 Prakrit, Gift of the female lay-worshipper (upasikā) Dhamarasiri (Dharmairi).
- 628. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 400, No. 52.

 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Dhamasëna (Dharmasëna).
- 629. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 400, No. 53.

 Prakrit. Gift of the nun (bhikhu[ni*]) Asad[s*]vā (Aivadēvī) from Nadinagara (Nandinagara).

- 630. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 400, No. 54. Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) [Is]imitā (Rishimitrā) from Nadinagara (Nandinagara).
- 631, 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 400, No. 55. Prakrit. Gift of the monk (bhichhu) Namduka (Nanduka).
- 632. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 400, No. 56. Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Pala (Pala).
- 633. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 400, No. 57. Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Badhaka (Baddhaka), the Kurara (inhabitant of Kurara).
- 634. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 400, No. 58. Prakrit. Gift of Budhaguta (Buddhagupta), the Udubaraghariya (inhabitant of Udumbaragrika).
- 635. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 400, No. 59. Prakrit. Gift of Budharakhitaka (Buddharakshitaka), who is versed in the sūtrānta (sutātika), the Arapānaka (inhabitant of Arapāna).
- 636. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 401, No. 60. Prakrit. Fragment. Only the name Budharakhita (Buddharakshita) is legible.
- 637. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 401, No. 61. Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Budharakhita (Buddharakshita).
- 638. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 401, No. 62. Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Budharakhita (Buddharakshita).
- 639. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 401, No. 63. Prakrit. Fragment. Only the name Bodhi is legible.
- 640. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 401, No. 64. Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Bharapabhūti.
- 641. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 401, No. 65. Prakrit. Gift of Bhichhunika (Bhikshunika).
- 642. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 401, No. 67. Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Vipula,
- 643. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 401, No. 68. Prakrit. Gift of Visaka (Viśvaka), the Rohapipadiya (inhabitant of Rohintpada).
- 644. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 401, No. 69. Prakrit. Gift of the Saphineyika, the mother of Sagha (Samgha)
- 645. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 402, No. 70. Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Sonasiri (Śravanairi).

- 646. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 402, No. 71.
 Prakrit. Fragment. Gift of some woman who is called a Sagireyikä (inhabitant of Sagiri).
- 647. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 402, No. 72.

 Prakrit. Fragment. Gift of Kodu, mother of the monk (bhikhu) ra.
- 648. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 402, No. 73.
 Prakrit, Fragment. Gift of [Dha]marakhitā (Dharmarakshitā), female pupil (atēvāsinā) of Koramikā.
- 649. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 402, No. 74.

 Prakrit. Fragment. Gift of the monk (bhichhu) . . . na.
- 650. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 402, No. 75.

 Prakrit. Fragment. Gift of some nun ([bhi]chhuni).
- 651. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 402, No. 76.
 Prakrit. Fragment. Gift of some nun (bhikhuni), a Korari (inhabitant of Kurara).
- 652. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 402, No. 77.
 Prakrit. Fragment. Gift of some monk (bhikhu).
- 653. 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 402, No. 78.
 Prakrit, Fragment, Gift of Dhavadëva (Dharmadëva!).
- 634. Sañchi Stúpa II. relic-box inscription.—1854 Cunningham, Bhilea Topes, p. 286, and Plate XX.
 Prakrit. (Relics) of all teachers (vināyakas), beginning with Ara^o († Arhat)
 Kāsapagota (Kāśyapagōtra) and Ara^o († Arhat)
 Vāchhi-Savijayata (Vātsi-Savijayatā), the teacher (vināyaka).
- 655. Sañchi Stupa II. inscription on steatite box (No. 1), outside lid.—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, pp. 119, 287, and Plate XX; 1905 mentioned by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1905, p. 685.
 Prakrit. (Relics) of the saint (supurisa) Kāsapagota (Kāšyapagotra), the teacher
 - (schariya) of all the Hemavatas (Haimavatas),
- 656. Sanchi Stapa II. inscription on steatite box (No. 1), inside Iid.—1854 Cunningham, Bhilea Topes, pp. 119, 287, and Plate XX; 1905 mentioned by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1905, p. 685.
 Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Majhima (Madhyama).
- 657. Sanchi Stūpa II. inscription on steatite box (No. 1), bottom.—1854 Cunxingham, Bhilsa Topes, pp. 120, 287, and Plate XX; 1905 mentioned by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1905, p. 685.
 Prakrit, (Relies) of the saint (sapurisa) Haritiputa (Haritiputra).
- 658. Sañchi Stupa II. inscription on steatite box (No. 2), outer circle.--1854 Cunningham,
 Bhilsa Topes, p. 288, and Plate XX.

- Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Vachhi (Vātsi?) Savijayata (Suvijayat). the pupil (aterāsin) of Gota (Gaupta).
- 659. Sañchi Stupa II. inscription on steatite box (No. 2), inner circle.-1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 288, and Plate XX. Prakrit. Gift of the Pabhasasahas of Kakanava.
- 660. Sanchi Stupa II. inscription on stestite box (No. 3), outside lid.—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 288, and Plate XX. Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Mahavanaya. (Relics) of the saint (sapurisa) Apagira.
- 661. Sanchi Stupa II. inscription on steatite box (No. 3), inside lid .- 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 288, and Plate XX. Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Kodiniputa (Kaundintputra).
- 662. Sañchi Stupa II. inscription on steatite box (No. 4), outside lid.-1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 288, and Plate XX. Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Kōsikiputa (Kauśikiputra).
- 663. Sanchi Stupa II. inscription on steatite box (No. 4), inside lid.—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 289, and Plate XX. Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Gotiputa (Gauptiputra).
- 664. Sanchi Stupa II. inscription on steatite box (No. 4), bottom.-1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 289, and Plate XX. Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Mogaliputa (Maudgaliputra).
- 665. Sanchi Stupa III. relic-box (No. 1) inscription .- 1854 Canningham, Bhilsa Topes, p. 297, and Plate XXII. Prakrit. (Relics) of Sariputa (Sariputra).
- 666. Sanchi Stupa III. relic-box (No. 2) inscription.—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 297, and Plate XXII. Prakrit. (Relics) of Maha-Mogalana (Maha-Mandgalyayana).
- 667. Sanchi Stapa III. inscription on steatite box (No. 1).-1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 299, and Plate XXII. Only the letter st, which stands for Sariputasa, i.e. (relies) of Sariputa (Sariputra).
- 668. Sañchi Stupa III. inscription on steatite box (No. 2).—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 299, and Plate XXII. Only the letter ma, which stands for Maha-Mogalanasa, i.e. relics of Maha-Mogalana (Mahā-Maudgalyāyana).
- 669. Year 14.- Besnagar Vaishpava column inscription of the time of rajam Kasiputa Bhagabhadra.-1909 Marshall-Bloch; Journ. Roy. As. Soc. 1909, p. 1053 ff., No. A. and Plate I; 1909 Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1909, p. 1087 ff.; 1909 note by Barnett, Journ. Roy. As. Soc. 1909, p. 1098 f.; 1909 Bloch, Zeitsche. Deutsch. Morgenl. Ges. Vel. LXIII. p. 587 ff.; 1910, note by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1910, p. 141 f.; 1910 Bhandackar, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XXIII. p. 104 ff. -vasēna chatudasēna rājēna vadhamānasa.
 - Prakrit. Erection of a garudadhvaja of Va[sude]va, the god of gods, by the bhāgavata (votary of Bhagavat), Hēliodora (Hēliodores), the son of Diya (Dion), the Takhasilaka (native of Takshasila), a Yona (Yasana) ambassador (data), who came from mahārāja Amtalikita (Antalkidas) to rājan Kāsīputa (Kāšīputra) Bhagabhadra, the saviour (trātāra), who was prospering in the fourteenth year of his reign.

- 670. Bësnagar column inscription.—1909 Marshall-Bloch, Journ. Roy. As. Soc. 1909, p. 1053 ff., No. B, and Plate I; 1909 Barnett, Journ. Roy. As. Soc. 1909, p. 1093 f.; 1909 Bloch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. LXIII. p. 587 ff. Prakrit. A verse on the three steps to immortality.
- 671. Bësnagar Buddhist coping stone inscription.—1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 38, and Plate XIII.
 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Pätamäna and the monk (bhikhu) Kumuda.
- 672. Besnagar Buddhist pillar inscription.—1880 Cunningham, Arch. Surc. Rep. Vol. X. p. 39, and Plate XIII.
 Prakrit, Fragment, (Gift) of [A]jamita (Ajamitra).
- 673. Besnagar Buddhist rail inscription,—1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 30, and Plate XIII.
 Prakrit. Gift of the monk (bhikhu) Dhamagiri (Dharmagiri).
- 674. Bēsnagar Buddhist rail inscription.—1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 39, and Plate XIII.
 Prakrit. Gift of the nun (pavajitā) Nadikā (Nandikā).
- 675. Besnagar Buddhist rail inscription.—1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 39, and Plate XIII.
 Only the figures 30 3.
- 676. Bhojpur Stüpa IV. earthen bowl inscription.—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 333, and Plate XXVI.
 Only the letter mu°.
- 677. Bhöjpur Stüpa VII. inscription on earthen jar (No. 1).—1854 Cunningham, Bhilea Topes, p. 335 f., and Plate XXVII, 4.
 Prakrit. Patitō (?).
- 678. Bhöjpur Stüpa VII. inscription on earthen jar (No. 2).—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 336, and Plate XXVII, 5.
 Prakrit. (Relics) of Upahitaka
- 679. Andher Stüpa I. rail inscription.—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 344, and Plate XXVIII, 3.
 Prakrit. Gift of the mother of Dhamasiva (Dharmasiva).
- 680. Andher Stüpa II. earthen jar inscription.—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 346, and Plate XXIX, 6.
 Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Vächhiputa (Vätsiputra), pupil (atēcāsin), of Gotiputa (Gauptiputra).
- 681. Andher Stüpa II. inscription on steatite box (No. 1).—1854 Cunningham, Bhilsa Topss, p. 347, and Plate XXIX, 7; 1888 Fleet, Corp. Inscr. Ind. Vol. III. p. 31.
 Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Gotiputa (Gauptiputra) of the Kodiña (Kaundinya) götra (gota), who illumined (7 pabhāsana) Kākanāva.
- 682. Andher Stūpa II. inscription on steatite vase (No. 2).—1854 Cunningham, Bhilso Topes, p. 347, and Plate XXIX, 8 and 9; 1906 Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1906, p. 155.
 - Prakrit. (Relies) of the saint (sapurisa) Mogaliputa (Maudgaliputra), the pupil (atēvāsin) of Gotiputa (Gauptiputra).

- 683. Andher Stüpa III. inscription on steatite casket, outside.—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 349, and Plate XXX.
 Prakrit. (Relics) of the saint (sapurisa) Hăritiputa (Hāritiputra).
- 684. Andher Stūpa III. inscription on steatite casket, inside.—1854 Cunningham, Bhilsa Topes, p. 349, and Plate XXX.
 Prakrit. Gift of Asadēva (Aśvadēva).
- 685. Pākna-Bihār Buddhist stone-slab inscription.—1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XI. p. 32 f., and Plate XII, 11.
 Sanskrit. Fragment. Mentions a mahārāja dēvaputra, the figure 30 (?), Hastika, the son of Hastika, and Bodhisatva (Bōdhisattva) dēvaputraka.
- 686. Khairigarh (now Lucknow Provincial Museum) horse image inscription.—1893 Smith, Journ. Roy. As. Soc. 1893, p. 98, and Plate. Prakrit. Fragment. Gift of ddagutta ([Samu]dragupta?).
- 687. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham-Rajendralala Mitra-Bühler, Stüpa of Bharhut, p. 128 f., No. 1, and Plates XII and LIII; 1880 Rajendralala Mitra, Proceed. Beng. As. Soc. 1880, p. 58 ff.; 1885 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XIV. p. 138 f., and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 60, No. 1; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 227, No. 1.
 - Prakrit. Erection of gateway (tōraṇa) and stone-work (silākaṁmaṁta) by Dhanabhūti Vāchhiputa (the son of a Vātsī), the son of Āgaraju (Aṅgāradyut) Gotiputa (the son of a Gauptī), the graudson of rōjan Visadēva (Viśvadēva) Gāgīputa (the son of a Gārgī), during the reign of the Sugas (Śuṅgas).
- 688. Bharaut (now Batanmara) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stupu of Bharhut, p. 128, No. 2, and Plate LIII.
 Prakrit. Fragment. Records the erection of a gateway (torana) during the reign of the S[u]gas (Sungas). Of the names only that of Agaraju (Angaradyut) is preserved.
- 689. Bharaut (now Batanmara) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 128, No. 3, and Plate LIII.
 Prakrit. Fragment. Records the erection of a gateway (tōrana).
- 690. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 130, No. 1, and Plates XII and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 60, No. 2, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 227, No. 2. Prakrit. Gift of Aya-Nāgadēva (Ārya-Nāgadēva).
- 691. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 79; 130, No. 2, and Plates XLVIII and LIII; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 119 f., No. 5; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 60, No. 3, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 227, No. 3. Prakrit. The Maghādēviya jataka (jūtaka which treats of Makhādēva). See Jāt.

No. 9.

- 692. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 97; 130, No. 3, and Plates XLVIII and LIII; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 120, No. 6; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 60, No. 4, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 227, No. 4.
 - Prakrit. Dighatapasi (Dirghatapasvin) instructs his pupils.
- 693. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 94; 130, No. 4, and Plates XLVIII and LIII; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 120, No. 7; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 61, No. 5, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 227, No. 5.

Prakrit. The chātiya (chaitya) on Aboda (Arbuda).

694. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1879
Cunningham, Stûpa of Bharhut, p. 77; 130, No. 5, and Plates XLVII and LIII;
1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 61, No. 6, and Plate;
1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXL p. 227, No. 6.

Perkeit The intake (intake) (certified) (the mod Spints (Suinta)). See Tet No.

Prakrit. The jataka (jātaka) (entitled) 'the mad Sujata (Sujāta)'. See Jat. No. 352.

- 695. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupe of Bharhut, p. 77; 130, No. 6, and Plates XLVII and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 61, No. 7, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 227, No. 7; 1897 Jataka transl. under Cowell, Vol. III. (Plate only). Prakrit. The cat jatara(ka) (jataka), (or) the cock jataka (jataka). See Jat. No. 383.
- 696. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1879 Cunningham, Ståpa of Bharhut, p. 94; 130, No. 7, and Plates XLVII and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 61, No. 8, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 227, No. 8. Prakrit. The walk (chakama) Dadanikama (Dandanishkrama 7).
- 697. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 96; 130, No. 8, and Plates XLVII and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 61, No. 9, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 228, No. 9. Prakrit. The woman Asada (Ashāḍhā) who has observed the jackals on the cemetery.
- 698. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p 75; 131, No. 9, and Plates XLIII and LIII; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 118, note 2; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 61, No. 10, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 228, No. 10. Prakrit. The jataka (jātaka) (called) the riéya deer. See Jāt, No. 12.
- 699. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 94; 131, No. 10, and Plates XLIII and LIII; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 118 f., No. 1; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch.

Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 61, No. 11, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXL p. 228, No. 11.

Prakrit. The Migasamadaka (Mrigasammodaka ?) chētaya (chaitya).

- 700. Bharaut Buddhist coping-stone inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 69; 131, No. 11, and Plates XXVII and LIII; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 239, No. 158. Prakrit. The swan jataka (jātaka). See Jāt. No. 32.
- 701. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.-1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stupe of Bharhut, p. 69 f.; 131, No. 12, and Plates XXVII and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch, Morgent. Ges. Vol. XI. p. 61, No. 12, and Plate; 1890 Warren, Two Bas-Reliefs of the Stupa of Bharhut, pp. 8 ff.; 1892 Hultzsch Ind. Ant. Vol. XXI. p. 228, No. 12. Prakrit. The Kimnara jataka. See Jat. No. 504.
- 702. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 112; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut; p. 93 f.; 131, No. 13, and Plate LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgeni. Ges. Vol. XL. p. 61, No. 13, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 228, No. 13. Prakrit. The assembly of the ascetics (jatila).
- 703. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.-1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 75; 131, No. 14, and Plates XLVI and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 61, No. 14, and Plate; 1890 Warren, Two Bas-Reliefs of the Stupe of Bharhut, pp. 14 ff.; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 228, No. 14. Prakrit. The otter jataka (jataka). See Jat. No. 400.
- 704. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.-1874 Cunningham, Proceed. Bong. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 76; 131, No. 15, and Plates XLVI and LIII; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 119, No. 4; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 62, No. 15, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 228, No. 15. Prakrit. The student jataka. See Jat. No. 174.
- 705. Bharaut (now Indian Museum, Caloutta) Buddhist coping-stone inscription.-1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 131, No. 16, and Plate LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 62, No. 16; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 228, No. 16.

Prakrit. Gift of the town (nigama) of Karahakats.

706. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 112; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 79; 131, No. 17, and Plates XLVIII and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgonl. Ges. Vol. XL. p. 62, No. 17, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 228, No. 17. Prakrit. The jataka (jātaka) which treats of the stealing of the lotus-fibres. See

Jat. No. 488.

See Jat. No. 539.

- 707. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 98; 131, No. 18, and Plates XLVIII and LIII; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 120 f., No. 8; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 62, No. 18, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 228, No. 18.
 Prakrit. Veduka milks katha (f) on Mount Nadoda.
- 708. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1879 Cunningham, Stúpa of Bharhut, p. 98; 131, No. 19, and Plates XLVIII and LIII; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 121, No. 9; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 62, No. 19, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 228, No. 19.

 Prakrit. The Jamba on Mount Nadoda.
- 709. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 113; 1874 Beal, Academy, Vol. VI. p. 612; 1879 Cunningham, Stûpa of Bharhut, p. 95; 131, No. 20, and Plates XLIV and LIII; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 119, No. 2; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 62, No. 20, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 228, No. 20.

 Prakrit. The arrow-maker. King (rājan) Janaka. Queen (dēvī) Sivalā (Sivalā).
- 710. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription—1874
 Beal, Academy, Vol. VI. p. 612 (comp. Fergusson, ibid., p. 637, note); 1879
 Cunningham, Stupa of Bharbut, p. 94 f.; 131, No. 21, and Plates XLV and LIII;
 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 119, No. 3; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch.
 Morgent. Ges. Vol. XL. p. 63, No. 21, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol.
 XXI. p. 229, No. 21.
 Prakrit. The Chitupada (Chittotpada or Chitrotpata 1) rock.
- 711. Bharaut Buddhist coping-stone inscription.—1879 Cunningham, Stûpa of Bharhut, p. 131, No. 22, and Plate LIII.
 Prakrit. Fragment. Dusita gives Mount Na[doda] (?). Compare No. 901.
- 712. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 132, No. 1, and Plates XII and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 63, No. 22, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol XXI. p. 229, No. 22.
 Prakrit. Gift of the first pillar (thabha) by Chāpadāvā. wife of Rēvatimita (Rēvatimitra) from Vedisa (Vidišā).
- 713. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 132, No. 2, and Plate LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 63, No. 23, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 229, No. 23.
 Prakrit. Gift of the bhadainta Aya-Bhutarakhita (Arya-Bhutarakshita), the Khujatidukiya (inhabitant of Kubjatinduka).
- 714. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 132, No. 3, and Plates XXIX and LIII; 1886 Hultzsch,

Zeitschr. Deutsch. Morgenl, Ges. Vol. XL. p. 63, No. 24, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 229, No. 24.

Prakrit. The Sala, the bodhi of the holy (bhagavat) Vesabhu (Viśvobhū).

- 715. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 132, No. 4, and Plate LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent Ges. Vol. XL. p. 63, No. 25, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 229, No. 25.
 Prakrit, A pillar (thabha), the gift of Aya-Görakhita (Arva-Görakshita).
- 716. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 182, No. 5, and Plates XXIII and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 63, No. 26 (first part), and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 229, No. 26 (first part).
 Prakrit. A pillar (thambha), the gift of Aya-Pamthaka (Ārya-Pānthaka).
- 717. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 22; 132, No. 6, and Plates XXIII and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 63, No. 26 (second part), and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 229, No. 26 (second part).
 Prakrit. The goddess Chulakōkā (Kshudrakōkā).
- 718. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 132, No. 7, and Plate LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 63, No. 27, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 229, No. 27.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhunt) Badhikā (Baddhikā), daughter of Mahamukhi (Mahāmukha), the Dabhinikā (inhabitant of Darbhina I).
- 719. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 132, No. 8, and Plate LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 63, No. 28, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 229, No. 28.
 Prakrit. Gift of Nägasënä, the Kodiyāni, from Pātaliputa (Pātaliputra).
- 720. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut, p. 132, No. 9, and Plate LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl, Ges. Vol. XL. p. 64, No. 29, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 229, No. 29.
 Prakrit. Gift of the pun (bhikhuni) Samanā (Śramanā), the Chudathlikā (inhabitant)
 - Prakrit. Gift of the nun (bhikhunī) Samanā (Śramanā), the Chudaṭhīlikā (inhabitant of Chudaṭhīla).
- 721. Bharaut Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 132, No. 10, and Plate Lill.
 Prakrit. A pillar (thabha), (the gift) of Anamda (Ananda), son of Isirakhita (Rishirakhita), in Bahadagojatiranatana (?).
- 722. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 114; 132, No. 11, and Plates XXIX and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch.

Morgeni. Ges. Vol. XL. p. 64, No. 30, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 229, No. 30.

Prakrit. The bodhi of the holy (bhagavat) Konagamena (Konagamana).

- 723. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 133, No. 12, and Plate LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 64, No. 31, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 229, No. 31.
 - Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Diganagā (Dinnāgā), the Bhojakaṭakā (inhabitant of Bhojakaṭa).
- 724. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 52; 133, No. 13, and Plates XXV and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 64, No. 32; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 32; 1895 Jātaka transl. under Cowell, Vol. II. (Plate only).
 Prakrit. The elephant jātaka. See Jāt. No. 267.
- 725. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stapa of Bharhut, p. 133, No. 14, and Plate LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 64, No. 33, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 33.

Prakrit. Gift of the householder (gahapati) Budhi (Buddhi) from Bibikanadikata (Bimbikanandikata).

- 726. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 20; 133, No. 15, and Plate LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 64, No. 34, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 34.
 Prakrit. The yakha (yaksha) Supāvasa (Suprāerisha?).
- 727. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut, p. 133, No. 16, and Plate LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 64, No. 35, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 35.
 Prakrit. A pillar (thabha), the gift of Dhamaguta (Dharmagupta).
- 728. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 133, No. 17, and Plate LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgeni. Ges. Vol. XL. p. 64, No. 36, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 36.
 Prakrit. Gift of the trooper (asavārika) Suladha (Sulabdha) from Bibikanadikata

(Bimbikanandikaja).

729. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpu of Bharhut, p. 133, No. 18, and Plates XXV and Lill; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XI. p. 64, No. 37 (first part), and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 37 (first part).
Prakrit. A pillar (thambha), the gift of Pusa (Pushya).

- 730. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 51 f.; 133, No. 19, and Plates XXV and LHI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 64. No. 37 (second part), and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 37 (second part).
 Prakrit. The antelope jātaka. See Jāt. No. 482.
- 731. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1874 Childers, Academy, Vol. VI. p. 586; 612; 1875 note by Childers-de Zoysa, Academy, Vol. VII. p. 454 f.; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 84; 133, No. 20, and Plates XXVIII, LIII and LVII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 64, No. 38, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 38; 1898 correction by Bloch, Journ. Beng. As. Soc. Vol. LXVII. Part I. p. 285.

Prakrit. Anādhapedika (Anāthapindika) gives Jētavana, having bought it by a layer of crores.

- 782. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 116; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 85; 133, No. 21, and Plate XXVIII, LIII and LVII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 65, No. 39, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 39; 1898 note by Bloch, Journ. Beng. As. Soc. Vol. LXVII. Part I. p. 285 f.

 Prakrit. The Kösambakuți (Kaušāmbakuți).
- 733. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 116; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 85; 133, No. 22, and Plates XXVIII, LIII and LVII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 65, No. 40, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 40; 1898 note by Bloch, Journ. Beng. As. Soc. Vol. LXVII. Part I. p. 286.

 Prakrit. The Gamdhakuți.
- 734. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 133, No. 23, and Plates XXI and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 65, No. 41, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 41.
 Prakrit. Gift of Dhamarakhita (Dharmarakshita).
- 735. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1874 Canningham, Proceed. Bengal. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stûpa of Bharhut, p. 26; 133, No. 24, and Plates XXI and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 65, No. 42, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 42.
 Prakrit. The king of serpents (nāgarājan) Chakavāka (Ohakravāka.)
- 736. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 20; 134, No. 25, and Plate LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 65, No. 43, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 43.

Prakrit. The yakha (yaksha) Virudaka (Virudhaka).

- 737. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 20; 134, No. 26, and Plates XXI and LIII; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 65, No. 44, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 44.
 Prakrit, The yakha (yaksha) Gamgita.
- 738. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 134, No. 27, and Plates XIV and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 259, No. 17, and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Dentsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 65, No. 45, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 230, No. 45.
 Prakrit. Gift of Aya-Isidina (Ārya-Rishidatta), the preacher (bhānaka).
- 739. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 45; 115; 120; 127; 134, No. 28, and Plates XIII and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 255 f., No. 11, and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 65, No. 46, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 231, No. 46; 1892 Cunningham, Mahabodhi, Plate III (Plate only).

 Prakrit. The bödha (bödhi) of the holy (bhagavat) Sakamuni (Sakyamuni).
- 740. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stûpa of Bharhut, p. 134, No. 29, and Plates XIII, XIV and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 256 f., No. 12*, and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 65, No. 47, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 231, No. 47; 1892 Cunningham, Mahdbodhi, Plate III (Plate only). Prakrit. In the eastern quarter the Sudhāvāsa (Suddhāvāsa) gods.
- 741. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 134, No. 30, and Plates XIII, XIV and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 256 f., No. 125, and Plate; 1886 Hultzsch. Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 65, No. 48, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 231, No. 48; 1892 Cunningham, Mahábodhi, Plate III (Plate only).
 Prakrit. In the northern quarter three covered heads (?).
- 742. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 134, No. 31, and Plates XV and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 257, No. 13, and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 65, No. 49, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 231, No. 49.
 Prakrit. In the southern quarter six thousand Kämävacharas.
- 743. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharbut, p. 29; 134, No. 32, and Plates XV and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 257 f., No. 14, and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 66, No. 50, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 231, No. 50.

Prakrit. The music of the gods, which gladdens (?) by acting (?).

- 744. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 29; 134, No. 33, and Plates XV and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 258, No. 15*, and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 66, No. 51, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 231, No. 51. Prakrit. The achharā (apsaras) Misakö(kè)sī (Miśrakēši).
- 745. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1874 Cunning-ham, Proceed. Bong. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 29; 134, No. 34, and Plates XV and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 258, No. 154; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 66, No. 52; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 231, No. 52.
 Prakrit. The achharā (apsoras) Sabhadā (Subhadrā).
- 746. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 29; 134, No. 35, and Plates XV and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 258, No. 15°, and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 66, No. 53; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 231, No. 53.
 Prakrit. The achharā (apsaras) Padumāvati (Padmāvati).
- 747. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 29; 134, No. 36, and Plates XV and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 258, No. 15⁵, and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 66, No. 54; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 231, No. 54.
 Prakrit. The achharā (apsaras) Alambusā (Alambushā).
- 748. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 134, No. 37, and Plates XIV and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 259, No. 18, and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 66, No. 55, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 231, No. 55.
 Prakrit. Kamdariki (Kandariki).
- 749. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 134, No. 38, and Plates XV and LIV; 1882 Hoernle, Ind. Ant. Vol. XI. p. 26 f., No. 21; 1882 Beal, Ind. Ant. Vol. XI. p. 146; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 66, No. 56, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 231, No. 56.
 Prakrit. The vijādhara (vidyādhara) Vijapi (Vidyāvis).
- 750. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 11; 90; 110; 134, No. 39, and Plates XIII and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 255, No. 10*, and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 66, No. 57, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 232, No. 57.

Prakrit. The wheel of the Law (dhamachaka) of Bhagavat,

- 751. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 90; 111; 134, No. 40, and Plates XIII and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 255, No. 10^b, and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 66, No. 58, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 232, No. 58.
 - Prakrit. King (rājan) Pasēnaji (Prasēnajit), the Kosala.
- 752. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 134, No. 41, and Plates XIV, XV, XXX and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 258 f., No. 168, and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 67, No. 59, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI, p. 232, No. 59.

Prakrit, The king of serpents (nagarajan) Erapata (Airavata).

- 753. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1874 Childers, Academy, Vol. VI. p. 586; 1874 note by Beal, Academy, Vol. VI. p. 612; 1874 note by Fergusson, Academy, Vol. VI. p. 637; 1875 note by Childers-de Zoysa, Academy, Vol. VII. p. 351; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 11; 27; 135, No. 42, and Plates XIV and LIV; 1881 Hoernle, Ind. Ant. Vol. X. p. 258, No. 16*, and Plate; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 67, No. 60, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 232, No. 60.
 - Prakrit. The king of serpents (nagarajan) Erapata (Airavata) worships Bhagarat.
- 754. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharlat, p. 115; 135, No. 43, and Plates XV, XXX and LIV; 1882 Hoernle, Ind. Ant. Vol. XI, p. 26, No. 20; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XI. p. 67, No. 61, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 232, No. 61.
 Prakrit. The (banyan tree) Bahuhathika (Bahuhastika).
- 755. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 45; 115; 135, No. 44 and Plates XV, XXX and LIV; 1882 Hoemle, Ind. Ant. Vol. XI. p. 25 f., No. 19^a; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 67, No. 62, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 232, No. 62.

Prakrit. The banyan tree Babuhathika (Bahuhastika) on Nadoda.

- 756. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 135, No. 45, and Plates XV, XXX and LIV; 1882 Hoernle, Ind. Ant. Vol. XI. p. 25 f., No. 19^b; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XI. p. 67, No. 63, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 232, No. 63.
 - Prakrit. Susupāla (Šišupāla), the Kodāya (Ködya?). The gardener (arāmaka) Veduka.
- 757. Bharant Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 185, No. 46, and Plate LIV.
 Prakrit. Fragment. Contains the name of Yasika (Yasar).

- 758. Bharaut Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stapa of Bharhut, p. 135, No. 47, and Plate LIV.
 Prakrit, A pillar (thabha), the gift of Sonā (Śravanā).
- 759. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 135, No. 48, and Plate LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 67, No. 64 (first part), and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 232, No. 64 (first part).
 Prakrit. A pillar (thabha), the gift of Saghamita (Sainghamitra), the Chekulana (inhabitant of Ohikulana).
- 760. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 45; 114; 135, No. 49, and Plates XXX and LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgeni. Ges. Vol. XL. p. 67, No. 64 (second part), and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 232, No. 64 (second part). Prakrit. The bödhi of the holy (bhagavat) Kasapa (Kāiyapa).
- 761. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 135, No. 50, and Plate LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Dentsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 67, No. 65, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 232, No. 65.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhunt) Nägä.
- 762. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 135, No. 51, and Plate LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 67, No. 66, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 232, No. 66.
 Prakrit. A pillar (thabha), the gift of bhadainta Valaka, the preacher (bhanaka).
- 763. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 135, No. 52, and Plate LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 67, No. 67, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 232, No. 67.
 Prakrit. A pillar (thabha), the gift of Aya-Bhutaka (Ārya-Bhūtaka) from Karahakata.
- 764. Bharaut Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 135, No. 53, and Plate LIV; 1886 mentioned by Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 59; 1892 mentioned by Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 225. Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Dhamarakhita (Dharmarakshitā), the Vēnuvagāmiyā (inhabitant of Vēnukagrāma 1), the Kosabeyekā (native of Kausāmbi).
- 765. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 83; 135 f., No. 54, and Plates XXVIII and LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 68, No. 68, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 233, No. 68.
 Prakrit. The walk (chakama) Tikotika (Trikotika).
- 766. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunning-ham, Ståpa of Bharhut, p. 186, No. 55, and Plates XXXII and LIV; 1886 Hultzsch,

Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 68, No. 69, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238, No. 69.

Prakrit. A pillar (thabba), the gift of bhadata (bhadanta) Mahila.

767. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut, p. 136, No. 56, and Plate LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 68, No. 70, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 233, No. 70.

Prakrit. A pillar (thabba), the gift of Samika (Syāmaka) from Karahakata.

768. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunning-ham, Stepa of Bharhut, p. 136, No. 57, and Plate LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 68, No. 71, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 233, No. 71.

Prakrit. A pillar (thabha), the gift of bhadata (bhadanta) Samaka (Syāmaka).

769. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 53; 136, No. 58, and Plates XXV and LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 68, No. 72, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 233, No. 72.

Prakrit. The jātaka which treats of the market towns. See Jāt. No. 546.

- 770. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 20; 22; 136, No. 59, and Plates XXIII and LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent Ges. Vol. XII. p. 68, No. 73, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 283, No. 73.
 Prakrit. The goddess Sirimā (Śrimati).
- 771. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1874 correction by Childers, Academy, Vol. VI. p. 586; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 20; 136, No. 60, and Plates XXII and LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 68, No. 74, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 283, No. 74. Prakrit. The yakha (yaksha) Suchiloma (Süchiloman).
- 772. Bharaut (now Indian Museum, Calentta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunning-ham, Stúpa of Bharhut, p. 136, No. 61, and Plates XXII and LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 68, No. 75, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 233, No. 75.
 Prakrit. Fragment. A pillar (thabha), the gift of some nun (bhikhunf).
- 773. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.— 1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 136, No. 62, and Plates XVI and LIV; 1882 Hoernle, Ind. Ant. Vol. XI. p. 29, No. 24; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XI. p. 68, No. 76, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 233, No. 76. Prakrit Gift of bhadata (bhadanta) Aya-Isipālita (Ārya-Ŗishipālita), the prencher (bhānaka), the overseer of works (navakamika).

- 774. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 112; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 90; 136, No. 63, and Plates XVI and LIV; 1882 Hoernle, Ind. Ant. Vol. XI. p. 27, No. 22; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 68, No. 77, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 233, No. 77.
 Prakrit. Ajātasata (Ajātasatru) worships Bhagavat.
- 775. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 112; 1875 correction by Childers-deZoysa, Academy, Vol. VII. p. 454; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 109; 136 f., No. 64, and Plates XVI and LIV; 1882 Hoernle, Ind. Ant. Vol. XI. p. 29 ff., No. 25^a; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 68, No. 78, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 233, No. 78.
 Prakrit. The hall of the gods Sudhammå (Sudharmā). The festival of the hair-lock of Bhagavat.
- 776. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunning-ham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 113; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 109; 137, No. 65, and Plates XVI and LIV; 1882 Hoernle, Ind. Ant. Vol. XI. p. 29 ff. No. 25^b; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 69, No. 79, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 233, No. 79. Prakrit. The palace (pāsāda) Vējayamta (Vaijayanta).
- 777. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 113; 137, No. 66, and Plates XVI and LIV; 1882
 Hoerale, Ind. Ant. Vol. XI. p. 27 ff., No. 23; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch.
 Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 69, No. 80, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol.
 XXI. p. 233, No. 80.
 Prakrit. The angel (decaputa) Arabaguta (Arhadgupta) having descended announces
 - Prakrit. The angel (devaputa) Arahaguta (Arhadgupta) having descended announces the conception of Bhagavat to the great assembly.
- 778. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 137, No. 67, and Plate LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 69, No. 81 (first part), and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 81 (first part).
 - Prakrit. Pillars (thabhas), the gift of the nun (bhikhuni) Nagila from Moragiri (Mayuraguri).
- 779. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stûpa of Bharhut, p. 46; 113; 137, No. 68, and Plates XXIX and LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgeni. Ges. Vol. XL. p. 69, No. 81 (second part), and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 81 (second part). Prakrit. The bödhi of holy (bhagavat) Vipasi (Vipasyin).
- 780. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut, p. 137, No. 69, and Plate LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 69, No. 82, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 82.

Prakrit. The gift of Phagudeva (Phalgudeva) from Vedisa (Vidisa).

- 781. Bharaut Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 137. No. 70, and Plate LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl, Ges. Vol. XL. p. 59 f.; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 232, note 43. Prakrit. The dhenachhaka (?) at the foot of [Na]doda. Compare No. 791.
- 782. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.-1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 137, No. 71, and Plate LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 69, No. 83, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 83. Prakrit. The gift of the donors (?) (dayakas) from Purika.
- 783. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.-1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 46; 114; 137, No. 72, and Plates XXIX and LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 69, No. 84, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 84. Prakrit. The bodhi of holy (bhagavat) Kakusadha (Kakutsaindha).
- 784. Bharant (now Indian Museum, Calcatta) Buddhist pillar inscription .- 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 137, No. 73, and Plate LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 70, No. 85 (first part), and Plate; 1892 Hultzsch. Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 85 (first part). Prakrit. The gift of Anuradha from Vedisa (Vidisa).
- 785. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddbist pillar inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 115; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 61 ff.; 137, No. 74, and Plates XXVI and LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 70, No. 85 (second part), and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 85 (second part). Prakrit. The jataka which treats of (the elephant) with the six tusks. See Jat. No. 514.
- 786. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription .- 1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 112; 1879 Cunningham, Stupe of Bharhut, p. 79 ff.; 137, No. 75, and Plates XVIII and LIV; 1882 Hoernle, Ind. Ant. Vol. XI. p. 31 f., No. 26; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 70, No. 86, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI, p. 234, No. 86. Prakrit. The Vitura-Punakiya jataka (jātaka which treats of Vidura and Pūrnaka). See Jat. No. 545.
- 787. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.-1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, Plate XIX (Plate only); 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 76, No. 154 · 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 239, No. 154. Prakrit. Fragment. Gift of . . . mika,
- 788. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.-1879 Cunningham, Stupe of Bharhut, p. 137, No. 76, and Plates XIX and LIV; 1886 Hultzsch. Zeilschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 70, No. 87, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 87.

Prakrit. The young Brahman (mānavaka) Bramhadēva (Brahmadēva).

- 789. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-bam, Stüpa of Bharhut, p. 137, No. 77, and Plates XXIII and LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 70, No. 88, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 88.
 - Prakrit. A pillar (thabha), the gift of bhadata (bhadanta) Kanaka, the preacher (bhanaka), the Chikulaniya (inhabitant of Chikulana).
- 790. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunning-bam, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 20; 137, No. 78, and Plates XXIII and LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 70, No. 89, and Plate; 1892 Hultszch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 89.

Prakrit. The yakhini (yakshi) Sudasana (Sudariana).

- -791. Bharant Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 137, No. 79, and Plate LIV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 59 f.; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 232, note 43.
 Prakrit. The dhenachhaka (?) at the foot of Nadoda. Compare No. 781.
- 792. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 138, No. 80, and Plates XXII and LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL, p. 70, No. 90, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 90.

Prakrit. A pillar (thabha), the gift of bhadata (bhadanta) Budharakhita (Buddharakhita), the satupadāna (1).

- 793. Bharaut (new Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 20; 138, No. 81, and Plates XXII and LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 70, No. 91, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 91.
 Prakrit. The yakhī (yakshī) Chadā (Chandrā).
- 794. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stúpa of Bharhut, p. 20; 138, No. 82, and Plates XXII and LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL, p. 70, No. 92, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 92.
 Prakrit. The yakha (yaksha) Kupira (Kubēra).
- 795. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 111; 1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 20; 138, No. 83, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XI. p. 70, No. 93, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 234, No. 93.
 Prakrit. The yakha (yaksha) Ajakālaka.
- 796. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 138, No. 84, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 70, No. 94, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 235, No. 94.

Prakrit. Pillars (thabhas), the gift of Pusa (Pushya) from Moragiri (Mayaragiri).

- 797. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut, p. 138, No. 85, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 70, No. 95, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 235, No. 95.
 - Prakrit. The gift of Aya-Chula (Arya-Kshudra), who is versed in the sutrantas (sutaintika), the Bhogavadhaniya (inhabitant of Bhogavardhana).
- 798. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut, p. 138, No. 86, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 71, No. 96, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 235, No. 96.
 - Prakrit. Pillars (thabhas), the gift of Thupadasa (Stūpadāsa) from Mōragiri (Mayūragiri).
- 799. Bharaut Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stûpa of Bharhut, p. 138, No. 87, and Plate LV; 1886 mentioned by Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 59; 1892 mentioned by Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 225.

 Prakrit. A pillar (thabha), the gift of Gorakhiti (Görakshitā), wife of Vasuka, from Nāsika.
- 800. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut, p. 138, No. 88, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 71, No. 97, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 235, No. 97.
 - Prakrit. A pillar (thabha), the gift of Aya-Sāmaka (Arya-Syāmaka), the pupil (amtēvāsin) of Mahava.
- 801. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1874 Canningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 112; 1879 Cunningham, Stúpa of Bharhut, p. 83; 138, No. 89. and Plates XXVIII and LV; 1880 Davids, Buddhist Birth Stories, p. CIII.; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgeal. Ges. Vol. XL. p. 71, No. 98, and Plate; 1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 65, note 3; 1892. Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 235, No. 98.
 Prakrit. The descent of Bhagavat.
- S02. Bharaut Buddhist pillar (?) inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 64, and Plate XXVI; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 239, No. 156. Prakrit. The Isisimgiya jātaka (jātaka which treats of Risyasringa). See Jāt. No. 526.
- 803. Bharaut (now Batanmara) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 138, No. 90, and Plate LV.
 Prakrit. A pillar (thabha), the gift of Sakā (Śakrā).
- 804. Bharaut (now Batanmara) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 138, No. 91, and Plate LV; 1886 mentioned by Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 59; 1892 mentioned by Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 225.
 - Prakrit. A pillar (thabha), the gift of the preacher (bhānaka) Nadagiri (Nandagiri), the Selapuraka (inhabitant of Sailapura).
- 805. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunnungham, Stupe of Bharhut, p. 88; 138, No. 92, and Plates XXVIII and LV;

1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 71, No. 99, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 235, No. 99.

Prakrit. The Idasāla (Indratāla) cave.

- 806. Bharaut (now Batanmara) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 188, No. 93, and Plate LV.

 Prakrit. (Gift) of the nun (bhichhuni) Pusadatā (Pushyadattā), the Nagarikā (inhabitant of Nagara).
- 807. Bharaut (now Batanmara) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 58; 138, No. 94, and Plates XXV and LV; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 239, No. 155.
 Prakrit. The jataka which treats of the dumb cripple. See Jat. No. 538.
- 808. Bharaut (now Batanmara) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 139, No. 95, and Plate LV; 1886 mentioned by Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 59; 1892 mentioned by Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 225.
 Prakrit. Gift of Jitamita (Jitamitra) from Möragiri (Mayüragiri).
- 809. Bharaut (now Batanmara) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stápa of Bharhut, p. 139, No. 96, and Plate LV; 1886 mentioned by Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 59; 1892 mentioned by Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 225.
 Prakrit. A pillar (thabha), the gift of Utaragidhika (Uttaragridhraka) from Karahakata.
- 810. Bharaut (now Pataors) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 66; 139, No. 97, and Plates XXVI and LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 76, No. 155; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 239, No. 157.
 Prakrit. The jataka (jātaka) 'Because the Brahman (bramhana) played.' See Jāt. No. 62.
- 811. Bharaut (now Pataora) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stapa of Bharhut, p. 22, note 4; 139, No. 98, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XI. p. 60; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 229, note 27. Prakrit. The goddess Mahakökä (Mahākökā).
- 812. Bharaut (now Pataora) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 139, No. 99, and Plate LV.
 Prakrit. Gift of Chuladhaka (Kshudra ?), the distributor of food (bhatudš-saka), from Purikā.
- 813. Bharaut (now Pataora) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 139, No. 100, and Plate LV; 1886 mentioned by Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 59; 1892 mentioned by Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 225.
 Prakrit. Gift of Ayamā from Vedisa (Vidisā).
- 814. Bharaut (now Pataora) Buddhist pillar inscription.—1879 Cunningham, Stupe of Bharaut, p. 143, No. 3, and Plates XX and LVI; 1886 Hul tzsch, Zeitschr

Deutsch, Morgent, Ges. Vol. XI., p. 60; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 233, note 52.

Prakrit. The angel (devaputa) Arahaguta (Arhadgupta).

- 815. Bharaut Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 139, No. I, and Plate LV. Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Sapagutā (Sarpaguptā).
- 816. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham. Stupa of Bharhut, p. 139, No. 2, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 71, No. 100, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 235, No. 100. Prakrit. Gift of Sakataděvš (Šakataděvš), the Kodiyani, from Pataliputa (Pātali-

putra).

- 817. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription. -1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 139, No. 3, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch, Morgent. Ges. Vol. XL. p. 71, No. 101, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 235, No. 101. Prakrit. Gilt of the nun (bhichhuni) Soma from Kakamdi.
- 818. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.-1879 Cunningham, Stupe of Bharhut, p. 139, No. 4, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 71, No. 102, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 235, No. 102. Prakrit. Gift of Mahidasena (Mahendrasena) from Pataliputa (Pataliputra).
- 819. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription .- 1879 Canningham, Stupa of Bharhut, p. 139, No. 5, and Plate L.V ; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch, Morgenl, Ges. Vol. XL. p. 71, No. 103, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 235, No. 103. Prakrit. Gift of the nun (bhikhunt) Nagadeva, the Chudathllika (inhabitant of Chudothila).
- 820. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.-1879 Canningham. Stupe of Bharhut, p. 139, No. 6, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 71, No. 104, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXL p. 235, No. 104. Prakrit. Gift of Kujara (Kunjara), the Chudathilika (inhabitant of Chudathila).
- 821. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.-1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 139, No. 7, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 71, No. 105, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 235, No. 105. Prakrit. Gift of Pusaděvā (Pushyaděvā), mother of Dhammaguta (Dharmagupta).
- 822. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.-1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 139, No. 8, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 71, No. 106, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 235, No. 106.

Prakrit. Gift of Ujhika (Ujjhika).

- 823. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.-1879 Cunningham, Stupe of Bharhut, p. 139, No. 9, and Plate LV; 1886 Huitzsch, Zeitschr. Deutsch, Morgent. Ges. Vol. XL. p. 72, No. 107, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 235, No. 107. Prakrit. A rail (suchi), the gift of Dhamarakhita (Dharmarakshita).
- 824. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddbist rail inscription .- 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 139, No. 10, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch, Morgent. Ges. Vol. XL. p. 72, No. 108, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 108.

Prakrit, Gift of Atimuta (Atimukta).

- 825. Bharaut (now Indian Museum, Caloutta) Buddhist rail inscription.-1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874, p. 112; 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut. p. 58 f.; 139, No. 11, and Plates XXVI and LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl, Ges. Vol. XL. p. 72, No. 109, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 109. Prakrit. The quail jataka. See Jat. No. 357.
- 826. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.-1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 139, No. 12, and Plates XXVI and LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 72, No. 110, and Plate; 1892 Hultzseh, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 110, Prakrit. 'A rail (suchi), the gift of Nadutara (Nandöttara).
- 827. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.-1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 140, No. 13, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 72, No. 111, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 111. Prakrit. Gift of Muda (Munda).
- 828. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 140, No. 14, and Plate LV; 1886 Huitzsch, Zeitschr. Deutsch, Morgent. Ges. Vol. XL. p. 72, No. 112, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 112. Prakrit. Gift of Isana (Isana). Compare No. S29.
- 829. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—ISSô Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 75, No. 151, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238, No. 151. Prakrit. Gift of Isana (Isana). Compare No. 828.
- 830. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.-1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 140, No. 15, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch, Morgent. Ges. Vol. XL. p. 72, No. 113, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 113. Prakrit. Gift of Isidata (Rishidotta).
- 831. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.-1879 Canningham, Stupa of Bharhat, p. 140, No. 16, and Plate LV; 1836 Hultzsch, Zeitschr. M 2

Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 72, No. 114, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 114.

Prakrit. A rail (suchi), the gift of Aya-Punavasu (Arya-Punarvasu).

- 832. Bharaut Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 140, No. 17, and Plate LV. Prakrit, A rail (suchi), the gift of Gagamita (Gargamitra).
- 833. Bharant Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stapa of Bharhut, p. 140, No. 18, and Plate LV. Prakrit. The gift of Kanhila (Krishaala), the preacher (bhānaka).
- 834. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stûpa of Bharhut, p. 140, No. 19, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 72, No. 115, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 115.
 Prakrit. The gift of Děvarakhita (Děvarakshita).
- 835. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 140, No. 20, and Plate LV; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 72, No. 116, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 116.
 Prakrit. Gift of Bhutarakhita (Bhūtarakshita) from Vedisa (Viditā).
- 836. Bharaut Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stapa of Bharaut, p. 140, No. 21, and Plate LV.
 Prakrit. Gift of Gola, the Parikint.
- 837. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 140, No. 22, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 72, No. 117, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 117.
 Prakrit. Gift of Idadevā (Indradevā) from Purikā.
- 838. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Canning-ham, Stupa of Bharhut, p. 140, No. 23, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 72, No. 118, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 118.
 Prakrit, Gift of the mother of Setaka (Śrēshihaka) from Purikā.
- 839. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 140, No. 24; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 72, No. 119, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 119.
 Prakrit. Gift of Sāmā (Śyāmā) from Purikā.
- 840. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 140, No. 25, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 73, No. 120, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 120. Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Budharakhitā (Buddharakshitā).

- 841. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 140, No. 26, and Plate LVI, Nos. 24 and 26; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 73, No. 121, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 121.
 Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Bhutā (Bhūtā).
- Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut, p. 140, No. 27, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 73, No. 122, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 122.
 Prakrit, Gift of Aya-Apikinaka (Ārya-Apikinaka).
- 843. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut, p. 140, No. 28, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 73, No. 123, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 236, No. 123.
 Prakrit. A rail (suchi), the gift of Saghila (Samghila).
- 844. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription,—1879 Cunning-ham, Stûpa of Bharhut, p. 140, No. 29, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 73, No. 124, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 124.
 Prakrit, Gift of Sagharakhita (Samgharakshita) for the benefit of his parents.
- 845. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut. p. 140, No. 30, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 73, No. 125, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 125.
 Prakrit. A rail (suchi), the gift of Dhuta (Dhūrta).
- 846. Bharaut (now Indian Mcseum, Calcutta) Buddhist rail inscription,—1879 Cunning-ham, Stúpa of Bharhut, p. 140, No. 31, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 73, No. 126, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 126.
 Prakrit, A rail (suchi), the gift of Yakhila (Yakshila).
- 847. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 140, No. 32, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 73, No. 127, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 127.
 Prakrit. A rail (suchi), the gift of Mita (Mitra).
- 848. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 141, No. 33, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 73, No. 128, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 128.
 Prakrit. The gift of Isirakhita (Rishirakshita).
- 849. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut, p. 141, No. 34, and Plate LVI; 1886 Hultmch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 73, No. 129, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 129. –
 Prakrit, Gift of Sirina (Śrimat).

- 850. Bharaut (now Indian Museum, Caloutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut, p. 141, No. 35, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 73, No. 130, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 130.
 - Prakrit, Gift of bhadata (bhadanta) Devasena.

(pētakin).

- 851. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 141, No. 36, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 78, No. 131, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 131.
 - Prakrit. Fragment. Gift of the nun (bhichhunt) kā.
- 852. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham. Stüpa of Bharhut, p. 141, No. 37, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 74, No. 132, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 132.
 - Prakrit. Gift of Idadēvā (Indradēvā), the Nacadinagarikā (inhabitant of Nandinagara).
- 853. Bharant Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 141, No. 38, and Plate LVI.
 Prakrit. Gift of Gösäla (Gösäla). The inscription has been engraved twice.
- 854. Bharaut Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 141, No. 39, and Plate LVI.
 Prakrit. Fragment, Gift of the wife of Kachula (Kañchula).
- 855. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 141, No. 40, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 74, No. 133, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 133.
 Prakrit. Gift of Jethabhadra (Jyēshthabhadra).
- 856. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Ståpa of Bharhut, p. 141, No. 41, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 74, No. 134, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 134.
 Prakrit. A rail (suchi), the gift of Aya-Jāta (Ārya-Jāta), who knows the Piţakas
- 857. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 141, No. 42, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 74, No. 135, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 135.
 - Prakrit. Gift of the soulptor (rupakāraka) Budharakhita (Buddharakshita).
- 858. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 141, No. 43, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 74, No. 136, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 136.
 - Prakrit. Gift of bhadata (bhadanta) Samika (Syamaka), the Therakūtiya (inhabitant of Sthavirākūta).

- 859. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stüpa of Bharhut, p. 141, No. 44, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 74, No. 137, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 237, No. 137.
 - Prakrit. Gift of Isirakhitā (Rishirakshitā) from Sirisapada (Sirīshapadra).
- 860. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut, p. 141, No. 45, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL, p. 74, No. 138, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238, No. 138.
 - Prakrit. Gift of the mother of Ghatila from Moragiri (Mayuragiri).
- 861. Bharaut Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 141, No. 46, and Plate LVI; 1886 mentioned by Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 59; 1892 mentioned by Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 225. Prakrit. A rail (suchi), the gift of Atantata (?), the Bhojakataka (inhabitant of
- 862. Bharaut (now Indian Museum, Calentta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 141, No. 47, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 74, No. 139, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238, No. 139.
 Prakrit. Gift of Samidată (Svāmidattā).
- 863. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stúpa of Bharhut, p. 141, No. 48, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 74, No. 140, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant.
 - Prakrit, Gift of Chulana,

Vol. XXI. p. 238, No. 140.

Bhojakata).

- 864. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 142, No. 49, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 74, No. 141, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238, No. 141. Prakrit. Gift of Avisana (Avishanna). Compare No. 865.
- 865. Bharant (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stapa of Bharhut, p. 142, No. 50, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 74, No. 142, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238, No. 142.
 Prakrit. Gift of Avisana (Avishanna). Compare No. 864.
- 866. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 142, No. 51, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XI. p. 75, No. 143, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238, No. 143.
 - Prakrit. Gift of a wheel of enlightenment (bodhichaka) by Samghamita (Samghamitra).
- 867. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunning-ham, Stupa of Bharhut, p. 142, No. 52, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 75, No. 144, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238. No. 144.

- Prakrit, Gift of Budharakhita (Buddharakshita), who knows the five nikāyas (pachanēkāyika).
- 868, Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.-1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 142, No. 53, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 75, No. 145, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238, No. 145.

Prakrit, A rail (suchi), the gift of Isirakhita (Rishirakshita).

 Bharaut Buddhist rail inscription.—1874 Cunningham, Proceed. Beng. As. Soc. 1874. p. 116; 1879 Canningham, Stupa of Bharhut, p. 142, No. 54, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr., Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 60; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 225.

Prakrit. (Gift) of prince (kumāra) Vādhapāla (Vyādhapāla ?), the son of king (rajan) Dhanabhūti.

870. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 142, No. 55, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch, Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 75, No. 146, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238, No. 146.

Prakrit. Gift of the nun (bhichhuni) Phagudevā (Phalgudevā).

- 871. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.-1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 142, No. 56, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch, Morgent. Ges. Vol. XL. p. 75, No. 147, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238, No. 147. Prakrit. Gift of a yakhī (yakshī) by Ködā (Krödā).
- 872. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.--1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 142, No. 57, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 75, No. 148, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238, No. 148. Prakrit. Gift of Ghosa (Ghosha).
- 873. Bharaut Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stupe of Bharhut, p. 142. No. 58, and Plate LVI. Prakrit. Fragment. (Gift?) of Yamita (?) Sa
- 874. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription. -1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 142, No. 59, and Plates XXXI and LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl, Ges. Vol. XL. p. 75, No. 149, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238, No. 149; 1892 Cunningham, Mahabodhi, Plate V (Plate only). Prakrit. Gift of Bharanideva (Bharanideva), the son of Siri (Sri).
- 875. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription .- 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 142, No. 60, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 75, No. 150, and Plate; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 238, No. 150.

Prakrit. Gift of Mitadeva (Mitradeva).

876. Bharaut Buddhist rail inscription.-1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 142, No. 61, and Plate LVI.

- Prakrit. A rail (suchi), the gift of Pusaka (Pushyaka), the Padelaka (inhabitant of Padela).
- 877. Bharant Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 142, No. 62, and Plate LVI.
 Prakrit. Gift of Valamita (Valamitra) from Asitamasä.
- 878. Bharaut Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 142, No. 63, and Plate LVI.
 Prakrit. Gift of Sirimă (Śrēmati), the [Pa]rakaţikā (?) (inhabitant of Parakaţa ?).
- 879. Bharant Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 142, No. 64, and Plate LVI.
 Prakrit. A rail (suchi), the gift of Vijitaka.
- 880. Bharaut Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhat, p. 142, No. 65, and Plates XXXI and LVI.

 Prakrit. Fragment. Gift of . . . , and made by himself (?).
- 881. Bharaut Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 142, No. 66, and Plates XXXIV and LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 76, No. 156; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 239, No. 159. Prakrit. Vasugupta (Vasugupta) rescued to the shore by Mahādēva from the belly of the sea-monster.
- 882. Bharaut Buddhist rail inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, Plate LVI, No. 67 (Plate only); 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 60; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 225.
 Prakrit, Gift of Nägarakhitä (Nägarakshitä), the wife of king (rājan) [Dhanabhū]ti (?).
- 883. Bharaut (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 75, No. 152; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 239, No. 152.
 Prakrit. Gift of Bodhiguta (Bödhigupta).
- 885. Bharant Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stüpa of Bharhut, p. 143, No. 1, and Plate LVI; 1886 mentioned by Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 59; 1892 mentioned by Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 225. Prakrit. Fragment. [Gift] of Velimi[tà] (Völlimitrö), the Väsithi (Väsishthi), from Vedisa (Vidisä).
- 886. Bharaut Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 143, No. 2, and Plate LVI.
 Prakrit. Fragment. [Gift] of Aya-Namda (Arya-Nanda).
- 887. Bharaut Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stapa of Bharhut, p. 143, No. 4, and Plate LVI.
 Prakrit, Fragment. No sense can be made out.

- 888. Bharant Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stapa of Bharhut, p. 143, No. 5, and Plate LVI.
 Prakrit, Fragment. No sense can be made out.
- 889. Bharaut Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 143, No. 6, and Plate LVI.
 Prakrit. Fragment. Only the name (?) Chamda (Chandra) has been preserved.
- 890. Bharant Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Staps of Bharant, p. 143, No. 7, and Plate LVI.
 Prakrit. Fragment. No sense can be made out.
- 891. Bharaut Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 143, No. 8, and Plate LVI.
 Prakrit. Fragment. Records the gift of some woman who is called [Karaha]-kaṭiyā (? inhabitant of Karahakaṭa).
- 892. Bharaut Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stúpa of Bharhut, p. 143, No. 9, and Plate LVI.
 Prakrit. Fragment. Contains the titles of king (rājan) and supreme king (adhirāja).
- 893. Bharant Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 143, No. 10, and Plate LVI.
 Prakrit. Fragment. No sense can be made out.
- 894. Bharaut Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 143, No. 11, and Plate LVI.
 Prakrit. Fragment. No sense can be made out.
- 895. Bharaut Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 143, No. 12, and Plate LVI.
 Prakrit. Fragment. Records the gift of [Sa]ghami[ta] (Samghamitra).
- 896. Bharaut Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stapa of Bharhut, p. 143, No. 13, and Plate LVI.
 Prakrit. Fragment. No sense can be made out.
- 897. Bharaut Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stupe of Bharhut, p. 143, No. 14, and Plate LVI.
 Prakrit. Fragment. Records the name of some jātaka.
- 898. Bharaut Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 143, No. 15, and Plate LVI.
 Prakrit. Gift of Namdagiri.
- 899. Bharant Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stopa of Bharhut, p. 143, No. 16, and Plate LVI, No. 17.
 Prakrit. Fragment. Records the gift of some woman.

- 900. Bharaut Buddhist stone inscription.-1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 143, No. 17, and Plate LVI, No. 16, Prakrit. Fragment. No sense can be made out.
- 901. Bharant Buddhist stone inscription.—1879 Cunningham, Stupe of Bharhut, p. 143, No. 18, and Plate LVI. Prakrit, Fragment, Dusita gives Mount Na[doda](?), Compare No. 711.
- 902. Bharaut Buddbist stone inscription.—1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, p. 143, No. 19, and Plate LVI; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 76, note 2; 1892 Hultzsch, Ind. Ant. Vol. XXI. p. 239, No. 160. Prakrit. The seat of holy (bhagacat) Mahadeva under the Bahuhathika (Bahuhastika).
- 903. Bharaut Buddhist stone inscription .- 1879 Cunningham, Stupa of Bharhut, Plate LVI, No. 20 (Plate only). Prakrit. Fragment. No sense has been made out.

904. S. 10.—Pabhosa Buddhist (? Jaina ?) cave inscription of the time of Udaka (?).—

- 1887 Hoernie, Proceed. Beng. As. Soc. 1887, p. 104; 1887 Cockburn, Journ. Beng. As. Soc. Vol. LVI. Part I. p. 34, facsimile only; 1892 Führer, Ep. Ind. Vol. II. p. 242, No. 1, and Plate. - [Udākasa] dasamē savacharē. Mixed dialect. Excavating of a cave (lona) by Asadhasona (Ashadhasona), the son of Göpäli Vaihidari and maternal uncle of rajan Bahasatimittra (Brihaspatimitra), son of Gopall, for the Kassapiya (Kasyapiya) Arahamtas (Arhats).
- 905. Pabhosa cave inscription.-1892 Führer, Ep. Ind. Vol. II. p. 242 f., No. 2, and Plate. Mixed dialect. Excavating [of the cave] by Ashādhasēna, the son of Vaihidari and of rajan Bhagavata, the son of Tevani (Trainarni), the son of Vamgapala, the son of Sonakāyana (Saunakāyana), rājan of Adhichhatrā (Adhichchhatrā).
- 906. S. 52,-Giñja rock inscription of the time of mahārāja Bhimasēna.-1985 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XXI. p. 119, and Plate XXX; 1895 mentioned by Hultzsch, Ep. Ind. Vol. III. p. 302, and Plate. Mahārājasya śri-Bhimasēnasya sa . . . 50 2 gienhapakshē 4 divasē 10 2 ētava puravayam. Mixed dialect. The purport of the inscription has not been made out.
- 907. Kevati Kunda cave inscription.-1880 Hoernle, Proceed. Beng. As. Soc. 1880, p. 55; 1880 Hoernle, Ind. Ant. Vol. IX. p. 120 f., and facsimile. Prakrit. A pond (pukharini) made by Sonaka (Saunaka), the son of a Hariti (Hāritt).
- 908. Bitha coping stone inscription.-1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. X. p. 6, and Plate III, 4. Prakrit. Fragment. Gift of some householder (gahapatika), the son of Enaia.
- 909. Bitha Buddhist image inscription.—1873 noticed by Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 48, No. B, and Plate XVIII. Sanskrit (?). Fragment. Not read.

- 910. Deoriyā Buddhist (?) image inscription.—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 48, No. C, and Plate XVIII.
 Mixed dialect. Setting up of an image of holy (bhagavat) Pitamaha (? Pitāmaha) by Ugahakā (Udgrahakā), the pupil (tishini) of Aryantadi (?).
- 911. Deoriyā Buddhist image inscription.—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 48, No. D, and Plate XVIII. Sanskrit. Gift of the Śākya monk (Śākyabhikshu) Bödhivarman.
- 912. Decriya Baddhist image inscription—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III, p. 49, No. E, and Plate XVIII.
 Sanskrit. Fragment. Records the gift of the image, but no name has been preserved.
- 913. Tandwh Buddhist stone inscription.—1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XI. p. 73, No. 4, and Plate XXIII. Prakrit (?). Fragment. No sense can be made out.
- 914. Tanāwā Buddhist stone inscription.—1880 Cunningbam, Arch. Surv. Rep. Vol. XI. p. 75, No. 5, and Plate XXIII.
 Prakrit (?). Fragment. No sense can be made out.
- 915. Tandwä stone inscription.—1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XI. p. 75, No. 6, and Plate XXIII.
 Fragment. Only the letter ji.
- 916. Tandwh stone inscription.—1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XI. p. 74, No. 7, and Plate XXIII.
 Fragment. Only the letter pa.
- 917. Tandwa stone inscription.—1880 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XI. p. 74, No. 8, and Plate XXIII.
 Fragment. Only the letter bu.
- 918. Sahēth-Mahēth (now Indian Museum, Calentta) Buddhist image inscription of the time of mahērāja dēvaputra Kanishka or Huvishka.—1870 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIX. Part I. p. 130, No. 21, and Plate VII; 1870 Dowson. Journ. Roy. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 192, and Plate III, No. 32; 1871 referred to by Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. I. p. 339 f.; 1898 Bloch, Journ. Beng. As. Soc. Vol. LXVII. Part I. p. 274 ff.; 1906 Bloch, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 180 f., and Plate; 1908 note by Bloch, Ep. Ind. Vol. IX, p. 291.

[Mahārājasya dēvaputrasya Kanishkasya (or Huvishkasya)sam di]
10 9 ētayē purvayē.

Mixed dialect. A Bodhisatva (Bōdhisattva), an umbrella (chhātra) and a staff (dānda), the gift of the monk (bhikshu) Bala, who knows the Tripitaka (trēpifaka), the companion (saddhyēvihārin) of the monk (bhikshu) Pushya[vnddhi] (Pushyavriddhi), at Śāvasti (Śrāvasti), at the walk (chamkama) of Bhagavat in the Kēsambakuṭi (Kaušāmbakuṭi), as the property of the Sarvastivādin (Survāstivādin) teachers (acharyyas). Identical with No. 919.

- 919. Saheth-Maheth (now Lucknow Provincial Museum) Buddhist stone inscription of the time of . . . devaputra Kanishka or Huvishka.-1908 Bloch, Ep. Ind. Vol. IX. p. 290 f., and Plate.
 - сары . . . Mixed dialect. Fragment. A Bodhisatva (Bödhisattva), an umbrella (chhatra), and a staff (danda), the gift of [the monk Bala, who knows the Tripitaka], the companion ([saddhyēv]ihārin) of . . , at Śāvasti (Śrāvastī) at the walk ([cham]ka[ma]) [of Bhagavat] in the Kosamba[kuti] (Kauiāmbakuti), as the property of the [Sarvā]s[t]ivadin teachers ([āchā]r[yyas]). Identical with No. 918.
- 920 Ramgarh (Sitabenga) cave inscription .- 1865 noticed by Dalton, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIV. Part II. p. 27; 1873 Ball, Ind. Ant. Vol. II. p. 245, No. 1, and Plate; 1877 Cunningham, Corp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 33; 105, and Plate XV; 1882 noticed by Beglar, Arch. Surv. Rep. Vol. XIII. p. 40; 1902 Haraprasad Shastri, Proceed. Beng. As. Soc. 1902, p. 90 f.; 1904 Boyer, Journ. As. Ser. X. Vol. III. p. 479 ff.; 1904 Bloch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. LVIII. p. 456; 1906 Bloch, Arch. Surv. Ind. Annual Rep. 1903-04, p. 124 ff., and Plate XLIII. Prakrit. Some verses in praise of poetry.
- 921. Bamgarh (Jogimara) cave inscription.-1865 noticed by Dalton, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIV. Part II. p. 27; 1873 Ball, Ind. Ant. Vol. II. p. 246, No. 2, and Plate : 1877 Cunningham, Corp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 33; 105, and Plate XV; 1882 noticed by Beglar, Arch. Surv. Rep. Vol. XIII. p. 40 f., with facsimile; 1902 Haraprasad Shastri, Proceed. Beng. As. Soc. 1902, p. 90; 1904 Boyer, Journ. As. Ser. X. Vol. III. p. 484 ff.; 1904 Bloch, Zeitschr. Deutsch. Morgonl. Ges. Vol. LVIII. p. 455 f. : 1906 Pischel, Sitzungsber. Preuss. Ak. Wiss. 1906, p. 489 ff., with facsimile; 1906 Bloch, Arch. Surv. Ind. Annual Rep. 1903-04, p. 128 ff., and Plate XLIII; 1907 correction by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1907, p. 511, note.

The temple-servant (dēvadašikyš) Šutanukā (Sutanukā) by name. The copyist (lupadakha), Dēvadina (Dēvadatta) by name, the Balanaseya (nativo from Bārānasī), loved her.

- 922. S. 40.—Sarnath pillar inscription of the time of rajan Asvaghosha.—1905 Vogel, Ep. Ind. Vol. VIII, p. 171 f., No. 1, e, and Plate. —rajna Aśvaghoshasya chatariśś savachhare hématapakhe prathame divase dasame. Mixed dialect. Besides the date only part of one word has been preserved.
- 923. Sarnath Buddhist pillar inscription.—1905 Vogel, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 172, No. 1, f, and Plate. Mixed dialect. The property of the Sammitiya (Sammitiya) teachers (āchāryyas), the Vātsiputrikas.
- 924. Sarnath stone inscription of the time of rajan Asvaghosha.—1905 Vogel, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 172, No. 2, and Plate. Rājāo Aśvaghosha upala hē[ma] Mixed dialect. Nothing beyond the date has been preserved.
- 925. S. 3.—Sarnath Buddhist umbrella post inscription of the time of mahār[a] ja Kanishka -1905 Vogel, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 175 ff., No. 3, a and Plate; 1908 correction by Lilders, Ep. Ind. Vol. IX. p. 241.

Mahārajasya Kānishkasya sam 3 hē 3 di 20 2 ētayē purvayē.

Mixed dialect. Erection of a Bodhisatva (Bodhisatva) and an umbrella with a post (chhatrayashti) at Bārāņasi at the walk (chambama) of Bhagavat, (the gift) of the monk (bhikshu) Bala, who knows the Tripiṭaka (trēpiṭaka), the companion (saddhyēvihārin) of the monk (bhikshu) Pushyavuddhi (Pushyavriddhi), together with his parents, his teachers (upaddhyāyāchēras), his companions (saddhyēvihārins) and pupils (antēvāsikas), with Buddhamitrā, who knows the Tripiṭaka (trēpiṭikā), with the kshatrapa Vanaspara and Kharapallana, with the four classes (parishā).

926. Särnäth Buddhist image inscription.—1906 Vogel, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 179, Nos. 3, b and c, and Plate.

Mixed dialect. Erection of a Bödhisatva (Bödhisattva), (the gift) of the monk (bhikshu) Bala, who knows the Tripiṭaka (trēpiṭaka), together with the mahā-kshatrapa Kharapallāna and the kshatrapa Vanashpara.

927. S. 3.—Sărnāth Buddhist image inscription of the time of mahār[ā]ja Kaņishka.—
1906 Vogel, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 179, No. 3, d, and Plate.

Mahārajasya Kaṇishkasya saṁ 3 hē 3 di 20 2 štayē purvayē.

Mixed dialect. Erection of a Bodhisatva (Bodhisatva) and an umbrella with a

Mixed dialect. Erection of a Bodhisatva (Bodhisatva) and an umbrella with a post (chhatrayashti), (the gift) of the monk (bhikshu) Bala, who knows the Tripitaka (trēpitaka).

- 928. Sārnāth Buddhist stone umbrella inscription.—1908 Konow, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 291 f., and Plate. Pali. A passage from the Buddhist Canon.
- 929. Särnäth Buddhist stone inscription.—1908 Konow, Ep. Ind. Vol. VIII, p. 293, and Plate. Mixed dialect. The Buddhist creed.
- 930. Sarnath (now Lucknow Provincial Museum) Buddhist image inscription.—1906 Vogel, Arch. Surv. Ind. Annual Rep. 1903-04, p. 214, and Plates Lill, 1 and LXIV, 1. Sanakrit. Fragment. Gift of sommin Skandavarnpa.
- 931. Piprāhwā Buddhist vase inscription.—1898 Bühler, Journ. Roy. As. Soc. 1898, p. 387 ff.; 1898 Barth, Comptes rendus de l'Acad. des Inscr. et Belles-Lettres, Ser. IV. Vol. XXVI. p. 146 ff. and 231 ff.; 1898 Führer, Annual Progress Report of the Arch. Surv. Circle, North-Western Provinces and Oudh, for the year ending 30th June 1898, p. 3 (with photographs); 1898 Peppē, Journ. Roy. As. Soc. 1898, p. 576 f. (facsimile), and Plate; 1898 Smith-Davids-Hoey, Journ. Roy. As. Soc. 1898, p. 586 ff.; 1898 Subhnti Thero-Waddell, Athenaum, No. 3689, p. 67; 1899 Bloch, Journ. Roy. As. Soc. 1899, p. 425 f.; 1901 Davids, Journ. Roy. As. Soc. 1901, p. 398; 1902 Pischel, Allgem. Zeit., Beilage, 1902, No. 4, p. 27; 1902 Pischel, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. LVI. p. 157 f.; 1905 Pischel, Sitzungsber. Preuss. Ak. Wiss. 1905, p. 526; 1905 Lévi, Journ. des Savants 1905, p. 540 ff.; 1905 Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1906, p. 149 ff.; 1906 Thomas, Journ. Roy. As. Soc. 1906, p. 452 f.; 1906 Senart, Journ. As. Ser. X. Vol. VII. p. 132 ff.; 1906 Barth, Journ. des Savants 1906, p. 541 ff.; 1907

Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1907, p. 105 ff.; 1907 Barth, Ind. Ant. Vol. XXXVI. p. 117 ff.

This receptacle of the relics of Budha (Buddha), the Holy one (bhagavat), of the Sakiyas (Sakyas), (is the gift) of the brothers of Sukiti (Sukirti), jointly with their sisters, with their sons and their wives.

- 932. Gopalpur Buddhist brick inscription.-1896 Smith-Hoey-Hoernle, Proceed. Beng. As. Soc. 1896, p. 101 ff., No. 1. Sanskrit. A Buddhist Sütra.
- 933. Gopálpur Buddhist brick inscription.—1896 noticed by Smith-Hoey, Proceed. Beng. As. Soc. 1896, p. 101, No. 2. Sanskrit. Contains a Buddhist Sütra.
- 934. Göpalpur Buddhist brick inscription .- 1896 noticed by Smith-Hoey, Proceed. Beng. As. Soc. 1896, p. 101, No. 3. Sanskrit. Contains a Buddhist Stitra.
- 935. Göpälpur Buddhist brick inscription.—1896 noticed by Smith-Hoey, Proceed. Beng. As. Soc. 1896, p. 101, No. 4. Sanskrit. Contains a Buddhist Sütra.
- 936. Gopalpur Buddhist brick inscription .- 1896 noticed by Smith-Hoey, Proceed. Beng. As. Soc. 1896, p. 101, No. 5. Sanskrit. Contains a Buddhist Sutra.
- 937. Sohgaura copper-plate inscription.-1894 noticed by Hoey, Proceed. Beng. As. Soc. 1894, p. 84 f., and Plate I; 1894 Smith, Proceed. Beng. As. Soc. 1894, p. 85 ff.; 1894 corrections by Hoernle, Proceed. Beng. As. Soc. 1894, p. 87; 1896 Bühler, Vienna Orient, Journ. Vol. X. p. 138 ff. = Ind. Ant. Vol. XXV. p. 261 ff.; 1907 Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1907, p. 510 ff., and Plate; 1907 note by Grierson, Journ. Roy. As. Soc. 1907, p. 683 ff.; 1908 notes by Fleet-Barnett-Lanman-Jacobi, Journ. Roy. As. Soc. 1908, p. 187 f.; 822 f.
 - Prakrit. Order of the great officials (mahamaga(ta)), the Savatiyas (of Śrāvasti), from Manavasitikada with regard to two store houses (kothagala) in Usagama. [According to Fleet: Notice for all the three great roads for vehicles! At the junction Manavasi, of the three roads, in Dasilimata and Usagama, two storebouses are prepared for sheltering loads of commodities of Tiyavani, Mathula (Mathura), and Chamchu].
- 938. Bodh-Gaya (now partly Indian Museum, Calcutta) letters on pillar bases.—1892 Cunningham, Mahabodhi, p. 16, No. 1, and Plate X; 1896 Grierson, Proceed. Beng. As. Soc. 1896, pp. 52-61, and Plate II. The letters a, ka, na, cha.
- 939. Bodh-Gaya Buddhist pillar inscription .- 1836 noticed by Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. V. p. 658, No. 5, and Plate XXXIII; 1837 Prinsep. Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 468, with facsimile; 1847 Kittoe, Journ, Beng. As. Soc. Vol. XVI. Part I. p. 339, with facsimile; 1871 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. I. p. 10, and Plates VII and IX, No. 14; 1873 Forgusson, Tree and Serpent Worship, 2 p. 130

(facsimile only); 1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 88, and Plate XXVI, No. 1; 1878 Rajendralala Mitra, Buddha Gayá, p. 182 f., No. 1; 1880 Bhagvanlal Indraji, Ind. Ant. Vol. IX. p. 142; 1892 Cunningham, Mahábodhi, p. 15, No. 4, and Plate X. Prakrit. Gift of ayā (āryā) Kuraingi.

- 940. Bodh-Gayā Buddhist pillar inscription.—1871 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. I. p. 10, and Plate VII; 1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 88, and Plate XXVI, No. 1; 1880 Bhagvanlal Indraji, Ind. Ant. Vol. IX. p. 142; 1892 Cunningham, Mahābodhi, p. 15, No. 5, and Plate X. Prakrit. Gift of ayā (āryā) Kuramgi.
- 941. Bodh-Gayā Buddhist pillar inscription.—1871 mentioned by Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. I. p. 10; 1880 Bhagvanlal Indraji, Ind. Ant. Vol. IX. p. 142; 1892 Cunningham, Mahābodhi, p. 15, No. 6, and Plate X. Prakrit. Gift of ayā (āryā) Kuramgi.
- 942. Bodh-Gayā Buddhist pillar inscription.—1871 mentioned by Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. I. p. 10; 1880 Bhagvanlal Indraji, Ind. Ant. Vol. IX. p. 142; 1892 Cunningham, Mahābodhi, p. 15, No. 7, and Plate X. Prakrit. Gift of ayā (āryā) Kuramgi. There seem to be two more copies of this inscription.
- 943. Bodh-Gayā (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping-stone inscription.—1883 Rajendralala Mitra, Catalogue and Handbook of the Archeological Collections in the Indian Museum, Part I. p. 130 f.; 1892 Cunningham, Mahdbodhi, p. 15, No. 8, and Plate X, No. 10.

Prakrit. Fragment. Gift of Kuramgi, sister in-law of Imdagimitra (Indragmimitra),
. . . daughter of Jiva (Jiva), to the king's temple (I-rajāpāsādāchētika).

- 944. Bodh-Gayā Buddhist coping-stone inscription.—1892 Cunningham, Mahábodhi, p. 15, No. 9, and Plate X, Nos. 8 and 9.
 - Prakrit. Fragment. Gift of Kuramgi, sister-in-law of Imdagimitra (Indragnimitra), the son of ka, daughter of Jiva (Jiva), to the king's temple (? rā[jāpā]sā[dā]chēt[ika]).
- 945. Bödh-Gaya Buddhist rail inscription.—1892 Cunningham, Mahābodhi, p. 16, No. 2, and Plate X.
 Prakrit. Gift of Amögha.
- 946. Bodh-Gaya (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist rail inscription.—1873 Cunning-hain, Arch. Surc. Rep. Vol. III. p. 89, and Plate XXVI; 1878 Rajendralala Mitra, Buddha Gaya, p. 184, No. 3; 1880 correction by Bhagvanlal Indraji, Ind. Ant. Vol. IX. p. 142; 1892 Cunningham, Mahabodhi, p. 16, No. 3, and Plate X. Prakrit. Gift of Bodhirakhita (Bodhirakshita), the Tabapanaka (inhabitant of Tamraparaa).
- 947. Bodh-Gayā Buddhist rail inscription.—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 89, and Plate XXVI, No. 2; 1878 Rajendralala Mitra, Buddha Gayá, p. 183, No. 2. Prakrit. Fragment. Gift of Pāṭihāra

- 948. Bodh-Gaya Buddhist inscription on the edge of the outer vajrāsana.—1892 Cunning-ham, Mahābodhi, p. 20; 58, and Plate X, 11.
 Prakrit. Fragment. No sense has been made out.
- 949. S. 64.—Bödh-Gayā (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist image inscription of the time of mah[ā]r[ā]ja Trikamata (?).—1892 noticed by Cunningham, Mahābodhi, p. 21; 37; 53; 54, and Plate XXV; 1898 Bloch, Journ. Beng. As. Soc. Vol. LXVII. Part I. p. 282; 1909 Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1909, p. 661.

 Maharajasya Trikamatasya (?) sa 60 4 gri 3 di 5 štasya purvvayē.

 Mixed dialect. Fragment. Gift of an image of a Bodhisatva (Bōdhisattva) to some vihāra by some monk (bhikshu), who is called the companion (sadhavihārin) of some other monk (bhikshu), a master of the Vinaya (vinayadhara). The inscription mentions besides some lay-woman (upāsikā) and some preacher of the law (dharmmakāthika).
- 950. Bodh-Gaya Buddhist coping-stone inscription.—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 99, No. D, and Plate XXIX; 1878 Rajendralala Mitra, Buddha Gaya, p. 192, No. 5, and Plate LI; 1880 correction by Bhagvanlal Indraji, Ind. Ant. Vol. IX. p. 142 f.; 1892 Cunningham, Mahabodhi, p. 23; 58, and Plate XXVII.

 Sanskrit. Fragment. Seems to record various donations to the holy Buddha, such as a vajrāsana in the great gandhakutā temple, ghee lamps (ghritapradāpa), an image of the Buddha in the vihāra, etc.
- 951. Bödh-Gayā (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist coping iascription.—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 99, No. A, and Plate XXVIII; 1878 Rajendralala Mitra, Buddha Gayá, p. 191, No. 4. Sanskrit (?). Fragment. Mentions some teacher (āchāryya).
- 952. Bodh-Gayā Buddhist image inscription.—1864 Rajendralala Mitra, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XXXIII. p. 177; 1873 noticed by Mead, Arch. Surc. Rep. Vol. III. p. 87; 1878 Rajendralala Mitra, Buddha Gayá, p. 192 f., No. 6, and Plate LI; 1880 Bhagvanlal Indraji, Ind. Ant. Vol. IX. p. 143.
 Sanskrit. Records the erection of a temple (bhavana) for the sage who conquered Māra, by the moak (yati) Bodhishēņa, an inhabitant of Dattagalla, for the welfare of his relations and his teacher (upādhyāya) living at Āhavāgra.
- 953. Bodh-Gayă Buddhist image inscription.—1892 Cunningham, Mahâbadhi, p. 59 f., and Plate XXVII, E. Sanskrit. Fragment. The Buddhist creed, followed by four or five lines said to be illegible.
- 954. Nagarjuni Hill cave inscription of Dashalatha. —1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. pp. 676-679, and Plate XXXV, No. 2; 1847 Kittoe, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XVI. Part I. p. 412 f., No. 2, and Plate IX; 1852 Burnouf, Lotus de la Bonne Loi, p. 777 f.; 1871 referred to by Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. I, p. 50, and Plate XX, No. 5, 1877 Cunningham, Corp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 103; 134 f., No. 4, and Plate XVI; 1891 Bühler, Ind. Ant. Vol. XX. p. 364, No. D, and Plate. Prakrit. The Vahiyaka cave (kubhā), presented by the Beloved of the gods (dēvānam piya) Dashalatha (Daśaratha) to the Ajivika monks (bhadamta).

- 955. Năgârjuni Hill cave inscription of Dashalatha.—1537 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. pp. 676-679, and Plate XXXV, No. 3; 1847 Kittoe, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XVI. Part I. p. 412, No. 1, and Plate IX; 1852 Burnouf, Loius de la Bonne Loi, p. 775 ff.; 1871 referred to by Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. I. p. 49, and Plate XX, No. 4; 1877 Cunningham, Corp. Inser. Ind. Vol. I. p. 103: 135, No. 5, and Plate XVI; 1891 Bühler, Ind. Ant. Vol. XX. p. 365, No. E, and Plate. Prakrit. The Göpikä cave (kubhā), presented by the Beloved of the gods (dēvānam piya) Dashalatha (Daśaratha) to the Ājivika monks (bhadainta).
- 956. Nagārjuni Hill cave inscription of Dashalatha.—1847 Kittoe, Journ. Beng. As. Soc. Vol. XVI. Part I. p. 413, No. 3, and Plate IX; 1852 Burnouf, Letus de la Bonne Loi, p. 778; 1871 referred to by Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. I. p. 51, and Plate XX, No. 6; 1877 Cunningham, Corp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 104; 185, No. 6, and Plate XVI; 1891 Bühler, Ind. Ant. Vol. XX. p. 365, No. F, and Plate. Prakrit. The Vadathikā cave (kubhā), presented by the Beloved of the gods (dēvānam piya) Dashalatha (Dašaratha) to the Ajīvika monks (bhadamta).
- 957. Patna (now Indian Museum, Calcutta) statue inscription.—1882 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XV. p. 3, No. A, and Plate II. Prakrit. The yakha (yaksha) Sataţânadi (?).
- 958. Patna (now Indian Museum, Calcutta) statue inscription.—1882 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XV. p. 3, No. B, and Plate II.
 Prakrit. The yakha (yaksha) Achusanigika.
- 959. Rājgir (Sonbhāndār) Buddhist cave inscription.—1871 noticed by Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. I. p. 25; 1892 Cunningham, Mahābodhi, p. 59, and Plate XXVII, C. Sanskrit. Records the excavating of the two caves (guhā), containing images of the Arhat and fit for ascetics (tapasvin), for the attainment of Nirvāņa, by the jewel among teachers (āchāryya), the sage (muni) Viradēva.
- 960. Nongarh image inscription.—1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 161, and Plate XLVII, 2.
 Prakrit (?). Fragment. No sense can be made out.
- 961. Susuniā rock inscription of mahārāja Chandravarman,—1895 Nagendranatha Vasu, Proceed. Beng. As. Soc. 1895, p. 177 ff.

 Sanskrit. Dedicated by the chief of the servants of the lord of the chekra. The work of mahārāja Chandravarmman, the son of mahārāja Siddhavarmman, the lord (pati) of Pushkarāmbadhi.

II .- SOUTHERN INSCRIPTIONS.

- 962. Year 122.—Mulwasar (now Library, Dwarka) stone inscription of the time of rajan mahākshatrapa sāmi-Rudrasēna.—1890 mentioned by Bhagvanlal Indraji-Rapson, Journ. Roy. As. Soc. 1890, p. 652; 1895 Prakrit and Sanskrit Inscriptions of Kattywar, p. 23, No. 5, and Plate XIX; 1896 note by Bhagvanlal Indraji, Bombay Gazetteer, Vol. I. Part 1, p. 43; 1899 note by Rapson, Journ. Roy. As. Soc. 1899, p. 380 f.; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, stc. p. LXII, No. 41.
 - Rājās mahākshatrapasa sāmi-Rudrasēnasya varshē 100 20 2 Vaisākhabahulapam-
 - Mixed dialect. Erection of a stone pillar (silālashfi) by the sons of Vanijaka.

963. Year 103.—Genda (now Dwarkanath Temple, Jamnagar) stone inscription of the time of rājan kshatrapa seāmi-Rudrasiha.—1881 Bühler, Ind. Ant. Vol. X. p. 157 f.; 1890 correction by Bühler, Sitzungsber. Wien. Ak. Wiss. Phil. Hist. Cl. Vol. CXXII. No. XI. p. 46, note 2; 1890 note by Bhagvanlal Indraji, Journ. Roy. As. Soc. 1890, p. 650 f.; 1895 Prakrit and Sanskrit Inscriptions of Kattywar, p. 21 f., No. 3, and Plate XVII; 1896 corrections by Bhagvanlal Indraji, Bombay Gazetteer, Vol. I. Part I. p. 42; 1899 correction by Rapson, Journ. Roy. As. Soc. 1899, p. 375, note 2; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. LXI, No. 39.

—rājāo kshatrapasya svāmi-Rudrasīhasya varshē triuttarašatē 100 3 Vaišākhasuddhapamchamīdhanyatithau Rohininakshatramuhūrtē.

Mixed dialect. Records the digging of a tank (hrada?) by the general (sēnāpati) Rudrabhūti, son of the general (sēnāpati) Bāpaka, the Ābhīra, at the village (grāma) of Rasopadra. The inscription gives the following pedigree: rājan mahākshatrapa svāmi-Chashṭana, his son rājan kshatrapa svāmi-Jayadāman, his son rājan mahākshatrapa svāmi-Rudradāman, his son rājan kshatrapa svāmi-Rudradāman, his son rājan kshatrapa svāmi-Rudrasiha (Rudrasimha).

964. Siddhsar stone inscription.—1876 Burgess, Arch. Surv. West. Ind. Vol. II. p. 152, with facsimile.
Prakrit. Fragment. No name can be made out.

965. Year 72.—Junagadh rock inscription of rājan mahākshatrapa Rudradāman.—1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 338 ff., and Plates XV and XIX; 1842 Lassen, Zeitschr. für Kunde des Morgent. Vol. IV. p. 146 ff.; 1842 Jacob-Westergaard, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. I. p. 148, Plate; 1858 Prinsep-Wilson, Essays on Indian Antiquities, Vol. II. p. 55 ff.; 1865 Bhan Daji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 113 f.; 118 ff.; 125 ff., and Plate; 1876 Eggeling, Arch. Surv. W. Ind. Vol. VII. p. 128 ff., and Plate XIV; 1878 Bhagvanlal Indraji-Bühler, Ind. Ant. Vol. VII. p. 257 ff.; 1890 Bühler, Sitzungsber. Wien. Ak. Wiss. Vol. CXXII, No. XI, p. 45 ff.; 86 ff.; 1895 Prakrit and Sanskrit Inscriptions of Kattywar, p. 18 f., No. 2, and Plate XVI; 1905 Kielhorn, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 36 ff., and Plate; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. IIX ff., No. 38.

— rājāö mahākshatrapasya sugrihīta-nāmnah svāmi-Chashṭanasya pautra
h putrasya rājūō mahākshatrapasya gurubhir abhyasta-nāmnō Rudradāmnō varshē dvisaptatitam[ē] 70 2 Mārggasirsha-bahula-prat[i]

Sanskrit. Fragment. Records the restoration of the lake Sudaršana situated at some distance from Girinagara. The lake, originally constructed by the Vaišya Pushyagupta, the provincial governor (rāshtriya) of the Maurya king (rājan) Chamdragupta, and subsequently adorned with conduits by the Yavana king (rājan) Tushāspha for Ašoka the Maurya, had been destroyed during a storm at the date given above by the waters of the Suvarpasikatā, Palāšini and other streams of mount Ūrjayat. The work was executed by the minister (amātya) Suvišākha, the son of Kulaipa, a Pahlava, who had been appointed by the king to rule the whole of Ānartta and Surāshtra. The inscription records besides that the king (rājan) mahākshatrapa Rudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Rudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Rudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Rudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Rudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Rudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the king (rājan) mahākshatrapa Kudradāman, the son's son of the kudradāman the kudradāman the kudr

Yaudhēyas; that he twice defeated Sātakarņi, the lord (pati) of Dakshināpatha, but on account of the nearness of their connection did not destroy him; and that he himself acquired the title of mahākshatrapa.

- 967. Year 127.—Gaḍha (Jasdan) pillar inscription of the time of rājan mahākshatrapa svāmi-Rudrasēna.—1868 Bhau Daji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VIII. p. 284 f., and Plate; 1883 Hoernle, Ind. Ant. Vol. XII. p. 32 f.; 1890 note by Bhagvanial Indraji, Journ. Roy. As. Soc. 1890, p. 652; 1895 Prakrit and Sanskrit Inscriptions of Kattywar, p. 22 f., No. 4, and Plate XVIII; 1896 note by Bhagvanial Indraji, Bombay Gazetteer, Vol. I. Part 1, p. 43; 1908 note by Rapson, Catalogus of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. LXII, No. 42.

Varshē 100 20 7 Bhādrapadabahulasa 5 . . . rājāo mahākshatrapasya svāmi-Rudrasēnasya.

- Mixed dialect. Records the erection of a satra by the brothers of the son of Pranathaka, the grandson of Khara, of the Manasa gōtra. The inscription gives the following pedigree: rājan mahākshatrapa bhadramukha svāmi-Chashtana, his son rājan kshatrapa svāmi-Jayadāman, his son rājan mahākshatrapa bha[dramukha] svāmi-Rudradāman, his son rājan mahākshatrapa bhadramukha svāmi-Rudrasiha (Rudrasimha), his son rājan mahākshatrapa svāmi-Rudrasēna. There is some doubt about the last figure of the date of the year, which may be 6.
- 968. Vakālā stone inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 289, No. 1, and Plate II. Prakrit. Of Satumadana (Satrumardana).
- 969. Vakālā stone inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 289, No. 2, and Plate II.
 Prakrit. Of Datā (Dattā), the Bhēmi (daughter of Bhēma).
- 970. Vakālā (now Gās) stone inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. S.c. Vol. XV. p. 290, No. 3, and Plate. Prakrit. Of Badhu.
- 971. Vakālā (now Gās) stone inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 290, No. 4, and Plate.
 Prakrit. Of Koda Kalavāda.
- 972. Vakalā (now Gās) stone inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 290 f., No. 5, and Plate.

 Prakrit. Of Ugudêvā (Ugradēvā ?).

- 973. Padaņa rock inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 321 f., No. A, and Piate II.

 Prakrit. The western grove (ārāma) of the Vāsāa (Vāsāka) mountain.
- 974. Padapa rock inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 322, No. B, and Plate II.

 Prakrit. And the eastern grove (ārāma) of Kōsikaya (Kaušikēya).
- 975. Padaņa rock inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 322 f., No. C, and Plate II.

 Prakrit. The mountain, the residence of sidhas (siddhas) all about. (?)
- 976. Padaņa rock inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 323, No. D, and Plate II.

 Prakrit. No meaning has been made out. Mentions a bumhachāri (brahmachārin) and husbandmen (? kuḍabika).
- 977. Padaņa rock inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 319; 323, No. E, and Plate III.
 Prakrit. Sadhamusala.
- 978. Padaņa rock inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 320; 324, No. F, and Plate III.
 Prakrit. Musaladatta. Compare No. 981.
- 979. Padaņa rock inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 320; 324, No. G, and Plate III.

 Prakrit. The step of Rāma (? Rāmaikamō).
- 980. Padana rock inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 320; 324, No. H, and Plate III.
 Prakrit. The footprint of Namdin (Namdipaum).
- 981. Padaņa rock inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 320; 324 f., No. I, and Plate III.
 Prakrit, Musaladatta. Compare No. 978.
- 982. Padaņa rock inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 320; 325, No. J, and Plate III.

 Prakrit. Jirāsamdhadatta.
- 983. Padaņa rock inscription.—1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 320; 325, No. K, and Plate III.
 Sanskrit. The Buddhist creed.
- 984. Kaphēri Buddhist cave inscription —1847 Bird, Hist. Res. Plate XL, 2; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 3, No. 1, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 74, No. 1, and Plate LI.

 Mixed dialect. The physician (vaidya) Nappa. Rāpa (?). Bhāskara. Bhāravi. Chelladēva. Boppai (Võpadēva). Bhaṭṭa Khasu.

- 985. Kanhēri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XL, 1; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 15 f., No. 2, and Plate, No. 3; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 3, No. 2, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 75, No. 2, and Plate LI. Prakrit. A seat (? sata), the gift of Nākaņaka (Nāga), the Nāsikaka (inhabitant of Nāsika).
- 986. Kauhēri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XL, 3; 1853 Stevenson-Brett; Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 15, No. 1, and Plate, No. 1; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 3, No. 3, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 75, No. 3, and Plate LI. Prakrit. A cistern (paniyaka), the gift of the goldsmith (swanako(kā)ra) Samidata (Svāmidatta) of Kaliyana (Kalyāna) together with the Order (sagha).
- 988. Kaphēri Buddhist cave inscription,—1847 Bird, Hist. Res. Plate XLII, 10; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 27 f., No. 13, and Plate, No. 19; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 3, No. 5, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 76, No. 5, and Plate LI; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 598.

Prakrit. Fragment. Records various gifts: an endowment was given to the monks (pavayita); some three objects were made in the Soparakāhāra (district of Sūrpāra); a chaitya house (chēti . .), a hall of reception (upathānasāla) and cells (ōvaraka) were built in the Abālikāvihāra (Ambālikāvihāra) at Kāliapa (Kalyāna); a chaitya building (chētiaghara) and thirteen cells (ōvaraka) were built and endowed in some vihāra at Patithāna (Pratishīhāna); a temple (kuti) and a hall (kodhī) were excavated in Rājatalāka Paithānapatha (Pratishīhānapatha); a monastery (saghārāma) with endowment was built at the vihāra of Sadasēvājū (?).

- 989. Kaphēri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XLI, 6; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 14, No. 1, and Plate, No. 2; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 3 f., No. 6, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 77, No. 6, and Plate LI. Sanskrit. An image of Bhagavat, the gift of the Sākya monk (Šākyabhikshu) Buddhaghōsha, the guardian(?) of the great gandhakufi (mahāgandhakufīvārika!), the pupil (sishya) of bhadanta Dharmmavatsa, a teacher of the Tripiṭaka (traipitakōpāddhyāya), who follows the religion of Buddha Bhagavat.
- 990. Kanheri Buddhist image inscription.—1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 16 f., No. 3, and Plate, No. 18; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 4, No. 7, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 77, No. 7, and Plate LI. Sanskrit. Gift of the Śākya monk (Śākyabhikshu) Dharmmagupta.
- 991. Kapheri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XL, 4; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 17, No. 4, and Plate, No. 5; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 4, No. 8, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 77, No. 8, and Plate LI. Sanskrit. Fragment. Beginning of the Buddhist creed.
- 992. Kanhēri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XL, 5; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 4, No. 9, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 77, No. 9, and Plate LI. Sanskrit. Gift of the teacher (āchāryya) Buddharakshita with the wish that all living beings may become Buddhas.
- 993. Kanhēri Buddhist stāpa inscription.—1847 Bird, Hist, Ros. Plate XLI, 7; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 30, No. 17, and Plate, No. 17; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 4, No. 10, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 78, No. 10, and Plate LI. Prakrit. The stāpa (thuba) of the elder (thēra) bhayata (bhadanta) Dhamapāla (Dharmapāla), the gift of Sivapālitanikā (Sivapālitā), wife of the treasurer (hēranika) Dhamanaka (Dharma).
- 994. Kanhēri Buddhist tank inscription of the time of Vāsishthiputra Šri-Sātakarņi.—1847
 Bird, Hist. Res. Plate XLI, 8; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc.
 Vol. V. p. 14 f., No. 2, and Plate, No. 6; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc.
 Vol. VI, p. 4, No. 11, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 78.
 No. 11, and Plate LI; 1895 note by Bhandarkar, Early History of the Dekkan,³
 p. 21 f.; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p.
 LI, No. 17.
 - Sanskrit. Fragment. A water-cistern (pāniyabhājana), the gift of the minister (amātya) Satēraka. Mentions besides the queen (dēvī) of [Vā]sishṭhīputra Śri-Sāta[karṇi], descended from the race of the Kārddamaka kings (rājan), daughter of the mahākshatrapa Ru
- 995. Kaphèri Buddhist tank inscription.—1847 Bird, Hist. Res. p. 56, No. 12, and Plate XLI, 9 (right half); 1852 Stevenson, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 132 f., No. 1, and Plate; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 19, No. 7, and Plate, No. 9; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 5, No. 12 and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 78, No. 12, and Plate LI.

- Prakrit. A cistern (podhi), the gift of the lay-worshipper (upāsaka), the merchant (nēgama) Samika (Svāmika) from Sopāraga (Śūrpāraka).
- 996. Kapbēri Buddhist tank inscription.—1847 Bird, Hist. Res. p. 56, No. 12, and Plate XLI, 9 (left half); 1852 Stevenson, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 133 f., No. 2, and Plate; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 19, No. 6, and Plate, No. 8; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 5, No. 13, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 78 f., No. 13, and Plate LI.

Prakrit. A cistern (pōḍhā), the gift of Sulasadata (Sulasadatta), son of the treasurer (hēranika) Rōhanimita (Rōhinimitra), the Chēmulaka (inhabitant of Ohēmula.) Compare No. 1033.

- 997. Kanheri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 5, No. 14, and Plate.
 Sanskrit(?). Not read.
- 998. Kaphēri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plates XLVII, 24, and XLII, 13; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 21 ff., Nos. 9 and 10, and Plate, Nos. 11 and 12; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 6, No. 16, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 80 f., No. 16.
 - Prakrit. A cave (lēna), a water-cistern (pāniyapādhā), benches for sitting on (āsanapēdhikā), a chair (? pidha) and a walk (chakama), the gift of the merchant (nēgama) Dhama . . . (Dharma . . .), son of Sivamita (Sivamitra), the Kāliya[naka] (inhabitant of Kalyāna), together with Budhaka (Buddhaka) and his whole family to the congregation of monks (bhikhusagha) of the four quarters. Also endowment. Also gift of a house with two apartments (bagabha or bigabha) and of a quadrangular dining-hall (bhōjanachātusāla) in the vihāra at Kāliyaṇa (Kalyāna) in the Gamdhārikābhami. Endowment for these, viz. a house (nivēsaṇa) in the Mukuḍasivayivā.
- 999. Kaphēri Buddhist cave inscription —1847 Bird, Hist. Res. Plate XLVI, 23; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 6, No. 17, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 81, No. 17.

 Prakrit. A cave (lēņa), the gift of the monk (pavajita) Āņada (Ānanda), brother of the teacher (ācharia) bhayata (bhadanta) Atara (? Antara), to the Order (sagha). Also endowment.
- 1000. Kanhēri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. p. 57 f., No. 15, and Plate XLV, 16; 1853 Stevenson-Brett, Jeurn. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 17 ff., No. 5, and Plate, No. 7; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 6, No. 18, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 81 f., No. 18. Prakrit. A cave (lēna) and a cistern (pōdhī), the gift of the merchant (nēgama) Isipāla (Rishipāla), son of the merchant (nēgama) Golaņaka, the Kaliaņaka (inhabitant of Kalyāna), together with his family in bonour of his parents. Also endowment of a field in the village (gāma) of Saphāü, for the support of the monk and repairs of the porch (matapa) and the pavāda(?).
- 1001. S. 8.—Kauhēri Buddhist cave inscription of the time of rājan M[ā*]dhariputa svāmi-Sakasēna.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 6 f., No. 19, and Plate; 1877 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XII. p. 407 f., and

Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 60 f.; 1883 Buhler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 79, No. 14, and Plate LI; 1895 note by Bhandarkar, Early History of the Dekkan, p. 20, note 1; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. XLVII, No. 5.

—raño Madhariputasa svāmi-Sakasēnasa savachharē 8 gi pa 5 diva 10 ētāya puvāya.

Prakrit. Establishment of a cave (lēna) by the merchant (nēgama) and householder (gahapati). ti, son of the merchant (nēkama) Venhunarīdi (Vishnunandin), the Kaliyanaka (inhabitant of Kalyāna), together with the venerable (āyyāka) . . . , with his father Venhunadi (Vishnunandin), his mother Bōdhisamā, his brother . . . hathi (. . . hastin), and all his relatives. Compare No. 1002.

1002. Kanhêri Buddhist cave inscription of the time of rājan M[ā*]dhariputa seāmi-Sakasēna.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 7, No. 20, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 82, No. 19; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 598; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. XLVII, No. 6.

-raño Ma[dhariputasa] svāmi-Saka[sēnasa] divā 10

Prakrit. Fragment. Records the gift of a cave (lēna). The following names can be made out: the son of Venhunadi (Vishnunandin); Hālanikā; the venerable (āyyaka) Lā. . . ; Dhāmā; Buddhakaya (?). Compare No. 1001.

- 1003. Kanhēri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 7, No. 21, and Plate.
 Prakrit. Not read.
- 1004. Kanbëri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 7, No. 22, and Plate.
 Prakrit. Only the word Parigahita.
- 1005. Kanhēri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. p. 58, No. 16, and Plate XLII, 12; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 7, No. 23, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 82, No. 20. Prakrit. A cave (lēna), the gift of the jeweller (manikara) Nāgapālita, the [Sop]ārayaka (inhabitant of Sūrpāraka), with his family.
- 1006. Kanhēri Buddhist cave inscription.—I861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 7, No. 24, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 83, No. 21; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 598 f. Prakrit. A cave (lēna) and a water-cistern (pāniyapōdhē), the gift of the nun (pavaītikā), the older (thērē) Poyakiasaņā, pupil (atēvāsinē) of the elder (thēra) bhayamta (bhadanta) Ghosa (Ghōsha), with her sister and the samanapapaakas (?) to the congregation of the monks (bhikhusagha) of the four quarters. Also endowment.
- 1007. Kaphēri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 7 f., No. 25, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 83, No. 22. Prakrit. Fragment. A cave (lēņa), a cistern (pōḍhī) and a hall (koḍhī), the gift of Kapha (Krishna) of the elder (thēra) bhayata (bhadanta) Hālaka. Also endowment for the benefit of the congregation of the monks (bhikhusagha).

- 1008. Kanhêrî Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. S, No. 26, and Plate. Frakrit. Not read.
- 1009. Kanberi Buddhist cave inscription.—1847 Bird. Hist. Res. Plate XLV, 17; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 8, No. 27, and Plate. Prakrit. Not read.
- 1010. Kanhēri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. S, No. 28, and Plate. Prakrit, Not read.
- 1011. Kanheri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XLVI, 19; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 8, No. 29, and Plate. Prakrit. Not read.
- 1012. Kanheri Buddhist cave inscription.—1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 29 f., No. 16, and Plate, No. 16; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 8, No. 31, and Plate; 1853 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V p. 83 f., No. 23.
 Prakrit. The cave (léna) of the elder (théra) bhayata (bhadanta) Mitabhūti (Mitrabhūti), the gift of the Sagarapaloganas (?).
- 1013. Kacheri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XLVI, 21 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 29, No. 15, and Plate. No. 15; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 8, No. 32, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vel. V. p. 84, No. 24.

 Prakrit. A cave (lēņa) and a cistera (pēdhī) on Kunhasēla (Krishņaśaila), the gift of the lady (bhēigī) Dāmilā, the A[pa]rādtikā(?) (native of Aparānta), the [Kāli]anikā (inhabitant of Kalyāna).
- 1014. Kanheri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XLVII, 27; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 29, No. 14, and Plate, No. 14; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 8, No. 33, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 84, No. 25. Prakrit. A cave (lēņa) and a cistern (pēdhi), the gift of the nun (bhikhuni) Dāmilâ, the Kāllyiņikā (inhabitant of Kalyāna).
- 1015. Kanheri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 9, No. 34, and Plate. Prakrit. Not read.
- 1016. Kapleri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XLVI, 20; 1853 Stevenson, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 31, No. 18, and Plate, No. 20; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 9, No. 35, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 84, No. 26.

 Prakrit. Fragment. Gift of a cave (léna) and a water-cistern (pānīyapādhī) by the monk (pavajīta) . . . mitanaka (. . . mitra), papil (aintévāsīn) of . . pāla, to the congregation of the monks (bhikhusagha) of the four quarters. Also endowment.

- 1017. Kapheri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 9, No. 36, and Plate.
 Prakrit. Not read.
- 1018. Kaphëri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XLVII, 25; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 9, No. 37, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 85, No. 27.
 - Mixed dialect. Fragment. Dedication of a cave (lēna) and a water-cistern (pāniyya-pādhī) . . . as the property of the Bhādrajanijjas (Bhādrāyanīyas), for the merit of the donor's mother Namdinikā (Nandinikā). One cell (ōvaraka) is the gift of the donor's wife, the housewife (gharinī) Dāmi[lā]. The merit is assigned to the donor's sons Je . . , his nephew Āryyaghōsha, his daughter Samghadēvanikā, and other relatives.
- 1019. Kanhëri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 9, No. 38, and Plate. Prakrit. Not read.
- 1020. Kanhēri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XIIV, 18; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 20 f., No. 8, and Plate, No. 10; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 9, No. 39, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 85 f., No. 28.

 Prakrit. Fragment. A cave (lēņa) and a water-cistern (pāṇiyapōḍhī), the gift of the nun (pavaītikā) Sāpā (Sarpā), the daughter of the lay-worshipper (upāsaka) Kulapiya (Kulapriya) Dhamanaka (Dharma), the Dhēnukākaṭiya (iohabitant of Dhēnukākaṭa), the female pupil (ātēvāsinī) of the elder (thēra) bhadata (bhadanta) Bödhika, together with her sister Ratinikā and other relatives, to the congregation
- 1021. S. 9.—Kanhēri Buddhist cave inscription, probably of the time of [Hāritiputa Vinhukada-Chuṭukulāuanda Sātakamni].—1847 Bird, Hist. Res. Plate XLVII, 26; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 10, No. 40, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 86, No. 29; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 599; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. LIII, No. 24.

of monks (bhikhusagha) of the four quarters. Also endowment.

- dasamiya ētāya puvāya. sava 9 (?) kēma . . . sa
- Prakrit. Fragment. A cave (lēna), the gift of Nāgamulanikā (Nāgamūlā), daughter of a mahārāja and a mahābhēji, a mahārathinī (wife of a mahārathi), mother of Khamdanāgasātaka (Skandanāgasātaka) and sister of the mahābhēja Ahija (?) Dhēnasēna (?), to the congregation of monks (bhikhusagha). Compare No. 1186.
- 1022. Kanheri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 10, No. 41, and Plate. Prakrit. Not read.
- 1023. Kanheri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 10, No. 42, and Plate. Prakrit. Not read.

- 1024. S. 16.—Kaphēri Buddhist cave inscription of the time of rajan Götamiputa simi-Siriyaña-Sātakaņi.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XLIV, 14; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 23 ff., No. 11, and Plate, No. 13; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 10, No. 44, and Plate; 1883 referred to by Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 312; 1883 Bühler. Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 79 f., No. 15, and Plate LI; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morganl. Ges. Vol. L. p. 598.
 - —raño Götamiputasa sămi-Siriyaña-Sātakaņisa sata(va)chharê 10 6 gimhana pakha 1 (?) dirasē 5.
 - Prakrit. A cave (lėna) and a hall (kodhi) on mount Kachasela (Krishnaiaila), the gift of the lay-worshipper (upāsaka) Apareņu, the son of Anada (Ānanda), a merchant (nēgama) residing at Kālayāņa (Kalyāņa), together with his family, with his wife (kudubini) Juvāriņikā, the mother of Anada (Ānanda), with his son Anada (Ānanda), with his daughters-in-law, (the wives of) Ana. (Ānanda), . . . Dhāmadēvì (Dharmadēvi), and others, to the congregation of monks (bhikhusagha) of the four quarters. Also endowment with money and the field of a half-paṇa-owner (ādhapaṇakhetiya) in the village (gāma) of Magalathāna (Maṅgalasthāna).
- 1025. Kanhēri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 10, No. 45, and Plate. Prakrit. Not read.
- 1026. Kanhēri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 11, No. 46, and Plate. Prakrit. Not read.
- 1027. Kanhéri Buddhist cave inscription —1861 West, Journ. Bo. Br. Rey. As. Soc. Vol. VI. p. 11. No. 47 and Plate.
 Prakrit. Not read.
- 1028. Kapheri Buddhist cave inscription. -1861 West, Journ. Bo. Br., Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 11, No. 48, and Plate. Prakrit. Not read.
- 1029. Kapheri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 11, No. 49, and Plate.
 Prakrit. Not read. Probably a portion of No. 1028.
- 1030. Kacheri Buddhist cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 11, No. 50, and Plate.
 Prakrit. Not read.
- 1031. Kanheri Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XLVI, 22; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 11 f., No. 52, and Plate, Prakrit. Not read.
- 1032. Kaphēri detached rock inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 12, No. 53, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 86, No. 30, Prakrit. A path († patha), the gift of the blacksmith (kamāra) Nada (Nanda), from Kaliyaņa (Kalyāna).

- 1033. Kaphēri Buddhist stone inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 12. No. 57, and Plato.

 Prakrit. A path (? patha), the gift of Dhamanaka (Dharma), son of the treasurer (hēranaka) Röhaņimita (Röhinimitra), the Chēmulaka (inhabitant of Chēmula). Compare No. 996.
- 1084. Kanheri Buddhist stone inscription. -1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 12 f., No. 58, and Plate. Prakrit. Not read.
- 1035. Mahâkal cave inscription.—1799 Wilford, Asiat. Res. Vol. V. p. 140, No. 5, and Plate; 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 13, No. 60, and Plate. Prakrit. Gift of a Brahman (bramhana) of the Gotama (Gautama) götra.
- 1036. Jögésvari cave inscription.—1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 14, No. 63, and Plate. Prakrit. Not read.
- 1037. Kuḍā Buddhist cave inscription. -1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 171 f., No. 5, and Plate; 1878 Jacobi, Ind. Ant. Vol. VII. p. 253 f., No. 1; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 4 f., No. 1, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 84, No. 1, and Plate XLV; 1896 corrections (partly wrong) by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. pp. 588; 592.
 - Prakrit. A cave (lēna), the gift of Sivabhūti (Šivabhūti), son of Sulasadata (Sulasadatta) and Utaradattā (Uttaradattā), writer (lēkhaka) to the mahābhōja Mamdava (Māndava) Khamdapālita (Skandapālita), the son of the mahābhōjī Saḍagērī Vijayā, together with his wife Namdā (Nandā). Compare No. 1045.
- 1038. Kudā Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 5, No. 2, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 84, No. 2.
 Prakrit. Fragment. A cave (lēna), (the gift) of . . . bhūti.
- 1039. Kudā Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 5, No. 3, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 84, No. 3.
 Prakrit. Fragment. Gift of two cisterns (podhi).
- 1040. Kudā Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvanial Indraji-Burgess, Inscr. Oave-Temp. W. Ind. p. 6, No. 4, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 84, No. 4.

 Prakrit. Fragment. Gift of a cave (lēna). Mentions the monk (pavaīta) Goā . . ., the pupil (atēvāsin) of the elder (thēra) bhadamta Sivadata (Sivadatta), and Sātimitā (Svātimitrā).
- 1041. Kudā Buddhist cave inscription.—1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 173, No. S, and Plate; 1878 Jacobi, Ind. Ant. Vol. VII. p. 254, No. 2; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 6 f., No. 5, and Plate, with corrections by Bühler; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV.

p. 85, No. 5, and Plate XLV; 1896 corrections by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent, Ges. Vol. L. p. 592.

Prakrit. A cave (lena) and a cistern (podhi), the gift of the nun (pavayitika) Padumanikā (Padmanikā), daughter of the nun (pāvayitikā) Nāganikā, the sister's daughter of the elders (thera) bhadata (bhadanta) Patimita (? Scatimitra ?) and bhadamta Agimita (Agnimitra), together with her pupil (atēvāsinī) Bodhi and her pupil (ātivāsinī) Asālhamita (Ashādhāmitrā).

1042. Kuda Buddhist cave inscription.-1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 8, No. 6, and Plate. Mixed dialect. Fragment. Records the gift of somebody who seems to be called a

worshipper of the congregation (saghōpasāyika ?).

1043. Kuda Buddhist cave inscription .- 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 8, No. 7, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 85, No. 7, and Plate XLV. Mixed dialect. Gift of the female Sakya lay-worshipper (Sakyöpasikā) Vyaghrakā.

1044. Kuda Buddhist cave inscription .- 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 9, No. 8, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 85, No. 8, and Plate XLV. Mixed dialect, Fragment. Gift of some Sakya monk (Sakyabhikshu),

- 1045. Kuda Buddhist cave inscription, -1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 173 f., No. 9, and Plate; 1878 Jacobi, Ind. Ant. Vol. VII. p. 254 f., No. 3; 1880 correction by Jacobi, Ind. Ant. Vol. 1X. p. 28; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 9 f., No. 9 and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arck. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 85, No. 6, and Plate XLV; 1895 note by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 212; 1896 corrections by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 592.
 - Prakrit. A cave (lena), the gift of Sivama (Sivama), the youngest after the writer (lēkhaka) Sivabhūti (Sivabhūti) among the brothers, the sons of Sulasadata (Sulasudatta) and Utaradata (Uttaradatta), who are servants of the mahabhoja Mamdava (Mandava) Khamdapalita (Skandapalita), the son of the mahabhoji Sadagerl Vijaya, together with his wife Vijaya. The stone-carving (selarapakama) (was the gift) of his sons Sulasadata (Sulasadatta), Sivapalita (Sivapalita , Sivadata (Sivadatta), Sapila (Sarpila), and the pillars (thambha) that of his daughters Sapa (Sarpa). Sivapālitā (Šivapālitā), Sivadatā (Šivadattā), Sulasadatā (Sulasadattā). Compare No. 1037.
- 1046. Kuda Buddhist cave inscription .- 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 172 f., No. 7, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 11, No. 10, and Plate; 1883 Buhler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 86, No. 9, and Plate XLV. Mixed dialect. Gift of the Sakya monk (Sakyabhikshu) Buddhasigha (Buddhasimha), for the merit of his parents and the bhafaka (? bhaffaraka ?).
- 1047. Kudā Buddhist cave inscription. -1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 11, Nos. 11 and 12, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 86, No. 10, and Plate XLV. Mixed dialect. (An image), the gift of the Sakya monk (Sakyabhikshu) Samghadeva,

and gift of a capital invested in the Chemdina field for the expense of lamps to

Buddha.

- 1048. Kudā Buddhist cave inscription.—1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 172, No. 6, and Plate; 1878 Jacobi, Ind. Ant. Vol. VII. p. 255, No. 4; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 12 f., No. 13, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 86, No. 11, and Plate XLV; 1895 note by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss, Phil. Hist. Kl. 1895, p. 212 f.
 - Prakrit. A cave (lēna), the gift of the physician (veja) Somadēva, the son of the lay-worshipper (upāsaka), the Māmakavejiya physician (veja) Isirakhita (Rishirakshita), and his sons Nāga, Isirakhita (Rishirakshita), Sivaghosa (Sivaghōsha), and his daughters Isipālitā (Rishipālitā), Pasā (Pushyā), Dhammā (Dharmā) and Sapā (Sarpā).
- 1049. Kudā Buddhist cistern inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 13, No. 14, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 86, No. 12, and Plate XLV.
 Prakrit, Gift of Kumāra Madava (Māndava), son (?) of S[i]vama (Sivama), the chief (? para) of the Mamdavas (Māndavas).
- 1050. Kudā Buddhist cave inscription.—1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 170, No. 1, and Plate; 1881 Bhagvanial Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Tomp. W. Ind. p. 14, No. 15, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 86, No. 13, and Plate XLV.
 - Prakrit. A chwitya building (chētiyayhara), the gift of the Brāhman woman (bummani) Bhayilā (Bhrājilā), wife of the Brāhman (bummhana) lay-worshipper (upāsaka) Ayitila.
- 1051. Kudā Buddhist cave inscription.—1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 170, No. 2, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 14, No. 16, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 86, No. 14, and Plate XLV.
 - Prakrit. A cave (lêna), the gift of the gardener (malākāra) Sivapirita (Šivaprita), son of the gardener (mālākāra) Vadhuka.
- 1052. Kudā Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 14, No. 17, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 86, No. 15.
 - Prakrit. Fragment. Mentions a Mamdavi (Mandavi), the daughter of some mahābhōja.
- 1053. Kudā Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind., p. 15, No. 18, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 87, No. 16, and Plate XLV.
 - Prakrit. The cave (lēna) of Gōyammā (Gautamī?), the daughter of the royal minister (rājamacha) Hāla.
- 1054. Kudā Buddhist cave inscription.—1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Sec. Vol. V. p. 170, No. 3, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 15, No. 19, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 87, No. 17, and Plate XLV.
 - Prakrit. A cave (lēna), the gift of Vijayanikā, daughter of the mahābhōya (mahābhōja) Sāḍakara Sudamsana (Sudariana).

- 1055. Kndā Buddhist cave inscription.—1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo, Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 171, No. 4, and Plate; 1878 Jacobi, Ind. Ant. Vol. VII. p. 256, No. 7; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 16, No. 20, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 87, No. 18, and Plate XLV.
 - Prakrit. A cave (lēna), the gift of the ironmonger (lāhavāniyiya) Mahika, the Karahākadaka (inhabitant of Karahākada).
- 1056. Kudā Buddhist tank inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Iremp. W. Ind. p. 16, No. 21, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 87, No. 19.
 - Prakrit. The bathing tank (sanā[napādht]) of the householder (gahapati), the banker (sethin) Vasala.
- 1057. Kudā Buddhist cave inscription.—1881 mentioned by Bhagranlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 16, No. 22, and Plate; 1883 referred to by Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 87. Prakrit. Not read.
- 1058. Kudā Buddhist cave inscription.—1878 Jacobi, Ind. Ant. Vol. VII. p. 256, No. 8: 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 17, No. 23, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 87, No. 20, and Plate XLVI; 1895 correction by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 212; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. II. p. 592. Prakrit. Gift of a chaitya building (chētiyaghara) and a cell (uyaraka) by the Adhagachhaka (Ārdhagachchhaka) Rāmadata (Rāmadatta), the son of Ahila, and of a cell (uyaraka) by his wife Velidatā (Vēllidattā), while the Maindava (Māndava) Kochhipata (the son of a Kantsi) Velidata (Vēllidatta) was mahābhēja.
- 1059. Kudā Buddhist tank inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 18, No. 24, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 87, No. 21.
 Prakrit. Fragment, Mentions the female disciple (āmtivāsinī) Bodhi.
- 1060. Kudā Buddhist cave inscription.—1878 Jacobi, Ind. Ant. Vol. VII. p. 256, No. 9; 1881 Bhagvanlal Indrajī-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 18, No. 25, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 87, No. 22, and Plate XLVI; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. I. p. 592 f. Prakrit. A cave (lēna), the gift of the nun (pavaitikā) Sapilā (Sarpilā), the disciple (ātieāsiņā) of the elder (thēra) bhayata (bhadanta) Vijaya, with Löhitā and Venhuyā (Vishnukā) and her female disciple (ātieāsiņā) Bödhi.
- 1061. Kudā Buddhist tank inscription.—1878 Jacobi, Ind. Ant. Vol. VII. p. 256 f., No. 10; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 18 f., No. 26, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 88, No. 23, and Plate XLVI.
 - Prakrit. A cistern (pādhī), the gift of the gardener (mālākāra) Magadā[sa] (Mrigadāsa 7).

- 1062, Kudā Buddhist cave inscription.—1878 Jacobi, Ind. Ant. Vol. VII. p. 257, No. 11; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 19, No. 27, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 88, No. 24, and Plate XLVI.
 - Prakrit. Fragment. A cave (lēṇa), the gift of the trader (sathavāha) and house-holder (gahapati) Nāga, the son of Svāmin(?).
- 1063. Kuḍā Buddhist cave inscription.—1878 Jacobi, Ind. Ant. Vol. VII. p. 257, No. 12; 1881 Bhsgvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 19, No. 28, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 88, No. 25, and Plate XLVI.
 Prakrit. A cave (lēng), the gift of the banker (sethin) Vasulaņaka. Compare No. 1064.
- 1064. Kudā Buddhist tank inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 20, No. 29, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 88, No. 26, and Plate XLVI; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgonl. Ges. Vol. L. p. 593.
 Prakrit. A cistern (pōḍhi), the gift of the banker (sethin) Vasulaņaka. Compare No. 1063.
- 1065. Kudā Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 20 f., No. 30 and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 88, No. 27, and Plate XLVI; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 593.
 Prakrit. A cave (léna), the gift of Sivadatā (Šivadattā), wife of the trader (sathavāha) Vēhamita (Vēdamitra?) and mother of Pusaņaka (Pushya).
- 1066. Kudā Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 21, No. 31, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 88, No. 28, and Plate XLVI. Prakrit. Fragment. A cave ([lē]na), the gift of Asāļamita (Ashādhāmitra), the son (?) of the trader (sathawāha) Acha[la]dāsa.
- 1067. Nädsur cave inscription.—1891 Hultssch, Account of the Caves at Nadsur and Karsambla, p. 6, and Plate VI; 1891 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 231 f. Prakrit. Made by Godata (Gödatta), the son of Sivaganaka (Śwaganaka).
- 1068. Nådsur Buddhist cave inscription.—1891 Hultzsch. Account of the Caves at Nadsur and Karsambla, p. 7, and Plate VI; 1891 note by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. V. p. 232.
 Prakrit. Fragment. (Gift) of Mita (Mitra), of Sagharakhita (Saingharakshita), of Thupasakha (Stupasakha), the brother of . . . dina, of Sa
- 1069. Ambivale cave inscription.—1881 noticed by Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 66. Not read.
- 1070. Ambivale cave inscription.—1881 noticed by Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 66, note 1.
 Not read.

- 1071. Kondapë cave inscription .- 1861 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VI. p. 14, No. 64, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 9 and 83, and Plate XLIV. Prakrit. Made by Baluka (or Balaka), the pupil (amtévasin) of Kanha (Krishna).
- 1072. Mahad Buddhist cave inscription.-1847 Bird, Hist. Res. Plate XXXIX, 1; 1881 Bhagvanlal Indraji, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 2; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Sure. W. Ind. Vol. IV. p. 88, No. 1, and Plate XLVI; 1896 note (wrong) by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 593; 1905 note by Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 75. Prakrit. Gift of a cave (lena), a chaitya building (chetieghara), eight cells (ovaraka), two cisterns (podhi) on each side of the cave (lena), and a path (? patha) to the cave (lena) by the prince (kumara) Kanabhoa (Kanabhoja) Vhenupalita
- 1073. Mabiid Buddhist cave inscription .- 1847 Bird, Hist. Res. Plate XXXIX, 2; 1883 Bähler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 88 f., No. 2, and Plate XLVI; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 593. Prakrit. Fragment. The gift of a cavo (lena) and a chaitya hall (chetiakodhi) by Vādasiri (Vādasri) [the wife of] Vi . . . the son of the householder (gahapati) and banker (sethin) Samgharakhita (Samgharakshita), and endowment of certain fields (chheta) situated below the caves,
- 1074. Mahad Buddhist cave inscription.-1883 Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. Plate XLVI (Plate only). Prakrit. Fragment. No sense has been made out.
- 1075. Kol Buddhist cave inscription.-1881 Bühler-Burgess, Inser. Cave-Tomp. W. Ind. p. 3; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 89, No. 3, and Plate XLVI. Prakrit. A cave (lena), the gift of the banker (sethin) Sagharakhita (Samghara-- kshita), the son of a householder (gahapati). .
- 1076. Kol Buddhist cave inscription.-1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 89, No. 4, and Plate XLVI. Prakrit. A cave (lena), the gift of Dhamasiri (Dharmairi), daughter of the layworshipper (upāsaka) . . . , wife of Sivadata (Sivadatta).
- 1077. Kol Buddhist cave inscription .- 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 89, No. 5, and Plate XLVI. Prakrit. A cave (lēna), the gift of Sivadata (Sivadatta), the Aghāakasāgāmikiya (inhabitant of the village of Aghatakorsha?) .
- 1078. Bhaja Buddhist cave inscription .- 1844 Bird-D'Ochoa, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. I. p. 443, and Plate; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 160, No. 2, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Incr. Cave-Temp. W. Ind. p. 23, No. 1, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 82, No. 1, and Plate XLIV; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 586. Prakrit. A cell (gabha), the gift of the Naya (Naga ?) Nadasava, the Bhogavata

(inhabitant of Bhogavatt?).

(Vishnupālita).

- 1079. Bhājā Buddhist cistern inscription.—1844 Bird-Westergaard-D'Ochea, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. I. p. 442 f., and Plate, No. 4; 1847 Bird-Westergaard, Hist. Res. Plate Lill, 3; 1850 Wilson, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. III. Part II. p. 52, and Plate; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 159 f. No. 1, and Plate; 1881 Bhagvaulal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 24, No. 2, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 83, No. 7, and Plate XLIV.
 - Prakrit. A cistern (podhi), the gift of the mahārathi Vinhudata (Vishņudatta), the son of a Kôsiki (Kaušiki).
- 1080. Bhājā Buddhist stūpa inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 24, No. 3, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 83, No. 4, and Plate XLIV; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 586 f.
 Prakrit. The stūpa (thupa) of the elder (thēra) bhañainta (bhadanta) Dhamagiri (Dharmagiri).
- 1081. Bhājā Buddhist stāpa inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 24, No. 4, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 82, No. 3, and Plate XLIV; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 587.
 Prakrit. The stāpa (thupa) of the elder (thēra) bhayamta (bhadanta) Ampikinaka.
- 1082. Bhājā Buddhist stūpa inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 25, No. 5, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 82, No. 2, and Plate XLIV. Prakrit. Fragment(?). (The stūpa) of the elder (thēra) bhayamta (bhadanta) Sain-ghadina (Sainghadatta).
- 1083. Bhājā Buddhist stāpa inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 25, No. 6, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 83, No. 5, and Plate XLIV.
 Prakrit. Unfinished. Only the words: of the older (thēra) bhayainta (bhadanta).
- 1084. Bhājā Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 25, No. 7, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 83, No. 6, and Plate XLIV.
 Prakrit. Gift of Bādhā, wife of Hālika (or of a ploughman?).
- 1085. Bhājā Buddhist stūpa inscription.—1844 Bird-Westergaard, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. I. p. 441 f., and Plate, No. 3; 1847 Bird-Westergaard, Hist. Res. Plate LIII, No. 4; 1881 mentioned by Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 25, No. 8, and Plate; 1883 mentioned by Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 83.
 Prakrit. Records the gift of the stūpa (thūbha) by somebody whose name has not
 - Prakrit. Records the gift of the stupa (thubha) by somebody whose name has not been made out.
- 1086. Kārlē cave inscription.—1834 Stevenson, Journ. Beng. As. Soc. Vol. III. p. 498, No. B, with facsimile; 1847 Bird, Hist. Res. Plate XXXVIII, 10; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 156, No. 13, and Plate. Prakrit. Only the word sidha (siddham). Perhaps only part of another inscription.

Q 2

- 1087. Kärle Buddhist cave inscription.—1834 Stevenson, Journ. Beng. As. Soc. Vol. III. p. 498, No. A, with facsimile; 1847 Bird-Smyttan, Hist. Res. p. 60, No. 22, and Plate XXXVI, 3; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 152 f., No. 2, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 28, No. 1, and Plate, with correction by Bühler; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 90, No. 1, and Plate XLVII; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 593; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 48 f., No. 1, and Plate III.
 - Prakrit. Establishment of a cave-dwelling (sēlaghara), the most excellent one in Ja[m]badipa (Jambēdvipa), by the banker (sethin) Bhutapāla (Bhūtapāla) from Vējayamti (Vaijayanti).
- 1088. Kārlē Buddhist lion-pillar inscription.—1799 Wilford, Asiat. Res. Vol. V. p. 139, No. 4, and Plate; 1834 Stevenson, Journ. Beng. As. Soc. Vol. III. p. 498 f., No. E, with facsimile; 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 468, with facsimile; 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1044, No. 1, and Plate LIII; 1847 Bird-Wilson, Hist. Res. p. 51, No. 2, and Plate XXXVI, 1; 1853 Wilson, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 372, and Plate XII, 1; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 152, No. 1, and Plate; 1856 correction by Stevenson, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 426 f; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 28 f., No. 2, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 90, No. 2, and Plate XLVII; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 49 f., No. 2, and Plate IV. Prakrit. A lion-pillar (sihathabha), the gift of the mahārathi Agimitraņaka (Agnimitra), the Gotiputra (son of a Gaupti).
- 1089. Kārlē Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 29, No. 3, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 90, No. 3, and Plate XLVII; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 593; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 51 f., No. 3, and Plate II. Prakrit. Gift of the elephants (hathin) and the upper and lower rails (vēyikā) before the elephants by the elder (thēra) bhainyainta (bhadanta) Iindadēva (Indradēva).
- 1090. Kärle Buddhist cave inscription.—1847 Bird-Wilson, Hist. Res. p. 55, No. 9, and Plate XXXVII, 8; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 155 f., No. 10, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 29 f., No. 4, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 90, No. 4, and Plate XLVII; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 52, No. 4, and Plate I.
 - Prakrit. Gift of the cave-door (gharamugha) by the perfumer (gamdhika) Simbadata (Simhadatta) from Dhennkakata.
- 1091. Kārlē Buddhist pillar inscription.—1847 Bird-Wilson, Hist. Res. p. 59, No. 20, and Plate XXXVI, 2; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol V. p. 156, No. 12, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 30, No. 5, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 90, No. 5, and Plate XLVII; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 593; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 52 f., No. 5, and Plate III.
 - Prakrit. Gift of Bhāyilā (Bhrājilā), the mother of the householder (gahata)

- 1092. Karle Buddhist pillar inscription .- 1854 mentioned by Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 158, No. 17, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 30, No. 6, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 90, No. 6, and Plate XLVII; 1896 correction by Franke, Zeilschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 593; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 53, No. 6, and Plate IV.
 - Prakrit. Fragment. Making of the door (mugha) of the cave (ghara) by the carpenter (vadhaki) Sāmi (Svāmin), the son of Vēņuvāsa, a Dhēnukākataka (inhabitant of Dhēnukākata.)
- 1093. Karle Buddhist pillar inscription.-1847 Bird, Hist. Res. p. 55, No. 8, and Plate XXXVIII, 11; 1853 Wilson, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 372, and Plate XII, 2; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 156 f., No. 14, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 31, No. 7, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 90, No. 7, and Plate XLVII; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 593; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 53 f., No. 7, and Plate I. Prakrit. Gift of a pillar (thambha) by the Yavana Sihadhaya (Simhadhvaja ?) from Dhenukakata.
- 1094. Kārlē Buddhist pillar inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 31, No. 8, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 91, No. 8, and Plate XLVII; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 54 f., No. 8, and Plate III.
 - Prakrit. Fragment. Gift of the pillar (thabha) by the preacher (bhānaka) Sātimita (Seatimitra), the son of Nadi (?) and the disciple (amterasis) of the elder (thera) of the bhayata (bhadanta) Dhamutariyas (Dharmöttariyas) from Sopāraka (Sārpāraka). Compare No. 1095.
- 1095. Karle Buddhist pillar inscription .-- 1799 Wilford, Asiat. Res. Vol. V. p. 139, No. 3, and Plate; 1847 Bird-Wilson, Hist. Res. p. 54, No. 2 (instead of 6), and Plate XXXVIII, 12; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 157 f., No. 15, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 32, No. 9, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 91, No. 9, and Plate XLVII; 1896 note (wrong) by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 593; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 55, No. 9, and Plate III.
 - Prakrit. Gift of a pillar (thabha) with relies by the preacher (bhānaka) Sātimita (Svatimitra) of the bhayamta (bhadanta) Dhamutariyas (Dharmôttariyas) from Soparaka (Sürpāraka). Compare No. 1094.
- 1096. Kārlē Buddhist pillar inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 32, No. 10, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. p. 91, No. 10, and Plate XLVII; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 55 f., No. 10, and Plate I. Prakrit. Gift of Dhamma-Yavana (Dharma-Yacana) from Dhenukakata.
- 1097. Karle Buddhist pillar inscription .- 1847 Bird, Hist. Res. p. 55 f., No. 11, and Plate L. 13: 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 156, No. 11, and Plate ; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 32 f., No. 11,

- and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 91, No. 11, and Plate XLVIII; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 56, No. 11, and Plate I. Prakrit. Gift of a pillar (thobha) by Mitadevanaka (Mitradera), the son of Usabhadata (Rishabhadatta), from Dhennkakata.
- 1098, Karle Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 33, No. 12, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 91, No. 12, and Plate XLVIII; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 56, No. 12 f., and Plate I. Prakrit. Gift of the nun (bhikhuni) Asadhamita (Ashadhamitra).
- 1009. Karle Buddhist cave inscription of Usabhadata. 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 159, No. 4, and Plate, No. 5; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 33 f., No. 13, and Plate, with corrections by Bühler; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 101, No. 6, and Plate LI; 1896 corrections by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 596; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 57 ff., No. 18, and Plate II; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. LIX, No. 36. Prakrit. Gift of the village (gama) of Karajika to the monks (pavajita) residing

in the caves (lena) at Valuraka for the support of the congregation (sagha) of the four quarters by Usabhadata (Rishabhadatta), the son of Dinika and son-inlaw of the king (rajan), the Khaharata, the khatapa (kshatrapa) Nahapana, who made donations to the brahmanas (brahmana) on the river Banasa (Barnasa) and at Pabhasa (Prabhāsa).

1100. S. 7.—Kārle Buddhist cave inscription of the time of rajan Vasithiputa sami-Siri-Pulumāvi. - 1847 Bird-Mitchell, Hist. Res. p. 58 f., No. 18, and Plate XXXVI, 4; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 153 f., No. 3, and Plate, No. 4; 1881 Bhagvanial Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 34 f., No. 14, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 107 f., No. 17, and Plate LIV; 1896 correction by Franke, Zeitschr, Deutsch, Morgent. Ges. Vol. L. p. 596; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 61 f., No. 14, and Plate II. Rano Vasifhiputasa sīmi-Siri-P[uļumāvisa] savachharē satamē 7 [g]imhapakhē

pachamě 5 [d]ivasé pathamě 1 štáya puváya. Prakrit. Gift of a village (gama) to the community (sagha) of Valuraka (Valuraka), of the Valuraka (Valūraka) caves (lēna), by the mahūrathi Somadēva, son of Vasishi (Vasishihi), the son of the maharathi Mitadeva (Mitradeva), son of

Kösiki (Kauśiki), of the Okhajakiyas.

- 1101. Karle Buddhist cave inscription. 1847 Bird, Hist, Res. Plate XXXVIII, 9; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 155, No. 8, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 35, No. 15, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 91, No. 13, and Plate XLVIII; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 63, No. 15, and Plate I. Prakrit. Gift of two pairs (of figures) by the monk (bhikhu) Bhadasama (Bhadrasarman). Compare No. 1102.
- 1102. Kārlē Buddhist cave inscription.— 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 155, No. 9, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 35, No. 16, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind.

Vol. IV. p. 91, No. 14, and Plate XLVIII; 1902 Senart, Ep. Ind. VII. p. 63, No. 16, and Plate I.

Prakrit. Gift of a pair (of figures) by the monk (bhikhu) Bhadasama (Bhadra-farman). Compare No. 1101.

- 1103. Kärlē Buddhist cave inscription.— 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cace-Temp. W. Ind. p. 35, No. 17, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 91, No. 15, and Plate XLVIII; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 63 f., No. 17, and Plate I.
 Prakrit. Fragment. Gift of a rail (vēyikā) by some female person.
- 1104. Kärle Buddhist cave inscription.— 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Gave-Temp. W. Ind. p. 35 f., No. 18, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 91, No. 16, and Plate XLVIII; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 595; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 64, No. 18, and Plate III.
 Prakrit. A rail (vēyikā), made by Namdika, the gift of the nun (bhikhuni) Kodi,
- Stevenson, Journ. Beng. As. Soc. Vol. III. p. 498, Nos. C and D, with facsimile; 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1048, No. 7, and Plate Lill; 1847 Bird-Mitchell-Wilson, Hist. Res. p. 60, No. 23, and Plate XXXVII, 5-7; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Boy. As. Soc. Vol. V. p. 154 f., Nos. 7, 5 and 6, and Plate, Nos. 7, 3 and 6; 1856 correction by Stevenson, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 427; 1881 mentioned by Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 36, No. 19, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 112 f., No. 20, and Plate LIV; 1895 note by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 213 f.; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. I. p. 597; 1901 correction by Hultzsch, Ep. Ind. Vol. VI. p. 319, notes 1, 2, 3, 5, and 7; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 64 ff., No. 19, and Plate II; 1908 correction by Rapson, Catalogus of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. XLIX, No. 9.

- sava 10 [8] vā pa 4 diva 1.

the mother of Ghunika.

- Prakrit. Fragment. Order of to Pariguta (? Parigupta), the officer (amacha) at Māmāda, regarding the gift of the village (gāma) of Karajaka in the Māmāla district (āhāra) on the northern road as monks' lend (bhikhuhala) to the mendicant (pavajita) friars (bhikhu) dwelling in the Vāluraka (Vālūraka) caves (lēna) for the support of the school (nikāya) of the Mahāsaghiyas (Mahāsāmghikas). The plates were prepared by Sivakhadaguta (Śivaskandhagupta). The second figure of the date of the year is uncertain.
- 1106. S. 24.—Karle Buddhist cave inscription of the time of rajan Vasithiputa Siri-Pulumavi.— 1847 Bird, Hist. Res. p. 54, No. 7, and Plate LHI; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 158 f., No. 18, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Tomp. W. Ind. p. 36 f., No. 20, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 113 f., No. 21, and Plate LIV; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 597; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 71 ff., No. 20, and Plate III; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. 11, No. 16.

- rañā Vāsifhiputasa Siri-Puļumāvisa savachharē chatavisē 20 4 hēmaintāna pakhē tatiyē 3 divasē bitiyē 2.
- -ēkavisē savachharē.
- Prakrit. Gift of a nine-celled (navagabha) hall (madapa) to the community (sagha) of the four quarters as the special property of the Māhāsaghiyas (Mahāsāmghikas), by Harapharaņa, the son of Setapharaṇa, the Sovasaka (Sauvarshaka), living at Abulāmā. It was completed in the year 21. In the last portion Budharakhita (Buddharakhita) and his mother, a lay-worshipper (upāsikā), are mentioned.
- 1107. S. 5.—Karle Buddhist cave inscription.— 1854 mentioned by Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 158, No. 16, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Bargess, Inscr. Cave-Temp W. Ind. p. 37, No. 21, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 92, No. 18, and Plate XLVIII; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 73 f., No. 21, and Plate IV.

Prakrit. Fragment. Gift of a cave (lēna) and a cistern (pōḍhā) to the community (saṃgha) of monks (pavaita) by some female disciples (atēvāsinā) of some bhayata (bhadanta).

- 1108. Kärle Buddhist cave inscription.— 1856 Stevenson, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 427; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 37 f., No. 22; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 92, No. 17, and Plate XLVIII; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 595; 1902 Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 74, No. 22, and Plate IV. Prakrit. Gift of the monk (paeaeta) Budharakhita (Buddharakshita).
- 1109. Bedsä Buddhist cave inscription. 1844 Bird-Westergaard, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. I. p. 440 f., and Plate, No. 1; 1847 Bird, Hist. Res. Plate LIII, 1; 1868 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VIII. p. 224, No. 3, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgeas, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 2 No. 3, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 89, No. 1, and Plate XLVII; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 593. Prakrit. Gift of Pusanaka (Pushya), son of the banker (sethin) Anada (Ananda), from Nāsika.
- 1110. Bedså Buddhist stäpa inscription.— 1868 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VIII. p. 223 f., No. 1, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Insor. Cave-Tomp. W. Ind. p. 26, No. 1, and Plate, with correction by Bühler; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 89, No. 2, and Plate XLVII.

 Prakrit. Fragment. Erection of the stäpa (thupa) of the hermit (dranaka) and mendicant (pedapātika) Göbhūti, who lived at Mārakuda (Mārakūta), by his pupil. ([amtē]vāsin), the devoted Asāļamita (Ashādhāmitra).
- 1111. Bedså Buddhist cistern inscription.— 1844 Bird-Westergaard, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. I. p. 441, and Plate, No. 2; 1847 Bird, Hist. Res. Plate LIII, 2; 1868 West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VIII. p. 224, No. 2, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Insor. Cave-Temp. W. Ind. p. 26 t., No. 2, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 90, No. 3, and Plate XLVII. Prakrit. Gift of Såmadinika, the daughter of a mahābhöya (mahābhōja), the Mamdavi (Māndavi) mahārathini (wife of a mahārathi), the wife of Apadevaņaka.

- 1112. Nanaghat cave inscription.— 1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 288 f., Nos. 4 and 5, and Plate (part only); 1838 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VII. p. 565 ff.; 1854 Stevenson, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 174 f.; 1856 correction by Stevenson, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 428; 1877 note by Bhagvanlal Indraii. Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XII. p. 404 ff., and Plate; 1878 note by Bhagvanial Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XIII. p. 310 f.; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 60 ff., Nos. 1 and 2, and Plate LI; 1883 correction by Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 86 f.; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 597 f.; 1903 correction by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. XLV, No. 1.
- 1113. Nanaghat cave inscription.— 1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 283 f., No. 4, and Plate; 1878 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XIII. p. 311, No. 1, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 64, No. 3, and Plate LI; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 611.
 Prakrit. (Image of) king (rāyan) Simuka-Sātavāhana Sirimat (Śrāmat).
- 1114. Nānāghāt cave inscription.— 1837 Sykes. Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 288 f., No. 4, and Plate; 1877 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XII. p. 404; 1878 Bhagvanlal Indraji. Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XIII. p. 311, No. 2, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 64, No. 4, and Plate LI; 1883 note by Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 611.

 Prakrit. (Images of) queen (dēvī) Nāyanikā (Nāganikā) and king (rājan) Siri-Sātakani.
- 1115. Nānāghāt cave inscription.— 1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 288 f., No. 4, and Plate; 1878 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XIII. p. 311, No. 3. and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 64, No. 5, and Plate L1; 1883 note by Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 611. Prakrit. Fragment. (Image of) prince (kumāra) Bhāya . . .
- 11.16. Nānāghāt cave inscription.— 1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 288 f., No. 4, and Plate; 1878 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XIII. p. 311, No. 4, and Plate; 1883 Būbler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 64, No. 6, and Plate LI; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 611.
 Prakrit. (Image of) the makārathi Tranakayira.
- 1117. Nānāghāt cave inscription.— 1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 288 f., No. 4, and Plate; 1878 Bhagvanlai Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XIII. p. 311, No. 5, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 64, No. 7, and Plate II; 1883 Bhagvanlai Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 611.
 Prakrit. (Lunge of) prince (kumāra) Hakusiri (Saktišri).

- 1118. Nānāghāt cave inscription.— 1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 288 f., No. 4, and Plate; 1878 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XIII. p. 311, No. 6, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 64, No. 8, and Plate LI; 1883 note by Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 611. Prakrit. (Image of) prince (kumāra) Sātavābana.
- 1119. Nanaghāt cistern inscription.— 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. V. p. 64, No. 9, and Plate LI.
 Prakrit. Gift of a cistern (pōḍhē) by Gövimdadāsa, the Sopārayaka (inbabitant of Sūrpāraka).
- 1120. S. 13.—Nānāgbāṭ cistern inscription of the time of rājan V[ā*]s[i*]ṭhiputa Chatarapana-Satakani.— 1883 Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 313 f.
 - -rapō Vasathiputasa Chatarapana-Satakanisa savachhara taru 10 3 hēmatapakha pachamē divasē 10.
 - Prakrit. Gift of a well (paniyapuvā) on the Satagara mountain by the householder (gahapat[i*]) Damaghasa (Damaghōsha), the Kamavana (inhabitant of Kāmavana).
- 1121. Śailárwāḍi Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 38 f., and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 92, No. 19, and Plate XLVIII; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 595.
 - Prakrit. Gift of a cave (lěna) by Siagutapikā (Simhaguptā), wife of the ploughman (hālakiya) and householder (kudubika) Usabhapaka (Rishabha), residing at Dhēnukākada (Dhēnukākada), together with her son, the householder (gahapati) Namda (Nanda).
- 1122. S. 6.—Nāsik cave inscription of the time of rājan Vāsithiputa Siri-Palumayi.— 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 52, No. 27, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 338 f., No. 27; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 107, No. 16, and Plate LIV; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 544, No. 1; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 59, No. 1, and Plate III.
 - —raño Vāsithiputasa Siri-Puļumayisa samvachharē chhathē 6 gimhapakhē pachamē ō divasē. . .
 - Prakrit. Fragment. Nothing beyond the date can be made out.
- 1123. S. 19.—Nasik Buddhist cave inscription of the time of rajan Vasithiputa Siri-Pulumayi.—1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 41 ff., No. 1, and Plate, No. 1 (first portion); 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 51 f., No. 26, and Plate (upper portion); 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 307 ff., No. 26; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 108 ff., No. 18, and Plate LII; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 550 ff, No. 2; 1890 Bühler, Sitsungber. Wien. Ak. Wies. Vol. CXXII. No. XI. p. 56 ff.; 83 ff.; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 594; 596; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 60 ff., No. 2, and Plate I.
 - -rand Vasithiputasa Siri-Puļumāyisa savichharē ēkunavīsē 109 gimhāna pakhē bitiye 2 divasē tērasē 13.

Prakrit. Gift of a cave (lēṇa) on mount Tiranhu (Triraimi) to the community of monks (bhikhusagha) by the great queen (mahādēvi) Gotami (Gautami) Balasiri (Balasīri), mother of rājarājan Gotamīputa (Gautamīputra) Siri-Sātakaņi, king (rājan) of Asika (Rishika?), Asaka (Asmaka?), Muļaka (Mūlika?), Suratha (Surāshtra), Kukura, Aparamta (Aparānta), Anupa (Anūpa), Vidabha (Vidarbha), Ākarāvati (Ākarāvantī), lord (pati) of the mountains Vijha (Vindhya), Achhavata (Rikshavat), Pārivāta (Pāripātra), Sahya, Kaṇhagiri (Krishnagiri), Macha, Siritana (Śristona?), Malaya, Mahida (Mahēndra), Seṭagiri (Śrēshthagiri?), Chakōra, who destroyed the Sakas (Śakas), Yavanas, and Palhavas, who rooted out the Khakharāta race, who restared the glory of the Sātavāhana race. The cave was to be the special property of the school (nikāya) of the Bhadāvaniyas (Bhadrāyanīyas). For the embellishment of the cave, the queen's grandson, lord (isara) of [Dakhinā]patha (Dakshināpatha) granted the village (gāma) of Pisājipadaka (Pišāchtpadraka) on the south-west side of mount Tiranhu (Trirasmi). Compare No. 1124.

1124. S. 19 and 22.—Nasik Buddhist cave inscription of the lord of Navanara, Vasithiputa Siri-Pulmavi.—1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 45 f., and Plate, No. 1 (second portion); 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 51 f., No. 26, and Plate (lower portion); 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 314 ff., No. 26A; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 110 ff., No. 19, and Plate LII; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gus. Vol. XVI. p. 555 ff., No. 3; 1895 note by Bhandarkar, Early History of the Dekkan², p. 18, note 2; 1895 note by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 213; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. I., p. 596 f.; 1901 correction by Hultzsch, Ep. Ind. Vol. VI. p. 319, notes 2 and 3; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII., p. 65 ff., No. 3, and Plate II; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. LI, No. 14.—sava 10 9 gi pa 2 diva 10 3.

-sava 20 2 qi pakhë, diva 7.

Prakrit. Engraved in continuation of No. 1123. Order of the lord (svamin) of Navapara (Naranagara), Väsithiputa (Väsishthiputra) Siri-Pulumavi to Sivakhadila (Sivaskandila), officer (āmacha) at Govadbana (Govardhana), regarding the gift of the village (gama) of Samalipada or Samalipada (Silmulipadra) on the eastern road in the Govadhana district (ahara) to the monks (bhikhu) of the school (nikāya) of the Bhadayaniyas (Bhadrayaniyas) dwelling in the queen's cave (dēvilēna), in exchange for the village (gama) of Sudasana or Sudisana (Sudarsana) on the southern road in the Govadhana district (ahara) formerly given to the same monks, for repairs of the cave. The inscription mentions besides in connection with Sudasana the ascetics (samana) of Dhanakata (or Benakata?) who live on mount Tira[phu] (Trirasmi). Written by the great general (mahāsēnapati) Mēdhuna; the plates were prepared by . . takaņi. It is further stated that the description of the lord (scamin, i.e. of Gotamiputa Siri-Satakani in No. 1123) was given by Vinhupala (Vishaupala) for imparting pleasure to the inhabitants of Govadhana, and the inscription concludes with an invocation of Budha (Buddha), the best of Jinas.

1125. S. 18.—Nasik Buddhist cave inscription of the lord of Benakataka, Gotamiputa Siri-Sadakapi.— 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 46 ff., No. 2 (first half), and Plate; 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII.

p. 51, No. 25, and Plate (upper portion); 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 319 ff., No. 25 (first half); 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 104 f., No. 13, and Plate LIII; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 558 ff., No. 4; 1890 correction by Bühler, Sitzungsber. Wien. Ak, Wiss. Vol. CXXII. No. XI. p. 58, note 1; 1895 note by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 213 f.; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 596; 1901 correction by Hultzsch, Ep. Ind. Vol. VI. p. 319, notes 2 and 3; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 71 ff., No. 4, and Plate II; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. XLVII f., No. 7.

-savachharê 10 8 văsapakhê 2 divasê 1.

Prakrit. Order of Götamiputa (Gautamiputra) Siri-Sadakani, lord (svāmin) of Benākataka of Gövadhana (Gövardhana), from the camp of victory of the Vējayamti (Vaijayanti) army, to Vinhupālita (Vishaupālita), the officer (amucha) at Gövadhana, with regard to the conferring of a field in the village (gōma) of West Kakhadi (Aparakakhadiya), up to the present time (or called Ajakālakiya?) enjoyed by Usabhadata (Rishabhadatta), on the Tekirasi (Trairaśmika?) ascetics (pavajita). Written down by the officer (amacha) Sivaguta (Sivagupta); kept by the mahāsīmiyas; the plates were prepared by Tāpasa. Compare No. 1126.

1126. S. 24.—Nāsik Buddhist cave inscription of rājan Götamiputa Sātakaņi.— 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 46 ff., No. 2 (second half) and Plate; 1865 West-West, Journ. Ba. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 51, No. 25, and Plate (lower portion); 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 319 ff., No. 25 (second half); 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 105 ff., No. 14, and Plate LiII; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 560 ff., No. 5; 1895 note by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 213; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 598; 1901 correction by Hultzsch, Ep. Ind. Vol. VI. p. 319, notes 2 and 3; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 73 ff., No. 5 and Plate II; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. XLVIII, No. 8.
—savachharē 20 4 vāsīna pakhē 4 divasē pachamē 5.

-savachharé 20 4 gimhāna pakhê 2 divasê 10.

Prakrit. Engraved in continuation of No. 1125. Order of king (rājan) Götamiputa (Gautamiputra) Sātakaņi and of the king's queen mother (mahādēvī) whose son is living, to Sāmaka (Syāmaka), the officer (amacha) at Gövadhana (Gövardhana), regarding the gift of a field within the boundaries of the town (nagara) to the Tēranhuka (Trairaimika) monks (pavajīta bhikhu), i.e. the monks living in the cave (lēna) on Mount Tiranhu (Triraimi), instead of a field at the village (gāma) of Kakhadī formerly given. Written down by the door-keeper (paṭihārakhī) Lōṭā; [the plates] were prepared by Sajīvin.

1127. Nasik Buddhist cave inscription.— 1847 Bird-Orlebar, Hist. Res. Plate LII, 5; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 48 f., No. 3, and Plate; 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 51, No. 24, and Plate; 1876 Bhandarkar, Trunsact. Second London Congr. Or. p. 347, No. 24; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 116, No. 8, and Plate LV; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 564, No. 6; 1895 note by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Hl. 1895, p. 213; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 597; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 75, No. 6, and Plate III.

- Prakrit. Gift of a four-celled (chatagabha) cave (lēna) by the merchant (nyēgama), the householder (gahapati) Vira (Vira), one cell (övaraka) being the gift of his wife (kuṭumbinī) Namdasirī (Nandasirī), and one that of his daughter Purisadatā (Purushadatīā), to the community of monks (bhikhusamgha) of the four quarters.
- 1128. Nāsīk Buddhist cave inscription.— 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 51, No. 23, and Plate; 1883 Bhagvanlat Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 565, No. 7; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 76, No. 7, and Plate III. Prakrit. Gift of a cave (lēna) by the female ascetic (pavayitā) Tāpasinī (?), disciple (amtāvāsiai) of bhayamta (bhadanla) Savasa (?), to the community of monks (bhikhusagha) of the four quarters.
- 1129. Nāsik Buddhist cave inscription. 1847 Bird-Orlebar, Hist. Res. Plate LII, 6 (third line); 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 50 f., No. 22, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 347, No. 22; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 115, No. 7, and Plate LV; 1883 Bhagvanlal Indraji. Bombay Gas. Vol. XVI. p. 565 f., No. 8; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 76 f., No. 8, and Plate VIII.
 Prakrit. Gift of a cave (lēņa) by the fisherman (dāsaka) Mugūdāsa. Compare
 - Prakrit. Gift of a cave (lena) by the fisherman (dāsaka) Mugūdāsa, Compare No. 1130.
- 1130. Nasik Buddhist cave inscription.— 1847 Bird-Orlebar, Hist. Res. Plate LII, 6 (first two lines); 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 50, No. 21, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 346 f., No. 21; 1883 Bühler, Arch. Sure. W. Ind. Vol. IV. p. 115, No. 6, and Plate LV; 1893 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 566, No. 9; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 77, No. 9, and Plate III.
 - Prakrit. Gift of a cave (lēna) by Mugūdāsa of the lay community of Chētikas (Chētika-upāsakiya), and of a field in western (aparili) Kaphabini to this cave for providing clothes to the ascetic (pavaïta) by Dhamanaudin (Dharmanaudin), son of the lay-worshipper (upāsaka) Bodhiguta (Bodhigupta). Compare No. 1129.
- 1131. Näsik Buddhist cave inscription of Ushavadāta.— 1847 Bird-Stevenson-Reeves-Oclebar, Hist. Res. p 60 f., No. 24, and Plates LI, No. 3, and LII, No. 7; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 49 ff., No. 4, and Plate; 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 50, Nos. 17 and 19, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 326 ff., Nos. 17 and 19; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p 99 f., No. 5, and Plate LII; 1883 Hoernle, Ind. Ant. Vol. XII. p. 27 ff. (omitting the last portion); 1883 note by Bhandarkar, Ind. Ant. Vol. XII. p. 139 ff.; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 569 ff., No. 10; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch, Morgent. Ges. Vol. L. p. 595; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 78 ff., No. 10, and Plate IV; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. LVI f., No. 31.
 - Mixed dialect. Dedication of a cave (lēna) and cisterns (pōḍhī) in the Trirašmi hills at Gövardhana by Ushavsdāta (Rishabhadatta), son of Dinika, son-in-law of rājan Kshaharāta kshatrapa Nahapāna. The inscription mentions other donations mostly to gods and brāhmanas, made by this person at the river Bārņāsā, at the tīrtha of Prabhāsa, at Bharukachha, Dašapura, Gövardhana, Sörjāraga.

(Surparaka), at the rivers Ibā, Pārādā, Damaņa, Tāpī, Karabēnā, Dāhanukā, and at the village (grāma) of Kānamgola to the congregation (parshad) of Charakas at Pinhditakāvada, Govardhana, Suvarņamukha and the Rāmatīrtha in Šorpāraga; his release of Utamabhādra (the chief of the Uttamabhādras), who had been besieged by the Mālayas, by order of his lord (bhatāraka) and the defeat of the Mālayas by the Utamabhadraka (Uttamabhadraka) warriors (kshatriya); his abhishēka and donations at the Pokshara (Pushkara lakes); and his donation of a field, bought at the bands of the brāhmana Ašvibhūtī, the son of a Vārāhī, to the congregation of monks (bhikhusagha) of the four quarters.

- 1132. Näsik Buddhist cave inscription of the time of Ushavadāta.— 1847 Bird-Reeves, Hist. Res. p. 52, No. 5, and Plate LI, 4; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 52 f., No. 6, and Plate (upper portion); 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 50, No. 16, and Plate (upper portion); 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 334 f., No. 16 (first portion); 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 103, No. 10, and Plate LII, No. 10a; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 572 f., No. 11; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Doutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 596; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 81 f., No. 11, and Plate VII.
 - Prakrit. Gift of a cell (ovaraka) by Dakhamitrā (Dakshamitrā), daughter of rājan Kshaharāta kshatrapa Nahapāna, wife of Ushavadāta (Rishabhadatta), the son of Dinika. Compare No. 1134.
- 1133. Years 42, 41, and 45.— Nāsik Buddhist cave inscription of Ushavadāta.— 1847
 Bird-Reeves-Orlebar, Hist. Res. p. 59, No. 21, and Plates LI, Nos. 3 and 4, and LII,
 No. 8; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 52 f., No. 6, and
 Plate (lower portion), and p. 51 f., No. 5, and Plate; 1865 West-West, Journ. Bo. Br.
 Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 50, No. 16, and Plate (lower portion), and No. 18, and
 Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 334 ff., No. 16
 (second portion), and p. 331 ff., No. 18; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV.
 p. 102 f., No. 9, and Plate LII; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI.
 p. 573 ff., No. 12; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges.
 Vol. L. p. 587; 596; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 82 ff., No. 12, and
 Plate V; 1908 note by Rapson, Oatalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc.
 p. LVIII, No. 33.

-vasē 40 2 Vēsākhamāsē.

- —datam vasē 40 1 Kātikašudhē panarasa puvāka vasē 40 5 panarasa niyutam.
- Prakrit. Dedication of a cave (léna) and an endowment of money to the community (sangha) of the four quarters by Ushavadāta (Rishabhadatta), son of Dinika, son-in-law of rājan Kshaharāta kshatrapu Nahapāna. The money was invested in two weavers' guilds (śrēni, kölikanikāya) at Gövadhana (Gövardhana). Besides a gift of coccanut trees at the village (gāma) of Chikhalapadra in the Kāpura district (āhāra), and a dedication of money to the gods and brāhmanas.
- 1134. Nāsik Buddhist cave inscription of the time of Ushavadāta.— 1847 Bird-Orlebar, Hist. Res. Plate L, 2; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 54, No. 7, and Plate; 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 50, No. 20, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 103, No. 10, and Plate LΠ, No. 10b; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 575 f.,

No. 13; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 596; 1905 Senart, Ep. Isd. Vol. VIII. p. 85, No. 13, and Plate VIII.

Prakrit. Gift of a cell (övaraka) by Dakhamitrā (Dakshamitrā), daughter of rājan Kahaharāta kshatrapa Nahapāna, wife of Ushavadāta (Rishabhadatta), the son of Dinīka. Compare No. 1132.

- 1135. Nāsik cave inscription of Ushavadāta.— 1847 Bird-Orlebar, Hist. Res. Plate LII, 9 (upper portion); 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 49, No. 14, and Plate (upper portion); 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 336 f., No. 14 f.; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 101 f., No. 7, and Plate LIII; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 576 ff., No. 14 (first part); 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 596; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 85 ff., No. 14, and Plate VI; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. LVII f., No. 32.
 Chetrasudhē panarasa.
 - Prakrit. Fragment. Records gifts of Ushavadāta (Rishabhadatta), the Šaka . . . son-in-law of [rājan Kshaharā]ta kshatrapa Nahapāna, to gods and brāhmanas at Chechimna, Dāhanūkānagara, Kēkāpura, . . . Anugāmi, Ujēni (Ujjayini), Sākhā, and the bestowing of money and a tirtha (titha) in the Baṇāsā (Bārnāsā) river.
- 1136. Nasik cave inscription.— 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 43, No. 14, and Plate (lower portion); 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 102, No. 8, and Plate LIII; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 576 ff., No. 14 (second part); 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 87 f., No. 14, and Plate VI.
 - Mixed dialect (?). Fragment. Records the bestowing of some gifts on the brāhmanas. Perhaps the inscription is only part of the inscription No. 1135.
 - 1137. S. 9.—Nāsik Buddhist cave inscription of the time of rājan Mādhariputra Iśvarasēca, the Ābhīra, the son of Śivadatta, the Ābhīra.—1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII, p. 49 f., No. 15, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 341 f., No. 15; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 103 f., No. 12, and Plate LIII; 1883 Bhagvanlai Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 579 f., No. 15; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgonl. Ges. Vol. L. p. 596; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 88 f., No. 15, and Plate VII. —rājāah Mādhariputrasya Śivadatt-Ābhīraputrasya Abhīrasy-Ēśvarasēnasya

—rājāaḥ Māḍharīputrasya Sivadatt-Abhīraputrasya Abhīrasy=Eśvarasēnasya samvatsarē navam[ē]. [gi]mhāpakhē chothē 4 divasa trayōdaśa 10 3 . . . ya puvaya.

- Mixed dialect. Fragment. Records an endowment of money for the community of monks (bhikshusamgha) of the four quarters residing at the vihāra on Mount Trirašmi by the female lay-worshipper (upīsikā) Vishaudatā (Vishaudattā), the Śakanikā, daughter of the Śaka Agnivarmman, wife of the ganapaka Rēbhila, mother of the ganapaka Višvavarma (Višvavarman). The money was invested with the guilds (śrēnt) of the potters († kularika), the workers fabricating hydraulic engines (odayamtrika), the oilmillers (tilapishaka).
- 1138. Nāsik Buddhist cave inscription.—1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 49, No. 13, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 346, No. 13; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 115, No. 5,

and Plate LV; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 582, No. 16; 1905 Senart, Ep. Int. Vol. VIII. p. 89 f., No. 16, and Plate VII.

Prakrit. Gift of a cave (lēņa) by Rāmamņaka (Rāma), son of the writer (lēkhaka) Sivamita (Šivamitra).

- 1139. Nāsik Buddhist cave inscription.— 1847 Bird, Hist. Rev. p. 58, No. 17, and Plate L, 1; 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 54, No. 8, and Plate; 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p 49, No. 12, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 345 f., No. 12; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 115, No. 4, and Plate LV; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 582 f., No. 17; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 90, No. 17, and Plate VIII.
 - Prakrit. Gift of a cave (lēna) by the merchant (někama) Râmaņaka, son of Velidāta (Vēllidatta), the Chhākalēpakiya (inhabitant of Chhākalēpa?), to the community of monks (bhikhusamgha) of the four quarters, and gift of cloth money to the ascetic (pavaita).
- 1140. Nāsik Buddhist cave inscription.— 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 54 f., No. 9, and Plate; 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 49, No. 11, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 345, No. 11; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 114 f., No. 3, and Plate LV; 1883 note by Bhandarkar, Ind. Ant. Vol. XII. p. 147; 1883 Bhagvanlai Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 586 f., No. 18; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 587; 597; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 90 f., No. 18, and Plate V.

Prakrit. Gift of a cave (lēna) in Mount Tiramphu (Trirasmi), a chaitya building (chētiyaghara) inside the cave and cisterns (podhi) in honour of all Budhas (Budhas) to the community of monks (bhikhūsamgha) in the four quarters by Idrāgnidata (Indrāgnidatta), son of Dhammadevn (Dharmadeva), the Yōnaka (Yarana), the northerner (Otarāha), the Dātāmitiyaka (native from Dattāmitri), tegether with his son Dhammarakhita (Dharmarakshita).

1141. Näsik Buddhist cave inscription.— 1847 Bird-Orlebar, Hist. Res. Plate LII, 9 (lower portion); 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. 16.9. As. Soc. Vol. V. p. 55 f., Nos. 10 and 11, and Plate; 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 48 f., Nos. 10 and 9, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 343 f., Nos. 9 and 10; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 99, No. 4, and Plate LI; 1883 Bbagvanlal Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 589 f., No. 19; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 91 f., No. 19, and Plate III; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. XLVI, No. 3.

Prakrit. Building of a chaitya building (chitiyuqhara) on Mount Tiranhu (Triraimi) by Bhatapālikā, [grand daughter] of Mahāhakusiri, daughter of the royal officer (rāyāmacha) Arshalaya, the Chalisilanaka (native from Chalisilana 1), wife of the royal officer (rāyāmacha) Agiyatapaka, the treasurer (? bhamādākārikaya), mother of Kapapapaka.

1142. Näsik Buddhist cave inscription.— 1865 West-West, Journ Bo. Br. Roy. As Soc. Vol. VII. p. 48, No. 8, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 343, No. 8; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 98, No. 2, and

Plate LI: 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 590, No. 20; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 92, No. 20, and Plate VI.

Prakrit. Gift of the village (gama) of Dhambhika of the Nasikakas (the Nasika people).

- 1143. Nāsik Buddhist cave inscription.— 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 48, No. 7, and Plate; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 99, No. 3, and Plate II; 1883 Bhagvaulal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 591, No. 21; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 93, No. 21, and Plate III. Prakrit. Fragment. Setting up of a rail (vēikā) and a Yaksha (yakha) by Nadāsiriyā (Nandāśrikā).
- 1144. Nāsik Buddhist cave inscription of the time of rājan Kanha of the Sādavābana family.—1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 48, No. 6, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 338, No. 6; 1983 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 98, No. 1, and Plate II; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 592 f., No. 22; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 93, No. 22, and Plate VI.

Prakrit. Excavation of a cave (lana) by the officer (mahāmīta) Samana (Śramana), the Nāsikaka (resident at Nāsika), under king (rājan) Kanha (Krishna) of the Sādavāhana family.

- 1145. Nāsik Buddhist cave inscription.— 1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 56 f., No. 13, and Plate; 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 48, No. 5, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 343, No. 5; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 116, No. 9, and Plate LV; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 596, No. 23; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 93, No. 23, and Plate V. Sanskrit. Gift of a cave (layana) by the female lay-worshipper (upāsikā) Mammā.
- 1146. S. 7.—Nāsik Buddhist cave inscription of the time of rājan Gotamiputa sāmi-Siriyaña Sātakaņi.—1853 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 56, No. 12, and Plate; 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 48, No. 4, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 339 ff., No. 4; 1883 referred to by Bhagvanlal Indraji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XV. p. 312; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 114, No. 22, and Plate LV; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 596 f., No. 24; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 597; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 93 f., No. 24, and Plate I.

—raño Gotamiputasa sāmi-Siriyaña-Sātakaņisa samvachharē sātamē 7 hēmatāņa pakhē tatiyē 3 divasē pathamē.

- Prakrit. Dedication of a cave (lēṇa) to the community of monks (bhikhusagha) of the four quarters by the great general's wife (mahāsēṇāpatiṇā) Vāsū, wife of the great general (mahāsēṇāpati) Bhavagūpa, the Kūsika (Kaušika). The excavation of the cave was commenced (?) by the ascetic (yati) Bopaki.
- 1147. S. 2.—Nāsik Buddhist cave inscription of the time of rājan Vāsithiputa sāmi-Siri-Pulumāi.— 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 47 f., No. 3, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 338, No. 3; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 107, No. 15, and Plate LIV; 1883

Bhagvanial Indraji, Bombay Gas. Vol. XVI. p. 603 f., No. 25; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 94 f., No. 25, and Plate VI.

—raño Vāsithiputusa sāmi-Siri-Pulumāisa samvachharē 2 hēmamtā pakhē 4 divasē 8 (?) ētiya puvāya.

Prakrit. Fragment. Excavation [of a cave] by the husbandman (kufumbika)

Dhapama. The last figure of the date is doubtful; it may be 6 or 5.

- 1148. Nāsik Buddhist cave inscription.— 1865 West-West, Journ Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 47, No. 1, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 342 f., No. 1; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 114, No. 1, and Plate LV; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 605, No. 26; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 95, No. 26, and Plate VIII.
 Prakrit. Gift of a cave (lēna) and two cisterns (pōdht) by the Śaka Dāmachika Vudhika, a writer (lēkhaka), son of Vishoudata (Vishaudatta), living at Dašapura, the western cistern being for the benefit of his parents.
- 1149. Näsik Buddhist cistern inscription.— 1865 West-West, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 47, No. 2, and Plate; 1876 Bhandarkar, Transact. Second London Congr. Or. p. 343, No. 2; 1883 Bühler, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 114, No. 2, and Plate LV; 1883 Bhagvanlal Indraji, Bombay Gaz. Vol. XVI. p. 605 f., No. 27; 1905 Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 95 f., No. 27, and Plate VI. Prakrit. The cistern (pōdhā) of the Saka (Saka) Dāmachika Vudhika, a writer (lēghaka).
- 1150. Junnar Buddhist cave inscription.— 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 41, No. I, and Plate; 1883 Bübler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 92, No. 1, and Plate XLVIII.

 Prakrit. Fragment. Gift of a cistern (pōdhē) and [a cave] by . . thabhūtē).
- 1151. Junnar Buddhist cave inscription.— 1874 noticed by Burgess, Mem. Buddh. Cav. Junn. p. 9, No. 11, and Plate; 1877 noticed by Burgess, Ind. Ant. Vol. VI. p. 38, No. 11, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Tomp. W. Ind. p. 42, No. 2, and Plate; 1883 Bühler-Burgess. Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 92 f., No. 2, and Plate XLVIII.
 Prakrit. Gift of a reception-room (upathāna) by Mala (Malla). the Mudhakiya (of the Mūrdhaka caste?) and Ānada (Ānanda), the Golikiya (of the Gölika caste?).
- 1152. Junnar Buddhist cave inscription.—1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 289, No. 6, and Plate; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 163 f., Nos. 8 and 9, and Plate; 1881 mentioned by Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 42, No. 3, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 93, No. 3, and Plate XLVIII.
 - Prakrit. Fragment. Gift of a cave (léna) and a cistern (podht) by Patibadhaka Giribhūti Sakhuyāru, son of Savagiriyāsa of the Apaguriyas, and endowment of these establishments and the numery (bhikhuni-upasaya) of the Dhammutariyas (Dharmottariyas) in the town (nakara). The inscription seems to mention also a numery of Sivapāl[i]tanikā (Sivapālitā), wife of Giribhūti, in the town (nagara). Compare No. 1155.

- 1153. Junnar Buddhist cave inscription.— 1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 289, No. 7, and Plate; 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1045, No. 3, and Plate LIII; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 163, No. 7, and Plate; 1856 correction by Stevenson, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 428; 1874 noticed by Burgess, Mem. Buddh. Cav. Junn. p. 10, No. 12, and Plate; 1876 Kern, Ind. Stud. Vol. XIV. p. 395, No. 12; 1877 noticed by Burgess, Ind. Ant. Vol. VI. p. 39, No. 12, and Plate; 1877 Kern, Ind. Ant. Vol. VI. p. 40, No. 12; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 42f., No. 4, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 93, No. 4, and Plate XLIX; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 595. Prakrit. Gift of a chaitya building (chētiyaghara) by the pious hamlet (dhammani-quino) Virasēnaka (Vērasēna), headed by the householders (gahapati).
- 1154. Junnar Buddhist cave inscription.— 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 43, No. 5, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 93, No. 5, and Plate XLIX; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 595.
 Prakrit. Gift of two cisterns (pödht) by the Yavana Irila of the Gatas (Gartas).
- 1155. Junnar Boddhist well inscription.—1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 289, No. 8, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 43, No. 6, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 93, No. 6, and Plate XLIX; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 595.
 Prakrit. Fragment. Gift of a cistern (pōdhī) and a cave (lēṇa) by Patibadhaka Giribhūti, son of Savagiriyāsa, of the Apaguriyas with his wife Sivapālinikā (Sivapālā), and endowment. Compare No. 1152.
- 1156. Junnar Buddhist cave inscription.— 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 43 f., No. 7, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 95, No. 16, and Plate L. Prakrit. Gift of a hall-front (gabhadāra) by the Yavana Chamda (Chandra).
- 1157. Junnar Buddhist cave inscription.— 1847 Bird, Hist. Res. Plate XLIX; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 44, No. 8, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 98, No. 31, and Plate LI; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent: Ges. Vol. L. p. 593; 595.
 Prakrit. Fragment. Gift of a five-celled cave (pachagabha) by two brothers.
 , the sons of a householder ([gaha]pati).
- 1158. Junnar Buddhist cave inscription.— 1847 Bird, Hist. Res. Plate XLIX, 6; 1854 mentioned by Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 168, No. 22, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 44 f., No. 9, and Plate; 1883 Bübler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 96, No. 20; and Plate L. Prakrit. Gift of a certain field in the village (gama) of Puvānada by Palapa, and
 - Prakrit. Gift of a certain field in the village (gama) of Puvanada by Palapa, and investment (of the income from the field) with the school (7 gana) of the Apajitas.
- 1159. Junnar Buddhist pillar inscription.—1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 288. No. 3, and Plate; 1847 Bird, Hist. Res. Plate XLIX, 5; 1854 Stevenson-Brett,

- Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 165, No. 15, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 45, No. 10, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 96, No. 21, and Plate L. No sense has been made out.
- 1160. Junnar Buddhist pillar inscription.— 1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 288. No. 1, and Plate; 1847 Bird, Hist. Res. Plate XLIX, 5; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 165, No. 13, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 45, No. 11, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 96, No. 22, and Plate L. No sense has been made out.
- 1161. Junnar Buddhist pillar inscription.—1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 288, No. 2, and Plate; 1847 Bird, Hist. Res. Plate XLIX, 5; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 165, No. 14, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 45, No. 12, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 96, No. 23, and Plate L. No sonse has been made out.
- 1162. Junnar Buddhist cave inscription.—1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 167 f., No. 21, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cavetemp. W. Ind. p. 45 f., No. 13, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surc. W. Ind. Vol. IV. p. 96, No. 24, and Plate L; 1895 correction by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 216.
 - Prakrit. (Investment of the income of) a field at Vadalika for planting Karañja trees and of another field for planting banyan trees with the guild (sōni) at Konachika by the lay-worshipper (uvasaka) Aduthuma, the Saka (Saka).
- 1163. Junnar Buddhist cave inscription.— 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 167, Nos. 19 and 20, and Plate; 1856 correction by Stevenson, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 428; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 46 f., No. 14, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 96 f., No. 25, and Plate L; 1895 correction by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 216; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 595.
 - Prakrit. In the village (gama) of Mahaveja a field for the planting of Jambu trees entrusted to the holy assembly (? sidhagana) of the Aparajitas; to the east of Mount Mauamukada another field for a plantation of palmyra trees; within the boundaries of the town (nagarasiman) a third field for Sala trees (?).
- 1164. Jannar Buddhist cave inscription.—1847 Bird, Hist. Res. Plate XLIX, 1; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 166 f., No. 18, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 47, No. 15, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 97, No. 26, and Plate L; 1895 correction by Pischel, Nachr. Gött. Ges, Wiss. Phil. Hist. Kt. 1895 p. 216.
 - Prakrit. A field for the planting of mango trees, [the gift] of Vahata Vachēduka.
- 1165. Januar Buddhist cave inscription.— 1854 mentioned by Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 166, No. 17, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-

Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 47 f., No. 16, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 97, No. 27, and Plate L.

Prakrit Investment of money with the guild (seal) of bamboo-workers (vasakara) and the guild (sens) of braziers (kāsākāra).

1166. Junnar Buddhist cave inscription .- 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 165 f., No. 16, and Plate ; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 48, No. 17, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 97, No. 28, and Plate L; 1895 correction by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 216.

Prakrit. Fragment. In the village (gama) of Valabaka a field for the plantation of Karanja trees; another field in the village (gama) of Seuraka.

1167. Junnar Buddhist cave inscription. - 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 48f., No. 18, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 97, No. 29, and Plate L; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 595.

Prakrit, Fragment. A field in western (? avarila) Vasarikhadaka. A field in western (? avarila) . . . In western (? avarila) . . . s field for the plantation of

Jamba trees. A field in the village (gama) of Kodaka.

- 1168. Junnar Buddhist cave inscription .- 1847 Bird-Orlebar, Hist. Res. Plate XLIX, 7 (5th line only); 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 168 f., Nos. 23 and 24, and Plate; 1881 mentioned by Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 49, No. 19, and Plate; 1883 mentioned by Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 98, No. 30. Prakrit. Records various donations, but no details have been made out.
- 1169. Junnar Buddhist cave inscription .- 1847 Bird, Hist. Res. p. 51, No. 3, and Plate XLIX, 3; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 165, No. 12. and Plate: 1874 noticed by Burgess, Mem. Buddh. Cav. Junn. p. 6, No. 9, and Plate; 1876 Kern, Ind. Stud. Vol. XIV. p. 394 f., No. 9; 1877 noticed by Burgess, Ind. Ant. Vol. VI. p. 36, No. 9, and Plate; 1877 Kern, Ind. Ant. Vol. VI. p. 40. No. 9; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 49, No. 20, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 96, No. 19, and

Prakrit, Gift of a two-celled cave (bigabha) by the brothers Budhamita (Buddhamitra) and Budharakhita (Buddharakshita), the Lamkudiyas, sons of Asasama (Asvasarman), the Bharakachhakas (inhabitants of Bharakachchha).

1170. Junnar Buddhist cave inscription .- 1847 Bird, Hist. Res. Plate XLIX, 2; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 164 f., No. 11, and Plate ; 1874 noticed by Burgess, Mem. Buddh. Cav. Junn. p. 6, No. 10, and Plate; 1876 Kern, Ind. Stud. Vol. XIV. p. 396, No. 10; 1877 noticed by Burgess, Ind. Ant. Vol. VI. p. 36, No. 10, and Plate; 1877 Kern, Ind. Ant. Vol. VI. p. 40, No. 10; 1881 Bhagvanlai Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 50, No. 21, and Plate: 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 95, No. 18, and Plate L.

Prakrit, Unfinished. Gift of the householder (gahapati) Sivadāsa (Sivadāsa), son of the householder (ganapati) Sayiti, and his wife.

- 1171. Junnar Buddhist cave inscription.— 1847 Bird, Hist. Res. p. 52, No. 4, and Plate L, 8; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 164, No. 10, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 50 f., No. 22, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 95, No. 17, and Plate L.
 - Prakrit Fragment. Records some donation and mentions the elder (thera) bhayamta (bhadanta) Chetiyasa, who knows the Tripitaka (tevija), the pupil (amtevāsin) of the gana teacher (ganāchariya), the elder (thera) bhayamta (bhadanta)
 Sulasa, who knows the Tripitaka (tevija), and Nadanaka (Nanda), the grandson
 of some householder (gahapati).
- 1172. Junnar Buddhist cave inscription.— 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 51, No. 23, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 98, No. 34, and Plate LI.
 Prakrit. Fragment. Mentions a lay-worshipper (upāsaka), the merchant (nēgama)..., the son of Satamala, and Virabhuti (Virabhūti).
- 1173. Junnar Buddhist cave inscription.— 1847 Bird, Hist. Res. Plate XLIX, 4; 1854
 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 169, No. 25, and Plate; 1874
 noticed by Burgess, Mem. Buddh. Cav. Junn. p. 5, No. 7, and Plate; 1876 Kern,
 Ind. Stud. Vol. XIV. p. 396, No. 7; 1877 noticed by Burgess, Ind. Ant. Vol. VI.
 p. 35, No. 7, and Plate; 1877 Kern, Ind. Ant. Vol. VI. p. 40, No. 7; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 51, No. 24, and Plate; 1883
 Buhler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 98, No. 33, and Plate II; 1896
 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morganl. Ges. Vol. L. p. 595.
 Prakrit. Gift of a cistern (pōdhī) by Sivabhnti (Sivabhūti), son of Sivasama
 (Sivasarman).
- 1174. S. 46.— Junnar Buddhist cave inscription of the time of rājan mahakhatapa sāmi-Nahspāna.— 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 169, No. 26, and Plate; 1874 noticed by Burgess, Mem. Buddh. Gav. Junn. p. 5, No. 8, and Plate; 1877 noticed by Burgess, Ind. Ant. Vol. VI. p. 35 f., No. 8, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 51 f., No. 25, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 103, No. 11, and Plate LIV; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 596; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. LIX, No. 35.

-vasē 40 6.

- Prakrit. Gift of a chadhi (?) and a hall (matapa) by Ayama (Aryaman) of the Vachha (Vatsa) götra (gota), minister (āmatya) to [rājan] mahakhatapa (mahā-kshatrapa) sāmi-(svāmin-) Nahapāna.
- 1175. Junnar Buddhist cave inscription.— 1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 289 f., No. 13, and Plate; 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1046 f., No. 6, and Plate LIII; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 162, No. 6, and Plate; 1874 noticed by Burgess, Mem. Buddh. Cav. Junn. p. 4, No. 6, and Plate; 1877 noticed by Burgess, Ind. Ant. Vol. VI. p. 35, No. 6, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 52, No. 26, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 95, No. 15, and Plate XLIX; 1905 correction by Senart, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 75. Prakrit. Gift of a cave (lēna) to the community (saingha) at Kapichita by Sivabhūti (Sivabhūti), the son of the lay-worshipper (upāsaku) Sāmada (Syāmala).

- 1176. Junnar Buddhist cistern inscription. 1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 289 f., No. 11, and Plate; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 162, No. 5, and Plate; 1874 noticed by Burgess, Mem. Buddh. Cav. Junn. p. 4, No. 5, and Plate; 1877 noticed by Burgess, Ind. Ant. Vol. VI. p. 35, No. 5, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 52 f., No. 27, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 95, No. 14, and Plate XLIX.
 - Prakrit. Gift of a cistern (podhi) by Lachhinika (Lakshmi), (wife?) of the Nadaka Torika, (and ?) Nadabālikā, wife of Isimulasamin (Rishimulasvamin).
- 1177. Junnar Buddhist cistern inscription .- 1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 289 f., No. 12, and Plate; 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1046, No. 5, and Plate LIII; 1847 Bird-Orlebar, Hist. Res. p. 57, No. 14, and Plate L. 12: 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 161, No. 4, and Plate; 1874 noticed by Burgess, Mem. Buddh. Cav. Junn. p. 4, No. 4. and Plate; 1876 Kern, Ind. Stud. Vol. XIV. p. 396, No. 4; 1877 noticed by Burgess, Ind. Ant. Vol. VI. p. 35, No. 4, and Plate; 1877 Kern, Ind. Ant. Vol. VI. p. 40, No. 4; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 53, No. 28, and Plate; 1883 Bühler-Burgess. Arch. Surc. W. Ind. Vol. IV. p. 94, No. 13, and Plate XLIX.
 - Prakrit. Gift of a cistern (podhi) by the goldsmith (suvanakāra) Saghaka (Samghaka), son of Kulira (Kulira), the Kalianaka (inhabitant of Kalyana).
- 1178. Junnar Buddhist cave inscription .- 1847 Bird, Hist. Res. p. 59, No. 19, and Plate L, 11; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 161, No. 3, and Plate; 1874 noticed by Burgess, Mem. Buddh. Cav. Junn. p. 4, No. 3, and Plate; 1876 Kern, Ind. Stud. Vol. XIV. p. 395, No. 3; 1877 noticed by Burgess, Ind. Ant. Vol. VI. p. 35, No. 3, and Plate; 1877 Kern, Ind. Ant. Vol. VI. p. 40, No. 3; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 53, No. 29, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 94, No. 12, and Plate XLIX. Prakrit. Gift of a chaitya building (chëtiyaghara) by Anada (Ananda), son of the lay-worshipper (upāsaka) Tāpasa, grandson of the lay-worshipper (upāsaka) Kapila.
- 1179. Junnar Buddhist cave inscription. 1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 289 f., No. 10, and Plate; 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1045 f., No. 4, and Plate LIII; 1847 Bird, Hist. Res. p. 56 f., No. 13, and Plate L, 9; 1854 Stevenson-Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 161, No. 2, and Plate; 1874 noticed by Burgess, Mem. Buddh. Cav. Junn. p. 2, No. 1, and Plate; 1876 Kern, Ind. Stud. Vol. XIV. p. 396 f., No. 1; 1877 noticed by Burgess, Ind. Ant. Vol. VI. p. 33, No. 1, and Plate; 1877 Kern, Ind. Ant. Vol. VI. p. 40 f., No. 1; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 54, No. 30, and Plate; 1883 Bühler-Bargess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 94, No. 11, and Plate XLIX.
 - Prakrit. Gift of a chaitya building (chētiyaghara) by Sulasadata (Sulasadatta), the son of Heranika (Hairanyaka, or of a treasurer), the Kaliana (inhabitant of Kalyana).
- 1180. Junnar Buddhist cave inscription .- 1837 Sykes, Journ. Roy. As. Soc. Vol. IV. p. 289 f., No. 9, and Plate; 1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1044 f., No. 2, and Plate LIII; 1847 Bird, Hist. Res. p. 55, No. 10, and Plate L, 10; 1854 Stevenson-

Brett, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. V. p. 160 f., No. 1, and Plate; 1874 noticed by Burgess, Mem. Buddh. Cav. Junn. p. 3, No. 2, and Plate; 1877 noticed by Burgess, Ind. Ant. Vol. VI. p. 34, No. 2, and Plate; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 54, No. 31, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 94, No. 10, and Plate XLIX.

Prakrit. Gift of a seven-celled cave (satagabha) and a cistern (podhi) by the guild (sēni) of corn-dealers (dhamiika).

- 1181. Junnar Buddhist cave inscription.— 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 54 f., No. 32, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 94, No. 7, and Plate XLIX.
 Prakrit. Gift of Isipālita (Rishipālita), the son of the lay-worshipper (upāsaka)
 Ūgāha (Udgrāha), together with his sons. Compare No. 1183.
- 1182. Junnar Buddhist cave inscription.— 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 55, No. 33, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 94, No. 8, and Plate XLIX.
 Prakrit. Gift of a refectory (bhōjaṇaṃaṭapa) to the community (sagha) by the Yayana (Yavana) Chita of the Gatas (Gartas).
- 1183. Junnar Buddhist cave inscription.— 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Tomp. W. Ind. p. 55, No. 34, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 94, No. 9, and Plate XLIX.
 Prakrit. Gift of a chaitya building (chētiyaghara) by Isipālita (Rishipālita), son of Ugāha (Udgrāha), with his family. Compare No. 1181.
- 1184. Karādh Buddhist cave inscription.— 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 89, No. 6.
 Prakrit. Gift of a cave (lēna) by Samghamitara (Samghamitra), the son of Göpāla.
- 1185. Kölhäpur Buddhist relic box inscription.— 1879 Bhagvanlal Indraji-Bhandarkar, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XIV. p. 149; 153; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Tomp. W. Ind. p. 39, and Plate.
 Prakrit. Gift of Bamba (Brahman). Made by Dhamaguta (Dharmagupta). Besides the letter A.
- 1186. S. 12.—Banaväsi stone inscription of the time of rājan Hāritiputa Viņhukada-Chuṭukulānanda-Sātākamni.— 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 100 f.; 1885 Bühler, Ind. Ant. Vol. XIV. p. 331 ff., and Plate; 1889 correction by Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 96; 1905 correction by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1905, p. 304 f.; 1908 correction by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. LIII f., No. 25.

—raño Haritiputasa Vinhukada-Chutukulānamda-Sātākamņisa vasasatāya savachharam 10 2 hēmamtāna pakho 7 divasa 1.

Prakrit. Gift of a nāga, a tank (tadāga) and a vihāra by the mahābhuvī (mahābhōji?), the daughter of a mahārāja, whose son and progeny (?) was alive, together with (?) the prince (sa-umā[rā]) Sada° or Sivakhadanāgasiri (Sāta° or Sivakhadanāgasiri). The minister (āmacha) Khadasāti (Shandasvātī) was the superintendent of the work (kamamtika). The nāga was made by Naṭaka (? Nartaka), pupil (sisa) of the teacher (āchariya) [I]damōraka (Indramayūraka), the Sajayataka (inhabitant of Sāmjayanti). Compare No. 1021.

T

(Mitradeva) from Patithana (Pratishthana).

Patithana (Pratishthana).

- 1187, Pitalkhora Buddhist pillar inscription. -- 1881 Bühler-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 39, No. 1, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 83, No. 1, and Plate XLIV; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent, Ges. Vol. L. p. 587. Prakrit. Gift of [a pillar] by the family of the perfumer (gadhika) Mitadeva
- 1188. Pitalkhora Buddhist pillar inscription. 1881 Bühler-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 40, No. 2, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 83 f., No. 2, and Plate XLIV. Prakrit. Gift of a pillar (thabha) by the sons of Saghaka (Samghaka) from
- 1189. Pitalkhora Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvaulai Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 40, No. 3, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 84, No. 3, and Plate XLIV. Prakrit. Fragment. Gift of Magila (Mrigila), the son [of a Vachhi].
- 1190. Pitalkhora Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp, W. Ind. p. 40, No. 4, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind Vol. IV. p. 84, No. 4, and Plate XLIV. Prakrit. Fragment. Mentions the royal physician (rajave[ja]) [Magila].
- 1191. Pitalkhora Buddhist cave inscription.-1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 40, No. 5, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 84, No. 5, and Plate XLIV; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 587. Prakrit. Gift of the royal physician (rajaveja) Magila (Mrigila), the son of a Vachhi (Vātsī).
- 1192. Pitalkhora Buddhist cave inscription.—1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 40, No. 6, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 84, No. 6, and Plate XLIV; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 587 f. Prakrit. Gift of Data (Datta), the daughter of the royal physician (rajaveja) Magila (Mrigila), the son of a Vachhi (Vātsī).
- 1193. Pitalkhora Buddhist cave inscription. 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 41, No. 7, and Plate; 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 84, No. 7, and Plate XLIV. Prakrit. Gift of Dataka (Dattaka), the son of the royal physician (rajaveja) Magila (Mrigila), the son of a Vachhi (Vātsī).
- 1194. S. 13 .- Elüra copperplate inscription of the Salankayana mahārāja Sirī-Vijayadēvavamma. - 1907 Hultzsch, Ep. Ind. Vol. IX. p. 56 ff., and Plates. -vijayasamvvachchharāni tērasa 10 3 Pausha-kāla-pakkha-dasami. Prakrit. Announcement, issued from Vengipura to the villagers (gama) of Elura, headed by the muluda, by the mahārāja Siri-Vijayadēvavamma (Śri-Vijayadēvacarman), the Salankayana (Salankayana), the worshipper of the holy (bhagavat) Chittarathasami (Chittarathasvamin), the fervent Mahesara (Mahesvara). concerning a grant of land to Ganasamma (Ganasarman) of the Balbhura) goira (gotta).

- 1195. S. 2.—Majavalli pillar inscription of rajan Haritiputta Vinhukadda-Chutukulänanda-Sätakanni.—1895 noticed by Bühler, Academy, Vol. XLVIII. p. 229 f. = Journ. Roy. As. Soc. 1895, p. 903 f. = Vienna Orient. Journ. Vol. IX. p. 331=1896 Ind. Ant. Vol. XXV. p. 28; 1902 Rice, Ep. Carn. Vol. VII. p. 251 f. and 142, No. 263, and Plate; 1905 note by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1905, p. 304; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. LIV. No. 26. —[savva]chchharam biliyam gihmapakkam padamam divasam padamam.
 - Prakrit. Becords, after an invocation of the god Maļapaļi, the order of the rājan of Vaijayanti, Sātakaṇṇi, of the Mānavya götra (gotta), the son of a Hāriti, born in the Viṇhukadda-Chnṭn family, to the official (rajjuka) Mahāvalabha (Mahāvallabha) concerning the gift of some land (†) in the village district (gāmāhāra) Sahalāṭavī to Koṇḍamāṇa of the Koṇḍinya (Kaunḍinya) götra (gotta), the son of a Hāritī, as a Brahman's gift for the enjoyment of the god Maļapalī.
- 1196. S. 1.—Malavalli pillar inscription of Sivakhadavamman Hāritīputta, rājan of the Kadambas.—1895 noticed by Bühler, Academy, Vol. XLVIII. p. 229 f. = Journ. Roy. As. Soc. 1895, p. 903 f. = Vienna Orient. Journ. Vol. IX. p. 331=1896 Ind. Ant. Vol. XXV. p. 28; 1902 Rice, Ep. Carn. Vol. VII. p. 252 and 142 f., No. 264 and Plate; 1905 note by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1905, p. 305; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc. p. LIV f., No. 28.
 —savrachchharam padamam saradapakkham bittyam divasam padamam nakkhattam Röhimiyam.
 - Prakrit. Records, after an invocation of the god Maļapaļi, the renewal of the gift of the villages of Somapaţii, Konginagara, Mariyasā, Karipendūlā, Paramuchchundī, Kundamuchchundī, Kappennalā, Kundatapuka, Veļakī, Vegūrā, Konatapuka, Ekkaṭṭhāhāra, Sahalā to Siri-Nāgadatta (Śrī-Nāgadatta), the ornament of the Kondamāna family, of the Kondinya (Kaundinya) götra (gotta), the son of a Kosikī (Kansikī), by the rājan of the Kadambas, Sivakhadavamman (Śivaskandavarman), the rightful supreme king of great kings of Vaijayantī (Vaijayantī-dhammanahārājādhirāja), of the Mānavya götra (gotta), the son of a Hāritī, the lord (patī) of Vaijayantī.
- 1197. Ajantā cave inscription.—1865 Bhau Daji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 63, and Plates; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 67 f., No. 1; 1883 Bübler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 116, No. 1, and Plate LVI; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 597.
 - Prakrit. Gift of a cave-door (gharamukha) by Katahadi, son of a Vasithi (Vāsishihi).
- 1198. Ajanță cave inscription.—1865 Bhau Daji, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. VII. p. 63, and Plates; 1881 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inscr. Cave-Temp. W. Ind. p. 68, No. 2; 1883 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 116, No. 2, and Plate LVI; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 597.
 - Prakrit. Fragment. Gift of a shrine (thanaka) with cells (uvavaraka) and an upa[saya] by the merchant (vanija) Ghanamadada.

- 1199. Ajanta painted Buddhist cave inscription.— ISSI Bhagvanlal Indraji-Burgess, Inser. Cave-Temp. W. Ind. p. 84. No. 14, and Plate: 1883 Bühler-Burgess, Arch. Surv. W. Ind. Vol. IV. p. 137, No. 6, and Plate LIX.
 Prakrit. Fragment. Of Bhagava (Bhagavat), the first god of the ascetics (yati), the master of the ascetics (yati). Uncertain.
- 1200. S. 8.—Hirahadagalli copperplate inscription of the Pallava dhammamhīrājādhirāja Sivakhamdavama.—1888 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 2 ff., and Plates; 1888 correction by Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 9 f.; 1892 correction by Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 479; 1894 corrections by Leumann, Ep. Ind. Vol. II. p. 483 ff.; 1894 corrections by Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 485 f.; 1895 correction by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 210 ff.; 1900 correction by Hultzsch, Ep. Ind. Vol. VI. p. 88.

-sainra 8 vasa 6 diva 5. Prakrit. Announcement of the righteons supreme king of great kings (dhammamaharajadhiraja) Sivakhamdavama (Sicaskandavarman) of the Pallavas, a Bharaddaya (Bharadvaja), from Kamchipura (Kanchipura), to the royal princes (rajakumāra), generals (sēnāpati), rulers of districts (ratthika), chiefs of madambas (madabika), local prefects (desadhibata) and others, to the freeholders of various villages (gamagamabhojaka), herdsmen (callava), cowherds (govallava), ministers (amachcha), guards (arakhadhikata), captains (gumika), tūthikas, neyikas, and all others employed in the service, to spice (sameharamtaka) and soldiers (bhadamanusa), that he has given a garden (vadaka) in the village (gama), the settlement (kodumka) of Chillareka (or Chillereka or Chilereka) in the Satabani district (raftha), formerly given by the lord (sami), the father of the maharaja, and some fields in Apitti to certain Brahmans (bamhana), inhabitants of Apitti and freeholders (bhōjaka) of the settlement of Chillareka, viz. to Golasamaja (Golasarmarya), to Agisamaja (Agnisarmarya) of the Attoya (Atreya) gotra (gota), to Madhara, to his sonin-law Agilla (Agnila), to Kalasama (Kalasarman) of the Harita götra, to Kumārasama (Kumārašarman) of the Bhāradāya (Bhāradvāja) götra, to the four brothers Kumāranaindi (Kumāranandin), Kumārasama (Kumārašarman), Kottasama (Köttasarman), Satti (Šakti) of the Kosika (Kausika) gotra, to Bhati (Bhatti) of the Kassava (Kāšyapa) gōtra, to Khamdakomdi (Skandakōti?), the Bharadaya (Bharadeaja), to Khamdadha (Skandarddha), to Bappa, to Dattaja (Dattārya), to Namdija (Nandyarya), to Rudasama (Rudraśarman) of the Vatsa (Vālsya) götra, to Dāmaja (Dāmārya), to Sālasamaja (Syalasarmārya), to Parimita (? Harimitra?), to Naganamdii (Naganandii), to Goli, to Khamdasama (Skandasarman), to Samija (Svamyarya), The plates were prepared by the privy councillor (rahaeddhikata) Bhattisama (Bhattisarman), the Kolivala freeholder (bhōjaka).

1201. Deotek stone inscription.—1877 Cunningham, Corp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 28 f.;
102, No. 13 and Plate XV.

— . . he pa 1 di 10.

Prakrit. Fragment. Mentions some lord (sami) and Chikambari.

1202. S. 20.—Jagayyapēta Buddhist pillar inscription of the time of rājan Mādhariputa Sirivira-Purisadata of the Ikhākus.—1882 Bhagvanlal Indraji, Notes Amar. Stāpa, p. 55 f., No. 3; 1882 Bühler, Ind. Ant. Vol. XI. p. 259, No. 3; 1887 T 2

Burgess-Bühler, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 110 f., No. 3, and Plate LXIII; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 601.

-raño Madhariputasa Ikhakunam Sirivira-Purisadatasa samvachhara 20 vasapakham 8 divasam 10.

Prakrit. Gift of five entrance pillars (āyakakhāmbhā) at the eastern door (dārā) of the Great Chaitya (mahāchētiya) of the holy (bhagavat) Budha (Buddhā) in the village (gāmā) of Velagiri, by the artīsan (āvēsanī) Sidhatha (Sīddhārthā), residing in the village (gāmā) of Mahākāmdurūra, the son of the artīsan (āvē[sa*]ni) Nākachāmda (Nāgachāndrā) residing in Nadatūra (or Todatūra?) in the district (rathā) of Kammāka, together with his mother Nāgilanī (Nāgilā), his wife Samudanī (Samudrā), his son Mūlasiri (Mālaśrī), his daughter Nākabudhanikā (Nāgabuddhā), his brother Budhinaka (Buddhī) and the wife of the same Kanikā (Krishūā) and their sons Nāgasiri (Nāgašrī) and Chamdasiri (Chandraśrī) and their daughter Sidhathanikā (Siddhārthā).

1203. S. 20.—Jagayyapēta Buddhist pillar inscription of the time of rājan Mādhariputa Sirivira-Purisadata of the Ikbākus.—1882 Bhagvanlal Indraji, Notes Amar. Stāpa, p. 55 f., No. 2; 1882 Bühler, Ind. Ant. Vol. XI. p. 258 f., No. 1; 1887 Burgess-Bühler, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 110 f., No. 1, and Plate LX11; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 601.

-rand Madhariputasa Ikha[kunam Siri]vira-Purisadatasa samvachhara 20 vasapakham 8 divasam 10.

Prakrit. With the exception of some details, identical with No. 1202. Note the spellings aresani, ayakakhambha, and the non-mentioning of the Great Chaitya.

1204. S. 20.—Jagayyapēta Buddhist pillar inscription of the time of [rājan] [Mādhari]puta Sirivira-Purisadata of the Ikhākus.—1882 Bhagvanlal Indraji, Notes Amar. Stāpa, p. 55 f., No. 1; 1882 Bühler, Ind. Ant. Vol. XI. p. 258 f., No. 2; 1887 Burgess-Bühler, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 110 f., No. 2, and Plate LXII; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 601.

putasa Ikhākunam Sirivīra-Purisadatasa sa[mvachhara 20]

divasam 10.

Prakrit. Fragment. With the exception of some details, identical with No. 1202.

Note the spellings Mulasiri, Kamnika, Nagasiri, aresani by the side of aresani and the specification of Nadatara as a village (gama).

1205. S. 10.—Mayidavolu (now Madras Museum) copperplate inscription of the Pallava yuvamahārāja Sivakhamdavamma.—1900 Hultzsch, Ep. Ind. Vol. VI. p. 84 ff., and Plates.

-sa[m]vachkara[m] dasamam 10 gimha pakhō chhathō 6 divasam pamchami 5.

Prakrit. Order of the ywamahārāja Sivakhamdavamma (Sivaskandavarman) of the Palavas (Pallacas), who belonged to the Bhāradāya (Bhāradvāja) götra (gotta), from Kāmehīpura to the official (vāpata) at Dhamñakada (Dhānyakata), with regard to the gift of the Amdhāpatiya village (gāma in Andhrāpatha) Viripara to the Brahmans (bamhana) Puvakutuja of the Agivesa (Āgnivēšya) götra (gotta) and Gonamdija (Gönandyārya) of the Agivesa (Āgnivēšya) götra (gotta).

- 1206. Amaravati (now British Museum) Buddhist rail inscription.—1868 Fergusson-Conningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 184; 239, No. 1, and Plates XLIX, LXIV, 1, and XCIX; 1873 Fergusson-Countingham, Tree and Serpent Worship², p. 202; 261, No. 1, and Plates as before.
 - Prakrit. Fragment. [Gift] of the female lay-worshipper (urāsīkā) Samgharakhitā (Samgharakshitā), the daughter of the householder (gahapati) Mariti, together with her brothers and sisters, and of her three sons Chada (Chandra), Ajuna (Arjuna), Chadamugha (Chandramukha), of Bhūtāyana (?).
- 1207. Amaravati Buddhist rail inscription.—1868 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 206; 239, No. 2, and Plates LXXXIII, 1 and XCIX; 1873 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship², p. 225; 261, No. 2, and Plates as before.
 - Prakrit. Gift of tablets of homage (? yaghāpaṭa?) to the Great Chaitya (mahāchētiya) of Bhagavat, by Bodhi and Nāgamuli (Nāgamūlī) . . . of the Pusiliyas (Pushyalīyas), for the benefit of their nephews, sons-in-law, grand-daughters and grandsons.
- 1208. Amaravati Buddhist pillar inscription.—1868 Cunningham. Tree and Serpent Worshipl, p. 239, No. 3, and Plates XC. 7 and XCIX; 1873 Cunningham, Tree and Serpent Worship², p. 261, No. 3, and Plates as before.
 - Prakrit. Fragment. Records the gift of a pillar (thabha) by . . . Halika (?) and others.
- 1209. Amaravati (now British Museum) Buddhist pillar inscription.—1868 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 168; 239, No. 4, and Plates LIII, 2 and XCIX; 1873 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship², p. 186; 261, No. 4, and Plates as before.
 - Prakrit. Gift of two foot-prints (patuka) by Sivaka (Šivaka), the Sethivādicha (inhabitant of Šrēshţivāda), the son of the householder (gahapati) Pusila (Pushyala), the Torulāraka (inhabitant of Turulāra), and by his wife Munuri, his son-in-law Vichita, his son-in-law Vichita (?), his son-in-law Mahadēva (Mahādēva), his daughter Budhā (Buddhā), his daughter Chadapusā (Chandrapushyā), and his daughter Chamā (Kshamā).
- 1210. Amarāvati (now British Museum) Buddhist pillar inscription. 1868 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 210; 239, No. 5, and Plates LXXXIX and XCIX; 1873 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship², p. 230; 261, No. 5, and Plates as before; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 560, No. 44; 1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 18, note 2.
 - Prakrit. Gift of a Chaitya pillar (chēliyakhabha) by the perfumer (gadhika) Hamgha (Samgha) together with his sons and daughters.
- 1211. Amarāvati Buddhist pillar inscription.—1863 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 211; 239, No. 6, and Plates XC, 2 and XCIX; 1873 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship³, p. 231; 261, No. 6, and Plates as before.
 - Prakrit. Fragment. Mentions the son of . . . ti, the householder (? [gahapa]ti) Dhana

- 1212. Amaravati Buddhist pillar inscription.—1868 Cunningham, Tree and Serpent Worship³, p. 239, No. 7 and Plates XC, 1 and XCIX; 1873 Cunningham, Tree and Serpent Worship³, p. 261, No. 7, and Plates as before.
 Prakrit. Mostly illegible. Said to mention the great Chaitya (mahāchētiya).
- 1213. Amaravati Buddhist rail inscription.—1868 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 200; 239, No. 8, and Plates LXXVII and XCIX; 1873 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship², p. 218; 261, No. 8, and Plates as before.
 - Prakrit. The slab (pata) of Mulssiri (Mūlaśri), the son of the merchant (vāniya)
 Bodhisamma (Bōdhiśarman), who lives at Kovurura, together with mother
 . . . aud (?) of Dhammasiri (Dharmairi). Bapisiri (?), Saghā (Sanghā).
- 1214. Amaravati Buddhist scalpture inscription.—1837 mentioned by Cunningham-Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 218, and Plate X; 1854 Cunningham, Bhilsa Topes, Plate IX; 1868 Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 239, No. 9, and Plate XCIX; 1873 Cunningham, Tree and Serpent Worship², p. 261, No. 9, and Plates as before.
 - Prakrit. Gift of a pillar for lamps (divatha[bha]) at the southern entrance (āyaka) to the Great Chaitya (mahāchēdiya) by the merchant (? vāniya?) Budhi (Buddhi), son of the merchant (vāniya) Kanha (Krishna), together with his wife, his sons, his daughters, his grandsons, his relatives, friends and connections. There is no mentioning of mahārāja Yanasiri Sādakapi.
- 1215. Amaravati (now British Museum) Buddhist sculpture inscription.—1868 Cunning-ham, Tree and Serpent Worship¹, p. 240, No. 10, and Plates XCV, 3 and XCIX; 1873 Cunningham, Tree and Serpent Worship², p. 262, No. 10, and Plates as before.
 - Prakrit. Fragment. Gift of a slab (pata) by some person together with his daughters, his sons and grandsons.
- 1216, Amarāvatī (now British Museum) Buddhist rail inscription.—1868 Cunningham,

 Tree and Serpent Worship¹, p. 240, No. 11, and Plates LXXXII, 6 and XCIX:
 1873 Cuaningham, Tree and Serpent Worship², p. 262, No. 11, and Plates as before.

 Prakrit. Fragment. Gift of a Chaitya (chētiya), a rail (vētikā) and a slab (paṭa)
 by the householder (gahapatī) Hagha (Samgha), the son of ti, and
 his wife Venhū (Vishnū).
- 1217. Amaravati Baddhist rail inscription.—1868 Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 240, No. 12, and Plates LXXV and XCIX; 1873 Cunningham, Tree and Serpent Worship², p. 262, No. 12, and Plates as before. Prakrit. Gift of a slab with foot-prints (padukapata) by Rakhadi Chadati (?).
- 1218. Amaravati (now British Museum) Buddhist pillar inscription.—1868 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 178; 240, No. 13, and Plates LXI, and XCIX; 1873 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship², p. 196; 62, No. 13, and Plates as before; 1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. 38, with facsimile, and Plate LXI, No. 56; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 601.

Prakrit. Gift of Saghā (Samghā). Saghadāsī (Samghadāsī), and Kumaļā, the wives of Lonavalavaka, Sagharakhita (Samgharakshita), and Mariti.

- 1219. Amarāvati (now British Museum) Buddhist pillar inscription.—1868 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 172; 240, No. 14, and Plates XLIX, LVIII, 2 and XCIX; 1873 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship,³ p. 190; 262, No. 14, and Plates as before; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Margent, Ges. Vol. XXXVII. p. 560, No. 43.
 - Prakrit. Fragment. Gift of two foot-prints (pātuka) by the mother of Ānadā (Ānandā).
- 1220. Amaravati (now British Museum) Buddhist pillar inscription.—1868 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 167 f.; 240, No. 15, and Plates LIII, 1 and XCIX; 1873 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship², p. 185 f.; 262, No. 15, and Plates as before.
 - Prakrit. Fragment. Gift of P. . . . , the son of the householder (gahapati)
 Kanhati, the [Chada]kicha (? inhabitant of Ohandaka), together with his wife,
 his sons and daughters.
- 1221. Amaravati (now British Museum) Buddhist sculpture inscription.—1868 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 212; 240, No. 16, and Plates XCII, 1 and XCIX; 1873 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship³, p. 232; 262, No. 16, and Plates as before.
 - Prakrit. Gift of a coping-stone (uwisa) by Ajuna (Arjuna), the grandson of the householder (gahapati) Mariti, the Akhasavadicha (inhabitant of Akhasavada).
- 1222. Amaravati (now British Museum) Buddhist pillar inscription.—1868. Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 172; 240, No. 17, and Plates XLIX, LVIII, 1 and XOIX; 1873 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship², p. 190; 262, No. 17, and Plates as before.
 - Prakrit. Gift of the grandson of the householder (gahapati) Pāpin, the Valikachaka (inhabitant of Valikacha), and his wife Kanhā (Krishnā).
- 1223. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1868 Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 240, No. 18, and Plate LXXXVII, 5 and XCIX; 1873 Cunningham, Tree and Serpent Worship², p. 262, No. 18, and Plates as before; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 561, No. 46.
 - Prakrit. Gift of a lion-seat (sihathāna) by the two, the elder (thēra), the Unaitya worshipper (Chētiyavamdaka) bhayamta (bhadanta) Budhi (Buddhi) and his sister, the nun (bhikhunt) Budhā (Buddhā).
- 1224. Amaravati (now British Museum) Buddhist sculpture inscription.—1868 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 216; 240, No. 19, and Plates XCV, 4 and XCIX; 1878 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship³, p. 236; 262, No. 19, and Plates as before.
 - Prakrit. Made by the son of Dhamadeva (Dharmadeva), the Virapuraka (inhabitant of Virapura); the gift of female papil (atevasint) of Budharakhita (Buddharakshita).

- 1225. Amaravati (now British Museum) Buddhist rail inscription.—1868 Fergusson-Cunningham, Tree and Serpent Worship¹, p. 206; 240, No. 20, and Plates LXXV, LXXXII, 1 and XCIX; 1873 Fergusson-Cuuningham, Tree and Serpent Worship², p. 224; 262, No. 20, and Plates as before.
 - Prakrit. Fragment. Gift of two Chaitya alabs (chētiyapata), three footprints (pātuka), a coping-stone (umnisa), a alab with a flower vase (? puphaganiyapata?) and other objects to the Great Chaitya (mahāchētiya) at Dham-nakata (Dhānyakata), and erection of some object at (?) the Great Chaitya (mahachētiya) at Rājagiri at the northern door (dara) by some person together with his rolatives.
- 1226. Amaravati (now British Museum) Buddhist sculpture inscription.—1868 Fergusson, T-ee and Serpent Worship¹, Plates XCIII and XCVI, 3 (Plates only); 1878 Fergusson, Tree and Serpent Worship², Plates as before. Prakrit. Fragment, Gift of a slab (pata) by some person.
- 1227. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1868 Fergusson, Tree and Serpent Worship¹, Plate XCIV, 4 (Plate only); 1873 Fergusson, Tree and Serpent Worship², Plate as before.
 - Prakrit. Not read except the beginning which contains an invocation of Bhagavat.
- 1228. Amaravati Buddhist scalpture inscription.—1868 Fergusson, Tree and Serpent Worship!, Plate XCVI, 4 (Plate only); 1873 Fergusson, Tree and Serpent Worship?, Plate as before.
 Prakrit. Not read.
- 1229. Amarāvatī Buddhist pillar inscription.—1882 Hultzsch, Notes Amar. Stūpa, p. 6, No. 3, and Plate II, No. 1, with correction by Burgess; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 550, No. 4; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 86, and Plates XLV, I and LX, No. 47; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 600.
 Prakrit. Gift of a Chaitya pillar (chētiyakhabha), with a relic, at the southern
 - Prakrit. Gift of a Chaitya pillar (chētiyakhabha), with a relic, at the southern entrance (āyāka) by the merchant (vāniya) Kuṭa together with his relatives.
- 1230. Amarāvatī Buddhist pillar inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 8, No. 8, and Plate II, No. 2; 1882 Hultzsch, Notes Amar. Stūpa, p. 52 f., No. 8; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 550 f., No. 5; 1886 correction by Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 344, No. 5; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p 105, and Plate LX, No. 49.
 - Prakrit. Fragment. Records after an invocation of [Bha]gavat, the gift of a chief pavilion (? padhānamedava) to the Order (sagha) by the perfumer (gadhika), the merchant (vāniya) Siridata (Śrīdatta), son of the merchant (vāniya) Dhammila (Dharmila). . . of the pupil (? sisiha) of the teacher (acha[riya]) Sāripu[tā] (Śāriputra), the Mahavanasaliya (who lives in Mahavanasala?).

- 1231. Amarāvatī Baddhist coping-stone inscription.—1882 Burgess-Hultzsch, Notes Amar. Stāpa, p. 8, No. 2 B, and Plate II, No. 3; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 550, No. 3; 1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 67, and Plates XXVIII, 6 and LXI, No. 52; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 600 f.
 - Prakrit. Fragment. Gift of a coping-stone (unica) by some woman together with her relatives.
- 1232. Amarāvatī Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 10, No. 22; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 345, No. 48; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 103, and Plate LVIII, No. 34.
 - Prakrit. Fragment. [Gift] of of the son of Mugudasama (Mukundasarman) . . with relatives.
- 1233. Amarāvatī Buddhist sculpture inscription.—1882 Bargess, Notes Amar. Stūpa, p. 12. No. 11 B, and Plate II, No. 4; 1882 Hultzsch, Notes Amar. Stūpa, p. 53, No. 11 B; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 551, No. 6; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 85, and Plates XLIII, 4 and LVII, No. 23.
- 1234. Amarāvatī Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess-Hultzsch, Notes Amar. Stāpa, p. 12, No. 12B, and Plate III, No. 5; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 551 f., No. 7; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South, Ind. Vol. I. p. 85, and Plates XLIII, 6 and LVII, No. 22; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 600.
 - Prakrit. Fragment. Mentions, after an invocation of Bhagavat Buda (Buddha), the sister of the monk (pavaita) Sidamta (Siddhārtha), who lived at Mamdara.
- 1235. Amarāvati Buddhist stone-slab inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 13, No. 16B; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgonl. Ges. Vol. XL. p. 345, No. 47; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 104, and Plate LIX, No. 40.
 - Prakrit. Fragment. Gift of an upright slab (udhapa[ta]) by and Bodhi.
- 1236. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 16, No. 34 bis; 1887 noticed by Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 83, and Plate XLII, 7 (in the text by mistake called 8).
 - Prakrit. Fragment. No sense has been made out.

- 1237. Amaravati Buddhist sculpture inscription,-1882 Burgess, Notes Amar. Stapa, p. 16, No. 36; 1882 Hultzsch, Notes Amar. Stapa, p. 53, No. 36; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 552, No. 10; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 102, and Plate LVI, No. 14. Prakrit. Gift of the two female pupils (ativasini) of [A]ya-Kamaya (Arya-Kamaya).
- 1238. Amaravati Buddhist pillar inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 17, No. 25B, and Plate III, No. 6; 1882 Hultzsch, Notes Amer. Stupe, p. 53, No. 25B; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 552, No. 8; 1887 noticed by Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 105, and Plate LX, No. 46. Prakrit. Fragment. No name has been preserved.
- 1289. Amaravati Buddhist sculpture inscription.-1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stapa, p. 17, No. 26B; 1882 Hultzsch, Notes Amar. Stapa, p. 53, No. 26B; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch, Morgonl. Ges. Vol. XXXVII. p. 552, No. 9; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL, p. 343 f., No. 9; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 82, and Plates XLII, 4 and LVIII, No. 28; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 600.
 - Prakrit. Fragment. Records, after an invocation of the Enlightened One, [the gift] of Nakha, the wife of the lay-worshipper (updsaka), the Narassla (inhabitant of Narasala?), the merchant (vaniya) Nagatisa (Nagatishya), together with her sons, the tressurer (horanika) Budhi (Buddhi), Müls, .
- 1240. Amaravati Buddhist sculpture inscription .- 1882 Burgess, Notes Amar. Stapa, p. 18. No. 54, and Plate III, No. 7; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 345, No. 49; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 78. and Plates XLI, 6 and LVII, No. 19.
 - Prakrit. Fragment. Records, after an invocation of Bhagavat, the crection of a slab (? pemdaka) by Hamgi (Samghi), the daughter of bhayamii (bhadanii) Bodhi. of the nun (pavajitikā) Vasā (Vašyā) resident in Kevurura.
- 1241. Amaravati Buddhist sculpture inscription.-1882 Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 19. No. 60; 1882 Hultzsch, Notes Amar. Stapa, p. 53, No. 60; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 553, No. 13; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 344, No. 13.
 - Prakrit. Fragment. Gift of a rail bar ([su]ji) by Budhara[khita] (Buddharakahita).
- 1242. Amaravati Buddhist oculpture inscription .- 1892 Hultzsch, Notes Amar. Stupa, p. 19, No. 66; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 553, No. 15: 1887 Burgesa-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 101, and Plate LVI, No. 10; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 599. Prakrit. Fragment. Gift of the female ascetic ([sama]nikā) [Si]dhamthi

(Siddharthi).

Prakrit. Gift of an upright slab (udhampata) at the foot of the Great Chaitya (mahāchētiya) by Damilakanha (Dravidakrishna) and his brother Chulakanha (Kehudrakrishna) and his sister Nākhā.

1244. Amarāvatī Buddhist pillar inscription.—1582 Burgess-Haltzsch, Notes Amar. Stūpa, p. 22 f., No. 86, and Plate III, No. 9; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 555, No. 22; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 103, and Plate LIX, No. 38; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 600.

Prakrit. Erection of a pillar for lamps (divakhambha) at the foot of the Great Chaitya (mahachētiya) of Bhagavat by Khadā (Skandā), wife of the householder (gahapati) Sidhatha (Siddhārtha) of the Jadikiyas, together with her relatives.

1245. Amarāvati Buddhist pillar inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 23, No. 87 (upper inscription), and Plate IV, No. 10; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 555, No. 23 (upper inscription); 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 82, and Plates XLII, 8 (in the text by mistake called 7) and LVII, No. 18 (upper inscription).
Sanskrit. By the glorious Viprajātapriya (?).

1246. Amaravsti Buddhist pillar inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 23, No. 87 (lower inscription), and Plate IV, No. 10; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 555, No. 23 (lower inscription); 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 82, and Plates XLII, 8 (in the text by mistake called 7) and LVII, No. 18 (lower inscription); 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 600.

Prakrit. Gift of Aya-Dhamā (Ārya-Dharmā), female pupil (atēvāsint) of Aya-Rēti (Ārya-Rēti).

1247. Amarāvatī Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 25, No. 114, and Plate IV, No. 13; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 345, No. 50; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 102 f., and Plate LVII, No. 27.

Prakrit. Gift of a rail bar (suyi) by the treasurer (héranika) Sidhatha (Siddhārtha), the son of the householder (gahapati) Budhila (Buddhila), together with his relatives.

1248. Amaravati Buddhist stone inscription of the time of rajan Väsithiputa sāmi-Siri-Pulumāvi.—1882 Bhagvanlal Indraji-Burgess, Notes Amar. Stāpa, p. 26 f., No. 121, and Plate IV, No. 11; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 549 f., No. 1; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 100, and Plate LVI, No. 1; 1895 note by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 212.

— rako V[āsi]th[i]puta[sa] s[ā]m[i]-Siri-Pulumdeisa savachhara . . .

- Prakrit. Fragment. Gift of a wheel of the Law (dhamachaka) at the western gate (dāra) to the Great Chaitya (mahāchētiya) of [Bhagava]t by the householder (gahapati) Kahūtara and Isila (Rishila), the son of the householder (gahapati) Puri, of the Pimdasutariyas, together with [Isila's] wife Nākānikā (Nāgā) and other relatives, as the special property of the school (nīkāya) of the Chētikiyas (Chaityakiyas).
- 1249. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stäpa, p. 28, No. 129; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 346, No. 52; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 102, and Plate LVII, No. 20; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 600.

Prakrit. Fragment. Gift of an [a]badamala (?) by some man together with his relatives.

- 1250. Amarāvatī Buddhist sculpture inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 30, No. 143, and Plate IV, No. 14; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 346, No. 53; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 53, and Plates XX, 2 and LVI, No. 6; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 599.
 - Prakrit. Fragment. Gift of the nun (bhikhunī) Budharakhitā (Buddharakshitā)
 . . . female pupil (atēvāsi[nī]) of the elder (thēra) bhayata (bhadanta)
 Budharakhita (Buddharakshita), the overseer of works (navakamaka) of the
 Chētikas (Chaityakas) who lived at Rājagiri, together with her daughter, and of
 Dhamadinā (Dharmadattā) and of Sagharakhita (Saingharakshita).
- 1251. Amarāvatī Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 31, No. 145, and Plate IV, No. 15; 1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 62, and Plates XXVII, 2 and LVI, No. 15.
 - Prakrit. Fragment. Gift of a coping-stone (unisa) at the northern entrance (āyāka) to the Great Chaitya (mahāchētiya) by some female person together with her family.
- 1252. Amarâvati Buddhist coping-atone inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 32, No. 151; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 55, and Plates XXI, 2 and LVI, No. 13, a, b; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 600.
 - Prakrit. Fragment. [Gift] of the lay-worshipper (apāsikā) Kamā (Kāmyā), daughter of the housewife Kanhā (Krishnā), daughter of the householder (gahapati) Ida (Indra), together with her relatives, and of the nun (bhikhunī) Nāgamitā (Nāgamitrā).
- 1253. Amaravati Buddhist pillar inscription.—1882 Burgess-Hultzsch, Notes Amar. Stapa, p. 33, No. 58 B; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgeni. Ges. Vol. XXXVII. p. 552, No. 12.
 - Prakrit. Gift of a slab with a wheel (chakapata) by Koja (Kubja).
- 1254. Amaravatt Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 35, No. 174; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 556, No. 25; 1886 correction by Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL.

- p. 344, No. 25; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 48, and Plates XVIII, 2 and LVI, No. 11.
- Prakrit. Gift of two rail bars (suchi) with circular panels (parichaka) by Makabudhi (Mrigabuddhi), son of the householder (gahapati) Budhi (Buddhi), together with his relatives.
- 1255. Amaravati Buddhist coping-stone inscription.—1882 Burgess-Hultzsch, Notes Amar. Stäpa, p. 35 f., No. 175, and Plate IV, No. 16; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent, Ges. Vol. XXXVII. p. 556, No. 26; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 104 f., and Plate LX, No. 44.
- 1256. Amaravati Buddhist stone inscription.—1882 note by Burgess, Notes Amar. Stüpa, p. 36, No. 179; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 559, No. 39; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 58, and Plate XXIV, 1.
 - Prakrit. Fragment. Gift of a coping-stone (unisa) by Ajaka together with his father.
- 1257. Amaravati Buddhist sculpture inscription,—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stüpa, p. 37, No. 182; 1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 48, and Plate XVIII, 3.
 Prakrit. Fragment. Gift of some nun ([bhikh]uni).
- 1258. Amarāvatī Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 37, No. 185; 1882 Hultzsch, Notes Amar. Stūpa, p. 54, No. 185; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 556, No. 27; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 101, and Plate LVI, No. 9. Prakrit. Fragment. Gift of some female ascetic (samanīkā) together with her sister.
- 1259. Amaravati Buddhist coping-stone inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 38, No. 188; 1887 noticed by Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 57, and Plate XXII, 2.
 Said to be illegible.
- 1260. Amarāvatī Buddhist pillar inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 38, No. 189; 1882 Hultzsch, Notes Amar. Stūpa, p. 54, No. 189; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 556, No. 28; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 104, and Plate LIX, No. 42.

 Prakrit. Gift of a pillar (khambha) by the grandsons of Kammā (Kāmyā), daughter of Bhagi, wife of the householder (gahapati) Rāhula in Hiralūra.
- 1261. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess-Hultzsch, Notes Amar. Stäpa, p. 39, No. 196; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 557, No. 29; 1886 correction by Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 344, No. 29.

- Prakrit. Gift of a rail bar (suchi) by the righteons hamlet (bhadanigama), the Chhadakicha (of Chhadaka), headed by the bankers (sethin).
- 1262. Amarāvatī Buddhist sculpture inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stāpa, p. 40, No. 205; 1882 Hultzsch, Notes Amar. Stāpa, p. 54, No. 205; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 557, No. 30; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 90 f., and Plates XLVI, 2 and LX, No. 50; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 600.

Prakrit. Gift of upright slabs (upata) by the nun (pavajitikā) Sagharakhitā (Samgharakshitā) living in Dāvaparavana (?), and by her daughter, the nun (pavajitikā) Hamghā (Samgha), and by (the latter's ?) daughter Jiyavā.

1263. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stüpa, p. 41, No. 65 B, and Plate V, No. 18; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 553, No. 14; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 344, No. 14; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 101 f., and Plate LVI, No. 12.

Prakrit. Gift of a rail bar (suchi) by Papin (Pāpin), brother of bhayamta (bhadanta) Budhi (Buddhi), the Chaitya worshipper (Chētiavadaka). Compare No. 1223.

- 1264. Amarāvatī Buddhist coping-stone inscription.—1882 Hultzsch, Notes Amar. Stapa, p. 41, No. 66 B, and Plate IV, No. 17; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 553, No. 16; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surc. South. Ind. Vol. I. p. 63, and Plates XXVII, 6 and LVI, No. 16; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 600.
 Prakrit. Fragment. Gift of the nun (bhikhuni) Rohā, daughter of Sujātā.
- 1265. Amarāvatī Buddhist pillar inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stāpa, p. 42, No. 68 B; 1882 Hultzsch, Notes Amar. Stāpa, p. 54, No. 68 B; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 554, No. 17; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 86, and Plates XLIV, 2 and LVIII, No. 32.

 Prakrit. Fragment. Records some gift.
- 1266. Amarivati Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess-Hultzsch, Notes Amar.

 Stüpa, p. 42, No. 69 B, and Plate V, No. 19; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch.

 Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 554, No. 18; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv.

 South. Ind. Vol. I. p. 101, and Plate LVI, No. 4; 1896 correction by Franke,

 Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 599.

 Prakrit. The pillar (thabha) of the general (sõnagõpa) Mudukutala (Mridukutala).
- 1267. Amarāvati Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess-Hultzsch, Notes Amar.

 Stāpa, p. 42, No. 71 B, and Plate V, No. 20; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch.

 Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 554, No. 19; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch.

 Surv. South. Ind. Vol. I. p. 94, and Plates I.I. 1 and LVI, No. 3.

 Prakrit. Fragment, [Gift] of the preacher (dhamakathika) Budhi (Buddhi) dwelling in Odiparivenena (?).

- 1268. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess-Hultzsch, Notes Amar. Stüpa, p. 43, No. 210, and Plate V, No. 21; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 557, No. 31; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 94, and Plates LIV, 2 and LVI, No. 5.
 - Prakrit. Fragment. Gift of the female lay-worshipper (uvāsikā) Sivalā (Šivalā) with her sons and daughters.
- 1269. Amaravati Buddhist coping-stone inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stopa, p. 43, No. 74 B; 1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. Plate LVII, No. 24 (Plate only).
 - Prakrit. Fragment. Gift of a rail (vētikā) by several persons together with their relatives and friends.
- 1270. Amaravati Buddhist pillar inscription.—1882 Burgess-Hultzsch, Notes Amar. Stupa, p. 44, Nos. 78 B and 217, and Plate V, Nos. 23 and 22; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 554, No. 20; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 102, and Plate LVII, No. 25.
 - Prakrit. Fragment. Mentions a monk (pavachi[ta]), the pupil (atavāsika) of the great Vinaya teacher (mahāvinayamdhara) Aya-Budhi (Ārya-Buddhi) of the . . . liyas.
- 1271. Amarāvati Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 45, No. 222, and Plate V, No. 24; 1882 Hultzsch, Notes Amar. Stūpa, p. 54, No. 222; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 557, No. 32; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 90, and Plates XLVI, 1 and LXI, No. 53; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 601.
 - Prakrit. Fragment. Records, after an invocation of Bhagapat (Bhagavat), the gift of upright slabs (udhapata) by the lay-worshipper (upāsaka) Budharakhita (Buddharakshita), the son of Gomdi, the Dhamfakataka (inhabitant of Dhamyakata), and by his wife Padumā (Padmā), his son Hamgha (Samgha), Budhi (Buddhi), Bödhi . . . , Budharakhita (Buddharakshita).
- 1272. Amaravatt Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 45, No. 231; 1882 Hultzsch, Notes Amar. Stupa, p. 55, No. 231; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 557 f., No. 33; 1886 correction by Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XL. p. 344, No. 33; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 91, and Plates XLVII, 3 and LVIII, No. 35.
 - Prakrit. Gift of an upright slab (udhapata) by the mendicant monk (pemdapatika) Pasama (Prasama), residing in Mahavanasala (Mahāvanasalā), the pupil (atēvāsika) of the great elder (mahathēra) Paravanuta who dwells in Pusakavana (? Pushyakavana), the brother of Samyutaka (? Samyuktaka), and by Hamgha (Samgha).
- 1273. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 Hultzsch, Notes Amar. Stüpa, p. 46, No. 232, and Plate VI, No. 25; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 558, No. 34; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 91, and Plates XLVII, 2 and LVIII, No. 36; 1896 note by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. L. p. 600.

- Prakrit. Gift of a slab with a filled vase (punaghadakapata) by the leatherworker (chammakara) Vidhika, the son of the teacher (upajhaya) Naga, and by his son Naga, together with their relatives.
- 1274. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess-Hultzsch, Notes Amar.

 Stūpa, p. 47, No. 249; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol.

 XXXVII. p. 558, No. 35; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I.
 p. 105, and Plate LX, No. 48.

 Prakrit Fragment Mentions after an invocation of Bharavat Decaha
 - Prakrit. Fragment. Mentions, after an invocation of Bhagavat, Dusaka (? Dūshaka?), the son of the householder (ga[ha]pati) Hamghi (Samghin).
- 1275. Amarivati Buddhist pillar inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 48, No. 83 B; 1887 noticed by Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 86, and Plate XLIV, 3. Not read.
- 1276. Amarāvati Buddhist chhattra inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 49, No. 88 B, and Plate VII, No. 29; 1882 Hultzsch, Notes Amar. Stūpa, p. 55, No. 88 B; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 555 f., No. 24; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 87, and Plates XLV, 6 and LX, No. 45;-1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 600.
 - Prakrit. Gift of a parasol (chhata) to the Chaitya (chēdiya) of the venerable (aïra) Utayipabhāhis by the female lay-worshipper (uvāsikā) Chadā (Chandrā), the mother of Budhi (Buddhi).
- 1277. Amaravati Buddhist pillar inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stapa, p. 50, No. 17, and Plate VI, No. 27; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 558 f., No. 36; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 106, and Plate LXI, No. 51.
 - Prakrit. Gift of pillars (thabha) by Himala, the son of the householder (gaha-pati) Vasumita (Vasumitra), together with his relatives.
- 1278. Amarāvati Buddhist sculpture inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 50, No. 67; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 346, No. 54.
 - Prakrit. Fragment. Records, after an invocation of Bhagavat, the gift of some merchant (vāniya) together with his relatives.
- 1279. Amaravati Buddhist sculpture inscription of the time of rajan Siri-Sivamaka-Sada.—1382 Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 51, No. 89, and Plate VI, No. 28; 1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 550, No. 2; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 61, and Plates XXVII. 1 and LVI, No. 2; 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra: Dynasty, etc., p. LII, No. 19.
 - Prakrit. Fragment. Mentions the superintendent of the water-houses (? pāniya-yharika) of rājan Siri-Siyamaka-Sada.
- 1280. Amaravati Buddhist stone inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 51, and Plate VI, No. 26; 1882 Hultzsch, Notes Amar. Stūpa, p. 55;

1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 559, No. 37; 1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 344 f., No. 37; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 104, and Plate LIX, No. 39. Prakrit. Gift of a pillar (thambha) by Chula-Ayira (Kshudra-Ārya), the pupil ([atē]vāsika) of the great elder (mahathēra) Ayira-Bhūtarakhita (Ārya-Bhūtarakhita) who lives at [R]āyasēla (Rājašaila), and by the nun (bhikhunī)

Bhūtarakshita) who lives at [R]āyasēla (Rājaśaila), and by the nun (bhikhunī)

Nadā (Nandā), the pupil (atēvāsinī) of the Arhat (arahata) Ayira-Budharakhita
(Ārya-Buddharakshita).

- 1281. Amarāvatī (now Bejvādā) Buddhist sculpture inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 51, No. 4; 1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 72, and Plates I and LVII, No. 17.
 - Prakrit. Fragment. Gift of a coping-stone (unisa) to the Great Chaitya (mahā-chētiya) of Bhagavat by the wife of the merchant (vāniya) Samuda (Samudra), the son of the householder (gahapati) Hamgha (Samgha), who lived at Adhithāna (Adhishṭhāna, or 'in the capital'?) . . . in the Tompuki (?) district (ratha), and (?) by (?) the householder (gaha[pati]?) Kodachadi
- 1282. Amaravati Buddhist stone inscription.—1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 559, No. 38.
 - Prakrit. Fragment. Gift of four pillars (khabha) saphatha (?) and with slabs (sapaṭa), by Mahanaga (Mahānāga).
- 1283. Amaravati Buddhist soulpture inscription.—1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. XXXVII. p. 559, No. 40; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 85, and Plates XLIII, 9 and LVIII, No. 31.
 - Prakrit. Fragment. Erection of a coping-stone (umnisa) by Hayadā, Kamdadā, Samghadā.
- 1284. Amaravati Buddhist stone inscription.—1885 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 560, No. 41; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 85.
 - Prakrit. Erected by the reverend (? bhavāta) Dhammasiriā (Dharmaśrīkā) and (?) Pasamā (Prašamā), with (?) Hagisiri (Agniśrī ?), Chapā (Champā) and the lay-worshipper (uvasaka) Ravisiri (Raviśrī).
- 1285. Amaravati Buddhist stone inscription.—1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 560, No. 42; 1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surc. South. Ind. Vol. I. p. 85, and Plates XLIII, S and LVIII, No. 30.
 - Prakrit. Records, after an invocation of Bhagavat, the erection of a copingstone (unisa) by the merchant's wife (vaniyini) Sidhi (Siddhi), daughter of Chada (Chandra), who lived at Vijayapura.
- 1286. Amaravati (now Madras Museum) Buddhist stone inscription.—1883 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XXXVII. p. 560 f., No. 45; 1887 Bühler, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 37, and Plates XII, 3 and LVI, No. 8; 1896 correction by Franke, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. L. p. 599.
 - Prakrit. Gift of footprints (pāduka) by Malā (Mālā), pupil (atēvāsinī) of the female teacher (uvajhāyinī) Samudiyā (Samudrikā), pupil (atēvāsinī) of the Vinaya teacher (vinayamdhara) Aya-Punavasu (Ārya-Punavasu).

- 1287. Amaravati Buddhist stone inscription.—1886 Hultzsch, Zeitschr. Deutsch. Morgent. Ges. Vol. XL. p. 345, No. 51; 1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. Plate LXI, No. 55 (Plate only).
 - Prakrit. Fragment. Gift of slabs with a svastika (sothikapata) and of an abātamālā by Kanhā (Krishnā), wife of ka together with her father . . . and her relatives and friends.
- 1288. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1887 noticed by Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 63, and Plate XXVIII, 3.
 Not read.
- 1289. Amarāvatī Buddhist coping-stone inscription.—1887 Burgess, Arch. Surv. Scath. Ind. Vol. I. p. 67, and Plate XXXI, 3.
 Prakrit. Fragment. Mentions the elder (thêra) Mahādhammaka (Mahādharmaka).
- 1290. Amaravati Buddhist scalpture inscription.—1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. Plate XXXIV, 2 (Plate only). Not read.
- 1292. Amarāvati Buddhist sculpture inscription.—1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 85, and Plates XLIII, 3 and LVIII, No. 29.
 Prakrit. Fragment. Mentions the merchant's wife (vāniyint) Nākachampakā (Nāgachampakā), Chadasiri (Ohandraśri) and Budhila (Buddhila).
- 1293. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. Plate XLIII, 10 (Plate only). Not read.
- 1294. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1887 noticed by Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 92, and Plate XLVIII, 1.
 Not read.
- 1295. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1887 Burgess-Hultzsch, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 93, and Plate XLVIII, 4.
 - Prakrit. Gift of a slab (pata) at the northern entrance (āyākā) by the young monk (daharabhikhu) Vidhika, pupil (atavāsikā) of bhayata (bhadantā) Nāgā, who resides at Kudūra, and by his female pupil (atērāsinī) Budharakhitā (Buddharakshitā) and by her granddaughter Chūlabudharakhitā (Kshudrabudharakshitā).
- 1296. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. Plate L, 2 (Plate only). Not read.

- 1297. Amaravati Buddhist image inscription.—1887 noticed by Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 97, and Plates LII, 4 and LIX, No. 43.
 Prakrit. Mentions some treasurer (hēranika).
- 1298. Amarāvatī Buddhist stone inscription.—1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. Plate LVI, No. 7 (Plate only).

 Prakrit. Gift of a pillar (thabha) by Nadā (Nandā), daughter (?) of the artisan (fā|vēsani) Nadabhuti (Nandabhūti).
- 1299. Amaravati Buddhist stone inscription.—1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. Plate LVII, No. 21 (Plate only).
 Prakrit. Not read.
- 1300. Amarivati Buddhist stone inscription.—1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 102, and Plate LVII, No. 26.
 Prakrit. Fragment. Records the gift of some man, together with his daughter.
- 1301. Amaravati Buddhist stone inscription.—1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 103, and Plate LVIII, No. 33.
 Prakrit. Fragment. Records the gift of some man, together with his relatives.
- 1302. Amarāvati Buddhist stone inscription.—1887 Burgess, Arch. Surv. South. Ind. Vol. I. p. 103, and Plate LVIII, No. 37.
 Prakrit. Fragment. Gift of a pillar (thambha) by some householder (gaha-[pati]), together with his wife.
- 1303. Amaravati Buddhist stone inscription.—1887 Burgess, Arch. Sure. South. Ind. Vol. I. p. 106, and Plate LXI, No. 54.
 Prakrit. Fragment. [Gift] of the lay-worshipper (upāsaka) Utara (Uttara), the Katakasēlaka (inhabitant of Kaṭakasēla), together with his relatives.
- 1304. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stspa, p. 19, No. 28 B. Fragment. Not read.
- 1305. Amaravati Buddhist soulpture inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 20, No. 77.
 Fragment. Not read.
- 1306. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stāpa, p. 20, No. 30 B.
 Not read.
- 1307. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 21, No. 83.
 Fragment. Not read.
- 1308. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 21, No. 36 B.
 Prakrit. Fragment. No sense has been made out.

- 1309. Amaravati Buddhist coping-stone inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes

 Amar. Stūpa, p. 24, No. 49 B.

 Fragment. Not read.
- 1310. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1382 Burgess, Notes Amar. Stepa, p. 25, No. 112.
 Prakrit. Fragment. No sense has been made out.
- 1311. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 26, No. 55 B.

 Fragment. Not read.
- 1312. Amarāvatī Buddhist rail inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 29, No. 141.
 Not read.
- 1313. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1832 noticed by Burgess, Notes Amar. Stšpa, p. 33, No. 163.
 Not read.
- 1314. Amarāvatī Buddhist sculpture inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 34, No. 164.
 Not read.
- 1315. Amarāvatī Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 37, No. 183.
 Prakrit. Fragment. Records some gift and mentions the nun (samanikā) Saghamitā (Samghamitrā).
- 1316. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 38, No. 192.
 Prakrit. Fragment. No name has been preserved.
- 1317. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stüpa, p. 39, No. 194.
 Prakrit. Fragment. Records some gift.
- 1318. Amaravati Buddhist image inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stapa, p. 39, No. 62 B.
 Not read.
- 1319. Amaravati Buddhist coping-stone inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stupa, p. 39, No. 63 B.
 Fragment. Not read.
- 1320. Amaravati Buddhist sculpture inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stüpa, p. 40, No. 64 B.
 Not read.

- 1321. Amarâvati Buddhist coping-stone inscription.—1882 Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 44, No. 218.
 Prakrit. Fragment. Gift of some object by some man together with his son.
- 1322. Amarāvatī Buddhist sculpture inscription.—1882 noticed by Bargess, Notes Amar. Stūpa, p. 44, No. 221.
 Not read.
- 1323. Amarivati Buddhist stone inscription —1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stüpa, p. 49, No. 61.

 Fragment. Not read.
- 1324. Amarāvatī Buddhist stone inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 50, No. 18.
 Not read.
- 1325. Amarävati Buddhist sculpture inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stūpa, p. 50, No. 32. Fragment. Not read.
- 1326. Amaravati Buddhist stone inscription.—1882 noticed by Burgess, Notes Amar. Stapa, p. 50, No. 76. Fragment. Not read.
- 1327. Gunapadeya (now British Museum) copperplate inscription of Chārudēvi, of the time of the Pallava mahārāja Vijayakhandavamma.—1876 noticed by Fleet, Ind. Ant. Vol. V. p. 175 f.; 1880 Fleet, Ind. Ant. Vol. IX. p. 100 ff., and Plate; 1888 corrections by Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 2, note 2; 1900 correction by Hultzsch, Ep. Ind. Vol. VI. p. 88, note 10; 1902 correction by Senart, Ep. Ind. Vol. VII. p. 67; 69; 1905 Hultzsch, Ep. Ind. Vol. VIII. p. 143 f., and Plate.

 Siri-Vijayakhandava[m]ma-mahārājassa samvvachchharā
 - Prakrit and Sanskrit. Order of Chārudēvi, the queen (dēvi) of the yuvamahārāja, the Bhāraddāya (Bhāradvāja), Siri-Vijayabuddhavamma (Śrī-Vijayabuddhavamma) of the Pallavas, and mother of Buddhi[yam]kura (Buddhyamkura), to the official (?viya[pata]) at Ka[daka] (?Kataka), concerning the gift of a field (chhēta) below Rājatalāka (or the King's tank?) to be ploughed by Ātuka to the holy (bhagavat) Nārāyana of the Kūli-Mahātaraka temple (dēvakula) at Dālūra. The village authorities (gāmeyika āyutta) were to exempt the field with all immunities. The ānatti was Rōhaniaśvā (Rōhinyaśvā).
- 1328. S. 10.—Kondamudi (now Madras Museum) copperplate and seal inscription of rajan or mahārāja Jayavarman of the götra of the Brihatphalāyanas.—1901 Hultzsch, Ep. Ind. Vol. VI. p. 315 ff., and Plates.
 —samva 10 hē pa 1 diva 1.
 - Prakrit and Sanskrit. Order of rajan Siri-Jayavamma (Śri-Jayavarman) of the götra (gota) of the Brihatphalāyanas, from the victorious camp, the town (nagara) of Kūdūra, to the official (vāpata) at Kūdūra, concerning the gift of the village (gāma) of Pāmṭūra (or Pāṭūra) in the district of Kūdūra (Kūdūrahāra)

to eight Brahmans (bahmhana), vis. Savagutaja (Sarvaguptārya), a house-holder (? jāyāpara) of the Götama (Gautama) götra (gota); Savigija, the Tānava (Tānavya); Göginaja (Göginārya); Bhavannaja (Bhavannārya) of the Kodina (Kaundinya) götra; Rudavennhuja (Rudravishneārya), the Bhāradāya (Bhāradvāja); Īsaradataja (Īśvaradattārya), the Kamnhāyana (Kārshnāyana); Rudaghōsaja (Rudraghōshārya), the Öpamamnava (Aupamanyava); Khamdarudaja (Skandarudrārya) of the Kosika (Kaušīka) götra. The plates were prepared by the great general (mahādahdanāyaka) Bhāpahānavamma (Bhāpahānavarman), the best of the Mahātagis (or the mahātagivara?). The seal bears the inscription: Of the mahārāja Śri-Jayavarmman of the Brihatphalāyana götra.

- 1329. Bhattiprola Buddhist casket inscription.—1892 Bühler, Academy, Vol. XLI. p. 522, No. 1=Journ. Roy. As. Soc. 1892, p. 608, No. 1; 1892 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. VI. p. 149, No. 1; 155, No. 1 B; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 326 f., No. 1 B, and Plate; 1908 Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1908, p. 101; 105. Prakrit. The casket (majusā) of Kura, the son of Banava, togother with his parents.
- 1330. Bhattiprolu Buddhist casket inscription.—1892 Bühler, Academy, Vol. XLI. p. 522, No. 1 = Journ. Roy. As. Soc. 1892, p. 608, No. 1; 1892 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. VI. p. 149, No. 1; 155, No. 1A; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 326 f., No. 1 A, and Plate; 1895 correction by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil. Hist. Kl. 1895, p. 215; 1908 Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1908, p. 101 ff. Prakrit. Gift of a quartz-casket (majusī) and a crystal box (shannga) for relices of Budha (Buddha) by the father of Kura, the mother of Kura, and Kura.
- 1331. Bhattiprölu Buddhist casket inscription.—1892 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. VI. p. 149, No. 2; 155, No. 2; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 327, No. 2, and Plate; 1908 Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1908, p. 101.
 Prakrit. Utara (Uttara), the son of Pigaha (Vigraha), was the kānītha (?).
- 1332. Bhattiprolu Buddhist casket inscription.—1892 noticed by Bühler, Academy, Vol. XLL p. 522, No. 3=Journ. Roy. As. Soc. 1892, p. 608, No. 3; 1892 noticed by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. VI. p. 149, No. 3; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 327, No. 3, and Plate.
 - Prakrit. The committee (goṭhi); Hirañavaghavā (Hiranyavyāghrapād), Vugāļaka (Udgālaka), Kāļaha, Visaka (Viśvaka), Thōrasisi (Sthaulaširshi), Samaņa (Sramaņa), Ōdala, Apakara, Shamuda (Samudra), Anugaha (Anugraha), Kura, Satugha (Satrughna), Jetaka (Jayantaka), Jeta (Jayanta), Āļinaka, Varuņa, Pigalaka (Pingalaka), Koshaka (Kaušika), Suta (Sruta), Pāpa, Kabhērakha (? Kubēraka?), Ghāļeka, Samaņadāsha (Śramaṇadāsa), Bharada (Bharata), Ōdāla (Audāra), Thōratisa (Sthaulatishya), Tisa (Tishya), Gilāņa (Glāna), Jambha (?), Putara, Āba (Āmra), Gālavata . . . , Janaka of the Gōsālakas (Gōšīlakas), Kūra, the son of Uposhatha (Upōsatha), Utara (Uttara), the son of Kāraha.
- 1333. Bhattiprolu Buddhist casket inscription.—1892 noticed by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. VI. p. 149, No. 5; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 328, No. 5, and Plate.

- Prakrit. The ascetic of the committee (gothisamana) was Kuba (Kumbha). The treasurer (hiranakārā) was Bāba, the son of the village-headman (gāmani).
- 1334. Bhattiprolu Buddhist casket inscription.—1892 noticed by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. VI. p. 149, No. 4: 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 328, No. 4, and Plate.
 - Prakrit. Mentions Samanadāsha (Śramanadāsa) and relics of Budha (Buddha).

 The rest is uncertain.
- 1335. Bhattiprolu Buddhist casket inscription.—1892 Bühler, Academy, Vol. XLI. p. 522, No. 6=Journ. Roy. As. Soc. 1892, p. 608, No. 6; 1892 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. VI. p. 149, No. 6; 155, No. 6; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 328, No. 6, and Plate; 1895 correction by Pischel, Nachr. Gött. Ges. Wiss. Phil.-Hist. Kl. 1895, p. 215.
 - Prakrit. This committee (gothi) of the inhabitants of the hamlet (nigamaputa) (i.e. the committee mentioned in No. 1332) was headed by the king (rajan) who was Khubiraka (Kubēraka), the son of Shā . .; their gift was the casket (majusa), the crystal-box (shamuga) and the stone-box (shamuga).
- 1336. Bhattiprolu Buddhist casket inscription.—1892 noticed by Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. VI. p. 149, No. 7; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 328, No. 7, and Plate.
 - Prakrit. The ascetic (samana) Utara (Uttara), the son of Ghakhā (or Chaghakhā
 ?) presented the park (ārāma).
- 1337. Bhattiprolu Buddhist casket inscription.—1892 noticed by Bühler, Academy, Vol. XLI. p. 522, No. 8=Journ. Roy. As. Soc. 1892, p. 608, No. 8; 1892 noticed by Bühler, Vianna Orient. Journ. Vol. VI. p. 149, No. 8; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 328 f., No. 8, and Plate.
 - Prakrit, The inhabitants of the hamlet (negama) are: Vachha (Vatsa), Chagha, Jeta (Jayanta), Jatabha, Tisa (Tishya), Réta, Achina (Achērņa?), Shabhika (Sabhika), Akhagha (Alishaghna), Kēla, Kēsa (Kēša), Maha, Seta (Śrēshtha), Chhadikogha, Khabūla, Soņuttara (Śravanōttara), Samaņa (Śramaṇa), Samaṇadāsha (Śramaṇadāsa), Sāmaka (Śyāmaka), Kāmuka, Chitaka (Chitraka).
- 1338. Bhattiprolu Buddhist casket inscription.—1892 Bühler, Academy, Vol. XLI. p. 522, No. 9=Journ. Roy. As. Soc. 1892, p. 608 f., No. 9; 1892 Bühler, Vienna Orient. Journ. Vol. VI. p. 149; 155 f., No. 9; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 329, No. 9, and Plate.
 - Prakrit. The casket (majūsā) and the box (shamuga) of the committee (goṭhī) of the Arahadinas (Arhaddattas). At that time Kubiraka (Kubēraka) was king (rājan).
- 1339. Bhattiprolu Buddhist crystal inscription.—1894 mentioned by Rea, Arch. Surv. Ind. New Imp. Ser. Vol. XV. p. 11, and Plate V; 1894 Bühler, Ep. Ind. Vol. II. p. 329, No. 10, and Plate.
 - Prakrit. Gift by the women from Namidapura (?) and the novices (śamanudēśa) from Suvaņamāha (?), in the Aya-Sakasathi (? Ārya-Sakasathi ?) committee (? gōhi) of Gilāṇakēra (? Glānakārya ?).

1340. S. 27.—China (now Madras Museum) Buddhist (?) stone inscription of the time of rajan Gatamiputa Siriyaña-Satakani.—1889 Bühler, Ep. Ind. Vol. I. p. 95 f.; 1905 correction by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1905, p. 305.

—raño Götamiputasa araka-Siriyaña-Sătakanisa vasasatāya samvachhara satavi . mam 20 7 hēmatānam pakham catutham 4 di mam 5 ētiya puvāya.

Prakrit. Fragment. Opens with an invocation of Bhagavat and mentions the lord (araka), the chamberlain (mahataraka) Mahā

1341. S. 13 (?).—Kodavolu well inscription of the time of Vasithiputa sămi-Siri-Chadasâta.—1908 Konow, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. LXII. p. 592.
— rañō Vasithēputa sāmi-Siri-Chadasātasa savachharē 10 3 (?) hē pa 3 diva dasamē (?).

Prakrit. Establishment of the earth-dwelling (bhāmivēśa) of the minister (amacha).

- 1342. Khandagiri cave (Ananta cave) inscription.—1882 noticed by Beglar, Arch. Surv. Rep. Vol. XIII. p. 81, with facsimile. Fragment. Not read.
- 1343. Khandagiri cave inscription.—1882 Beglar-Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XIII. p. 82, with facsimile.
 Prakrit. Fragment. No sense has been made out.
- 1344. Khandagiri cave inscription.—1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1074, with facsimile; 1877 Cunningham, Corp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 104, No. 1, and Plate XVII, 1; 1882 Beglar, Arch. Surv. Rep. Vol. XIII. p. 83.
 Prakrit. The cave (lēna) of the servant (pādamulika) Kusuma.
- 1345. Udayagiri cave (Hathigumphā) inscription of the Kālimgādhipati Khāravēla.—1825 noticed by Stirling, As. Res. Vol. XV. p. 313 f., and Plate; 1837 Kittoe-Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1075-91, and Plate LVIII; 1877 Cunningham, Corp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 27 f.; 98-101; 132 f., and Plate XVII; 1880 Rajendralala Mitra, Antiquities of Orissa, Vol. II. p. 16 ff., with facsimile; 1885 Bhagvanlal Indraji, Actes Six. Congr. Or. à Leide, Part III. Sect. II. p. 152-177, and Plate; 1895 correction by Bühler, Ind. Studies, No. III, p. 13 f.=1898 Bühler, Origin of Indian Brāhma Alphabet, p. 13 f.; 1910 corrections by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1910, p. 242 ff.; 824 ff.

Prakrit. Fragment. After an invocation of the Arahamtas (Arhats) and all Sidhas (Siddhas), the inscription gives a description of the deeds of the noble (aira) mahārāja Siri-Khāravēla (or Khāravēla-siri), Mahāmēghavāhana, lord (adhipati) of Kalinga, the propagator of the royal family of the Chetas; called also the king of peace (khēmarājan), the king of old people (vadharājan), the king of monks (bhikhurājan). When he was fifteen years old, he obtained the position of heir-apparent (yovaraja) which he held for nine years. When he had completed his twenty-fourth year, he was anointed mahārāja in the third generation of the royal family of Kalinga. In the first year he repaired some buildings in the city (nagarī) of Kalinga. In the second year, without taking heed of Sātakani, he sent a large army to the west and took (?) some

town with the help of the Kusambas (? Kausambas). In the third year he delighted the city with festivals. In the fourth year he honoured some sanctuary that had been bonoured by the former kings of Kalimga and received the homage of the provincial (rathika) and local chiefs (bhojaka). In the fifth year he had an aqueduct (panadi) that had not been used for 103 years since king (rajan) Namida (or since the Namida kings?) conducted into the city. In the eighth year, after having killed he was harassing the king (napa) of Rajagaha (Rajagriha) so that he fled (?) to Madhurā (Mathurā). In the ninth year he made great gifts to Brahmans (bamana) and constructed the Mahavijaya palace. In the record of the tenth year Bharadhavasa (Bhāratavarsha) is mentioned. In the eleventh year he had some place founded by former kings, perhaps Pithuda, ploughed with a plough, and revived the meditation on the feet of Jina that had not been practised for 113 years. In the twelfth year, harassing the kings (rajan) of Utarapatha (Uttarapatha) and striking terror into the Magadhas, he watered his elephants in the Garinga and made the Magadha king (rajan) bow at his feet; he also adorned some temple and made great gifts. Besides, the record of this year mentions again king (rajan) Namda (or the Namda kings?). In the thirteenth year he erected pillars (thabha), etc. on the Kumaripavata (Kumāriparvata) in the vicinity of the dwelling (nisidiyā) of the Arahatas (Arhats). There is no date in this inscription.

1346. Udayagiri Jaina cave (Svargapuragumphā) inscription,—1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1074, No. 8, and Plate LIV; 1877 Gunningham, Corp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 33; 105, No. 9; 136, No. 8, and Plate XVII, 9; 1880 Rajendralala Mitra, Antiquities of Orissa, Vol. II. p. 15 f., with facsimile; 1885 Bhagvanlal Indraji, Astes Six. Congr. Or. à Leide, Part III. Sect. II. p. 177 f., No. 2, and Plate.

Prakrit. Fragment. Establishment of a cave (lēna) for the Kāliga (Kālinga) monks (samana) in honour of the Arahamtas (Arhats) by the chief queen (agamahisi) of [Siri-Khāra]vēla, emperor (? cha[kavati]?) of Kaliga (Kalinga), and daughter of rājan Lālaka, great-grandson of Hathisimha (Hastisimha).

1347. Udayagiri cave (Manchapurigumphā) inscription.—1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1074, No. 6, and Plate LIV; 1877 Cunningham, Corp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 33; 104, No. 7; p. 136, No. 6, and Plate XVII, 7; 1880 Rajendralala Mitra-Prinsep, Antiquities of Orissa, Vol. II. p. 16, with facsimile; 1885 Bhagvanlal Indraji, Actes Six. Congr. Or. à Leide, Part III. Sect. II. p. 179, No. 3, and Plate.

Prakrit. The cave (lēṇa) of the noble (aira) mahārāja, the lord (adhipati) of Kalimga, Mahāmēghavāhana Vakadēpa-siri (śrī-Vakradēva).

1348. Udayagiri cave (Manchapurigumpha) inscription.—1837 Prinsep, Journ. Beng. As.
Soc.Vol. VI. p. 1074, No. 7, and Plate LIV; 1877 Cunningham, Corp. Inscr. Ind.
Vol. I. p. 33; 105, No. 8; 136, No. 7, and Plate XVII, 8; 1880 Rajendralala
Mitra-Prinsep, Antiquities of Orissa, Vol. II. p. 16, with facsimile; 1885 Bhagvanlal Indraji, Actes Siz. Congr. Or. à Leide, Part III. Sect. II. p. 179, No. 4, and
Plate.

Prakrit. The cave (lēna) of prince (kumāra) Vadukha.

- 1349. Udayagiri cave (Hattigumphā) inscription.—1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1073, No. 1, and Plate LIV; 1877 Cunningham, Carp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 104, No. 2; 135, No. 1, and Plate XVII, 2; 1880 Rajendralala Mitra-Prinsep, Antiquities of Orissa, Vol. II. p. 30 f., with facsimile.
 Prakrit, The kothā (?) and jeya (?) of Chūlakama (Kshudrakarman).
- 1350. Udayagiri cave (Hattigumphā) inscription.—1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1073, No. 2, and Plate LIV; 1877 Cunningham, Corp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 104, No. 3; 135, No. 2, and Plate XVII, 3; 1880 Rajendralala Mitra-Prinsep, Antiquities of Orissa, Vol. II. p. 30 f., with facsimile.
 Prakrit. Fragment. Gift of Kama (Karman) and Harakhinā (?).
- 1351. Udayagiri cave (Baghgumpha) inscription.—1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI p. 1073, No. 3, and Plate LIV; 1877 Cunningham, Corp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 104, No. 4; 135, No. 3, and Plate XVII, 4; 1880 Rajendralala Mitra, Antiquities of Orissa, Vol. II. p. 31, with facsimile.
 Prakrit. The cave (lēna) of the town-judge (nagaraakhadamsa) Bhūti.
- 1352. Udayagiri cave (Jambésvaragumphā) inscription.—1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1073, No. 4, and Plate LIV; 1877 Cunningham, Corp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 104, No. 5; 136, No. 4, and Plate XVII, 5.
 Prakrit. The cave (lēng) of Nāki (Nāgi), wife of Mahāmada.
- 1353. Udayagiri cave (Haridasgumphā) inscription.—1837 Prinsep, Journ. Beng. As. Soc. Vol. VI. p. 1074, No. 5, and Plate LIV; 1877 Cunningham, Corp. Inscr. Ind. Vol. I. p. 104, No. 6; 136, No. 5, and Plate XVII, 6; 1880 Rajendralala Mitra-Prinsep. Antiquities of Orissa, Vol. II: p. 30, with facsimile.
 Prakrit. Gift of a kothā and (?) a je[ya] (?) by Chülakama (Kshudra-karman).

ADDITIONS AND CORRECTIONS.

I.-NORTHERN INSCRIPTIONS.

- 12*. (1354). S. 51.—Anyor (now Mathura Museum) Buddhist statuette inscription.— 1910 Yogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 63, No. A 65. sa 50 1 g[ri] 3 di . . Nothing beyond the date has been read.
- 13. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 48 f., No. A 2, and Plate VIII.
- i3*. (1855). S. 31.— Rål-Bhadår (now Mathura Museum) Buddhist image inscription of the time of Huvishka.— 1910 noticed by Vogel, Oat. Arch. Mus. Mathura, p. 65, No. A 71. . . Huvishkasya [sam] 30 1 . . . di 20.

Mixed dialect (?). Fragment. Gift of Khudā (Kshudrā) and . . . , the female pupils (antēvāsinī) of Dinnā (Dattā).

- 13^b. (1356). Rāl-Bhadār (now Mathurā Museum) image inscription.—1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 92, No. C 28.
 Mixed dialect. 'May the Sidha (Siddha) be pleased.'-
- 14. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 184, No. Q 1.

- 14. (1357). Mora (now Mathura Museum) image inscription of the time of Kanishka. - 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 109, No. E 20. Mixed dialect. Fragment. Records the setting up of the image and mentions Kalavada, the Mathuri (inhabitant of Mathura).
- 14. (1358). Naugavā (now Mathura Museum) Buddhist image inscription. 1910 Vogel. Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 60, No. A 50. Sanskrit. Fragment. Records the erection of the image at some vihāra.
- 14c. (1359). Saknā (now Mathura Museum) image inscription. 1910 Vogel, Cat. Arch Mus. Mathura, p. 123, No. G 47. Mixed dialect. Fragment. No name is preserved.
- 144. (1360). Ganesra (now Mathura Museum) image inscription. 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 122, No. G 42. Mixed dialect. The image of Ulana. The rest is uncertain.
- 14°, (1361). Maholi (now Mathura Museum) Naga (?) image inscription. 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 90, No. C 16. Sanskrit. [Gift] of Śri-Aśvadeva, the son of Bhuvana, who has three ancestors (tripravaraka).
- 15. Read 'Kōtā' instead of 'Kōta', and add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 122, No. G 43.
- 15. (1362). Kotā (now Mathurā Museum) railing pillar inscription. 1910 Vogel, Cat Arch. Mus. Mathura, p. 154, No. J 58. Only the figures 40 8 (?).
- Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1085. Summary. Read 'Arya-Hāļakiya (Ārya-Hāļakiya)' instead of 'Arya-Hāṭṭakiya (Ārya-Hattakiya).'
- 17. Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084. Summary. Read 'Koliya (Koutika)' instead of 'Kottiya (Kauttika).'
- 18. Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084. Summary. Read 'Koliya (Kautika)' instead of 'Kettiya (Kauttika).'
- 19. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 79, No. B 70; 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084. Summary. Insert after dedication 'of an image with gods in all directions (vishudeva)', read 'Kol[iya] (Kautika) 'instead of 'Kottiya (Kauttika)', and add : The date is not quite certain. Possibly ' 30 5' is to be read instead of 'sa 5.'
- 20. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 80, No. B 71; 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1085. Summary. Read 'Ko[liya]' (Kautika)' instead of 'Ko[ttiya] (Kauttika).'
- 22. Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084 f. Summary. Read 'Koloya (Kautika)' instead of 'Kotiya (Kauttika).'

- 22. (1363). S. 9.— Lucknow Provincial Museum Jains image inscription.—1909 B. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 273, No. 3; 1910 B. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 109 f., No. 3, and Plate I and Plate of Images I; 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1086; 1912 Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1912, p. 157 f.
 —sam 9 hē 3 di 10.
 - Mixed dialect. Gift of Grahapalā (Grahapālā), daughter of Grahamitra, daughterin-law of Avaširi (Avairī), wife of Kaļala, at the request of Arya-Taraka (ĀryaTaraka) out of the Kolēya (Kautīka) gana, the Thaniya (Sthānīya) kula, the
 Vairā (Vajrī) šākhā. There is besides an inscription: the female pupil (šīšinī) of
 Arya-Aghama (Ārya-Aghama).
- 23. (1364). S. 12.— Lucknow Provincial Museum Jaina image inscription.— 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 273 f., No. 4; 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 110 f., No. 4, and Plate I and Plate of Images II; 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084; 1912 Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1912, p. 170 ff.
- Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1085.
 Summary. Read '[Koli]ya (Kautika)' instead of '[Kotti]ya (Kauttika).'
- 27. Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084.
 Summary. Read 'Köliya (Kautika)' instead of 'Kottiya (Kauttika).'
- Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1082 ff.
 Summary. Read 'Koliya (Kauţika)' instead of 'Koţţiya (Kauţţika).'
- 29. Add: 1911 corrections by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084; 1086. Summary. Read 'daughter of the jeweller (manikara) Khalamitta (Khadamitra)' instead of 'daughter of the Khottamitta (?), the manikara', and 'Koliya (Kautika)' instead of 'Kottiya (Kautika).'
- 30. Insert after Kankali Tila 'now Lucknow Provincial Museum.'
- Add: 1911 corrections by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1082; 1084.
 Summary. Read 'Koliya (Kautika)' instead of 'Kottiya (Kauttika)'.
- 36. Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1085.

 Summary. Read '[Koli]ya (Kauṭika)' instead of '[Koṭi]ya (Kauṭṭika).'

- 38. Add: 1884 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XVII. p. 109.
- Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084.
 Summary. Read 'Koliya (Kantika)' instead of 'Kottiya (Kantika).'
- 40. Add: 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 241, No. 5, and Plate X. The date is to be cancelled.
 Summary. Read: Mixed dialect. Fragment. Gift of the monk (bhikshu) Buddhadāsa, the companion (sadēvihāri?) of Sanghamitra (Sanghamitra). The rest is uncertain.
- 42. Add: 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 113 f., No. 7, and Plate I, and read 'S. 58' instead of 'S. 44.'

 Date. Read:—śarasatama(?)-maharajasya Huvikshasya savas[i]rē ashtapana
 - Date. Read:—śarasatama(?)-maharajasya Huvikshusya savas[1]rē ashtapana gṛi[s]yamasa 3 divisa 2 ēta[syām] purvayām.
- 45. Insert after Kankali Tila 'now Lucknow Provincial Museum.'
- 45*. (1366). S. 48.— Lucknow Provincial Museum Jaiva image inscription of the time of mahārāja Huveksha.— 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 274 f., No. 5; 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 112, No. 5, and Plate I and Plate of Images III; 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084; 1912 Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1912, p. 158 f. mahārājasya Huvekshasya savacharā 40 8 va 2 d[i] 10 7 ētasya puvāyam.
 - Mixed dialect. Gift of an image of Sambhava by Yasa, the daughter-in-law of Budhika, grand-daughter of Savatrātā (Sieatrātā or Sarvatrātā), at the request of Dhañāsiri (Dhanyāśri), the female pupil (śiśini) of Dhañāvala (Dhanyāvala) in the Koliya (Kauṭika) gaṇa, the Bama[dā*]siya (Brahmadāsika) kula, the Pa(U)chanāgari (Uchchānāgari) šākhā.
- Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084.
 Summary. Read 'Koliya (Kauţika)' instead of 'Koţtiya (Kauţţika).'
- Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1085.
 Summary. Read 'Āryya-Hāļakiya (Ārya-Hāļakiya)' instead of 'Āryya-Haṭṭakiya (Ārya-Hāṭṭakiya).'
- 50. Add: 1912 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1912, p. 170.
 Summary. Read 'of Ayya-Jinadāsi (Ārya-Jinadāsi), the panatidhart' instead of 'obeying the command (panatidharitā) of Ayya-Jinadāsi (Ārya-Jinadāsi).'
- Add: 1910 correction by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1910, p. 1316, note 2; 1910
 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 74, No. B 29, and read 'Jaina (?)' instead of 'Buddhist.'

Date. Read 'rajya-sa' instead of 'rajyasam.'

- Add: 1884 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XVII, p. 108; 1909 R. D. Bandyo-pādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 243 f., and Plate XI, 11; 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 112 f., No. 6, and Plate I.
 - Dato. Read: mahārājasya dēvaputrasya Huveshkasya savatsarē 50 1 hamantamāsa 1 divas . . . sy. pu[rvā]yām.
 - Summary. Read: Mixed dialect. Fragment. Setting up of an image in the Mahārājadēvaputravihāra by the monk (bhikshu) Buddhavarman for the worship of all Buddhas, for the attainment of Nirvāņa by the teacher (upadhyāya) Samghadāsa, and for the welfare of Buddhavarma (Buddhavarman).
- 52^{s.} (1367). S. 52.— Mathurā (Bhūtēsar Mound, now Mathurā Museum) Nāga statuette inscription.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 91, No. C 21. sam 50 2 va 3 di 2C 5.
 Mixed dialect. [Image] of the lord (bhaqavat).
- 53. Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Boy. As. Soc. 1911, p. 1084; 1086.
 Summary. Read 'the Golika' instead of 'the member of the committee (golika)' and 'Koliya (Kautika)' instead of 'Kottiya (Kautika).'
- 54. Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084.

 Summary. Read 'Koliya (Kautika)' instead of 'Kottiya (Kauttika).'
- Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 69 f., No. B 15, and read 'Sitalaghati'
 "instead of 'Sitalghati."
- Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084.
 Summary. Read 'Koliya (Kautika)' instead of 'Kottiya (Kauttika).'
- Add: 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 239 f., No. 3, and Plate X.

Date. Read 'étayê purvayê' instead of 'étayê purvayê.'

- Summary. Read 'the gift of the community of the four classes (chatuvani saingha) for the welfare in this world, the merit being shared according to the amount given 'instead of 'the gift—Vaihikā (?)', 'Gahabala (? Grahabala ?)' instead of 'Grahabala', and 'the Rāraka (?)' instead of 'the preacher (vāchaka).'
- 58^a. (1368). S. 71.— Lucknow Provincial Museum spurious Jaina image inscription.—
 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 275 f.,
 No. 6; 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 114 f., No. 8, and Plate I and
 Plates of Images IV and V; 1912 Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1912, p. 176 ff.
 soc. 70 I vo. I di 10 5 staya pāvāyā.

 Apart from the date, the inscription is void of sense.
- 59°. (1369). S. 74.— Lucknow Provincial Museum Jaina image inscription.— 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 276, No. 7; 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 115 f., No. 9, and Plate I and Plate of Images VI; 1912 Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1912, p. 168 ff.
 [2um 70] 4 gri 1 di 5.

62^a. (1370). S. 77.— Mathurâ (now Mathurâ Museum) Buddhist inscription on base of pillar.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 179, No. P 38.
sain 70 7 gri 4 di [20] asyain purveayain.
Mixed dialect. Fragment. Records the gift of some monk (bhikshu).

62°. (1371). S. 77.— Mathură (now Mathură Museum) Buddhist inscription on base of pillar.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 176, No. P 20. sam 70 7 gri 4 di 20 5.

Mixed dialect. Gift of the monk (bhikshu) Buddhiśreshtha, the keeper of vessels (? bhajanaka ?), to the community (saigha) of the four quarters. There is a second inscription which records once more that the pillar is the gift of Buddhiśreshtha, the bhajanaka (?).

63. Add: 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 238, No. 1, and Plate X.
Summary. Read '(Dadhikarnna-dēvakulika)' instead of '(Dadhikarnna-dēvikulika).'

64. Add: 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 238, No. 2a, and Plate X.
Date. Read 'va 2' instead of 'va.'
Summary: Read 'Dharmmadata (Dharmadatta)' instead of 'Dharmmadēva.'

64s. (1372). Mathurā (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist inscription on base of pillar.— 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 239, No. 2b, and Plate X.

Mixed dialect. Fragment. Gift of the monk (bhikshu) Dharmmadatta, the preacher of the law (dharmakathika), to the community (sangha) of the four quarters. The inscription is on the same pillar as No. 64, and the donor, is undoubtedly identical with that of No. 64. It is extremely doubtful whether there was a date in the inscription.

65. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 179, No. P 35.

 Add: 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 116 f., No. 10, and Plate I and Plates of Images VII and VIII.

Date. Read 'hamava' instead of 'hana va.'

Summary. Read 'Sanighanadhi,' instead of 'Sanighanadhi,'

68. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 66, No. B 2.

69. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 66, No. B 3.

- 69a. (1373). S. 84.— Mathurā (Balabhadra Kund, now Mathurā Museum) Jaina image inscription of the time of mahārāja rājātirāja dēvaputra shāhi Vāsudēva.— 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 276 f., No. 8; 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 67, No. B 4, and Plate XI.
 - —mahārājasya rājātirājasya dēvaputrasya [shā]hi-Vāsudēvasya rājya-sa[m]vatsarē 80 4 grishmamāse dei 2 di 5 ētasya purvāyām.
 - Mixed dialect. Setting up of an image of the holy (bhagavat) Arhat Rishabha by the daughter-in-law of Bhatadatta, the Ugibhinaka, the wife of Pindi (?), the wife of a village-head man (? grāmika?), and (?) by the wife of Dharasimha, at the request of Kumāraka, pupil (śishya) of Gamikagutta (? Grāmikagupta?).
- Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 68, No. B 5; 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1085.
 Summary. Read 'Ko[liya] (Kauṭika)' instead of 'K[oṭṭiya] (Kauṭika).'
- Add: 1905 correction by Smith, Journ. Roy. As. Soc. 1905, p. 152; 1910 R. D. Banerji,
 Ep. Ind. Vol. X. p. 117 f., No. 11, and Plate III; 1911 correction by Lüders,
 Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084; 1912 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc.
 1912, p. 154, and read 'S. 99' instead of 'S. 95.'

Date. Read '-sam 90 9 gri 2 di 10 6.'

Summary. Read 'Dharmadhara (Dharmadhara)' instead of 'Dhamatha (?)' and 'Koliya (Kautika)' instead of 'Kottiya (Kautika).'

- Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084.
 Summary. Read 'Koliya (Kauţika)' instead of 'Koţţiya (Kauţtika).'
- 78. Summary. Insert 'and 'before 'Arabatas,' and read 'svāvikā' 'instead of 'savāvikā'.'
- 81°. (1374). Mathurā Museum Jaina (?) image inscription of the time of some mahārāja.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 122, No. G 39. —mahārajā

Mixed dialect (?). Fragment. Records the setting up of the image. No name is preserved.

- Add: 1911 corrections by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084.
 Summary. Read 'Koliya (Kauţika)' instead of 'Koţţiya (Kauţţika).'
- 88. Add: 1884 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XVII. p. 108; 1909 R. D. Bandyo-pādhyāya, Journ. Proc. Bong. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 272 f., No. 2; 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 109, No. 2, and Plate I; and insert after Mathurā '(now Lucknow Provincial Museum).'

Date. Read ' varshamase ' instead of ' varshamase.'

Summary, Read: Mixed dialect. Fragment. Records the setting up of a Bodhi-sata (Bodhisattva).

- Add: 1909 R. D. Bandyopadhyayo, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 240 f., No. 4, and Plate X.
- 89°. (1375). Mathurā (Dhūnsarpārā Quarter, now Mathurā Museum) Buddhist image inscription.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 62, No. A 64.
 d[i]vas[ē] 30 ēta[sya]

 Mixed dialect. Fragment. Mentions Dēvarakshi[ta] or Dēvarakshi[tā].

- 89^b. (1876). Year 1 (?).— Lucknow Provincial Museum coping-stone inscription.— 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 271 f., No. 1; 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 107 f., No. 1, and Plate I; 1912 note by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1912, p. 175 f.
- 89c. (1377). S. 97 (?).—Mathurā (now Mathurā Museum) Jaina inscription.— 1910 Vogel-Lūders, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 74, No. B 31.
 vva 90 [7] varshamā 1.
 - Mixed dialect (?). Fragment. Records the setting up of the image and mentions the Koteya(Kautika)-gana, the Vaira-sakhā (Vajrī šākhā). The date refers to the Gupta era. The unit in the date of the year is quite uncertain.
- 90. Add: 1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 22, and insert 'Jail Mound,' before 'now.'
- 91. Add: 1873 Cunningham, Arch. Sur. Rep. Vol. III. p. 22, and insert 'Jail Mound,' before 'now.'
- 91* (1378). Mathura (Bhütesar-Mound, now Mathura Museum) railing pillar inscription. —1873 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. III. p. 21 f.; 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 141, No. J 1. Only the figure 30.
- 91b. (1379). Mathurā (Jamālpur, now Mathurā Museum) railing pillar inscription.— 1909 Vogel, Bulletin de l'École Française d'Extrême-Orient, Vol. IX. p. 530 (Plate only); 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 150, No. J 41. Only the figure 30.
- 91c. (1380). Mathurā (now Mathurā Museum) railing pillar inscription,— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 152, No. J 48.
 'Three symbols.'
- 92a. (1381). Lucknow Provincial Museum sculpture inscription.— 1910 R. D. Bauerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 118, No. 12, and Plate II.

 Prakrit. Fragment. Of the goldsmith (sovan[ika]) Ütara (Uttara), the Gotiputa (son of a Gaupti).
- 94. Add: 1907 note by V. Smith, Zeitschr. Deutsch. Morgenl. Ges. Vol. LVI. p. 404 ff.
 Summary. Read 'of the kālavāļa Pothayašaka (Praushthayašas), the Gotiputra
 (Gauptiputra)' instead of 'of Gotiputra (Gauptiputra), a black serpent to the
 Pothayas (Prāshthakas) and Šakas.'
- 97. Add : 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 186, No. Q 3.
- 98. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 141, No. J 7 and Plate XXII. Summary. Read 'abhyamtaropasthäyaka' instead of 'ki' (misprint).
- 102. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 185 f., No. Q 2, and Plate V.

- 107*. (1382). Lucknow Provincial Museum Jaina tablet inscription.—1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 120, No. 17, and Plate III.
 Mixed dialect. Fragment. Records the setting up [of the tablet] by the wife of [Amogha]datta, a Kotsi (Kautsi), for the worship of the Arabamtas (Arhats).
- 107^b. (1383). Mathurā (Kackāli Tilā, now Lucknow Provincial Museum) Jaina tablet inscription.— 1894 noticed by Bühler, *Ep. Ind.* Vol. II. p. 311, and Plate I, b; 1910 R. D. Banerji, *Ep. Ind.* Vol. X. p. 120, No. 18, and Plate III.

 Mixed dialect. Fragment. Setting up of the tablet of homage (dyāgapaļa) by

 the daughter of Dhanamitrā, the daughter-in-law of
- 107°. (1384). Lucknow Provincial Museum Jaina stone-slab inscription.— 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 119 f., No. 15, and Plate III and Plate of Images VI; 1912 Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1912, p. 159 f.
 Mixed dialoct. Fragment. Gift of Mitra, the daughter of Gosala.

- 107f. (1387). Māthurā (Mātā Maṭh, now Mathurā Museum) Jaina statuette inscription.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 70 f., No. B 18. Mixed dialect. Fragment. Mentions the Kolika (Kauţika) gana, the Vachhalika (Vātsalika) kula.
- 107s. (1388). Mathurā (Kaākāli Tilā, now Mathurā Museum) Jaina image inscription.—
 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 78, No. B 68.
 Mixed dialect (?). Fragment. Mentions Ghō . . . , the sister of . . .
- 1075. (1389). Mathurā (Kaākāli Ţilā, now Mathurā Museum) Jaina image inscription.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 79, No. B 69. Not read.
- 109. Add: 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 119, No. 14, and Plate III and Plate of Images III; 1912 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1912, p. 156. Summary. Read 'Prakrit. Gift of Püśabalá (Pushyabalā), the wife of Dhamavadhaka (Dharmavardhaka).'
- 113. Add: 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 119, and Plate of Images VI (Plate only), and read 'stone-slab' instead of 'image.'
- 116. Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1085.

 Summary. Read 'Aya-Hāliya (Ārya-Hāliya)' instead of 'Aya-Hāṭṭiya (Ārya-Hāṭṭiya).'

- 118. Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1083, note 2.
- 121. Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084.
 Summary. Read 'Köliya (Kauţika)' instead of 'Koţţiya (Kauţika).'
- 122. Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1084.

 Summary. Read 'Köliya (Kautika)' instead of 'Kottiya (Kautika).'
- 123. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 69, No. B 14.
- 124. Add: 1911 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1911, p. 1085.

 Summary. Read 'Koliya (Kautika)' instead of 'Kottiya (Kautika).'
- 124. (1390). Lucknow Provincial Museum Jaina (?) stone inscription.— 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 121, No. 20, and Plate III; 1912 correction by Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1912, p. 160 f.
 Mixed dialect. Fragment. No name is preserved.
- 124^b. (1391). Lucknow Provincial Museum image inscription.— 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 121, No. 19, and Plate III; 1912 Lüders, Journ. Roy. As. Soc. 1912, p. 160.
 Mixed dialect. Fragment. Mentions the wife of [Gh]ritakundaka.
- 125. (1392). Mathurā (Kaṭrā Mound, now Mathurā Museum) Buddhist statuette inscription.—1908 Vogel, Ann. Progr. Rep. of Superint. Arch. Surv. Northern Circle, 1907-08, p. 37; 1910 Vogel, Cat. Arch. (Mus. Mathura, p. 47 f., No. A 1, and Plate VII.
 Prakrit. Records the erection of a Bödhisacha (Bödhisattva) by Amöhääsi, the mother of Budharakhita (Buddharakshita), in her own vihāra.
- 125b. (1393). Mathurā (now Mathurā Museum) Buddhist image inscription.— 1910 mentioned by Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 61, No. A 56.
 Not read.
- 125. (1394). Mathurà (Galatesvar Mahādev Math near Katra Mound, now Mathura Museum) Buddhist image inscription.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 63, No. A 66.
 Mixed dialect. Fragment. Records the gift of the [Bo]dhisatva (Bodhisattva) by the female lay-worshipper ([upāsi]kā) Namdā as the special property of the Savasthidiyas (Sarvāstivādins?). Mentions besides a kshatrapa.
- 1254 (1395). Mathurā (Jamālpur, now Mathurā Museum) Buddhist image inscription.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 120, No. G 10. Mixed dialect. Sugatapara Buddhadaršava, the meaning of which is doubtful.
- 125*. (1396). Lucknow Provincial Museum Buddhist image inscription.— 1910 R. D. Banerji, Ep. Ind. Vol. X. p. 121, No. 21, and Plate III.
 Mixed dialect. [Gift of] an image of Buddha by the wife of Buddhadeva.
- 125'. (1397). Mathura Museum railing pillar inscription.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 147, No. J 21. Prakrit. Of Joda (?).

- 125s. (1398). Mathura Museum Buddhist railing pillar inscription.—1909 Vogel, Bulletin de l'École Française d'Extrême-Orient, Vol. IX. p. 529 (Plate only); 1909 Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 157 and fig. 1; 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 150, No. J 36.
 Prakrit. Dass, meaning 'ten' (?).
- 125t. (1399). Mathura Museum Buddhist railing pillar inscription.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 153, No. J 52.
 Prakrit. Śivara (?).
- 195. (1400). Mathurà (Göpálpur Quarter, now Mathura Museum) railing pillar inscription.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 156 f., No. J 68.
 Prakrit. Rama (Rama?).
- 125. (1401). Mathura Museum Buddhist railing pillar inscription.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 145, No. J 13.
 Prakrit. Of Samghadeva.
- 125k. (1402). Mathurš (now Mathurš Museum) Buddhist inscription on base of pillar.— 1884 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XVII. p. 108, No. 1; 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 178, No. P 31.
 Mixed dialect. Gift of the monk (bhikshu) Sanghadova, pupil (atēcēsika) of Vakuda.
- 1251. (1403). Mathurā (now Mathurā Museum) Buddhist inscription on base of pillar.— 1884 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XVII. p. 108, No. 4; 1910 Vogel, Oat. Arch. Mus. Mathura, p. 177, No. P 23. Mixed dialect. Gift of jamitra, the Vojyavašika (?), for the gift of health to his companion (suddhyicikari) Dharmadeva.
- 125°. (1404). Mathurā (now Mathurā Museum) Buddhist inscription on base of pillar.— 1884 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XVII. p. 108, No. 2; 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 177 f., No. P 27.
 Mixed dialect. Gift of the monk (bhikshu) Bhadra and Bhadraghosha. Compare No. 125°.
- 125°. (1405). Mathurā (now Mathurā Museum) Buddhist inscription on base of pillar.— 1910 Vogel, Ost. Arch. Mus. Mathura, p. 178, No. P 28, Mixed dialect. Gift of the monk (bhikshu) Bhadra and Bhadragh cha. Compare No. 125°.
- 125°. (1406). Mathurà (new Mathuri Museum) Buddhist inscription on base of pillar.—1910 Vegel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 179, No. P 33.
 Mixed dialect. Fragment. Gift of the monk (bhikshu) Buddhamitra (Buddhamitra).
- 1257. (1407). Mathurá (now Indian Museum, Calcutta) Buddhist inscription on base of pillar.— 1909 B. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V p. 238, No. 3.
 Mixed dialect. Fragment. Gift of some monk (bhikahu)

- 1254. (1408). Mathura (now Mathura Museum) Buddhist inscription on base of pillar.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mass. Mathura, p. 178, No. P 30. Mixed dialect. Gift of the pillar-base (kumbhaka) by Viśvasika Sūśyala together with his wife and his sons.
- 125*. (1409). Mathurā (now Mathurā Museum) Buddhist inscription on base of pillar,— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 178, No. P 32. Mixed dialect. Gift of the pillar-base (kumbhaka) by 'be monk (bhikshu) Sanghavarman (Samghavarman) and Vaddha (? Vriddha?).
- 125. (1410). Mathurā (now Mathurā Museum) Buddhist inscription on base of pillar.—1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 176, No. P 21.
 Mixed dialect. Gift of the pillar-base (kumbhaka) by the supporters of the Order (? sanghaprakrita), headed by Bhadraghosha. There is a second inscription which is probably to the same effect. Compare Nos. 1251 and 1253.
- 125¹. (1411). Mathurā (now Mathurā Museum) Buddhist inscription on base of pillar.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 177, No. P 25. Mixed dialect. Gift of the pillar-base (kushbhaka) by the supporters of the Order (? sanghaprakrita), headed by Bhadraghösha. Compare Nos. 125^s and 125^s.
- 125°. (1412). Mathuri (now Mathuri Museum) Buddhist inscription on base of pillar.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 177, No. P 26. Mixed dialect. Fragment. Gift of the pillar-base (kumbhaka) by the supporters of the Order (? saighaprakrita), [headed by] Bhadraghosha. Compare Nos. 125° and 125°.
- 125. (1413). Mathurā (now Mathurā Museum) Buddhist inscription on base of pillar.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 177, No. P 24. Mixed dialect. Gift of the supporters of the Order (? saighaprakrita), headed by Bhadila (Bhadrila). Compare No. 125.
- 125*. (1414). Mathurā (now Mathurā Museum) Buddhist inscription on base of pillar.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathurg, p. 179, No. P 37. Mixed dialect. Fragment. Gift of the supporters of the Order (? saighaprakrita), headed by Bhaddila (Bhadrila). Compare No. 125*.
- 125². (1415). Mathură (now Mathură Museum) Buddhist inscription on base of pillar.— 1910 inentioned by Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 179, No. P 36. Not read.
- 1257. (1416). Mathură (now Mathură Museum) Buddhist inscription on base of pillar.— 1910 mentioned by Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 179, No. P 39. Not read.
- 126. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 176 f., No. P 22.
- 127. Add: 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 242, No. 8, and Plate XI.
 Summary. Read 'Mixed dialect, Gift of Viśvasika Vakamihira together with his son Horamurndata (?). Compare Nos. 128 and 141.'
- 128. Add: 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 243 f., No. 10, and Plate XI.

- Summary. Read 'Mixed dialect. Gift of Visvasika Vakamihira together with his son Horamudakhara (?). There is a second inscription recording the gift of Horamudkhapharu (?), the son of Vakamihira. Compare Nos. 127 and 141.'
- 129. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 178, No. P 29.
- 133. Add: 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 241 f., No. 7, and Plate XI. Summary. Read 'Mixed dialect. Gift of the monk (bhikshu) Buddharakshita, the bhandaksha (?), to the Community (sangha) of the four quarters.'
- 135. Add: 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 241, No. 6, and Plate XI. Summary. Read 'Baudhaghōsha (Bauddhaghōsha)' instead of 'Buddhaghōsha.'
- 136. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 166, No. N 1, and Plate IV, and insert 'Buddhist' before 'stapa.'
 Summary. Read 'Nusapriya' instead of 'Nasapriya.'
- 137. Add: 1884 Cunningham, Arch. Surv. Rep. Vol. XVII. p. 108, No. 3.
- 139. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 179, No. P 34.

 Summary. Add after 'Datta' 'to the Community (sarigha) of the four quarters.

 [Pillar?] 37'.
- 141. Add: 1909 R. D. Bandyopādhyāya, Journ. Proc. Beng. As. Soc. N. S. Vol. V. p. 242 f., No. 9, and Plate XI. Summary. Read: Mixed dialect. Gift of Viśvasika Vakamihira together with his son Horamudkhata (?). Compare Nos. 127 and 128.
- 146. Add: 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 50, No. A 5, and Plate IX.
- 149*. (1417). S. 24.—Isāpur (now Mathurā Museum) column inscription of the time of mahārāja rājātirāja dēvaputra shāhi Vāsishka.— 1910 Vogel-Daya Ram Sahni, Journ. Roy. As. Soc. 1910, p. 1311 ff.; 1910 note by Fleet, Journ. Roy. As. Soc. —mahārājaiya r[a]jāt[t]irājāsya dēva[nu]. Mus. Mathura, p. 189, No. Q 13.

—mahārājašya r[ā]jāt[t]irājāsya dēva[pu]trasya shāhēr=Vvāsishkasya rājyasamvatsurē [cha]turvimšē 20 4 gr[ī]shmāmāsē chaturtthē 4 diva[sē] trimšē 30 asyām

Sanskrit. Setting up of the sacrificial post (yūpa) by the Brahman (brāhmana)
Dronala, the son of Rudrila, of the Bhāradvāja göttra, the Mānachchhandoga (?),
after having performed a sattra of twelve nights.

149b. (1418). S. 40.— Chbargāon (now Mathurā Museum) Nēga image inscription of the time of mahārāja rājātirāja Huvishka.— 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 88 f., No. C 13.

maharajasya rajāttirajasya Huvishkusya savatsara chaturiša 40 hēmattamasē 2 divasē 20 3 etta purvāyyā.

- Mixed dialect. Records the erection of the Naga, at their own tank (pushkarani), by the two friends Senahastin, the son of Pindapayya (Pindapārya), and Bhondaka, the son of Viravriddhi (Viravriddhi).

. purvāyya.

the . . . of Sena.

Mixed dialect. Fragment. No name has been preserved.

- 150. Add: 1909 Konow, Ind. Ant. Vol. XXXVIII. p. 147; 1910 Vogel, Cat. Arch. Mus. Mathura, p. 83, No. C l, and Plate XII.
 - Summary. Read 'Prakrit. Made by Gomitaka (Gomitraka), the pupil (ateeasin) of Kunika. The rest of the inscription is quite uncertain.'

- 161. Add: 1910 correction by Vogel, Journ. Roy. As. Soc. 1910, p. 1314, and read 'S. 28' instead of 'S. 68.'
 Date. Read 'sam 20 8' instead of 'sam [60] S.'
 Summary. Omit 'The date of the year is quite uncertain.'
- 188. Summary. Read 'Bhadanakadiya (inhabitant of Bhadanakada)' instead of 'Bhadata-Kadiya (pupil of bhadanta Kada ?).'
- 256. Summary. Read 'Gift of the mother of Tapasi, the Kurari (inhabitant of Kurara)' instead of 'Gift of Kurari, mother of Tapasi.'
- 265. Summary. Read 'Morajahikata' instead of 'Morasihikata (Mayurasimhikata).'
- 314. Summary. Read 'the Bha[dana]kad[iya] (inhabitant of Bhadanakada)' instead of 'from Bhasikada (?).'
- 346. Add: 1908 note by Rapson, Catalogue of the Coins of the Andhra Dynasty, etc., p. XLVI f., No. 4.

- 354. Summary. Read 'Morajahikadiya (inhabitant of Morajahikada)' instead of 'Ramorajahikadi[ka] (P inhabitant of Ramorajahikada).'
- 578. Read 'Plate XXI' instead of 'Plate.'
- 669. Add: 1910 correction by Venis, Journ. Roy. As. Soc. 1910, p. 813 f., No. A; 1910 Fleet, Journ. Roy. As. Soc. 1910, p. 815 ff.
- 670. Add: 1910 Venis, Journ. Roy. As. Soc. 1910, p. 814 f., No. B.
- 684. (1422). S. 13.— Jankhat stone inscription of the time of svamin Virasēna.— 1900 mentioned by Burn, Journ. Roy. As. Soc. 1900, p. 553; 1911 Pargiter, Ep. Ind Vol. XI. pp. 85 ff., and Plate.

 svamisa Virasēnasa samvatsarē 10 3 gishmānām pākshē 4 divasē pamchamē.

 Mixed dialect. Nothing beyond the date has been made out.
- 920. Add: 1911 Boyer, Mélanges d'Indianisme offerts à M. Sylvain Lévi, p. 121-128.
- Add: 1911 Lüders, Bruchstücke Buddhistischer Dramen, p. 41 f.
 Summary. Add 'Prakrit.'
- 921. (1423). Sărnăth Buddhist rail stone inscription.—1909 Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 95, No. 1, and Plate XXX.

 Prakrit. Gift of the base stone (alabana) by the nun (bhikhunikā) Samvahikā.
- 921b. (1424). Sărnāth Buddhist railing pillar inscription.—1908 mentioned by Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 66; 102, No. 2, and Plate XXXII. Prakrit. Not read.
- 921c. (1425). Sărnăth Buddhist railing pillar inscription.—1908 mentioned by Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 66; 102, No. 3, and Plate XXXII; 1909 Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 95.
 Prakrit. The pillar (thabha) of Jamteyikā together with Sihā (Simhā). Compare No. 921⁴.
- 921³. (1426). Särnäth Buddhist railing pillar inscription.— 1909 Kouow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 95, No. 2, and Plate XXX. Prakrit. Fragment. [Gift] of Jatöyikä together with Bharini. Compare No. 921^a.
- 921. (1427). Sārnāth Buddhist railing pillar inscription.— 1908 mentioned by Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 66; 102, No. 4, and Plate XXXII. Prakrit. Not read.
- 922. Add: 1908 mentioned by Oartel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 70; 103, No. 8.
- 923. Add: 1908 mentioned by Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 70; 103, No. 10.
- 924. Add: 1908 mentioned by Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 103, No. 9.
- 925. Add: 1908 mentioned by Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 80 102, No. 7.
- 926. Add: 1908 mentioned by Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 78; 102, No. 6, and Plate XXVIa.

- 927. Add: 1908 mentioned by Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 78; 102, No. 6, and Plate XXVIb.
- 928. Read 'Vol. IX.' instead of 'Vol. VIII.,' and add: 1909 Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 95 f., No. 3, and Plate XXX.
- 929. Read 'Vol. IX.' instead of 'Vol. VIII.'
- 929. (1428). Sārnāth Buddhist railing inscription.—1908 Oertel-Vogel-Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 68, and Plate XXXII, No. 9; 1909 Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 96 f.

 Mixed dialect. The property of the teachers (āchārya), the Sarvvāstivādins.
- 929. (1429). Sarnath Buddhist railing inscription.— 1909 Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 96, No. 4, and Plate XXX.

 Mixed dialect. The property of the teachers (āchāryya), the Sarvvāstivādins.
- 929. (1430). Sarnāth Buddhist railing pillar inscription.—1908 Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 66 f.; 103, No. 11, and Plate XXXII.

 Mixed dialect. Fragment. Gift of a lamp (pradipa) by the devout female layworshipper (paramopāsikā) Sulakshmaņā in the Müla[gandhakuţi] of the lord (bhagavat) Buddha.
- 9294. (1431). Särnäth Buddhist railing pillar inscription.—1909 Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 97 ff., No 5, and Plate XXX.

 Sanskrit. Fragment. Gift of a lamp (pradipa) by the devout lay-worshipper (paramopāsaka) Kirtti in the Mülagandhakuţi.
- 929. (1432). Sārnāth Buddhist image inscription.— 1909 Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 99, No. 6, and Plate XXX.
 Sanskrit. Gift of the Šākya monk (Šākyabhikshu) Dhanadeva. Comp. No. 929.
- 929f. (1433). Särnäth Buddhist image inscription.—1909 Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 99, No. 7, and Plate XXX.
 Sanskrit. Gift of Dhanadëva. Compare No. 929°.
- 929s. (1434). Sårnåth Buddhist image inscription.— 1909 Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 99, No. 8, and Plate XXX.

 Sanskrit. Gift of Kumåragupta.
- 929h (1435). Särnäth Buddhist stone-slah inscription.— 1908 Oertef-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 89; 103, No. 12, and Plate XXXII.
 . magha di 30.
 Sanskrit (?). Fragment, No name has been preserved.
- 929. (1436). Sārnāth Buddhist image inscription.— 1908 Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 89; 103, No. 13, and Plate XXXII. Sanskrit. Records that Šilayasas caused to be made the image of Buddha, the Adityabandhu.

The inscriptions Nos. 929° to 929" are later than A.D. 400, but have been included on account of the similarity of the tenor of them with the earlier votive inscriptions.

- 9291. (1437). Sârnāth Buddhist image inscription.— 1908 Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 89 f.; 103, No. 14, and Plate XXXII. Sanskrit. Fragment. Records the gift of some Śākya monk (Śākyabhikshu).
- 929k. (1438). Särnäth Buddhist image inscription..—1908 Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 89 f.; 103, No. 15, and Plate XXXII. Sanskrit. Fragment. Records the gift of Dharmasimha (?).
- 929. (1439). Sarnath Buddhist image inscription.— 1908 mentioned by Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 103, No. 16, and Plate XXXII. Not read.
- 929. (1440). Sārnāth Buddhist image inscription.— 1908 Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 90; 103, No. 17, and Plate XXXII.

 Mixed dialect. Gift of the Śākya monk (Śakyabhikshu) Buddhapriya (Buddhapriya).
- 929. (1441). Sarnath Buddhist image inscription.— 1908 Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 81; 103, No. 18, and Plate XXXII.

 Sanskrit. Gift of the devout lay-worshipper (paramopāsaka), the chief of the district (vishayapati) Suyāttra.
- 929°. (1442). Särnäth Buddhist statuette inscription.— 1908 mentioned by Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rop. 1904-5, p. 103, No. 19.
 Not read.
- 929. (1443). Sărnāth Buddhist statuette inscription.— 1908 mentioned by Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 103, No. 20.
 Mixed dialect. The Buddhist creed.
- 9299. (1444). Sarnath Buddhist inscription on hand of image.— 1908 mentioned by Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 103, No. 21, and Plate XXXII. Mixed dialect. The Buddhist creed.
- 929. (1445). Sărnāth Buddhist image inscription.— 1908 Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 81; 103, No. 22, and Plate XXXII.

 Sanskrit. Gift of the Śākya monk (Śākyabhikshu), the elder (sthaeira)

 Bandhugupta.
- 929*. (1446). Särnäth Buddhist stone-slab inscription.— 1908 Oertel-Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1904-5, p. 103, No. 23, and Plate XXXII.

 Sanskrit. Fragment. No name has been preserved.
- 929t. (1447). Sárnáth Buddhist rail post inscription.— 1909 Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 100, No. 9, and Flate XXX.

 Mixed dialect. Fragment. Of the Sákya monk ([Sakyabhi]kshu) Vödhishēna (Bödhishēna).
- 929. (1448). Sarnath Buddhist rail post inscription.— 1909 Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 100, No. 10, and Plate XXX.

 Sanskrit. Fragment. The lamp (predips) of the devout lay-worshipper ([paramopd]saka) Bhavarudra.

- 937*. (1449). Kasià stone inscription.— 1909 Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 61 f., No. 1.

 Prakrit (?). Fragment. No sense has been made out.
- 937^a. (1450). Kasiā Beiddhist statuette inscription.— 1909 Vogel, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1906-7, p. 62, No. 2.
 Sanskrit. Gift of the Śākya monk (Śākyabhikshu) bhadanta Suvira. The work of Dinna (Datta).
- 958. (1451). Räjgir image inscription.— 1909 mentioned by Marshall, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1905-6, p. 106.
 Fragment. Not read.
- 959. Add: 1909 Bloch, Arch. Sure. Ind. Ann. Rop. 1905-6, p. 98, note 1, and read 'Râjgir (Son Bhāṇḍār) Jaina' instead of 'Rājgir (Sonbhāndār) Buddhist.' Summary. Read 'Vairadēva' instead of 'Viradēva.'

II.—SOUTHERN INSCRIPTIONS.

- 964. (1452). Year 52.— Andhau stone inscription of the time of rājan Rudradāman.—
 1909 mentioned by Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1905-6, p. 166 f.; 1910 D. R.
 Bhandarkar, Journ. Bo. Br. Roy. As. Soc. Vol. XXIII. p. 68.
 Rājāo Chāshṭanasa Ghsamōtikaputrasa rajāo Rudradāmasa Jayadāmaputrasa varshē
 dvipamchāśē 50 2 Phagunabahulasa dvitiyam 15 2.
 Mixed dialect. Nothing beyond the date has been read. There are four copies of this inscription.
- 964. (1453). Year 114.— Andhan stone inscription.— 1909 mentioned by Konow, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1905-6, p. 166 f.
 Said to be dated in the year 114, the 12th day of the bright half of Jyesthamula.
- 987. Summary. Read 'the son of A[pada] (Ananda)' instead of 'the son of A ', and add 'Compare No. 1024.'
- 1205*. (1454). Amaravati Buddhist coping-stone inscription.— 1909 mentioned by Rea, Arch. Surv. Ind. Ann. Rep. 1905-6, p. 117, and Plate XLVIII, No. 1. Prakrit. Fragment. Gift of a slab (pata) by Tukä, the wife of Budhi(Buddhi), son of the householder (gahapati) Kubala, the Tulakicha (inhabitant of Tulaka), with her son and her sister.
- 1220. Summary. Read '[Chhada]kicha' and 'Chhandaka' instead of '[Chada]kicha' and 'Chandaka'.
- 1223. Summary. Add 'Compare No. 1263."
- 1230. Summary. Read 'ball for practising religious exercises (padhānamaḍava)' instead of 'chief pavilion (? padhānamaḍava).'

4,

INDEX OF PERSONAL NAMES.

| A | | | NUMBER . |
|--|---------------|--------------------------------------|------------|
| - | NUMBER. | Akhagha, m., | . 1337 |
| Āba, m., | 1932 | Akhila m., | . 140 |
| Achala, B. monk, | 987 | Alabagira, B. saint, | . 160 |
| Achals, B. nun, | . 175, 462 | Alambusa, apsaras, | . 747 |
| Achala (?), f., | 107 | Āļinaka, m., | . 1333 |
| Achaladāsa, trader, | 1066 | Amaga (?), f., | . 463 |
| Achhavati, B. nun, | 430 | Amgiya, maharathi family, | . 1112 |
| Achina, m., | . , 1337 | Amògha, m., | . 945 |
| Achusunigika, yaksha, | 958 | Amoghadatta, w., | . 107* |
| Ada, surn. of courtezan Lonasobhika, | | Āmöghārakhitā, f., | . 93 |
| Adhagachhaka, family, | 1058 | Amohassi, f | . 125* |
| Adityabandhu, surn. of Buddha, . | . 929 | Amohini, J. fravika, | . 59 |
| Aduthuma, Saka, | 1162 | Ampikinaka, B. monk, | . 1081 |
| Agaraju, prince (= Āgaraju), - | 688 | Amtalikita, Greek king, | . 669 |
| Āgaraju, prince (= Agaraju), | . 687 | Anada, m. (= Ānada), | . 1024 |
| Aghama, J. monk, | . 22 | Ānada, banker, | . 1109 |
| Agidēvā, f., | 178 | Anada, member of the gölika caste, . | . 1151 |
| Agila, m., | 600 | Ānada, m., | . 1178 |
| Agilla, Brahman, | 1200 | Āṇada, m. (= Aṇada), | . 987 |
| Agimita, B. monk, | 1041 | Ānada, B. monk, | . 999 |
| Agimitranaka, mahārathi, | 1088 | Ānadā, f. | . 1219 |
| Agisamaja, Brahman, | 1200 | Anadhapedika, m., | . 731 |
| Agisimä, f., | 302 | Anaghaéréshthivijā (?), f., | . 75 |
| Agivesa, Br. götra (=Agivesa), . | . , 1205 | Anamda, m., | . 721 |
| Agivesa, Br. gotra (= Agivesa), . | 1205 | Ānainda, artisan, | . 346 |
| Agiyatanaka, royal officer, | 1141 | Anammitaka (?), m., | . 578 |
| Agnivarmman, Saka, | . , 1137 | Anugaha, m., | . 1332 |
| Ahija (P), mahābhōja, | 1021 | Anurādhā, f., | . 784 |
| Ahila, m., | 1058 | Apadévanaka, maharathi, | . 1111 |
| Ahimita, prince, | 169 | Apagira, B. saint, | . 660 |
| Ajaka, m., | 1256 | | 1162, 1155 |
| Ajakālaka, yaksha, | 795 | Apajita, B, school (?), | . 1158 |
| Ajamita, m., | 672 | Apākāni, f., | . 393 |
| Ajarani, f., | 389 | Apakara, m., | . 1333 |
| Ajātasata, king, | 774 | Aparājita, B. school (?), | . 1163 |
| Ajitiguta, m., | . 264; 549 | | saka |
| | 954, 955, 956 | (=Aparēnuka), | . 1024 |
| Ajuna, m. (= Ajuna), | 1206 | | saka |
| Ajuna, m. (=Ajuna), | 1231 | | . 987 |
| Akakt (?), J. nun, | 48 | | . 263 |
| Transfer of the same of the sa | | | |

Abbreviations:—B.=Buddhist; Br. = Brahmanic; J. = Jaina. If the name of the same person or the same bule. fakhā, etc. occurs in two different forms, references are given under both forms. If it occurs in more than two different forms, all the forms are enumerated under the form that appears first in the Index, and references to this form are given under the other forms. The figures refer to the numbers in the List. Figures separated by a semicolon refer to different persons.

| Number. | Number. |
|--|--|
| Apa yaha (?), m., | Aryya-Göshtha, J. monk, 21 |
| Apikinaka, B. monk, 842 | Aryya-Halakiya, J. kula (=Aya-Haliya), 48 |
| Amha, m., | Aryya-Hastahasti, J. preacher (-Aryya- |
| Araha, J. monk, | Ghastuhasti), |
| Arahadāsa, m., | Aryya-Jays, J. nun, 21 |
| Arahadasi, B. sun, | Aryya-Jayabhiti, J. monk, 24 |
| Arahadina, 265; 286; 354 | Aryya-Jështahasti J. monk (=Ayya- |
| Arahadina, B. monk, | Jeshtahasti), |
| Arahadina, göskiki, | Areva-Kharana (9) I amia |
| Arahadina, f., | Aryya-Kshema, J. monk, |
| Arahaguta, B. monk, 196, 587 | Aryya-Ksheraka, J. preacher, 20, 122 |
| Arahaguta, m., 428, 429 | Aryyn-Kumammitra, J. nun, |
| Arahaguta, dēvaputra, 777, 814 | Āryya-Kumāranandi, J. monk, |
| Arahaguis, f., 243; 485 | Aryya-Maghahasti, J. gazin (=Aryya- |
| Arahaka, B. monk, 602 | Manguhasti), |
| Arahaka, m., | Aryya-Mamguhasti, J. ganin (=Aryya- |
| Arahahaya, royal officer, | Maghahasti), |
| Arahatapālita, B. monk, 322 | Aryya-Matridina, J. preacher (= Aryya- |
| Arahatarakhita, m., 521 | Matridina), |
| Arhadasī, J. nun, ; | Aryya-Matridina, J. preucher (Aryya- |
| Aribadatā, f., | Matridina), 30 |
| Arishtanëmi, J. arkat, 26 | Aryya-Mihila, J. monk, 191 192 |
| Arya-Aghama, J. monk, 22" | Aryya-Nagabhutikiya, J. kula, 21 |
| Aryachétiya, J. kula, 42 | Aryya-Nagadatta, f., |
| Arya-Data, J. ganin, 34 | Aryya-Ogha (?), J. monk, 90 |
| Arya-Godasa (?), J. monk, 36 | Aryya-Pala, J. ganin, 90 |
| Arya-Halakiya, J. kula, 16 | Aryya-Pusila, J. ganin. 920 |
| Arya-Kakasaghasta, J. preacher (= Āya- | Aryya-Sama, J. num, |
| Karkuhastha), 57 | Aryya-Sandhi, J. monk, 110 |
| Arya-Kaniyasika, J. kula, 113 | Aryya-Sandhika, J. preacher. |
| Arya-Nandika, J. ganin, 37 | Aryya-Sangamika, J. nun (= Ava-Sangamika) . 94 |
| Aryantadī (?), B. (?) nun, 910 | Aryya-Sanghasiha, J. preacher. 99 |
| Arya-Širikiya, J. sambhoga, 116 | Arjya-Siha, J. preacher, 90 |
| Ārya-Sukara, J. monk, 86 | Aryya-Vasulā, J. nun (= Ava-Vasula) |
| Arya-Taraka, J. monk, 22 | Aryya-Veri, J. takha (= Aryya-Veriya). 97 90 |
| Aryavati, J. goddess (?), 59 | Aryya-Veriya, J. iakha (= Aryya-Vast) |
| Aryya-Araba, J. monk, | Aryya-Vriddhahasti, J. preacher (= Ava- |
| Aryya-Bahma, J. sus, 119 | * Florannesti), . |
| Aryya-Baladina, J. preacher, 27, 39 | Aryy-Odehikiya, J. gana, 91 28 |
| Aryya-Balatirata, J. monk (= Aya-Balatrata), 119 | Assons, B. nun, |
| Aryya-Buddhasiri, J. ganis, 21 | Asadā, f., |
| Āryya-Chēra (?), m., | Assds, m., and one |
| Aryya-Datta, J. preacher, | Asadeva, m., |
| | Asideva, B. num, Ric and |
| | Asadhamita, B. nun, |
| | Asadhasena, prince (=Ashadhasena). one |
| FF 12-1 -1275 | Asaguta, m., |
| Aryyaghosha, m., | Asslamits, m., |
| . 1018 | Asslamita, B. monk, |

| Number. | NUMBER |
|---|--|
| Asalhamita, B. nun, | Aya-Samaka, B. monk, 800 |
| Assams, 18., | Aya-Sangamika, J. nun (=Aryya-Sangamika), 70 |
| Āshādhasēna, prince (=Āsādhasēna), 905 | Aya-Sirika, J. sambhoga, 59' |
| Afrika, king | Aya-Varana, J. gana, |
| Aśvadeva, m., 14' | Aya-Vasulā, J. san (=Aryya-Vasulā), 70 |
| Asvadēvā, f., 241; 244; 550 | Aya-Vridhahasti, J. preucher (=Aryya- |
| Aśvaghosha, king, 922, 924 | Vriddhahasti), 47 |
| Asvarakhitā, f., | Ayira-Bhütarakhita, B. monk, 1280 |
| Aśvibhuti, Brahman, | Ayira-Budharakhita, B. Arhat, 1280 |
| Atantata (?), m., | Ayitilu, Brahman, |
| Atara (?), B. monk, 999 | Ayyabhyista (?), J. kula, 50 |
| Atha, labourer, 181 | Ayya-Jeshtahasti, J. monk (=Aryya-Jesh- |
| Atimuta, m., 824 | tabasti), |
| Ātiēya, Br. götra, | Ayya-Jinadasi, J. nun, 50 |
| Ātuka, m., | |
| Ārāsika, m., 619 | В |
| Avaširi, m., | Babhura, Br. götra, |
| Avisana, m., 864, 865 | Badha, f., |
| Avisina, B. nun, 319, 352 | Badhaks, B. monk, 484; 633 |
| Ayr., m., 617 | Badhika, B. nun, 718 |
| Aya, B. monk, | Radhu f |
| Aya-Apikinaka, B. monk, 843 | Badimasi, f |
| Aya-Balatrata, J. monk (= Aryya-Balattrata), . 32 | Bahadata, m., |
| Aya-Bhadakiya, B. monk, pupil of Bham- | Bahasatimittra, king, 904 |
| duka (=Aya-Bhamdakiya), 367 | Bahma , J. aus, |
| Aya-Bhamdukiya, B. monk, pupil of Bhamdu- | Bahmadāsika, J. kula (=Bamadāsiya, Bath- |
| ka (=Āya-Bhadakiya), 286, 393, 488 | bhadāsiya, Bamhādāsia, Brahmadāsika, |
| Aya-Bhutaka, B. monk, 763 | Brahmadāsiya, Bramadāsiya, Bramhadāsika), 18 |
| Aya-Bhutarakhita, B. monk, 713 | Bahula, m., 603 |
| Aya-Budhi, B. Vinaya teacher, 1270 | Bala, m., 66 |
| Aya-Chula, B. monk, 797 | Bals, B. Tripitaka teacher, . 33, 918, 925, 926, 927 |
| Aya-Dhama, B. mun, | Baladată, f., 485 |
| Aya-Görakhita, B. monk, 715 | Baladina, J. preacher, 27, 39 |
| Aya-Hāliya, J. kula (= Aryya-Hālakiya), . 116 | Balaguta, m., |
| Aya-Isidina, B. preacher, 738 | Balaka, etc. 503 : (?)1071 |
| Aya-Isipālita, B. preacher and navakarmika, 773 | Balaka, B. monk, 587 |
| Aya-Jata, B. Pitaka teacher, 856 | Balaka, f., |
| Aya-Kamaya, B. monk, 1237 | Balamita, B. monk (=Balamitra), 347 |
| Aya-Karkuhastha, J. preacher (=Arya- | Balamitra, B. monk (=Balamita), 349 |
| Kakasaghasta), | Balasiri, queen, |
| Ayama, minister, 1174 | Balatrata, J. monk (=Balattrata), 32 |
| Ауаті, f., | Balattrata, J. monk (=Balatrata), 119 |
| Aya-Nagadêva, B. monk, 690 | Balavarmā (?), J. sus, 48 |
| Aya-Namda, B. monk, 886 | Baliks, f., |
| Aya-Pamthaka, B. monk, 716 | Balikā, B. nun, 317 |
| Aya-Pasanaka, B. monk, 154, 155 | Baluka (?), sa., |
| Aya-Punavasu, B. Vinaya teacher, 1286 | Bamadāsiya, J. kula (= Bahmadāsika), 45° |
| Aya-Punavasu, B. monk, 831 | Bambhadāsiya, J. kula (=Bahmadāsiks), . 23* |
| Aya-Rêtî. B. sun, | Bamha, m., |
| 1 01 - 42 (3) -7-1 (27 (9) 1999 | Rambadasia, J. kula (=Bahmadasika) 199 |

| NUMBER. | Nombre. |
|--|--|
| 1999 | Bhatibala, f., |
| Danaya, was | Bhattimita, m., |
| Ranguagueguegue, 13, mana, | Bhattisama, privy councillor |
| Dapara, general | Bhattisëna, m., |
| Bapisiri (?), f., | Binkfisens, m., |
| Dappin, 201 mentury | Bhavagopa, great general |
| Barulamisa, goshihi, | Bhavamnaja, Brokman, |
| Baudhaghōsha, B. monk, | Bhavarudra, B. upāsaka, 929" |
| Bědika, B. upásikā, 10 | Bhaya , prince, |
| Rhadaguta, m., | Bhayila, Brahman's wife 1050 |
| Rhadaka m | Bhāyilā, f., 1091 |
| Bhadasama, B. monk | Bhēmī, f., |
| Dhadawaniya B. school (=Bhadayaniya, | Bhichhuka, m., 278 |
| Bhadayaniya, Bhadrajanijia), | Bhichhanika, f., |
| Dhadawaniya, B. school (=Bhadavaniya), . 1124 | Bhimasena, king, 906 |
| Bhadayaniya, B. school (=Bhadayaniya), . 987 | Bhondaka, m., |
| Phaddila en (=Bhadila), | Bhuts, B. nun, |
| Dh. Alba R. monk 491, 492 | Bhutaka, B. monk, |
| Bhadikiya, B. pupil of Bhadika (?), 321 | Bhutapāla, banker, |
| D1 221 (-Rhaddila) | Bhutarakhita, m 513; 835 |
| DL 1 D - 125", 125" | Bhutarakhita, B. monk, 713 |
| Bhadraghosha, m., 125", 125", 125', 125', 125" | Bhūtarakhita, B. monk, 1280 |
| Bhadrajanijja, B. school (=Bhadavaniya), . 1018 | Bhūtāyana, m. (?), |
| Bhadranadi, m., | |
| Bhadranadi, m., | |
| Bhadrayass, m., | Bhuvana, m., |
| Pitatia, m. | Воды, В. нил, . 368; 1041; 1059; 1060; 1240 |
| | Bödhi, f., 490; 639; 1207; 1235 |
| Bhadukiya, B. monk, pupil of Bhamduka, | Bödhi, m., |
| (=Bhamqueiya), | Bodhiguta, m., |
| Rhamabhadra, King, | Bodhiguta, B. upāsaka, 1130 |
| PURADRATAL STRUCT | Dodnika, B. monk, 987, 1020 |
| ISBNOP1. Ten v | Bôdhinadi, f., |
| PSD mercentalistic 15 by 4 by | Bôdhirakhita, m., |
| | Bödhisamä, f., |
| Bhamdukiya, B. monk, pupil of Bhamduka (=Bhadukiya), 386, 393, 488 | Bodhisamma, merchant, |
| | Bodhishena, B. monk, 952 |
| Bhapahanavamma, great years are | Bödhivarman, B. monk, 911 |
| Bharada, 224 | Böhumula, m., |
| Bhāradāya, Br. götra (= Bhāraddāya, | Bopaki, ascetie, |
| Bharadvaja), | |
| Bhāraddāya, Br. gūtra (= Bhāradāya), . 1200, 1327 | Brahma |
| Disconding B. Building * | |
| Department Age to a Contract of the Contract o | The last war and a contract of the contract of |
| Bharanabhnti, B. monk, | |
| Bharanideva m., | 7 101 711 711 711 711 |
| Rhāravi, m., 1984 | |
| Bhargaviputra, surn. of may 89 | A Committee of the Comm |
| Bharini, f | |
| Bhaskara, st., | |
| Bhatadatta, m., | |
| | Bubu, m |
| Bhatapaliks, f | |

| NUMBER. | NUMBES. |
|---|--|
| Buddha, founder of B. religion (=Buda), 5, | Budhi, B. monk, 1223, 1263 |
| 125', 929', 929', 950, 989, 1047 | Budhi, treasurer, |
| Buddhadarśava, m. (?), 125° | Budhi, B. preacher, |
| Buddhadisa, B. monk, 40 | Budhi, B. Vinaya teacher, 1270 |
| Buddhadasa, m., | Budhi, m., 1205*; 1271; 1276 |
| Buddhadēva, os., 125', 140 | Budhika, et., |
| Buddhaghôsha, B. monk, 989 | Budhila, MouseMolder, 193; 1247 |
| Buddhakaya (?), m., | Budhila, m., |
| Buddhamitra, B. monk, 125° | Budhinaka, m., |
| Buddhamitra, B. f. Tripitaka teacher, . 38, 925 | Baliks, m., |
| Buddhanandi, B. monk, | Bamu, m., 408 |
| Buddhapriya, B. monk, 929" | |
| Buddharakshita, B. monk, 126; 132, 133, 134; 992 | |
| Boddharakahita, m., | |
| Buddhasigha, B. monk, 1046 | C |
| Buddhasiri, J. ganin, 21 | Chada, m., |
| Buddhavarma, B. monk (=Buddhavarman), . 52 | m-11.1- |
| Buddhavarman, B. monk (=Buddhavarma), . 52 | 200 |
| Buddhi, m., | The state of the s |
| Buddhisreshtha, B. monk, 624 | |
| Buldhiyamkura, prince, | |
| Budha, founder of B. religion (=Buda), 13, | 20 11 |
| 931, 1124, 1202, 1203, 1204, 1330, 1334 | Chadasāta, king, |
| Budhs, f., | |
| Budha, B. nes, | 4,110.3 |
| Budhadēvā, f., 545 | |
| Hadbacents m | AND THE RESIDENCE OF THE PARTY |
| Budhaguts, f., | |
| Budhaka, m., | and the same of th |
| Budhamita, m., | |
| Budhapalita, banker, 578 | |
| Budhapalita, B. monk, 473 | Chamda (P), f., |
| Budhapalits, f., | Chamdasiri, m., |
| Budhapalita, B. ses, 341 | A1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - 1 - |
| Budharakhata, B. nun., | Ma 11 A 7 A 1 |
| Budharakhita, B. monk, 304; 488; 591; 638; | Chandravarimman, king |
| 792; 1108; 1224 | 71 |
| Budharakhita, m., 125°; 487; 578; 636; 1106; | And the second s |
| 1169; 1241; 1271 | and the second s |
| Budharakhita, sculptor, 857 | Charaks, sect, |
| Budharakhita, B. teacher of the five nikayas, 867 | Chashtana, mahākshatrapa (=Chāshtana), |
| Budharakhita, B. monk and navakarmika, . 1250 | 963, 965, 966, 967 |
| Budharakhita, B. upāsaka, | Chāshṭana, mahākshatrapa (= Chashṭana), . 964* |
| Budharakhita, B. arhat, | Chatarapana-Satakani, king, |
| Budharakhitä, B. nun, . 374; 637; 840; | on to be |
| 1250; 1295 | and the same |
| Budharakhitaka, B. sütränta teacher, 635 | Chèra (?), m., |
| Budhi, Aouseholder, | Chétiavadaka, B. school (= Chétiyavamlaka), . 1263 |
| To the second second | Chětika, B. school (= Chětikiya), |
| Budhi, merchant, | Onoming D. 200999 (- Onoming a); 1100, 1200 |

| Nume | EB. | | | | | | 1 | Nuxu | THE R |
|--|------------|-----------------|-------|---|--------|-----|------|-------|-------|
| Chětikiya, B. school (=Chětika), 1 | Mat | ta, si., | | | | 41 | | 4 | 6 |
| Chētiyasa, B. Tripiţaka teacher, 1 | 171 Dat | ta, B. monk, | | | | ě. | | | 13 |
| Chētiyavamdaka, B. school (= Chētiavadaka), . 1 | 223 Dati | ta, f., | | | | | | | 5 |
| Chhadika, B. monk, | | ingali (?), f., | | | | | | | 23 |
| | | taja, Brahman | | | | | | . 1 | 20 |
| Catalog and and | | a, J. preacher | | | | | | 53 | , 5 |
| manufacture of the second of t | | a, frequence, | | | | | | | 7 |
| | | ā, J. nun, . | | | | + | | | 23 |
| Comment of the commen | | abhaga, m., . | . , | | | | - | | 87 |
| | II4 Dev | abhaga, B. m | en, | 4 | | | | | 16 |
| | | abhaga, f., . | | | | * | 4 | | 42 |
| | | adāsa, m., | | | | | | | 10 |
| | | radata, J. gami | | | | | | | 7 |
| A stranger of the stranger of | | ndata, B. nun | | | | | | | 54 |
| Chuda, B. preacher, 347, | | adina, repade | | | | | | | 92 |
| | | ragiri, B. teac | | | fiee n | ikā | HER. | | 29 |
| and the same of th | | vagiri, B. mon | | | | | | | 37 |
| Officers and read and and and and and and and and and a | | raka, m., | | | | | | | 35 |
| Contract of the contract of th | 812 Dê | ramkhita, B. | monk. | | | | | | 45 |
| Chulakama, m., | | varakhita, m., | | | | | | | 83 |
| | | rarakshita (or | | | | | | | 81 |
| The state of the s | the latest | rasēna, m., | 5.1 | | | | | | 11 |
| and the same of th | | vasēna, B. mos | | | | | - | | 85 |
| | | vi, f., | | | | | | | 12 |
| Chutukulänainda, surn. of king, | | vila, m., | | | | | | | 1.5 |
| | | vila, temple se | | | | | , | - | 6 |
| | | amā, B. nun, | | | | | , | | 124 |
| D | | āmā, f., | | | | | | | 100 |
| Dadhikaruna, nago 6 | | STOR , ON | | | | | | | 99 |
| Dakhamitrā, princess, | | amadata, m., | | | | | | - | 32 |
| Damachika, Śaka writer, 1148, | | amadata, B. w | | | | | | | 36 |
| Damaja, Brakman, | | amadata, f., | | | | | | | 40 |
| Damaka, weaver, | | amadêva, m., | | | | | | | 122 |
| Damila, lady, | | amadēvā, B. : | | | | | - | | 57 |
| Damila, B. nun, | 1014 Db | amadėvi, f., | | | | | | _ | 105 |
| Damila, f., | 1018 Dh | amadins, f., | | | | | | 57; | |
| Damilakanha, m., | | amaghasa, Aos | | | | | # 0 | | 115 |
| Dasa, m., | 70 Dh | amaghöchä, J | DOM: | | | | | | 5 |
| Diss, m., | 114 Di | amagiri, m., | | | | ů | - | 217 | |
| Dasaks, m., | | amagiri, B. s | | | | | | 673; | |
| Dashalaths, king, 954, 955 | | amagirika, m. | | | | | | 165 | |
| Data, J. ganin, | | amaguta, m., | | | | | 615 | 727 ; | • |
| Data, m., | | maguta, B. | | | | dem | ika. | | 11 |
| Data, J. nun, | 67 DI | hamaguta, B. | monk | | * | | 4 | | 2 |
| | | hamaka, m., | | | - | | | 433 | |
| Data, f., | | hamamitra, m. | | | | | | | 10 |
| Dataka, m., | | amanaka, B. | | | | | | | 10 |
| Dati, J. monk, | 48 DI | hamanaka, m., | | * | | | | | 10 |
| Datila, m., | | hamanaka, tro | | | | | | | 9 |
| | | hamanachdin, | | | | | * | | |

| | | Number. |
|-----------------------------------|------------------|--|
| | NUMBER. | 4.0 |
| Dhamapala, m., . | 293 | artification and artificial and artificial artifical artificial ar |
| Dhamapala, B. monk and navakarm | ka, . 987 | Distinguesa, D. mona, |
| Dhamarakhita, B. monk, . 190; | | Distribution of these |
| Dhamarakhita, m., | | Difficultification (c) soul |
| | 460; 266; 823 | Duarmasimus (i); mis |
| Dhamarakhita, B. sus, | 274; 648; 764 | Dharmasoka (?), king, |
| Dhamarasiri, B. updeika, | 627 | Dharmmacata, D. mont (- Dharmmacata, |
| Dhamasena, m., | 456 | Durthungaring D. mons (- con the contraction of |
| Dhamasena, B. monk, | 628 | Dharmmadeva, B. monk, 61 |
| Dhamasênā, B. suz, | 684 | Dharmmagupta, B. monk, 990 |
| Dhamasiri, B. aus, | 318 | Dharumasomi, f., |
| Dhamasiri, f., | 1076 | Dhārmmavarmma, m., 140 |
| Dhamasiva, m., | . 162; 679 | Dharmmavatsa, B. monk and Tripitaka |
| Dhamatā, f., · · · | 366 | teacher, |
| Dhamavadhaka, m., | 109 | Dharmmavriddhi, m., |
| Dhamayasa, B. sus, | 410 | Dhavadêva, f., |
| Dhamma, god, | 1112 | Dhānasēna, makābhōja, |
| Dhamms, f., | 1048 | Dhuta, m., |
| Dhammadava, m., | 1140 | Diganaga, B. nun, |
| Dhammaguta, m., | 821 | Dighatapasi, m., |
| Dhammapāla, m., | 458 | Dina, m., |
| Dhammapala, B. monk, | 993 | Dink, J. fravika, 28, 47 |
| Dhammarakhita, m., | 1140 | Dini, f., |
| Dhammasiri, f., | 1213 | Dinara, J. monk, |
| Dhammasiril, B. nun, | 1284 | Dinika, m. (= Dinika), |
| Dhammasiva, m., | 371 | Dinika, m. (=Dinika), . 1131, 1132, 1133, 1334 |
| Dhamma-Yayana, m., | 1096 | Dinna, m., 937 |
| Dhammila, merchant, | 1230 | Dinna, B. nun, |
| Dhammutariya, B. school (= Dhamut | ariya), . 1152 | Disăgiri, m., 475 |
| Dhamutara, et., | 461 | Disārakhita, m., |
| Dhamutariya, B. school | = Dham- | Diya, Greek, |
| mutariya), | . 1094, 1095 | Dronala, Brahman, |
| Dhana (?), B. monk, | 192 | Dudubhisara, B. saint, |
| Dhana, householder, | 1211 | Dupasahi, B. nun, |
| Dhana, f. | 450 | Dusaka (?), m., |
| | 87, 869, 882 (?) | Dilance (:), |
| Dhanadaya, B. monk, | | Dusita, m., |
| Dhanaghōsha, ss., | 59 | |
| Dhanagiri, m., | 315 | |
| Dhanagiri, B. monk, | 454 | E |
| Dhanahathi, m., | 75 | 909 |
| Dhanaka, B. mouk, | 309 | Enals, J., |
| Dhanama, husbandman, | 1147 | Ērapata, nāgarāja, |
| Dhanamitre, f., | 107* | |
| Dhanasiri, J. nun, | . 45* | |
| | 45* | |
| Dhanavala, J. monk, | 38 | G |
| Dhanavati, B. sus, | 296 | Gada, B. nun, |
| Dhanika, f., | 69* | Gold f |
| Dharasimha, m., | | Geshaba J. monk. |
| Dharavala, f., | 00 | 2 8 3 |

| | NUMBER. | Number- |
|---------------------------------------|--------------|--|
| Gagamdata, B. monk, | 390 | Gonamdija, Brahman, 1205 |
| Gagamita, m., | . , 832 | Gōpāla, m., |
| Gagiputa, surn. of king Visadeva, | 687 | Gopali, princess, 904 |
| Gahabala, J. monk (= Grahabala), . | 57 | Gopaliputra, surn. of king Bahasatimittra, . 904 |
| Gahala, B. monk and navakarmika, | 987 | Gorakhita, B. monk, 716 |
| Gahamitra, f., | 23" | Görakhitī, f., 799 |
| Gahaprakiva (?), J. gania, | 84 | Gōāla, m., 107° |
| Gajamita, merchant, | 987 | Gòstla, m., 853 |
| Gajasena, merchant, | 987 | Göstlakn, family name, 1332 |
| Gājāyana (?), m., | 6 | Göshtha, J. monk, 21 |
| Galavata, o., | 1932 | Gota, B. monk, |
| Gamdhara, B. monk, | 622 | Götama, Br. götra, 1035, 1328 |
| Garngita, yaksha, | 737 | Gotami, surn. of Isinika, |
| Gamikagutta (?), J. monk., | 69" | Götami, B. nun, |
| Ganasamms, Brahman, | 1194 | Götami, surn. of queen Balasiri, 1123 |
| Gata, Yavana family, | . 1154, 1182 | Götamiputa, sura. of king Śri-Śātakarni |
| Ghakhā (?), f | 1336 | (=Gōtamiputa), |
| Ghāleim, m., | 1332 | Götamiputa, surn. of king Śriyajña-Śātakarni |
| | 1198 | (=Götamīpata), 1024, 1146, 1340 |
| Ghastuhasti, J. preacher (=Hastahasti | | Gotamiputa, surn. of king Sri-Satakarni |
| Ghātila, m., | 860 | (=Gôtamiputa), |
| Ghosa, B. monk, | 1006 | Götamiputa, surn. of king Śriyajna-Śātakarni |
| Ghöst, f., | 872 | (=Götamiputa), |
| Ghòsalca, m., | 425 | Sotiputa, B. saint (= Gotiputa), . 663, 681, 682 |
| Ghōsha, m., | 15 | Gotiputa, surn. of B. saint Dudubhisara, . 156 |
| Ghoshaka, J. preacher, | 110 | Gotiputa, surn. of B. monk Bhamduka, 194, 442 |
| Ghritakundaka, m., | 124 | Gotiputa, surn. of royal scribe Subahita, . 271 |
| Gheamótika, m., | 964* | Out A A Y |
| Ghunika, m., | 1104 | Gotiputa, sura. of Agaraju, |
| Giha, m., | 45 | Golimaka R saint ! - Calinda |
| Gilana, m., | 1332 | A C I |
| Gilānakēra (?), m. (?). | 1339 | Gotipatra, surn. of Pothayalaka, Gotipatra, surn. of mahärathi Agimitrang- |
| Giribhuti, m., | . 1152, 1155 | 7.0 |
| Giriguta, B. nun, | 364 | Optioning our of Theorem |
| Girika, m., | 440 | 714 |
| Gos B. monk, | 1040 | |
| make the Marian P. | 1110 | |
| Godina (P), J. monk, | 36 | Goyamma, f., |
| Gödata, m., | 1067 | Graha, J. nun., |
| Góginaja, Brahman, | . 1328 | Distriction 1 |
| Gòhila, m., | 238 | C-1-3× |
| Góla, f., | | 0.1.14 |
| Gölanaka, merchant, | 1000 | Genhabathi - |
| Gölasamaja, Brahman, | 1200 | 0-1-9 |
| Göli, Brahman, | | 75 1 1 1 1 |
| Gölika, sura. of Süra, | 53 | Charles |
| Gölikiya, caste name (?), | 1151 | 0-1-0-2 |
| Gondiputa, surm. of Budharakhita, | 1271 | Grahasiri, f., |
| | *** | Grahavila, J. nun, |
| W | | Gulhs, f., |
| Gönamdaka, ascetse, | 445 | Gupta, royal family, 11 |

| Number. | NUMBER. |
|---|--|
| | Horamudkhapharu (P), sa. (=Horamudakhara), 128 |
| | Horamudkhata (?), s. (=Horamudakhara), . 141 |
| Н | Horamurpdata, m. (=Horamudakhara), 127 |
| Haggudêva, e., 29 | Huksha, king (= Huvashka, Huveksha, |
| Hagha, householder, | Huwashka, Huvikaha, Huvishka, Huvishka), 35 |
| Haginamdi, J. monk, 42 | Huvashka, king (= Huksha), 56 |
| Hagisiri, f., | Huveksha, king (-Huksha), 45° |
| Hakusiri, prince (= Sati Sirimata), | Huveshka, king (-Huksha), 62, 161° |
| Hala, minister, 1053 | Huviksha, king (= Huksha), 42 |
| Hala, f | Huvishka, king (= Huksha), 13°, 38, 41, 46, |
| Halaka, B. monk, | 51, 80, 149 |
| Halakiya, J. kula (= Haliya), 16, 48 | Huvishka, king (-Huksha), 43, 62 |
| Halapiks, f., | 20,02 |
| Halika (?), m., | |
| Halika (?), f., | |
| Haliya, J. kula (= Halakiya), | 1 |
| Maria Maria | Ida, householder, |
| Haingha, perfumer, | 14 1 |
| Hamgha, householder, | 73 7 4 |
| Hamgha, B. nun, | The second secon |
| 2001 | #1 14 14 15 15 15 15 15 15 15 15 15 15 15 15 15 |
| | |
| Harigi, f., | |
| | 41 |
| | # a |
| | |
| | |
| Haritamalakadhi, J. tākhā, 42 Haritiputa, surn. of Sōnaka | |
| | Imdadeva, B. monk, |
| Haritiputa, surn. of king Vinhukada-Chutu- | Imdagimitra, m., |
| kulönamda (= Hāritiputta), | |
| Haritiputa, B. saint, | Isadata, m., |
| Haritipatta, surn. of king Vinhukadda-Chutu- | Isals, f., |
| kulānanda (= Hāritiputa), | Isāna, ss., 828, 829 |
| Haritiputta, surn. of Kondamana, 1195 | Isaradataja, Brahman, |
| Haritiputta, surn. of king Sicakhadavamman, 1196 | Inidasī, B. nun, 327, 402; 590 |
| Harusha, surn. of Uttara and Sucha, 13 | Isidata, m., |
| Hastahasti, J. preacher (=Ghastahasti), 54 | Isidata, f., |
| Hastika, ss., | Isidata, B. nun, |
| Hastisëns, f., 23° | Isidina, m., |
| Hathisimha, king, | Isidina, B. preacher, |
| Hatiya, B. monk, | Isidina, B. nun, |
| Hayadā, f., | Isiguta, merchant, |
| Hēliodora, Greek ambassador, 669 | Isika, m., |
| Hěrapika (?), m., | Isika, B. monk, |
| Himadats, f., | Isila, B. monk, |
| Himagiri, m | Isila, m., |
| Himala, m., | Isipiyata (?), m., |
| Hirafiavaghava, m., | Isimita, ss |
| Horamudakhara (?), m. (=Horamudkhapharu, | Isimită, f |
| Horamudkhata, Horamurndata), . 128 | Isimits, B. nun, 630 |

| Number. | |
|---|--|
| Isimulasamin, ss., | Jinadssi, f., 23", 68 |
| Isinadana, et., | Jirasamdhadatta, m., |
| Isinikā, f., | Jitamits, m., 808 |
| Isipala, merchant, | Jitamita, B. sus, |
| Isipālita, B. preacher and navakarmika, . 77: | Jitamită, f., |
| Isipālita, m. (=Isipālīta), | |
| Isipālita, m., 336; (-Isipālita) 118. | Jiva, f., |
| Isipalita, f., | |
| Isirakhita, m., 358, 404; 721; 848, 861 | |
| Isirakhita physician. 1048; his grandson, . 1041 | |
| Isirakhitä, f., | |
| W | The state of the s |
| Islamingiya, referring to the saint Isisinga, . 80! | Jivaširi, m., |
| Iśvarasēna, king, | |
| | Jöds (?), m., |
| | Jonhaka, B. monk, 310, 311 |
| J | Juvāriņikā, f., |
| Jabhaka, m., | |
| W 848.2 G | |
| | 15 |
| Jambha, m., | |
| Ja . mitra, J. preacher and ganin, 2 | and the state of t |
| Jamtēyikā, f. (= Jatēyikā), | Kaboja, B. monk, 176, 475 |
| Janaka, mythical king 70 | Kächä m. or f., |
| Janaka, m., | Kachula, m., |
| Jata, B. teacher of the Pitakas, 85 | Kada, B. monk, |
| Jateyika, f. (=Jamteyika), | |
| | Kadī, B. sun, |
| Jaya, m., | |
| Jaya, B. nun, | |
| Jaya, f | Kalentown (P) Comiles (2) |
| Jayabhatta, m., | Walnatiles D - and a con |
| Jayabhatti (?), m., | 7 T. to 31 TO 170 |
| Jayabhūti, J. monk. | Pal- |
| Jayadaman, kahatrapa, . 963, 964*, 966, 96 | Kill, m., |
| Tomales - | 1 |
| Jayadasi, f., | - 1 minute of 1 mi |
| | A management of the property of the last o |
| Total Inc. 197 Y. Y | 190 |
| | A Lamvigh, surn. of Data |
| | halavada, surn. of Kodo, |
| | Halavada, f., |
| | 8 Kalura, m., |
| Jayavamma, king (=Jayavarmman), 13 | 8 Kama, m., 195 |
| Jayavarmman, king (=Jayavamma), 13 | 8 Kamě, B. upásiků, |
| Jeshtahasti, J. monk, 121, 13 | 2 Kamaya, B. monk, |
| Jeta, B. monk, | 4 Kamavachara, class of gods. |
| Jets, m., | 7 Kamidada # |
| Jetaka, m., | 8 Kamdanika 2 |
| Jethabhadra, m., | 5 Kamma |
| Jins, founder of J. religion, 13. | 5 Kampherson P |
| White and Y and | Ton |
| | 0 Kamnikā, f. (= Kanikā), |

| Number. | Number. |
|---|--|
| Kamuka, m., | Kharapallana mahākshatrapa, 925, 926 |
| Kana (?), J. (?) monk (= Kanha), 75 | Khāravēla, king, 1345, 1346 |
| Kana, B. monk, | Kharnna (?), J. ganin, |
| Kana, B. monk, | Khasu, m., |
| Kanabhoa, surn. of prince Vhenupālita, . 1072 | Khēmaka, B. monk, |
| Kanaka, B. preacher, | Khubiraka, king (= Kubiraka), 1935 |
| Kapha, m., 1007; 1071; 1291 | Khuda, J. nun, 13", 18 |
| Kanha, merchant, | Khvasichš, B. upūrikā, 43 |
| Kanha (?), J. (?) monk (= Kana), | Kirtti, B. upāsaka, 929 |
| Kanha, king | Kochhi, surn. of Amohini, 59 |
| Kapha, f., 1332; 1252; 1287 | Kochhiputa, surn. of mahābhoja Velidata, . 1058 |
| Kanhati, householder, | Кофа, т., |
| Kanhila, B. preacher, 893 | Kôdš, f., |
| Kanikā, f. (= Kamnikā), 1202, 1208 | Kodachadi, householder, |
| Kanishka, king (= Kanishka, Kanishka), . 14* | Kodi, B. nun, |
| Kanishka, king (=Kanishka), 18, 21, 22, 79, 927 | Kodina, Br. gotra (= Kodina, Kondinya), . 1328 |
| Kanishka, king (=Kanishka), 23, 925 | Kodiña, Br. götra (= Kodina), 681 |
| Kaniyasi, f., | Kodiniputa, B. saint, 157, 661 |
| Kapananaka, m., | Kodiyani, surn. of Nagasena 719 |
| Kapila, B. episaka, | Kodiyani, surn. of Sukatadied, 816 |
| Karaha, m., | Koda, f., 647 |
| Karddamaka, royal family, | Која, т., |
| Karkuhastha, J. preacher (= Kakasaghasta), . 58 | Koleya, J. gana (=Kolika, Koliya, Koteya), 22, 22* |
| Kasapa, Buddha, | Kôlika, J. gana (= Kôlêya), 107 |
| Kasapagota, B. saint, 158, 654, 655 | Koliya, J. gana (-Koleya), 17, 18, 19, 20, 23*, |
| Kanputa, surn. of king Bhagabhadro | 25, 27, 28, 29, 32, 36, 39, 45*, 47, 53, 54, |
| Kaśśapiya, B. (?) school, 904 | 56, 73, 75, 77, 84, 191, 192, 194 |
| Kassava, Br. gölra, | Könägamena, Buddha, |
| Kasutha, m., | Kondamana, Brahman, 1195; kis family, . 1196 |
| Katahadi, m., | Kondinya, Br. götra (= Kodina), . 1195, 1196 |
| Kathika, servani, | Koramika, B. sun, |
| Kěkatěyaka, m., | Kōshaka, m., |
| Kěla, m., | Kosika, Br. gotra, 1200, 1328 |
| Késa, m., | Kösika, surn. of general Bhavagopa, 1146 |
| Khabula, m., | Kosikaya, m., |
| Khada, f., | Köšiki, surn. of Simitra, 94 |
| Klaslaraki, polisher, | Kösikiputa, B. saint, 159, 602 |
| Khadasāti, minister, | |
| Khaharata, surn. of kehatropa Nahapana | Kösikiputa, surn. of mahārathi Vinhudata, . 1079 |
| (=Khakharāta, Kahaharāta), 1099 | Kösikiputra, surn. of Sihanadika, 105 |
| Khakharata, royal family (= Khaharata) 1123 | Kösikiputta, surn. of Nagadatta, 1196 |
| Khalamitta, jeweller, 20 | Kotoya, J. gana (=Koleya), 89° |
| Khamdadha, Brahman, 1200 | Kotiputa, surn. of B. saint Kdsapagota, . 158 |
| Khaindakoindi, Brahman, | Kotsi, f., |
| Kharindanāgasātaka, mahārathi (=Sadakhada- | Kottasama, Brahman, 1200 |
| nāgasiri, Sivakhadanāgasiri), 1021 | Krishamyasa, m. (- Krishnayasa), 8 |
| Khamdapalita, mahābhoja, 1037, 1045 | Krishnayasa, m. (=Krishathyasa), 8 |
| Khamdarudaja, Beakman, | Kahaharata, surn. of kahatrapa Nahapana |
| Khamdasama, Brahman, | (= Khaharāta), 1131, 1132, 1133, 1134, 1135 |
| Khara, m., 161; 967 | Kahēma, J. monk, 76 |
| | |

| Numbi | NUMBER. |
|--|---|
| Kshēraks, J. preacher, 20, 1 | |
| Kuba, B. monk, | |
| Kubala, householder, | 5° data, |
| Kubëra, god (= Kupira), | 12 Madhariputra, surm of king Iscarasana, . 1137 |
| Kubiraka, king (=Khubiraka) 13 | 38 Madhurika, f., |
| Kujam, m., | |
| Kujars, f., 8 | 20 Makhādēva, 691 |
| Kulaipa, Pahlava, | 66 Māghahasti, J. gaņis (=Mainguhasti), 54 |
| Kulapiya, B. upāsaka, 10 | 20 Magila, royal physician, 1189, 1190, 1191, |
| Kuli-Mahataraka, god, | 27 1192, 1193 |
| Kulim, m., | |
| Kumaļā, f., | 18 Mahadéva, m., |
| Kumara m | Mahadéva, legendary B. saint, 881, 902 |
| Kumarabhati, perflemer, | 39 Mahādēvaņaka, householder, 1091 |
| Kumāragupta, m., | 29r Mahādēvi, queen, |
| Kumaraka, J. monk, | 19" Mahadhammaks, B. monk, |
| Kumaramita, f., | 24 Mahagiri, B. monk, |
| Kumāramitā, J. nun (=Kumāramitrā), | 39 Mahahakusiri, m., |
| Kumāramitrā, J. nun (=Kumāramitā), | 39 Mahakökš, goddess, 811 |
| Kumamamdi, Brahman, 12 | 200 Mahamada, 18., |
| Kumaranandi, J. monk, | 71 Mahaméghavahana, surn. of king Khāravēla, . 1345 |
| Kumarasama, two Brahmans, 12 | |
| Kumarasiri, f., | |
| Kumuda, B. monk, | |
| Kunika, m., | 50 Mahanaga, m., |
| Kupira, yaksha (= Kubéra), | 794 Mahanama, m., |
| Kura, m., 1329, 1330, 13 | 32 Mahanandi, J. monk, |
| Кага, т., | 32 Mahara, B. monk, |
| Kuramgi, f., 939, 940, 941, 942, 943, 9 | Maharakhita, J. monk, |
| Knanka, m. | 331 Mahasaghiya, B. school (=Mahasaghiya) 1105 |
| Kusuma, servant, | |
| Kuta, merchant, | |
| Kutha, m., | |
| | Mahavanāya, B. saint, 660 |
| | Mahavira, founder of J. religion, . 74, 76, 78, 103 |
| L | Mahesara, worshipper of Maheseara, 1194 |
| Table trade to the second of t | 176 Mahida, m., |
| Lalaka, king, | 346 Mahidasēna, m., |
| Termendal at hammen | 169 Mahika, ironmonger, |
| Lēva, m., 479; | 100 Malfart |
| Louises 2.3 | 060 Mahipāla, m., |
| Table | 910 Makitanka D 1 |
| Tarita service a ferroral secul | 19e Maihama Zentin |
| Lots, f. door-keeper, | Maikima D |
| | Mailton |
| M | Maladadt! |
| | 0 W-1- |
| Madaragi, surn. of Krishnayasa, | No. Mete D |
| | |
| Madhara, Brahman, | 300 Mala na (?), m., |

| Number. | Number |
|--|--|
| Malapali, god, | Mula, f., |
| Mamakavejiya, family, 1048 | Mals, B. nun, |
| Maindava, mahābhēja family (= Madava), | Muladata, f., |
| 1037, 1045, 1049, 1058 | Mulagiri, clerk, 209 |
| Maindavi, f. member of mahabhbja family, | Mulasiri, m., . 1204; (= Mūlasiri) 1213 |
| 1052, 1111 | Mulasiri, m. (= Mulasiri), |
| Mainguhasti, J. ganin (= Māghahasti), 53 | Manuri, f., |
| Mammā, B. upāsikā, | Musaladatta, m., |
| Manachchhandoga (?), Br. school, 149" | |
| Manasa, Br. götra, | N |
| Manavya, Br. gotra, | |
| Manorama, carpenter, 495 | Nada, blacksmith, 1032 |
| Mara, deity, | Transmit was saided a |
| Mariti, Aouseholder, 1206, 1218, 1291 | Nada, f., |
| Māsigī (?), f., | Nada, surn. of courtesan Vāsū, 102 |
| Matila, m., | Nada , m. or f., |
| Matridina, J. preacher (= Matridina), 27 | Nadabāļikā, f., |
| Matridina, J. preacher (= Matridina), 30 | Nadabhuti, artisan, |
| Maurya, royal family, | Nadagiri, B. preacher, 804 |
| Mědhuna, general, | Nadaka, surn. of Törika, 1176 |
| ARTIN MICH. | Nadanaka, m., |
| Měhika, J. kula, 24, 70 Mihila, J. monk, 20, 121, 122 | Nadasava, m., |
| The state of the s | Nadāsiriyā, f., |
| Misakösi, apzaras, | Nadavu, m., 204 |
| Mita, m., | Nādhasiri, B. monk, |
| Mits, f | Nadi (?), m., |
| Mits, B. nun, | Nādi, m., |
| Mitabhuti, B. monk, | Nadiguta, B. monk, |
| Mitadeva, maharathi, | Nadikā, B. nun, 674 |
| Mitadeva, perfumer, | Nadini, f., 494 |
| Mitadevs, f., | Nadivirohi, m., |
| Mitadevanaka, m., | Naduka, B. monk, |
| Mitaširī (?), f., | Nadutars, f., 826 |
| Mitasiri, B. nuss, 499, 578 | Naga, B. monk, |
| Mitra, f., | Naga, B. monk, 451; 1273, 1295; his grand- |
| Mitraśiri, f., | son, |
| Mittra, J. monk, 71 | Naga, m., 1048 |
| Mittrs, f., | Naga, trader and householder, 1063 |
| Mogalana, B. saint, 153, 666, 668 | Naga, f., |
| Mogaliputa, surn. of Puphaka, 97 | Nāgā, B. upānikā, |
| Mogaliputa, B. saint (= Mogaliputa), 664 | Naga, B. nun, |
| Mogaliputa, B. saint (= Mogaliputa), . 682 | Nagabhutikiya, J. kula, 21 |
| Mõhikā, B. nan, | Nagadata, J. monk, 35 |
| | Nagadata, m., |
| | Nagadatā, f., |
| Mudhakiya, caste name (?), | Nagadatta, Brahman, |
| Mudukutala, general, | Nagadattā, J. nun, 86 |
| | Nagadéva, B. monk, 690 |
| | Nāgadēvā, B. nun, |
| Mugudasama, m., | Nagadina, B. monk, 171, 235 |
| | Nagadina, m., 28 |
| | 20 |
| | |

| NUMBER. | Number. |
|--|-----------------------------------|
| Nagadina, banker 379 | Namdin, Siea's bull, (80) |
| Nagadina, f., 28 | Namdinika, f., |
| Nagadina, f., | Namdivišala, elephant, 41 |
| Nagamita, f., 233, 428 | Namdaka, B. monk, 631 |
| Nagamită, B. san, | Namdutara, B. nun, |
| Nagamulanika, mahdrathini, 21 | Nandā (?), J. nan, 48 |
| Nagamuli, f., 1207 | Nandi, J. gania, |
| Naganandi, J. preacher 22 | Nandi, m., 23* |
| Naganarhdi, Brahman, 1200 | Nandiavarta, J. saint, 47 |
| Naganika, B. nun, 1041 | Nandibala, actor, |
| Nagapalita, jeweller, 1005 | Nandika, B. monk, |
| Nagapālitā, f., | Nandika, J. ganin, 37 |
| Nagapiya, banker, 339, 348, 581 | Nanna, physician, |
| Nagarakhita, B. monk, 607 | Nara, f., |
| Nagarakhita, quees, 882 | Narayana, god, 1327 |
| Nagasèna, J. monk, 43 | Nataka (?), m., |
| Nagaséna, f., 719 | Nati, B. nun, 471 |
| Nagasiri, m. (=Nagasiri), 1204 | Navahasti, m., |
| Nagasiri, m. (= Nagasiri) 1202, 1203 | Naya, surn. of Nadasava, 1078 |
| Nagata, f., | Nayanika, queen, |
| Nagatisa, merchant, | Nëmësa, god, 101 |
| Nagila, B. monk, 338; 569 | Nigadi, m., |
| Nagila, banker, 470 | Nigatha, class of monks, 102 |
| Nagila, es., | Nuśapriya, f., |
| Nagila, B. nun, | 100 |
| Nagilani, f., 1202, 1203, 1204 | |
| Nahapana, kshatrapa, 1009, 1131, 1132, 1133, | 0 |
| 1134, 1185, 1174 | 01-1 |
| Najs, f., 219, 560 | Odnas, m., |
| Nakabudhanika, f., 1202, 1203 | 03-1- |
| Nākachamda, artisan, 1202, 1203, 1204 | Odžia, m., |
| Nakachadapaka, merchant's wife, 1292 | Odatika, B. sus, |
| Nakapaka, m., | Odi, f., |
| Nakanika, f., | Odi, B. 888, 593, 811 |
| Nakha, f., | Ogna (:), d. mone, |
| Naki, f., | Ohanadi, J. monk (= Ohanandi), |
| Nelika, J. kula, | Ohanandi, J. monk (= Ohanadi), 81 |
| Namda, householder, | Okhā, J. trāvikā, |
| Namda, m., | Okhalakiya, mahārathi family, |
| Nainda, B. monk, 885 | Okhārikā, f., |
| Namida, king or royal family, 1343 | Opamainnava, Br. götra, |
| Namda, f., | Opedadata, m., 223, 407 |
| Namda, B. upāsikā, 125 | |
| Namdagiri, m., | |
| Namdasiri, f., | |
| Namdighosha, goldsmith, 95 | D |
| Namdigiri, m | Pahhamaka General 193 |
| Namdija Brahman, | Padame # |
| Namdika, m., | Padamaniba P |
| Namdika, m., 9 | Padrimtonit annual |
| | 746 |

| | | | | Wenenun | | | |
|--|---------|---------|------|----------|--|---------|--------------|
| D. I. D | | | | NUMBER. | N . | | . Number. |
| Pala, B. monk, . | | | | . 18 | Pothadēvā, f., | | 205 |
| Pals, m., | • • | | | 12.30 | Pothaghosha, m., | | 59 |
| Pala, J. ganin, | | | | . 29 | Pothaka, B. monk, | | 342 |
| | | | | | Pothayasaka, m., . | * | 94 |
| | | | * | . 1158 | Pranathaka, m., | | 967 |
| Painthaka, B. monk, | | | | 473;716 | Prasnavšhanaka, J. kula, | * | 73 |
| Pandu (?), m. | | * | | . 566 | Pratichana, B. monk, | * | . 185; 303 |
| and the same of th | | | | . 1263 | Pravaraka, m., | * | 76 |
| Papin, m., | | | | | Priya, m., | * | 70 |
| Papin, householder, | | | * | . 1222 | Pulamavi, king (= Pulamavi | , Pul | |
| Parasariputa, surn. of (| | | | 1979 | Pulumayi, Pulumayi), | * | 1124 |
| Paravanuta, B. monk, | | | * | . 1272 | Pulumavi, king (=Pulumavi), | | . 1100, 1106 |
| Paridhasika, J. kula, . | | | | . 76 | Pulumavi, king (= Pulumavi), | | 1248 |
| Pariguta (?), officer, | | | * | . 1105 | Pulamayi, king (= Pulamayi), | | 1122 |
| Parija, f., | | | | . 178 | Palamāyi, king (= Palamavi), | | 1123 |
| Parikini, surn. of Gold, | | | | . 836 | Punakiya, referring to Purnaka, | | 786 |
| Parimita (?), Brahman | | * | | . 1200 | Punavasu, B. Vinaya teacher, | * | . 1286 |
| Pariva, J. arhat, . | | | | . 110 | Punāvasu, B. monk, | | . 831 |
| Pasama, B. monk, . | | | * | . 1272 | Puphaka, m., | | . 97 |
| Pasamā, f., | | | | . 1384 | Puri, householder, | 9 9 | |
| Pasanaka, B. monk, . | | | | 155, 174 | Parisadata, king, | . 1202, | 1203, 1204 |
| Pasēnaji, king, | | | * | . 751 | Purisadatā, f., | | . 1127 |
| Patamana, B. monk, . | | - | | . 671 | Pasa, B. monk, | | |
| Patibadhaka, surn. (|) of | Girib | huts | (= | Pusa, m., | | |
| Patibadhaka), | | | | . 1155 | Pusă, B. nun, | | . 369 |
| Patibadhaka, surn. (| | Giribl | | (= | Pasa, f., | . 558; | 796; 1048 |
| Patibadhaka), . | | | | . 1152 | Pūsā, f., | | . 97 |
| Patihara, m., | | | * | 947 | Pusabals, f., Pusadata, m., | | |
| Patimita (?), B. monk, | | | * | . 1041 | | | . 477 |
| Patithana, m., | | 001 | * | . 474 | Pusadatā, B. nun, Pusadēvā, f., | | . 806 |
| Patithiya, householder, | | | 202, | 449, 450 | Domition of | | - |
| Patuda, B. monk, | | 4 | | . 361 | Pusaka, B. monk, | | 182, 277 |
| Pētaputrikā, J. sābhā, | There's | - 41 1 | -6 | . 76 | Donales as | | . 300 |
| Pētivamika, J. kula (= | | | | . 45 | Pusaka, m., | | 476; 876 |
| Pētivāmika, J. kula (= | Petry | imika), | | 31, 107# | Pusanaka, m., Pusanakhita, cavallerist, | | 1065 ; 1109 |
| Phagu, f., | | | * | 170, 236 | D | | . 381 |
| Phagudéva, m., | | | * | . 870 | Pusarakhita, B. monk, Pusha, J. śrawaka, | | . 612 |
| Phaguděvá, B. nun, . | * | | * | . 586 | Pushabudhi, m., | | • 45 |
| Phagula, B. nus, . | | | * | . 294 | Pushadina, m., | | . 49 |
| Phaguna, m., | | * | | 395 | Pushyagapta, provincial governor, | | - 45 |
| Phaguna, B. monk | | | | . 100 | Pushyavuddhi, B. monk, | * | . 965 |
| Phaguyata, dancer, . | | * | | . 1331 | Pusila, J. monk, | | 918, 925 |
| Pigaha, m., | | | | . 1332 | Pusila, householder, | | . 23* |
| Pigalaka, m., | | * | | . 1248 | Pasiliya, family, | | . 1209 |
| Pithdesutariya, family, | - * | | | . 1494 | | | . 1207 |
| Pindapayya, m., . | | * | * | . 69* | Pasini, f., | * | . 615 |
| Pindi (?), m., | | | * | 910 | Pusyamitriya, J. kula, | | . 16 |
| Pitamaha, saint (?). | * | * | * | . 368 | | | . 34 |
| Piyadhamā, B. nun. | 4 | | | . 1006 | Putara, m., Puvakotuja, Brahman, | 70 | . 1332 |
| Popakiasana, B. nun, . | * | | | * 1000 | Transfele, Diesman, | * | . 1205 |

| | NUMBER. | Number |
|------------------------------------|---------------|---|
| | 210 202 | Rudrasēna, mahākshatrapa, 962, 967 |
| - | | Rudrasiba, kahatrapa, 963, 967 |
| R | | Rudrila, Brahman, |
| Rahila, B. monk, | 198 | Thereting are continued |
| Rahula, householder, | 1260 | S |
| Rajuka, B. monk, | . 281 | 3 |
| Rajūvula, mahākshatrapa, | 14 | Sabhadā, apsaras, |
| Rajyavasu, ss., | 50 | Sachamita, m., |
| Rakhadi (?), f., | 1217 | Sadageri, surn. of makabhāji Vijaya |
| Rama, m. (?), | 125 | (= Sāḍagēri), |
| Rama (?), hero, | 979 | Sudageri, surn. of makabhaji Vijaya |
| Ramadata, m., | 1058 | (= .8adagēri), |
| Ramamnaka, m., | 1138 | Sadakani, dynastic name (= Sātakamni, |
| Rāmaņaka, merchant, | 1139 | Satakamni, Satakani, Satakani, Satakani, |
| Rāņa (?), m., | . 984 | Sātakaņņi, Sātakarņi), |
| Rathitara, Br. gotra, | 9 | Stelakara, surn. of mahābhēja Sudamsana, . 1054 |
| Ratini, f., | 501 | Sadakhadanagasiri (?), prince (=Khamda- |
| Ratiniki, f., | 1020 | nagasataka), |
| Bavisiri, B. upāsaka, | 1284 | Sadavahana, royal family, 1144 |
| Rébhila, m., | 1137 | Saddhaka, m., |
| Rěbila, m., | 509 | Sadhamusala, m., |
| Rēta, m., | 1337 | Sadhana, B. monk, |
| Rētī, B. nun, | 1246 | Sadhi, J. monk, 32 |
| Rēvā, B. upāsikā, | 383 | Sadita, J. nun, |
| Revatimita, m., | 712 | Sagarapalogana, family (?), 1012 |
| Revatimits, f., | 508 | Saghā, f., 267; 644; 1213; 1218 |
| Rishabha, J. arkat, | . 56, 69* | Sagha |
| Ritali (?), B. nun, | 568 | Saghadsat, f., |
| Ritunandi (P), m., | 37 | Saghadeva, merchant, |
| Röhs, f., | 507 | Saghadina, B. nun, |
| Röhn, B. mun, | 1264 | Saghaka, goldsmith, |
| Rôhapadêva, f., | 467 | Saghaka, m., |
| Bôhani, f., | . , 216 | Saghamita, B. monk, 575 |
| Rôhaniaśva, f., | 1327 | Saghamita, m., |
| Rohanika, m., | 609 | Saghamită, B. sus, |
| Röhanimita, treasurer, | 996, 1033 | Sagharakhita, B. monk, 155; 608 |
| Roja-Siddhavriddhi, vihārasvāmin, | 5 | Sagharakhita, m., 469, 558; 844; 1058; 1218; 1250 |
| Rotta-Jayavriddhi, vikarasvāmin, . | 5 | Sagbarakhita, banker, |
| Ru , mahākshatrapa, | 994 | Sagharakhita, f., 500 |
| Rudaghosaja, Brahman, | | Sagharakhitā, B. nun, |
| Rudasama, Brahman, | | Saghārakhitā, B. nun, |
| Rudavemnhuja, Brahman, | 1328 | Saghila, m., 843 |
| Rudrabhuti, general, | 963 | Sakā, f., |
| Rudrad , f., | 23 | Sakadina, m., 257 |
| Rudradaman, mahākshatrapa, 963, | 964, 965, 967 | Sakamuni, founder of B. religion (= Sakva- |
| Rudradisa, banker, | 41 | muni), |
| Redradata, f., | 23 | Sakarakhita, m., |
| Rudraděvš (?), f., | | Sakasēna, king, |
| Rudradévasamini, f., | 23* | Sakatadévi, f., sin |
| Rudra u. 5, f | 23* | Sakhuyaru, surn. of Giribhūti, |
| | | . 1103 |

| *T | |
|--|---|
| Sakiya, family, | NUMBER. |
| | Samiks, m., |
| | Samika, munician (?), |
| | Samilea, B. monk, |
| Sālankāyana, Br. götra | Samika, merchant and B. upāsaka, 995 |
| 6 T | Samikā, f., 268; (=Sēmākā ?) 389 |
| | Samikā, B. nun (=Sāmikā), 533 |
| Sāmā, f., | Samika, B. nun (= Samika), 534 |
| Samada, B. upāsaka, | Samkamsana, Aero (= Samkarshana), |
| Samadi , J. preacher and gamin, 50 | Samkarshana, Aero (= Samkamsana), 6 |
| Samadinika, makarathini, | Samkasiya, J. sākhā, |
| Samaka, B. monk, | Sammitiya, B. school, |
| Samaka, B. monk, | Samuda, merchant, |
| Samaka, officer, | Samudani, f., |
| Samaka, m | Samuddagutta (P), king (P), 686 |
| Samaņa, m., | Samudiya, B. f. teacher, 1286 |
| Samana, B. monk, | Samvahika, B. nun, |
| Samana, officer, | Samvalita, m., |
| Samanā, B. nan, | Samyutaka (?), m., |
| Samanadasha, m., 1332, 1334, 1337 | Sandhi, J. monk, |
| Samanëro, banker, 184, 283 | Sandhika, J. preacher, 21 |
| Samanika, f., | Sangamikā, J. nun, 24, 70 |
| Samatika (?), f., | Sangha , B. monk, |
| Sambhava, J. arkat, | Sanghadéva, m., |
| Samdhana, B. monk, | Sanghadeva, B. monk, |
| Samgha, m., | Sabghamitra, m., |
| Samgha, f., | Sanghamitra, B. monk, 40 |
| Samghadā, f., | Sabgharakshita, m., |
| Samghadāsa, B. monk, | Sanghasiha, J. preacher, 28 |
| Saringhadata, m., 414 | Sanghavarmma, B. monk, 125' |
| Sainghadeva, m., | Santinatha, J. arkat, 27 |
| Saringhadeva, B. monk, | Sapa, f., 1045; 1048 |
| Samghadevanika, f., 1018 | Sapa, B. nun, |
| Samghadina, B. monk 1082 | Sapaguta, B. nun, |
| Sainghamita, m., | Sapaki, B. nun, |
| Satisphamitara, m., | Saphineyaka, family, |
| Samghanādhi (P), m., | Saphineyaka, m. member of the Saphineyaka |
| Samghapälitä, B. nan, | family |
| Sangharakhita, m., | Saphinēyikā, f. member of the Saphinēyaka |
| Saingharakhita, householder and banker, . 1073 | family, |
| Samgharakhitā, B. nun, 245; 526 | Sapila, m., |
| Samgharakhita, B. updsika, | Sapils, B. nen, |
| Samgharakshita, B. monk, 147 | Sarasvati, goddess, |
| Sainghila, B. monk, | Sariputa, B. saint, 152, 665, 667 |
| Sami, carpenter | Skripata, B. teacher, |
| Samidara (?), f., | Sarvastivadin, B. school (=Sarvastivadin, |
| Samidata, B. monk (= Sāmidata), . 298 | Sarvvastivādi, Sarvvāstivādin, Šavasthidiya), 918 |
| Samidata, goldsmith, | Sarvāstivādin, B. school (= Sarvastivādin), . 919 |
| Samidata, B. monk (- Samidata) 585 | Sarvvastivādi, B. school (=Sarvastivādin), . 12 |
| Samidată, f., | Sarvvāstivādin, B. school, (=Sarvastivādin), |
| Samija, Brahman, | 929*, 929* |

| Number | Number. |
|---|--|
| Satakamni, dynastic name (= Sadakani), . 98 | Sidhatha, artisan, 1202, 1203, 1204 |
| Satakamni, dynastie name (- Sadakani), . 118 | |
| Satakani, dynastie name (- Sadakani), 112 | |
| Satakani, dynastic name (= Sadakani), . 111 | |
| Satakani, dynastie name (=Sadakani), 346, | 2007 |
| | The state of the s |
| 1024, 1123, 1126, 1146, 1340, 134 | |
| Satakanni, dynastic name (= Sadakani), 119 | |
| Satakarni, dynastic name (-Sıdakani), 965, 99 | |
| Satamala, m., | |
| Satatanadi (?), gaksha, 95 | The state of the s |
| Satavahana, surn. of king Simuka, 111 | |
| Satavahana, prince, | 8 8ihadata, m., 48 |
| Satavahana, royal family, 112 | Sihadēva, m., |
| Satéraka, minister, | |
| Sathisiha, J. nun, 1 | |
| Sati (?), J. monk, 11 | |
| Satiguta, m., | Olfale mustates (0) |
| Satila, m., | ALL IN THE STATE OF THE STATE O |
| Out 11 D Y 1001 100 | 40 |
| W-M-M-A | MARK 5 5 5 5 5 |
| | - Col. 11.0 |
| Satisiri, B. nun, | * * ADD |
| Sati Sirimata, prince (= Hakusiri), 111 | |
| Satti, Brahman, | |
| Sategha, m., | |
| Satumadana, m., | The same of the sa |
| Savagiriyāsa, m., 1152, 115 | |
| Savagutajs, Brahman, 192 | 8 Simuka-Satavahana, king, |
| Savasa (?), B. monk, | 8 Sinavishu, m., |
| Savasthidiya (?), B. school (= Sarvastivadia), . 12 | Singhagbuta (?), m., |
| Šavatrata, f., | |
| Savigija, Brahman, | 0 01-2 # |
| Sayiti, householder, | O DI HI |
| fin D was | a di tata ta |
| Semaka (P), f. (=Samika ?), | 0 01 12 4 |
| | 01.131 70 |
| | 900, 000 |
| Sēna, m., | |
| Sēnahastin, m., | |
| Sota, m., | Singuta, merchant, |
| Setaka, m., | 8 Sirika, J. sambhōga (=Sirigriha). 38 30 50- 190 |
| Setapharana, m., | 6 Sirika (P), J. sambhōga (=Sirigriha). 121 |
| Production College | 8 Sirika, B. upānkā, |
| Sēumla, B. monk, | 7 Siri-Kharavela, king 1945 1946 |
| Sēyasa (P), m., | 4 Širikiya, J. sambhōga (=Sirigriha), 116 |
| Shabhika, m., | 7 Sirima, m., |
| Shamuda, m., | 0 000 |
| Siagutaniki, f., | 1 Siring # |
| Sidamta, B. monk, | d Strimet and 421 |
| Siddhavarmman, king, | I Newscore D |
| Sidharathi, B. nun, | 9 Sid-Namdatta Dust |
| m 11 -1 60g . 10 | Sirinal |
| Sidhatha, 18., | 5 Siripala, m., |

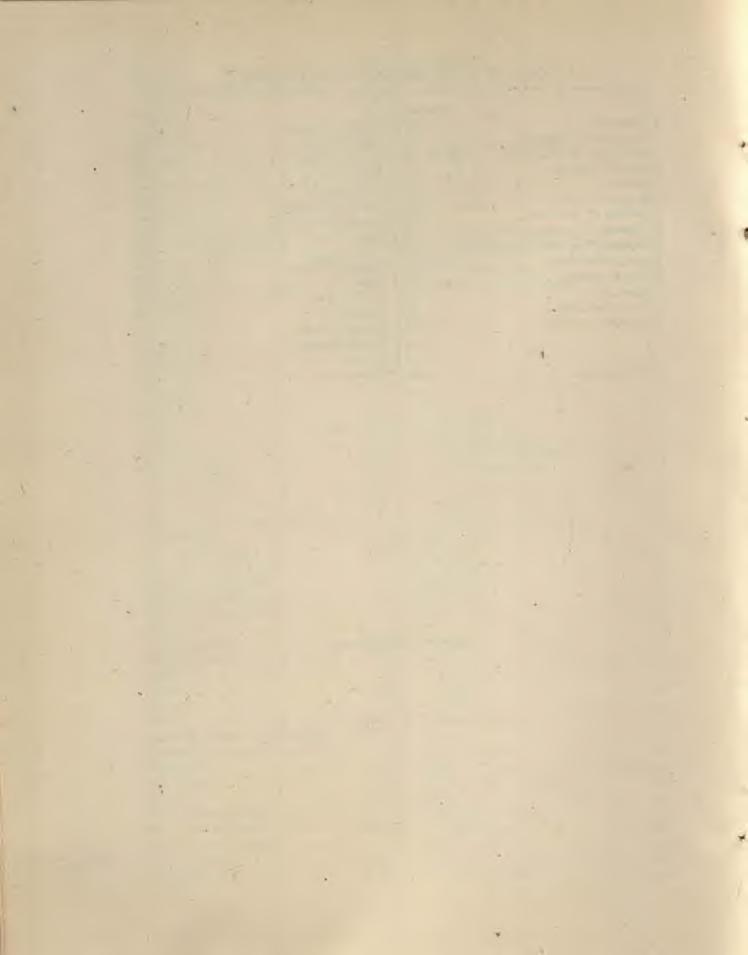
| Number. | |
|--|---|
| Siri-Pulamavi, king (=Siri-Pulamavi, Siri- | NUMBER. |
| Pulumavi, Siri-Pulumayi, Siri-Pulumayi) 1124 | Sivamaka-Sada, king, |
| Siri-Pulumāvi, king (=Siri-Pulumavi), 1100, 1106 | Sivamita, m., |
| Part and a second of the second of | Sivamita, writer, |
| | Sivanadi, m., |
| | Sivapālinikā, f. (=Sivapālitanikā), 1155 |
| | Sivapalita, m., |
| Siri-Sadakani, king (=Siri-Satakani), | Sivapālitā, f., |
| Siri-Satakani, king, | Sivapālitanikā, f., . 993; (=Sivapālinikā) 1152 |
| Siri-Sātakaņi, king, | Sivapirita, gardener, |
| Siri-Satakani, king (= Siri-Sadakani), | Sivara, m. (?), |
| Siri-Siyamaka-Sada, king, 1279 | Sivasama, m., |
| Siri-Vijayabuddhavamma, yuvamahārāja, . 1327 | Sivasēna, m., |
| Siri-Vijayadėvavamma, king, 1194 | Sivati, f., |
| Siri-Vijayakhandavamma, king, 1327 | Sivayasa, f., 100 |
| Sirivira-Purisadata, king (=Sirivira- | Skandavarnna, m., |
| Purisadata) | Šodāsa, mahākshatrapa (=Šomdāsa), 59 |
| Sirivira-Purisadata, king (=Sirivira- | Sômā, B. nun, |
| Parisadata), | Sômadeva, physician, 1018 |
| Širiya, J. sambhoga (=Širigriha), 48 | Somadeva, maharathi, |
| Siriya (F), J. sambhoga (= Sirigriha), 121 | Śomdasa, mahākshatrapa, (=Śodasa), |
| Striyaña, king, | Sôna, m., |
| Siyabhuti, m., | Sônā, f., |
| Sivabhuti, writer, 1037, 1045 | C |
| Sivabhuti, m., | Ptu-lu - non |
| Sivadāsa, banker | |
| 01-1x 1-1-1-1 | 04-1-20 |
| 51 13 | |
| 91-1-1- D 1040 | Sonuttars, m., |
| 01 11 1000 1000 | Sövasaka, B. school, |
| 21 July 2 | Sōyasa (?), m., |
| | Sramapaka, m., |
| Sivadatts, king, | Srigriha, J. sambhoga (= Sirigriha), 27, 29, 53, 54 |
| Sivadeva, m., | Śrigriha, J. sambhoga (=Śirigriha), 19 |
| Sivadina, m., | Srī-Sātakarņi, king, |
| Sivaganaka, m., | Stanikiya, J. kula (= Sthanikiya, Sthanikiya, |
| Sivaghôsa, m., | Sthaniya, Thaniya, Thaniya, Thaniya, |
| Sivaghoshaka, m., 106 | Thaniya), |
| Sivaguta, officer, | Sthānikiya, J. kula (=Stānikiya), 110 |
| Sivaka, m., | Sthanikiya, J. kula, (=Stanikiya), 56 |
| Sivakhadaguta, m., | Sthāniya, J kula, (=Stānikiya), . 22, 39, 51 |
| Sivakhadanāgasiri (?), prince (=Khamda- | Sthāvarajātra, m., |
| nāgasātaka), | Sthira, f., |
| Sivakhadavamman, king, 1196 | Subahita, royal scribe, 270, 271, 544 |
| Sivakhamdavama, king (=Sivakhamda- | Subluga, m., |
| vamma), | Subhaga, f., 179; 558 |
| Sivakhamdavamma, yuvamahārāja | Snchila, m., 27 |
| (=Sivakhamdayama), 1205 | Suchilòma, yakaka, |
| Sivakhadila, officer, | Sudamsana, muhābhāja, 1054 |
| Sivala, legendary queen, 709 | Sudasani, yakshi, 790 |
| Sivals, B. upāsikā, | Sudhavasa, class of gods, 740 |
| Sivama, m., 1045; 1049 | Suga, royal family, 687, 688 |
| 3.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1.1 | |

| Number. | Number. |
|---|--|
| Sugatapara, m. (?), | Thoratiss, w., |
| Sujata, m., | Thupadasa, w., |
| Sujata, f., | Thūpasakha, m., 1068 |
| Sujivin, m., | Tikisa (?), m., |
| Sukara, J. monk, 86 | Tisa, m., |
| Sukiti, m., | Tisaka, B. monk, |
| Suladha, trooper, 728 | Toramana, king 5 |
| Sulakshmana, B. updrika, | Törika, m., |
| Sulasa, B. monk and Tripitaka teacher, . 1171 | Tranakayira, mahārathi, |
| Sulnsa, householder, 1255; his son, 1255 | Trikamata (?), king, 949 |
| Sulasa, m., | Tuda, m., |
| 22 22 22 | Tuda, f., |
| | Taka, f., |
| | Tashaspha, Yavana king, 965 |
| | Turning the state will the state of the stat |
| Sumana, B. monk, 614 | |
| Supathāmā, B. nun, 478 | U |
| Supāvasa, yaksha, | |
| Sura, worker in metal, 53 | Uchanagari, J. śākkā (= Uchanagari, Uchchē- |
| Surana, m., | nagari, Uchënagari, Uchënagari, Uchënakari), 77 |
| Suriya, B. monk, 126 | Uchanagari, J. sakha (= Uchanagari), 45" |
| Sariya, f., 545 | Uchchenagara, member of J. takha, 71 |
| Suriyā, B. nun, 546 | Uchchenagari, J. sākhā (= Uchanagari), 23*, 29, 121 |
| Sasha, B. upāsaka, | Uchënagarî, J. Kākhā (= Uchanagarî), 20, |
| Susapāla, m., | 119, 123 |
| Sušyala, m., | Uchenagari, J. sākhā (=Uchanagari), 18, 32, 46 |
| Suta, m., | Uchēnakāri, J. fākhā (=Uchanagari), 19 |
| Sutanukā, f. temple-servant, | Udaka (?), king, |
| Suvijayata, B. saint, 654, 658 | Udéhikiya, J. gana, 21,76 |
| Sayira, R. monk, | Ugāha, B. upāsaka (=Ūgāha), |
| Suvisakha, Pahlava, minister, 965 | Ugaha, B. upāsaka (=Ugaha), |
| Suyattra, chief of district, 929" | Ugahaka, B. (?) nun, 910 |
| Svāmin (?), | Uggahini, J. ganin, |
| Svatiguta, m., | Ugibhinaka, surn. of Bhatadatta, 69" |
| | Ugudéva, f., |
| T | Ujhatika, f., |
| Land Land | Ujhika, f., |
| Tanava, Br. götra, | Ulana, m., |
| Tapasa, m., | Upahitaka, B. saint, 678 |
| Tšpass, B. upūsaka, | Upasijha, B. monk, |
| Tapasi, f., | Upedadata, m., |
| Tapasini (?), B. nen, | Upidadsta, m., |
| Tapasiya, family, . 219, 220, 228. 307, | Oposhatha, m., |
| 409, 560 | Usabha, J. arkat, |
| Taraka, J. monk, | Usabhadata, m., |
| Tevaniputra, surn. of king Bhagaeata, . 905 | Usabhadata, prince (=Usabhadata, Ushava- |
| Thaniya, J. kula (=Stanikiya), 22° | d8(a), |
| Thaniya, J. kula (=Stanikiya), 28 | Usabhadata, prince (= Usabhadata) 1000 |
| Thaniya, J. kula (=Stanikiya), 27, 75, 115 | Usannanaka, Aouseholder, |
| Thaniya, J. kula (=Stanikiya), 36 | Ushavadata, prince (=Usabhadata). 1131. |
| Thorasisi, m., | - 1132, 1133, 1134, 1135 |
| | 1 100, 1100, 1100 |

| Number | NUMBER |
|--|--|
| Utamabhadra, chief | 11 U = DEEL. |
| Upamabhadraka, kakatriyas, | Vaira, J. tākhā (= Vairā, Vairī, Vērā, Vērī, |
| Utara, rajjuka, | Vēriya), |
| Utara, B. monk, | Vairā, J. tākhā (= Vairā), |
| Utara, B. upāsaka, | Vairadien I mont |
| Utara, m., | Vairadeva, J. monk, |
| Utară, f., | Vairi, J. šākhā (= Vairā), 22 Vajanagarī, J. šākhā (= Vajanāgarī, Vajanā- |
| Utara, goldsmith, 92* | kari, Vajranagari), |
| Utaradāsaka, J. śrāvaka, 93 | |
| Utaradată, f., | Value visual Transfer was |
| Utameidhika. m oon | Vanneta A |
| Utaramita, f., | Variants. |
| Utayipabhahi, B. school, 1276 | Valiet D |
| Uttara, m., | Variotics P |
| | Vajranāgari, J. tākhā (=Vajanagari), 543 |
| | Valradimanini hi |
| V | Valvala (7) cures (- Wellie) |
| | Tr. 1. 1. 1. |
| Vachchhaliya, J. kula (=Vachhalika), 25 | Valida (P) muses (- Val-la) |
| Vachēduka, m., | |
| Vachha, Br. götra (= Vatsa), | Vakuda, B. monk, 195* |
| Vachha, m., | Vakuda, B. monk, |
| Vachhalika, J. kula (= Vachehhaliya), 107/ | Valaka, B. nun, |
| Vachhiputa, surn. of royal physician Magila, | Valamita, m., |
| 1191, 1192, 1193 | Valing general |
| Vachhiputs, B. saint, 680 | Vamadāsi, f., 23° |
| Vachhiputa, surn. of king Dhanabhūti | Vamgapāla, king, 23° |
| (= Vātsīputra), | Vanashpara, kshatrapa (= Vanaspara), 926 |
| Vachhiputra, surn. of Utaradāsaka, 93 | Vanaspara, kshatrapa (= Vanashpara), 926 |
| Vachhi-Suvijayata, B. saint, 654, 658 | Vanijaka, m., 925 |
| Vädasiri, f., | Varadata, m., 505, 506, 507 |
| Vaddha (?), m., | Varahiputra, surn. of Brahman Aseibhūti, . 1131 |
| Vadha, m., | Varana, J. gana (= Varana), |
| Vadhamana, founder of J. religion | Varana, J. gana (= Varana), 16, 31, 34, 37, |
| (= Vadhamāna, Vādhamāna, Vādhamāna, | 42, 45, 58, 113, 116, 117 |
| Varddhamāna, Vardhamāna), 50 | V GPR PRESENT OF |
| Vadhamana, founder of J. religion | Varasant / |
| (=Vadhamans), | Varddhamana, founder of J. religion |
| Vadhamana, founder of J. religion | (-Vedhaman) |
| (= Vadhamana), 18 | Vardhamana, founder of J. religion |
| Vadhamana, founder of J. religion | (=Vadhamana), 31, 34, 39, 59, 94, 102, 118, 119 |
| (=Vsdhamana), | Varma. 7. |
| Vadhapāla, prince, 125 (?), 869 | Varuna, perfumer, |
| Vadhara , ironmonger, 29 | Уагица, т., |
| Vadhisiva, m., | Varuna, god, |
| Vadhuka, gardener, | VASS. R. man. |
| Vadukha; prince, | Väsnahlen, king |
| Vahata, 26., | Vasathiputa, surn. of king Chatarapana- |
| Vahila, m., | Satakani |
| Vahila, m., | Vásava, god, |
| 4 | 2 p |
| | ± D |

| NUMBER. | Nomere. |
|---|--|
| Vasava, B. nun, 512 | Vhenupalita, prince, 1072 |
| Vasishka, king, | Vichita, m., |
| Väsishthipatra, surn. of king Pulumāvi, . 994 | Vidhika, leatherworker, afterwards B. monk, |
| Väsithi, surn. of Velimitä, 885 | 1273, 1295 |
| Vasithiputa, eurn. of artisan Anamda, . 346 | Vijapi, vidyādhara, |
| Vasithiputa, sura. of king Pulumāvi | Vijaya, B. monk, |
| | Vijayā, mahābhōjē, |
| | |
| Väsithiputa, surn. of mahārathi Somadēva, . 1100 Väsithiputa, surn. of Katahādi 1197 | Vijayā, f., |
| . motive and . m. of motive and | Vijayadėvavamma, king |
| Vasithiputa, surn. of king Pulumdei | WHILE AN A NAME OF THE PARTY OF |
| (=Vāsithiputa), | |
| Vasithiputa, surn. of king Chadasata, . 1341 | Vijayamita, B. monk and navakarmika, 987 |
| Väsil, courtezan, 102 | Vijayanikā, f., |
| Vāsū, general's wife, | Vijayuširi, f., 50 |
| Vasudéva, god, | Vijha, B. monk, |
| Väsudēvs, king, 60, 66, 68, 69*, 72, 76, 151* | Vijita, m., 166 |
| Vasuguta, m., | Vijitaka, m., 879 |
| Vasuka, m., | Vikață, f., |
| Vasula, banker, | Vimala, m., |
| Vasulā, J. nun, 24, 70 | Vinhikā, f., |
| Vasula, f 249, 510; 413 | Vinhudata, mahārathi, 1079 |
| Všsulš (?), f., | Vinhakada-Chatakulānamda, king |
| Vasulanaka, banker, | (=Vinhukadda-Chutukulānanda), |
| Vasumita, householder, | Vinhukadda-Chutukulananda, king |
| Vasumită, B. sun, | (=Vinhukada-Chutukulānamda), 1195 |
| Vatsa, Br. götra (= Vachha), 1200 | Vinhupala, m. (= Vinhupalita ?), |
| · Vātsīputra, surn. of king Dhanabhūti (?) | Vinhupalita, officer (=Vinhupala ?), 1125 |
| (=Vāchhiputa), 125 | Vipasi, B. saint, |
| Vätsiputrika, B. school, 923 | Vinneittaveire (2) as |
| Vāyala, Brahman (=Vayula), 9 | Vinals R monk |
| Vayadată, f. (= Vayadată), | Vinula D man |
| Vayudatā, f. (= Vayudatā), | Vipula (?), f., |
| Vayula, Brahman (= Vayala), 9 | |
| | 770 |
| | |
| Veduka, gardener 1065 | |
| | 1 |
| Velidate, m., | Truster 4 |
| Velidată, f., | Virasėnā, f., |
| Velimitā, f., | Viravriddhi, m., |
| Venhu, f., | Virudaka, yaksha, |
| Venhunadi, merchant (= Venhunamdi), 1001, 1002 | Visa, m., |
| Venhunamdi, merchant (= Venhunadi), . 1001 | Visaděva, king, 687 |
| Venhuys, f., 1060 | Visaka, m., |
| Vēni, banker, 24 | Visākha, B. monk, |
| Vėnuvāsa, m., | Visākha, m., 616 |
| Vērā, J. tākhā (= Vairā), | Visakharakhita, B. monk, |
| Vērī, J. tākhā (= Vairā), 27, 28, 36 | Visākharakhits, m., |
| Vēriya, J. sākhā (= Vairā), | Vishnubhava, m., 50 |
| Vesabhu, B. saint, 714 | Vishnudata, m., |
| Veramacadată, f 201 | Vishnudata, B. upārikā, |
| | |

| | | | | NUMBER. | 1 | | | Nun | BER. |
|-----------------------------|--------|--------|---------|-----------|--|------|-----|------|-------|
| Viovadēva, es., | | | | • 359 | Yakhadina, B. monk, | - 4- | | | 211 |
| Viávasika, surn. of Sūtya | la, | | ** | . 125* | Yakhi, B. nun, . | | 254 | 500 | ; 344 |
| Visvasika, surn. of Vakan | nihira | , . | | | Yakhila, B. monk, | | | | 580 |
| Viśvavarma, ganapaka, | 4 | | | . 1137 | Yakhila, m., | | | | 846 |
| Vitars, m., | | | | . 786 | Yama, god, | | | | 1112 |
| Vodhishēņa, B. monk, | - | | * | . 929 | Yamadata, B. upāsak | | | | 466 |
| Vojyavašika (?), surn. of n | by a | | | . 1251 | Yamamkhita, B. nun | | | | 538 |
| Vriddhahasti, J. preacher | (=V | ridhal | hasti), | . 56 | Yamiţa (?), m., | | | | 873 |
| Vridhahasti, J. preacher | =Vr | iddhal | hasti), | . 47 | Yass, f., | | | | 45" |
| Vudhika, writer, Saka, | 4 | | . 1 | 148, 1149 | Yasadinna, B. monk, | | | | 146 |
| Vudinā, B. upāsikā, . | | | | | Yasika, m., | | | | 757 |
| Vugālaka, m., | | | | . 1332 | Yasila, B. nun, . | | | | 245 |
| Vusu (?), dyer's wife, | | | | . 32 | Yasila, f., | | | | 247 |
| Vyaghraka, B. upānikā, | | | | . 1043 | Yasogiri, B. monk, | | | | 601 |
| | | | | 200 | Yasopala, B. monk, | | | 188, | |
| 1) | 1 | | | - 4 | Yons, m., . | | | | 547 |
| Yakhadāsi, B. nun, . | | | - | . 329 | A STATE OF THE STA | | | | 49 |



INDEX OF GEOGRAPHICAL NAMES.'

| A | Asaka, country, |
|--|--|
| Number. | mandani arana di |
| Abalikavihara, B. convent in Kalyana, . 988 | restand comments. |
| Aběyaka, a., place, 184, 283 | |
| Abhira, tribe (= Ābhīra), | Asvavnti, village, |
| Abhīra, tribe (= Abhīra), 963, 1137 | Athakansgam, a., place, 390 |
| Aboda, mountain, 693 | |
| Abalama, place, | |
| Achhavada, place, 389, 348, 581 | В |
| Achhavata, mountain, 1123 | |
| Achhāvāta, place, 368 | Bahadagojatiranatana (?), place (?), 721 |
| Adhapôrika, a., place, 600 | Bahuhathika, tree on mount Nadoda, 754, 755, 902 |
| Adhiebehhatraka, a., country (comp. Adhi- | Balanaseya, a., town (comp. Baranasi), 921 |
| chhatra), | Banāsā, river (=Bārnāsā), 1099, 1135 |
| Adhichhatra, country, 905 | Bārāņasī, town, 925 |
| Adhithana, place (?), 1281 | Barnasa, river (= Banasa), |
| Aghtakasagamikiya, a., place, 1077 | Bědakara, place, 372 |
| Ahavagra, place, 952 | Benākata (?), place (=Benākataka), 1124 |
| Ajakālakiya, field (?), 1125 | Benākataka, place (= Benākata), 1125 |
| Ājanāva, place, | Bhadanakadiya, a., place (=Bhadanakatiya), |
| Akarāvati, country (= Ākarāvanti), 1128 | 188, 314 |
| Ākarāvantī, country (= Ākarāvati), 965 | Bhadanakatiya, a., place (= Bhadanakadiya), . 384 |
| Akhasavadicha, a., place, | Bhadikiya, a., place (?), 321 |
| Ālikā, place, | Bharadhavasa, country, 1345 |
| Amdhapatiya, a., country, | Bharukachha, town, |
| Anammitaka, a., place (P), 578 | Bhārukachhaka, a., town (comp. Bharukachba), 1169 |
| Anartia, country, | Bhogavadhana, place (=Bhogavadhana), 295, 296 |
| Anugami, place, | Bhōgavadhana, place (=Bhōgavadhana), . 266 |
| Anupa, country (=Anupanivrit), | Bhōgavadhanaka, a., place (=Bhōga- |
| Antipanivrit, country (=Anupa), 965 | vadhaniya; comp. Bhogavadhana), 264, 373, 572 |
| Aparakakhadiya, a., eillage, | Bhogavadhaniya, a., place (=Bhogavadhana- |
| Aparathia, country (=Aparathia), 1123 | ks), 797 |
| Aparamta, country (=Aparamta), 965 | Bhögavata, a., place, 1078 |
| Aparamtika (P), f. a., country (comp. Apa- | Bhōjakaṭaka f., "kā, a., place, 723, 861 |
| ramta) | Bibikanadikata, place (=Bibikanadikata), . 725 |
| Apitti, villags (?), 1200 | Bibikanadikata, place (= Bibikanadikata), . 728 |
| Arapana, place (=Arapana, Arapana), : 396, 397 | The state of the s |
| Ampina, place (= Arspana), 353 | |
| Arapana, place (=Arapana), . 286, 306 | С |
| Arapānaka, a., place (=Arapāni; comp. | 0 |
| Arapana), 635 | Chahatiya, a., place (P), 190, 316 |
| Arapāna), Arapānaka), | Chakora, mountgin, |
| windows 1. and hence (| Chances invances, |

An a (adjective) means that the word is an adjective derivative from some geographical name, denoting 'inhabitant of', 'native from,' stc. References to the etymon are added whenever this occurs in the list.

| Nomber. | Number. |
|--|--|
| Chalisilanaka, a., place (?), | Dhēnukākata, place (=Dhēnukākada), 1090, |
| Chechimna, place, | 1093, 1096, 1097 |
| Chēkulana, a., place (=Chikulaniya), 759 | Dhēnukākaṭaka, a., place (= Dhēnukākaṭiya ; |
| M T | comp. Dhēņukākaṭa), 1092 |
| | |
| Chēmulaka, a., place, | Dhënukakatiya, o., place (=Dhënukakataka), |
| Chhadakicha, a., place, 1230 (?), 1261 | 1030 |
| Chhākalēpakiya, a., place (?), 1139 | |
| Chikambari, district (?), | E |
| Chikhalapadra, eillage, 1133 | 55 |
| Chikulaniya, a., place (=Chēkulana), 789 | Ejāvata, a., place (comp. Ejāvati), 304 |
| Chilereka, village (=Chillareka, Chillereka), . 1200 | Ējāvatī, place, 417, 418, 554 |
| Chillareka, village (=Chilereka), 1200 | Ekkatthābāra, village, 1196 |
| Chillereka, village (= Chilereka), 1200 | Elura, village, |
| Chitupada, rock, | |
| Chudaphalagiriyā, f. a., place, | |
| | G |
| Chudathilika, f. a., place, 720, 819, 820 | |
| Chumvamoragiri (?), village, 625 | Gamdhakuti, building at Śravasti, 733 |
| | Gamdharikabhami, locality in Kalyana, . 998 |
| | Gainga, river, |
| | Gandhakuţi, temple at Gayā, 950 |
| D | Girinagara, town, |
| | Göpika, cave, |
| Dabhinika, f. a., place, 718 | Gövadhana, town and district (=Gövar- |
| 2000 | dhana), |
| | and the same of th |
| Dahanukā, river, | Gövardhana, town (=Gövadhana), 1131 |
| Dahanukanagara, a., place, | |
| Dakhināji, f. a., country (comp. Dakhinā- | |
| paths), | Н |
| Dakhinapatha, country (= Dakhinapatha, | Hēmavata, a., mountain (comp. Himavata), |
| Dakshināpatha), | 156, 158, 655 |
| Dakhināpatha, country (=Dakhināpatha), . 1123 | Himavata, mountain, |
| Dakshinapaths, country (= Dakhinapatha), . 965 | Hiralūra, place, |
| Dalum, place, 1327. | |
| Damans, river, | |
| Dasapura, town, | 1 |
| Dasilimata (?), place, | · · |
| Datamitiyaka, a., place, | Ibs, river, |
| Dattagalla, place, | Isimita (?), place, |
| Děvaparavana (?), place, | |
| | |
| | j |
| Dhamavadhanana, place, 234, 351 | Jambudipa, continent, |
| Dhambhika, willage, | Water the same of |
| Dhamnakada, town (=Dhamnakata), 1206 | Jetavana, tocality at Srdeasti, |
| Dhamilakata, towa (=Dhamilakada), 1225 | |
| Dhamuakataka, a., town (comp. Dhamuakada), 1271 | |
| Dhanakata (?), place, | K |
| Dharakina, place, 259 | Kachchha, country, |
| Dharmadevavihara, B. convent, 161 | Kkahunatha alam |
| | Kachupatha, a. place, 1274 |
| | Klahunatha alam |

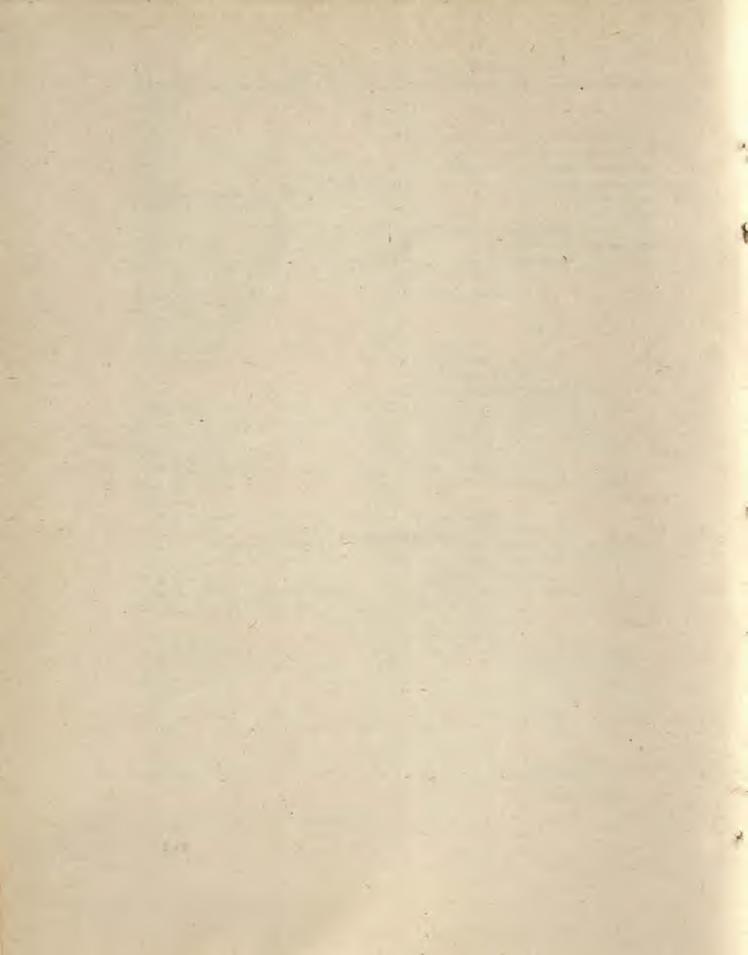
| Number. | Number. |
|--|--|
| Kadaka (?), place, | Katakanu, place, 262, 420, 421 |
| Kakamdi, place, 817 | Katakañuyaka, a., place (comp. Katakañu), |
| Kakanava, place (=Kakanava, Kakanava, | . 261, 361, 419 |
| Kākaņāya), 659 | Katakasõlaka, a., place, 1303 |
| Kākanāva, place (=Kākanava), 681 | Kěkšpora, place, |
| Kākaņāva, place (=Kākanava), 340, 350 | Kevururs, płace, 1213, 1240 |
| Kākaņāya, place (=Kākanava), 200 | Khujatidukiya, a., place, 713 |
| Kakhadi, village, | Kodaka, village, |
| Kakhadiya, a., village (comp. Kakhadi), 1125 | Kodāya, a., country (?), |
| Kalayana, toson (= Kaliana, Kaliyana, Kaliyana, | Ködijilaka, a., place, 484 |
| Kaliyana), 1024 | Kölivála, place (?), |
| Kāliaņa, town (=Kālayāṇa), 988 | Konachika, place, |
| Kaliana, a., town (= Kalianaka, Kalianaka, | Konatapuka, eillage, |
| Kaliyanaka, Kaliyanaka, comp. Kalayana), . 1179 | Konginagara, village, |
| Kalianaka, a., town (=Kaliana), 1000 | Körngham, f. ori, a., place (= Körngharaka, |
| Kalianaka, a., town (=Kaliana), 1177 | Kuraghari, Kuraghariya; comp. Kuraghara), |
| Kalianika, f. a., town (=Kaliyinika; comp. | 197, 363, 368, 469, 471, 493 |
| Kalayana), | Köragharaka, a., place (=Köraghara), 558 |
| Kaliga, country (= Kalimga) 1346 | Kôramikā, f. a., place, 526 |
| Kaliga, a., country (comp. Kaliga), 1346 | Körara, f. °ri, a., place (=Kurara, Kurariya; |
| Kalimga, country (=Kaliga) 1345, 1347 | comp. Kurara), 339, 499, 582, 583, 584, 608, 651 |
| Kaliyana, town (=Kālayāṇa), 986 | Kösabeyekä, f. a., town (=Kusamba), 764 |
| Kaliyana, towa (=Kalayana), 1032 | Kosala, a., country, |
| Kaliyana, town (= Kalayana), 998 | Kosambakuți, building at Śrāvasti, 732, 918, 919 |
| Kaliyanaka, a., town (= Kaliana), 1001 | Kothukapadiya, a., place (=Kuthupadaka?), . 293 |
| Kaliyanaka, a., town (= Kaliana), 998 | Kudura, town (= Kudura), 1295 |
| Kaliyinika, f. a., town (=Kalianika), . 1014 | Kudura, town and district (=Kudura), 1328 |
| Kamavana, a., place, | Kukura, country, 965, 1123 |
| Kärichipura, town (= Kärichipura), | Kumaripavata, mountain, |
| are asserted and a second of the | Kundamuchehundi, village, 1196 |
| The state of the s | Kundatapuka, village, |
| Kamdadigamiya, a., place (comp. Kamdadi- | Kuraghara, place, 230, 233, 233, 425, 426, 543 |
| 0 | Kuraghari, f. a., place (= Köraghara), . 427 |
| | Kuraghariya, a., place (=Koraghara), 491 |
| Kanhagiri, mountain, | Kurars, place (=Kurars, Kurars, Kurars), |
| Kanhaséla, mountain, | 289, 428, 429 Kurars, place (=Kurara), . 430, 431, 432, 434 |
| Kāpāsigāma, place, | 12 1 12 |
| Kapichita, place, | Kurārā, place (= Kurarā), |
| Kappennalä, village, | Kurara, f. °ri, a., place (= Kôrara), 256, 292, |
| Kapura, district, | 435, 436, 552, 633 |
| Karaběně, river, | Kurariya, a., place (= Kōrara), . 297, 348, 437 |
| Karahākadaka, a., place, 1055 | Kusamba (?), a., tosen (= Kösabeyekā), 1345 |
| Karahakata, 1000n, . '05, 763, 767, 809 | Kuthupadaka, a., place (= Kothukapadiya?), . 556 |
| Karahakatiya (?), f. a., town (comp. Kara- | armanhamana an hance (- recommanhamana ili a |
| hakata), 891 | |
| Karajaka, village (=Karajika), | M |
| Karajika, village (=Karajaka), 1099 | Macha, mountain, |
| Karipenduls, village, | Machhavata, place, |
| | manufactured to the state of th |

| Number. | Number. |
|--|--|
| Madalachhikatika, f. a., place (=Madalachhika- | Morajahikata, place 265 |
| tika) | Môrayahikatiya, a., place (= Môrajahakatiya), 626 |
| Madalachhikatika, f. a., place (=Madala- | Mukudasivayivā, locality in Kalyana, 998 |
| chhikatikā), 317 | Mülagandhakuți, B. sanctuary, 929', 929' |
| Madhubanikā, f. a., place (= Madhuvanākā, | Majaka, country, |
| Madhuvanikā; comp. Madhuvana), . 168 | |
| Madhurs, town (=Mathuls), 1345 | |
| Madhurayanaka, place, | N |
| Madduravanaka, prace, | Nadamaranibe & a mina. |
| Madhuvana, place, 288, 291 | Nadanagarikā, f. a., place, |
| Madhuvanākā, f. s., place (= Madhubanikā), . 312 | |
| Madhuvanika, f. a., place (= Madhubanika), | Nadinagara, place (=Nadinagara, Namdi- |
| 191, 374, 460 | nagara), 175, 462, 467, 565, 567, 629, 630 |
| Magadha, people, 1345 | Nadinagara, a., place (= Nadinagarikā, Nādi- |
| Magadha, a., people (comp. Magadha), 1345 | nagarika, Namdinagaraka, Namdinagarika, |
| Magalathana, village, 1024 | Namdinagarika; comp. Nadinagara), 562 |
| Mahākāmdarāra, village, 1202, 1203, 1204 | Nādinagara, place (= Nadinagara), . 176, 472 |
| Mahamoragi, place, 189, 313 | Nadinagarika, f. a., place (= Nadinagara), |
| Mahārājadēvaputravihāra, B. convent in | 325, 369 |
| Mathurā, | Nadinagarika, f. a., place (= Nadinagara), |
| Mahavanasals, place, | 327, 383, 402, 536, 538, 604 |
| Mahavanasaliya, a., place (comp. Mahavana- | Nadoda, mountain, . 707, 708, 711, 765, 781, |
| sala), | 791, 901 |
| Mahaveja, eillage, | Nagarika, f. a., place, 806 |
| Mahavijaya, palace in Kalinga, 1345 | Namdapura (?), place, |
| Mahemkhānšjaks, a., place, 1233 | Namdinagara, place (= Nadinagara), 328, 463, |
| Mahida, mountain, | 464, 465, 466, 512 |
| Mahisati, place (= Māhisati), 375 | Namdinagaraka, a., place (= Nadinagara), . 502 |
| Mahisati, place (= Mahisati), . 497, 498, 501 | Namdinagarika, f. a., place (=Nadinagara), . 852 |
| Malaya, mountain, | Namdinagarika, f. a., place (= Nadinagara), . 305 |
| Malaya, people, | Nanamgola, village, |
| Mamada, towa (=Mamala), 1105 | Nārasala, a., place (?), |
| Mamala, district (= Mamada), | Narayanavata, locality, |
| Mamdara, place, | Naschira, country or town, |
| Manamukada, mountain, | Nāsika, town, |
| Manavasi (?), place, | Nasikaka, a., town (comp. Nasika), 985, 1142, 1144 |
| Manavasitikada (?), place, | Navagamalu, place (=Navagamaka), 268 |
| Marakuda, place, | Navagamaka, ploce (=Navagamaka), 203 |
| Mariyasa, village, | Navagamaka, a., place (= Navagamakiya, |
| Maru, country, | Nāvagāmikā; comp. Navagamaka), . 182, 277 |
| Mathula (?), town (= Madhura), | Name of the second seco |
| Mathura, f. ri, a., town (= Mathuraka; comp. | Management of the state of the |
| | Navanara toma |
| Madhurth, 14*, 85 | Navanara, town, Nishāda, country, 965 |
| Mathuraka, a., town (=Mathura) 103 | Изынан, гоинггу, |
| Migasamadaka, Chaitya, 699 | |
| Mihimviham, B. convent, | 0 |
| Mörngiri, place, | 0 |
| Mörajahakatiya, a., place (= Mörajahikadiya, | Odiparivenena (?), place, 1267 |
| Môrayahikatiya; comp. Môrajāhikata), . 453 | Odiyanaka, a., country, 62 |
| Momjabikadiya, a., place (= Morajahakatiya), 354 | Otaraha, a., country, |

| Number. | Number. |
|--|---|
| | Rajstalaka, place (?) 988 |
| P | Rajatalaka, locality (?), 1827 |
| Pabhāsa, tērtha (= Prabhāsa), 1099 | Ramatirtha, tirtha at Sörpāraga, . 1131 Raraka, a., place (?), |
| Padaniya, a., place, 278, 616 | Raraka, a., place (?), |
| Padělaka, a., place, 876 | Rasopadra, village, 963 |
| Padukulika, millage, 571 | Rayaséla, place, |
| Padukulikiya, a., village (comp. Padukulika), . 576 | Rôhaṇipadiya, a., place (= Rôhāṇipadiya), 377, |
| Pahlava, a., nation, | 378, 379, 643 |
| Paithanapatha, district (P), 988 | Röhanipadiya, a., place (=Röhanipadiya), . 357 |
| Palasini, river, | Rosikavihara, B. convent at Alika, 43 |
| Palava, nation (=Pallava), 1205 | |
| Palhava, nation (comp. Pahlava), | |
| Pallava, nation (= Palava), 1200, 1327 | |
| Pamchaliya, a., country, 89 | S |
| Pāmtūra, village (= Pātūra), | Sadasēvājū-vihāra (?), B. convent, 988 |
| Parada, river, | Segireyiks, f. a., place, 646 |
| Parakatika (?), f. a., place, 878 | Sahalā, village, |
| Paramuchehundi, village, | Sahalatavi, village district, |
| Paripanaka, a., place (?), | Sahya, mountain, |
| Pārivāta, mountain, | Sajayataka, a., place, |
| Pātaliputa, town 719, 816, 818 | Sakn, nation (=Saka), |
| Patithana, town (= Patithana), | Saka, nation (=Saka), |
| Patithana, town (=Patithana), | Sakakachha, place, |
| Pățūra, village (= Pămţūra), 1328 | Sakanikā, f. a., nation (comp. Saka), |
| Pavidaka, a., place, 250 | Sākhā, place, |
| Pěmatika, f. a., place (= Pěmutika), 545 | Sanukagamina, a., place, 258 |
| Pēmutikā, f. a., place (=Pēmatikā), 478 | Saphāu, village, 1000 |
| Phujškapalliya (?), a., place, | Samalipada, village (= Samalipada), |
| Pimditakāvada, place, | Samalipada, village (= Samalipada), 1124 |
| Pisājipadaka, village, | Sāsādaka, a., place, 196, 587 |
| Pithuda, place (?), | Satagara, mountain, |
| Podakada, place, | Satahani, district, |
| Pôdavijhaka, a., place (= Pôravijhaka), 483 | Sauvira, country, |
| Pokhara, place. 370, 479, 480, 481, 482 | Savasti, town, |
| Pokhareyaka, a., place (comp. Pokhara), 337, 591, 607, 617 | Savatiya, a., place (?) (comp. Savasti) 937 |
| | Sēdakadī, f. a., place (=Sidakādī, Sidakadīyā; |
| Poksham, lakes, | comp. Sidakada), |
| Prabhāsa, tērtha (=Pabhāsa), | Sēlapuraka, a., place, |
| Puñavadhaniya, f. °ys, a., place, 366, 403 | Setagiri, mountain, |
| Purikā, place, | |
| Puravida, place, | Sethivādicha, a., place, |
| Pusakavana (*), place, | Sidakada, place, 594 |
| Pushkarāmbudhi, country, 961 | Sidakādī, f. o., place (=Sēdakadī), 595 |
| Puvānada, village, | Sidakadiya, f. a., place (=Sēdakadi), . 596, 597 |
| | Sindhu-Sauvira, country, |
| R | Sirisapada, place, |
| Bājagaha, town, | Siritana, mountain, |
| Rajagiri, place, | Somapatti, village, |
| . xaeo, 1290 | 5 m |
| | |

| NUMBES. | NUMBER. |
|---|--|
| Sônarako, a, place, 598 | Ugiréyaka, a., place, 242 |
| Sopāraga, town (=Sopāraka, Šorpāraga), . 995 | Ujeni, town, . 172, 173, 210, 212, 216, 217, |
| Sepiraka, town and district (=Soparaga). | 218, 219, 220, 221, 222, 223, 224, 225, |
| 988, 1095 | 226, 227, 328, 229, 231, 237, 238, 303, |
| Soparayaka, a., town (comp. Soparaga), 1005, 1119 | 307, 359, 405, 406, 407, 408, 409, 410, |
| Sorpāraga, toses (=Sopāraga), | 411, 412, 413, 414, 415, 560, 1135 |
| Srikunda, locality at Mathura, 140 | Ujenihara, district, 268 |
| Sudarsana, lake, | Ujenika, f. da, a., town (comp. Ujeni), . 385, |
| Sudasana, village (=Sudisana), 1124 | 400, 451, 509 |
| Sudisana, willage (=Sudasana), | Urjayat, mountain, 965 |
| Surështra, country (=Suratha), 965 | Usagama, place, |
| Suratha, country (= Surashtra), 1123 | Utarapatha, country, |
| Suvanamāha (?), place (?), | |
| Suvarnamukhs, place, | V |
| Suvarnasikatā, river | Vadalika, place, |
| Svabhra, country, | Vadathika, care, 956 |
| | Vadivahana, place (= Vadivahana), . 163, 380 |
| T | Vadivahana, place (= Vadivahana) 511 |
| Tabapanaka, a., island, 946 | Vadivahanikā, f. a., place (= Vādyavahanikā, |
| Takarapada, place, 411 | Valivahanikā ; comp. Vādivahana), 365 |
| Takhasilaka, a., town, | Vadyavahanikā, f. a., place (= Vadivahanikā), 592 |
| Talaki (F), place, 60 | Vaghumata, place, 253, 279 |
| Talakiya (?), place, 60 | Vahiyakā, case, 954 |
| Tambalamada, place, 287 | Vaijayanti, town and country (=Vejayamti), |
| Tapi, river, | 1195 1198 |
| Tekirasi, a., mountain (=Teraphuka; comp. | Valahaka, village, |
| Tiramphu) | Valikachaka, a., place, 1222 |
| Těranhuka, a., mountain (=Těkirasi), . 1126 | Valivahanika, f. a., place (=Vadivahanika), . 344 |
| Therakativa, q., place, | Valuraka, place (= Valūraka), |
| Tikātika, walk | Valūraka, place (=Valuraka), 1099 |
| Timmahu, mountain (= Timphu, Trimsmi), , 1140 | Valuraka, a., place (comp. Valuraka), 1105 |
| Tiranhu, mountain (= Tiramnhu), . 1123, | Vasas, mountain, 973 |
| 1124, 1126, 1141 | Vasa rikā, f. a., place (?), 170, 238 |
| Tiridapada, place, 272, 446 | Yasarikhadaka, place, 1187 |
| Tiyavani (?), place, | Vedisa, town, 254, 273, \$00, 521, 522, 523, 524, |
| Tobavaniks, f. a., place (comp. Tubavana), . 520 | 712, 780, 784, 813, 835, 885 |
| Todatura (?), village, 1202, 1203, 1204 | Vedisaks, a., town (=Vedisiks; comp. Vedisa). |
| Tompuki (?), district, | 345, 381 |
| Triraimi, mountain (=Tiramphu), . 1131, 1137 | Vedlsikā, f. a., tosen (= Vedlsaka), . 187, 439, 468 |
| Tubavana, place (= Tumbavana), . 201, 202 | Vegūra, village, |
| Tulakicha, a., place, 1905" | Vejaja, village, 195 |
| Tumbavana, place (=Tubavana), 449, 450 | Vejajaka, a., village (comp. Vejaja), 455 |
| Turnlüraka, d., place 1209 | Vėjayamti, town (= Vaijayanti), 1087 |
| U | Vėjayanti, f. a., towa (comp. Vaijayanti), . 1125 |
| | Vengipura, fours, |
| Udubaraghariya, a., place (= Udumbaraghariya), | Velagiri, village, 1202, 1203, 1204 |
| 188, 609, 610, 634 | |
| Udumbaraghariya, a., place (=Udubaraghariya), | Venuvagamiya, a., place, |
| 360 | Verohakata, a., płace (comp. Virohakata), . 320 |

| | | | | | NUMBER. | Number. |
|------------------------|-------|--------|---|---|---------|--|
| Vidabha, country, | | 1 | | | . 1123 | |
| Vijayapura, place, | | | | | . 1285 | |
| Vijha, mountain, | | | | - | . 1123 | Y |
| Virapuraka, a., place, | | | | | . 1234 | |
| Virasėnaka, a., town, | 2 | | | | . 1153 | Yaudheya, nation, |
| Viripara, village, | * | 4 | | | . 1205 | Yavana, nation (= Yavana, Yona, Yonaka), |
| Virôhakata, place, | | - | | | . 516 | 965, 1093, 1123, 1154, 1156 |
| Vitirinaha, place (= V | Vitir | nahī), | · | | . 513 | Yavana, nation (= Yavana), |
| Vitirinahi, place (= V | | | | 2 | . 514 | Yona, nation (= Yavana), |
| Vodva (?), Stepa at 1 | | | î | | . 47 | Yonaka, nation (=Yavana), 1140 |



INDEX OF MISCELLANEOUS TERMS.'

| Α | NUMBER. |
|--|--|
| Number. | amatya, kigh official, minister 965, 994 |
| | amacha, 1105, 1125, 1126, 1341 |
| [agramahishi], chief queen - | amachcha, |
| meaning the second | āmacha, 1124, 1186 |
| adhipati, king, | āmatya, |
| adhiraja, supreme king, | arhat, class of saints (generally J.; B. in 1280 |
| [adhishthana], capital— | and perhaps 904), . 37, 47, 69°, 74, 76, 83, 959 |
| adhithana (?), | arahat 59, 94, 96, 103 |
| [antevasin], pupil (generally B.; J. in 93; | arahata, 100, 102, 107, 1280, 1345 |
| pupil of sculptor in 150 and 1071)- | arahamta, 41, 57, 105, 106, 107, 107*, 108, |
| atēvasin, 299, 530, 531 | 112, 116, 904, 1345, 1346 |
| atēvāsin, 150, 154, 155, 185, 347, 349, 376, | Erahat, 78, 102 |
| 587, 612, 658, 680, 682, 1040 | ārahamta, 105 |
| amtevasin, 303, 569, 800, 1016, 1071, 1094, | ambata 78 |
| 1110, 1171 | arhat, |
| amtēvāsi, | [arhadāyatana], J. temple— |
| atavāsika, 1270, 1295 | arahatāyatana, 103 |
| atēvāsika, 1254, 1272, 1280 | arahatavatana, |
| amtēvasika, | [aśvavāraka], trooper, |
| antěvšsíka, | asavāraka, |
| antevasini, female pupil (generally B.; J. | asavārika, |
| in 67 and 99) 13*,38 | |
| ativāsinī, | A |
| atēvasinī, | acharya, teacher (generally B.; in 959 J., in |
| atēvāsinī, 589, 648, 1006, 1041, 1107, | 1186 title of sculptor), 5, 929* |
| 1224, 1246, 1250, 1280, 1286, 1295 | achariya, |
| amtéväsikini, 67 | acharyya, 918 |
| amtēvāsinī, 573, 1128 | achāryya, 12 |
| ativasiņī, | ācharia, |
| ativasini, 1041 | šchariya, 158, 655, 987, 1186 |
| ātēvāsinī, 1020 | acharyya, 919, 923, 929, 951, 959, 992 |
| amtivasini, 1059 | [acharyakula], B. temple- |
| šmtēvāsini, | achariyakula, 340, 350 |
| [apavaraka], cell— | [ājñaptî], official— |
| uyaraka, | anatti, |
| uvavaraka, | atapika, J. monk, |
| ovaraka, . , 988, 1018, 1072, 1127, 1132 | adhapanakhetiya, half pana-owner, 1024 |
| [apsaras], divinity- | atapika, J. mone, adhapanakhetiya, half pana-owner, ayaka, entrance to B. Chaitya, 1214 |
| achhara, 744, 745, 746, 747 | Syska, |
| abatamālā, certain sculptured slab, 1297 | [ayakaskambha], entrance pillar- |
| abadamala (?), 1249 | ayakakhambba, |
| abhyamtaropasthayaka, serount, 98 | ayakakhambha, 1202, 1204 |
| | |

¹ The words are given under their Sanskrit form if this really occurs or can be easily formed, in other cases under their Prakrit form.
2 c 2

| [upasthāna], reception room— upathāṇa, |
|--|
| upathana, |
| [upasthanasala], hall of reception- |
| |
| upathāņasālā, |
| |
| The state of the s |
| |
| upadhyaya, |
| [upādhyāyāchārya], B. teacher- |
| upaddhyāyāchēra, |
| [upādhyāyini], B. female teacher- |
| urajhāyini, |
| [upāśraya], certain building- |
| празауа, |
| upāsaka, B. lay-worshipper, 13, 466, 987, |
| 995, 1020, 1024, 1048, 1050, 1076, 1130, |
| 1172, 1175, 1178, 1181, 1239, 1271, 1303 |
| upasaka, 621 |
| uvasaka, |
| upasakiya, belonging to the wo, |
| upāsikā, B. female lay-worshipper, 10, 43, |
| 125', 212, 214, 272, 417, 446, 949, 1106, |
| 1137, 1145, 1252 |
| upasika, 199, 885, 406, 627 |
| nvāsikā, 1208, 1268, 1276 |
| [nshnisha], coping-stone— |
| unisa, 1221, 1231, 1251, 1256, 1281, 1285 |
| |
| umuisa, 1225, 1283 |
| |
| - |
| Ū |
| [urdhvapatta], upright slab- |
| udhapata 1235, 1271, 1272 |
| udhampata, |
| upata |
| |
| |
| Au |
| [audayantrika], maker of hydraulic engines- |
| |
| odayamtrika, |
| |
| |
| K |
| kadhichaka, certain artisan, |
| [karmantika], superintendent of work- |
| kamamtika, |
| [karmāra], blacksmith— |
| kamāra, |
| [karmika], labourer— |
| kamika, |
| |

| Number. |
|--|
| ganikā, courtesan, 103 |
| gāņikā, 102 |
| ganin, J. ecclesiastic, . 21, 23°, 25, 29, 34, 37, |
| 50, 53, 54, 56, 74, 78, 110 |
| garudadhvaja, pillar with a Garuda, 669 |
| [garbha], cell→ |
| gibha, 1078 |
| [garbhadvāra], hall-front— |
| gabhadam, |
| [gandhika], perfumer- |
| gadhika, 1210, 1230 |
| gandhika 37, 68, 76 |
| gamdhika 39, 1090 |
| gādhika, |
| gāmāgāmabhojaka, freeholder of various |
| villages, |
| guhā, care, 959 |
| [grihapati], householder- |
| gahapati, . 193, 201, 202, 449, 450, |
| 725, 1001, 1056, 1062, 1073, 1075, 1120, |
| 1121, 1127, 1153, 1157, 1170, 1171, 1205*, |
| 1206, 1209, 1211, 1216, 1220, 1221, 1222, |
| 1244, 1247, 1248, 1252, 1254, 1255, 1260, |
| 1274, 1277, 1281, 1302 |
| gahapatika, |
| [grihastha], Nouseholder- |
| gahata, 1091 |
| götra, Brahmanic family, . 82, 967, 1035, 1828 |
| gota, 681, 1174, 1200, 1328 |
| gotta, 1194, 1195, 1196, 1205 |
| göttm, |
| govallava, comberd, |
| [goshthi], B. committee (compare |
| bauddhagoshthi)— |
| gothi, 273, 1332, 1335, 1338 |
| góhi (?), |
| [goshthiáramana], ascetic of the committee- |
| gothisamana, 1333 |
| [gaulmika] coptain- |
| gumika, |
| grāma, eillage, 963, 1131 |
| gāma, . 195, 401, 571, 625, 1000, |
| 1024, 1099, 1100, 1105, 1123, 1124, 1125, |
| 1126, 1133, 1142, 1158, 1163, 1166, 1167, |
| 1194, 1200, 1202, 1203, 1204, 1205, 1328 |
| [gramani], village-headman— |
| gamapi, |
| |
| |
| [grāmāhāra], village district— gāmāhāra, |
| |

| Nomber. | Number. |
|--|---|
| [gramēyaka], belonging to a village- | chhatra, 910 |
| gamēyika, | chhātra, 918 |
| | [chhattrayashti], umbrella with a post- |
| | chhatrayashti, 925, 927 |
| Gh | |
| ghara, core, | |
| gharamukha, case door, | · J |
| gharamugha, 1090 | jațila, ascetic 702 |
| gharini, housewife, 1018 | jätaka, B. birth-story, . 701, 704, 724, 730, |
| gharinī, | 769, 785, 802, 807, 825, 897 |
| ghritapradipa, gles lamp, 950 | jataka, . 691, 694, 695, 698, |
| | 700, 703, 706, 786, 810 |
| | jāyāpara, Aouseholder (1), 1328 |
| Ch | jina, epithet of Buddha, 1124 |
| [chakrapatta], B. slab with wheel- | jeya (?), certain building, 1349, 135\$ |
| chakapata, | |
| [chakravartin], emperor | |
| chakavati (?) | T |
| [chankrama], B. walk- | |
| chakama 696, 765, 998 | tadāga, tank, |
| chamkama, 918, 919, 925 | tapasvin, J. monk, |
| chadhi (?), certain B. building, 1174 | tapasa, B. monk, |
| [chaturgarbha], four-celled- | tilapishaka, oilmiller |
| chatugabha, | tirtha, place of pilgrimage, |
| [chaturvarpin], consisting of four classes, | titha, |
| epithet of J. community- | täthika, certain official, 1200 |
| chatuvani, | těrana, arch, 108, 125, 340, 687, 688, 689 |
| [charmakara], leatherworker- | [tratri], saviour, title of king- |
| chammakāra, 1273 | tratara, |
| [chětiyakodhi], B. kall- | tripravaraka, having three ancestors, 14 |
| chětiakodhi, 1073 | [traipitaka], B. teacher of Tripitaka- |
| chētiyaghara, B. building, 1050, 1058, | trēpiṭaka, |
| 1140, 1141, 1153, 1178, 1179, 1183 | traipitakopāddhyāya, B. teacher of Tripitaka, 989 |
| chētiaghars, | [traipitika], B. female teacher of Tripitaba- |
| chētiēghara, 1072 | trēpitikā, |
| [chaitya], B. building (compare also chitiya)- | [traividya], B. teacher of Tripitaka- |
| ebātiya, | těvija, |
| chêtaya, 699 | |
| chētiya, | |
| chēdiya, | |
| [chaityapatta], B. Chaitya slab- | D |
| chētiyapata, | [dakshina], sacrificial fee- |
| [shaityaskambha], B. Chaitya pillar | dabbina 111 |
| chētiyakhabha, 1210, 1229 | danda, staff |
| | danda, 91 |
| 01. | damtakara, soorker in ivory, 341 |
| Chh | [daharabhikaba], young B. monk- |
| [chlattra], umbrella- | daharabhikhu |
| | dayaka, donor (7), |

| NUMBER. | NUMBER |
|--|--|
| dayada, heir of the faith, B. term, 156 | [nagarākshadarša], town-judge— |
| [dalaka], fisherman- | nagarsakhadamsa, |
| daaka, | nagari, town, |
| [dipaskambha], lamp-pillar- | [nartaka], dancer— |
| 11 11 111 | |
| divakhambha, | nataka, 100 |
| | [navagarbha], nine-celled- |
| divathabha, | navagabha, |
| [děšádhikrita], local prefect— | [navakarmika], B. overseer of works- |
| děsadníkata, | navakamaka, |
| devakula, shrine, in 18 and 102 J., 18, 1327 | navakamiks, 154, 773, 987 |
| | navamikā, meaning (1), 23 |
| děvikula, 102 | naga, serpent, 149, 1186 |
| děvakulika, temple-servant, 63 | [nagaraja], king of serpents- |
| [dēvadāsi], female temple-servant - | nāgarajan, |
| děvadášíkyi, 921 | nagarajan, 735, 753 |
| [dévapatra], B. angel— | nagendra, lord of serpents 85 |
| dēvaputa, | nayakamisa, certain artisan, |
| devaputra, title of Kushana kings, 18, 21, 23, | nigama, toren, |
| 35, 38, 41, 43, 51, 52, 56, 60, 62, 69*, 80, | [nigamaputra], inhabitant of hamlet- |
| 149*, 149*, 151*, 161, 686, 918, 919 | nigamaputa, 1335 |
| dévaputraka, meaning (?), 685 | nikāya, B. school, . 987, 1105, 1123, 1124, 1248 |
| [devanam priya], title of king- | [nivēśana], house— |
| dávánampiya, 954, 955, 958 | nivēsaņa, |
| dēvī, queen, . 5, 169, 709, 994, 1114, 1927 | nisidiyā, dwelling, |
| [dvara], gate at a B. Chaitya- | [uripa], king- |
| dara, | 700000000000000000000000000000000000000 |
| dara, 1202, 1203, 1204, 1248, 1255 | napa, |
| [drigarbhs], two-celled- | [naigama], inhabitant of nigama, merchant- |
| bagabha (P), | někama, 1001, 1139 |
| bigabba, | něgama, 987, 995, 998, 1000, 1001, 1024, |
| | 1179, 1387 |
| DL | nyēgams, |
| Dh | my og |
| dhamnika, corndealer | р |
| dharmakathika, B. preacher of the Law, 64° | The state of the s |
| dhamakatbika, 347, 1267 | |
| dharmmakāthika, 949 | [panchagarbha], for-celled- |
| [dharmachakra], B. wheel of the Law- | pachagabha, |
| dhamachaka, 750, 1248 | [panohanaikāyika], B. teacher of the five |
| [dharmanigama], pious kamlet- | nikāyas— |
| dhammanigama, | pachanékayika, |
| [dharmamahārājādhirāja], title of king- | pachanékāyika, |
| dhammamahārājādhirāja, | [patta], slab— |
| dhënachbaka, meaning (7), 781, 791 | pata, 1205*, 1213, 1215, 1216, 1226, 1291, 1295 |
| | pati, lord, title of king, 5, 961, 965, 1112, |
| 51 | 1123, 1196 |
| N | patha, path (?) at a B. cave, . 1032, 1033, 1072 |
| nagara, town, 1125, 1152, 1328 | [pads], footprint— |
| nakara, 1152 | pas, 980 |
| nagarasiman, boundary of town, 1163 | para, ehief (1), 1049 |
| | 3 r |

| [parichakra], circular panel— parichaka. [parishad], four classes of B. order— parishad, congregation, pavada (7), part of building (8), pasakama (7), padamulika, padamulika, padaka, footprint, patuka, pat | 50, 59 |
|--|----------|
| paramopāsikā, B. f. lay-worshipper, [parichakra], circular panel— parichaka, [parishad], four classes of B. order— parishā, parishād, congregation, parishād, congregation, pasakama (?), padamulika, pādamulika, pāduka, footprint, pātuka, pātuka, pātuka, pātuka, patuka, | EO - 505 |
| [parichakra], circular panel— parichaka, | DU, SO |
| parichaka, 1254 [parishad], four classes of B. order— parishad, congregation, 125, 925 parshad, congregation, 1131 pavada (?), part of building (?), 1000 pasakama (?), 183 [padamulika], servant— padamulika, 1286 patuka, 1290 patuka, 1290 patuka, 1219, 1225 [paniyapa, cistern— paniyaka, 1217 [paniyapa, cistern— paniyaka, 1217 paniyapa, superintendent of water— houses (?)— paniyapadhi, water-cistern, 2008 paniyapadhi, 2008 p | . 23 |
| [parishad], four classes of B. order— parishad. parishad. parishad. congregation. parishathi. pradiparakshi]. f. door-keeper— parishathi. pradiparakshi]. f. door-keeper— parishathi. pradiparakshi]. f. door-keeper— parishathi. pradiparakshi]. f. door-keeper— parishathi. parishad. congregation. parishadhi. pradiparakshi]. f. door-keeper— parishad. congregation. pari | |
| parishā. parishā. parshad. congregation. parshad. congregation. parada (?), part of building (?), pasakama (?), [pādamūlika], servant— pādamulika. pāduka. footprint. pātuka. [pādukapatta], slab with footprints— padukapata. [pānlyaka], cistern— paniyaka. [pānlyagharika], superintoudent of water- houses (?)— pāniyapodhī, water-cistern. pāniyapodhī, | . 1345 |
| parshad, congregation, | |
| pavāda (?), part of building (?), | . 1126 |
| pasakams (*), | 94, 929 |
| [pādamulika], servant— pādamulika, 1344 pāduka, footprint, 1286 pātuka, 1299 pātuka, 1219, 1225 [pādukapaṭṭa], slab with footprints— padukapaṭa, 1217 [pāniyaka], cistern— paniyaka, 1217 [pāniyagharika], superintondent of water- houses (?)— pāniyapādhī, water-cistern, 1016 pāniyapādhī, 998, 1008, 1020 pāniyyapādhī, 998, 1008, 1020 pāniyyapādhī, 1018 pāniyyapādhī, 1018 pāniyyapādhī, 1018 | g |
| pādamulika, 1844 pāduka, footprint, 1298 pātuka, 1209 pātuka, 1219, 1225 pādukapaṭṭa], slab with footprints— padukapaṭa, 1217 pāniyaka], cistern— paniyaka, 1217 pāniyagharika], superintendent of water- houses (?)— pāniyapōdhī, water-cistern, 1016 pāṇiyapōdhī, 998, 1008, 1020 pāṇiyapōdhī, 998, 1008, 1020 pāṇiyyapōdhī, 1018 pāṇiyapōdhī, 1018 | |
| pāduka, footprint, patuka, pātuka, pātuka, pātuka, pātuka, pādukapaṭṭa], slab with footprints— padukapaṭa, paniyaka], cistern— paniyaka, [pāniyagharika], superintendent of water- houses (?)— pāniyapōdhī, water-cistern, pāniyapōdhī, pāniyapōdhī, pāniyyapōdhī, pāniyapīdhī, paniyapīdhī, | . 1230 |
| patuka, 1200 pātuka, 1219, 1225 [pādukapatṭa], slab with footprints— padukapaṭa, 1217 [pāniyaka], cistern— paniyaka, 986 [pāniyagharika], superintendent of water— houses (?)— pāniyapōdhī, water-cistern, 1016 pāniyapōdhī, 998, 1006, 1020 pāniyyapōdhī, 998, 1006, 1020 pāniyyapōdhī, 1018 [pramāṇayashṭi], measuring staff— pamāṇayashṭi], measuring staff— pamāṇayashṭi], measuring staff— pamāṇayashṭi], B. monk— pavaita, 1040, 1107, 1130, 113 pavaita, pavajita, 987, 999, 1016, 1099, 110 pavajita, pavajitā, pavajitā, pavajitā, pavajitā, | . 105 |
| pātuka, | |
| [pādukapaṭṭa], slab with footprints— padukapaṭa, | . 200 |
| padukapata, | |
| [pāniyaka], cistern— 986 [pāniyagharika], superintendent of water- pavaeta, houses (?)— pāniyagharika, 1279 pāniyapodhī, water-cistern, 1016 pāniyapodhī, 998, 1006, 1020 pāniyyapodhī, 1018 | 9, 123 |
| paniyaka, | . 110 |
| [pāniyagharika]. superintendent of water- pavajita. 987, 999, 1016, 1099, 110 houses (?)— 1279 pāniyagharika. 1016 pāniyapōdhī, water-cistera. 1016 pavajitā. [pravrajitā]. B. nun— pāniyyapōdhī. 998, 1008, 1020 pavajitā. pavajitā. pāniyyapōdhī. 1018 pavajitā. pavajitā. | . 1270 |
| houses (?)— păniyagharika, | 5. |
| paniyagharika, 1279 paniyapôdhi, water-cistera, 1016 paniyapôdhi, 298, 1006, 1020 paniyapôdhi, 298, 1008, 1020 paniyapôdhi, 1018 pavayita, [pravrajitā], B. nun— pavajitā, pavayitā, | 25, 119 |
| paniyapôdhī, water-cistera, | . 98 |
| paniyapôdhi, | |
| pāṇiyyapōdhī, | . 67 |
| and the state of t | . 112 |
| [pāniyaprapā P], seuter-cistern- pavaltikā, 1006, 101 | |
| paniyapuva (?), | 10, 126 |
| pāniyabhājāna, water-cistera, | . 104 |
| [pindaka], slab (P)— prabanika, certain B. monk. | . 12 |
| pemdaka, | . 3 |
| pidha, chair (?), | |
| [pupphaganiyapatts ?], stab with flower- pasada, | 99.77 |
| pases (?)— [prisidatorans], arch of temple— | |
| puphaganiyapata, | . 8 |
| [pashkarini], posd— | |
| pukaripi, 9 | |
| pukharini, | |
| pushkarapī, 82, 149' | |
| [purpaghajakapatta] slab with filled vase— | |
| punaghadakapata, 1278 | |
| belgatel as station & con- | 144, 99 |
| paintapatika), D. memarcan | 42, 114 |
| pedapātika, | |
| pemdapātika, | . ! |
| podhl, cistera, 995, 996, 1000, 1007, 1013, brihamtavšchaka, | 4 5 |
| 1014, 1039, 1041, 1061, 1064, 1072, 1079, bodhi, B. tree of enlightenment, . 714, 72 | |
| | 779, 78 |
| 1152, 1154, 1165, 1178, 1176, 1177, 1180 bŏdha, | |
| [prajnaptidhara], certain function with Jainas- [bodhichakra], B. wheel of enlightenment- | . 73 |
| panatihara, | . 80 |

| NUMBER. | Number. |
|---|---|
| [bodhisattva], B. class of persons- | bhandaksha (?), B. clerical functionary, . 133 |
| bodhisscha, 125° | bhamdira, certain building, 95 |
| bodhisatva, . 38, 125°, 685, 918, 919, | bhadanta, title of B. monks, only in 99 of J. (?) |
| 925, 926, 927, 949 | monk and in 954, 955, 956 of Affeika |
| bodhisāta, 88 | monks, 129, 149, 937 ³ , 989 |
| [bauddhagoshthi], B. committee- | bhamyamta, 1089 |
| bodhagothi, 234, 351 | bhañamta, |
| [brahmachārin], Brahmanic student- | bhadata, 99, 338, 766, 768, 773, 789, 792, |
| bamhachāri, 976 | 850, 858, 987, 1020, 1041 |
| brihmana, Brahman, 83, 149°, 1131, 1133, | bhadainta, 713, 762, 954, 955, 956, 987. |
| 1135, 1136 | 1040, 1041 |
| bamapa, | bhayata, 993, 999, 1007, 1012, 1060, |
| bammhana, 1050, 1328 | 1094, 1107, 1250, 1295 |
| bamhana, | bhayamta, 1006, 1081, 1082, 1083, 1095, |
| bamhana, | . 1128, 1171, 1223, 1263 |
| bramhaṇa, | bhādata, 281 |
| bramhana, 810 | bhāyainta, |
| brahmana, 1099 | [bhadanti], title of B. nun- |
| [brahmani] Brahman woman— | bhayamti, 1240 |
| bammani, | [bhadranigama], righteous hamlet- |
| | bhadanigama, |
| Bh | bhadramukha, title of mahakshatrapa, 967 |
| [bhaktoddesaka], B. distributor of food- | bhavāta (?), title (?), |
| bhatudésaka, 812 | bhavana, temple, |
| bhagavat, generally designation of the Buddha | bhagavata, votary of Bhagavat, 669 |
| or epithet of a Buddha, in 902 of Mahadeea, | bhāṇaka, B. prescher, 602, 1095 |
| in 24, 26, 27, 34, 69°, 74, 117 epithet of | bhanaka, |
| J. saints, in 6 of Samkarshana and Vasu- | |
| dêva, in 1327 of Nardyana. in 1194 of | [bhāndāgārika], treasurer, |
| Chittarathasvamin, in 910 of Pitamaha, | bhamdakarikaya, |
| in 101 of Nemesa, in 85 of Naga Dadhi- | bhikshu, B. monk, 12, 38, 40, 52, 61, 62, 62*, 62*, 64*, 64*, 89, 125*, 125*, 125*, 125*, |
| karna, 5, 6, 12, 24, 26, 27, 34, 43, 52°, 69°, | 125', 125', 126, 132, 134, 135, 139, 918, 925, |
| 74, 85, 101, 117, 138, 161, 200, 714, 722, | |
| 739, 750, 753, 760, 774, 775, 777, 779, 783, | 926, 927, 949 bhikhu, 176, 192, 311, 335, 337, 343, 343, |
| 801, 902, 910, 918, 935, 939', 931, 989, 1194, 1203, 1203, 1204, 1207, 1237, 1230, | 358, 390, 488, 491, 492, 574, 575, 579, |
| 1234, 1240, 1244, 1248, 1274, 1278, 1281, | 606, 614, 622, 628, 632, 633, 638, 640, |
| | 642, 647, 652, 671, 673, 1101, 1102, |
| 1285, 1827, 1840 bhagapat, 1271 | 1105, 1124, 1126 |
| 11 | bhichhu, 155, 167, 171, 174, 180, 185, 190, |
| hharamaka (2) D alamiant dansar | 194, 196, 235, 240, 275, 276, 282, 284, |
| [bhatamanushya], soldier, | 288, 290, 294, 298, 299, 300, 301, 303, |
| bhadamanusa, | 304, 309, 310, 311, 316, 361, 367, 376, |
| bhatta, title (?), | 380, 386, 393, 394, 395, 434, 442, 451, |
| [bhattaraka], lord- | 453, 454, 472, 473, 484, 518, 530, 535, |
| bhataka (?), 1046 | 580, 601, 602, 607, 608, 631, 649 |
| bhattraks, | kt.st_t_ |
| [bhattarika], lady (7), | hhibshuni R and |
| bhatarika, | bhikhuai, |
| | 1014, 1093, 1101 |

| NUMBER. | NUMBER. |
|---|---|
| bhikhuni, . 175, 292, 341, 344, 427, | mahākataka, certain artisan, 987 |
| 430, 434, 471, 489, 499, 504, 515, 533, | mahakshatrapa, title of king, . 82, 83, 928, 962, |
| 548, 557, 582, 583, 584, 586, 588, 593, | 963, 965, 968, 967, 994 |
| 611, 618, 620, 623, 629, 630, 645, 651, | mahakshattrapa, 69 |
| 720, 764, 772, 778, 819, 1223, 1250, | mahakshatrapa, 14 |
| 1252, 1257, 1264, 1280 | mahakhatapa, 1174 |
| bhichhuni 168, 274, 305 | mahagandhakutivarika (?), B. guardian of the |
| bhichhuni, 163, 183, 187, 226, | great gandhakuți, 989 |
| 239, 253, 254, 291, 317, 318, 327, 328, | mahāchaitya, B. great chaitya- |
| 329, 333, 364, 365, 369, 374, 383, 400, | mahachētiya, 1225, 1244 |
| 403, 410, 412, 438, 439, 452, 462, 468, | mahāchēdiya, |
| 478, 500, 509, 512, 520, 524, 526, 534, | mahāchētiya, 1202, 1204, 1207, 1212, |
| 536, 538, 539, 543, 561, 563, 568, 590, | 1225, 1243, 1248, 1251, 1281 |
| 624, 637, 630, 718, 723, 761, 806, 815, | mahātagivara, meaning (?) 1828 |
| 817, 840, 841, 851, 870 | mahādamdanāyaka, great general, 1828 |
| bhikhuniks, 921* | mahādāndanāyaka, 60 |
| [bhikshunyupasraya], B. nunnery- | mahādēvi, great queen, |
| bhikhuni-upasaya, 1153 | mahabhuvi, princess (?), |
| [bhikahurāja], title of king- | mahabhoja, title of chief, 1021, 1037, |
| bhikhursjan, 1345 | 1045, 1052, 1058 |
| bhikshusamgha, B. order, 5, 1137 | mahābhōya, 1054, 1111 |
| bhikhusagha, . 998, 1006, 1007, 1016, | mahābhōjī, wife of a mahābhōja, 1021, |
| 1020, 1021, 1024, 1123, 1128, 1131, 1148 | 1037, 1045 |
| bhikhusamgha, | [mahāmātra], official— |
| bhikhusamgha, | |
| [bhikshuhala], B. monks' land- | mahamagu(ta) (?) |
| bhikhubala, | maharathi, title of chief 1079, 1100 |
| bhāmivēša, earth-dwelling, | mahārathi, 1088, 1112, 1116 |
| bhojaka, freeholder in 1200, local chief in | [maharathini], wife of a maharathi- |
| 1345, 1200, 1345 | mahārathiņī, 1021 |
| [bhōjiki], wife of a bhōjaka— bhōigi, | mahārathini, |
| | maharaja, title of king 5, 21, 22, 34, 35, |
| [bhōjanachatuḥśāla], B. dining hall— | 41, 43, 45*, 46, 51, 52, 56, 60, 62, 68, 69*. |
| bhōjanachātusāla, | 72, 78, 81, 81", 83, 149", 1515, 669, 685. |
| bhòjanamatapa, | 906, 918, 961, 1021, 1186, 1194, 1200, 1327, |
| onoladamatatata | 1328, 1345, 1347 |
| M | maharaja, 42, 66, 1495, 151*, 949 |
| | maharuja, 23 |
| [manjusha], carket | maharaja, |
| majusā, 1329, 1930, 1335 | maharajatiraja, title of king, |
| majūsā, | mahavinayamdhara, B. great Visaga teacher, 1270 |
| [manikurs], joseeller- | mahāsāmiya, certain official, |
| manikara, | [mahāsēnāpati], great general- |
| māņikara, | mahāsēnāpati, |
| [mandapa], porch, hall- | mahāsēnapati, |
| matapa, 1000, 1174 | [mahasenapatini], wife of a great general- |
| madapa, | mahasēpapatiņī, |
| [mahattaraka], chamberlain— | [mahāsthavira], B. great elder- |
| mahataraka, 1340 | mahathèra |

| NUMBER. | Nomber. |
|---|---|
| [madambika], chief of a madamba- | [rajaprasadachaityaka (?)], king's temple (?)- |
| mādabika, 1900 | rājāpāsādāchētika, 943, 944 |
| [manavaka], young Brahman- | rajarajan, title of king, 1123 |
| mtnavaka, | rājalipikam, royal scribe, 271 |
| malakara, gardener, 1051; 1061 | [rajavaidya], royal physician- |
| malakara, | rājaveja, . 1190, 1191, 1192, 1193 |
| mithika, polisher, 987 | rajatiraja, title of king, . 21, 56, 80, 62, 69°, |
| [mukha], care-door- | 72, 78, 81, 161 |
| mugha, 1092 | rajatiraja, |
| muni, J. monk, | rajāttīraja, |
| meluda, certain official, | rājāttirāja, 149* |
| | [rajamatya], royal minister- |
| Υ . | rājamacha, |
| [yaksha], class of demigods- | ršyšmachs, |
| yakha, . 726, 736, 737, 771, 794, | rajni, queen, 11 |
| 795, 957, 958, 1143 | [mshtra], district— |
| yakshi, f. yaksha— | ratha, 1202, 1203, 1204, 1281 |
| yakhini, 790 | rattha, |
| yakhī, 793, 871 | [rashtrika], chief of district- |
| yaghāpaṭa (P), tablet, | rathika, |
| yati, B. (f) monk, 952, 1146, 1199 | |
| yugapajaka, meaning uncertain, 308 | mahtriya, provincial governor, 965 [rupakarman], carving— |
| yuvamahārāja, erowa-prince, 1205, 1327 | |
| yapa, sacrificial post, | rupakamma, |
| [yauvarajya], position of crown-prince- | rupakāraka, |
| yovaraja, | [rūpadaksha], copyist (?)— |
| | lupadakha, |
| | information , , , , , , , , , , , , , , , , , , , |
| R | - |
| rakasavānodāsa (P), 213 | 1. |
| [rajaki], wife of a dyer— | - |
| rayagini, | layana, cave, |
| rajjuka, official, surveyor, | lěna, 998, 999, 1000, 1001, 1002, 1005, |
| rajuka, 416 | 1006, 1007, 1012, 1018, 1014, 1016, |
| [ratnagriba], B. vanctuary- | 1018, 1020, 1021, 1024, 1037, 1038, |
| ratanagriha, 125 | 1040, 1041, 1048, 1051, 1053, 1055, |
| [rahasy@dhikrita], privy councillor - | 1060, 1062, 1063, 1065, 1066, 1072, |
| rahasidhikata, | 1078, 1075, 1076, 1077, 1099, 1105, |
| rajakumāra, royal prince, | 1107, 1121, 1123, 1124, 1126, 1127, |
| rsjan, king, . 76, 346, 669, 687, 709, | 1128, 1129, 1130, 1131, 1133, 1138, 1140, 1144, 1148, 1152, 1155, 1175, |
| 761, 882, 892, 904, 905, 922, 924, 962, 963, 964°, 965, 966, 967, 987, 994, 1001, 1002, | |
| 1024, 1099, 1100, 1106, 1112, 1114, 1120, | 1184, 1344, 1347, 1348, 1351 lēna, 904, 1045, 1054, 1100, 1139, 1346, 1353 |
| 1122, 1123, 1126, 1131, 1132, 1133, 1134, | lékhaka, elerk, 209, 1037, 1045, 1138, 1148 |
| 1135, 1137, 1144, 1146, 1174, 1168, 1195, | leghaka, |
| 1196, 1202, 1203, 1248, 1279, 1328, 1335, | lokapala, guardian of a quarter |
| 1838, 1340, 1341, 1345, 1346 | [löhavānija], ironmonger - |
| rajan, | 1:1 |
| rāyan, | lohavāņiyiya, |
| | 1 1000 |

| Number | Number. |
|--|--|
| lõhikakāraka, morker in metal, 56 | vaidyn, physician, |
| löhikākāraka, 55 | |
| | vaisya, member of third caste, 965 |
| | vyavabārin, merchant, 140 |
| | [vyaprita], official- |
| V | vāpata, 1205, 1328 |
| [vamiskara], bantoo-worker— | viyapata (?), |
| vasakara, | |
| vairūsana, B. throne, | · · |
| valdhaddhinh meaning unknown, 23 | |
| [vardhaki], carpenter— | 8 |
| | 5 Satra, meaning uncertain (compare sata?), . 967 |
| 10000000 | |
| 4 of a principal and a second a | |
| vallava, herdoman | 990, 1044, 1046, 1047 |
| 42; 45, 47, 53, 54, 56, 58, 50°, 110, 122, 12 | |
| 42, 45, 47, 55, 54, 50, 50, 10, 110, 122, 124, 124, 124, 124, 124, 124, 124 | 7 |
| THYMEN | Sakyopasika, B. J. tay-worshipper, 1043 |
| [vajaka], garden— | Sakha, J. section, 16, 18, 19, 20, 22, 22, 23, |
| Vacanta, | 27, 28, 29, 32, 36, 39, 42, 45*, 46, 47, 48, 53, |
| Affilial man comment | 10 04, 00, 00 , 10, 10, 10, 50 , 101", 116, 117, |
| 4 critical and | 119, 131, 122 |
| Andriann's | in the sale of the |
| vaniya, 1313, 1314, 1229, 1230, 1239, 1278, 12 | [silakarmanta], stone-work— |
| vaniya, 1813, 1814, 1220, 1200, 1200, 1210, 12 | |
| [vanijini], wife of a merchant - | 83, 85 |
| APDIATOR! | at lareste |
| Valley still, | silaprakara, stone scall, 6 |
| vanika, musician(?) | I Caller and half a state of the same |
| vanika, | śilalashti, |
| [vidyadhara], class of demigods- | CA |
| | 1999 D := 1100 1-1-1- 11 03 01 |
| TIME VALUE OF THE PARTY OF THE | 97 90 91 71 71 77 77 |
| Taking passessessesses | 107 104 100 000 |
| windvalla. In somework | šiša, |
| [viávakarman ?], architect (?)— | 2.7 |
| vishayapati, chief of district, | |
| vishayapata, card of uter core | sisa, |
| [vishvagdeva], J. quadruple image, | , |
| vishudeva, vihara, B. monastery, 5, 12, 13, 14, 43, 125, | [fishya], J.f. pupil, only in 910 perhaps B |
| 140, 161, 949, 950, 988, 908, 1137, 1 | |
| | |
| WINDOWS BUILDING AND TO THE OWNER OF THE OWNER OWNER OF THE OWNER OW | Who a |
| [sriddharaja], title of king- | ALM DEST |
| 1 doctors of the same of the s | |
| A GOTTON A MANAGEMENT OF THE PROPERTY OF THE P | 111 |
| Address . | |
| Entermy | the H |
| (Vaijaşanta), palace of the gods- | |
| (Valjayanta), Parate of the year | [failakarman], stone-work— |
| 46 le la terrana | 776 sélakama, |

| Number. | NUMBER |
|--|---|
| [śailagriba], B. cave— | satinghaprakrita, B. supporter of the order (?) 125 |
| sēlaghara, 1087 | sanghaprakita, |
| [śailarupakarman], stone carving- | sanghaprakrita, . 125", 125", 125", 125" |
| sēlarūpakama, | sanghasthavira, B. elder of the congregation, |
| [sailavardhakin], stone-muson- | 129, 130, 131 |
| sélavadhakin, 987 | [saringhārāma], B. monastery, |
| silalaka, actor, | saghārāms, |
| Iramana, ascetic, in 75, 93, 1346 J., in 1124, | [samghopasayika ?], meaning uncertain, |
| 1336 B., | saghōpasāyika, 1042 |
| ватара, | samcharamtaka, spy, |
| samana, 93, 1124, 1346 | satupadana (?), meaning uncertain, |
| framanasravika, J. f. lay-disciple of the | sata, meaning uncertain (compare satra?). , 935 |
| ascetics, | sattra, Soma-sacrifice, 146" |
| śamaņasāvikā, 102 | [satpurosha], B. saint- |
| samanasāvikā, | sapurisa, 156, 157, 158, 159, 160, 308, |
| śramanika], B. nun- | 655, 656, 657, 658, 660, 861, 662, 863, |
| samanikā, 1242, 1315 | 664, 680, 681, 682, 683 |
| samaniki, 1258 | [sadhryagviharin], B. companion of monk- |
| śramanoddeśa], B. novice- | saděvihári (?), 40 |
| śamanudéśa, | -3.31 -2.41 -2 (3.44) |
| áramanopasaka ?], B. Lay-worshipper (1), | saddhyëviharin, |
| samanapapaaka (for samana-upasaka?), . 1006 | 19 -19 - 1 |
| śravaka], J. lay-hearer- | |
| savaka 45 | |
| sāvaka, | sanānapēdhi, bothing tank, |
| ravika, J.f. lay-hearer, 28, 47 | |
| sāvikā, 23" | sapata, |
| śravikabhagini], J. lay-rister- | [mptagarbba], seven-celled — |
| | satagabha, |
| and the same of th | saphatha, meaning unknown, |
| | samapita (?), B. official, 957 |
| | [samudge], box- |
| | shamuga, 1330, 1335, 1338 |
| sēņī, | fambhogs, J. section, 19, 25, 27, 28, 29, 48, |
| rështhin, banker, | 50, 53, 54, 191 |
| fréshtin, | sambhòka, |
| sethin, 184, 248, 283, 339, 363, 423, 470, | [sarvatobbadrika], J. quadruple image - |
| 576, 581, 1056, 1063, 1064, 1073, | śavadobhadrika, 122 |
| 1075, 1087, 1109, 1261 | sarvvatöbhadrikā, 25, 87 |
| sethin, 206, 246, 255, 348, 379, 422 | savvatobhadrikā, 24 |
| | [sarthavaha], trader— |
| Sh | mathavaba, 1062, 1065, 1066 |
| shahi, title of king, . 5, 21, 69°, 72, 149°, 161 | [sarthavahini], wife of a trader- |
| abāha, | sarttsvāhini, 30 |
| | [sardhameham], J. companion of monk- |
| s | śraddhachara, 29,54 |
| | shadhachara, 53 |
| atingha, B. order, in 57 J. community, 57, | [sardbamchari], J. f. companion of monk- |
| 1107, 1133, 1175 | sadhachari, 16, 18, 48 |
| angha, 986, 999, 1099, 1100, 1106, 1182, 1230 | [simhastambha], lion-pillar- |
| satgha, 62°, 64°, 133, 139 | sihathabha, |

| Number. | NUMBER. |
|--|--|
| [simhasthana], lion-seat- | thambha, . 716, 729, 1045, 1093, 1280, 1302 |
| sihathana, | sthavira, B. senior monk, 929" |
| siddha, J. saint, in 13 and 975 demigod, . | thêrs, 451, 987, 993, 1008, 1007, 1012, |
| 57, 116 | 1020, 1040, 1041, 1060, 1080, 1081, |
| - 67dha 78 | 1082, 1083, 1089, 1094, 1171, 1223, 1250, 1289 |
| aidha, 13°, 975, 1345 | [sthaviri], B. senior nun- |
| [siddhagana], B. school (7)- | thēri, 1006 |
| sidhagana, | [sthum], temple— |
| [Sudharrail], hall of the gods- | stāns, |
| sudhamms, | [sthānaka], sārino- |
| [suvarņakāra], goldemith— | thunaka, |
| suvanakāra, | [stupa], certain B. monument, only in 47 J |
| [suchi], rail bar- | thups, 47, 1080, 1081, 1110 |
| suchi, 823, 826, 831, 832, 843, 845, 846, | thuba, |
| 847, 856, 861, 868, 876, | thubha, |
| 879, 1254, 1261, 1263 | [avastikapatta], slab with svastika- |
| suji | sothikapata, |
| suyi | svamin, title of king, . 59, 82, 684*, 930, 963, |
| frantains general— | 965, 966, 967, 1001, 1002, 1124, 1126 |
| sēnagopa, | sami, . 962, 1024, 1100, 1146, 1174, |
| sēnagopa, | 1200, 1201, 1248, 1341 |
| [sautruntika], B. monk versed in the sutras- | |
| sutamtika, | |
| sutātika 635 | |
| [sautrantikini], B. nun versed in the sutras- | H |
| sutātikinī, | |
| sūtātikinī, 319 | [hastin], figure of elephant- |
| [santrika], weaver- | hathin, 1089 |
| sotiks, | [harmya], temple or parilion- |
| [sauvarnika], goldsmith- | hārmya, 23 |
| sovanika, 92°, 95 | [hālskīya], ploughman— |
| [skambha], pillar- | hālakiya, |
| khabha, | hālika, plougāman (?), 1084 |
| khambha, | [hiranyakāra], treasurer- |
| stambha, pillar, 82 | hiranakāra, |
| thabha, | hairanyaka, treasurer, in 1179 perhaps proper |
| thabha, 338, 339, 349, 350, 585, 589, 593, | name, |
| 611, 712, 715, 721, 727, 758, 759, 762, | hēraņaka, |
| 763, 766, 767, 788, 772, 778, 789, 792, | hēraņika, |
| 796, 798, 799, 800, 803, 804, 809, 921', | hěranika, |
| 1094, 1095, 1097, 1208, 1266, 1277, 1298, 1345 | hrada (f), tank, |

LIST OF FIND-PLACES.

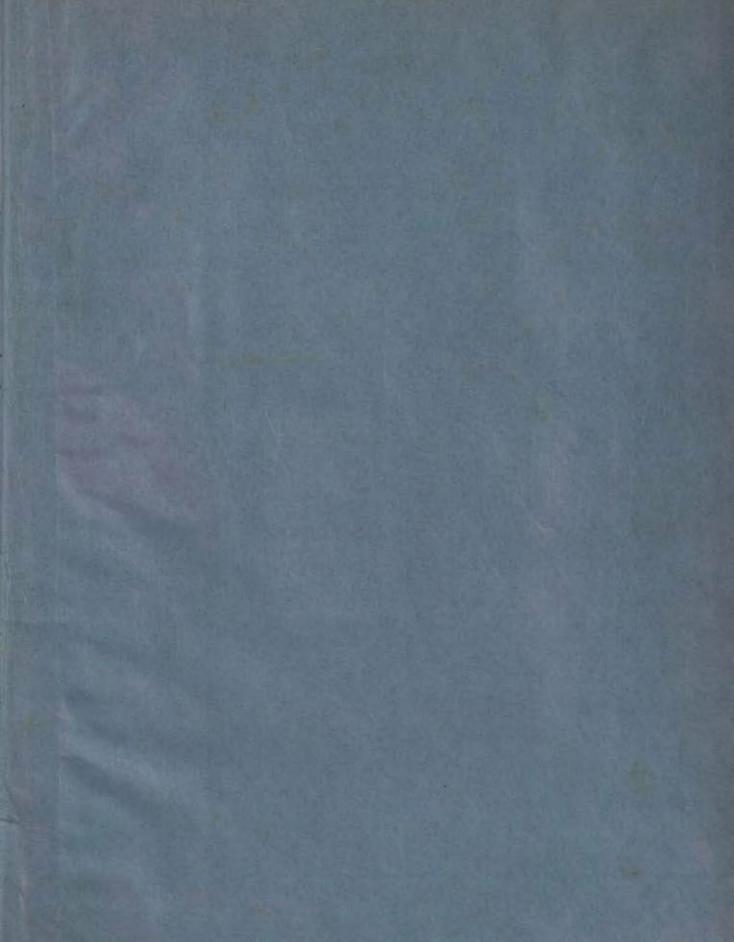
| - 1 | | | | | | | | | | | | | | | |
|-------------|-----|-----|----|-----|---|---|---|-----------|-------------------|---------|-----|-----|----|----|---------------------|
| | | | | A | 1 | | | | 1 | | | | н | | |
| | | | | | | | | NUMBER | | | | | ** | | |
| Ajants . | | | | | | | | 1197-119 | | res His | | | | | NUMBER. |
| Amaraya | | | | | | | | 1025*-132 | | - Cann | | | | | . 1300 |
| Ambivale | | | | | | | | 1089-107 | | | | | | | |
| Andhau | | - | | - | | | | 964*-964 | | | | | 1 | | |
| Andher | | - | 0 | | | | • | 679-68 | | | | | | | |
| Anyor . | | | | | | | | . 12*-1 | YENCODEA | ar . | | | | | . 10-11 |
| | | | | • | | | • | * 70 -7 | Isapur: | | | | | | . 149* |
| | | | | | | | | | | | | | | | |
| | | | | В | | | | | | | | | 2 | | |
| Banavāsī | | | | | | | | 1100 | | | | - 1 | j | | |
| Bedss . | | • | • | | | | • | . 1186 | o agay yati | ēļa . | | | | ** | 1202-1204 |
| Bësnagar | | | | * | | | | 1100-1111 | - minute | - | | | | | . 684" |
| Bhaja . | | | | * | * | | * | . 669-675 | C. C. I. C. C. C. | | | | | | . 1 |
| Bharant | | • | * | * | * | | * | 1078-1085 | - Carrier | | | | | | 1036 |
| Bhattiprole | 13 | • | | * | | | Г | . 687-903 | - company | | | | | | . 965-966 |
| Bhöjper | LL. | | * | * | * | | | 1329-1339 | to an example of | * | | | | | 1150-1183 |
| Bitha . | | | * | * | * | 3 | | . 676-678 | | | | | | | - |
| Bodh-Gays | . ' | | • | * | * | | | . 908-909 | 1 | | | | | | |
| Dona Gaya | | | | * | | * | | . 938-953 | 1 | | | - 1 | (| | |
| | | | | | | | | ~ | Kaman | | | | | | 10 |
| | | | | C | | | | | Kanhëri | | | | | | 984-1034 |
| 464 | | | | 0 | | | | | Kanhiara | | | | | | |
| Chhargaon | | | | * | * | | | 1491-149 | Karadh | | | | | | . 8 |
| China | * | | | | | | | . 1340 | Karlo . | | | | * | | · 1184 1086-1108 |
| | | | | | | | | | Kasia . | | | | | ь | 937*-937 |
| | | | | | | | | | Kevati Kur | nda | | | - | | |
| | | | | D | | | | | Khairigarh | | - 7 | | | | • 907 |
| Deoriya | * | | | | | | | 910-912 | Khandagiri | | | | | * | 1342-1344 |
| Deotek . | | | | | | | , | 1201 | Kodavolu | | | - | | | |
| | | - 1 | , | | | * | | 1201 | Köl . | | | | | * | . 1341 1075-1077 |
| | | | | | | | | | Kölhäpur | | | | | * | |
| | | | E | | | | | | Kondamudi | | | | | | 1195 |
| Elora . | | | | | | | | 1194 | Kondane | | | | | | * 1328 |
| | | | | | • | * | | 1133 | Köta . | | | | | * | . 1071 |
| | | | | | | | | | Kudā . | | | | | | · 15 |
| | | | 0 | 3 | | | | | Kura . | | | 1 | - | F | |
| Gadha . | | | | | | | | | _ | | | | | | . 3 |
| Gapeara | * | | | | | * | | 967 | | | | L | | | |
| Ghasundi | * | | * | | | * | | 14" | Lakhanü | | | - | | | |
| Giñja . | | × | | | | * | | 6-7 | AMARIMITY | * | | 12 | | | 150*-151° |
| Göpalper | * | | | - 0 | | * | * | 906 | | | | | | | |
| Gunapadeya | * | 4 | - | | | * | | 932-936 | | | | M | | | |
| Sunda . | | * | - | | | 4 | | 1327 | Mahad . | * | | | | | 1072-1074 |
| a section a | 9 | - | 12 | | | | | 963 | Mahakal | F | 4 | | + | | - 1035 |
| | | | | | | | | | | | | | | | 2 0 |
| | | | | | | | | | | | | | | | |

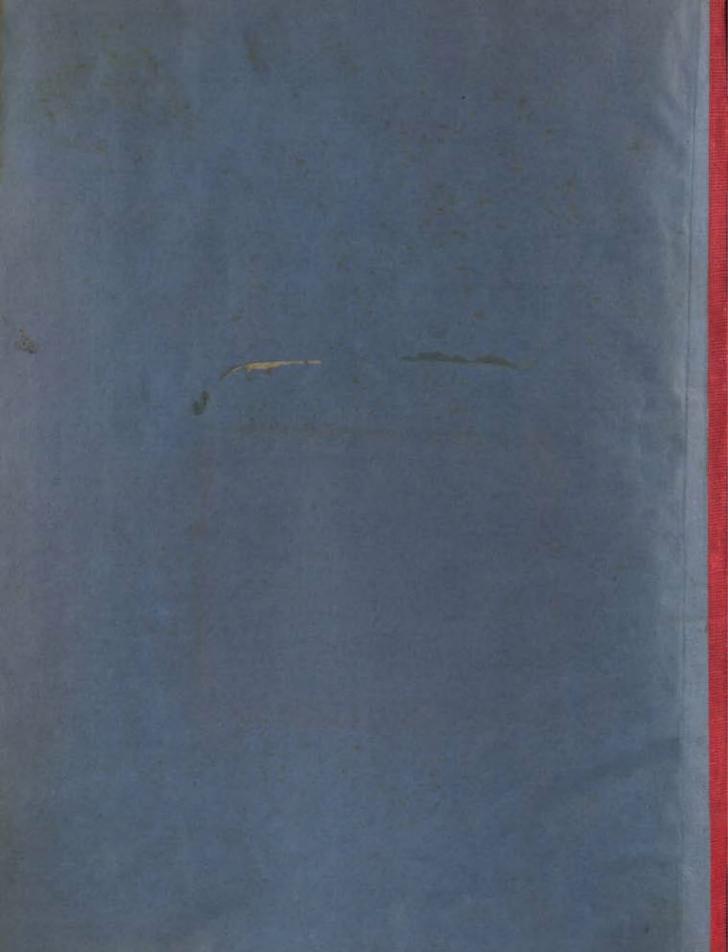
| NUMBER. R | |
|----------------------------|-------------|
| . 14' | Number. |
| Maholi . 151 Rajgir | . 958*-959 |
| Mahwan | . 13*-13 |
| Majavaiji | 920-921 |
| Mathurs | |
| Mayidavõlu . 14-14" | |
| Môra | |
| Mulwaar | . 918-919 |
| Sahēth-Mahēth | 1121 |
| Sailarwadi . | 14 |
| Salmā | |
| N Saochi | |
| 1007-10d8 Sarnath | 921-930 |
| Nadsur | 162-163 |
| Nagarjum Hill | 2-4 |
| Nanaghar | 964 |
| Nasik . 1122-1143 Submissi | 937 |
| Nangava . | . 154-160 |
| Nomerath | 961 |
| Susunis . | |
| | |
| T | |
| P Tandwa | 913-917 |
| Pabhos 904-905 Innows | |
| Padana | |
| Pakna-Bihar | Access to |
| Parkham 150 Udayagiri | . 1345-1353 |
| Pathyar 9 | 1 |
| Patna | |
| Piprahwa | 7.7000 |
| | 968-972 |

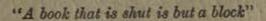












GOVT. OF INDIA
Department of Archaeology
NEW DELHI.

Please help us to keep the book clean and moving.

S. S., 148. N. DELHI.